Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

No.---------
JAMMOO

PRATAP SINGH
...RINAGAR

कमीशनबड़ौदा

अर्थात्

महाराजा मल्हरराव गायकवार रईस बड़ोदा की ओर से करनैल फियर
साहब रेज़ीडण्ट बड़ोदा के बिषदेने के मुक़द्दमेकी तहक़ीक़ात

जिसमें

सररिचर्डकौच साहब चीफजस्टिस बङ्गाल प्रेजीडेण्ट कमेटी और श्रीमान्महा
राजा जियाजी रावसेंधिया जी० सी०एस० आई० और श्रीयुत महाराजा
सवाईरामसिंह जी०सी०एस०आई० और करनैल सररिचर्ड मीडसाहब
चीफकमिश्नर मैसोर और मिस्टर मेलवल साहब सी० एस० आई०
जज चीफ कोर्ट पञ्जाब और राजा सर दिनकरराव
सी०एस०आई० कमेटीकीसभा केजज थे

जिसको

पोलीटिकल और क़ानून अदालत के मुआमलों के अनुरागियों और सब छोटे
बड़ों हिन्दुस्तान के सरदारों की गुणग्राहकता के लिये सम्पूर्ण मुक़द्दमा
आदि से अन्त तक संग्रह करके अवधसमाचार पत्रके सम्पादक मुंशी नव-
लकिशोर की अनुमति से बाबूदामोदर दास साहब आगरेकालिज के
सनदयाफ्तेने टाइम्स आफ़ इण्डिया की छपीहुई प्रतिसे अवध अख़-
बारका तर्जुमा मिलकर और अधिक कर उर्दू में तरतीब दिया-

और

पण्डित प्यारेलाल साहब कश्मीरी यंत्रालयीय पण्डितों के प्रबंधक ने
नागरी खड़ी बोली में उलथा रचना किया

लखनऊ

मुंशी नवलकिशोर के यन्त्रालय में पण्डित प्यारेलाल के प्रबन्ध से छपा

मई सन १८७६ ई०

1076

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कमीशन बड़ौदा का सूची पत्र ॥

नम्बर	प्रतिदिन की कार्रवाई	पृष्ठसे पृष्ठतक
१	[पहिले दिनका इजलास]	
	कार्रवाई कमीशन विषखिलाने या बहकाकर विषदिलानेकी [तहक़ीक़ात ..	१—३
	गायकवारके विषदेनेके मुक़द्दमेमें सरकारकेवकीलकीस्पीच ..	३—१२
	अमीना आया के इजहारात ..	१२—१६
	सरजंटबेलनटायन साहब के प्रश्न ..	१६—२०
	कचहरी के साहबानकी वार्त्ताका बयान ..	२०—२१
२	[दूसरे दिन का इजलास]	
	आयासे प्रश्न करना	२१—२६
	सरकारके वकीलने फिरआया अमीनासे इज़हारलिये ..	२६—३२
	फ़ैज़ू रमजानका इज़हार ..	३२—३२
	सरजंटबेलनटायन साहब के प्रश्न ..	३२—३३
	सरकारके वकीलने फिर फ़ैज़ूसे इज़हार लिये ..	३३—३४
	कारभाई पुंजाभाईके इज़हारात ..	३४—३४
	सरजंटबेलनटायन साहबके प्रश्न ..	३५—३५
	शेखकरीमके इजहारात ..	३६—३६
	सरजंटबेलनटायन साहबने करीमसे प्रश्नकिये ..	३६—३७
३	[तीसरेदिन का इजलास]	
	बख़्तियारखां के पुत्रसन्दलखांका इजहार ..	३८—३८
	सरजंटबेलनटायन साहब के प्रश्न ..	३८—४१
	बख़्तियारखांके पुत्र सन्दलखांके फिरइज़हारलियेगये ..	४१—४२
	छोटूके इजहारात ..	४२—४३
	सरजंटबेलनटायन साहबके प्रश्न ..	४३—४३

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

नम्बर	प्रति दिनकी कार्रवाई	पृष्ठसे पृष्ठतक
	दूसरीबार छोटूके इजहारात लियेगये ..	४३—४४
	शेखदाऊद के इजहारात ..	४४—४४
	सरजंटबेलनटायन साहबके प्रश्न ..	४४—४५
	ऐडवकेटजनरल ने फिर इजहार लिये ..	४५—४५
	सन्दलखाँ फिर बुलाया गया ..	४५—४६
	सरजंटबेलनटायन साहबके प्रश्न ..	४६—४६
	फिर दुबारा इजहारात लियेगये ..	४६—४६
	शेखअब्दुल्लहके इज़हार ..	४६—५१
४	[चौथे दिनका इजलास]	
	सरजण्टसाहब ने शेषअबदुल्लह से प्रश्न किये	५१—५३
	शेखअब्दुल्लहके फिर इजहारात लियेगये ..	५३—५४
	अबदुलरहमान के इजहारात ..	५४—५५
	ब्रैंसनसाहब के प्रश्न ..	५५—५७
	अमीना को फिर बुलाया ..	५७—५८
	ब्रैंसन साहब के प्रश्न ..	५६—५६
	शेखअबदुल्लहके फिर इज़हारहुये ..	५६—५६
	पीडरूडिसूज़ा केइजहारात ..	५६—६०
	सरजंटबेलनटायन साहब के प्रश्न ..	६०—६२
	करनैलफियर साहब के इजहारात ..	६२—६५
५	[पांचवेंदिन का इजलास]	
	साहब ऐडवकेटजनरल ने करनैलफियरसाहबका इजहार [लिया ..	६५—६७
	सरजंटबेलनटायन साहबके प्रश्न ..	६७—७७
	करनैलफियर साहबसे दुबारा इजहारात लियेगये ..	७७—७८
	मिस्टरअनवरार्टी साहबने डाक्टरसीवर्डसाहबकेइज़हारात [लिये ..	७८—७६

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

नम्बर	प्रति दिन की कार्रवाई	पृष्ठसे पृष्ठतक
	मिस्टर ब्रैंसन साहबके प्रश्न	१८५—१८५
	ऐडवकेट जनरल ने इस गवाह के दुबारह इजहार लिये	१८५—१८५
	इजहार मिस्टर बूवी साहब	१८६—१८७
	सरजण्ट बेलन टायन साहब के प्रश्न	१८७—१८८
	ऐडवकेट जनरल के प्रश्न	१८८—१८८
११	[ग्यारहवें दिनका इजलास]	
	आजकेदिन दामोदर पंथकेइजहार ऐडवकेट जनरलने लिये	१८८—२००
१२	[बारहवें दिनका इजलास]	
	ग्यारह बजे साहब ऐडवकेट जनरल ने दामोदर पंथ से [इजहार लेना प्रारंभ किया	२००—२०४
	सरजण्टबेलनटायन साहब के प्रश्न जो दामोदर पंथ [गवाह से किये	२०५—२१८
	ऐडवकेटजनरल ने दुबारा इजहार दामोदरपंथ के लिये	२१८—२१६
	इज़हार हेमचन्द फतहचन्द जौहरी	२१६—२२५
१३	[तेरहवेंदिन का इजलास]	
	मिस्टरअनवरार्टी साहब नेहेमचन्द फतहचन्द के इज़हार [लेना प्रारंभ किया	२२५—२२५
	सरजंटबेलनटायन साहब के प्रश्नहेमचन्दफतहचन्द से	२२५—२२८
	ऐडवकेटजनरल के प्रश्न	२२८—२३३
	इज़हार नानाजी वितल गवाह	२३३—२३४
	सरज़ंटबेलनटायन साहब के प्रश्न	२३४—२३८
	ऐडवकेटजनरल ने फिर नानजीवितल के इज़हारलिये	२३८—२३६
१४	[चौदहवेंदिन काइजलास]	
	रघुनाथके पुत्र आत्माराम के इजहार प्रारंभ हुये	२३६—२३६

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

नम्बर	प्रति दिन की कार्रवाई	पृष्ठ से पृष्ठ तक
	सरजंटबेलनटायन साहब के प्रश्न ..	२३९—२४१
	बलवन्तराव रावजीके इज़हारात ..	२४१—२४१
	रामेश्वरमोरा के इज़हारात ..	२४१—२४१
	सरजंटबेलनटायन साहब के प्रश्न ..	२४१—२४२
	दूसरी बेर रामेश्वरमोरा के इज़हार लियेगये ..	२४२—२४२
	दतेरिया रामचन्द्र के इज़हारात ..	२४२—२४२
	सरजंटबेलनटायन साहब के प्रश्न ..	२४२—२४३
	दतेरिया रामचन्द्र का दुबारा इज़हार लियागया ..	२४३—२४३
	भावपूनाकर के इज़हार ..	२४३—२४४
	सरजंटबेलनटायन साहब के प्रश्न ..	२४४—२४८
	मिस्टर रिचसाहब के इज़हार ..	२४८—२४९
	सरजंट बेलनटायन साहब के प्रश्न ..	२४९—२४९
	इज़हार अब्दुलअली के ..	२४९—२४९
	करनैलफियर साहब बुलाये गये ..	२४९—२५१
	ऐडवकेट जनरल ने दुबारा इज़हार करनैल फियरसाहब [के लिये ..	२५१—२५२
	इजहार गजानन्द वितल ..	२५२—२५४
	सरजंट बेलनटायन साहब के प्रश्न ..	२५४—२५९
	गजानन्द वितल के दुबारा इज़हार हुये ..	२५९—२६०
१५	[पन्द्रहवें दिनका इजलास]	
	हरजीवनदास पुरुषोतमदास के इज़हार ..	२६०—२६०
	सरजंट बेलनटायन साहब के प्रश्न ..	२६०—२६०
	ऐडवकेट जनरल ने फिर उसके इज़हार लिये ..	२६०—२६१
	मिस्टरस्टूटर साहब के इज़हार ..	२६१—२६४
	सरजंट बेलनटायन साहब के प्रश्न ..	२६४—२६५

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

नम्बर	प्रति दिन की कार्रवाई	पृष्ठ से पृष्ठतक
	गजानन्द वितल फिर बुलाया गया	२६५—२६६
	सरजंटबेलनटायन साहब के प्रश्न	२६६—२६६
	ऐडवकेटजनरल ने दुबाराइज़हार लिये	२६६—२६७
	सरल्यूस्पेली साहब के इज़हार	२६७—२७०
	सरजंटबेलनटायन साहब के प्रश्न	२७०—२७५
१६	[सोलहवेंदिन काइजलास]	
	सूटरसाहब कमिश्नर पुलिस की गवाही	२७६—२७८
	महाराजा गायकवार का उज़्र	२७८—२७९
	सरजंटबेलनटायन साहब की स्पीच खण्डन	२७९—३०७
१७	[सत्रहवें दिन का इजलास]	
	सरजंटबेलनटायन साहब की तितिम्मा स्पीच	३०७—३३०
१८	[अठारहवें दिन का इजलास]	
	तितिम्मा स्पीच सरजंटबेलनटायन साहब और दोपहर के [पीछे सरकार के वकील की स्पीच	३३०—३५७
	ऐडवकेट जनरल साहब का उत्तर	३५७—३७७
१९	[उन्नीसवें दिनका इजलास]	
	तितिम्मा स्पीच वकील सरकार	३७७—४१२
२०	[बीसवें दिनकाइजलास]	
	ऐडवकेटजनरल की तितिम्मागुफ्तगू	४१२—४१६
	चिट्ठी दादा भाई नौरोजी	४१६—४१६
	दामोदर पंथके उन इज़हारों का खुलासा जो उसने [पुलिसके रूबरू दिये	४१७—४२६

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

नम्बर	प्रतिदिन की कार्रवाई	पृष्ठसे पृष्ठतक
	रेज़ो ल्यूशन गवर्नमेण्ट हिन्दमें काग़ज़ात मुश्तहर गज़ट आफ इण्डिया और गवर्नमेण्ट हिन्दके वज़ीर [के मुकद्दमें के खुलासा करने के निसबत··	४२७—४५६
	अंगरेजी मेम्बरों की रिपोर्ट ··	४५७—५२१
	हिन्दुस्तानी मेम्बरों की रिपोर्ट ··	५२२—५२९
	श्री मान लार्ड सेल्सबरी साहब बहादुर सल्तनत हिन्दके वज़ीर जो पत्र हजाक सलन्सीराबट आनरेबिल साहब गवर्नर जनरल बहादुर हिन्दुस्तान बइजलास कौंसिल की प्रति ··	५२९—५४०
	लण्डन दफ्तर हिन्द ३ जून सन् १८७५ ई०	

इति

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

भूमिका

ब्रिटिश गवर्नमेण्ट की अमलदारी जबसे हिन्दुस्तान में हुई तबसे ऐसा महकमा कमीशन गत वर्षमें जो बड़ौदे के राजाके मुक़द्दमे के तहक़ीक़ात करने के लिये नियत हुवा था कभी नियत नहींहुवा—यह वह मुक़द्दमा है जो सम्पूर्ण हिन्दुस्तान और यूरुप में समाचार पत्रों के द्वारा विख्यात होचुका है—इस मुक़द्दमे की बिना और असल यह थी कि करनैल-फ़ियर साहब बड़ौदा के ब्रिटिश रेजीडण्ट को शरबत में विष दियागया या नहीं औरइस अपराधका शुभा मल्हरराव गायकवार बड़ौदा पर हुवा—कि उनके साजिश या तरग़ीबसे विष दियागया तथाच गवर्नमेण्टहिन्दने इसमुक़द्दमेकीतहक़ीक़ात के लियेएक कमीशन नियत की जिसमें तीनसाहब यूरोपियन अर्थात् सररिचर्डकौच साहब चीफजस्टिस बंगाल प्रेजीडण्ट, और सररिचर्डमीड साहब चीफ़कमिश्नर मुल्कमैसोर, और मिस्टर मैलवल साहब कमिश्नर अम्तसर, और तीन साहब हिन्दुस्तानी अर्थात् दो बड़े महाराजा हिन्दुस्तान अर्थात् श्रीयुत महाराजा साहबबहादुर जयपुर और श्रीमान्महाराजा साहबबहादुर सेंधिया अधिपति ग्वालियारऔरराजा-सरदिनकरराव रियासत ग्वालियार के पहिले वज़ीर मेम्बर नियतहुये—तहक़ीक़ातके उपरान्त हिन्दुस्तानी जजसाहबों ने बड़ौदेके अधिपति मल्हररावको साजिश या तरग़ीब विष देने के अपराध से बरी किया—परन्तु जजसाहबानयूरोपियनने बड़ौदाके महाराजापर साजिश या तरग़ीब विषखिलाने

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

का अपराध सूचित किया—परन्तु इनका यह साबित करना तीन गवाहों के बयान पर था जिनमें से दो मनुष्य ऐसे थे जो बड़ौदे की रेज़ीडण्टीके छोटे नौकर थे-यद्यपि गवर्न्नमेण्ट हिन्द ने यूरोपियन साहबों के रायोंके साथ सम्मत किया-लेकिन मारक्कीस आफ़ सालसबरी साहब सेक्रेटरी आफ़ इस्टेट आफ़ इण्डिया ने प्रतिकूल मतों के होने से यह समझा कि मल्हरराव गायकवार पर साजिश और बहकाके जहरदेने का अपराधसाबित नहीं हुवा-परन्तु उन्होंने मल्हरराववड़ौदे के अधिपतिको श्रीमहारानी विक्टोरिया की आज्ञानुसार इस सबबसे बड़ौदे कीगद्दी से उतारा कि उनका चाल चलन अच्छा न था और उनके देश का प्रबन्ध बहुत खराब और बड़ौदे की प्रजा उनसे बहुतही अप्रसन्न थी ॥

गत वर्ष में अनेक अखबारों में इस मुक़द्दमे पर वादानु-बाद हुवा कई अखबार लिखने वालों ने गवर्न्नमेण्ट की इस कारवाई पर बड़े २ एतराज किये और कलंक लगाये-और कितनों ने गवर्न्नमेण्ट इङ्गलिशिया की इस कारवाई की सहायता की—जोकिअब यह मुक़द्दमा पूर्णहोगया इसलिये अबइस विषयमें लिखना कि वह कारवाई कैसीथी व्यर्थहै लेकिन जोकि अखबारों में इस मुक़द्दमे की अलग २ कार-रवाइयां छपी हैं और बहुधा अखबार के अवलोकन करने वालों और देश के रईसों की यह इच्छा पाईगई कि तर्जुमा सब कारवाई कमीशन का आदि से अन्त पर्य्यन्त अखीरी हुक्म तक क्रम पूर्व्वक छापा जावे—जो कि इस भूमिका का लिखने वालाभी बड़ौदे की कमीशन के अवलोकन करने के लिये कमीशन की सभामें उपस्थित रहा इसलिये इच्छा हुई कि इस मुक़द्दमे के अनुरागियों को इस कारवाई से जो यादगार तारीख़ है सूचित करे—यद्यपि अखबारों में तर्जुमे हुये परन्तु जांचने के समय उन तर्जुमों में कुछ अन्तर पाया गया—इसलिये एक अति अंगरेजी विद्या

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

निपुण की दो तीन बेरकी शुद्दता पूर्व्वक यह तर्ज्जुमा उर्दू और नागरी में प्रकाश किया जाता है—और यह विचार कर कि हमारे हिन्दुस्तान के दिशाओं और देशों में हिन्दी देवनागरीके पढ़नेवाले बहुतसे हैं और बहुतसे मुकामों और शहरोंसे ऐसी इच्छा मालूमहुई इसवास्ते आशा है कि नागरी के तर्ज्जुमे को अधिक तर पसन्द करेंगे—इस पुस्तक के देखने वालों को उचित है कि अन्त की वार्त्ता अर्थात् खण्डन मण्डन मिस्टर बेलनटायन साहब, सरजाण्ट इटला बड़े वकील महाराजासाहब बड़ौदा और मिस्टर इस्कोविल साहब ऐडवकेट जनरल की तकरीर को अवलोनकरें उससे सम्पूर्ण मुकद्दमे का सारांशउनको मालूम होजावेगा और हिंदुस्तानी और यूरोपियन साहबों के बिचार और गवर्न्मेण्ट इण्डियाका रेजोल्यूशन भी देखने के योग्य है और जो तजवीज अन्तमें साहब सेक्रेटरी आफइस्टेट हिन्द ने अपनी चिट्ठी में की है वह भी पढ़ने और ध्यान देने के योग्य है॥

प्रयोजन यहहै कियह मुल्की मुकद्दमा अति कठिन और नाजुक मुकद्दमा था जिसमें एक बड़े और स्वाधीन रईस के मुकद्दमे की तहकीकात उसी की सल्तनत में एक कमीशन के द्वारा हुई इस बड़े मुकद्दमे के देखनेसे यह भी विदितहोगा कि क्योंकर यूरोपियन साहबान और हिंदुस्तानी, मुकद्दमे के मुख्य वृत्तान्त के खुलनेके लिये ध्यान दे रहेथे सच तो यह है कि यह एक छोटासा मुकद्दमा न था किन्तु बहुत ही पेचदार और नाजुकमुकद्दमा था, अन्त में मैं यह पश्चात्ताप करता हूं कि अंगरेज़ी और नागरी के मुताबिक करने के कारण से विलम्ब होगया पर आशा है कि मुकद्दमेके अनुरागी मेरे इस परिश्रम को समझकर ग्रहण करेंगे॥

इति॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कमीशन बड़ौदा

श्रीमान् मल्हरराव गायकवार के अपराध के विषयमें कि उन्होंने करनैल फियर साहब को जहर दिया या नहीं २३ फरवरी सन् १८७५ ई० ॥

———o———

स्थान बड़ौदा ।

पहले दिन की काररवाई ॥

आज के दिन काररवाई कमीशन इस बात के निश्चय करने को शुरू हुई कि मल्हराव गायकवार ने करनैल फियर साहब को विष दिया या नहीं सररिचर्ड कौच साहब प्रेसी-डेण्ट और श्रीमान् महाराना सेंधिया और श्रीयुत महाराजा जयपुर और जनरल सररिचर्ड मीडसाहब और सर दिनकरराव और मिस्टर मैलवल साहब इस कमीशन के मेम्बर इस मुक़द्दमे की तहक़ीकात के लिये नियत हुये ॥

२२——नम्बर हिन्दुस्तानी फौज के सौ सिपाही दरवाजे के ऊपर खड़े हुये थे और कमीशन के प्रारम्भ होने के थोड़े काल के पहिले यह सिपाही आगये थे और चार गाड़ियों में कमी-शन के मेम्बर आये पहिली गाड़ी में महाराना सेंधिया आये थे उनके साथ इनका बाड़ी गार्ड था दस मिनट के उपरान्त सरल्यूइसपीली और मल्हरराव भी आये और उनके साथ भी इनका बाड़ीगार्ड था सरल्यूइसपीलीसाहब ने गायकवार को

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उनके नियमित स्थान पर अपने साथ लेजाकर बैठाया यह जगह पहिले कमीशन के लोगों की बाईं ओर नियतथी उसदिन मल्हरराव अति उत्तम वस्त्र पहिने हुये थे सुर्ख मरहटी पगड़ी शिरपर बंधी हुईथी और सम्पूर्ण वस्त्रोंके ऊपर एक मखमल का चुग़ह पहिने हुये थे गले में मोती और लाल और ज़मुर्रद का हार पहिने हुये थे उनकी उंगुलियों में कोई अंगूठी नथी परन्तु कानों में बाले जिसमें मोती पड़े हुये थे पहिनेथे मिस्टर इस्कोबल साहब वकील खास सरकार और मिस्टर अनवराटी साहब मिस्टर हैरन साहब की हिदायत से और मिस्टर क्लीवलेराड और मिस्टर लेवारनर साहब श्रीमान् गवर्न्नर जनरल वैसराय की ओर से मुक़द्दमे की तहक़ीक़ात के लिये इजलास में आये और सरजण्ट बेलनटाइन साहब और मिस्टर बैन्सन और मिस्टर परसल और मिस्टर शान्ता रामनारायण बहिदायत मिस्टर जेफ़रसिन और पीनसाहबके वास्ते नवाब देही गायकवार की ओर से इजलास में आये और मिस्टर वासदेव जग्गनाथ वकील हाईकोर्ट मल्हरराव की ओर से सम्पूर्ण काररवाई मुक़द्दमे की देखरहे थे॥

ग्यारह बजे पर बीस मिनट आने के उपरान्त साहबान कमीशन की इजाज़त से एक अहल्कार ने उस प्रोक्लेमेशन के तर्जुमे को जोकि ज़बान मरहटी हिन्दुस्तानी में मिस्टर फ़िलन साहब मुतरज्जिम ने तर्जुमा कियाथा पढ़ा॥

सरकार के मुख्य वकील ने साहबान कमीशन के रूबरू अरज़ किया कि खुलासा लिखने वाले इस काररवाई के पहिले से मुक़र्रर होगये हैं और जो कुछ साहबान कमीशन को इस विषय में ज़रूरत होगी तुरन्तही उसकी तामील कीजावेगी सरजन्टबेलनटाइन साहब ने कहा कि एक बात अरज़ करनी मुझको भीहै हमको ज़रूरत गवाहों की होगी उनका बुलाना आपको ज़रूर होगा और श्रीमान् मल्हराव के वास्ते उनकी गवाही निहायत ज़रूर है यद्यपि

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उनके बुलाने का उपाय हमने अपनी तौर पर किया है परन्तु अगर वह न आवें तो आप हमको सहायता देंगे॥

प्रेज़ीडेन्ट साहब ने इसबात को सुनकर उत्तर दिया कि हम सब बातों के मदद देने पर राज़ी हैं सरजन्टमेलनटाइन साहबने इस विषय में भुककर अदाकिया और कहा कि खुलासा लिखने वाले दोनों ओर से मुकर्रर हुये हैं फिर भी अशुद्ध होने का संदेह हो तो वह लिखने वाले परस्पर अपने २ इज़हारात मिलालेंगे॥

गायकवार के विष देने के मुकद्दमे में सरकार
के वकील की स्पीच।

मिस्टर आर, इस्कोबल साहब अपने स्थान से खड़े हुये और एक स्पीच मल्हरराव गायकवार पर जुर्म ठहरा देनेमें सरकार की ओर से पढ़ी॥

मेरे लार्ड प्रेज़ीडेण्ट और आप महाराजान और साहिबान कमीशन मेरी तक़रीर पर ग़ौर फ़रमावें अब मैं सरकार की ओर से संक्षेप रीति से उन अपराधों का बयान करता हूं जो कि मल्हरराव के ऊपर ठहराये गये हैं और जिन अपराधों की तहक़ीक़ात के वास्ते यह कमीशन नियत हुई है हमने बहुतसे लोगोंसे गवाहियांलीं उनसे मालूम हुवा कि मल्हरराव के ऊपर एक बड़ा जुर्म नियत होता है और उनके ऊपर चार अपराध ठहरायेगये परन्तु उन चारों को हम नीचे इस भांति पर संक्षेप करलिखतेहैं पहिले तो यह है कि श्रीमान् मल्हरराव ने अपने नौकरों के द्वारा करनैलफियर साहब और रज़ीडेन्सीके नौकरों को बहकाया और दूसरे यह कि उन्होंने स्वत: अपने नौकरों केद्वारा करनैल फियरसाहब के नौकरों से और रज़ीडेन्सी के नौकरों से उनके स्वामी को विष दिलवाया मैं सम्पूर्ण गवाहियां कि जिनसे कि मुक़द्दमा साबित होता है इस जगह फ़ज़ूल समझता हूं क्योंकि धीरे धीरे आपके रूबरू सब गवाहियां तसदीक़ हो जायेंगी॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

परन्तु मैं इस मुक़द्दमे का वृत्तान्त संक्षेप मे आपके ज़ेहन नशीन करता हूं क्योंकि यह कमीशन जोडीशल नहीं है किन्तु केवल मुक़द्दमे की तहक़ीक़ात करके श्रीमान् नव्वाब गवर्न्नर जनरल बीरेश के इजलास में अपनी रिपोर्ट पेश करेगी और खास अपने तौर पर एक राय नहीं दे सक्ती है पसमैं सम्पूर्ण वृत्तान्त इस मुक़द्दमे का संक्षेप में आपके रूबरू पेशकरताहूं अभी आपके सामने इश्तिहार पढ़ा गया मैं उसके मुताबिक़ अपनी तकरीर इस मुक़द्दमेके विषय में करूंगा मैं रेजीडन्सी के नौकरों के बहकाने की तारीख उस वक़्तसे खयाल करता हूं जबकि पहिली कमीशन बड़ौदे में नियत हुईथी तो मालूम हुवा कि पहिली कमीशन तारीख २८ अक्टूबर सन् १८७३ई० को शुरूअ हुईथी और बराबर दो महीने तक अर्थात् नवम्बर डिसम्बर मुक़द्दमे की तहक़ीक़ात होती रही इन महीनों में जासूस सालिम और यशवन्तराव के द्वारा श्रीमान् मल्हरराव ने रेजीडेन्टके नौकरोंसे विष दिये जाने की साज़िश की यहां तक कि सिरफ रेजीडेन्ट के नौकरही नहींथे किन्तु खास निजके नौकर रजीडेन्ट साहब के भी अपने स्वामी के विष दिये जाने के लिये तय्यार किये गये थे उस समय साहब रजीडेन्ट यहां के करनैल फ़ियर साहब थे और जिस समय का मैं ज़िकर करता हूं उनकी मेम साहब भी विलायत नहीं गईं थीं किन्तु मुकाम बड़ौदे में थीं पहिले श्रीमान् मल्हरराव ने करनैलफ़ियर साहब के विष देने की आया से वार्त्ता शुरूअकी यह आया फ़ियर साहब की मेम साहिब के जाने के उपरान्त फ़ियर साहब की लड़की अर्थात् ब्यूबीसाहब की मेमसाहिबाके पास नौकर थी इस आया का नाम अमीना है और यह बहुत मुद्दत से करनैलफ़ियर साहबके पास नौकर थी और फ़ियरसाहिब की मेम साहिब के मिज़ाज में इसको इतना दखलथा कि सब बातें मेम साहिबा इससे कह दिया करती थीं यह

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

श्रीमान् मल्हरराव के पास तीन वेर गई थी——पहिली वेर वह उस समय गई थी जब कि पहिले कमीशन शुरू हुई थी अर्थात् सन् १८७३ ई० के अन्तमें दूसरी बार——पहिली कमीशन के पूर्ण होने पर गई थी जब कि श्रीमान् मल्हरराव नौसारी से आये थे अर्थात् मई सन् १८७४ ई० में और तीसरी वेर——फ़ियर साहब के विष दिये जाने के कुछ दिन पहिले गई थी इन तीनों मरतबे खास महाराज और आया से बातें होती रहीं यह एक जासूस के साथ कि उन दो जासूसों का जिनका मैं वर्णन पहिले कर चुका हूं गई थी इससे जो वार्त्ता हुई वह आपको इसके इजहार लेने के समय मालूम होगी पहिली वेर इसके साथ फ़ैजू भी गया था और यह गाड़ी में सवार होकर श्रीमान् मल्हरराव के महलमें गई और सालिम इसको महाराज के रूबरू लेगया महाराजने इससे यह वार्त्ताकी कि तुम अपनी मेम साहिबा से हमारी सिफ़ारिश करो ताकि वह साहिब से कह देवें कि वह हमारे हाल पर मेहरबानी करें——दूसरी बार उसके साथ करीम गया था और महाराजसे बड़ी देर तक वार्त्ता होती रही——तीसरे दफ़े वह रमज़ान के महीने में गई थी और सालिम अपने साथ उसको लिवा ले गया था और दाऊद की गाड़ी में बैठ कर गयेथे साहिबान कमीशन को मालूम होगा कि इन तीनों दफ़े में सिवाय आया और महाराज के और उन दो जासूसों के कोई और न था पहिली वेर में आया को कुछ भी मल्हरराव ने नहीं दिया परन्तु सालिम ने दोसौ रुपये करीम और अमीना को दिये दूसरी मरतबा पचास रुपये महाराज ने आया को दिये और उसकी तहक़ीक़ातके वास्ते अगर आपकी मरज़ी होगी तो दफ़ा १६७ क़ानून शहादत के अनुसार आया के पति को बुलाऊंगा उस मनुष्य का नाम अब्दुल्ला है और उस शख़्सके इक़रार से पचास रुपये का दिया जाना साबित हो

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जावेगा किन्तु कुछ इसके पति अब्दुल्लाकी गवाही की जरूरत नहीं है क्योंकि आया के घरमें कई कागज ऐसे पाये गये कि जिनसे पचास रुपये का दिया जाना साबित है यह कागज चार खत हैं दो तो आया ने अपने पतिको लिखे हैं और दो उसके पतिने आया को लिखे हैं इन खतों में सम्पूर्ण कार रवाई जो महाराज और आया में हुई लिखी है साहिबान कमीशन को उन खतों के देखने से फिर तहक़ीक़ात करने की आवश्यकता न होगी॥

इस बातको सुनकर सरजन्ट बेलनटाइन साहब ने बहुत धीरे से कहा कि जो कुछ कि साहबान कमीशन स्वीकार करें वह सब ठीक और सच है परन्तु उन खतों को अभीसे गवाही में लाना खिलाफ़ मालूम होता है आया के हाज़िर करने के समय जो यह खत पेश किये जावें और साहबान कमीशन उनका पेश किया जाना उचित समझे तो उस दशा में कुछ हानि नहीं है॥

मिस्टर इसकोबल साहब ने उत्तर दिया कि वह खत गवाही के लायक़ है परन्तु जब तक कि कमीशन के मेम्बर उन चिट्ठियों को न मांगेंगे हम उनको पेश न करेंगे॥

जब कि आया से इज़हार लिये गये तो आया बहुत बीमार थी और इस बातसेसाहबान कमीशन को साबित हुवा होगा कि उसके मनमें अपने अपराध का बड़ा खयालथा अब मैं दो और नौकरोंका बयान करता हूं यह खासनिज के नौकर साहब रेजीडेन्टके हैं और उन्होंनेभी बसबबसाजिश के बहुतसा रुपया श्रीमान्मल्हररावसे पाया था उनमें से एक पेडरू है यह शख्स करनैल फियर साहब का खानसामां था उसको पचास रुपये महाराज ने दिये थे और यह आया के साथ गया था परन्तु अब यह वहांके जाने से इंकार करता है॥

अब मैं वह हाल आपके रूबरू बयान करता हूं कि जिस तरह करनैल फियर साहब को विष दिया गया परन्तु

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

यह ईश्वरही का अनुग्रह था कि उनके प्राण बचगये नहीं तो कोई बात हिलाकत को बाक़ी न रही थी—९ नवम्बर सन् १८७४ ई० को विष देने का हाल मालूम हुवा और उस दिन से दो रोज पहिले भी विष दिया गया था परन्तु उद्योग सिद्ध नहीं हुआ रावजी जो रेजीडेन्सी का हवालादार था उसने जहर दिया था रावजी सालिम के साथ श्रीयुत मल्हरराव के महल में गया और उसके द्वारा सम्पूर्ण कारखाई पहिले कमीशन की गायकवार को मालूमहोती रहती थी इसको पांच सौ रुपये महाराज ने दिये थे जब कि महाराज नौसारी से विवाह करके आये तो इसी हवालदार को आठ सौ रुपये और दिये थे जब कि सालम के घर की तलाशी हुई तो उसके घरमें से एक गड्डी कागज़ों की निकली उन चिट्ठियों से विष का दिया जाना और भी साबित है और मैं जरूरत पर उनको पेश करूंगा एक बात और भी सबत की है कि रावजी हवालदार की तनखाह तो कम है और जो कि इसने इस समय में खर्च किया था वह बहुत जियादह था तो इससे बखूबी हम को जाहिर हुवा कि जरूर इसको रुपया गायकवार से मिला है॥

मैं रावजी के सबूत में कई खत ऐसे पेश करूंगा जो कि रावजी ने अपनी स्त्री को लिखे थे और जिस में इस रिशवत का हाल लिखा है॥

मैं अब उस कैफियत को बयान करना चाहता हूं कि जिस तरह पर जहर के देने का हाल मालूम हुवा यह तो हम पहिले बयान कर चुके कि हवालदार रावजी ने जहर दिया था परन्तु अब उसकी कैफियत सुनिये कि करनैल फियर साहब हर सुबह के वक्त हवाखाने के वास्ते जाया करते थे और वहां से लौट करके एक खास कमरे में जहां नहाने और मुंह हाथ धोने का सामान रक्खा रहता था वहां आते थे अब्दुल्ला खिदमतगार उनके आने

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

से पहिले चकोतरे का शर्व्वत तय्यार कर रक्खा करता था और फियर साहब उसको हर रोज़ पीलिया करतेथे ९ नवम्बर के रोज़ अब्दुल्ला ने बदस्तूर शर्व्वत बना कर रक्खा हवालदार रावजी वहां गया और करनैल फियर साहब के शर्व्वत में एक ज़हर की पुड़िया मिला दी इस ज़हर में संखिया और हीरे का चूरा मिला हुआ था करनैल फियर साहब जब हवा खोरीसे आयेतो उन्होंने दो तीन घूंट शर्व्वत के पिये मगर चूंकि इस शर्व्वत में विष मिला हुआ था इस सबब से बेस्वाद मालूम हुवा फियर साहब ने यह बात खयाल करके कि चकोतरह जिसका यह शर्व्वत बनाया गया है खराब होगा शर्व्वत को फेंक दिया परन्तु उनके सिर में दर्द होता रहा और जी मतलाया किया उन्होंने उस बरतन में जो देखा तो उनको मालूम हुवा कि सियाह रंग की गाद उस बरतन में जमीहै इस बात को देखकर एक चिट्ठी डाक्टर सीवर्ड साहब को लिखी और अपनी नादुरुस्ती तबीयत का हाल सब उसमें लिखा डाक्टर सीवर्ड साहिब फौरन् चिट्ठी के देखतेही करनैल फियर साहब के पास आये और देखा कि संखिया और कोई चमकती हुई वस्तु बरतन के नीचे जमी हैं परन्तु अपने तजुर्बे पर उनको निश्चय न हुवा और उन्होंने कुछ कैफियत लिख कर डाक्टर ग्रीसाहब को बम्बई में भेजी और एक पुड़िया उस वस्तु की भी जो उस बरतन में जमगई थी भेजी पस डाक्टर ग्रीसाहब और डाक्टर सीवर्ड साहब की राय मुत्तफिक़ हुई जब कि दो डाक्टर लोगों का एक मत है तो इसमें सन्देह नहीं कि करनैल फियर साहब को ज़रूर संखिया दी गई होगी सिवाय इस बात के एक और भी सबूत है कि सालम और यशवन्त राव सुबह के वक्त रेजीडन्सी में गये इससे साफ मालूम होता है कि विष दिये जाने के हाल मालूम करने के वास्ते गये थे और उससे साफ मालूम होता है कि इनके

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

रज़ीडन्सी से कोई मुख्य कार्य्य न था और यह ज़रूर विष का हाल मालूम करने के वास्ते गये होंगे जब उन दोनों से इज़हार लिया गया और पूछा गया कि तुम किस वास्ते रज़ीडन्सी में गयेथे तो उन्हों ने उत्तर दिया कि हम महाराज की ओरसे डाली लेकर गयेथे यद्यपि इसमें संदेह नहीं है कि फ़ियर साहब के पास उस दिन डाली पहुंची परन्तु यह दोनों छः बजे से पहिले गये थे और डाली आठ बजेके उपरान्त पहुंची एक बात और भी लिखने के योग्य है कि जब डाक्टर सीवर्ड साहब के नाम चिट्ठी फ़ियर साहब ने लिखी थी तो उस बात की इत्तिला करने के वास्ते सालिम रावजी हवालदार के घर पर गया था॥

मैंने पहिले यह वर्णन कियाहै कि विषमें संखिया अवश्य थी क्योंकि संखिया को जहर सब जानते हैं और हीरे के चूर्णके लिये मैं इतना कह सक्ता हूं कि हिन्दुस्तान में यह बात प्रसिद्ध है कि हीरे का चूर्ण जहर होता है और आप को डाक्टर शेवर्ज साहब की किताब का हवाला देता हूं कि वह लिखते हैं कि हिन्दुस्तानी मनुष्य हीरे के चूर्ण को जहर जानते हैं गवाही दामोदर पन्थ की लायक़ ख़्याल करने के है यह महाराज गायकवार का प्राइवेट सेक्रेटरी था उसके पास तहवील में खानगी हिसाब गायकवार के थे पहले दामोदरपंथ ने मल्हररावकी आज्ञासे दो तोले संखिया फ़ौजदारी के दफ़्तर से मंगाया और वहां यह लिखा कि घोड़े की बीमारी के वास्ते इतनी संखिया की ज़रूरत है परन्तु वहां से संखिया न मिली और एक बोरा के यहां से संखिया हाथ लगी दामोदर पंथ अपने इजहार में इकरार करता है कि मैंने हीरेका चूरह हेमचन्द फतहचन्द की दूकान से पाया था उसको महाराज ने यशवन्तराव को दे दिया मालूम होता है कि विष की पुड़िया में संखिया और हीरे का चूरा जरूर मिला था पहिले महाराज ने वह पुड़िया सालिम

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

को दीथी और सालिम ने रावजी को दी रावजीने छठी और सातवीं नवम्बर को यह पुड़िया करनैलफियर साहब के शरबत में मिलाई थी परन्तु करनैल फियर साहब को कुछ असर न हुआ महाराज ने इस बात को मालूम करके ९ तारीख़ को एक और पुड़िया दी और उसी पुड़िया की फंकी का चूरह बरतन की पेंदीमें जमरहा था रावजी का परतला जो देखा गया तो और कई पुड़ियां संखिया की मिलीं जो कुछ मैं कह रहा हूं उसकी सचाई दामोदरपंथ और रावजी के इजहार पर मौकूफ है गवाहों के इजहार अलग २ लिये गये हैं जिस पर भी यह सब का एक बयान है इससे मालूम हुवा कि यह सब बातें सच्ची हैं दामोदरपंथ और रावजी ने अपने अपराध क्षमापन के इकरार लेने के उपरान्त अपना इजहार दिया नरसू का इजहार बगैर कसूर मुआफ करने के लियागया है उसके बयान से बिलकुल सचाई मालूम होती है यह रजीडन्सी में बहुत दिनों से नौकर था जोकि इससे ऐसा खराब काम हुवा तो इसने कोशिश की थी कि कुएं में गिरके मरजाय परन्तु कमीशन के साहिबान् इस विषयमें भी ग़ौर फरमायेंगे तो खूब मालूम होगा कि इस मनुष्यने जरूर विष देने की कोशिश की थी दामोदरपन्थ की गवाही गायकवार के कागजों से सबूत होती है क्योंकि उन कागजों में बहुत से खर्च ऐसे लिखे हुये हैं कि जो गायकवार ने रजीडन्सी के नौकरों को रुपया दिया था महाराज के खानगी हिसाब में उसने लिखा है कि तीन हजार रुपये के हीरे मोल लिये गयेथे और एक जगह लिखा है कि अठारह से रुपये का तेल गायकवार ने मंगवाया पस यह सब फरजी हिसाब मालूम होते हैं हेमचन्द जौहरी के इजहार भी आप के सामने लिये जावेंगे उनसे आपको मालूम होगा कि किस क़दर चोरी दामोदरपन्थके हिसाबमें है और कितने रुपये के हीरे दामो-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

दरपन्थ ने हेमचन्द से गायकवार के वास्ते मोललिये थे॥

अब मैं वह हाल कहता हूं कि जिससे गायकवार के ऊपर खास मुक़द्दमा साबित होता है महाराज गायकवार हर सोमवार और वृहस्पतिवार को करनैल फियर साहब की मुलाक़ात को रजीडन्सी में जाया करतेथे नवींनम्बर को सोमवार था कि महाराज दस्तूरके माफ़िक करनैलफियर साहब की मुलाक़ात को गये यदि उसदिन करनैलफियर साहब की तबीयत जहर मिले हुये शर्ब्बत पीने के कारण कुछ अलील थी परन्तु मुलाकात महाराजसे की और कहाकि आज मेरी तबीयत अच्छी नहीं है महाराज ने कहा कि तबीयत मेरी भी अच्छी नहीं है और आज सम्पूर्ण शहरमें यही बीमारी है यह सुनकर करनैलफियर साहब चुपहोरहे यदि दामोदर पन्थका बयान सच है तो यह बात गायकवार को मालूम होगई थी कि करनैलफियर साहब को विष दियागया क्यों कि उन्होंने लौटते वक्त रास्तेमें यह कहाथा कि करनैलफियर साहबको आज विष दियागया है साहिबान कमीशन को भी यह बात मालूम होगी कि ऐसी बातें छिप नहीं रहसक्ती हैं सम्पूर्ण शहर में उसीदिन इसबात की खबर उड़गई कि किसीशख़्सने करनैलफियर साहब को जहरदिया है जब गायकवार वृहस्पतिवार को आये तो उनके साथ मिस्टर दादाभाई नूरूजी भी थे उन्होंने कहा कि हमने ऐसी खबर शहर में सुनी है कि आपको किसी मनुष्य ने विष दिया है थोड़ी देर के पश्चात् महाराज ने एक याद-दाश्त करनैलफियर साहब को इस मजमून की लिखभेजी कि हमने सुनाहै कि आपको किसी बदमाशने विषदिया है यदि आप कहें तो हम उसकी तहक़ीक़ात करें अब यह बड़े आश्चर्य्य की बात है कि अगर गायकवार को कुछ बनावट नथी तो इतने दिन पीछे यह याददाश्त क्यों भेजी उनको चाहिये था कि जिसरोज जहरदिया गया था या

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जिसदिन उन्होंने सुना था उसीदिन याददाश्त भेजते ॥ अब मैंने सम्पूर्ण वृत्तान्त इस मुक़द्दमे का कमीशनके लोगोंकेसामने इस वास्ते बयान किया कि आप सबलोग इसपर गौरकरें ॥

जब आप सब साहिब गवाहों के इज़हारात सुन लेंगे और सरजेन्टबेलन टाइन साहब भी अपने सवालात करलेंगे तबमैं अपनी राय इस मुक़द्दमे में दूंगा और इस समय जिन कामों में जरूरत होगी बहस करली जावेगी मुझको और कुछ कहना बाक़ी नहीं रहा अब आप आनन्द से गवाहों को बुलवाइये इसके पहले कि वकील सरकार अपनी तकरीर कहकर बैठें उन्होंने यहभी कहाकि यहां थोड़े गवाह ऐसे हैं कि जो अंगरेज़ी और हिन्दुस्तानी को बिल्कुल नहीं जानते हैं इस कारण उनके इज़हारात लेने के वास्ते एक बन्दोबस्त करना जरूर है सरजन्ट बेलनटाइन साहब ने उत्तर दिया कि जिस ज़बान में जो मनुष्य इज़हार देगा उसका वैसा ही बन्दोबस्त किया जायगा इस बात को साहब प्रेज़ीडण्ट ने स्वीकार किया ॥

अमीना आया का इज़हार ॥

अमीन आया का इज़हार मिस्टर अनवरारटी साहब ने लिया और फिलन साहब उसका तर्जुमा करते जाते थे ॥

आया ने कहा कि मेरा नाम अमीना है मुझ को वह समय याद है जब कि मुक़ाम बड़ौदे में पहिली कमीशन मुकर्रर हुई थी मैं उस समय कारनैल फियर साहबकी मेम साहिबह के पास नौकर थी और जब तक वह इंगलिस्तान को नहीं गई थीं मैं उन्हींके पास रहती थी उनके इङ्गलिस्तान में जाने के उपरान्त मैं उनकी बेटी जो कि बोवी साहब की मेम साहबह हैं उनके पास नौकर रही मैं गायकवार को खूब जानती हूं और उनके महल में तीन मरतबे गई थी पहले मरतबे जब मैं फियर साहब की मेम साहिबह के पास नौकर थी और दो मरतबे जबमैं बोवी साहब की मेम

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

साहिबह के पास नौकर थी तब गई थी मैं उनके पास पुराने महल में गई थी मुझको यह बात याद नहीं है कि मैं किस समय उनके पास गई थी परन्तु यह जानती हूं कि रात थी पहिली मरतबा मेरे साथ फैजू गया था रज़ीडन्सी के हाते में जो कुआं है वहां तक मैं और वह पैदल गये और वहां से एक गाड़ी में सवार होकर बहुत दूर चल कर एक बड़े मकान के दरवाजे के पास हमारी गाड़ी ठहरी और सालिम हमारे पास आया सालिम और हम और फैजू तीनों महल के भीतर सीढ़ी पर चढ़के एक मकान खास में जहां महाराज बैठे थे गये॥

मिस्टर मैलवल साहब ने पूछा कि वह किस तरह का बनाहुआ मकान था और उसमें के दरवाजे थे ?॥

उ०-मुझको याद नहीं है। प्र०-मिस्टर अनवरारटी साहब ने पूछा क्या वह मकान सीढ़ी से मिला हुआ था या तुमको जीने पर चढ़के कुछ दूर जाना पड़ा था परन्तु मिस्टर सरजन्ट बेलन टाइन साहब ने आया को उसके उत्तर देने से निषेध किया क्योंकि यह सवाल बेकार था। प्र०- मिस्टर अनवरारटी साहब ने फिर पूछा कि तुम जीने के ऊपर चढ़ के कहां गईं ? उ०- मैं एक कमरे में गई और सालिम महाराज को मेरे आने की इत्तिला करने गया थोड़ी देर के उपरान्त सालिम और महाराज दोनों वहां आये महाराज आकर एक चौकी पर बैठ गये मैं और फैजू फर्श पर बैठे और सालिम खड़ा रहा महाराज ने मुझ से पूछा कि कुछ मेम साहिबह हमारे विषय में तो कोई बात नहीं कहती थीं मैंने कहा मुझसे आपके विषय में कोई बात नहीं कही थी महाराज ने कहा कि अगर मेम साहिबा कुछ हमारी निस्बत में कहें तो तुम हमको सालिम और यशवन्त राव के द्वारा खबर देना मुझसे और महाराज से केवल इतनीही बातें पहिली बेर हुईं फैजू ने अपने लड़के के वास्ते

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जो कि पहिले से महाराज का नौकर था तरक्की की सिफारिश की परन्तु मुझको याद नहीं कि उसका उत्तर महाराज ने क्या दिया फिर मैं घरको चली आई दूसरे दफे तब मैं महाराज के पास गई थी जब महाराज नौसारी से आये थे॥

इस्कोबल साहब ने कहा कि हमारी और सरजन्ट बेलन्टाइन साहब की राय है कि हम दूसरी अप्रैल से लेकर १६ मई सन् १८७४ ई० तकके हालात का जब महाराज नौसारी में थे इज़हार लें और सिवाय इसके और इज़हारात लेने में हमारा वक्त ख़राब होगा॥

अमीना बयान करती है कि जून के महीने में महाराज नौसारी से पलट आये तब मैं फिर महाराज के महल में गई क्योंकि सालिम और करीम ने मुझको वहां जाने के लिये वार २ कहा था और करीम भी मेरे साथ गया उस समय पानी बरस रहा था मार्ग में मुझको सालिम मिला और हम तीनों उसी मकान में जहां पहिले गये थे गये॥

सालिम ने बदस्तूर मेरे आने की महाराज को इत्तिला की महाराज आकर उसी चौकी पर बैठ गये जिस पर पहिले बैठे थे मैं और करीम महाराज के सामने फर्श पर बैठे महाराज ने मुझसे पूछा कि बोवी साहब की मेम साहिबह तो मेरे विषयमें कुछ नहीं कहतीं थीं मैंने और करीम ने उत्तर दिया कि हमसे कुछ नहीं कहतीं थीं मिस्टर बोवी साहब को कुछ अधिकार नहीं है और न उनकी मेम साहिब तुम्हारे लिये कुछ कह सक्ती हैं यह कह कर मैंने महाराज को सलाम किया और वहां से विदा हुई थोड़ी देर के उपरान्त सालिम ने मुझसे आकर कहा कि यशवन्त राव के घर जाकर दो सौ रुपये ले आना मैं वह रुपये ले आई और उसमेंसे सौ रुपये मैंने लिये और सौरुपये करीम को दिये॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

टिफन खाने के वास्ते जल्सह बरखास्त हुआ॥

टिफन खाने के उपरान्त फिर इजलास शुरूहुआ मल्हरराव गायकवार टिफन के उपरान्त इजलास में उपस्थित न थे॥

अमीना बद्रस्तूर अपना इज़हार बयान करतीथी तीसरी मरतबे मैं रमज़ान के महीने में महाराज की हवेली में गई इस मरतबे मेरे साथ छुट्टू नामक एक लड़का था मैं बद्रस्तूर गाड़ीमें बैठ कर महाराज की हवेलीमें पहुंची सालिम को मैंने महाराज की हवेली के दरवाजे पर पाया सालिम ने बद्रस्तूर जाकर महाराजको मेरे आने की इत्तिला की महाराज उसी मकान में जहां दो मर्त्तबे पहिले मुझसे मिले थे मिले जो कि मैंने सरकार अंगरेजी का नमक खाया है इस कारण सच सच बयान करती हूं मैं कुछभी न छिपाऊं गी उस मरतबे महाराजने मुझसे पहिले यह पूछा कि बीबी साहब की मेमसाहिबह तो मेरे विषय में कुछ नहींकहती थीं मैंने उत्तर दिया जब हमारी बड़ी मेमसाहिबा यहां आवें-गी तब हम आपकी सिफारिश करेंगी और बीबी साहबकी मेमसाहिबह आपके वास्ते कुछ नहीं कर सक्तीं हैं फिर सालम ने कहा कि साहब के ऊपर जादू असर कर सक्ता है या नहीं मैंने महाराज और सालिम दोनों से कहा जादू का नाम नलो साहब लोगों पर जादू असर न करेगा अगर तुम कुछ उन पर करोगे तो अच्छा नहोगा मुझको जादूका नाम सुन कर बड़ा भय हुवा और मैं महाराज से बिदा हो कर चलने लगी परन्तु सालम ने मुझको बैठा लिया और कहने लगा कि ऐसी जल्दी न करो हमारी बात सुनो तुम्हारी जन्म भर की रोटियां महाराज के यहां होजावेंगी और महाराज तुमको निहाल करदेंगे महाराजके दिलकी बातको पूरा करो और महाराज तुम्हारे पति कोभी नौकरी देंगे यह सुन कर मैंने उत्तर दिया कि अब तक मैं भूखी नहीं मरती थी मैंने अंगरेजी नौकरी की है मुझको कुछ महाराज की

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

नौकरी की चाह नहीं इतना कह मैं वहां से चली और चलने के वक्त कहा कि तुम किसी के कहे में आकर साहब पर कुछ मत करना अगर साहब पर कुछ नुकसान पहुंचेगा तो तुम्हारे हक्क में बुरा होगा यह सुन कर महाराज अप्रसन्न हुये और सालिम से कहा आया को यहां से लेजावो फिर सालिम ने थोड़ी देर के उपरान्त पचास रुपये मुझको दिये और जो कुछकि हाल गुज़रा था मैंने सब अपने पति को कि वह मुझ से बहुत दूर था खतके द्वारा इत्तिलादी और उसको अपने पास बुलवा लिया और जो पत्र कि मैंने अपने पतिको लिखे थे वह सब अब्दुल रहमान से लिखवाये थे। प्र०—मिस्टरअनवरारटी साहब ने आया से पूछा कि तुमने सूटर साहब के साम्हने यह इज़हार दिये थे या नहीं ? उ०—हां मैंने सब इज़हार दिये परन्तु मैं बीमार थी डाक्टर सावर्ड साहब इसबात को खूब जानते हैं और उन्होंने मेरा इलाज किया था॥

सरजन् बेलनटायन साहब के प्रश्न॥

प्र०—तुमने पचास रुपये क्या कियेथे ? उ०—मैंने रमज़ान के महीने में फकीरों को खाना खिलाया। प्र०—क्या उस वक्त तुम और तुम्हारे पति एकही मकान में रहते थे ? उ०—हां साहब एकही मकान में रहते थे। प्र०—क्या उस को तुम्हारे इस पचास रुपये का हाल मालूम होगया था ? उ०—हां साहब मैंने कहदिया था। प्र०—तुमने कुलकैफियत इन रुपयों की बयान करदी थी ? उ०—बहुत रोकर उत्तर दियाऔर एक मुट्ठा कागज़ों का निकाला कि यह मेरे सारटीफिकट हैं साहब मैं झूंठ नहीं बोलती हूं मैं पांच मरतबे इंगलिस्तान होआई हूं इस बात को सुन कर सम्पूर्ण इजलास हंसने लगा। प्र०—वह जो सौ रुपये पहिले तुमको महाराज से प्राप्त हुये थे उसका भी हाल तुमने अपने पति से बयान किया था ? उ०—हां मैंने कहा था करीम को और मुझको दो सौ रुपयों में से आधा २ मिला है और यह भी कहा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

था कि यह रुपया महाराज ने अपने विवाह के इनाम में मुझको दिया है। प्र०—हमें मालूम हुवा कि तुमने अपने पति से यह नहीं कहा कि महाराज ने यह रुपया वास्ते जहर देने करनैलफियर साहब के बतौर साजिश के दिया है? उ०—विष देने का तो महाराज ने कुछ मुझसे चरचा नहीं किया था। प्र० तुमसे महाराज ने इशारे में कहाथा कि करनैलफियर साहब को जहर दो? उ०—मुझसे तो कोई बात ऐसी नहीं कही। प्र०—जब तुम तीसरी बार गई थी तो तुमसे कुछ इसके बारे में कहा तो था? उ०—यह बात तो मुझसे नहीं कही थी कि जहर दो परन्तु उनके कहने से कुछ सन्देह हुवा था। प्र०—तुमने अपने पति से साफ २ क्यों न कहा कि महाराज हमसे ऐसा कहते थे? उ०—मुझको एक बाजारी खबर मालूम हुई इस सबब से मैंने यह बात जाहिर न की। प्र०—अच्छा तुम यह बताओ कि महाराज के कहने से तुम क्या समझी थी? उ०—मैं कुछ जहर की निस्बत नहीं समझी थी। प्र०—अच्छा महाराज और सालिम की बातों से तुम को विष देने का खयाल हुवा था? उ०—हां मुझको कुछ संदेह हुवा था और मैं इसी वास्ते महा भयभीत हुई थी। प्र०—अच्छा जब तुम अतिभयभीत हुई थी तो फिर किस वास्ते अपने पति से उसकी इत्तिला नहीं की? उ०—मैंने केवल इतनाही अपने पति से कहा था कि साहब के दिल फेरने के वास्ते महाराज कुछ देना चाहते हैं कुछ जहर देने के विषयमें मैंने बयान नहीं किया। प्र०—तुमको निश्चय था कि केवलमहाराज करनैलफियर साहब के दिल को फेरना चाहते थे या उनका मतलब जहर देने से भी था? उ०—मैं उनका मतलब जहर देने से समझी थी क्योंकि मैंने पेडरू और रावजी हवालदार को बातें करते सुना था प्र०—क्या तुमको पेडरू और रावजी के कहने से मालूम हुवा था कि महाराज विष दिया चाहतेहैं या तुमको सालिम और महाराज

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

के कहने से साबित हुआ था? उ०—नहीं मुझको केवल पेडरू और रावजी की बातों से मालूम हुआ था। प्र०—अगर यह दोनों तुमसे कुछ बात न कहते तो तुमको क्या सन्देह न होता? उ०—अगर यह दोनों न कहते तो मुझको विषकी निस्बत कुछ खयाल न होता। प्र०—तुमको पेडरू और रावजी ने जहर के विषय में कब कहा था? उ०—वह महाराज के बड़े हितू हैं। प्र०—मैं यह पूछता हूं कि उन दोनों ने तुमसे कब कहा था? उ०—पेडरू और रावजी ने मुझसे कुछ नहीं कहा था वह दो शख्स और हैं जिन्हों ने मुझसे कहा था। प्र०—तुमने अभी हमसे कहा था कि पेडरू और रावजी ने हमसे कहा था? उ०—मैंने सोच समझ के नहीं कहा। प्र०—क्या तुम इस समय बदहवास हो। उ०—मैं अच्छी हूं परन्तु मेरे हाथ पांव इस समय गिरे जाते हैं? प्र०—अच्छा अगर पेडरू और रावजी ने तुम से नहीं कहा फिर उन दोनों मनुष्यों का नाम बताओ। उ०—उन दोनों शख्सों का नाम करीम और काजी है। प्र०—उन्हों ने तुमसे कब कहा था? उ०—जब मैं महाराज के यहां तीसरी मरतबे गई थी उससे एक महीना पहिले उन्हों ने मुझसे फकत यह बयान किया था कि महाराज किसी साहब को विष देना चाहते हैं। प्र०—तुम केवल इस बातसे कि किसी साहबको जहर देना चाहते हैं फियर साहब का नाम क्योंकर समझ गईं? उ०—मैंने एक क़रीने से समझा कि महाराज को सिवाय करनैल साहब के और किसी से प्रयोजन नहीं है। प्र०—फिर तुमने साहब से क्यों न कहा कि महाराज आप को विष देना चाहते हैं? उ०—यह बात सिर्फ मैं विचार से समझी थी किस निश्चय पर साहबसे बयान करती प्र०—मुझको उत्तर दो कि तुमने साहब से कहा या नहीं? उ०—नहीं कहा। प्र०—क्या तुमको यह खयाल न हुआ कि अपने स्वामी के प्राण को इतनी इत्तिला करदेने से चाहे वह

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

खयाली हो बचालें? उ०—मुझको यह खयाल नहीं था कि कोई नौकरों में से विष देगा नहीं तो मैं अवश्यही इत्तिला कर देती। प्र०—क्या तुमको कुछ भी इसका खयाल नहीं था कि फियर साहब के नौकर साहब को ज़हर देंगे? उ०—हां मैं सागन्द खाके कहती हूं कि मुझको इसका खयाल न था। प्र०—तुमने पेडरू और रावजी का जो नाम लिया था वह किस वास्ते लिया था? उ०—मैंने इस सबब से नाम लिया था कि वह महाराज के हितू और उनका भेद जानने वाले हैं परन्तु मुझको यह विश्वास नहीं था कि पेडरू और रावजी साहब को विष देंगे। प्र०—तुमको क्यों निश्चय न था? उ०—मैंने आज तक नहीं सुना था कि किसी नौकर ने अपने मालिक को सरकार की अमलदारी में ज़हर दिया हो। प्र०—फिर तुम को किस बात का भय हुवा? उ०—मुझको इस बात के सुन ने से भय हुआ। प्र०—जब तुम इस बात को झूठ समझती थी तो फिर तुमको क्यों भय हुआ मैं इस वास्ते डरी थी कि कहीं महाराज मुझ को मरवा न डालें। प्र०—अगर तुमको अपने मारे जाने का खौफ था तो तुमने किस वास्ते फियर साहब से इत्तिला नहीं की? उ०—मैंने इसलिये इत्तिला नहीं की कि मुझको यकीन था कि कोई बंगले पर साहब को नहीं मार सकेगा। प्र०—तुमने अपने पति से विष देने के विषय में कुछ कहा था? उ०—हां मैंने कहा था कि महाराज कर-नैल फियर साहब को विष देना चाहते हैं। प्र०—तुमने यह कब कहा था? उ०—मुझको नहीं मालूम। प्र०—अच्छा खयाल करके याद करो कि कब कहा था? उ०—मैंने अपने पति से विष देने के विषय में कभी नहीं कहा था। प्र०—अच्छा खयाल करो कि कभी तुमने कहा था या नहीं? उ०—मुझको बिल्कुल याद नहीं पड़ता कि मैंने विष के विषय में कुछ कहा था या नहीं। प्र०—अच्छा तुमको क्या याद पड़ता है? उ०—इतना मैंने अपने पति से बयान किया था कि मुझसे महा-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

राज ने फकत इतना कहा है कि साहब को कोई ऐसी वस्तु देना चाहिये जिससे उनका दिल फिर जाय। प्र०—यह तुम ने कब कहा था ? उ०—जिस रोज़ मैं तीसरी बेर महाराज के यहां गई थी उसके एक दिन पीछे मैंने कहा था॥

अब साढ़े चार बजे का समय होगया था सरजन्ट वेलन टायन साहब ने साहबान कमीशन से कहा कि इजलास का बरखास्त होना अवश्य है क्योंकि जो आयासे मैं और अधिक प्रश्न करूंगा तो संध्या होजावेगी पस प्रेसीडेन्ट साहब ने इजलास को बरखास्त किया॥

कचहरी के साहबान की वार्त्ता का बयान॥

टाइम्स आफ इण्डिया के खास कारस्पाण्डेण्ट के लेख से प्रगट हुआ कि इस मकान में जहां कमीशन का इजलास शुरू हुआ पहले साहब कप्टन लिस्ट मजिस्ट्रेट की कचहरी थी परन्तु कमीशन के लिये कुछ थोड़े कमरे नये बनाये गये हैं सम्पूर्ण कचहरी का लम्बाव चौड़ाव सत्तर फुट लम्बा और पच्चीस फुट चौड़ा और पूर्व की ओर एक ऊंचा चबूतरह बना है जहां कि कमीशन के बैठने की जगह नियत है साढ़े दश बजे सलामी की तोपें दगीं उससे मालूम हुआ कि अब मेम्बरान कमीशन वाले इजलास के आनेवाले हैं पहले श्रीमान् महाराजा सेंधिया वहां आये और थोड़ी देर के उपरान्त सरल्यूइस पीली साहब और मल्हरराव एकहीगाडी परसवार होके आये और जो खास जगह गायकवारके वास्ते पहिले से नियत हुई थी वहां जाकर बैठे सररिचर्ड कौच साहब की कुर्सी बीच में थी और उनके दाहिनी ओर श्री युत महाराजा सेंधिया और बायें तरफ श्री मान् महाराजा जयपुर बैठे हुये थे महाराजा सेंधिया अतिउत्तम वस्त्र पहिने हुये थे उनके आभूषण स्त्रियों के आभूषणोंसे भी सर्वोपरि थे श्रीयुत महाराजा जयपुर जो अपने देशके उत्तम प्रवन्ध करने केलिये विख्यातहैं उन्होंने वास्तवमेंउत्तमही प्रवन्धकररक्खा है

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उनकी सूरत से मालूम होताथा किवह निहायत होशियार और जहीन और बुद्धिमाहैं आंखोंपर सोनेकी ऐनक लगायेहुये उनकेमिजाज और सुन्दर बुद्धिसे मालूम होताथा किउनका तशरीफ लाना इसमुकद्दमेकेलिये बहुत अच्छा होगा गवाह आज के दिन अमीना थी इसकी सूरत के देखने के पहले जब मैंने इसका प्यारा नाम सुना था तो मैंने समझा कि कोई परिस्तान की परी या स्वर्ग की अप्सरा होगी परंतु अफसोस अमीना यद्यपि तेरी आंखें काली हैं परंतु उसकी सियाही ऐसी खराब है कि अंधियारी रात की सियाही को भी उसको नहीं पहुंचती है अमीना बुड्ढी है और मालूम होता है कि वह हुक्का पीती है क्योंकि इजहार के समयइसने यह बयान किया किमेरी समझ अच्छी नहीं है यह पांच मरतबा इंगलिस्तान को भी गई है और इसके पास बहुत से सारटीफिकट भी हैं ॥

दूसरे दिन का इजलास ॥

बड़ौदा २४ फरवरी सन् १८७५ ई० ॥

आजके दिन नियमित समय पर मेम्बरान कमीशन मौजूद हुये पहले दिनसे आजबहुतमनुष्य थे और सूर्य्य की गरमीसे दिनभर बहुत गरमीरही ग्यारह बजेके समय सरल्यूइस पीली साहबके साथ मल्हरराव गायकवार आये महाराजा सेंधिया सफेद कपड़े पहिने हुयेथे और पीली पगड़ी मरहठी सिरपर बांधे हुये थे बाकी और मेम्बरान कमीशन कपड़े पहिले दिन के सदृश पहिने हुये थे सरजेन्ट बेलनटाइन साहब बदस्तूर आया से प्रश्न करते रहे खास इजहारात जो अमीना से लिये गये वह यह थे कि खान बहादुर अकबर अली या उनके लड़के अब्दुल अलीने अमीना को धमका कर उससे इजहारात लिये हैं आज आयाके इजहारातमें हास्य होता रहा जब सरजन्ट बेलनटायन साहब ने आया से पूछा कि तुमको गायकवार के पास जाने से क्यों इन्कार था तो अमीना

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ने इजलास के रूबरू अपने जुग़राफ़िये की विद्या को प्रगट किया उसने कहा कि मैं बड़ौदे को नहीं जानती हूं यह कह कर फूट२ रोने लगी और कहने लगी कि मैंने कानपुर, नीमच जबलपुर, और ग्रमला और इङ्गलिस्तान को देखा है और इन स्थानों में बहुत दिन रही हूं यहां तक कि अरबतक भी पहुंच गई थी कि सरजन्ट बेलनटाइन साहब उसको ठहरा कर फिर बड़ौदे में लेआये अमीनाने कहा कि मैं सफ़र के मुआ-मले में सरजन्ट बेलन टायन साहब से कुछ काम नहीं हूं जब अकबर अली के विषय में उससे पूछा गया तो वह बोली कि मैं अकबरअली को जानती हूं फिर फ़ैजू गवाही की जगह पर आया उसकी डाढ़ी बहुत सुन्दर और काली थी और सब गवाहों में यही गवाह बहुत सुन्दर था उसने कहा कि एक मरतबा मैं आया के साथ गायकवार के यहां गया था परंतु मेरे साम्हने महाराजने कोई जादू का ज़िक्र नहीं किया फिर एक ईमान्दार गाड़ीवाला गवाही के वास्ते आया उसनेसाफ़२ जिस तरह उसको गाड़ी किराये की गई थी और जिस तरह अमीना महाराज के यहां गई थी सब बयान किया अन्त को अपने छूटने के वास्ते सरकार से दरख़ास्त की सरजन्ट बेलन टाइन साहब ने गाड़ीवान से पूछा कि तुमको सरकार ने किस वास्ते क़ैद किया था उसने उत्तर दिया मुझे इसलिये क़ैद किया था कि मैं इस कैफ़ियत को किसी से बयान न करूं जो कि अब मेरे इज़हारात सर-कार के सामने लेलिये गये अब मुझको घरजाने का हुक्म हो एक बड़ी हंसी की बात इसके इज़हार में हुई अर्थात् जब सरजेन्ट बेलनटायन साहब ने पूछा कि तुम्हारे घरमें कौन है और तुम्हारा विवाहहुवा या नहीं पहिले तो उसने उत्तर दिया कि मेरी शादी नहीं हुई है फिर थोड़ी देरके उपरांत याद करके कहा कि मेरा विवाह हो गया है—शेख करीम का इज़हार इस तरह पर हुवा कि मैं आयाके साथ एक

6482.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

करतवे महाराज के यहां गया था परंतु मुझको स्मर्ण नहीं कि महाराज ने आया से क्या कहा॥

इन दो दिनों में चार गवाहों के इजहार पूरे लिये गये एक की गवाही तो निहायत इस मुकद्दमे में फायदे मन्द रही और बाक़ी तीन गवाहों के इजहारात आपस में प्रतिकूल हैं और एक दूसरे को खण्डन करते हैं यह बात साहिबान कमीशन को खूब मालूम होगई कि आया ज़रूर महाराज के पास गई परन्तु यह हम नहीं कह सक्ते हैं कि अमीना आया को महाराज ने फियर साहब के विष देने की सलाह और मशवरह केवास्ते बुलवाया था या मेम साहिबा के अनुकूल करने के वास्ते आज के दिन गायकवार अति चिन्तित मालूम होते थे आया से बेलन टायन साहब ने फिर प्रश्न करने शुरू किये। प्र०—तुम को स्मर्ण है कि किसदिन फियर साहबको जहर दियागया था? उ०—मुझको याद नहीं। प्र०—तुमको उस दिनकी कैफियत मालूम है? उ०—मुझको नहीं मालूम। प्र०—जिस दिन उनको जहर दिया गया था तुमने उसी दिन खबर पाई थी या नहीं? उ०—नहीं मुझको कुछ दिन के पीछे मालूम हुवा था। प्र०—तुम उस समय कहां थीं जिससमय तुमको खबर मिली थी? उ०—मैं रेजीडन्सी में थी। प्र०—तो तुमको अवश्य स्मर्ण होना चाहिये? उ०—नहीं साहब मैं इस हाल को नहीं जानती हूं और मुझको उस दिन खबर नहीं मिली थी। प्र०—जब तुमको खबर मिली थी तो तुमने किसी औरसे भी कहा था? उ०— मैंने किसी से बयान नहीं किया। प्र०—तुमको मालूम है कि तुम्हारे पति के इजहारात करनैल फियर साहब ने लिये थे? उ०—हां मुझको मालूम है। प्र०—तुमको यह याद है कि तुमने अपने पति से बयान किया था कि साहब को विष दिया गया है उ०— मुझको याद नहीं। प्र०—अच्छा कल जिस समय से

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

तुम्हारे इज़हारात लिये गये हैं तुमने अपने पति से मुलाक़ात की या नहीं ? उ०—मुझको इसकी बड़ी मनाही है। प्र०—किसने तुमको मना किया ? उ०—खान बहादुर ने प्र०—कल से कोई पुलिस वाला भी तुम्हारे पास आया है ? उ०—नहीं कोई नहीं मैं सच कहती हूं कि मुझ से और किसी से बातें नहीं हुईं। प्र०—तुमने कल यह बात जो कही थी कि मैंने काशी और करीम से सुना था कि महाराज चाहते हैं कि फ़ियर साहब को ज़हर दिया जाय यह बात सच है ? उ०—हां यह बात सच है और जो कुछ मैंने कहा है उसे न बदलूंगी। प्र०—यह बात सच है कि जब महाराज से तुम से तीसरी मुलाकात हुई थी तो तुम से महाराज ने कहा था कि करनैल फ़ियर साहब को तुम्हारे हाथ से विष दिया जाय ? उ०—नहीं साहब मुझसे नहीं कहा और जो कुछ कि ठीक हाल था मैंने पहिलेही आप से बयान किया। प्र०—तुमने जो महाराज के प्रश्न करने पर क्रोधित होकर इन्कार किया था तो वह गुस्सा और इन्कार किस सबब से था ? उ०—मैंने केवल यह कहा था कि तुम साहब के साथ किसीतरह की बदसलूकी न करना नहींतो तुम पछताओगे। प्र०—तुमने जो बदसलूकी का शब्द कहा तो उससे क्या मतलब था ? उ०—मेरा मतलब उस से था जो महाराज ने मुझ से कहा था। प्र०—किसी को तुमने अपने इज़हारात पहिले भी दिये थे ? उ०—हां मैंने सूटर साहब और खान बहादुर के साम्हने अपने इज़हारात दिये थे। प्र०—तुमने कब अपने इज़हारात उनके रूबरू दिये थे ? उ०—जब सूटर साहब बम्बई से आये थे। प्र०—तुम को याद है कि तुम्हारे इज़हारात सूटर साहब के रूबरू लिख लिये गये थे ? उ०—पहिली बेर मेरे इज़हारात नहीं लिखे गये थे। प्र०—पहिली मर्त्तबा जब तुम्हारे इज़हार लिये गये और लिखे नहीं गये उस समय कौन २ लोग थे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उ०—खान बहादुर १ गाड़ो वाला २ और एक लड़का ३। प्र०—खान बहादुर मेंसे कौन था क्या अकबर अली था ? उ०—मैं तो केवल खान बहादुर को जानती हूं मैं उनका नाम नहीं जानती। प्र०—क्या वह बाप था या बेटा था ? उ०—मैं इस बातको नहीं जानती मैं तो खान बहादुर को फ़ौरजट साहब के समय से जानती हूं मैंने उनको बम्बई में देखा है अकबर अली पहचानने के वास्ते इजलास में बुलाये गये उन्होंने तुरन्तही उसको पहिचान लिया सरजएट-बेलन टायन साहब ने अकबर अली से कहा कि आप इस गर्म कचहरी में जियादः देर तक न रहिये (इस बात को सुनकर सम्पूर्ण इजलास हंसपड़ा) प्र०—तुम कै दिन तक सूटर साहब को अपने इज़हारात दिया की ? उ०—दो दिनतक। सरजएट बेलन टायन साहब ने इजलास के तरफ़ मुख़ातिब होकर कहा कि मुझको आया के इजहार से मालूम होता है कि यह क़ैद की गई थी मुतरज्जिम साहब आप इससे पूछिये कि यह क़ैद रही थी या नहीं मुतरज्जिम साहब ने उससेपूछा। प्र०—क्या तू क़ैदथी ? उ०—हां मैंक़ैद रही थी। प्र०—अकबर अली के रूबरू अपने इजहारात देने से पहले तुम क़ैद रही थी ? उ०—हां मैं अपने इजहारात देने से पहले क़ैद हुई थी। प्र०—मिस्टर मैलवल साहिब ने कहा कि तुम अपने इजहार देने से पहिले क़ैद हुई थी या पीछे इसको व्यौरे वार बयान करो ? उ०—मैंने अकबर अली से कहा कि मैं बहुत बीमार हूं और जब मुझको आराम हो जावेगा तब मैं अपने इजहारात दूंगी। प्र०—यह हमारा जवाब नहीं है हमारे प्रश्न का उत्तर दो ? उ०—मैं उसी दिन क़ैद की गई थी। प्र०—मुतरज्जिम साहब ने आया से पूछा कि जब तुमने अकबर अली को अपने इजहार दिये तो तुम उस से पहिले क़ैद हो गई थी या नहीं ? उ०—मैंने अकबर अली से कहा कि मैं बहुत बीमार

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

हूं जब मुझको आराम हो जावेगा मैं तुमको जवाब दूंगी सरजन्ट बेलन टायन साहब ने कहा कि यह मेरे प्रश्न का उत्तर नहीं है जब तुमने अकबर अली के रूबरू अपने इज़्हार दिये थे तो तुम बीमार थी परन्तु यह बताओ कि तुमको उसके पहिले कैद किया या पीछे। उ०—मैं कैद न थी मैं अपने घर में आराम से सो रही थी (मिस्टर मैलवल साहब ने कहा कि यह प्रश्न के जवाब को नहीं समझी इस से फिर पूछो उस दशा में कि जब यह बीमार थी कैद भी थी) प्र०—सरजन्ट बेलन टायन साहब ने कहा कि मैं केवल यह पूछना चाहता हूं कि जब अकबरअली ने तुमसे इज़्हार लिये थे उस वक्त तुम क़ैद थी या नहीं? उ०—मैं अपने पलंग पर बीमारी के कारण बेहोश पड़ी थी मुझको खबर नहीं। प्र०—इसका जवाब दो कि जिस समय अकबरअली ने तुमसे इज़्हारात लिये उस वक्त तुम कैद थी या नहीं? उ०—जब अकबर अली मेरे पास आया तो उसने मेरे इज़्हारात लेना चाहा परन्तु मैं बहुत बीमार थी इसलिये उसको अपने इज़्हारात न दे सकी मुझसे वह कह गया कि तुम यहां से न जाना। सररिचर्ड मीड साहब ने कहा कि इसके उत्तर से प्रगट है कि वह क़ैद न थी। प्र०—सरजन्ट बेलन टायन साहब ने फिर पूछा कि तुमने जब अपने इज़्हारात दिये उसके पीछे तुम अपने घरमें रहीं या सरकार को हवालात में सुपुर्द की गई? उ०—मैं अपने मकान में थी और मेरे मकान के बाहर पहिरा था मेरे पास मेरा पति नहीं आ सक्ता था इसकेदो दिन के उपरान्त मैं अस्पताल को गई। प्र०—तुमने अकबर अली से कहा कि मैं बहुत बीमार हूं? उ०—हां मैंने कहा था। प्र०—तुमने अपने इज़्हारात अकबर अली को पहिले दिये थे या सूटर साहब को? उ०—मैंने अकबर अली से कुछ भी नहीं कहा था। प्र०—अच्छा अभी तो तुमने कहा था कि मैंने अकबर अली को

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

इजहारात दिये और उस वक्त एक लड़का और एक गाड़ी वाला मौजूद था? उ०—हां यह बात सच है। प्र०—बहुत अच्छा क्या तुमने अपने तीनों मरतबे के जानेका हाल अकबर अलीसे न कहा होगा? उ०—नहीं मैंने कुछहाल नहीं कहा। प्र०—तुमने क्यों नहीं कहा? उ०—मैं उस समय बहुत बीमार थी आप डाक्टर सीवर्ड साहब से पूछ लीजिये। प्र०—तुमने सूटर साहब को कितने दिन के उपरान्त अकबर अली के देखा? उ०—दो दिन के पीछे। प्र०—तुम उस समय कहां थी? उ०—मैं अस्पताल में थी। प्र०—वहां कोई सिपाही था? उ०—वहां तो नहीं था परन्तु जबमैं बोबी साहिब कीमेम साहिबाके बंगलेमें आगईथी एक सिपाही तैनातथा। प्र०—जिसवक्त सूटर साहब आये और कौन उसवक्तथा? उ०—वहां कईसिपाहीथे और अकबरअली और अब्दुलअली थे। प्र०—कितने सिपाही थे? उ०—मुझको याद नहीं। प्र०—सूटर साहब ने तुम्हारे इजहारात लिख लिये थे? उ०—लिख लिये थे। प्र०—क्या तुमने अपने सम्पूर्ण इजहारात दिये? उ०—हां साहब दिये। प्र० कुछ सूटर साहब ने विष दिये जाने के विषय में तुमसे पूछा था? उ०—हां साहब पूछा था। प्र० तुमने उसका क्या उत्तर दिया? उ०—मैंने कहा कि मैं कुछ नहीं जानती। प्र०—तुम से सूटर साहब ने यह भी पूछा था कि महाराज ने विष देने के विषय में तुमसे कुछ कहा था? उ०—हां पूछा था परन्तु मैंने कुछ उत्तर नहीं दिया। प्र०—अब यह बताओ कि अकबर अली या अब्दुल अली ने तुमसे कहा था कि महाराज ने विष देने के विषय में कुछ तुमसे कहा है जल्द बताओ? उ०—मुझको उन्होंने धमकाया था कि तुमसे अगर कहा है तो जल्द बताओ और मुझसे इकरार कराना चाहा परन्तु मुझकोजो कुछ मालूमथावहबयान किया। प्र०—सूटरसाहबके रूबरू उन्होंने तुमकोधमकायाथा? उ०—मुझको उन्होंने नहीं धमकाया। प्र०—तुमने अभी क्यों

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कहा था कि मुझको धमकाया था ? उ०—मैंने नहीं कहा सरजन्द बेलनटायन साहब ने उसके पहिले इज़हारात को मुतरज्जिम साहबके इज़हारात से मिलाया और साहब प्रेजीडन्टके इज़हारात भी मिलाये गये तो उसमें पायागया कि उसने बयान किया था कि मुझे धमकाया। प्र०— सर-जन्टबेलन टायन साहब ने फिर आया से पूछा कि तुमने क्यों कहा था कि अकबर अली और अब्दुलअलीने मुझको धमकाया था यह बात सच है या झूठ है ? उ०—यह बात झूठ है मुझे तो किसीने भी नहीं धमकाया मैंने शायद कहा होगा परन्तु मुझे तो खयाल पड़ता है कि मुझसे अकबरअली और अब्दुलअली ने सिर्फ तीनही प्रश्न पूछे थे धमकाया नहीं था। प्र०—अब तुम्हारा निगहबान कौन है ? उ०—अबमैं कैद हूं। प्र०—क्या तुम अकबरअली और अब्दुलअली की निगहबानी में हो ? उ०— हां मैं उनकी निहाबानी और थोड़े सिपा-हियों के पहिरे में हूं। प्र०—जब तुम्हारे इज़हारात सूटर साहब ने लिख लियेथे तो तुम्हारे चलते समय तुमको सुनाये थे या नहीं ? उ०— उन्होंने मुझे इजहारात नहीं सुनाये। प्र०—फिर तुम्हारे इज़हारात और किसीके रूबरू भी सूटर साहब के पीछे लियेगये ? उ०— हां एक वकील या बैरै-स्टर के रूबरू मैंने इज़हारात दियेथे मैं वकील और बैरै-स्टर में अन्तर नहीं जानती हूं। प्र०—तुमने सूटर साहब के रूबरू और भी कभी इजहारात दिये थे ? उ०—हां साहब दिये थे जब कि मैं अस्पताल में थी मैं आपके रूबरू कभी झूठ न बोलूंगी मैं इस सभा को ईश्वर के बराबर जानती हूं प्र०—क्यामिस्टर सूटर साहब तुम्हारेपास अस्पतालमें आयेथे? उ०—मैंने आपही सूटर साहब को अस्पताल में बुलवा भेजा था और मैंने उनसे कहा कि जब मुझ को आराम होजावेगा तो मैं अपने सम्पूर्ण इजहारात दूंगी। प्र०—तुमने किसको सूटरसाहबके बुलवाने को भेजाथा ? उ०—मैंने डाक्टरसीवर्ड

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

साहब से कहा था मुझे नहीं खबर कि उन्होंने किसको भेजा था। प्र०—क्या वह अकबरअली था या अब्दुलअली था जिस को तुमने भेजा था ? उ०— साहब मैं सिपाहियों के पहिरे में थी मुझको खबर नहीं कि फ़ुटरसाहब के बुलाने को कौन गया था। प्र०—अब मुझको थोड़े से प्रश्न तुम से करने को और बाक़ी है तुम महाराज के पास पहिली बेर क्यों कर-गई ? उ०—मैं बड़ौदे में पहिले कभी नहीं आई और मुझ को बड़ौदे के हालात नहीं मालूम और रोकर कहनेलगी कि मैं इङ्गलिस्तान पांचबार हो आई हूं और कानपुर जब्बलपुर और शमला और नीमच और और जगहपर बहुत दिन तक रही हूं और अरब भी हो आई हूं। प्र०—सरजन्टबेलनटायनसाहब ने यह सुनकर कहा इस में संदेह नहीं है कि तुम्हारे न होने से इनमुकामों की रौनक में फ़र्क़ आगया है अगर तुम सचसच हमारे सवालों का जवाब दोगी तो तुम इन देशों में फिर चली जासक्ती हो परन्तु अब यह बताओ कि तुम पहिलीबेर महाराज की हवेलीमें क्योंकरगई ? उ०—सालिम और फ़ैज़ू बहुत दिनों से तकाज़ाकर रहेथे कि महाराजके पास चलो परन्तु मैंने इन्कार किया। प्र०—तुम किसवास्ते महाराजके पास जाने से इन्कार करती थी ? उ०—मैं नहीं जानती थीकि महाराजके यहां क्योंकर जाते हैं इसवास्ते मैंने इन्कार किया था मैंने सालिमसे कहा कि तुम मेरे साथचलो। प्र०—तुम दामोदरपन्थ को जानती हो ? उ०—मैं नहीं जानती। प्र०—यह बात सच है कि तुम फ़ैज़ू और सालिम के कहने से जबरदस्ती गई थी ? उ०—हां साहब॥

सरकार के वकील ने फिर आया अमीना के इज़हार लिये॥

तुमने अभी कहा था कि मैंने किसी वकील या बैरिस्टर के रूबरू अपने इज़हारात दिये थे यह बात सच है मिस्टर क्लीवलैंड साहब की तरफ़ मुखातिब होकर आया से पूछा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

क्या यही वकील थे।? उ०—हां साहब यही वकील थे। प्र०—जब तुम अस्पताल में थी तो तुम्हारे पास अकबर अली या अब्दुल अली आये थे। उ०—हां साहब आये थे। प्र०—सूटरसाहब के इजहार देने के पीछे फिर भी कभी अकबरअली तुम्हारे पास आये थे? उ०—कभी नहीं आये। प्र०—कोई और पुलिस का अफ़सर तुम्हारे पास आया था? उ०—कोई नहीं आया था मैं पुलिस के सिपाहियों के पहिरे में थी। प्र०—तुम किस अस्पताल में थी? उ०—मैं रजमट के अस्पताल में थी। प्र०—तुम्हारा कौन डाक्टर इलाज करता था? उ०—मुझ को नाम उसका नहीं मालूम परन्तु वह रजमट का डाक्टर था और डाक्टर सीवर्डसाहब भी आया करते थे। प्र०—तुमने पहिले कहा था कि कि खानबहादुर हमारे पास अस्पताल में एक लड़के को साथ लेकर आया था यह बात सच है? उ०—हां साहब यह बात सच है। प्र०—क्या तुमने पहली मर्त्तबा खानबहादुर को देखा था? उ०—हां साहब पहली मर्त्तबा देखा था। प्र०—तुमने उसको कहां देखाथा? उ०—मैं उस समय अपनी चारपाई पर अपने घरमें पड़ीथी। प्र०—तुम उसगाड़ी वालेको जानतीहो जो अकबरअलीके साथ आयाथा? उ०—हां साहब जानतीहूं। प्र०—उसका क्या नाम है? उ०—उसका नाम सिव्वीया कोबी है। प्र०—अकबरअली के साथ कौन लड़का था? उ०—मेरा नौकरथा जिसका नामछुट्टू है। प्र०—अच्छा वहबातें बताओ जो अकबरअली से और तुम से उस वक्त हुईं? उ०—मैंने अकबरअली से कहा कि मैं बहुत बीमार हूं जब मुझ को आराम होजावेगा तोमैं सब हाल तुमको बताऊंगी। प्र०—क्या अकबरअली के बातें करनेके पीछे तुमको पहिरे में कर दिया था? उ०—हां साहब पहिरे में करदिया था। प्र०—उसकेपीछे तुमने अपने पतिसे मुलाक़ात कीया नहीं? उ०—मेरे पासमेरे पतिकेआनेकी मनाही होगई थी। प्र०—जबकि

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

तुम तीसरे दफे महाराज की मुलाकात के गई तो तुम महाराज से क्यों डरी ०उ—मुझसे काज़ी और करीम ने जो बात कही थी उसका खयाल हुवा। प्र०—जो बात महाराज ने तुमसे की उस बात से और काज़ी और करीमकी बातसे एकही मतलब पाया जाता था ? उ०—पहिले तो मैं नहीं समझी परन्तु उसके पीछे मुझको वही मतलब मालूम हुवा। प्र०—क्या तुम अंगरेज़ी बोलतीहो ? उ०—मैं अंगरेज़ी नहीं बोलती परन्तुकुछ समझ लेतीहूं हमारी मेम साहिबा कभी अंगरेज़ी में बोलती हैं और कभी हिन्दुस्तानी में। प्र०—तुम तीन मर्त्तबा जो महाराज के पास गई थी तो तीनों मर्त्तबा अपनी मेम साहिबा से छुट्टी लेके गई थी या ग़ैर हाज़िर होकर गई थी ? उ०—मैंने दो मर्त्तबा तो रुख़सत ली और एक मर्त्तबा गैरहाजिर होकर गई। प्र०—तुमनेबयान किया है कि हमने काज़ी और करीम के ज़बानी ज़हर दिये जाने काहाल सुना था अच्छा यह बात तुमने सूटर साहब के रूबरू भी कही थी ? उ०—हां साहब कही थी॥

साहब प्रेज़ीडएट ने पूछा कि गाड़ी वाले का नाम तुम जानती हो ? उ०—मैं गाड़ीवान को नहीं जानती और न मैं उसका नाम जानती हूं थोड़ीदेर के पीछे याद करके कहा कि शायद उसका नाम सन्दल है। प्र०— तुमने कभी संदलको देखा है?उ०—मैंने संदलको कभी नहीं देखा परन्तु एक दिन जब वह गाड़ीका किराया करीमसे लेने को आया था तब देखाया। प्र०—तुमने अभी हमसे कहा है कि मैंने विष दिये जाने के विषयमें सुना था अच्छा यहतुम बताओ कि तुमने अपने तीसरे मर्त्तबे महाराज के यहां जाने से कितने दिन पहिले सुना था ? उ०—मुझको नहीं याद परंतु मैं जानती हूं कि बीस पच्चीस दिन पहिले मैंने सुना था प्र०—यह बात तुमने रमज़ान के महीने में सुनी या अन्त में ? उ०—मुझको इस वक्त याद नहीं परंतु करनैल फ़ियर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

साहब के जहर दिये जाने से बीस पच्चीस दिन पहिले मैंने सुनी थी प्र०—फिररिचर्ड मीडसाहबने पूछाकि तुम रमजान के महीने में महाराज के पास कितने दिन पहिले फियर साहब के जहर दिये जाने से गई थी? उ०—मैं नहीं बता सक्ती कि मैं कितने दिन पहिले गई थी क्योंकि मुझको यह बात याद नहीं है परन्तु मैंने जहर दिये जाने के पहिले यह बात सुनी थी॥

फैजूरमजान का इज़हार।

फैज रमजानने बयान कियाकिमैं चौकीदार रेजीडन्सी का हूं और बीस बरससे नौकरहूं मुझ को वह समय मालूम है कि जब यहां पहिले कमीशन हुई थी मैं आया के साथ एकबेर गाड़ीमें सवार होकर महाराजके यहांगयाथा और हम दोनों चम्पानियर दरवाजेसे महाराज की हवेली में जीने पर चढ़ कर एक ऊपर के कमरे में गये और हम फर्श पर जाके बैठ गये उस कमरेमें एकबड़ा आईना रक्खा हुवा था और एक चौकी भी रक्खी हुई थी सालिमने जा कर महाराजसे हमारे आनेकी इत्तिलाकी महाराज आकर उसचौकीपर बैठ गये महाराजने आयासे कहाकितुम हमारे पास क्यों नहीं आती हो आयाने उत्तर दियाकि मुजको आने का अवकाश नहीं है फिर महराजने आयासे कहा कि तुम मेम साहिबा से हमारी सिफारिश करदो आया ने उत्तर दिया किमैं मेमसाहिबासे तुम्हारे विषयमें कुछनहीं कहसक्ती इसके पीछे मैंने सलाम किया और कहाकि मुझसे बहुत से आदमी बैर रखते हैं आप मेरे ऊपर मेहरबानी किया करें फिर मैंने अपने लड़के के वास्ते सिफारिश की और फिर हम और आया महाराज से विदा होकर घरको आये॥

सरजन् बेलनटायन साहब के प्रश्न॥

फैजूने कहा मेरा लड़का सवारों में खण्डेराव के वक्त से नौकर है सोलह या सत्रह वर्षकी उमर है उसको बड़ौदे के

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सिक्के के दस रुपये माहवारी मिलते हैं कारनैलफ़ियर साहब ने मेरा इज़हार लिया था परंतु मैं ज़हर दिये जाने के विषय में कुछ नहीं जानता था मैने उसके विषय में कुछ नहीं बयान किया फिर मेरे इज़हार कारनैल फ़ियर साहब ने लिख लिये प्र०—मैलवल साहब ने पूछा तुम्हारे इज़हार लिख जाने के उपरांत क्या हुआ? उ०—मैं हवालात में बन्द किया गया और जबसे हवालात में अकबर अली और अबदुल अली की निगहबानी में हूं मैं रावजी को जानता हूं रावजीने मेरे ऊपर कारनैल फ़ियर साहब के सामने जहर देने का अपराध लगाया था और मुझसे रजीडन्सी के सब नौकर ईर्षा करते हैं सरजन्ट बेलनटायन साहब ने कहा कि जो बातें तुम्हारे और महाराज के मध्य में हुई उसे बयान करो? उ०—सालिम और आया ने मुझसे कहा कि महाराज के पास चलो उस दिन वह साहब के वास्ते डाली लाया था और इससे पहिले भी कईबेर उसने महाराज के यहां चलने के वास्ते मुझसे कहा था आयाभी मेरे साथ चलनेको तय्यार हुई मैंने कुछ उससे नहीं कहा था और आया कोई बच्चा नहीं थी जिसको मैं बहकाता। प्र०—मिस्टर मैलवल साहब ने पूछा कि तुम आया के साथ गये थे इसका इकरार करते हो? उ०-उसने कहा मैं इक़रार करता हूं। प्र०—तुम यहबात क्यों कहतेहो कि मैंने आया कोनहीं बहकाया तुम आयाके साथगये थे। उ०—मैंतो बीसवर्षसे सरकार गवर्न्नमेराट में नौकर हूं मैं श्रीमान् सेंधिया को जानता हूं यदि वह नजानते होंगे तो मैंने सूटर साहब के रूबरू केवल यह इज़हार दिये थे कि मैं आया के साथ गया था॥

सरकार के वकील ने फ़िर फैज़ू का इज़हार लिया॥

फैज़ू वर्णन करता है कि मैं और आया और गाड़ीवान तीनों अस्पताल में गये परन्तु मुझसे और आया से उस वक्त

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

फिर मुलाक़ात न हुई और मैंने अस्पताल में भी कोई बात उस से नहीं की और मेरे रूबरू उससे इज़हारात भी नहीं लिये गये मुझे स्मर्ण नहीं है कि मैंने आया को इज़हार देने से कितने दिनों के उपरान्त अपने इज़हार सूटर साहब को दिये। प्र०—प्रेज़ीडन्ट साहब ने फैज़ू से पूछा तुम महाराज के कौन से महल में गये थे? उ०—हवेली में। प्र०—क्या तुम्हारी दरख़ास्त से तुम्हारा लड़का नौकर हुआ था? उ०—नहीं साहब वह तो खण्डेराव के समय से नौकर था। प्र०—क्या तुम्हारे कहने से खण्डेराव ने नौकर रक्खा था? उ०—जब कि करनैल वायस साहब इंगलिस्तान को जाने लगे तब मैंने उन से दरख़ास्त की थी कि अगर मेरा नाम महाराज के हां करा दो तो मेरे वास्ते अच्छा होगा क्योंकि मेरा इस थोड़े मासिक में यहां गुज़ारा अच्छी तरह से नहीं होसक्ता है मेरी दरख़ास्त को श्रीयुत वायस साहब ने मंज़ूर किया और मुझको महाराज के यहां नौकर रखादिया था दो वर्ष तकमैं बराबर महाराजके यहां नौकर रहा परन्तु जब करनैल फारसाहब आये तब मुझको रज़ीडन्सी में नौकर रक्खा और महाराज से कह कर मेरी जगह पर मेरे लड़के का नाम करा दिया॥

कार भाई पुष्पा भाई के इज़हारात।

इस शख़्स ने इज़हार दिये कि मैं रामचन्द्र हलवाई की शिकरम को हांकता हूं मैं बड़ौदे के सदर बाज़ार में रहता हूं मैं फैज़ू और आया को जानता हूं वह मेरी गाड़ी में सवार होकर गई थी इस बातको एक या सवा वर्ष बीता होगा आया मेरी गाड़ी में शायद आठ बजे रात को सवार होकर गई थी गाड़ीसे उतरकर हवेली के दरवाज़े परगई मैं हवेली के सम्हनेजो मैदान है अपनी गाड़ी कोलिये खड़ा रहा अमीना आया को पहिचानने के वास्ते बुलाया उसको उसने पहिचान लिया॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सरजेन्ट बेलनटायनसाहबके प्रश्न ॥

यह मनुष्य बेलनटायनसाहब के प्रश्नोंका उत्तर देता है कि मैं बाटनसाहबके बंगलेसे जहां मैं अब तक पहिरे में हूं आया हूं मुझको सूटरसाहब ने उस बङ्गले में महाराजके नजरबन्द करने के उपरान्त पकड़ के क़ैद किया था मुझको इस वास्ते पहरे में रक्खा ताकि मैं अपने भेदको किसीसे न कहूं मैंने सिवाय इसके कि इन दोनोंको महाराज की हवेली में पहुंचादिया था और कोई कामबुरा नहीं किया मैंने अपने मालिक से इस बात की इत्तिला करदी थी मैं आया और फ़ैज़ू को पहले से भी जानता था जब कि आया अस्पताल में थी और मेरे इज़हारात लिये गये तब भी मैंने इज़हार दिये थे सूटर साहब ने मुझ से पूछा कि आया को बता दो मैंने उसको पहचान लिया अस्पताल में मैंने केवल आयाही को पाया जबसे मैं क़ैदहूं अपने स्वामी को नहीं देखा ॥ प्र०—क्या तुम से यह कह दिया था कि जब तुम अपनी गवाही देदोगे तब तुम छोड़ दिये जाओगे ? उ०—हां मुझसे कह दिया था कि जब तुम अपनी गवाही देदोगे तो सरकार तुमको छोड़ देगी। प्र०—क्या यह बात तुमसे अकबर अली ने कही थी ? उ०—नहीं मुझसे अकबर अली ने नहीं कही थी मेरे इज़हारात साहब ने लिये थे और साहब ही ने मुझसे यह बात कही थी अब फिर वह यह भी बयान करता है कि मैं क़ैद खाने में न था सरकार ने मुझको खाना दिया और कहीं आने जाने न पाता था—यह तो बहुत अच्छी बात थी कि सरकार ने तुमको बे मेहनत खाना दिया परन्तु अब तुम को सरकार न छोड़ेगी यह बात सरजन्ट बेलनटायन साहब की सुनकर सम्पूर्ण अधिष्ठाता हंसने लगे सरजेण्ट बेलन टायन साहब ने उससे पूछा तुम्हारा विवाह हुआ है या नहीं पहले उसने उत्तर दिया कि नहीं फिर थोड़ी देर के उपरान्त याद करके कहने लगा कि हुवा है ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

शेख़ करीम के इज़हारात ॥

इस मनुष्य ने कहा कि मिस्टर बोवी साहब के पास मैं चपरासियों में नौकर था मैं उस समय भी मौजूद था कि जब वह नौसारी को गये थे और नौसारी से वर्षा के प्रारम्भ में आये थे जब मैं वहां से आया तो उसके आठ दिन के उपरान्त अमीना के साथ महाराज के यहां गया था पहिले आया ने एक संदल नामे गाड़ीवान को वहां जाने के वास्ते ठहराया था हम और आया सन्दल की गाड़ी में बैठ कर महाराज के यहां गये महाराज का जासूस सालिम हमको रास्ते में मिला और हवेली में ले गया हम जीनेपर चढ़कर एक कमरे में गये सालिम ने महाराज को बुलाया महाराज आकर एक चौकी पर बैठे आया महाराज के रूबरू फर्श पर बैठ गई और मैं एक तर्फ खड़ा रहा महाराज और आया से वार्त्ता होती रही महाराज और आया के मध्य में नौसरी की शादी का जिक्र होता रहा महाराज आया से पूछते थे कि साहब हमारी शादी के सबब से हम से अप्रसन्न तो नहीं हैं आया ने उत्तर दिया कि मैं अब कुछ नहीं कह सक्ती हूं जब हमारी मेम साहिबा आवेंगी तो हम इसका उत्तर देंगी हम उनके द्वारा आपकी सिफ़ारिश साहिब से करावेंगी साहब के मिज़ाज में हमको दखल नहीं है जोउनके दिल में आता है सो करते हैं उसी दिन दो सौ रुपये सालिम ने हमको दिये और कहा कि तुम और आया आधे २ लेलो यह महाराज के विवाह का पारितोषक है सौ रुपये मैंने आया को दिये और सौ रुपये मैंने आपरखलिये ॥

सरजन् बेलनटायन साहब ने करीम से प्रश्न किये ॥

यह मनुष्य उनके प्रश्न का उत्तर देता है कि मैंने आया को उसके पतिके सम्मुख रुपया दिया था मेरे इजहारात बोवी साहब ने फियर साहब के जहर दिये जाने के उपरान्त लिये मुझसे सिर्फ सालिम के बारे में बोवी साहब ने

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

प्रश्न किये थे और मुझसे सालिम ने केवल यही कहा था कि तुम कमीशन की कारर्वाई के। बताया करो और महाराज तुमको इसके बदले इनाम देंगे मैंने सालिम से कहा कि अगर ऐसी बात फिर तुम मुझ से कहोगे तो मैं अपने स्वामी से कहूंगा तब से सालिम मेरे साथ बैर रखता है मैंने बीबी साहब से महाराज के विषय में कुछ नहीं कहा परन्तु मैंने मिस्टर सूटर साहब के साम्हने पूरा इजहार दिया प्र०—तुमने कोई बात सूटर साहब से कही थी जो कि तुमने महाराज और आया की बार्त्ता में सुनी थी? उ०—हां साहब जो कुछ कि मैंने सुनाथा कहा था। प्र०—तुम से कै बेर सूटर साहब ने इजहार लिये? उ०— केवल एक बेर। प्र० जोकुछ तुमने कहाथा सब लिखलिया गयाथा? उ० हां साहब लिख लिया गया था और मुझको सुना भी दिया गया था। प्र०—सालिम अगर तुम्हारा मित्र न था तो तुम उसके साथ महाराज के यहां क्योंगये? उ०—आया मुझको ले गई थी कि हम महाराज के विवाह का इनआम ले आवें। प्र०—सरकार के वकील ने पूछा कि आया से और तुम से मुलाक़ात कलसे हुई या नहीं? उ०—कलसे मुझसे किसी से मुलाकात न हुई॥

आज साढ़े चार बजे जलसा बरख़ास्त हुआ॥

तीसरे दिनका इजलास॥

जब कि इजलास जमा हुवा तो सरजन्ट बेलनटायन साहब ने कहा कि मुझको एक बहुत अच्छी बात इजलासके रूबरू कहनी है और वह यह है कि मुतरज्जिम साहब। तर्जुमा लफ़ज़ी इजहारों का नहीं करते हैं किन्तु उसका संक्षेप करके हमको जवाब देते हैं हम चाहते हैं कि आगे से लफ़ज़ी तर्जुमा इजहारात का हुवा करे साहब प्रेजीडन्ट ने इस बात को स्वीकार किया॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बख़्तियार खां के पुत्र सन्दल खां का इज़हार ॥

बख़्तियारखां के पुत्र सन्दलखां ने इज़हार दिया कि मैं शिकरम वाला हूं और मैं शेख मुहम्मद बरअर की शिकरम को हांकता हूं मैं बोवी साहब की आया को जानता हूं परन्तु उसका नाम नहीं जानता हूं और मैं करीमको भी जानता हूं मैं करीम और आया को अपनी गाड़ी में बिठाकर गायकवार की हवेली में ले गया था मैं सालिम को भी जानता हूं यह शख़्स महाराज के पास रज़ीडन्सी में आया करता था सालिम भी हमारे साथ गाड़ी में बैठकर गया था मैं इन लोगों को सवार करके नौबजे रात को ले गया था और वहां से दश बजे रात को लौटकर आये जब कि मैं गया था तो थोड़ा पानी वर्ष रहा था इस बात को नौ महीने हुए होंगे करीम ने दूसरे दिन गाड़ी का किराया दिया था करीम और आया दोनों इजलास में बुलाये गये और इस मनुष्य ने दोनों को पहिचाना ॥

सरजन् बेलनटायनसाहब के प्रश्न ॥

प्र०– तुमने यह इज़हारात कबदिये ? उ०—सूटर साहब के रूबरू दिये थे प्र०—मेरे प्रश्न का उत्तर दो कबदिये ? उ०—जब कि पुलिस बम्बई के अफ़सर बड़ौदे में आये और तहक़ीक़ात शुरू करने लगे। प्र०—यह कबकी बातहै ? उ०—साहब मैंतो लिखा पढ़ा नहीं हूं मैं क्योंकर बतासक्ता हूं कि कबकी बात है। प्र०—तुम को आठमहीने की बात तो यादहै और इस थोड़े दिनों की बात को भूलगये ? उ०— हां साहब मुझको नहीं यादहै। प्र०—क्या यह कल की बात है ? उ०—नहीं। प्र०—क्या यह परसों की बात है ? उ०—नहीं साहब जब बम्बई के पुलिस के अफ़सर आये थे। प्र०— अच्छा यह बताओ कि उसको कितने दिन हुये ? उ०—साहब दो तीन महीने हुये होंगे। प्र०— तुमने अपने इज़हारात सूटर साहब को दिये थे ? उ०—हां साहब

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सूटरसाहब को दिये थे और यह मैंने कह दिया था कि तुम इसके बारे में किसी से न कहना नहीं तो मुझको मुशकिल होगी मैं एक परदेसी आदमीहूं। प्र०—क्या सूटरसाहब ने तुम्हारे इज़हारात लिख लिये थे उ०—नहीं ? प्र०—क्या तुम हवालात में रक्खे गये थे ? उ०—नहीं। प्र०—क्या तुम कभी हवालात में रक्खे गये थे ? उ०—कभी नहीं। प्र०—क्या अब तुम हवालात मेंहो ? उ०—नहीं। प्र०—क्या तुमने इससे पहिले किसी मनुष्य को अपने इज़हारात दिये थे ? उ०—किसी को नहीं। प्र०— तुमने इसके पीछे किसी को अपने इज़हारात दिये थे ? उ०—हां एक साहब को दिये थे और वह साहब वकील हैं प्र०—क्या तुमने अपने सम्पूर्ण इज़हारात उसको दिये थे ? उ०—हां। प्र०—सिवाय उन साहब के और भी कोई था ? उ०—कोई नहीं। प्र०—तुम अङ्गरेजी ज़बान में बात चीत कर सक्ते हो ? उ०—नहीं। प्र०—तुमने इज़हारात अपने किस जबान में दिये थे ? प्र०—हिन्दुस्तानी जबानमें। प्र०—तुम अब्दुलअली को जानते हो ? उ०—नहीं परन्तु जब अब्दुलअली इजलास में बुलाया गया तो उसने कहा हां साहब यही थे जिन्होंने मेरे इज़हारात सूटरसाहब के रूबरू लिखे थे। प्र०—अब्दुलअली ने तुम से क्या प्रश्न किया था ? उ०—मुझसे पूछाथा कि साहबतुमसे पूछते हैं कि तुम किस को अपनी गाड़ी में बैठाकर लेगये थे। प्र०—तुमसे यह भी पूछा था कि तुम किस समय बैठाकर ले गये थे ? उ०—मुझसे नहीं पूछा। प्र०—जिस समय उन्होंने तुमसे पूछा था कि तुम किसको अपनी गाड़ी में बैठाकर लेगये थेतो तुमने यह भी उनसे पूछाथा कि आप किसको निस्बत में कहते हैं ? उ०—मैंने पूछा था उन्होंने उत्तर दियाकि हम करीम बख़्स और आयाकी निस्बतमें पूछते हैं। प्र०—तुमको आया पहिलेसे जानती थी ? उ०—नहीं। प्र०—तुमको करीम जानता था ? उ०—हां जानता था। प्र०—तुमने कभी पहिले

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

भी कभी करीमको सवार किया । था उ०—नहीं । प्र०—तुमने उसे कल रातको देखा था ? उ०—नहीं । प्र०—अब्दुलअलीने करीमके विषय में तुमसे कहा था ? उ०—नहीं । प्र०-कलरात को तुम कहां सोये थे ? उ०—मैं अपने घरमें सोया था । प्र०—वहां कोई पुलिसका आदमी था ? उ०—कोई नहीं । प्र०—कभी हवालातमें रहेथे ? उ०—कभी नहीं परन्तु एक दिन जब पहिले इज़हारात दिये थे । प्र०—क्या तुमने करीमके विषयमें इज़हारात पहिलेही से दे दिये थे? उ०—नहीं साहब बहुत देर पीछे दिये थे और यह भी मैंने कह दिया था कि मेरे इज़हारात किसीको मालूम न हों। । प्र०—तुमने यह क्यों कहा था ? उ०—मैं परदेसी था और मुझको प्राणका अन्देशा था । प्र०—मुझको मालूम हुवा कि तुमनेअपने इज़हारात इसके दो महीनेपीछे दिये थे ? उ०—हां साहब दो अढ़ाई महीने के पीछे दिये थे । प्र०—वहां और भी कोई उपस्थित था ? उ०—कोई नहीं । प्र०—तुमने आया और करीम के जानेके विषयमें भी सूटर साहबसे कुछ कहा था? उ०—हां साहब मैंने कहा था परन्तु उस समय कि जब उनसे मैंने अपनी जान के बचनेका इकरार लेलिया था । प्र०—तुम नीची गर-दन करके न देखो और मेरी ओर देखो तुमने आया और करीम के विषय में कहा था ? उ०—नहीं साहब केवल आया की निस्बत में कहा था । प्र०—तुमने आया निस्बत क्या कहा था ? उ०—मैंने कहा था कि मेरी गाड़ी में बैठकर आया शहर के ओर गई थी । प्र०—तुमतो आया को जानतेही न थे ? उ०—साहब परन्तु अबतो मैं जानता हूं । प्र०—तुमने क्योंकर जाना ? उ०—साहब मैंने उसको बोवीसाहबके बंगले में रहते हुये देखा । प्र०—तुम इससे पहिले आया को नहीं जानते थे? उ०—हां साहब नहीं जानता था । प्र०-सूटर साहब ने तुमसे करीम के विषयमें कुछ पूछा था । ? उ०—कुछ नहीं पूछा था । प्र०-फिर तुमने क्योंकर सब हाल सूटर साहब से कहा था

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उ०—साहब मुझको अपने प्राण का भय था। प्र०—तुमको किसका भयथा? उ०—मुझको महाराज का भयथा। प्र०—तुम उसदिन क़ैद होगये थे? उ०—मैं तो कभी भी क़ैद नहीं हुवा। प्र०—तुमने अभी कहा है कि जब तक मैंने करीम का नाम नहीं लिया तबतक मैं कैद रहा? उ०—मैंनेतो यह नहीं कहा उसको उसके इज़हारात सुनाये गये उसने कहा सब दुरुस्त हैं मैंने अपने प्राण बचाने का जब इकरार करलिया उस समय मैंने सम्पूर्ण वृत्तान्त उनसे कह दिया। प्र०—तुमने सूटर साहब को कब देखा था? उ०—जब वह मुझसे हाल पूछने को आये। प्र०—क्या तुम सूटर साहब के पास गये थे या सूटर साहब तुम्हारे पास आये थे? उ०—मैं सूटर साहब के पास गया था। प्र०—तुम अकेले गये थे या कोई तुम्हारे साथ था? उ०—सैयद ऊंट वाला मेरे साथ था। प्र०—क्या वह ऊंट हांकता है? उ०—नहीं साहब अब नहीं परन्तु पहिले उसके पास ऊंट थे। प्र०—क्या यह वही मनुष्य है जिसने गायकवार के ऊपर नालिश की थी? उ०—मुझको खबर नहीं॥

बख़्तियारखां के पुत्र सन्दलखांके फिर इजहारात लिये गये॥

वह गवाह बयान करता है कि जब मैं पहले सूटर साहब के रूबरू गया तो मेरे साथ सन्दल ऊंट वाला था मेरे उन्होंने इजहारातलिये करीम बख्श मेरे पास छः बजे संध्याको गाड़ी लेने आया था और नौ बजे मैं उनको सवार कराकर महाराज के महलमें ले गया। प्र०—तुमने सूटर साहब को अपने इज़हारात कब दिये थे? उ०—दो महीने या अढ़ाई महीनेहुये होंगे। प्र०—क्या तुमने पहलेहीदफे अपनी जान बचाने का इकरार लेलिया था? उ०—हां साहब पहलेही मर्त्तबे लेलियाथा प्र०—तुम ऊंटवालेका नाम जानतेहो? उ० उसका नाम सआदतअली है। प्र०—क्या वह अहमदाबाद से आयाहै? उ०—मुझको खबर नहीं। प्र०—उसको इस मुक़-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

हमें से क्या प्रयोजन था? उ०—वह अपने घर में बैठा था और वहां बात चीत बड़ौदे के मुआमिले में होरही थी। प्र०—फिर वह तुम्हारे साथ क्यों गया था? उ०—सटर साहब से उसने कहा था कि मैं बता सक्ता हूं। प्र०—क्या तुमने सआदतअली से पूछा था कि वह करीम और आया को जानता है? उ०—हां साहब उसने कहा था कि मैं जानता हूं और मैं इस मुकद्दमे को साबित कर दूंगा। प्र०—जब तुम डरते थे तो तुमने सआदतअली से क्योंकर पूछा था? उ०—साहब जिक्र आया था। प्र०—तुमने सआदतअली को हाल में भी देखा है? उ०—हां साहब हाल में भी देखा है प्र०—तुमने कब देखा है? उ०—बहुत दिन हुये। प्र०—वह कहां रहता है? उ०—कम्प में रहता है। प्र०—प्रेज़ीडन्ट साहब ने पूछा कि किस सबबसे तुमको अपने प्राण का भय था? उ०—साहब मैं परदेसी था और मुझको महाराज से भय था कि वह मुझको मरवा डालेंगे। प्र०—सर दिनकरराव ने पूछा तुमतो परदेशी आदमी हो तुमने आया और करीम को क्योंकर जाना? उ०—साहब मैं तीन वर्ष से यहां नौकर हूं मुझको छिपाने से यह मतलब था कि भाव सेंधिया को महाराज ने हाथी के पांव के नीचे दबवा कर मरवा डाला था और जब भावसेंधिया से हाथी के पांव के नीचे दबवा कर मरवा डाले गये तो फिर मेरी क्या गिन्ती है॥

कुट्टू के इजहारात।

उसने वर्णन किया कि मैं चार महीने से अमीना के पास नौकर हूं और मुझ को याद है कि मैं उसके साथ एक मरतबे संध्या के समय शहर को गया था पहिले हम अरब खाने में गये और वहां से सालिम हमारे साथ हो लिया मैं पहले सालिम को नहीं जानता था मैं गाड़ी में सोतारहा मुझको नहीं मालुम कि आया और सालिम कहां

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

गये थे साहब ऐडवकेट जनरल ने पूछा कि ईस जाने के पहिले तुम कितने पहले आया के पास नौकर थे ? उ०— मुझको यह नहीं मालूम परन्तु मैं चार महीने से आया के पास नौकर हूं ॥

सरजन् बेलनटायन साहब के प्रश्न ॥

प्र०—क्या तुमको हवालात में रक्खा था ? उ०—नहीं साहब मुझको हवालात में नहीं रक्खा था। प्र०—कुछ भी हवालात में नहीं रक्खा था ? उ०—नहीं रक्खा था। प्र०— तुम रात को कहां सोये थे ? उ०—मैं खान साहबकेयहां सोया था। प्र०—खानसाहब कानाम बताओ ? उ०—नाम मुझको नहीं मालूम। अकबर अलीको इजलास में बुलाया और उसने उसको पहिचाना। प्र०—कभी पहिले भी कोइ सिपाही तुम्हारे साथ रहा है ? उ०—नहीं साहब। प्र०—तुम्हारे साथ खेमे में और कौन रहता है ? उ०—सम्पूर्ण गवाह रहते हैं। प्र०—क्या वह सब एक जगह रहते हैं ? उ०—साहब वह कल से एक जगह हुये हैं और पहले तो वह अलग२ रहते थे। प्र०— तुम जानते हो कि सब गवाह अलग२ क्यों रहते थे ? उ०— सरकार को गवाही देते थे। प्र०—तुम रावजी को जानते हो ? उ०—हां साहब मैं जानता हूं। प्र०—क्या वह तुम्हारे खेमे में रहता है ? उ०—नहीं साहब अलग खेमे में रहता है। प्र०—उसके पास कौन रहता है ? उ०—खान साहब। प्र०—खां साहब उसके साथ जब से वह क़ैद हुये रहते हैं ? उ०—हां साहब। प्र०—कबसे वह क़ैद हुवा है उ०—दो महीने से क़ैद हुवा है ॥

दूसरी बार छुट्टू के इज़हारात लिये गये॥

प्र०—तुम्हारे खेमे में कै आदमी हैं ? उ०—मुझको उनकी संख्या मालूम नहीं परन्तु गाड़ी वाले हैं और और भी हैम प्र०—गाड़ी वाले कै हैं ? उ०—तीन। प्र०—तुम उनको ना। जानते हो ? उ०—नहीं जानता हूं मैं केवल उस गाड़ी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

वाले का नाम जानता हूं जिसकी गाड़ी में बैठ कर गया था। प्र०—तुमने जो अभी यह कहा कि कल से गवाह अलग २ कर दिये गये हैं वह कौन २ हैं? उ०—मैं उनके नाम नहीं जानता आया, करीम, और और गवाह हैं जो गवाही अपनी दे चुके हैं॥

शेख दाऊद के इज़हारात॥

इसने बयान किया कि मेरे पिता का नाम शेख रहीम है और मैं शिकरम को हांकता हूं मैं बीबी साहब की आया को नहीं जानता हूं मैं आया के पति और छुट्टू लड़के को जानता हूं मैं आया और उस लड़के को शिकरम में बैठा कर महाराज के महल में ले गया था यह पांच चार रोज़ दीवाली से पहिले का जिक्र है सालिमभी उस गाड़ीमें था और थोड़ीदेरके उपरान्त फिरइनको सवार कराकर लौटा ले आया अब्दुल्ला खानसामां ने मेरी गाड़ी को किरायेलिया था॥

सरजनूबेलनटायनसाहब के प्रश्न॥

अब तुम कहां हो? उ०—कम्पूमें हूं। प्र०—तुम कहां रहते हो? उ०—अपने मा बाप के पास घरमें रहता हूं। प्र०—कोई सिपाही तुम्हारे पास था? उ०—कोई नहीं। प्र०—तुमने यह खबर किसीसे कही थी? उ०—किसी से नहीं। प्र०—तुमने इसका हाल पहिले किस से कहा? उ०—एक मनुष्य से कहा था। प्र०—मनुष्य के नाम होते हैं तुम उसका नाम जानते हो? उ०—साहब मैं नहीं जानता हूं। प्र०—क्या उसका नाम सन्दल है? उ०—हां साहब सन्दल है प्र०—तुमने उससे क्योंकर बातें कीं? उ०—मैं बाजार में रोटी लेने जाता था वह एक दूकान पर बैठाहुवा था मैंने उससे बातें कीं वह मुझसे पूछने लगा मैंने सब बातें उससे कहदीं और उसको सब हाल मालूम होगया। ०ने तुमसे उसने क्याकहा था साफ बयान करो? उ०—उसने पूछा कि तुम रात को सवार करके किसको लेगये थे मैंने

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उससे कहदिया था। प्र०—तुम उसके पूछने से यह क्योंकर समझे कि उसका मतलब आयासे है क्या तुम और किसीको रातके समय सवार कर के नहीं लेजाते हो? उ०—साहब मैं और वह एक सड़कपर गाड़ी हांकते हुवे चले आते थे और उसने देखलिया थाजो साहबवह मुझको न देखता तो न पूछता। प्र०—क्या उसी समय तुमसे बातें हुईं? उ०—हां कोई पच्चीस तीस मिनटके उपरान्त उससे बातें हुईं। प्र०-तुम ने कैबार आया के जाने का जिक्र उससे किया? उ०—हमको याद नहीं॥

एडवकेट जनरल ने फिर इजहार लिये॥

प्र०—तुम्हारे स्वामी का क्या नाम है? उ०—छुट्टू नाम है। प्र०—सन्दल के स्वामी का क्या नाम है? उ०—सलामत नाम है। प्र०—क्या वह दोनों गाड़ियां किराये पर देते हैं? उ०—हां साहब। प्र०—कहां पर गाड़ियों को रखते हैं क्या एकही स्थान पर दोनों की गाड़ियां हैं? उ०—नहीं साहब अलग २ उनको गाड़ियां हैं। प्र०—वह दोनों कहां रहते हैं? उ०—एक तो क़स्साबखाने में रहता है दूसरा शराब खाने के निकट रहता है। प्र०—पहले तुमने उससे बातें की थीं या उसने तुम से बातें की थीं? उ०—पहले उसने मुझसे बातें की थीं। प्र०—क्या उसने यह पूछा था कि तुम किसको सवार करके ले गये थे? उ०—हां साहब यह पूछा था। प्र०-बम्बई की पुलिस बड़ौदे में कब आई तुमको मालूम है? उ०—हमको नहीं मालूम॥

सन्दलखांफिर बुलाया गया॥

प्र०—तुम शेख दाऊद को जानते हो? उ०—हां साहब जानता हूं हम और वह एकही काम करते हैं मैं छुट्टू के यहां नौकर हूं और मेरे और उसके एक बेर बातें हुई थीं मैं उस समय अपने बैलोंको पानी पिलाने जाता था और वह शहर के तरफ गाड़ी लिये जाता था मैने उससे पूछा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कि तुम किस्को लिये जाते हो वह उस समय न बोला परन्तु दूसरे दिन मैंने उस्से पूछा कि तुम किस्को ले गये थे उसने मुझसे बयान किया ॥

सारजन्ट बेलन टायन साहब के प्रश्न ॥

प्र०—तुमने करीम का नाम लिया था उ०—हां साहब लिया था प्र०—तुमने सूटर साहब से अपने इज़हारात में सब बयान करदिया था ? उ०—हां साहब बयान कर दिया था ॥

फिर दुबारह इजहारात लिये गये ॥

प्र०—तुमने शेख दाऊद से करीम के विषय में क्या पूछा था ? उ०—मैंने पूछा कि रात को तुम कहां गये थे उसने मुझसे कह दिया । प्र०—परन्तु तुमने करीमके विषय में क्या कहा था ? उ०—मैंने कुछ भी नहीं कहा । प्र०—सरजन्ट-बेलनटायन साहब ने कहा कि मेरे और देखा तुमने तो अभी बयान किया है कि मैंने करीम की निस्बत कहा था कि वह बोवी साहब का नौकर है ? उ०—साहब मैंने नहीं कहा और जो आपने पूछा होगा तो मैं अंगरेज़ी ज़बान नहीं समझता प्रेजीडन्ट साहबने पूछाकि तुमने करीमके विषय में कुछ भी नहीं कहा ? उ०—कुछ भी नहीं कहा । प्र० कभी भी कुछ नहीं कहा ? उ०—कभी कुछ नहीं कहा । प्र० तुमको अच्छी तरह से याद है कि तुमने कभी भी कुछ नहीं कहा ? उ०—साहब जैसा आप कहतेहैं शायद कहाहोगा इस बात को सुनकर सम्पूर्ण इजलास हंस पड़ा ? प्र०—जब सूटर साहबके रूबरू इज़हार दियेथे उस समय बोवी साहब मौजूद थे ? उ०—हां साहब मौजूद थे और उस समय दाऊद भी था ॥

शेख अब्दुल्ला के इजहार ॥

उसने बयान कियाकि अमीनाका मैंपतिहूंमैं मेजर ब्रैकनी साहबका सात महीने से नौकर हूं दो महीने तो बड़ौदे में

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

रहा और बाक़ी दिनों महाबलेश्वर में रहा अट्ठाईसवीं या उन्तीसवीं मार्चको मैं बड़ौदे में आया हम और आया एकही मकान में रहते थे साहब प्रेसीडण्ट ने पूछा कि तुमने चिट्ठियां आया को भेजी थीं ? उ०—हां साहब मुझसे और आया से खतकिताबत होती थी साहब सेक्रेटरी ने वह खत दिखाये और उसने उनको पहिचान लिया उसपर (सी) और (डी) का निशान दिया गया उसने बयान किया कि मैंने यह दोनों चिट्ठियां आया को भेजी थीं और घरकी तलाशी पर चार चिट्ठियां निकलीं और वह सरकार में मौजूद हैं। प्र० पहली चिट्ठी कौनसी है ? उ०—पहली चिट्ठी वह है कि जिसपर (ए) अक्षरका चिन्ह है यह चिट्ठी आयाने मुझको भेजी थी सरजन्ट बेलनटायन साहबने खड़े होकर कहा कि इन चिट्ठियों को हम शहादत में नहीं लेसक्ते हैं और हवाला कानून शहादत का दिया साहब प्रेजीडन्ट ने कहा कि हम इन चिट्ठियों को पढ़ें और देखें कि यह शहादत के योग्य हैं या नहीं हमको साबित होता है कि यह चिट्ठी आया ने लिखी है बेलन टायन साहब ने कहा कि आपको यह क्योंकर साबित हुआ इसको साबित करना चाहिये साहब ऐडवकेट जनरल नेकहा कि अच्छा फिर इस पर हम बहस करेंगे अब इसको रहने दो तथाच यह अलग रक्खी गई और अब कि टिफन खाने का समय था इस सबब से इजलास बरखास्त हुवा॥

टिफन खाने के उपरान्त फिर जब इजलास शुरू हुआ तो अब्दुल्ला से पूछा कि तुम यशवन्तराव और सालिम को जानते हो ? उ०—हां मैं कुछ जानता हूं और मुझसे यशवन्त राव और सालिम से बात चीत हुई है सालिम को मैं उस समय से जानता हूं कि जब से वह महाराज के साथ रजीडन्सी में आकर फैजू के पास पानी पीने के वास्ते जाता था जूनके महीने में मेरी स्त्री महाराज के पास गई थी और महाराज ने उससे पहिले कमीशन के विषय में पूंछा परन्तु

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पहली बेर सिवाय इसके और कुछ वार्त्ता नहीं हुई कि मेम साहिबा को समझा दो कि वह साहब से कहैं ताकि साहब महाराज पर मेहरबानी करैं दूसरी मर्त्तबा जबकि वह गई थी तो मैं महाबलेश्वर में था उसने मुझसे बयान किया था कि मैं करीमबख्श के साथ गई थी और महाराज ने उससे पूछा था कि मेम साहिबा हमारे विवाह के विषय में तो कुछ नहीं कहती थीं उसने उत्तर दिया कि कुछ नहीं कहती थीं फिर महाराज ने कहा कि तुम मेमसाहिबा को समझा दो कि वह साहिब से हमारी सिफारिश करैं इसबेर सौरुपया महाराज ने मेरी स्त्री को दिया फिर मेरी स्त्री मेमसाहिबा के साथ पना को चली गई। प्र०—जब कि तुम्हारी स्त्री पूनाको गईथी तो यशवन्त राव कहां था? उ०—वह बम्बई को गया था। ऐडवकेटजनरलने प्रेज़ीडण्टसे कहा कि जब आया पूनाको गई थी तो यशवन्तराव चिट्ठी लिखा करता था मुझको मालूम हुवाकि आयाकी इस मुकद्दमे में साज़िशथी—सरजन्टबेलनटायनसाहब ने कहा कि मुझको उसका साज़ मालूम नहीं होता मैं नहीं कहसक्ता कि यह चिट्ठियां गवाही में क्योंकर ली जावेंगी क्योंकि यह चिट्ठीयां घरोगू हैं जो पति ने स्त्री को लिखीं और स्त्री ने पति को इनका क्योंकर सबूत हो सक्ता है ऐडवकेटजनरल ने कहा कि उनका सबूत यों हो सक्ता है कि आया ने जो कुछ इज़हार दिये हैं उसकी सच्चाई इस से मालूम होतीहै बेलनटायनसाहब ने कहाकि अच्छा इन चिट्ठियों को शाहदत में दाखिल न करो परन्तु इतना मालूम हुवा कि आया और खानसामां की इस मुकद्दमे में साज़िश थी ऐडवकेटजनरल ने यह बात स्वीकार की और कहा कि अच्छा फिर इन चिट्ठियों को शहादत में दाखिल क्यों नहीं करते बेलनटायन ने कहा कि साज़िशका शब्द बहुत बुराहै और साज़िश के नाम से इन चिट्ठीयों को गवाही में दाखिल करना उचित नहींहै प्रेज़ीडन्टसाहब ने कहाकि यह तुम्हारा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बात मानने के योग्य नहीं है अच्छा साजिश का नाम जाने दो परन्तु इन चिट्ठियों को शहादत में दाखिल करना उचित है तथाच यह चिट्ठियां गवाही में लीगईं ऐडवकेट-जनरल ने कहा कि हम पहली चिट्ठी जो १९ अगस्त सन् १९७३ई० की लिखी हुई है दाखिल करते हैं जिसमें शेखअब्दुल्लाने अमीना को लिखा है कि मैं परमेश्वर की कृपा और तुम्हारे आशीर्वाद से अच्छा हूं जब से कि तुम बड़ौदे से गईं तुम्हारी कुछ खबर नहीं आई इस सबब से मुझको अत्यन्त चिन्ता है तुमको ऐसी भूल न चाहिये थी यह ईश्वरकी मरजी है तुम्हारा इस में कुछ अपराध नहीं है महाराज के पास अब जाने की मनाही होगई है मुझको अब महाराज के दरबार की खबर नहीं मिलती बंगले के नौकर सब तुमको सलाम देते हैं यशवन्त राव बम्बई को गया है शहाबुद्दीन भी बम्बई को जावेगा परन्तु अब तक मुझको ठीक खबर मालूम नहीं है इस चिट्ठी के देखतेही तुम उत्तर लिखना॥

(दस्तखत——शेख अब्दुल्ला खानसामां)

यह चिट्ठी खास अब्दुल्लाके हाथकी लिखी है ऐडवकेट जनरलने अब्दुल्ला से पूछा इस चिट्ठीमें जो बंगले का शब्द लिखा है उससे क्या अर्थहै? उ०—यहशब्द रेजीडन्सीके बंगलेका बोधक है फिर यह चिट्ठी महाराजगानके जानने के वास्ते हिन्दुस्तानी भाषा में पढ़ीगई सरजन्ट बेलनटायन साहबने कहा कि इस चिट्ठी की आप के पास कोई नक़ल भी है उन्होंने उत्तर दिया कि अभी तक उसकी नक़ल इस वास्ते नहीं की गई थी कि यह गवाही में दाखिल नहीं थी अब यह चिट्ठी शहादत में दाखिल हुई है इसलिये अबउसकी नक़ल तुमको मिलसक्ती है। प्र०—यशवन्त राव यह कौन मनुष्य है जिसका चिट्ठी में जिक्र है कि वह बम्बई को गया है? उ०—यहशख्स महाराज का जासूस है साहब ऐडवकेट जनरल ने कहा कि दूसरी चिट्ठी को हम पेशकरते हैं इस चिट्ठी पर मोहर डाकखाने की १९

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अगस्त सन् १८७४ की है और उसमें तारीख़ नहीं पड़ी है परन्तु मालूम होता है कि डाकखाने की मोहर से दो एक दिन पहिले यह चिट्ठी लिखी गई होगी यह चिट्ठी शेख अब्दुल्ला ने अमीना को लिखी है कि मैं ईश्वर की कृपा और तुम्हारे आशीर्व्वाद से अच्छी तरह से हूं तुम कुछ चिन्ता न करना करनैल फियर साहब पूना में १८ तारीख़ को गये हैं और मुकाम गरकी में रहेंगे तुमको मालूम हो कि दीवान मौक़ूफ़ होगये और दूसरा मनुष्य उनकी जगहपर अभी नौकर नहीं ऊवा है तुम वहांकी खबरें लिखते रहनाकी हजरत बम्बई में गये थे उनके विषयमें मालूम करना और जब तुम वहां से आना तो अपने साथ उनको जरूर लेते आना तुम उनको इस जरूर बातकी इत्तिला देना और समय २ पर अपने समाचार से हमको इत्तिला करते रहना जबसे तुम यहांसे गई हमको बिल्कुल भूलगई इसमें तुम्हारा कुछ दोष नहीं है हमारी प्रारब्ध का कसूर है यशवन्त राव बम्बई को अब्दुल्लाखां साहब के साथ गया है और पेडरू का सलाम पहुंचे हमारे और पेड़रूके तरफसे अपने खानसामां से सलाम कह देना जितनी जल्दी होसके इसका उत्तर भेजना—इति॥

(दस्तखत शेख अब्दुल्ला)

साहब प्रेसीडन्टने कहाकि इन चिट्ठियोंकी नकल कीजावे॥

गवाह वर्णन करताहै कि जबकि मेरी स्त्री पूनासे आई तो फिर एक बेर महाराजके पास रमज़ान के महीनेमें गईथी मैं उसके वास्ते गाड़ी किराया करके लायाथा एक लड़का कुट्टू भी उसके साथ गयाथा और महाराज और मेरी स्त्रीसेजो कुछ बार्त्ता ऊईथी सुबहको मुझसे इसने बयानकी इससे महाराज ने कहाकि साहब को कोई ऐसी वस्तु दोकि जिस्से साहब का दिल फिर जावे मेरी स्त्री ने कहा कि ऐसी वस्तु कदाचित् न देना अगर साहब को कुछ होगयातो तुम तबाह होजाओगे इस मरतबे सालिमने पचास रुपये उसको दिये महा-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

राज ने उससे कहा था कि अगर तुम ऐसा काम करोगी तो तुमको और तुम्हारे पतिको नौकरी मिलजावेगी॥ जोकि साढ़े चार बजे का समय था इजलास बरखास्त हुवा॥

चौथे दिनका इजलास।

आज ग्यारह बजेके समय फिर इजलास शुरू हुवा कमीशन के सम्पूर्ण मेम्बर मौजूद थे श्रीयुत महाराज मल्हरराव नहीं आये शेख अब्दुल्ला से सारजन्ट बेलन टायन साहब ने प्रश्न पूछे। प्र०—तुम्हारी शादीको कितनी मुद्दतहुई? उ०—दस या ग्यारह बरस हुये प्र०—जब तुमपरदेस जाया करते थे तो अपनी स्त्री को खत लिखा करतेथे? उ०—हां साहब। प्र०—वहभी तुम को लिखा करती थी? उ०—हां लिखा करतीथी? प्र०—तुम सिवाय अपने घरके हालात के और हालातभी लिखा करते थे? उ०—हां साहब जो कुछ हम को जरूरी मालूम होता था वह लिखा करते थे। प्र०—अच्छा तुम को मालूम है कि कभी तुम्हारी स्त्री ने किसी मुफीदअमर की निस्बत तुमको लिखा था? उ०—शायद लिखा होगा। प्र०—सिवाय उन चिट्ठियों के जो तुमने जाहिर की हैं कोई और भी चिट्ठी तुम्हारी स्त्रीने लिखी है? उ०—शायद मेरे काग़ज़ोंमें होगी प्र०—जून और जुलाई सन् १८७३ ई० के महीनों में तुमने कोई चिट्ठी पाई थी? उ०—कोई नहीं। प्र०—क्या सबब है? उ०-उस जमाने में हम और वह एकही जगह परथे। प्र०-क्या तुम नवम्बर और दिसम्बर सन् १८७३ ई०में भी एकही जगह परथे? उ०—नहीं साहब मैं बम्बई में था और वह बड़ौदे में थी। प्र०—जून सन् १८७४ई० में तुमकहां थे? उ०—थोड़े दिनों के वास्ते मैं महाबलेश्वर को गया था और मेरी स्त्री बम्बईमें थी। प्र०—तुम्हारी स्त्री करनैल फियर साहब की मेमसाहिबा के पास कितने दिन नौकर रही? उ०—सात आठ महीने। प्र०—तुमनेविष दियेजाने के विषय में पहले

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

क्या सुना था? उ०—बंगलेपर बहुत से मनुष्य बात चीत किया करते थे कि मालूम नहीं किस मनुष्य ने साहब को विष दिया है। प्र०—तुम कुछ जहर की निस्बत जानते थे? उ०—मैं कुछ नहीं जानता था। प्र०—तुम जानते हो कि शर्बत कौन बनाया करता था? उ०—मैं नहीं जानता था अब मैं १२ नवम्बर के हालात में कुछ प्रश्न तुम से पूछना चाहता हूं। प्र०—तुम को याद है कि तुमने करनैल फियर साहब के रूबरू इजहार दिये थे? उ०—मैंने उनके रूबरू इजहार नहीं दिये थे किन्तु मैंने बोवीसाहब के रूबरू इजहार दिये थे। प्र०—जो कुछ तुम्हारी स्त्री ने तुम से कहा था उस का बयान साहब से किया था? उ०—मैंने नहीं कहा। प्र०—तुमने किसके साम्हने पहले कहा था? उ०—सूटर साहब के साम्हने। प्र०—तुमने बोवी साहब के साम्हने क्यों नहीं इजहार दिये? उ०—मुझको भय मालूम हुआ। प्र०—तुम क्यों भय भीत हुए? उ०—साहब मुझ से पूछा नहीं गया मैं क्योंकर कहता। प्र०—मेरे प्रश्न का उत्तर दो यह इजहार तुमने क्यों न दिया कि मेरी स्त्री महाराज के यहां गई थी और महाराज ने उससे कहा कि कोई ऐसा जादू करो कि फियर साहब का दिल फिर जाय? उ०—मुझको भय मालूम हुआ। प्र०—तुमको क्या भय था? उ०—साहब मेरी स्त्री को वहां जाने को मनाही थी और मेरी इजाजत के बिना वहां गई थी शायद वह उसपर अप्रसन्न होते। प्र०—क्या तुम्हारी स्त्री ने तुमसे कह दिया था कि इस बारे में किसीसे जिक्र न करना? उ०—मुझसे नहीं कहा था। प्र० अच्छा तुमको सूटर साहब के रूबरू क्यों भय मालूम हुआ? उ०—मेरा एक छुट्टू लड़का नौकर था और उसने सब हाल कह दिया फिर मैं क्योंकर छिपा सक्ता। प्र०—वहां उस समय कौन २ थे? उ०—दोनों खानसाहब गजानन्द वठिल और छुट्टू और एक गाड़ी वाला था। प्र०—यह सब आदमी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

तुमसे पहले पहुंच गये थे ? उ०--नहीं केवल अकबर अली और अब्दुल अली मुझ से पहिले पहुंच गये थे। प्र०—उन पुलिस के आदमियों ने तुमसे क्या पूछा ? उ०--मुझसे पूछा कि इस मुकद्दमे की निस्बत क्या जानते हो मैंने कहा कि किस मुकद्दमे की निस्बत, कहा महाराज के मुकद्दमे की निस्बत, मैंने कहा मैं कुछ नहीं जानता, कहा तुम सच कहते हो मैंने कहा मैं सच कहता हूं। प्र०--तुमने मुझसे जो कहा कि छुट्टू और गाड़ीवाला भी पहले से मौजूद थे और मैंने उनके रूबरू इज़हार दिये यह बात सच है ? उ०—हां साहब मौजूद थे। प्र०—जब तुमने कहा कि मैं इस मुकद्दमे के विषय में कुछ नहीं जानता हूं तो सूटरसाहब ने क्या कहा उ०—सूटरसाहब ने उस लड़के और गाड़ी वाले को बुलाया और मेरा साम्हना कराया मुझसे कहा कि तुमने गाड़ी मंगवाई थी मैंने उत्तर दिया कि मंगवाई थी उन्होंने कहाकि यही गाड़ी वाला है मैंने कहा यही गाड़ी वाला है जिस की गाड़ी मैंने किराये को लीथी। प्र०—इज़हार देकर तुम कहां गये ? उ०—मैं तीन चार सिपाहियों के पहिरे में रक्खा गया। प्र०—फिर क्या हुआ ? उ०—अपने घर चलागया। प्र०—क्या तुम आया के साथ रहते हो और जब उसके इज़हारात हुये थे तुम मौजूदथे ? उ०—हां साहब फिर जब तक हमारे और उसके इज़हार नहीं लिये गये थे हम अलग२ रक्खे गये थे। प्र०—तुमने अपनी चिट्ठी में शहाबुद्दीन का ज़िक्र किया है वह कौन मनुष्य है ? उ०—साहब वह काज़ी है और शहर में रहते हैं और महाराज के यहां काम करते हैं प्र०—अब तुम जानते हो कि वह सरल्यूसपोली साहबके पास नौकर हैं उ०—यह बात नहीं मालूम॥

शेख अब्दुल्ला के फिर इज़हारात लिये गये॥

उसने बयान किया कि मैंने सूटरसाहब के सम्मुख अपने इज़हारात दिये थे सूटरसाहब उस समय पश्चिम की तरफ

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

के कमरे में बैठे हुये थे जिस समय मेरे इज़हार लिये तो उस समय मेरी स्त्री बोवीसाहब की मेमसाहिबा के पास नौकर थी। प्र०—तुमने बयान किया कि जब तुम अपने इज़हार दे चुके तो तुम पहरे में रक्खे गये थे ? उ०—पहिले दिन मैंने कई प्रश्नों का उत्तर दिया था और मेरे दो तीन दिनतक इज़हारात होते रहे। प्र०—जिस दिनसे तुमने अपने इज़हारात देने शुरू किये थे और जिस दिन तक कि पूर्ण किये थे इस दरमियान में कभी अपनी स्त्री से कुछ बातें तुमने की थीं ? उ०—नहीं कीं। प्र०—जब कि वह अस्पताल में थी तब तुम देखने को गयेथे ? उ०—हां गया था। प्र०—वह कितने दिन अस्पताल में रहा ? उ०—पांच दिन तक अस्पताल में रही ? ऐडवकेट जनरल ने कहा कि आया के इज़हारात १८ तारीख को लिये गये थे और उसके पति के इज़हारात १९ तारीख को॥

अब्दुल रहमान के इज़हारात।

सय्यद अब्दुल रहमान ने बयान किया कि मैं कई वर्षसे आया को जानता हूं मैं डाकखाने का चपरासी हूं जबकि आया बम्बई में गई थी तो मुझसे कहा था कि मैं मेम साहिबा के साथ बम्बई में आई हूं वह विलायत जाने वाली हैं और बम्बई में मैंने उसके पति को कई चिट्ठियां लिखवा दी थीं वह चिट्ठियां अब्दुलरहमान को दिखाई गईं और उनको उसने पहिचान लिया और कहा कि यह चिट्ठियां मैंने लिखवाई हैं इसकोबल साहब ने उन चिट्ठियों को शहादत में दाखिल करलिया ताकि यह सुबूत हो कि दरमियान यशवन्तराव और सालम और महाराज के खतकिताबत होती थी मिस्टर अनवरारदी साहबने उन चिट्ठियोंको गवाही में दाखल किया मिस्टर बैंसन साहब ने कहा कि चूंकि इस समय सरजन्टबेलनटायन साहब मौजूद नहीं है तो हम इस वक्त इन चिट्ठियों के शहादत में दाखिल करने से इन्कार करते

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

हैंप्रेजीडेन्ट साहब ने कहा कि तुमको इन्कार करना न चाहिये क्योंकि एक चिट्ठी तो दाखल शहादत होचुकी है इसमें तुमको क्या इन्कार है ब्रैंसन साहबने कहा कि इस से क्या साबित होता है अभी आया की गवाही नहीं ली गई—है जब कि तुम्हारे साथी ने कल को चिट्ठी को दाखिल शहादत करलिया तो फिर तुमको इस चिट्ठी के दाखिलशहादत करने में क्या इन्कार है यद्यपि यह चिट्ठी भेजी गईथी परन्तु यह चिट्ठी उसके पास नहीं पहुंची प्रेजीडण्टसाहब ने कहा कि यह चिट्ठी भेजी गई थी परन्तु उसने लौटादी इस चिट्ठी पर निशान [डी] का लगाया गया और चिट्ठी दाखलशहादत की गई गवाह वर्णन करता है कि मुझको नहीं मालूम कि मैंने किस समय में यह दोनों चिट्ठियां लिखी थीं परंतु मुझको तीसरी चिट्ठी का लिखाजाना याद है यह शेखअब्दुल्ला खानसामां के नाम लिखी गईथी यद्यपि उसका मजमून भूलगया हूं परन्तु मतलब याद है उसमें एकचिट्ठी महाराज के नाम भी थी॥

ब्रैंसन साहब के प्रश्न॥

प्र०—तुम अंगरेजी जानते हो? उ०—कुछ थोड़ी सी मैं अंगरेजी समझ सक्ता हूं परन्तु बोल नहीं सक्ता। प्र०—तुम बम्बई में कहां रहते हो? उ०—खेतवाले के महल्ले में। प्र० तुम कितने बर्षसे वहां रहतेहो? उ०—चार वर्षसे वहां रहता हूं प्र०—आया बम्बई में कहां रहती थी? उ०—मेरे ही घर में रहती थी। प्र०—तुम अकबरअली और अब्दुलअली को जानते हो? उ०—हां साहब जानता हूं प्र०—तुमने कभी इनको बम्बई में देखा था? उ०—बम्बईके पुलिस में तो यह नौकरही हैं बम्बई तो इनका निवासस्थान है। प्र०—तुमसे इन लोगों ने किस जगह पर इजहार लिये थे? उ०—कालबा देवी के डाकखाने में मेरे इजहार लिये थे। प्र०—तुम्हें कौन बुलाने गया था? उ०—एक जमादार अहमद-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अली गया था प्र०—क्या वह अकबरअली का सम्बन्धी है? उ०—हां साहब उनका सम्बन्धी है। प्र०—अहमदअली तुम्हारे पास आया तो तुमने क्या कहा? उ०—अहमदअलीने तो मुझसे कुछ नहीं कहा परन्तु खानबहादुर ने मेरे इज़हारात लिये। प्र०—मेरे प्रश्न का उत्तर दो अहमदअली ने तुमसे क्या कहा और उस समय कौन २ मौजूद थे? उ० उस वक्त केवल मैं और अहमदअली था और कोई न था। प्र०—तुम्हारे किस जगह पर इज़हार लिये थे? उ०—अहमदअली ने अपने घरपर लेजाकर इज़हारात लिये थे। प्र०—तुमसे खानबहादुर ने क्या पूछा? उ०—खानबहादुर ने मुझसे पूछा कि कोई चिट्ठी तो तुमने महाराज को नहीं लिखी है मैंने कहा मैंने कोई चिट्ठी नहीं लिखी है परन्तु आया के वास्ते एक चिट्ठी लिखी है फिर मुझसे पूछा कि तुमने कब शेख अब्दुल्ला के नाम चिट्ठी लिखी थी मैंने उस को बता दिया। प्र०—क्यावह होलीके पीछे चिट्ठी लिखी थी? उ०—मैं होली को नहीं समझता मुसल्मान हूं। प्र०—क्या बकराईद के पीछे लिखीथी? उ०—मुझको याद नहीं। प्र०—तुम शबरात को जानते हो? उ०—हां साहब जानता हूं। प्र०—अच्छा यह बताओ कि शबरात के कै दिन पहले या पीछे यह चिट्ठी लिखी थी? उ०—साहब मैं नहीं बता सक्ता क्योंकि मुझको स्मर्ण नहीं है। प्र०—उस वक्त और भी कोई था जिस वक्त तुमने चिट्ठी लिखी थी? उ०—और कोई न था। प्र०—महाराज को तुमने क्या लिखा था? उ० उसने यह लिखवाया था कि मुझको खर्चभेजो बम्बईके गवर्नरने खाना साहब लोगों को दिया था उसमें कुछ तुम्हारा जिक्र नहीं आया कोई चिन्ता करने की बात नहीं है ऐडवकेट जनरलने पूछा। प्र०—महाराज को और क्या तुमने चिट्ठी में लिखा था? उ०—और कुछ नहीं लिखाया। प्र० यह चिट्ठी तुमने क्या आया की और चिट्ठियों के साथ में

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

लिखी थी? उ०—हां साहब और चिट्ठियों के साथ में लिखी थी। प्र०—तुम डाकखाने में कितने दिनों से नौकर हो और क्या मासिक है उ०—तीन वर्ष से नौकर हूं और अट्ठाईस रुपये महीना मिलता है॥

अमीना को फिर बुलाया॥

उसने बयान किया कि मैं अब्दुल्ला को जानती हूं मैं और वह एकही मकान में बम्बई में रहते थे जब मैं बम्बई में थी तो उससे चिट्ठियां लिखवाया करती थी वह चिट्ठी जिसपर (डी) अक्षर का निशान दिया गया था पढ़ी गई वह हजरत शेख अब्दुल्ला के नाम पर चिट्ठी थी—सलाम के पीछे अमीना आया बम्बई से आप को लिखती है कि मैंने एक चिट्ठी टिकट लगाकर आपके पास भेजी थी मुझको बड़ी चिन्ता है कि वह चिट्ठी तुम्हारे पास पहुंची या नहीं यदि तुम कहो तो मैं इंगलिस्तान को जाऊं एक मेम साहिबा मुझको लिये जाती हैं मैंने खर्च के वास्ते तुमको लिखा था परन्तु कुछ खर्च तुमने नहीं भेजा यशवन्त राव को सलाम कह देना छुट्टू की मां से एक रुपया लेलेना लिखना कि तुमने मुहम्मद वजीरसे पांच रुपये क़र्ज लिये हैं वह रोज आकर मुझसे तक़ाजा करता है जोलिये हैं। तो मैं उसको देदूं तुमनेवह चिट्ठी जो चिट्ठी केसाथथी उस शख्स को दी या नहीं मुझे इस विषयमें अति चिन्ताहै अधिक क्या लिक्खा जावे शीघ्रही उत्तर भेजना इति॥

गवाह बयान करता है कि यह चिट्ठी मेरे कहने के अनुसार लिखी गई है और मैंने उसमें लिखा था कि काजी और यशवन्तराव और सालिम को सलाम कहदेना काजी एक बहुत बड़ा प्रतिष्ठित मनुष्य है और वह मेरे कमरे में पानी पीने को आया करता था सालिम और यशवन्तराव को मैं इस सबब से जानती हूं कि वह दोनों महाराज के साथ रजीडन्सी में आया करते थे। प्र०—वह चिट्ठी कि जो तुमने

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

खत के साथ भेजी थी वह किसके नाम है ? उ०—वह महाराज के देने के वास्ते सालिम के नाम थी वह चिट्ठी कि जिस पर निशान (ए) का था इजलास में पढ़ी गई उसमें यह लिखा था कि हमने तुम्हारा मतलब समझा तुम बारंबार इसी तरह पर चिट्ठियां लिखते रहो। सालिम मेरे पास आया था अब मैं किसी कदर अच्छी हूं मैने सालिम को चिट्ठी लिखदी है कि मैं २० तारीख़ तक वहां आऊंगी पांच रुपये मुहम्मद वजीर को दिये गये तुम्हारे स्वसुर के घरमें जगह रहने को है नहीं मैं कहां रहूं मुझको बड़ी तकलीफ है जमादार से २५) रु० पहुंचे २०) रु० उस माड़वाड़ी को जल्द देदेना मेरा इन दिनों में बड़ा नुकसान हुवा बीमारी के सबब से मुझको छुट्टी लेनी पड़ी मैं यशवन्तराव के घर पर गया थी वह बयान करता था कि महाराज ने दो तीन बेर तुम्हारे विषय में पूछा था सालिम तो तुम्हारे मकान पर कभी नहीं आया था मुझको लक्खूबाबा मतकर और और आदमी तुमको सलाम देते हैं॥ लिखा हुवा १० अप्रैल सन् १८७४ ई०॥ गवाह वर्णन करती है कि यह चिट्ठी मैने आप लिखवाई थी इस फ़िकरह से कि सालिम मुझको मिला यह मतलब है कि सालिम बम्बई को गया था और वहां मेरी और उसकी भेंट हुई थी मैने उसको यशवन्तराव के मकान पर बम्बई मेंदेखा था वहां महाराज की बातें मुझसे उससे हुई थीं मैने उससे कहा कि महाराज से हमको पारितोषिक कब दिलवाओगे उसने कहा कि महाराज के यह काम सावकाश से होते हैं यशवन्तराव ने मुझसे कहा कि अब जोमें यहां से जाऊंगा तो तुम्हारे इनआम दिलाने में कोशिश करूंगा महाराज ने जब मैं बड़ौदे में था तो तुम्हारी निस्बत चार मर्तबा पूछाथा साहबऐडवकेट जनरल ने पूछा कि क्या तुमने अपने पति से यह दोनों चिट्ठियां पाई थीं ? उ०—हां साहब पाई थीं॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ब्रैंसनसाहब के प्रश्न॥

प्र०—जबसेकि तुम्हारा पहला इज़हार लिया गया तुम कहां थीं? उ०—साहब मैं खानबहादुर के पास थी प्र०—जब से तुम्हारे इज़हार होचुके हैं तुमने खानबहादुरको देखा है? उ०—देखा है। प्र०—क्या छोटे खानबहादुर को भी देखा है? उ०—हांसाहब देखाहै। प्र०—तुमरावसाहब गजानन्द वठिल को जानती हो? उ०—पहले कहा कि नहीं जानती हूं फिर याद करके कहा कि हां जानती हूं॥

शेखअब्दुल्ला के फिर इज़हार हुये।

शेख अब्दुल्ला के दुबारह इज़हार प्रेज़ीडण्टने लिये वह वर्णन करता है कि एक मेरी चिट्ठीमें लिफाफे के अन्दर एक चिट्ठी महाराज के नाम परभी आयाने भेजीथी जबमैं महाबलेश्वर जाने लगा तो मैंने सम्पूर्ण चिट्ठियां अपनी स्त्री को देदीथीं और फिर मुझको नहीं मालूम कि उस चिट्ठी का क्या हुआ॥

पेडरूसौज़ाके इज़हारात।

मिस्टर अनवरारटीसाहब ने पेडरूडसौजा के इज़हारात लिये उसने कहा कि जब करनैलफियरसाहब बड़ौदेमें आयेतो मैं उनकी मुलाज़िमत में हाज़िर था करनैलफियर साहब महीने मार्च सन् १८७३ ई० में बड़ौदे में आये थे और मैं बराबर बड़ौदेमें रहापरन्तु थोड़े दिनोंके लिये नौसारीमें गया था और एक महीने की छुट्टी लेकर गोवा को गया था मैं सालिम को जानता हूं वह बहुधा मुझसे कहा करता था कि जो तुम महाराजके पास आओ तो तुम्हारे वास्ते अच्छा होगा और हम तुम्हारी सवारीके वास्ते गाड़ी भेज दिया करेंगे मैंने कहा मैं नहीं आना चाहता हूं जब कि मैं गोवा को जाने लगा तो मैंने सालिम से कहा कि मेरे राह के वास्ते कुछ खर्च लादो और उसने मुझको साठरुपये बड़ौदे के प्रचारके लादिये जिसके चेहरेदार पचास रुपये

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

होते हैं यह रुपया मुझको रबीउन्सीमें सालिम देगयाथा। और देते समय कहा कि यह साठ रुपये सरकारने तुमको राह के खर्चके वास्ते दिये हैं अनवरारटो साहबने पूछा कि सरकार से क्यामतलब है। उ०—महाराज से मतलब है। प्र०—तुम कितनी मुद्दत से कारनैलफ्रियर साहब का काम करते थे। उ० छब्बीस वर्ष से॥

सरजराटबेलनटायन साहब के प्रश्न।

प्र०—क्या तुम्हारी गवाही बम्बई में हुई थी? उ०—हां साहब हुई थी प्र०—किसके सामने हुई थी? उ०—ऐडगैन्टन साहब के रूबरू हुई थी प्र०—क्या तुमने सब हाल उनसे कह दिया था? उ०—हां साहब कहदिया था। प्र०—क्या तुमने सालिम से अपने गोवा के जाने का हाल कहा था? उ० नहीं साहब और कई शख्सों से कहा था। प्र०—क्या केवल सालिमने तुमसे कहा था कि गायकवारके पास चलो? उ० हां साहब केवल सालिम ने कहा था। प्र०—तुम सालिमको कबसे जानते हो? उ०—जबसे मैं बड़ोदे में आया हूं और वह महाराज के साथ एक सप्ताह में दौरा आया करता था प्र०—सालिमने तुमसे यह भी कहा था कि महाराजतुमको क्यों बुलाते हैं? उ०—केवल यह कहाथा कि जो तुम महाराज के पास चलोगे तो तुम्हारे वास्ते अच्छा होगा। प्र० तुमने इन्कार किया था? उ०—हां साहब मैंने इन्कार किया क्योंकि उन दिनों मुझको जानेका अवकाश न था प्र०—यह बात सही है कि तुम कभी नहीं गये? उ०—मैं कभी नहीं गया। प्र०—तुम कहां ठहरे हुये थे जब कितुमने ऐडगैन्टन साहब को गवाही दी थी? उ०—मैं साहब अपने साहब के यहां गया था। प्र०—तुम कबसे पुलिस के पहरे में हो? उ०—चालीस दिन से। प्र०—तुम रावजी को जानते हो? उ०—हां साहब मैं जानता हूं। प्र०—तुम कब से जानते हो? उ०—जब से साहब मैं यहां आया हूं। प्र०—तुम्हारा और

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

रावजी की प्रीति थी? उ०—साहब हम बात चीत किया करते थे कुछ मिचता नहीं थी। प्र०—कभी रावजीने तुम से महाराज के यहां चलने के वास्ते कहा था? उ०—कभी नहीं कहा। प्र०—अच्छा उसने तुम से कभी नहीं कहा परन्तु तुमने कभी उस से इकरार किया था? उ०—नहीं साहब कभी नहीं। प्र०—कभी तुमने रावजी से कहा था कि चलो महाराज के यहां चलें? उ०—मैंने रावजी से सिवाय उन साठ रुपयों के जो मैंने महाराज से पाये थे कभी और महाराज के यहां का जिक्र तक नहीं किया। प्र०—कभी तुम और रावजी ने महाराज के यहां जाने का बन्दोबस्त किया था? उ०—कभी नहीं। प्र०—कभी तुम और रावजी सालिम के साथ महा-राज के यहां गये थे? उ०—कभी नहीं। प्र०—कभी राव जी के साम्हने तुम से और गायकवार से बातें हुई थीं? उ०—कभी नहीं हुई और मैं कभी नहीं गया। प्र०—तो अब इस बात से मैंने यह समझा कि तुम महाराज की हवेली में कभी नहीं गये? उ०—कभी नहीं गया। प्र०—कभी तुमसे और महाराज से बातें नहीं हुई? उ०—कभी नहीं हुई। प्र०—यदि रावजी तुम्हारे मुंहपर कहदे कि तुम महाराज के यहां गये थे तो यह बात गलत है? उ०—बिल्कुल गलत है। प्र०—अगर रावजी तुम्हारे मुंहपर कहदे तो तुमको आश्चर्य होगा? उ०—हां साहब जरूर आश्चर्य होगा यह बात बिलकुल गलत है। प्र०—तुम कभी गोवा को गये थे? उ०—हां साहब एक महीने की रुखसत लेके गया था। प्र०—क्या तुम वहां से लौट आये थे तो तुम रावजी के साथ महाराज के यहां गये थे? उ०—मैं कभी नहीं गया। प्र०—अच्छा एक बात तुम मुझको और बताओ कि तुमने कोई पुड़िया महाराज के पास से पाई थी? उ०—मैं क्योंकर पुड़िया पाता जब कि मैं महाराज के यहां गयाही नहीं। प्र०—अच्छा फर्ज करो कि तुम महाराज के पास नहीं गये

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

परन्तु कोई पुड़िया तुमने महाराज से पाई थी ? उ०—कोई पुड़िया नहीं पाई। प्र०—तुमने ऐडगैल्टन साहब के साम्हने क्या इज़हार दिये थे। उ०—साहब जो कुछ मैंने इज़हार दिये थे वह कागज में लिख लिये गये हैं। प्र०—क्या उन्होंने तुमसे पूछा था कि तुमने महाराज से कुछ पाया ? उ०—हां साहब मुझ से पूछा था लेकिन मैंने उसका उत्तर दिया प्र०—तुम अकबर अली को जानते हो ? उ०—हां साहब जानता हूं। प्र०—जब तुमसे ऐडगैल्टन साहब इज़हार ले चुके थे तो तुमसे कोई सवाल अकबर अली ने किया था ? उ०—हां साहब उन्होंने भी इज़हार लिया था मैंने वही इज़हार जो ऐडगैल्टन को दिया था उनके रूबरू भी कह दिया। प्र०—तुमसे यह कहा था कि अगर तुम सच कहोगे तो तुम्हारे वास्ते अच्छा होगा ? उ०—हां साहब मुझ से कहा था और मैंने भी जो कुछ सच था कह दिया था। प्र०—खानबहादुर ने तुमसे पूछा था कि तुम महाराज के यहां गये थे ? उ०—हां साहब पूछा था। प्र०—तुमको खबर है कि रावजी ने तुम्हारे निस्बत क्या कहा ? उ०—मुझको खबर नहीं साहब ऐडवकेट जनरल ने कहा कि मेरे दोस्त पांचवीं तारीख़ को इज़हार की तारीख़ मुकर्रर करते हैं अगर साहब प्रेज़ीडण्ट का भी यही सम्मत हो तो यही तारीख नियत की जावे प्रेज़ीडण्ट साहब ने कहा अच्छा यही तारीख करार दी जावे इसके पीछे जो इज़हार उसने दिये वह साहब प्रेज़ीडेण्ट को सुनाये गये॥ तदनन्तर टिफ़न खाने के वास्ते इजलास बरखास्त हुआ—टिफ़न खाने के उपरान्त इजलास फिर शुरू हुआ और फ़ियर साहब गवाही के वास्ते बुलाये गये फ़ियर साहब ने सौगन्ध खाकर बयान किया कि मैं बम्बई की फ़ौज का करनैल था मेरा नाम राबिट फ़ियर साहब है मुझको श्री महारानी के कम्पानियन बाथ और ऐडेकांग के तमग़े मिले हैं मैं १८ मार्च सन् ४८७५ ई० को

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बड़ौदे में आया था मैं यहां पोलीटीकल रजीडण्ट बड़ौदे का मुकर्रर होके आया और २४ दिसम्बर तक इस ओहदे पर मुकर्रर रहा मार्च सन् १८७४ ई० में मेरी मेम साहिबा बिलायत को गई थी अमीना आया बम्बई तक उनको पहुंचाने गई उसको एक महीने की छुट्टी बम्बई से मिली जबकि मैं बम्बई में गया था तो जनरल गेल साहब के मकान में ठहरा था और मैं नौसारी को महाराज के साथ २ अप्रैल सन् १८७४ ई० को गया था मिस्टर बोवोसाहब मेरे साथ नौसारी को नहीं गये मैं नौसारी में १६ मई सन् १८७४ ई० तक ठहरा रहा और मेरे दोतीन रोज आने के पीछे महाराज भी बड़ौदे में आये पीलीसाहब के काम देनेतक मैं बराबर बड़ौदे में रहा और महाराज गायकवार भी बराबर बड़ौदे में रहे महाराज प्रतिसोमवार और बृहस्पति को मुझसे मुलाकात करने को आया करते थे वह बहुधा गोविन्दराव और बापूभाई के साथ आया करते थे उन के साथ कई सवार अरदली में होते थे मैं उन सवारों को बखूबी जानता हूं बहुधा यशवन्तराव और सालिम उनके साथ आया करते थे और जब कभी यह नहोते थे तो महादेवराव काली और यशवन्तराव का लड़का आया करता था जब कि मैं नौसारी में था तबभी यह लोग आया करते थे मेरी रजीडन्सी कचहरी के पश्चिमकीओर एक जगह थी वहां एक कमरे में मेरा गुसलखाना था मेरे गुसलखाने के बाहर एक बरामदा था वहां एक तिपाई रक्खी थी वहां दो मनुष्य अर्थात् रावजी और नरसू बैठे रहते थे करीम बोवोसाहब के कमरे के बाहर बैठा रहता था गोविन्दबापू मेरी कचहरी में आता था मैं सुबह उठ कर हवाखाने के वास्ते जाया करता था और वहां से आकर एक गिलास चकोतरह की शर्बत का जोकि हमेशह अब्दुल्ला चौकीदार बनाता था पिया करता था ९ दिसम्बर को मैंने शर्बत पिया और मेरा शिर घूमने लगा मैं सितम्बर महीने से

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बीमार था गणपति के तहवार पर मैं बहुत अलील था और मेरे शिर में फोड़ा निकला था यह फोड़ा बराबर तीन सप्ताह तक रहा और डाक्टर सीवर्ड साहब हररोज़ पलास्टर उसमें लगाया करते थे और यह पलास्टर मेरी मेज़ पर रक्खा रहता था इस फोड़े के सबब से मेरे शिर में पीड़ा होती थी और मेरी आंखें बैठी जाती थीं और जब कि मैं रात्रि को सोता था तो मुझ को बुखार मालूम होता था ६ नवम्बर को मैं गोविन्दराव के मकान पर गया और मैंने दो तीन घूंट शरबत के पिये थे और मैं सारे दिन अलील रहा दूसरे दिन फिर मैंने थोड़ासा शर्बत पिया ९ तारीख़ को भी मैंने शर्बत पिया और उस दिन मैं हवा खोरी से जल्द पलट आया मैंने देखा कि रावजी हवालदार ने मुझको बरामदे में आकर सलाम किया यह बात नई थी और कभी इतनी जल्दी रावजी नहीं आया था दो तीन घूंट पीने के उपरान्त बीस मिनट तक मैं चिट्ठी लिखा किया फिर मैंने देखा कि मेरे सिर में अतिपीड़ा हो रही है मैंने जो उस गिलास को देखा तो मालूम हुआ कि इस गिलास में काले रंग की तिलछट जमी हुई है मैंने उसको देख कर तुरन्तही चिट्ठी डाक्टर सीवर्ड साहब के वास्ते बुलाने के लिखी डाक्टर साहब आकर उस तिलछट को लेगये जो कि वह सोमवार था महाराज भी थोड़ी देर के उपरान्त आये मैंने उनकी कुशल प्रश्न की उन्होंने कहा कि मैं अलील हूं और दीवाली की मिठाई खाने से मैं अलील होगया थोड़ी देर के उपरान्त वह चले गये यशवन्तराव दीवाली की डाली मेरे देने के वास्ते लाया और मुझको एक मिठाई उस में बताई कि यह मिठाई बहुत खराब है इस मिठाई को न खाना फिर जब महाराज मेरे पास से चले गये तो मैंने हाज़िरी खाई और डाक्टर सीवर्ड साहब के वास्ते लिखा- साहब प्रेज़ीडण्ट ने पूछा कि तुमने डाक्टर सीवर्ड साहब

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

को महाराज के जाने के उपरान्त चिट्ठी लिखी थी या उनके आने के पहिले? उ०—महाराज के जाने के उपरान्त मैंने भोजन किया फिर डाक्टर साहब को चिट्ठी लिखी॥ अब साढ़े चार बजे का समय होगया था इसवास्ते इजलास बरखास्त हुवा॥

पांचवें दिन का इजलास।

आज के दिन ग्यारह बजे कमीशन शुरू हुई महाराज सेंधिया बीमारी के कारण नहीं आये इजलास शुरू होने के समय साहब प्रेसीडण्ट ने कहा कि आज महाराज सेंधिया नहीं आये हैं और उनके पास आज की सम्पूर्ण काररवाई पहुंचाना चाहिये सरजन्ट बेलनटायन साहब ने कहा कि उनके पास आजकी सम्पूर्ण काररवाई अवश्य पहुंचानी चाहिये फिर गवाह के इजेहार शुरू हुये साहब ऐवडवकेट जनरल ने कहाकि कल आपने डाक्टर सीवर्डसाहबकी चिट्ठी लिखने तक इजहार दिये हैं अब यह बताओ कि तुमने डाक्टर सीवर्डसाहब के आने और महाराज के जाने के उपरान्त किसी से अपनी बीमारी का हाल बयान किया था या नहीं उ०—मैंने बे वी साहब से कहा था फिर वह चिट्ठी कि जो डाक्टर सीवर्डसाहब को फियरसाहब ने लिखी थी इजलास में पढ़ीगई॥ बड़ौदा ९ नवम्बर सन् १८७४ ई० ॥ माईडियरसर, जो कुछ कि अपनी अज़ालत का हाल सुबह को मैंने आप से बयान किया था और जो बस्तु कि तुम यहां से लेगये उस को तुमने देखा होगा दया करके बताओ कि वह बस्तु विष है या और कोई बस्तु है यद्यपि मैं दो तीनघूंट शरबतके पीने पाया परन्तु आधे घण्टे तक मेरे पेट और शिरमें पीड़ा होती रही और जी मतलाता रहा और मेरीदृष्टि कम होती गई यहांतक कि मेरी जिह्वा में कांटे पड़गये और मेरी जबान पर कषैलापन था मैंने इन सब बातोंसे जाना था कि ज्वर के कारण होगया है या शायद चकोतरह जिस का

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

शर्बत बनाया गया है खराब होगा परन्तु अब मालूम ऊआ कि यह विष का सबब है और अगर मुझको यह मालूम होता कि इसमें विष है तो मैं उसको ज़रा न फेंकता और जब कि मैंने उस गिलास के नीचे तलछट देखी तो मुझको मालूम ऊवा कि यह विष है ॥

(दस्तखत करनैल आरफियर)

यह चिट्ठी गवाही में लीगई और उसपर (ए) लिखा गया फिर थोड़ी देर के उपरान्त डाक्टर सीवर्ड साहब मेरे पास आये और उन्होंने बयान किया कि मैंने इस तलछट में से संखिया मालूम किया है मैंने शीघ्र यह बात सुनकर एक तारबर्क़ी गवर्न्नमेण्ट को दी कि मुझको विष दियागया यद्यपि मुझको तबतक यह मालूम न ऊआथा कि मुझको किसने विष दिया है तारबर्क़ी में यह लिखा ऊवाथा कि मुझको किसीने विष दिया पर ईश्वर की अनुग्रह से मैं बचगया यह तारबर्क़ी मैंने डाक्टर सीवर्ड साहब की वार्त्ताकरने के उपरान्तभेजी थी अर्थात् एक और दो बजे के मध्य में भेजीथी फिर मैंने इस ज़हर दिये जानेकी तहक़ीक़ात करनी शुरूकी और कई नौकरों को उस दिन मैंने क़ैदमें भेजा अर्थात् रावजी, हवालदार, और यलापा, और लक्ष्मण गोविन्दराम बापू आदिसंध्या के समय पहिरे में भेजे गये थे और रजीडन्सी में सब लोगोंको मालूम होगया था कि करनैलफियरसाहब को किसी ने विष दिया है फिर मैंने उस तलछट को ग्रेसाहब के पास भेज दिया और बोवीसहब और मैंने मिलकर इस मुकद्दमेकी तहक़ीक़ात की महाराज फिर २० तारीख़को मेरे घरमें आये उसदिन उनके साथ उनके वज़ीर दादाभाई नूरूजी थे उन्होंने कहा कि मैंने सुना है कि आप को किसी मनुष्य ने विष दिया है जो कुछ कोशिश हमसे होसकेगी हम उसके करने में हाज़िर हैं दादाभाई नूरूजी ने कहा कि हमने १० तारीख़ को यह खबर सुनी थी परन्तु हमको निश्चय न आया १२ तारीख़

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मैं मानता हूं कि वह प्रतिष्ठित मनुष्य है परन्तु यह बताइये कि उसने गायकवार के प्रतिकूल खबरें दी थीं या गायकवार के फ़ायदे की? उ०—उसने गायकवार के प्रतिकूल एक भी खबर नहीं दी थी। प्र०—आप के रुतबे का आदमी हमारे प्रश्न का जवाब बख़ूबी दे सक्ता है आप यह बताइये कि वह खबरें गायकवार के प्रतिकूल थीं या गायकवार के वास्ते अच्छी थीं? उ०—गायकवार अन्याई मनुष्य था और भाव पूनाकर नगर के रहने वालों का बड़ा हितैषी था सो लोगों की भलाई के लिये खबरें दिया करता था। प्र०—यह हमारे प्रश्न का उत्तर नहीं है बड़े खेद की बात है कि आप हमारे प्रश्न का उत्तर नहीं देते हैं? उ०—यह मनुष्य जो खबरें दिया करता था तो हमेशा गायकवार के प्रतिकूल नहीं हुवा करती थीं। प्र०—करनैल फियर साहब आप अपने रुतबे पर ख्याल करें आप ऐसा बुद्धिमान हमारे प्रश्नों का ऐसा उत्तर दे बड़े अफ़सोस की बात है? उ०—मैंने उत्तर तो दिया कुछ यह बात न थी कि हमेशा वह बरखिलाफ़ खबरें दिया करता था। प्र०—क्या सआदत अली की शिकायत गायकवार के अन्याय की इसी शख़्स ने तुमसे बयान की थी? उ०—सआदत अली ने ख़ुद बयान की थी। प्र०—अच्छा करनैल फियर साहब सावधानी से जवाब दो क्या सआदत अली के मुक़द्दमे की उसने पैरवी नहीं की थी? उ०—एक हुक्म गवर्न्मेण्ट से आया था रिपोर्ट करने के वास्ते। प्र०—करनैल फियर साहब मेरे प्रश्नों पर किञ्चित् ध्यान दीजिये कि भाया भावपूनाकर ने सआदत अली के मुक़द्दमे की पैरवी की थीं या नहीं? उ०—जहां तक कि मैं जानता हूं कह सक्ता हूं कि उसने पैरवी नहीं की क्योंकि पैरवी का शब्द बहुत पुरमानी है उसका मुक़द्दमा तो बहुत दिन से पेशी में था वह इस मुक़द्दमे में के विषय में बहुधा खबरें दिया करता था। प्र०—तुमको इस बात के कहने में कोई सन्देह तो नहीं है? उ०—हम को

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कोई सन्देह नहीं है बेशक सम्रादतअली के मुक़द्दमे में भावपूनाकर ने बहुत मदद दी थी। प्र०—तांबे के निस्बत तुमसे भावपूनाकर ने क्या कहा था? उ०—मुझको याद है कि उसने कहा था कि तुम्हारे ज़हर में सङ्खिया और हीरे का चूरा और तांबा मिला था। प्र०—क्या केवल यही खबर तुमको मिली थी? उ०—हां यही खबर मिली थी। प्र०—तुमने भाव पूनाकर से पूछा था कि तुमको यह खबर क्योंकर मिली? उ०—मैंने नहीं पूछा किन्तु मैंने इस खबर को एक बाज़ारी गप समझा। प्र०—अभी तो तुमने कहा था कि वह बहुत मोतबिर खबर है फिर बाज़ारी गप क्योंकर थी? उ०—मैंने इसलिये कहा था कि मैं उसको प्रकट न करूं। प्र०—क्या तुम्हारे शर्बत में तांबा भी था? उ०-तांबा नहीं था परन्तु मेरे मुंह में तांबे का स्वाद आगया था। प्र०—क्या शर्बत पीने के पीछे तुम्हारे मुंहमें स्वाद आ गया था? उ०—हां शर्बत पीनेके पीछे जब मैंने चुरट पिया है उसके पीछे तांबे का स्वाद आगया था। प्र०—क्या चुरट मेंभी तांबेका स्वाद होता है? उ०—नहीं चुरट मेंतो नहीं होता है परन्तु शायद सङ्खिया खानेके पीछे चुरट पीने से स्वाद ऐसा हो गया हो। प्र०—यहस्वाद तुम्हारे मुंहमें कबतक रहा? उ०—बीस मिनट तक। प्र०—तुमने शर्बत पीने के कितनी देरके पीछे बाक़ी शर्बत फेंका था? उ०—कोई आध घण्टे के पीछे। प्र०—मालूम होता है कि तुमने बेस्वाद होने के कारण बाक़ी शर्बत फेंक-दिया होगा? उ०—हां। प्र०—क्या ६ और ७ को तुम्हारे मुंहका स्वाद८तारीखके सदृश होगया था? उ०—नहीं। प्र०—फिर तुमने आठवीं तारीख को शर्बत क्यों नहीं पिया? उ०-ईश्वर का हो अनुग्रह था कि मैंने नहीं पिया नहींतो मरजाता। प्र०—परन्तु अदालतों में तो सबब पूछा जाता है तुम भी कोई सबब बताओ? उ०—कोई सबब नहीं। प्र०—तो क्या तुमने बे सबब नहीं पिया? उ०—यही सबब है कि ६

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

और ७ तारीख़ को मेरा चित्त अच्छा नहीं था इसी सबब से ८ को नहीं पिया। प्र०—कोई और सबब नहीं है? उ०—मेरे विचार में कोई सबब नहीं है। प्र०—तुमने रावजी के इज़हार लिये थे? उ०—हां लिये थे। प्र०—क्या उसने फैज़ का नाम लिया था? उ०—हां लिया था—फिर टिफ़न का समय आगया और जलसा बरखास्त हुवा टिफ़न खाने के पीछे फिर प्रश्न पूछने शुरू होगये। प्र०—भावपूनाकर तुम्हारे पास क्यों आया करता था? उ०—साहब मुलाक़ात करने को आया करता था। प्र०—क्या वह तुम्हारे पास दफ़र के वक्त आया करता था? उ०—आया करता था। प्र०—क्या तुम्हारी ग़ैरहाज़िरी में भी आया करता था? उ०—नहीं आया करता था। प्र०—कभी तुमने उसको अपने पीछे भी आकर पाया था? उ०—नहीं पाया। प्र०—साहब कुछ सोचकर जवाब दीजिये? उ०—हां कभी ऐसा होता था कि अगर मैं इस्कूल को गया तो वह आकर मेरी मुलाक़ात के वास्ते ठहरजाता था। प्र०—इससे क्या यह बात साबित है कि अगर तुम कभी बाहर गये और वह तुम्हारी मुलाक़ात को आया तो तुम उसको आकरघरपर पाते थे? उ०—कभी सुबह को जब मैं हवा खाके आया तो उसको मैंने आया-हुवा नहीं पाया। प्र०—मेरा मतलब आपके सुबह के हवाखाने से नहीं है मेरा मतलब यह है कि कभी आपने बाहर से आकर उसको बैठाहुवा पाया या नहीं? उ०—कभी नहीं। प्र०—अच्छा यह बताओ कि वह तुम्हारे पीछे कभी आता था तो तुम्हारे बरामदे में आकर बैठा-करता था या नहीं? उ०—हां बैठा रहता था। प्र०—तो मालुम हुवा कि कभी वह तुम्हारे पीछे तुम्हारे खास कमरे में भी चला आता होगा? उ०—नहीं मेरे कमरे में नहीं आ सक्ता था। प्र०—२ नवम्बर के खरीते के विषय में कुछ भावपूनाकर ने कहा था? उ०—मुझसे कुछ

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

नहीं कहा था। प्र०—तुमने उसके विषय में कब सुना था? उ०—मैंने सुनाथा मगर यह याद नहीं कि कब सुनाथा। प्र०—अच्छा आप याद कीजिये? उ०—एक दो रोज़ पहिले सुना था परन्तु मैं ठीकर नहीं कह सक्ता हूं। प्र०—भाव पूनाकर को कुछ उसके विषय में ख़बरथी? उ०—मुझको ख़बर नहीं। प्र०—एक खरीता जो श्रीमान् नव्वाब गवर्न्नर जनरल के यहां से आया था उसके जवाबके बारे में कुछ इसने कहा था या नहीं? उ०—हां कहा था। प्र०—उसे कहां से ख़बर मिली? उ०—यह बात मैंने उससे नहीं पूछी प्र०—उसने तुम से क्या कहा था? उ०—उसने कहा था कि एक खरीता जो गवर्न्नर जनरल के यहां से आया है उसका उत्तर महाराज के यहां से लिखा जाता है। प्र०—क्या उस जवाब में तुम्हारी शिकायत की थी? उ०—मुझको ख़बर नहीं। प्र०—क्या भावपूनाकर ने उसकी इत्तिला तुमको नहीं दी? उ०—इसकी इत्तिला नहीं दी। प्र०—करनैल फ़ियर साहब क्या आप सौगन्द खा सक्ते हैं कि इस की इत्तिला उसने आपको नहीं दी? उ०—हां मैं सौगन्द खा सक्ता हूं कि इसकी इत्तिला उसने नहीं दी। प्र०—फिर आपको क्योंकर मालूम ज़ुवा कि उस में आपकी शिकायत थी? उ०—मेरा ऐसा विचार है। प्र०—भाव-पूना कर क्या जासूस था जो तुम को ख़बरें दिया करता था? उ०—नहीं वह बड़े रईस का एजन्ट है और बज़ुत प्रतिष्ठित मनुष्य है। प्र०—वह किस रईस का एजन्ट है? उ०—मीर इब्राहीम अली का एजन्ट है। प्र०—वह तुमको क्यों ख़बरें देने आया करता था? उ०—वह बज़ुधा रज़ीडन्सी में मीर जुलफ़िक़ार अली के काम के वास्ते आया करता था और उस ज़िक्र में इसका भी ज़िक्र कर दिया करता था। प्र०—जिस दिन तुमको ज़हर दिया गया तुमको मालूम है कि वह आया था? उ०—हां वह आया था। प्र०—क्या तुमने उससे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कुल हाल कह दिया था ? उ०—नहीं कहा था। प्र०—तुम से तांबे के निस्बत उसने किस तारीख़ को कहा था ? उ०—बारवीं या तेरवीं तारीख़ कहा था। प्र०—तुम को पूनाकर को देखे ऊये कितने दिन ऊये ? उ०—कलही मुझसे उससे मुलाक़ात ऊई है। प्र०—तुमने उससे कुछ कहा तो नहीं ? उ०—मैंने उससे यह पूछा कि तुमने मुझको ख़बर दी थी कि तुमको संखिया और हीरेका चूर्ण और तांबे से ज़हर दिया गया है उसने कहा कि हां मैंने कहा था॥

सरजन्टबेलनटायन साहब के प्रश्न पूर्ण ऊये॥

ऐडवकेटजनरल ने कहा कि मैंने बम्बई को फ़ैलके मंगाने के लिये तारबर्क़ी भेजीहै अब मैं करनैल फ़ियर साहबसे दुबारह तब प्रश्न करूंगा कि जब सरजन्टबेलन टायन साहब के प्रश्न सब ख़त्म होजावेंगे—प्रेज़ीडेण्ट साहब ने कहा कि नहीं तुम अपने प्रश्न करलो और सरजन्टबेलन टायन साहब फ़ियर साहब से फिर प्रश्न करलेंगे॥

फ़ियर साहब से इज़हारात फिर लिये गये॥

प्र०-ख़रीता कौन सी तारीख़ को लिखा गया था ? उ०-९ तारीख़ को। प्र०—क्या तुम नौसारी को गवर्न्नमेण्ट की आज्ञा से नहीं गये ? उ०-गवर्न्नमेण्ट की आज्ञा से मैं वहां नहीं गया। प्र०—तुम्हारे इस न जाने को गवर्न्नमेण्ट ने पसन्द किया ? उ०—हां पसन्द किया। प्र०—महाराज ने जो दादा भाई नूरूजी को अपना दीवान किया था तो उसमें तुम्हारी सलाह ली थी या नहीं ? उ०—हां साहब पहले उन्होंने मुक़र्रर कर लिया था फिर ख़रीते के द्वारा मुझको इत्तिला दी थी। प्र०—जबसे दादा भाई नूरूजी मुक़र्रर ऊये थे और उन्होंने प्रबन्ध के लिये किसी तरह की सहायता मांगी तो तुमने उनको सहायता दीथी ? उ०—हां साहब दी थी। प्र०—कभी दादा भाई नूरूजी ने उसकी शिकायत की थी कि फ़ियर साहब हमको मदद नहीं देते

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

है ? उ०—कभी नहीं किन्तु कई बार उन्होंने मेरी सहायता देने का गुण माना। प्र०—तुमने अभी कहा है कि कई आदमी मेरे पास खबरें लाते थे क्या वह योंही आते थे या तुम कुछ उनको देते थे ? उ०—मैं कुछ भी नहीं देता था। प्र०—उस खरीते में जो महाराज ने तुम्हारी शिकायत लिखी थी वह सहीह है ? उ०—बिल्कुल गलत है। प्र०—तुमसे उस खरीते के निस्बत महाराज से कुछ बातें हुई थी ? उ०—मैंने उनसे बड़ा अफ्सोस जाहिर किया था कि तुमने मेरी शिकायत बिल्कुल झूठ लिखी और उन्होंने भी बड़ा अफ्सोस किया और कहा कि वास्तव में आपकी शिकायत झूठ लिखी गई मेरा कुछ अपराध नहीं दादा भाई ने आपकी शिकायत लिखी और मैंने जो उनको मना किया तो उन्होंने उत्तर दिया कि जब तक सम्पूर्ण कारवाई मेरे सुपुर्द न करोगे तब तक इन्तिजाम बिल्कुल न होगा। प्र०—उस शर्बत में सिवाय अरक चकोतरे के और भी कोई वस्तु थी ? उ०—और कुछ वस्तु न थी सरजन्टमेलन टायन ने पूछा कि क्या तुमने उस खरीते को अपने उत्तर के साथ भेजा था ? उ०—हां मैंने अपने जवाब के साथ खरीता भेजा था॥

अनन्तरारटी साहब ने डाक्तर सेवर्ड साहब के इजहारात लिये

उन्होंने बयान किया कि मेरा नाम जार्ज अडोने सार्ट साहब है मैं बम्बई के फौज का डाक्टर हूं और मैं बड़ौदे की छावनी की मजिस्ट्रेटी का काम करता हूं मैं सितम्बर महीने से यहां रहता हूं जब कि करनैल फियर साहब के सिरमें फोड़ा था मैं उसका इलाज करता था—साहब प्रेजीडएट ने पूछा कि क्या फोड़ा उनके सितम्बर के महीने में निकला था ? उ०—मुझको याद नहीं॥ गवाह वर्णन करता है कि मैं उनके फोड़े का इलाज करता था मुझको ९ नवम्बर का हाल मालूम है मुझको एक चिट्ठी फियर साहब ने लिखी थी परन्त इस वक्त मेरे पास कोई चिट्ठी नहीं है जब कि मैं रजीडन्सी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

में आया ते। मैंने दो नौकरों को बरामदे में बैठे हुये पाया नरसू ने मुझको हमेशा के तौर पर सलाम नहीं किया हमेशा जो मैं आता था तो मैं नरसू से कुशल पूछता था और वह मुझको झुक २ कर सलाम करता थो परन्तु इसबेर उसने प्रति कूल किया और रावजी ने मेरा छाता और टोपी जल्दी से ले लिया रावजी कभी छाता नहीं लेता था यह बात भी मुझको नई मालूम हुई और मैं करनैल फियर साहब के कमरे में गया और वहां मैंने उनको पाया और करनैल फियर साहब ने मुझसे कहा कि मुझको किसी ने जहर दिया है देखो इस गिलास में तलछट जमा है और सब कैफियत अपने मिजाज की वर्णन की मैं उस तलछट को लेकर अपने घर चला आया करनैल फियर साहब ने मुझको वह भी जगह दिखाई जहांबाक़ी शर्बत फेंक दिया था मैंने देखा कि कोई पतली वस्तु वहां फेंकी गई है फिर मैंने रावजी नरसू को बाहर जाने के समय भी उसी जगह बैठे पाया और रावजी ने फिर जल्दी से उठ कर मेरी टोपी और छाता देदिया और वह आदमी जो मेरे बुलाने के वास्ते गया था उसको मैंने रानी के पुल के पास या मालूम हुआ कि वह उधर से आता है मैंने उससे एक दो सवाल किये उसने मुझको जवाब दिया फिर मैंने दो सवारों को महाराज की रजीडन्सी में आते देखा उसमें से मैं एक को पहिचानता हूं उसका नाम यशवन्तराव है॥

अब साढ़े चार बजगये थे इस कारण मिस्टर अनवरारटी साहब ने कहा कि जो और प्रश्न किये जावेंगे ते। बहुत देरी होगी इस कारण जलसा बरख़ास्त हुवा॥

छठे दिन का इजलास॥

आज ११ बजे कमीशन का इजलास शुरू हुआ कमीशन के सम्पूर्ण मेम्बरान मौजूद थे सरल्यूइसपीली साहब बीमारी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

के कारण से नहीं आये श्रीमान् मल्हरराव टिफ़न के उपरान्त कमीशन में आये ॥

पहिली रीतिके अनुसार ऐडवकेट जनरल अर्थात् सरकार के मुख्य वकील और मिस्टर अनवरारटी साहब मिस्टर बरन साहब की हिदायत से और मिस्टर लोवलैण्ड साहब और मिस्टर लेवारनर साहब श्रीहुजूर वैसरायके ओर से उपस्थितथे और सरजन्टबेलनटायन साहब और मिस्टर ब्रैन्सन साहब और मिस्टर परसल साहब और मिस्टर शान्ताराम नारायण, मिस्टर जाफरसन साहब की हिदायत से और बेलनटायन साहब गायकवार की तरफ़ से थे मिस्टर वासुदेवजगन्नाथ वकील हाईकोर्ट श्रीमान् गायकवार की ओर से मुक़द्दमे को देख रहे थे ॥

मिस्टर जार्ज्जटेलर साहब और मिस्टर जी, ऐम, बेगली साहब दोनों रानियों और महाराजासाहब की बेटीके ओर से हाज़िर थे ॥

कलके दिन श्रीमान् महाराजा संधिया भी हाज़िर थे और जो उनका चित्त कुछ उद्विग्न था वह जाता रहा श्रीमान् महाराजा संधिया सफेद पोशाक पहिने हुयेथे और उसके किनारों पर सुनहरी कारचोबी काम था महाराजा साहब के गले में दो हार थे एक हार बड़े २ जमुर्रद के टुकड़ों का था और दूसरा हार मोतियोंका था जिसमें तीन लड़ियां थीं उस हार में एक धुगधुगी बड़े २ हीरों की जड़ी हुई थी इस हार में एक बड़ा ज़मुर्रद भी था बायेंकानमें एक गुच्छा बहुमूल्य मोतियोंका था और दहिने कान में केवल दोतीन मोतीथे हाथों में हीरे के जड़ाऊ कड़े थे और दहिने हाथ में एक हीरेकी अंगूठी थी जिसमें एकहीरा माजूफलके बराबर था बायें हाथ में एक अंगूठी थी उसमें जमुर्रद बहुत बड़ा जड़ाऊवा था निदान वह बिल्कुल जवाहरात और रत्नों में जगमगारहे थे यह पोशाक महाराजा साहब की वही थी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जो रोज़मर्रा पहिना करते हैं और किसी बात का उनको ख़याल न था वह करनैल फ़ियर साहब के इज़हार का तर्जुमा जो हिंदुस्तानी ज़बान में हुवा था देख रहे थे आजके दिन केवल डाक्टर सीवर्ड साहब और डाक्टर ग्रे साहब के इज़हार लिये गये इन दोनों डाक्टर साहबों के इज़हार से साबित हुवा जो तलछट गिलास में रहगया था और गिलास का शर्बत करनैल फ़ियर साहब ने फेंक दिया था वह सफ़ेद संखिया और पिसा हुवा हीरा था डाक्टर सीवर्ड साहब ने वह हाल भी बयान किया जो आया ने अस्पताल में कहा था ॥

जिस समय अदालत एकत्र हुई तो डाक्टर सीवर्ड साहब बुलाये गये मिस्टर अनवरारटी साहब ने नीचे लिखे हुये प्रश्न किये ॥

प्र०—डाक्टर सीवर्ड साहब आपको याद होगा कि शनिवार को आपने कहांतक इज़हार दिये थे कि आप गिलास लेकर जिसमें तलछट था अपने मकान पर आये फिर उसको क्या किया आपने उस तलछट के क्या जुज़ अलग २ किये थे? उ०—मैंने उस गिलास को किताब की अलमारी में रखकर बन्द करदिया था ॥

सरजन्टबेलनटायन साहबने कहा कि कुछ ज़ोर से वर्णन कीजिये क्योंकि आप की गवाही अति आवश्यक है मुझको अफ़्सोस है कि मैं आप की गवाही में दखल देता हूं। प्र०—मिस्टर अनवरारटी साहब—क्या आपनें गिलास को उस समय तक बन्द रक्खा जबतक आपने तलछट के जुज़ अलग करने के वास्ते उसको मंगाया था ? उ०—हां बन्द रक्खा। प्र०—क्या आपने अलग किया—अभी प्रश्न पूरा नहीं हुआ था कि सरजन्टबेलनटायन साहबने खड़े होकर कहा कि आप पूछिये कि उन्होंने उस तलछट को क्या किया ? उ०—मैंने कुछ ताज़े कोयले मंगवाये लेकिन कोयलों के मंगवाने से पहिले इस तलछट मेंसे थोड़ी तलछट को एक शीशे के टुकड़े पर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

रक्खा और खुर्दबीन से देखा। प्र०—इस तलछट की क्या सूरत थी? उ०—मुझको सफेद २ ज़र्रे कीनेदार देख पड़े जैसे सफेद पत्थर पिसा हुआ होता है। प्र०—आपको कोई वस्तु और भी मालूम हुई? उ०—हां कुछ चमकती हुई वस्तु थी। प्र०—प्रेज़ीडेण्ट का—यह वस्तु सफ़ेद थी? उ०—हां सफ़ेद और उज्ज्वल और एक दो ज़र्रे हस्या हो मिलेहुये किसी वस्तु के थे सिवाय इसके खुर्दबीन से और कोई वस्तु मालुम न हुई फिर मैंने इस तलछट को बिल्लार के हावनदस्ते में जिस को मैंने खूब साफ करलिया था डाला और थोड़े कोयले भी उसमें डालकर दोनों को पीसा और फिर एक नली में जो इस प्रकार की वस्तु के इम्तहान के वास्ते मुक़र्रर है डाला यह नली बिल्कुल नई थी और पहिले उसमें किसी चीज का बर्त्ताव न हुवा था मैंने इस नली को इसपरटिस आफवाइन (अर्थात् वह शराब जो सफा करती है) में गर्म किया उसमें किसी क़दर नमी आगई थी मैंने नमीको ब्लाटिङ्ग कागज़ से सुखाया फिर नली को मैंने गर्म किया जब खूब गर्म होगई तो एक छल्ला धातके सदृश उसमें मालूम हुवा यह छल्ला मेरे पास मौजूद है और उसको मैं पेश करता हूं। प्र०—प्रेज़ीडेण्ट क्या आपने धातका छल्ला कहाया? उ०—हां धात का छल्ला कहिये-कियह कि गर्म होनेसे सम्पूर्णवस्तु इकट्ठी होगई देखिये इस नै में यह छल्लासा है जो एकतिहाई इंचका चौड़ा है इस नैपर (एम) अक्षर का निशान है इस नै के गर्म करने के पीछे फिर मैंने देखाकि कोई साफचीज छल्ले के दोनोंओर इकट्ठी होगई है जब मैंने खुर्दबीन से उसको देखा तो वह वस्तु बहुत चमकती हुई देखपड़ी इससे मालूमहुवा कि वह संखिया है मैंने यह कोयला अस्पताल से मंगवाया था इससे अधिक उसरोज़ मैंने कुछ इम्तहान नहीं किया मेरे पास इस प्रकारकी चीज़ोंके इम्तहान के वास्ते कुछ दवाइयां नहीं हैं जो चिट्ठी कि अदालत में मौजूद है वह कर्नैल फियर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

साहबने मुझको भेजीथी उसवक्त मैं रजीडन्सी को जाता था मैंने अपने इम्तहान और इस तलछट के जुजोंके अलग करने का नतीजा करनैलफियरसाहब से बयान किया और मैंने जो चिट्ठी करनैल फियर साहब को लिखी थी वह उन्हीं के पास बैठकर मिस्टर बोबीसाहब के सामने लिखी ॥

मिस्टर अनवरारटीसाहबने अदालत में बयान किया कि यह चिट्ठी रज़ीडन्सी के सरजन्ट के तरफ से साहब रजीडेण्ट केनाम है उस पर (ऐन) अक्षर का निशान है और उसका आशययह है ॥

साहब——आपकी चिट्ठी के उत्तर में जो मैंने इसवक्त एक बजे पाई रपोर्ट करता हूं कि जहांतक मैंने इस गिलास के तलछट का इम्तहान किया जो आपने आज मुझको इम्तहान के वास्ते दिया था तो मालूम हुवा कि वह तल-छट संखिया है ॥

यह संखिया इतनी थी कि मैंने उसका इम्तहान कोयले से किया और संखिया का होना मुझको मालूम हुवा ॥

वह छल्ला जोनेमें पड़ा हुवा है और छल्ले के दोनों ओर जो उज्ज्वल वस्तु है यह खास संखिया होने का असर है ॥

मेरी इच्छा है कि गिलासके इस बाक़ी तलछट को डाक के द्वारा गवर्न्मेण्ट के डाक्टर के पास भेजदूं जो ऐसी चीजों का इम्तहान किया करता है ॥

अगर आप गिलास का सब शर्बत पीजाते तो आप के मरने के वास्ते काफी था ॥

(दस्तखत जी—एडवनसीवर्ड रज़ीडन्सी सरजन)

९ नवम्बर सन् १८७४ ई०

बड़ौदा ।

फिर डाक्टरसाहबने वर्णन किया कि बाक़ी तलछट को मैंने ब्लाटिङ्ग कागज के ऊपर रखकर छाना और कुछ तलछटजो गिलास में रहगया था उसको भी पानी में डालकर छान

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

लिया इस उपाय से पानी छनगया और तलछट कागज़ के ऊपर रहगया मैंने इस कागज़ को एक जलतीऊई लम्पकी चिमनी के पास रखकर सुखाया जब यह कागज़ सूखगयाता मैंने उसको तह करके एक लिफाफे में रक्खा और यह लिफाफा जो अदालत में है यहीहै और यही मेरी मुहरहै जो इस पर मैंने लगाई थी प्र०—क्या यही ब्लाटिङ्ग कागज़ है जिसपर आपने तलछट को छाना था ? उ०—हां यही है और इस लिफ़ाफे की पीठ पर जो लिखा है वह मेरे हाथकालिखा ऊवा है और भोजन के समय यह लिखा था और रजिस्टरी के द्वारा डाकमें भेजाथा और यह लिफाफा भेजनेके पहिले एक दूसरे बड़े लिफ़ाफे में बन्द करके उसपर अपनी मुहर लगाई और डाक्टर ग्रे साहब के पास उसको भेजदिया ॥

मैंने डाक्टर ग्रे साहबको आप चिट्ठी नहीं लिखी थी किन्तु करनैल फियर साहब की चिट्ठी उसमें रखके भेजदी थी लिफ़ाफे भेजने के समय लाल स्याहीसे करनैलफियर साहब की चिट्ठी पर कैफियत लिखदी थी कि गवर्न्नमेएट के डाक्टर के पास जो हर वस्तु के जुज निश्चय करते हैं यह लिफाफा भेजा जाता है ॥

(दस्तखत—जी० आई० सीवर्डसाहब)

६ नवम्बर सन् १८७४ ई० ।

इसलिफ़फ़े को भी मैंने उसी मुहर से बन्दकिया जिससे छोटे लिफ़ाफे को बन्दकिया था ॥

मिस्टर अनवरारटी साहब ने अदालत के सामने वर्णन किया कि इनदोनों लिफ़ाफोंपर अलग २ अक्षरोंके चिह्नकिये जावें अर्थात् (ओ) अक्षर और (पी) कि आगे को निशान रहे तथाच अदालत से इजाजत ऊई और (ओ) और (पी) का निशान उनलिफ़ाफोंपर कियागया ॥

डाक्टर साहब ने वर्णन किया कि इस चिट्ठी का नीचे लिखाऊआ उत्तर मेरे पास आया ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

माईडियर सीवर्ड मैंने आपकी चिट्ठी एक और लिफ़ाफ़े समेत पाई अर्थात् डीमी आफीशियल करनैल फियरसाहब की चिट्ठी और एक छोटी पुड़िया जिसमें भूरे रङ्गकी कुछ वस्तु थी और उसमें कोई वस्तु पीली चमकती हुई भी थी॥

तथाच मैंने उसका इम्तहान किया तो मालूम हुवा कि इसमें सफेदसंखिया और कोई चमकती हुई वस्तु है खुर्द-बीन से मालूम हुवा कि यह पिसा हुवा शीशा या संगखारा है वह बहुधा संगखाराके सदृश है कोई २ जर्रोंका रंग गुलाबी और जर्दा था यदि आपकी इच्छा हो तो सरकारी रीति से उसका उत्तर दूं॥

मैं करनैलफियर साहब की चिट्ठी लौटाता हूं और पुड़िया को अपनी चिट्ठी के उत्तर आने तक रखलिया है॥

(दस्तखत डब्ल्यू ग्रेसाहब)

क़ायममुक़ाम कमीकल आर्नें लाइज़र गवर्न्नमेण्ट ग्रान्‌टकालेज
मुक़ाम बम्बई लिखा हुआ ११ नवम्बर सन् १८७४ ई०॥

डाक्टर सीवर्ड साहबने यह भी वर्णन किया कि मैंने कई दिन के पीछे तलछट की और भी परीक्षा की मैंने उस वस्तु को जो नली में इकट्ठी होगई थी निकालकर थोड़े पानी में डाला उसमें जो वस्तु भारी थी वह पानी के नीचे बैठ गई और जो हलकीथी वह पानीके ऊपर तैरने लगी जो वस्तु पानी के ऊपर तैरती थी उसको मैंने दो तीन बार करके उतारा और अब उसको शीशे के टुकड़े में पेशकरता हूं साहब-प्रेजीडेण्टने प्रश्न किया कि यह क्या तुमने कहा कि तीन दफ़ा करके उतारा? उ०—नहीं माई लार्ड कई मर्त्तबा करके॥

साहब प्रेजीडेण्ट ने उस समय कहा कि मिस्टर अनवरारटी साहब दयाकरके तुम एक ओर होजाओ तो डाक्टर साहब का वर्णन हम अच्छी तरह सुनें॥

पंखे रोक दिये गये ताकि वह अजज़ा जो डाक्टर साहब पेश करते हैं उड़ न जावें॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

डाक्टर सीवर्डसाहब ने बयान किया था कि यह शीशी के टुकड़े जो अब मैं पेश करता हूं वह हैं जिसपर कि मैंने गिलास का तलछट रखकर खुर्दबीन से देखा था (यह तीन टुकड़े शीशे के सन्दूकमें बन्द थे जिसपर (आर) अक्षरका निशान है) प्रथम टुकड़ा शीशेका वह है जिसपर कि मैंने गिलास का तलछट रक्खा था दूसरा टुकड़ा शीशे का वह है जिसको पहले टुकड़े पर रखकर तलछट को रगड़ाया देखिये यह शीशा छिलगया और उसका यह निशान है रगड़ने से पहिले यह निशान शीशे पर न थे इससे यहबात मालूम हुई कि जो जर्रें चमकते हैं वह किसी और वस्तुके हैं शीशे के जर्रें नहीं हैं और निश्चय करके यह हीरेका चूर्ण है जिस-का हाल मैंने पहिले भी सुना था सिवा इसके यह जर्रें बहुत चमकते थे। प्र०—डाक्टरसाहब मैंने सुना है कि आ-पके पास कुछ खबर आई थी उस खबर को इत्तिलाअ् १० नवम्बर को करनैल फियर साहब को आपने की थी॥

साहब प्रेजीडेण्टने पूछा कि यह खबर तुमने पाई थी या डाक्टरग्रेसाहब ने- मिस्टर मैलव साहब ने कहा कि मिस्टर ग्रे साहब कहिये मिस्टर अनवरारटी साहब ने कहा कि नहीं डाक्टर सीवर्डसाहब इसपर साहब-प्रेजीडेण्ट बोले कि डाक्टर ग्रे साहब का नाम आपने भूल से लिया था॥

मिस्टर अनवरारटी साहब-हां मैंने भूल की थी चमा चाहता हूं मेरा प्रयोजन डाक्टरसीवर्ड साहब के कहनेसेथा॥ डाक्टर सीवर्ड साहब ने बयान किया कि यह चिट्ठी जो अदा-लत में पेश है इसकी इत्तिला करनैल फियर साहब को सरकारी रीति पर भेज दीगई थी॥

मिस्टर अनवरारटी साहब ने कहा कि माईलार्ड—मैं इच्छा रखता हूं कि इन सब चिट्ठियों पर पहिचानके वास्ते चिह्न कर दिये जावें॥

सरजन्टबेलनटायन साहब—नहीं मेरे विचारसे जो ऐसा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

होगा तो ग़लती होगी जब तक हर एक चिट्ठी आदि की सच्चाई न होजावे उस पर निशान न किया जाय क्योंकि चिट्ठियां बहुत हैं कहां तक निशान किये जांयगे ॥

साहबप्रेसीडेण्ट ने कहा बहुत अच्छा जब तक सिदाकत न हो निशान न किया जाय। प्र०–मिस्टर अनवरारटी साहब ने कहा डाक्टर सीवर्ड साहब–आपने शनिवार को कहा था कि आपने जब करनैल फियर साहबका गिलास देखकर हिलाया तो उसमें से धुवां सा उठा था तो क्या उस धुयें के उठने से भी कोई बात मालूम हुई थी ? उ०–जब से वह गिलास मेरे पास आया था उस वक्त से किसी ने इस गिलास को हाथ नहीं लगाया था मैंने आपही औज़ारों के द्वारा उसकी परीक्षा की थी। प्र०–मिस्टर अनवरारटी साहब अब मैं दूसरी बात आपसे पूछता हूं आपको याद है कि अमीना आया का इलाज आपने किया था अगर आपके विचार से उचित हो तो अपनी किताब देखकर बयान कीजिये ? उ०–अमीनाका इलाज शायद १७ और१८ तारीखको मैंने किया उसके दाहिनी ओर बहुत पीड़ा थी और उसको बुख़ार भी था और मालूम होता था किउसके कलेजे में कोई रोग था और उसका फेफड़ा भी ख़राब होरहा था और अस्पताल के जाने से पहिले मैंने उसको देखा था मिस्टर बोवी साहब के हाते में वह रहा करती थी मेरी रायसे वह अपने मकान से अस्पताल को गई मुझसे और उससे अस्पताल में कुछ बातें हुईं सरजन्ट बेलनटायन साहब ने कहा माई लार्ड मैं नहीं जानता क्या आपके यह सवालात किस तरह इज़-हार में दाख़िल हो सक्ते हैं इस बारे में कुछ सवाल न करना चाहिये। प्र०–मिस्टर अनवरारटीसाहब ने कहा कोई सन्देशा आया का आप किसी के पास लेगये थे ? उ०–मैं कोई सन्देशा किसी के पास नहीं लेगया केवल सूटर साहब को बुलाया था। प्र०–सूटर साहब के

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पास आप किस वास्ते गये? उ०—मुझको मालूम हुआ कि आया बहुत बीमार है, मैंने समझा कि शायद उनसे आया कुछ कहेगी और अपना दिल हलका करेगी और आया से मैंने यह भी कहा था कि अगर अपने दिलका हाल कहेगी तो जल्द आराम होजावेगा तथाच उस समय आया ने मुझसे कुछ कहा था इसी कारण मैं मिस्टर सूटर साहब के पास गया मुझको मालूम नहीं कि मेरे जाने के पीछे मिस्टर सूटर साहब अस्पताल में आये या नहीं मुझको याद नहीं कि किस तारीख़ को मिस्टर सूटर साहब के पास मैं गया था क्योंकि मैंने अपनी याद्दाश्त की किताब में नहीं लिखा निश्चय करके १८ नवम्बर से दो तीन दिन पीछे होगा॥

सरजन्टबेलन टायन साहबने कहा कि माईलार्ड हमारे पास तारीख़ है—अर्थात् २१ तारीख़ है॥

मिस्टर अनवरारटी साहब ने कहा यह वह तारीख़ है जब कि मिस्टर सूटर साहब अस्पताल को गये थे परंतु वह तारीख़ नहीं है जिस तारीख़ को डाक्टर सीवर्ड साहब मिस्टर सूटर साहब के पास गये थे॥

सरजन् बेलनटायन साहब के प्रश्न॥

प्र०—आप जानते थे कि आया के इज़हार मिस्टर सूटर साहब ने लिये—अभी सवाल पूरा न हुवा था कि गवाह ने कहा हां सरजन्ट साहबने कहा कि धैर्य्य करो मेरा सवाल पूरा होनेदो अगर आपमेरा पूरा प्रश्न सुन कर उत्तर देंगे तो आपको और मुझको आसानी होगी। प्र०—क्या मिस्टर सूटर साहब ने आया के इज़हार अस्पताल के जाने के पहिले लिये थे? उ०-हां। प्र०—मिस्टर सूटर साहब से आपको मालूम हुवा कि आया ने मिस्टर सूटर साहब से क्या कहा था? उ०—कुछ भी नहीं मालूम हुवा। प्र०—आपके विचारसे मालूम होगा कि आयाने क्या बयान किया होगा और इस पूछने का संक्षेप क्याथा? उ०—हां। प्र०—आप कहते

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

हैं कि जब आया अस्पताल को आई तो वह बीमार थी ? उ०—हां वह बीमार थी। प्र०—क्या उसके बलिस्टर (फफोला) था ? उ०—मुझको याद नहीं कि बलस्तर था। प्र०—क्या तुमने पलस्तर रक्खा था क्योंकि आया कहती है कि आपने पलस्तर रक्खा था ? उ० नहीं (हिन्दुस्तानी लोग प्लास्टर को पलस्तर कहते हैं) मैंने पलस्तर बेलेडूना दवा का लगाया था लेकिन उस समय नहीं लगाया था। प्र० उसके कलेजे में पीड़ा थी ? उ०—हां उसके कलेजे में पीड़ा थी और उसका इलाज सरजन मेजर ल्यूइस साहब करते थे। प्र० तुम कहते हो कि आया अधिक चिन्ता के कारण बीमार हुई थी कलेजे की बीमारी से उसका यह हाल नहीं हुवा था ? उ०—हां मुझको उस समय ऐसा ही मालूम हुवा था और शायद यही बात हो। प्र०—आपको ऐसा ही मालूम हुवा अर्थात् उसकी शरीर के रोग से चित्त में अधिक चिन्ता थी ? उ०—हां क्योंकि जो कुछ उसका इलाज हो चुका था उससे बहुत कुछ उसको फायदा था। प्र०—आपको मालूम होगा कि देह का रोग कम है परन्तु चिन्ता से उसके मुंह का रङ्ग बदल गया होगा ? उ०—हां प्र० क्या उसका दिल अधिक चिन्ता से बेकरार था ? उ०—मुझको ऐसा ही मालूम होता था प्र०—बयान कीजिये कि यह पलटन का अस्पताल है ? उ०—हां पलटन और इस्टाफ का अस्पताल है। प्र०—क्या आप वहां काम करते हैं ? उ०—नहीं सरजन मेजर लोइस साहब काम करते हैं प्र०—फिर आप वहां क्यों गये थे और क्या आपका वहां जाना सही है परन्तु आप कहते हैं कि डाक्टर लोइस साहब को वहां का चार्ज है ? उ०—सरजन मेजर लोइस साहब मेरे मित्र हैं और जो कि मैं आया को जानता था और मुझको उससे तअल्लुक था इसलिये मैं उसके देखने को गया था। प्र०—क्या आपने जाने से पहिले सरजन लूइस साहब को इत्तिला की थी उ०—नहीं इसकी कोई जरूरत न थी क्योंकि वह मेरे मित्र हैं। प्र०—पस मालूम हुवा कि आपने डाक्टर लूइस साहब के देखने के बिना आया की रोग परीक्षा की थी? उ०—मैं यह नहीं कहता हूं कि मैंने उसके वास्ते परीक्षा की थी॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

प्र०—परन्तु आपनेप्लास्टरतो लगाया? उ०—हां बाहरलगाया था। प्र०—क्या आप उसको परीक्षानहीं कहते ? उ०—यह प्लास्टर मैंने हस्पताल के आनेसे पहले लगाया था। प्र०—मैं नहींसमझा पहिले मैंनेसमझा था कि बाहरलगाने से खाल पर लगानेका आपका मतलबहै(यहसुनकर सम्पूर्णसाहबान कमीशन हंसनेलगे) जबआया अस्पतालमें गई तो जो कुछ आपसेहोसका आपनेकिया ? उ०—हां अगरआप अस्पताल के असिस्टन्टको बुलाकर पूछेंगे तो वह आप से सबबातें कह देगा। प्र०—नहीं २ असिस्टन्टके बुलानेकी कुछ आवश्यकता नहींहै आपकी सबबातोंपर मैं निश्चयकरताहूं जबवह शफा-खानेमेंगई तो आपने उसकेलिये कुछ किया था। उ०—शायद नहींकिया—अगर आप अस्पतालके असिस्टन्टको बुलायेंगे तो वह आपसे सबहालकहदेगा। प्र०—नही मैं उसको न बुला ऊंगा आपने सबबातोंका विस्तारपूर्वक इजहारदियाहै अगर आपने उसका इलाज बखूबीनहीं किया तो आप उसकेपास क्योंगयेथे? उ०—चूंकि मैं उसके पास जाता था। प्र०—पस आपके विचारसे आयाको फायदा था और जबआपने देखा कि उसको हौलदिलहै तो आपनेसहायता की और दिलका हाल उसकेजाहिर कराया ? उ०—हां ऐसाही हुवा। प्र० आप और आया एक दूसरेकी बातों को खूब समझते थे ? उ०—हां। प्र०—आपके और उसके दरमियान कोईमुतरज्जिम न था ? उ०—नहीं प्र०—आपको यह बात खूबयादहै ? उ० हां कोई मुतरज्जिमन था केवलएक पुलिसका आदमी वहां था। प्र०—पस आपजानतेथे कि यहपुलिसका आदमीआया की तबीयतको दुरुस्त करदेगा और यह पुलिसका आदमी कौनथा ? उ०—ईश्वरजाने कौनथा। प्र०—ईश्वरका नाम न लो क्योंकि आपखूबजानतेहैं कि मैं ईश्वरको यहां नहीं बुला सक्ता? उ०—आपमुझसे ऐसीबात पूछतेहैं कि मैं उसकोनहीं जानताहूं। प्र०—मुझे अधिकारहै जो चाहूं आपसेपूछूं अब

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मैं पूछताहूं कि तुमकिसी पुलिसके आदमीको जानते हो? उ०—मैं किसी पुलिसके आदमीको नहींजानता। प्र०—आप अकबरअली को जानतेहैं। उ०—हां जानता हूं। प्र०—क्या वह अकबरअली था? उ०—नहीं। प्र०—या अब्दुल्लअली? उ०—यह नहीं जानता एकछोटा पुलिस का आदमी था। प्र०—वह बीमार औरतके कमरेमें क्या करता था? उ०—मैं जानताहूं कि यह औरतपुलिसके पहरेमेंथी। प्र०—जबआपने उससे कहाथा कि अपनेदिलका हालकहो तो कोईआदमी पुलिसका उसकमरेमेंथा? उ०—मैं नहीं जानता कि पुलिस का आदमीकमरेमें था या दरवाजेपर। प्र०—मैंबहुत नम्रता से आपसे पूछता हूं कि क्या डाक्टरों में यह बातहै कि एक डाक्टरके बीमार का इलाज दूसरा डाक्टर करे? उ०—मैं नहीं कहसक्ता कि क्यारीतिहै परन्तु सरजेनर लुइससाहबसे मेरी मित्रताहै उनकेबग़ैर कहनेके उसबीमारके पासगया था। प्र० डाक्टर सीवर्डसाहब आपसे पूछताहूं और यक़ीनहै कि आप ऐसा ओहदेदार और जानकार मुझको बखूबी जवाब देगा कि आपकी रीतिहै कि आप दूसरे डाक्टरके बीमार के पास उसकेइत्तिलाके बिना जासक्ते हैं? उ०—हांहै औरनहीं भीहैयह बात डाक्टरोंके तअल्लुक़ है जैसी प्रीतिहो वैसा वर्त्ताव करें। प्र०—पसइससे मालूम हुआ कि आपका यह मतलबहै कि अगर आपकी और एक डाक्टरकी प्रीतिहैतो आप उसके बीमार के पासउसकी इत्तिलाके बिनाजा सक्ते हैं? उ०—जोकुछमैं जानता था आपसे कहदियामुझको आपसे छिपानेकी इच्छा नहीं है॥

साहब प्रेजीडण्टने कहा कि आप हां या नहींका जबावदीजिये——गवाहने वर्णन कियाकिअगर यहबीमार डाक्टरकेनिजका हैतो उसकेपास जानाउचित है। प्र०—सरजण्टबेलनटाइनसाहबने कहाजोबिमार अस्पतालमें होतोउसकेपासआप नजांय? उ०—नहीं। प्र०—मालूमहुआ कि सरजनमेजरल्यूइससाहब अपनेकाममें बड़ेप्रवीणहैं? उ०—बड़ेनिपुणहैं। प्र०—

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

आपमुझसे वर्णनकीजिये किआप भावपूनाकर कोजानते हैं ? उ०—हांमैंने उसको देखाहै लेकिन नहीं कह सक्ता किमैं उसकोजानताहूं। प्र०—आपनेउसको कबदेखाथा ? उ०—बड़ौदेसे मिस्टरबोवी साहब केजानेके उपरान्त। प्र०—आपनेउसकोपहिले कभी नहीं देखा ? उ०—मुझकोयाद नहीं। प्र० आपने उसको उसके पीछे देखा था ? उ०—किसके पीछे। प्र० आपकहतेहैं किमैंने उसकोएक मरतबादेखाथा और अबयह भीकहतेहैं किमिष्टरबोवी साहबके जानेसेपहिले उसकोनहीं देखाक्या आपनेएक मर्तबाके सिवाय और भी देखा था ? उ० जहांतक मुझको यादहैमैं कहताहूं किमैंने उसकोनहीं देखा नउससेबातीकी। प्र०—मिष्टरबोवीसाहब कबगयेथे ? उ०—मुझकोयाद नहीं। प्र०—मैंआपसे फिरनपूछूंगा केवल इसमर्त्तबे यहपूछता हूं किआपखूब जानते हैं कि उसवक्त से आपनेभाव पूनाकेर कोनहीं देखा ? उ०—नहीं जहांतक मुझकोनिश्चय और स्मरणहै। प्र०—अबआपकीइजाजतसे ९ नवम्बरकी बाबत सवालकरना चाहताहूं परन्तुआयाके विषयमें मुझको पूछना है वहयहहै किमैं समझाकि आपकीऔर आयाकी वार्त्ताहुई थी ? उ०—जितनाकि मुझको स्मरणहै मैं वर्णन करताहूं कि मेरी और आयाकी कुछमामूली बातेंहुईं थीं। प्र०—क्याआप कहतेहैं पुलिसके आदमीने तर्जुमानहीं कियाथा ? उ०—जहां तकमुझको स्मरणहै कहताहूंकि कोई मुतरज्जिम नथा। प्र० जोआपने जवाबदिया यहमेरा प्रश्ननहींहै मेराप्रश्न यहहै कि पुलिसके आदमीने आपकी बार्त्ताका तर्जुमा नहींकिया ? उ० अगरआप अबसेप्रलय तकपूछे जावेंगेतोमैं वहीजवाब दूंगाजो कुछकि देचुकाहूं अन्तरनपड़ेगा। प्र०—मुझको यहांप्रलयतक ठहरना मंजूर नहींहै हां अगर कोई ऐसी बात पेश होजावे जिसकाहाल कुछ मालूम नहींहै शायद ठहरूं ? उ०—आप ऐसीहीबातें करतेहैं मानोप्रलय तकआप ठहरेंगे। प्र०—आप नहीं जानते पुलिस के आदमी ने तर्जुमा किया या नहीं ?

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उ०—मैंआपसे पहिलेकह चुकाहूं। प्र०—फिर मुझसे कहिये कि आपनेक्या कहाथा? उ०—मुझकोयाद नहींहैकि मैंनेक्या कहाथा। प्र०—शायद पुलिसके आदमीने तर्जुमा किया हो? उ०—शायद।—क्यातुमजानते होकि उसने तर्जुमा किया हो उ०—मुझकोयादनहीं। प्र०-डाक्टरसीवर्डसाहबमैंतुमसेपूछता हूंकि हरएक आयाके बयानका शब्दतुमनेअपने कानोंसुना? उ०—मुझको खूबयाद नहीं आपउस बातको पूछते हैं जोमेरे खयालमें नहींहै आपमुझको दरमियानी करार दिया चाहते हैंऔरइसी प्रयोजनसे आप ऐसेप्रश्न करतेहैं। प्र०—क्यामेरीयह इच्छाहै—डाक्टर सीवर्ड साहब जैसे आप बातोंमें सावधान हैं उसीतरह डाक्टरीमेंभी निपुणहैंतो आपसे बढ़करदूसरा कोई डाक्टरन होगा इसलियेआपदयाकरके बयानकीजियेकिआपने मुतरज्जिमकेद्वारा आयासे वार्ता कीथी? उ०-(बड़े जोरसे कहा)मैं उत्तरनहींदेसक्ता। प्र०—मेहरबानी करके इसकदर गुस्सा न हूजियेअबमेरे सवालका जवाबदीजिये? उ०—मैंकुछ जवाबनहींदेसक्ता।प्र०—आपकोकुछभीतअल्लुकहै?उ०-(मेम्बरान्‌कमीशनकी तरफ देखकर)अगरयह साहबइसीतरहप्रलय तकप्रश्न कियेजायंगे तोसिवा उसउत्तरके जोमैंदे चुका और कुछजवाब न दूंगा और प्रलयतक इनके सवाल नचुकेंगे॥

साहबप्रेज़ीडराट-सरजंटबेलनटायन साहब आपसे हरएक बातपूछनेके अधिकारीहैं डाक्टरसीवर्डसाहबने उत्तर दियाकि जोकुछमैं बयानकरूं उसकोसुनना चाहियेसाहब प्रेज़ीडेराटने कहाकिजो सरजन्टसाहब पूछें उसकाउत्तर आपकोदेना चाहिये डाक्टरसाहबने कहाकि मुझको मालूमनहीं। प्र०—सरजन्टबेलनटायनसाहब काक्याआप कहसक्ते हैंकिआपबखूबीहिन्दुस्तानी बोलसकेंगे? उ०—मैंहिन्दुस्तानीबोल सक्ताहूं लेकि नबखूबी हिन्दुस्तानी नहीबोल सक्ता। प्र०—अबमैं आपसे(दरबार२९ नवम्बरके प्रश्नकरताहूं कि,आपनेबयानकिया थाकिमुझसेकरनैल फियरसाहबने कहाकि मुझको खबरपहुंचीहै मुझ

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

को जहरदिया जायगा ? उ०—क्यामैंने यहकहाथा। प्र०—मैं आपकेहुजूर पेशकरताहूं मुझको मंजूर नहींकि कोईग़लती हो ? उ०—अगरमैंने ऐसावर्णन कियातो ग़लतहै। प्र०—आप कहतेहैं किकरनैलफ़िअरसाहबने मुझसेकहाथा कि मैंनेसुना हैकिलोग मेरीजानलेनी चाहतेहैं पर अबतक मुझको निश्चय नथा। परन्तु अबनिश्चय हुवा। आपको मालूमनहीं किकरनैलफ़ियरसाहबने किस शख्स से सुनाथा ? उ०—जहांतक मुझको यादहै कहताहूं किलोगोंने उनकीजान लेनेवास्ते उनको धमकाया था और उसवक्त तकउनको जहरदेने कासन्देह नथा। प्र०—जबआप रेज़ीडेन्सीको गयेथेतो आपनेगिलासको तलछटकेसमेत देखाथा उ० हां। प्र०—जबआपने उसकोदेखाथा तो तलछटमिलाहुवाथा और गिलासकी पेन्दीमेंबैठा हुवा नथा ? उ०—जबकरनैलफ़ियरसाहबने गिलासको तिरछा किया तो तलछटको मैंने पेंदीमेंबैठाहुवा देखा। प्र०—क्या यहतलछटपानीमें मिलाहुवा नथा अलगथा? उ०—यहतलछटपानी केनीचेबैठा हुवाथा। प्र०—क्यायह वस्तु इसक़दर गिलासमेंथी कि उसमें पानी पच गया था और केवल तरी उसमें बाक़ी रहगईथी ? उ०—पानी बहुतथा आपऐसेसवाल करते हैंकि जवाबदेना कठिनहै। प्र०—आप कहते हैं कि करनैलफ़ियरसाहबने आपसेकहाथा कितलछट कीरंगतसियाही माइल भूरीथी क्यापिसे हुये हीरे और संखियाका रंगऐसा होता हैमेरे विचारसे इसकायह रङ्गनहींहोता ? उ०—हांसियाही माइलभूरा रङ्गनहीं होता। प्र०—तोआप इसबातका जवाबदे सक्ते हैं कि संखिया और हीरे के चूर्ण का रङ्गस्याही माइल नहींहोताहै ? उ०—हांनहीं होता। प्र०—पस मालूम होता हैकि सिवा इनदोनों चीजोंके और कोईचीजभी थी—जिससे तलछटका रङ्गस्याही माइल होगया ? उ०—इस विषयमें मैं कुछराय नहींदेसक्ता। प्र०—हैं, हैं, डाक्टरसीवर्डसाहब इसका जवाब दीजिये ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

साहब प्रेजीडण्टने कहाकि सरजन्द बेलन टाइन साहब क्या बातहै—सरजन्द बेलनटायन माहबने कहा आप खयाल करें मैंने यहप्रश्न कियाहै कि करनैल फियरसाहबने कहाथा कि गिलासमें कोईवस्तु भूरेरङ्गकी स्याहीमाइलथी अबमैंडाक्टर सीवर्डसाहबसे पूछताहूंकि ऐसीरङ्गत संखिया और पिसीहुई हीरेकीभी होसक्ती हैतो डाक्टरसाहब कहतेथेकि नहींफिर मैंनेपूछा हैकि सिवाइन दोवस्तुओंके औरकिसी वस्तुके होने का सम्भवहै जिसमें तलछटका यहरंग होगया डाक्टरसाहब कहतेहैं किमैं इसपर रायनहीं देसक्ता ? उ०—डाक्टरसीवर्ड साहब मैंने केवल दोही वस्तुओंको देखाऔर कोईवस्तु नहीं देखी। प्र०—आपके इसवर्णनसे मालूमहुवाकि जुजोंके देखने केसमयआपने और कोईवस्तु नहीं देखी ? उ०—हांपरीक्षाके समयकोई वस्तु स्याहीमाइल मैंने नहीं देखी। प्र०—तो आप इस तलछटका रङ्गक्या बतलाते हैं ? उ०—हलका भूरा रंग बताता हूं। आपने थोड़ा पानी भी मिलाया था ? उ०—हां। प्र०—डाक्टर सीवर्डसाहब मुझको निश्चयहै किपानी डालनेके पहिलेभी अजजाअलग करलिये होंगे ? उ०—मैंने पानीका बखूबी इमतिहान नहींकिया। प्र०—मैंजानताहूं जबकोईमनुष्य किसी वस्तुके जुज अलाहिदा करता तोवह उन वस्तुओं का बखूबीइमतिहान करलेता हैजिनकेद्वारा जुजोंको अलगकरता है ? उ०—हां बहुधा यहीरीतिहै। प्र०—बहुधा दृष्टिऐसी हैं किजबकभी लोगोंनेविषका इमतिहान कियाहैतो जिनवस्तुओं केद्वारा इमतिहान किया गया उनही चीजों में जहर पाया गया ?उ०—हांऐसी दृष्टिहैं। प्र०—आप कहतेहैं किमैं पानी और तलछट समेत मझोले चमचेका एक तिहाई हिस्सा तल छट होगा ? उ०—हां एक मझोला चमचा भरहोगा। प्र० आपनेअपने इजहारमें बयान किया किएक मझोले चमचे के बराबर पानीथा औरपांचचावल बराबर दूसरी वस्तुथी ? उ० हां। प्र०—आपने इस तलछट कोक्या कियाआपने जो उसमें

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कुछपानी मिलाया तोपानी मिलाकर आपनेक्या किया? उ०
क्याआपका मतलब इस प्रश्नसे यहहैकि अखीरमें मैंने उसको
क्याकिया । प्र०—हांजबआप ९ नवम्बरको कारनैलफियरसाहब
केकमरेमेंथे? उ०—मैंनेपानी मिलानेके पीछेकुछ नहींकिया।
प्र०—आपनेपानी औरतलछटको अलगनहीं किया।मैंभूलगया
आपनेअपने मकानपर उसकोअलग कियाथा आपतलछटको
किसतरहलेगये?उ०--गिलासमेंलेगया। प्र०—हांक्षमाकीजिये
मुझको यादआयाकि आपने कहाथाकि आपअपनेकोटकेपा-
किटमेंरखकरलेगये थेऔरआपअपनेमकानपरजाकरपिसेहुये
कोयलेसे इमतिहान किया ? उ०—हां। प्र०—क्या इस तरह
इमतिहान खूबहोताहै ?उ०—हां। प्र०—पसमालूमहुवाकिजो
इमतिहान आपनेकियातो आपफिर इमतिहानकरकेजाहर
करसक्तेहैं कि संखियाहै ? उ०—निस्संदेह । प्र०—क्याआपउ-
सका जौहरभी निकालसक्ते हैं ? उ०—हां । प्र०—नै में जो
छल्लासा पड़गयाहै अगरउसका इमतिहान कियाजाय और
उसमेंसंखियानिकलेतोक्या होगा । उ०-जहांतकमैंने अजमा-
इसकीहै संखियाहै । प्र०—किसी औरधातु से क्याऐसी कैफ़ि-
यत नहीं होजाती है ? उ० हां होजातीहै । प्र० मेरा मतलब
यहहै कि जिसतरह संखियेसे छल्ला बनगयाहै ? उ०—परन्तु
खुर्दबीनके देखनेसे असलियत मालूमहोजावेगी। प्र०—आपने
कोयलाकहांसे मंगायाथा ? उ०—अस्पतालसे कोयला मंगा
याथा और अस्पतालअसिस्टन्टकोयला और औजारलायाथा।
प्र०—क्याआपने इसकोयलेकी आजमाइश नहीकी ? उ०—
नहीं । प्र०—तो आपने कोयले को आजमाइश फिर की ?
उ०—हां । प्र०—क्याआपने कोयले की आजमायश आपही
की थी ? उ०— नहीं गवर्नमेण्ट के कमीकल अनेलायर्जने
की थी । प्र०—नहीं नहीं कहिये जो पहिले आपने कहा था
मैं समझा कि आपनेपहिले कोयले कीपहिचानकी फिरडा-
क्टरग्रे साहब के पास भेजा ? उ०—हां ऐसाही किया था।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

प्र०—क्याआपनेपानी और तलछटकी आजमायश कीथी ? उ० हां मैंने छानकर यहतलछट डाक्टर ग्रेसाहब के पास भेजा था। प्र०—मेरा मतलब यहहै कि जबआप इमतिहान करते थेतो आपनेपानीका इमतिहान नहींकिया ? उ०—नहींजब मैनेतलछट कोछान लियातोपानी को फेंक दिया मैंने केवल तलछट का इमतिहान किया था। प्र०—मुझको विश्वास है किकईविष इसप्रकार के हैं जिनकी उत्पत्ति तांबेसे है ? उ० हां। प्र०—उनका क्यानाम है ? उ०—एकतांबेका विषहोता है उसकोतूतिया कहते हैं और अक्सर कलमोंमें तूतियाका ज़हर भी हो जाता है। प्र०—तो आपने तूतिया होने का इमतिहान नहीं किया ? उ०—नहीं। प्र०—कोई वस्तु ऐसी नथी जिससे तांबे का होना मालूम हो ? उ०—नहीं। प्र० आपकहतेहैं किजब संखिया पानीमें डालदी जाती है तोकुछ तैरतीहै औरकुछनीचे बैठजातीहै अगर संखिया पानीसेभारी होताहै तोक्यों तैरताहै और किस वास्ते पानीके नीचे नहीं बैठजाता ? उ०—संखियाकी खासियत ऐसीही होती है और कुछ बैठजाताहै। प्र०—पसमैंकहताहूं कियदि संखियापानी में कितनाही मिलायाजाय तोकुछ बैठजायगा औरकुछतैर-नेलगेगा ? उ०—इस विषय में मैं कुछनहीं कहसक्ता। प्र० क्या सम्पूर्णआयु में संखियाको आपने यह पहिलेही मरतबा आज़माया ? उ०—नहीं लण्डनमें प्रोफेसर हफमीमसाहब के साथज़हर की कसरतसे आजमायशकी। प्र०—उसके उप-रान्तभी कभीआपने संखिया की आजमायशकी थी ? उ० हांएकमरतबा मंगाकर आजमायशकी थी। प्र०—आपनेइस तलछटको तौलाया ? उ०—नहीं। प्र०—आपनेइस मरतबा इसतलछट मेंसे कुछ आजमायश के वास्तेलियाथा ? उ०—मेरेविचारसे वहएक तीसराहिस्सा होगा। प्र०—एकचावल भरसे जियादह था ? उ०—हां। प्र०—बाक़ीआपने डाक्टर ग्रेसाहबके पास भेजदिया—अर्थात् ढाई चावलके बराबर। उ०

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

हां वहढाई चावलके बराबर होगा। प्र०—मैं नहींसमझा कि आपने क्योंकर दुबारह आज़मायशकी ? उ०—यदि आपकी इच्छाहोतो मैंदुबारहआप को आजमायश करके दिखाऊं। प्र०—क्याआपनेउन्हीं वस्तुओंसेफिरइमतिहानकियाजिनसेकि पहिले इमतिहान किया था ? उ०—हां। प्र०—क्या आपने उसीतलछट कीफिर आज़मायशकी जो बाक़ीरहगया था ? उ०—हां। प्र०—जोछल्ला नली मेंपड़ाथा उसमेंक्या आठवां हिस्सा संखियाथा ?उ०—मैंनहीं कहसक्ता। प्र०—आपनेऔर कितना इसतलछट मेंसे लेकर इमतिहान किया था ? उ० एक चुटकी भर मैंने लियाथा। प्र०—आपने उस कोयले को तौलाथा जिससे आज़मायशकीथी ? उ०—कोयलेके तौलनेकी कुछ जरूरत नथी। साहबप्रेजीडण्ट बोलेकि श्रीमान्‌महाराजा साहिब कहते हैं कि मुतरज्जिम को तर्ज्जुमाकरनेकी नौबतनहीं आतीकि आप डाक्टर साहब से प्रश्नकर बैठते हैं इस बातका आगे को खयाल रखिये॥

सरजन्‌टेलनाटायन साहबने कहा किमेराक़सूर हैजो मैं जल्द २ प्रश्नकरताहूं अबआगेसे खयाल करूंगा औरगवाह से फिरप्रश्नपूछने शुरू किये। प्र०—क्यातुमने अन्तमेंआज़मायश उसकदरतलछट पर की जोनलीमें बचरहीथी ?उ०—हांसब के ऊपरकीजो कुछबचरही थी। प्र०—क्यावह एकचुटकीभर थी ? उ०—हांवहचुटकी भरथी। प्र०—क्यातुम्हारे आज़मायश करनेसे उसमेंकोई रंगपैदाहोगया ? उ०—कोईरंगपैदानहींहुआ। प्र०—परन्तुमेरी आंखेंखुर्दबीन नहींहैं मैंउस को रंगहीकहूंगा ? उ०—नहींवहतो एकचमकती हुईवस्तु थी। प्र०—एक चिट्ठी जो अभी तुम्हारी इजलास में पढ़ीगई और जोकिग्रेसाहब के नामथीनहीं यह मेरीगलतीहै जोकि तुम्हारे नामग्रेसाहबनेलिखीथी उसमेंलिखाहै किमैनेतुम्हारी चिट्ठीऔरजो उसकेभीतर वस्तुथी पाई क्या कोई तुमने चिट्ठी लिखीथी ? उ०—नहीं उस चिट्ठी से मतलब फियर साहबकी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

चिट्ठीकाहै। प्र०—वह लिखते हैं कि हमने तुम्हारी चिट्ठी पाई वह क्यों लिखते हैं? उ०—साहब मैंने कोई चिट्ठी उनको नहीं लिखी परन्तु करनैल फियर साहब के लिफाफे पर लिखदिया था मेरा हाथ उस समय पीड़ा करता था और इसवास्ते मैं अलग चिट्ठी न लिख सका। प्र०—क्या वही चिट्ठी तुम्हारे पास करनैल फियर साहब से पहिले आई थी? उ०—हां वही पहिली चिट्ठी थी। प्र० क्या संखिया को शीशे के बनाने में बर्त्तते हैं? उ०—हां कोई २ शीशों में बर्त्तते हैं प्र०—शीशा जो छिलगया है अगर फिर रगड़ा जाय तो वह फिर भी छिल जायगा उ०—हां बेशक छिल जायगा। प्र०—तुम उसको दिखा सक्ते हो? उ०—यदि साहिबान कमीशन आज्ञा दें तो दिखा सक्ता हूं प्रेजीडण्ट साहब ने कहा इस वक्त तुम दिखा सक्ते हो? उ०—यदि आज्ञा होतो दिखा सक्ता हूं। प्र०—अच्छा रहने दीजिये यह बात हम डाक्टर ग्रे साहब से पूछ लेंगे। प्र०—अब दूसरे मुआमले में आपसे वार्त्ता करूंगा आपने बयान किया कि रावजी ने आपकी तरफ किस दृष्टि से देखा? उ०—वह रावजी नयानरसुया। प्र०—हां रावजी ने आपको छाता दिया था? उ०—हां। प्र०—उसने पहिले कभी ऐसा न किया? उ०—नहीं। प्र०—जब तक रावजी ने यह बयान नहीं कियाथा कि उसने अपने हाकिम को जहर नहीं दिया तो आपने यह जिक्र किसी और से कियाथा? उ०—हां किया था। उ०—किस शख्स से जिक्र कियाथा? उ०—मिस्टर बोडीसाहब से। प्र०—अर्थात् यह नौकर आपकी ओर किसतरह देखते थे इस बातका आपने उनसे जिक्र कियाथा? उ०—हां। प्र०—आपने यह जिक्र उनसे कब कियाथा? उ०—मैं यह नहीं कह सक्ता मगर बड़ौदे से रवाना होने के पहिले मैंने उनसे कहाथा। प्र०—मैंने सुना है कि मिस्टर बोडीसाहब पचीस दिसम्बर को बड़ौदे से रवाना हुये? उ०—मैं नहीं जानता प्र०—क्या आप कह सक्ते हैं कि एक आधरोज पहिले आपने उनसे यह जिक्र कियाथा? उ०—मुझको याद नहीं मगर जहर दिये जाने के उपरान्त और रवानगी से पहिले उनसे कहाथा। प्र०—आप

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

यह कहसक्ते हैं कि २४ दिसम्बर के पहिले यह बार्त्ता हुई थी? उ०—हां निश्चयकर कहताहूं। प्र०—सिवाय इसके और कुछ आप नहीं कहसक्ते? उ०—नहीं और कुछ नहीं कहसक्ता। (फिर तलछट से शीशे के छिलनेकी आजमायश की तथा चहसकी बखूबी आजमायश हुई और शीशा छिलगया) साहब ऐज़ोडवोट ने सरजन्ट वेलन टायनसाहब से कहा कि आपने बखूबी निशान देखे सरजन्टसाहबने कहा कि हां मैंने खूबसाफ़तौर से निशानों को देखा॥

डाक्टरसीवर्ड साहब के दुबारह इज़हार
ऐडवकेटजनरलन ने लिये॥

प्र०—मेरी समझमें यह आया कि जब अस्पतालमें आया नहीं गई थी तो आप उसका इलाज करते थे? हां। प्र०—आपको याद है कि अस्पताल जानेके पहिले कितने दिन आपने उसका इलाज किया? उ०—सिर्फ़ एक रोज़। प्र०—आपका यह काम भी बतौर डाक्टर रज़ीडन्सी के है कि रज़ीडन्सी के नौकरों का आप इलाज करें? उ०—हां यदि कोई शख़्स बहुत बीमार हो। प्र०—क्या सबब था कि आपने उसको अस्पतालमें भेजदिया? उ०—मुझको वह बहुत बीमार मालूम हुई और उसका इलाज उसके मकानपर बखूबी नहीं होसक्ता था। प्र०—अर्थात् मिस्टर बोवी साहबके अहातेमें? उ०—हां। प्र०—उसकेवास्ते आप अस्पतालमें दवा तजवीज करनेके वास्ते गये थे? उ०—मेरी दवा तजवीज़ करनेकी इच्छा न थी मैं केवल उसके देखनेको गया था मैंने उसके फेफड़े को देखा और जो कि आया बोवीसाहबकी नौकर थी इस लिये मुझे उसको देखना मंज़ूर था। प्र०—यह आया अस्पताल में अलग कमरेमें थी या और बीमारों के साथ थी? उ०—अलग कमरेमें थी। प्र०—आप किस मुकाम परपुलिसके आदमी का होना बताते हैं वह कमरेमें था या बाहर दरवाज़े के बैठा था? उ०—शायद दरवाज़े के बाहर खड़ा था मैंने खूब ग़ौर नहीं किया प्र०—जब आप आयाके कमरेमें गये थे तो आपके साथ और

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कोई आदमीभीथा ? उ०—मुझेयादहै कि शायदअस्पताल का असिस्टन्ट मेरेसाथा। प्र०—आपकोयादहै किकौनसे अस्पताल का वह असिस्टन्टथा? उ०—मुझको यादनहीं। प्र०—अपकहते हैंकि पुलिसका आदमी दरवाजेपर खड़ाहुवाथा आप कहसक्ते हैंकि वहकिस प्रकार के पुलिस का आदमीथा क्या वह बम्बईके पुलिस काथा ? उ०—हांबम्बईके पुलिसकाथा बड़ौदे में पुलिस नहीं है। प्र०—उसकी वरदीकैसीथी (सरजन्टबेलन टायनसाहबनेकहा) किज. डाक्टरसाहबवयानकरें किउसकी वरदी कैसीथी तोमैंमंजूर करूंगा ? उ०—मुझको एकछोटा पुलिसका सिपाही मालूम हुवाथासादीवर्दी पहिनेहुयेथा। प्र०—डाक्टर सीवर्ड साहब आप कहते हैं किमैं हिन्दुस्तानी बोलसक्ताहूं परन्तु जल्दी और बखूबीनहीं बोलसक्ते ?उ०—हां जल्दीनहीं बोलसक्ता। प्र०—क्याआप इतना बोलसक्ते हैंकि रोज मर्रा की गुफ़गूमें मुतर्जिम की जरूरत नहींहै ? उ० हांथोड़ी२ बातोंमें मुतरज्जिम कोजरूरत नहींहै। प्र०—क्या आपको कभी मुतरज्जिम कीजरूरत होती है ? उ०—हांजब जरूरत हुई और जो शख्स मुझको उस वक्त मिल जाता है बुलालेताहूं। प्र०—अबमैं ९ नवम्बरकेविषयमेंआपसेप्रश्नकरूंगा आपबयान करतेहैंक गिलासके तलछट काहलका भूरारंगथा उ०—हां। प्र०—जबआपको पहिले यह तलछट मिलाथा तो आपनेउसके रंगपरग़ौर कियाथा ? उ०—हां मैंनेगौरकिया था गुलाबी माइल उसकारंग थाजैसाकि चकोतरेके अरक़ का रंगहोताहै। प्र०—आपने कितना पानी उसमें मिलाया था ? उ०—शायद एक चमचा होगा। प्र०—आपकोयादहैकि आपने किस बरतनसे पानी लेकर उसमें मिलाया था ?उ० उस बरतनसे जो मुंह धोनेकी मेजपर रक्खाथा और मुझको ऐसा याद आता है कि वह सुराही थी। प्र०—अर्थात् जो बरतन उसवक्त आपकेसाम्हनेथा उससे आपने पानी लिया ? उ०—हां। प्र०—आपकहतेहैं कि जबआप घरगये तोआपने

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कोयले और औजार मंगाये थे और यह कोयले और औजार आपके अस्पतालका असिस्टन्ट लाया था आपको याद है कि वह कौनसा असिस्टन्ट अस्पतालका था ? उ०—उस शख्सका नाम इब्राहीमजी है परन्तु वह बड़ौदे से चला गया। प्र०—वह यहूदी था या मुसल्मान ? उ०—यहूदी । प्र०—इब्राहीमजी उस वक्त कहां था वह अपने मकानपर था या आपके मकानपर ? उ० मुझको याद नहीं कि मैंने उसको चिट्ठी लिखकर बुलाया था या किसतरह परन्तु उसको उसके घरसे बुलाया था। प्र०—यह बात आपने किसी से नहीं कही कि औजार और कोयले आप किस प्रयोजनसे मंगाते हैं ? उ०—किसीसे नहीं कही। प्र०—अस्पताल के असिस्टन्टसे भी नहीं कहा था ? उ०—हां उससे भी नहीं कहा प्र०—सरजन्टबेलनटायन साहब ने आपसे पूछा था कि अगर संखिया गिलासमें डालनेके पहिले बोतलमें मिलाई जाती तो क्या संखिया पानीके ऊपर तैरने लगे ? उ०—यह मैं नहीं कह सक्ता प्र०—मुझको अब सिर्फ इतनी बातका जवाब दीजिये कि ऐसी खासियत संखिये की है ? उ०—हां ऐसी ही खासियत है । प्र०—हीरेका चूर्ण अगर पानीमें डाला जाय तो वह पेंदी में बैठ जावेगा ? उ०—हां । प्र०—आप कहते हैं जब मैंने मालूम कर लिया कि वास्तवमें संखिया है तो फिर आपने कुछ उसकी आजमाइश नहीं की ? उ०—हां मैंने फिर आजमाइश नहीं की । प्र०—क्या वजह जो आपने फिर आजमाइश नहीं की ? उ०—फिर इम्तिहान करना व्यथा मालूम हुआ । प्र०—आपने सब तलछट की आजमाइश आपही क्यों नहीं की। उ०—न मेरे पास दवाइयां थीं न औजार थे । प्र०—सिवा हीरे के और भी ऐसी चीजें हैं जिससे शीशा छिल जाता है ? उ०—हां हैं । प्र० आप ऐसी चीजों को जानते हैं ? उ०—मैं नहीं जानता हूं । प्र० यह बात डाक्टर ग्रे साहबसे पूछी जावेगी अगर आपने गिलास की तलछट में गुबार उठता हुआ कब देखा था ? उ०—मैं ने तलछट को फ्रियर साहब के पास पानी मिलाने के पहिले

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

देखा था। प्र०—सरदिन कर रावका—आपकी रायमें ज़हर संखियाथा या पिसाहुआ हीरा? उ०—संखिया प्र०—अगर हीरेका चूर्ण किसीको दिया जायतो उसकोवह पचा सक्ता है और उसको दुःखनहीं पहुंचसक्ता? उ०—मैं इसबारेमें कुछ जवाब नहीं देसक्ता फिर मेम्बरान् कमीशन टिफन खाने के वास्ते उठ गये॥

डाकृर ग्रे साहब का इज़हार॥

जबमेम्बरान् कमीशनटिफन खाकरआये तोडाक्टरग्रे साह-बकाइज़हार शुरूहुवा उनके इज़हार ऐडवकेट जनरलनेलिये डाक्टर साहबने बयान किया कि मेरानाम वीइलंगटनग्रे है मैं बम्बईकेफौजका एकसरजनहूं और कायममुक़ाम कमीक-लए नेलायर्ज गवर्न्नमेण्टका हूं॥

११—नवंम्बरको एकरजिस्टरी की हुईचिट्ठी डाक्टर सीवर्ड साहबरेज़ीडन्सी सरजनबड़ौदाके पाससे आईयह एकरजिस्ट-रीकियाहुवा पाकिटथा जिसपरअब निशानहर्फ (पी) का है यह लिफाफाजो मेजपररक्खा हुवा है ऊपरकादूसरा लिफाला है जिसवक्तयह मेरेपास पाकिटआया तो उसकीमुहर साबित थी इस लिफाफेमें एकपाकिट और एकचिट्ठी है उसपर हर्फ (एफ) का निशानबना है अन्दरकेपाकिटपरभीमुहरसही और सालिमथी, डाक्टरसीवर्ड साहबकालेख इसपाकिट परथा जि-स लिफाफेपर निशानहर्फ (ओ) का बनाहुवा था उसमेंएक ब्लॉ-टिङ्ग कागज़लिपटा हुवा मैंनेपाया इसकागजमें मुझकोथोड़ा चूरहमिला जो तौलमें ढाईचावल था उसकी रंगत भूरीथी उसमेंकुछ चमकते हुये जर्रेंभीथे तथाच इस बुरादेके मैंनेअ-जज़ाअलग कियेजिस तरहसंखिया की आज़माइश होती है पहिलेमैंने थोड़ाचूरह नलकीमें रखकर गर्मकिया उससेमा-लूमहुवा कि एक सफैद चीज़एक तर्फको आगई उसको मैंने खुर्दबीनसे देखातो उस वक्त मुझको मालूमहुवा कि किसीचम-कीली चीज़ के अष्टकोण रेजे हैं मैंनेउन जर्रोंकी और तरहसे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

भी आजमाइश की मैं समझा कि यह सफेद संखिया के टुकड़े हैं मैंने उनको थोड़े पानी में डालकर जोश किया और जोश होने के उपरान्त मैंने थोड़ा पानी लिया और उसमें अमोनियल नसटेट आफसिलवर को मिलाया इसके मिलाने से हलका पीला रंग हो गया फिर मैंने अमोनियल सलफोट आफ कापर को मिलाया जिससे हलकी सब्ज रंगत होगई फिर मैंने सलफ्यूररेड हैडोजन गा-से आजमाइश की पस तीन तरीकों से इमतिहान हुवा तीनों दफा मैंने अमोनिया मिलाई थी लेकिन अमोनिया सबमें नहीं मिलाई थोड़ा पानी दूसरी रीति के आजमाइश के वास्ते रहने दिया अर्थात् बाक़ी में मारीटक तेजाब मिलाया उसको मैंने जोश किया लेकिन वह पानी में न घुला हर प्रकार के इमतिहान से मुझको निश्चय हुवा कि यह संखिया है इस आजमाइश में छठा हिस्सा बुरादे का खर्च हुवा सिवाय इसके और तरह से भी मैंने उसका इमतिहान किया अर्थात् मैंने थोड़ा चूर्ण पानी में मिलाय और उसमें तेजाब मारीटक डालकर दो तांबे के पत्तरों में रक्खा और उन दोनों पत्तरों को आगपर रक्खा जब वह खूब गरम होगये तो भूरे रंग की चीज पत्तरों के भीतर मालूम हुई फिर मैंने एक पत्तर को उठाया और खुर्दबीन से उसको देखा तो अष्टकोण टुकडे नजर आये पस इस इमतिहान से भी मालूम हुआ कि यह संखिया है मैंने कोयले से भी इमतिहान किया मेरे पास वह नै है जिसमें मैंने इमतिहान किया गवाहने उस नै को निकालकर दिखाया—देखिये इस नै में जो धात कासा छल्ला पड़गया है वह संखिया है अगर फिर आगपर रखकर खूबी गर्म किया जाय तो संखिया फिर असली हालत पर आजाय (यह नै डाक्टर साहब से लीगई और हर्फ (टी) का निशान कियागया) मैंने इस बुरादे से ११ नवम्बर को और कुछ आजमाइश नहीं की न उस दिन मैंने चमकते हुये जर्रों की कुछ आजमाइश की हरचन्द संखिया के होने की सबतरह से आजमाइश की परन्तु इनसब अजमाइशों में इन चमकते हुये जर्रों को कुछ जरर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

नहीं पहुंचा मैंने उन्नीस नवम्बर को खुर्दबीन से इन जर्रों को देखा मुझको खयाल हुवा कि यह पिसाहुवा शीशा है या संगखारा है तथाच दूसबार में डाक्टर सीवर्ड साहब को मैंने लिखा जो चिट्ठी मैंने डाक्टर सीवर्ड साहब को भेजी थी उसपर (क्यू) का निशान है जब मैं ने इस चूरह के जर्रें पुड़िया में चमकते हुये देखे तो मुझको अतिआश्चर्य हुवा जब खुर्दबीनसे देखा तो हीरे के जर्रें मालूम हुये मैंने डाक्टर सीवर्ड साहब को जो चिट्ठी भेजी थी और अब उसपर निशान हर्फ (यू) का है उसमें मैंने यह मजमून लिखा था॥

माई डियर सीवर्ड——वर्त्तमान मासकी १२ तरीख की लिखी हुई चिट्ठी के क्रमसे मैं आपको लिखता हूं कि जब मैंने बखूबी तौर से उन चमकते हुए जर्रों का इम्तिहान किया तो मालूम हुवा कि वह पिसाहुवा हीरा है कई जर्रें ऐसे चमकते हुये हैं कि ऐसी चमक सिवाय हीरे के और किसी वस्तु में नहीं होसक्ती सिवाय इसके वह बहुत सख्त है मैंने तेजाव में उसको गलाना चाहा लेकिन न गली यह बात सिर्फ मेरी देखी हुई है अगर किसीको संदेह हो तो दूसरी रीतिसे भी उसकी आजमाइश करसक्ता हूं ताकि साबित हो कि यह हीरे का चूर्ण है या नहीं कर्नैल फियर साहबके मुंहमें जो तांबेका स्वाद आगया उसका क्या सबब है क्या उसमें तांबा था क्योंकि संखिया में कोई स्वाद नहीं होता मैंने कितना ही उस पुड़िया के चूरे की अजमाश की लेकिन मुझको उसमें तांबा न मिला मगर जोकि अक्सर जौहर पानी में घुलजाते हैं शायद यह जौहर भी अर्कचके तरै के साथ घुलगया और शर्बत के साथ फिकगया शायद जल्दीसे जीमतलाने की यह वजह हो गई कि संखिया जो शर्बत पर तैरता रहा उसको फियर साहब कुछ पीगये होंगे और उसवक्त उनका पेट खाली होगा क्योंकि यह रीति है कि जब संखिया पानी में खूब नहीं मिलाई जाती है उस वक्त तक वह पानीके ऊपर तैरती रहती है हिन्दुस्तानी लोग निश्चय करते हैं कि संखिया और हीरे का चूर्ण बड़े मार-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

डालनेवाले ज़हर हैं मगर सही बात यह है कि इन दोनों में से सुहलिक एक वस्तु भी नहीं है जो कुछ आप और भेजेंगे उसकी भी आज़माइश करके मैं आपको इत्तिला दूंगा यदि यह सम्भव है कि इस चको तरे का शर्बत जिसमें वह ज़हर मिला हुआ था या उस जगह की मिट्टी जहां कि शर्बत फेंका गया था आप मेरे पास भेजेंगे शायद उससे मालूम हो कि उसमें तांबा था या नहीं॥

दस्तख़त—डब्ल्यू॰ग्रे कमीकल ऐनेलायज़र गवर्नमेन्ट कालिज लैबुरैरी बम्बई लिखा हुआ १३ नवम्बर सन् १८७४ ई॰॥

सरजन्ट बेलनटायन साहब ने कहा कि इस चिट्ठी का दरबारे अल्मास साईदा के पढ़ना दुबारह याद दिलाना है और कोई फ़ायदा नहीं——साहब प्रेज़ीडन्ट ने कहा क्या आप इनकार करते हैं कि यह चिट्ठी गवाही में शामिल न की जाय सरजन्ट बेलनटायन साहब ने कहा कि मुझको कुछ इनकार नहीं है डाक्टर ग्रे साहब ने कहा कि जब मैंने यह चिट्ठी लिखी थी तो मेरे पास कोई और लेख बड़ौदे का नहीं आया जिसमें लिखा हो कि तलछट में हीरे का चूरह भी है उसको मैंने अपनी तौर से मालूम किया इस चिट्ठी के लिखने के उपरान्त दूसरा पाकट रिजिस्टरी किया हुवा १७ नवम्बर को मेरे पास बड़ौदे में पहुंचा उस मुहर में चिड़िया की चोटी खुदी हुई थी जिस लिफाफे में यह पाकिट बन्द था उसमें एक पुडिया थी और एक चिट्ठी थी और मुहर सही सालिम थी पाकट में मिट्टी के सदृश कोई वस्तु थी १७ चावल भर यह वस्तु थी मैंने उसका इमतिहान किया मालूम हुवा कि इसमें भी संखिया और चमकते हुये ज़र्रे थे जैसे कि पहिले पाकिट में थे जिस तरह पहिली पुड़िया की मैंने आज़माइश की थी उसी तरह उसका इमतिहान किया पहिली पुड़िया में एक चावल संखिया पाई थी और उसमें सिवा चावल ४ पस इस सूरत में सवा दो चावल संखिया एक आदमी के मारने के वास्ते काफ़ी थी अगर मैं कानूनासिब से दी जाती॥ सरजन्ट बेलनटायन साहब ने कहा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

आपवक्त मुनासिब किसव को कहते हैं ?उ०—जबकिआदमी का पेट खाली हो। प्र०—हां मैं पहिले नहीं समझता या मैं वक्त मुनासिबऔर बातकोसमझाया प्रेजीडण्ट साहबनेकहा डाक्टरसाहबकी गर्ज यह है कि संखिया ऐसेवक्त पर दीजाय तो खूब कारगरहो डाक्टरसाहबने बयान किया कि संखिये का असर आध घण्टेसे एकघंटे मेंहोजाताहै उसकी तासीर यहहैकि सिरघूमता है जीमतलाता है क़ै होतेहैंछाती सूझ जाती है दस्तआतेहैं अगरसंखियाथोड़ी २ दीजावेतोआखों सेपानीबहताहै आखोंकोजरर पहुंचताहै मैंनहीं कहसक्ता कि हीरेकाचूर्ण मिलानेसे उसका मुहलिक होनाजियादहहोना-ताहैऐडवकेट जनरलसाहबने कहा अगरएकबोतल मेंसंखिया डालीजावे जिसमेंपानी भराहो और वह हिलायाजाय और फिर किसीपतली चीजमें वह पानीडालाजाय तोसंखिया सब में मिलसक्तीहै ? उ०—हांडाक्टर साहबने बयानकियाकि ३० दिसम्बरसन् १८७४ ई०को एक पाकिट मिस्टर सूटरसाहबका भेजा हुआ मेरेपास पहुंचाउसमें एकलिफाफाथा और उस लिफाफेमें एकपुडियाथी जबमैंने पुड़ियाकीवस्तु देखी तोउसमें सातचावल संखियावैसीहीथी जिसकोमैं पहिलेसे अजमाइश कर चुकाथा औरडाक्टर सीवर्डसाहबकी दरख़ास्त अनुसारमैंने कुछ इमतिहान कोयलेका ३१जनवरीको कियावहसाफ कोयला थाउसमेंकुछ भी संखिया नथीबड़े२डाक्टरोंने लिखाहैकि हीरे का चूर्ण कोई जररनिशानी नहीं पहुंचाता। प्र०—ऐडवकेट जनरल। डाक्टरग्रेवर्ज साहबअपनीऔषधि केगुणोंकी किताबों में क्या लिखतेहैंकि हीरेकाचूर्ण जहर मोहलिकहै अभी यह सवालपूर्ण नहींहुआथा किसरजन्टवेलनटायनसाहब बोलउठे कि डाक्टरग्रेवर्जसाहब की रायनहीं मानी जा सक्ती ऐडवकेट जनरलनेकहा कि मैंडाक्टर ग्रे साहब से केवल इतना पूछता था कि उनकीराय डाक्टर ग्रेवर्ज साहब कीराय के अनुकूलहै या नहीं,डाक्टरग्रेसाहबने कहा कि मेरीरायउनकेअनुकूल है

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

प्रेजीडण्ट साहब ने डाक्टरग्रे साहबसे सवालकिया कि डाक्टरों ने आजमाइशकी हैकि हीरेकाचूर्ण मारडालता है यानहीं? उ०-हांआजमाइश की है। प्र०—इस आजमाइश काक्या नतीजाहुआ? उ०—यहनतीजा हुआकि वह मोहलक नहीं है पसअबसवाल और जवाब डाक्टरग्रेसाहबके पूर्णहुये—सरजन्ट साहब ने प्रेजीडण्टसे कहा हजूरजानतेहैं कि और कोईकार रवाई शुरूकीजाय—परंतु थोड़े समयके रहजाने से सरजन्ट साहबने कहाकि इसवक्तमेरागला दुखताहै प्रेजीडण्टसाहब नेकहा वेहतर है फिर अदालत बरखास्त हुई॥

पांचवे दिनका इजलास।

आजके दिनसब मेम्बरान् कमीशन् मौजूद थे परन्तु सरल्यूइसपीलीसाहब गैरहाजिर और बरवक्त शुरूमुकद्दमेके गायकवारभी मौजूद न थे जिसवक्तरावजी का इजहारशुरू हुआ गायकवार अदालत में आये॥

डाक्टर ग्रेसाहब के इजहार के उपरान्त सरजण्ट बेलनटायन साहबने उनके इजहारमें सवालातकरने शुरूकिये।प्र० आपकेइजहारसे यहबातमालूम नहींहैकि आपनेसङ्खियाउस चूरहसे अलगकीया नहीं जो आपको भेजागयाथा? उ०—हां अलग किया।प्र०—हमनेवह छल्लाधातका जोनलकीमेंपड़गया है देखाक्या उस आजमाइशसे और कोई रीतिइमतिहान की नहींजिससे बखूबीसाबित होकिसंखियाहै यानहीं? उ०—और कोई रीतिनहीं है मैंने इस इमतिहान के उपरान्त खुर्दबीन से भीदेखाथा। प्र०—इससे बढ़करकोई इमतिहान नहीं होसक्ता है? उ०—हांइससे बढ़करऔरकोई इमतिहाननहींहै। प्र०——क्या इसी आजमाइशसे संखिया अलग होजाती है? उ०—हां। प्र०—कईजौहरतांबे के होतेहैंक्यावहभी विषहोते हैं? उ०—हां। प्र०—क्यातांबेका जौहर भी जहर होताहै? उ०—हां ज़हर होता है। प्र०—अगर जौहर तांबे का किसी पतलीवस्तु से मिलाकर किसी को पिलायाजाय तो उसकेमुंह

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

में बखूबी तांबेका मज़ा आजायगा ? उ०—हां। प्र०—मैंनेसुना है कि इसतांबेके जौहर का मज़ा ऐसा तेज़होता है कि अगर कोई शख्स उसको गलती से खाजाय तो शीघ्र मालूम होजाय? उ०—जबान को लगतेही उसका मज़ा मालूम हो जावेगा। प्र०-यहमज़ा कुछ देरतकरहेगा ? उ०-हांकुछ देरतकरहेगा। प्र०—क्याइसकी पहिचान यह भीहै जबउसकोकोई शख्सखा जाय तो उसके कण्ठ में कांटेसे पड़जाते हैं याउसकीखासि-यत क्याहै ? उ०— उसकी खासियत जहरकीसी है और उस केहल्कमें खुश्कीआजाती है। प्र०—औरक्याउसके पेट मेंपीड़ा भीहोती है ? उ०—हांदर्द भी होजाता है। प्र०—क्या मुंहमें कफभी आनेलगता है? उ०—इसबातकोमैं नहीं जानता। प्र० क्या कुछ थोड़ा कफ आता है ? उ०—हां जब वह अपनी तासीर करता है आताहोगा। प्र०—आधघण्टेमें याएकघण्टे में ? उ०—इससे भी कमदेर में तांबेकीतासीर होतीहै। प्र० शायदइसका क़ायदा है किअगरखाली पेटमेंजाय तो जल्द असर करे ? उ०— हां यह सही है। प्र०—जब वह अपनी तासीरकरता है तो बराबर थूक आताहै ? उ०—हांजब जो मतलायेगा तो जरूर थूक आयेगा। प्र०—अगरथोड़ीसंखिया खाईजाय तो शायदथूक न आये और बराबररोज़ खाईजाय तोथूकआना शुरूहोजाय ? उ०—हां यहीबात है। प्र०—तो यहबातकुछअवश्य नहींहै जिसको संखिया दीजाय उसकोथूक आवे ? उ०-नहीं। प्र०—आपके बिचारसे ढाईचावल संखिया एकआदमी के मारडालने के लिये काफीहै ? उ०-हां। प्र० करनैलफियर साहबका बयानहै कि उनका जीमतलानेलगा औरऐसीदशा होगईजिसतरहकि किसीको संखियादी जाती है मगर इस्ट्रोमकपम्प को उनकेवास्ते कुछ जरूरत नहीं हुई मालूमहोता है कि उन्होंनेबहुत कम संखिया खाई होगी ? उ०—हां बहुतकम संखियाखाई होगी। प्र०—डाक्टर ग्रे सा-हबक्या आपके बिचारसे ऐसीथोड़ी संखियाके खानेसजीमत-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

लाने और कफ़ आने लगा होगा ? उ०—हां इतनी जीमतलाने और कफ़ के आनेवाले कफ़ो है। प्र०—आप कहते हैं कि अगर कोई शख़्स तांबेका जौहर खावे तो उसका भी यही हाल होता है ? उ०—हां तुरन्त ही जीमतलाने लगता है। प्र०—डाक्टर ग्रे साहब आपको बख़ूबी अजज़ा के अलग करने में अभ्यास है यह बात उचित थी या अनुचित कि डाक्टर सीवर्ड साहबने गिलास की तलछट में बगैर आज़मायश के पानी मिलाया ? उ०—हां उचित थी लेकिन (अभी प्रश्न पूर्ण नहीं हुआ था कि फिर सवाल किया गया) प्र०—मेरे इस बात के कहने से यह मतलब नहीं है कि डाक्टर सीवर्ड साहबने जानबूझकर ख़राब काम किया परन्तु सम्भव है कि पानी में भी कोई जुज़ ज़हरीला हो ? ०—उ० हां मुमकिन है प्र०—क्या मेरा ख़याल सही है कि दस बारह दिन के उपरान्त दूसरी पुड़िया आपके पास भेजी गई जिसके निस्बत बयान है कि ज़मीन से खुरचकर मट्टी भेजी गई ? उ०—हां छः दिन के उपरान्त॥

सरकार के वकील ने डाक्टर ग्रे साहब के फिर

इजहार लिये ।

प्र०—तुमने संखिये को उस चूरे से जो तुम्हारे पास भेजा गया था बख़ूबी अलग किया ? उ०—हां बख़ूबी अलग किया साहब प्रेजीडण्ट ने कहा कि मिस्टर मैलवल साहब कहते हैं कि मुतरज्जिम ने तर्जुमा गलत किया उसने तर्जुमा किया कि मुमकिन है संखिया का अलग होना चूरे से मुतरज्जिम ने अपनी गलती मानली प्र०—आपने पहली या दूसरी पुड़िया से तांबेका जौहर पाया था ? उ० नहीं। प्र०-आपको करनैल फ़ियर साहब की चिट्ठी से मालूम हुआ होगा कि इसमें तांबेका होना भी सम्भवित था आपने तांबे के होने की भी आज़माइश की थी ? उ०-हां मैंने तांबे के होने की आज़मायश की थी। प्र०-क्या संखिया ऐसा विष है कि वह नहीं पचता ? उ० नहीं। प्र०—पसपाखाने के रास्ते से कुछ निकल जाता है और कुछ रहजाता है उ०—हां। प्र०—आपसे पूछा गया था कि सुखमें घता

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

केखाद होनेका क्याकारण था क्याऐसामजा संखियाकेखाने सेभीहोजाता है ? उ०—इसविषयमें मुखतलिफ रायहै। प्र०—इसबारेमें आपकाक्यामत है ? उ०—तोआपयह पूछतेहैं कि संखियामेंमजाहै यानहीं साहब प्रेजीडण्टबोले कि आपको अपनीनिश्चयसे क्यामालूमहुआ ? उ०—मैंनेउसको चक्खाओर दूसरीतरहसे मैंने उसकीपरीक्षाली परमुझको उसकाकोई मजा न मालूम हुवा ऐडवकेट जनरल ने कहा शायद आप ने संखिया थोड़ी चक्खीहोगी सर जन्टबेलन टायन साहब ने कहा कि इतनोही करनैलफियर साहिबने चक्खी होगी उ० नहींमैंनेकाफी संखियाचक्खोथी औरमैंनेदेखाहै किजिनलोगों नेसंखियाखाई उनकावर्णनहै किमुहमेंधातकासा स्वादआजाताहै साहबप्रेजोडेण्ट ने कहा कि डाक्टर साहबकेवल उतनाहीकहसक्ते हैं जो पहिले केवडे २ डाक्टरोंकी रायहोचुकीहैं ? उ०—दशबीसमनुष्यों से मेरासाबिकाहुआ जिन्होंने संखियाखाई उन्होंने वर्णन किया कि मुखमें धातकासा स्वाद आजाताहै। प्र०—तीसरेपाकिटमें जोआपकेनिकट संखिया भेजीगईवह वैसीहीसंखिया थी जैसेकि प्रथमऔरदूसरेपाकिटमेंथी ? उ०—हांऐसीहीथी। प्र०—क्यासंखियासब एकही प्रकारकी होती है ? उ०—नहीं तरह २ कीहोती है। प्र० क्याआपने बुरादेसेइतना संखियाअलग करलियाथा किआप कहसकें कितीसरे पाकटमेंसंखिया वैसीही थी जैसेकिबुरादे में थी ? उ०—हांमैंनेभले प्रकार खुर्दबीनसेदेखा औरमालूम हुवा किवही संखियाहै। प्र०—पसआपकोमालूम हुवाकियह वहीसंखिया थी ? उ०—हांवहीसंखिया। प्र०—आपनेअच्छी तरहदेखाकिवही संखियाथो ? उ०—हांमैंनेखुर्दबीन से देखा कि वहीसंखियाथी। प्र०—जिसको आपधातका मजा बयान करतेहैंक्या उससे तुम्हारा प्रयोजन तांबेके स्वादसे है ? उ० हां। सरदिनकररावने कहासंखियेके सिवा औरभी इसप्रकार की वस्तुहैंजिनकी खासियतसंखियाकी हो औरप्राणहर हो ?

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उ०—हां कईवस्तु हैं। प्रश्न। श्रीमान् महाराजा जैपुरका यह बात पूछते हैं किसंखियापानी मे घुलसक्ती है ? उ०—हां घुल सक्ती है तिसपीछे ऐडवकेटजनरलने प्रेजीडएटसाहब से कहा जो गवाहोंका कटहरा कुछपीछेको हटा दियाजाय तो उचित है क्योंकि यूरोपियन गवाहों के वास्ते कटहरा आगेको बढ़ा दियागया था अब हिन्दुस्तानी गवाह आवेंगे—सो कटहरा पीछेको हटादिया गया और एकगवाह हिन्दुस्तानी तलबहो कर उसमें खड़ा किया गया था—साहब प्रेजीडेएटने पूछाकि यह गवाह कौन शख्सहै ऐडूवकेट जनरलने उत्तर दिया कि इसका नाम अब्दुल्ला है॥

मुहम्मद अब्दुल्ला गवाह का इज़हार॥

मुहम्मद अब्दुल्ला के इज़हार मिस्टर अनवरारटी साहबने लिये उसने वर्णन किया कि जब करनैल फियर साहब बड़ौदे में रेजीडेन्टीपदपर नियतहोकर आयेतो उस समयसे मैं करनैलसाहब का नौकर हूं——करनैलफियर साहब पालनपुरसे यहां आये—मैं उनके पीछे बड़ौदेमें आया पूर्व्वमें जब कि मेरी उमरकमथी और लड़का था तो करनैलफियर साहब अपनी मेम साहिबा समेत इङ्गलिस्तान को जायाकरते थे उस समय मेंभी उनका मैंनौकरथा—पन्द्रहवर्षसे मैंउनकी नौकरीकरता हूं—कभी मैं मौकूफहोजाताथा और कभी फिर रखलिया जाता था गतनवम्बरमें मैं उनका नौकर था चोबदारीभी करचुका हूं और रमजान महीने में दूसरे दरजेका मैं नौकर था और दूसरेदरजे की मुलाजिमी का कार्य्य शर्ब्बत तय्यार करने का था जब मैंबीमार अथवा गैरहाज़िर हो जाता तो खानसामा शर्ब्बत बनायाकरता करनैलफियर साहबप्रति दिनयहशर्ब्बत पिया करते ९ नवम्बर को उस कमरे में जहां कि शर्बत बना करताथा मैंने शरबततैय्यार किया और उसको खानेके कमरे में लेगया वहांसे मैंने एक तश्तरी और एक बरतन और एक छुरीलेकर बरतन में फलीकेलेको और दोतीन नारंगियां रख

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कर सबवस्तुओं को साहबके कमरेमें लेगया और रीतिके अनु-
सार मुंहधोने की मेजपर उसके रक्खा उस समय साढ़ेछःबजे
पर दोतीन मिनटबीतेथे इसके उपरान्त उसकमरेमें दोमनुष्य
आये एक का नाम गोविन्द और दूसरे का नाम यलापा था
एक मनुष्य कमरेमें भाड़ू देताथा और दूसरा प्रत्येक वस्तु को
भाड़ता पोंछता था फिर मैंने साहब के वास्ते कपड़े निकाले
करलनैफियरसाहबके आनेसे पहिलेमैं फिरकमरेमें नहींगया
परन्तु जिस समय फियरसाहब आये उससमय मैं वहां गया
उसदिनमैंने बकोतरेकाशर्बतइसप्रकारसे बनायाथा—पहिले
मैंने बकोतरेको छुरी से छीलकरकाटा फिर उसकोमैंने सूप
प्लेटमें रक्खाऔर चांदीके चमचेसे उसको दबा २ कर अरक
निकालातिसपीछे एकबारीक कपड़ेमेंमैंनेउसको छानलिया॥

सरजन् बेलन टायन साहबके प्रश्न॥

प्र०—उस कमरेके सम्मुख बरामदाभीथा वा नहीं ? उ०
हां बरामदाहै और उसबरामदेमें भीतरऔर बाहरसे रस्ता
है। प्र०—यहबरामदा रोजसाफ कियाजाताहै ? उ०—बाजर
मरतबा—औरजो बरामदा भीतर की ओरहै वह रोज साफ
कियाजाताहै—औरमैं अच्छीतरह नहींकहसक्ता कि बाहर
काबरामदा प्रति दिन भाड़ा जाताहै वानहीं। प्र०—मैंभले
प्रकारनहीं समझता कितुम भीतरकाबरादा किसको कहते
हो ? उ०—साहबकी कचहरीके कमरेमें जानेके दोमार्ग हैं
एकबाहरके बरामदेसे,औरदूसरे अन्दरके बरामदेमेंसे होकर
है। प्र०—एक बरामदाहै यादो बरामदे हैं ? उ०—बरामदा
एकहै परथोड़ा बरादा खुलाहुवाहै। प्र०—यहबरामदारोज
साफहोताहै ? उ०—हांभीतरसे प्रतिदिन साफहोताहै। प्र०
उस रोजयह बरामदा साफ किया गयाथा या नहीं ? उ०
मैंयहबात भलेप्रकार नहींकह सक्ता क्योंकि यहमेरा काम
नहींहै मजदूरका कामहै। प्र०—साहब ऐडवकेट जनरल ने
प्रश्नकियाकितुमने ९नवम्बरकोदेखाया किकोई मनुष्यबरामदे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कोसाफ करताथा ? उ०—दोमनुष्य उसमें सोतेथे और वही साफ कियाकरते थे । प्र०—मेरे प्रश्नका यहउत्तरनहीं हैतुमने ६ नवम्बरको साफकरते हुयेबरामदेको देखाथा ?उ०—नहीं ॥

इज़हार गोविन्द बालू ॥

गोविन्दबालु बुलायागया और मिस्टर अनवरारटी साहब ने उसके इज़हार लिये उसने कहा कि मैं हम्माल हूं और रेज़ीडन्सी कानौकर हूं जबश्रीयुत करनैल वाकर साहब दो वर्ष की छुट्टी लेकर इंगलिस्तान को गये थे मैंउस समय में नौकर था इसको पांच छः वर्षव्यतीत हुये मेराकाम है कि साहबरेज़ीडन्ट केनिजकी कचहरीका कमरा साफ किया करूं मुझको ९ नवम्बर सोमवार अच्छीतरह यादहै कि उसदिन भोरको मैंने कमरा साफकिया था ७ बजेसे पहिले जब साहब हवा खानेको गयेथे तो मैंने कमरा साफ किया था और मैं उसदिन कमरे में आध घंटे या पौन घंटे तक रहा जभी मैं कमरेके भीतर हो था कि अब्दुल्ला भी कमरेमें आया—लक्ष्मण सिपाही दवातलियेहुये बाहरखड़ाथा सबसे प्रथम यलपा उस कमरे में गया और वह कमरे को साफ करके चला आया यलापा दूसरा मजदूर है—अब्दुल्ला भीतर था और साहबके कपड़े निकालता था कपड़ों के निकालने के पीछे बूट साफ किये और बाहर निकल आया रावजी हवालदार भी उस कमरेमें गया परन्तु अब्दुल्लाके निकल आनेकेपीछे वहगया था रद्दीकी टोकड़ी साहबकी मेज़के पासरहा करतीथी रावजीने कहा कि इस रद्दीकी टोकड़ी को दूसरी टोकड़ी में करदेना चाहियेयह रद्दीकाग़ज़की इकट्ठी की जातीथी इसलिये उस को फेंका नहीं करते थे—दो टोकड़ी रद्दीकी रहती थीं एक टोकड़ी भीतर रहतीथी और दूसरी बाहर रावजीने भीतरकी टोकड़ीके काग़ज़ बाहरकी टोकड़ीमें डालदियेसाहबप्रेज़ीडेन्टने कहा कि इस बात के कहने से तुम्हारा क्या मतलब है गवाहने कहाकिजो टोकड़ी भीतरके कमरेमें रहतीथी उसके

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

काग़ज़ बाहरके कमरेकी टोकड़ी में डाल दिये गये अर्थात् रावजो भीतरकी टोकडीसे वह काग़ज़लाया और बाहर की टोकडी में वह काग़ज़ रखदिये भीतर जो मेज़ है उसको मैं साफ किया करता हूं सुखधोने की मेज़को भी मैं भले प्रकार जानताहूं प्रतिदिन नवीन जललाकर उसपर रक्खा करता हूं ९ नवम्बर को उसपर मैंने नवीन जल बाहर के घड़े से लाकर रक्खा और उस घड़े में पानी भीश्तीभरा करता है-यह जल केवल साहब लोगोंके बर्त्तावकेलिये है मैंने अब्दुल्लाको शर्बतलाते हुये और मेज़पर रखतेहुये नहींदेखा मैंसातबजे इसकमरेमें गया था-जब साहब हवाखाकर लौट आये मैंने उनको नहीं देखा सरजन्टबेलनटायनसाहबनेगवाहसे कोईप्रश्न नहींकिया॥

ऐडवकेटजनरलने कहा कि मैं यलापा नाम दूसरे मज़दूर को बुलाता हूं-साहब प्रेजीडण्ट ने कहा कि आपने घड़े के विषयमें कोईप्रश्न नहीं किया तथाच गवाह फिर बुलायागया और ऐडवकेटजनरल ने उससे प्रश्नकिया॥

गवाहने वर्णन किया कि खानेके कमरेके बाहर एक दीवार है जहांकिघड़े रक्खेजातेहैं-उसके सामने दरबारका कमरा है वहां मनुष्यों का आवागमन रहता है उस स्थानपर घड़े रहते हैं-साहब ऐडवकेट जनरलने कहा कि पहिलेसे अबकुछ रेजी-डन्सीका प्रबन्ध पलटगया है साहब प्रेजीडण्टने सरजन्ट बेलन-टायनसाहबसे कहाकि आप इसगवाहसे कुछसवाल करना नहींचाहते उत्तरदिया नहीं॥

इज़हार यलापा गवाह॥

यलापाके इज़हारऐडवकेट जनरलने लिये उसने वर्णनकिया कि मेरा नामयलापा नरसूहै मैंमज़दूर रेजीडन्सीका नौकर हूं ९नवम्बरको साहबका कमरा साफ किया था॥

सरजन्ट बेलनटायनसाहब ने इसगवाह से कुछ सवालात नहीं किये॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

इज़हार लछमण ॥

लछमण दरयासिंहके इज़हार मिस्टर अनवरारटीसाहबने लिये उसने बयानकिया कि ९ नवम्बरको करनैलफियरसाहबके निजके कमरेकीमेज़ मैंने साफकीथी मेजको साफकरकेडेवढ़ी पर गयाजहांकि सिपाही बैठाकरते हैं वहांजाबैठा मैं नहीं जानता किमेरेजानेके पीछेवहां क्याहुवासाहबने मुझको चिट्ठी दी मैंडाकखानेको चलागया इसचिट्ठीको सवा सात या साढ़े सातबजेलेगयाथा बरामदेसेजातीसमयकोई मनुष्यमुझकोनहीं मिलापरन्तु जबमैं डाकघरसे लौटआताथातो मैंनेएक मनुष्य कोदेखा अर्थात् सालिमको औरयह वहीसालिम या जोथी महाराजके साथआया करताथा वहमुझको नाले के निकट मिलाथा औररज़ीडन्सीकोआताथा जिससमय मैंरज़ीडन्सीमें पहुंचातो वहवर्त्तमानथा और जहांविलायती दृक्षलगेहुयेथे वहांखड़ाथा उनदृक्षोंसे आठनौपर्ग की दूरीपर रेज़ीडन्सीहै डाकखानेके आवागमनमें पौनघंटालगाहोगा सालिमउनही दृक्षोंके पासखड़ा रहासरजन्ट बेलन टायन साहब नेकहा कि मुझको इस गवाहसे कोई प्रश्नके करनेकी इच्छा नहीं ॥

इज़हार जम्मू मियां गवाह ॥

जम्मूमियांके इज़हार ऐडवकेटजनरल ने लिये उसनेवर्णन किया किमैंकम्पूका कोतवाल हूं मुझको९ नवम्बरभलीभांति स्मर्णहै कि उसदिनमुझको नाटाजुम्माकी जबानी कोई खबर मालूमहुईथी सोडाक्टरसीवर्ड साहबसे मैंने उसकी इत्तिला की और उसी दिन दोबजे मुझको मालूम हुवा कि करनैल- फियर साहबके विषदेनेका उद्योगहुवाथा औरयहबात डाक्टर सीवर्ड साहब ने मुझसेकही थी मैंने इसबातका जिक्र दूसरे किसीशख़्स से नहीं कियापरन्तुइसके पीछेनाटाजुम्मासे तीन औरचार बजेकेबीच में निस्संदेह वर्णन किया था ॥

ऐडवकेटजनरल नेकहा तुमने नाटाजुम्मासे कहाथा कि

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

करनैलफियरसाहबके बिषदियेजानेका उद्योग हुवाहै यह तुम ने उसके इत्तिलाके पहिलेकहाथा या उसकेवर्णनके पश्चात् ? उ०—जिससमय मैंने डाक्टरसीवर्ड साहबसे इत्तिलापाई उसी समयमैंनेनाटा जुग्गासेकहाथा साहब प्रेजीडण्टने कहा कि मेरीसमझमेंनहीं आताकियह गवाहक्याकहताहै उससेफिर पूछाजायसो पूछागयातो उसनेकहाकि प्रथमसुझसे डाक्टर सीवर्डसाहबने कहाथा इसके उपरान्त मैंने नाटा जुग्गा से कहा और उससे मैंनेइसप्रयोजनसे कहाथाकिकुछ ब्योरेवार वृत्तान्तउससे मालूम हो। प्र०—जबतुमनेनाटा जुग्गासेकहा था तोयहभीतुमने उससेकहाथा कि यह बातडाक्टर साहब ने मुझसे कही? उ०—हां॥

सवालात जो जम्मू मियाँ से सरजन्
बेलन टाइन साहब ने किये॥

प्र०—जब तुमने नाटाजुग्गासे वहकहा जो तुमसे डाक्टर सीवर्ड साहबने कहा था तो तुमसे नाटाजुग्गाने कुछ कहा था? उ०—हां। प्र०—इसकेपीछे तुमनेडाक्टर सीवर्ड साहब का देखा? उ०—हांदूसरेरोज प्रातःकालको। प्र०—उनसे तुमनेवहीकहा जोनाटाजुग्गाने तुमसेकहा था? उ०—हां। प्र०—डाक्टरसीवर्ड साहबने तुमसे तहक़ीक़ात करनेको कहा था? उ०—हां। प्र०—तुमसेडाक्टर सीवर्डसाहबने क्या कहा था ठीक२वर्णन करो? उ०—मुझसे उन्होंने कहाथा किएक मनुष्यनेकरनैल फियरसाहब को बिषदिया परन्तुमालूमनहीं कि किसनेदिया सोतुम उसको निश्चयकरो। प्र०—क्या तुमसे केवल इतनाही डाक्टर साहबने कहाथा? उ०—हां इतनाही कहा था। प्र०—तुमको भलीभांति मालूम है कि इतनाही कहा था? उ०—हां। प्र०—उन्होंने किसी मनुष्यका नाम नहीं लिया? उ०—उन्होंने किसीका नाम नहीं लिया। प्र०—यह तहक़ीक़ातनुमको क्यों सुपुर्द कीगई? उ०—यह तहक़ीक़ात मुझको इसवास्ते सौंपीगई किमैं यहांका कोतवाल हूं॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

इज़हार नाटाजुग्गा गवाह ॥

नाटाजुग्गाके इज़हार मिस्टर अनवरारटी साहबने लिये उसनेकहा। कि मैंबाजारका मुक़द्दमहूं और सफाईआदिकी देखभालका कार्य्यमेरे संबंधितहै ९ नवम्बर मुझको भलीभांति स्मर्णहै मैं सालिम को जो गायकवार का सवार है जानता हूं मैने ९ नवम्बर को भोरको आठ बजे उसको देखाथा—मैं एकमुकाम कमातीपुरा है उसको साफ करातापा सालिम बाजारकी तरफ़ घोड़ेपर सवार हुवा घोड़ेको खूब तेज़लिये जाताथा वडनगरकी ओरसे आताथा और सदरबाज़ारको जाताथा वहमुझको पुलपर मिलाथा मैं जुग्गा और रावजी कोजो रजोडन्सीमें मुलाजिमहै जानताहूं यहदोनों सदरबाज़ारमेंरहतेहैं पांचमिनटके उपरान्त सालिम घोड़ेपर सवार उसतरफ से वापिस आया और शहरकी ओर गयाउस समय उसकाघोड़ा बहुततेज़ नहींजाताथ। मैनेजम्मूमियां कोतवाल सेसालिमका जिक्रकिया जबसदर बाज़ारसे वहलौट आयातो मुझसेकुछ बातकीथी ॥

सरजनूबेलनटायन साहब के प्रश्न नाटाजुग्गासे ॥

प्र०—जबतुमसे और सालिमसे बातेंहुईं थीतो सालिमका घोड़ाधीरे २ जाताथा वा तेज़जाता था? उ०—जाते समय अतितीव्र जाताथा और आनेके समय धीरे २। प्र०—सालिम कानाम लिखके दियेजानेमें तुमसे किसीने कहाथा? उ०—नहीं तिसपीछे रावजी बुलायेगये उससमय सरजन्ट बेलन टायन साहबने कहा कि मैं चाहताहूं कि महाराजा साहिब भी बुलायेजांय सो प्रेजीडन्ट साहब की आज्ञानुकूल महाराजा साहब बुलाये गये ॥

प्रेज़ीडण्टसाहबने पूछा कि महाराज को क्यों बुलातेहो सरजन्टसाहबने कहाकि महाराजा साहबने कहाथा कि जब रावजीके इज़हारहोंतोमैंबुलालियाजाऊं—ऐडवकेटजनरलने

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कहा कि एक गवाह और है जो इजाजत होतोबुला लिया जाय—सो मुहम्मद अलीबख्श गवाह बुलाया गया॥

मुहम्मद अलीबख्शगवाह का इज़हार॥

मुहम्मद अलीवख्शका इजहार मिस्टर अनवरारटीसाहब ने लिया उसने कहा कि मैं रेजडन्सीका चपरासी हूं ९ नवम्बर सोमवार मुझको अच्छीतरह खयाहै सालिम जो गायकवारका सवारहै उसको मैं जानताहूं—साढ़ेछ: बजे या सात बजे मैंने सालिमको रेज़ीडन्सीमें देखाथा उससमयतक साहब रेज़ीडण्टहवाखोरी से लौटकर नहीं आये थे—मैं डेवढ़ी में एक सन्दूकपर बैठाहुआथा और सालिम घोड़ीकीवाग पकड़े हुये खड़ाथा यहसन्दूक डेवढ़ीके बाईं तरफ़ रक्खा हुवाहै जिस समय डाक्टरसीवर्डसाहब के निकट मैं चिट्ठीलेगया उससमय सालिमकोमैंनेवहां नहींदेखा मुझसे और सालिमसे कुछबातें हुईं थी उसने कहाथा कि तुम बाजारको जाते हो एकरुपया लेतेजाओ मुझको थोड़े बिस्कुटलादो जबमैं रेज़ीडन्सीको लौट आयातो मैंने सालिमको वहां नहीं देखा उसने मुझसे नवह रुपयामांगा न बिस्कुटमांगे मुझे खयहै कि उसदिनमैंने मिस्टरबोवीसाहब को देखा था—दो तीनदिन के पीछे साहब रज़ीडण्टने मुझे आज्ञादी कि मैं सालिम वा और किसी मनुष्यसे न बोलूं उससमय मैं रेज़ीडन्सीको लौटआया मुझको डाक्टर सीवर्डसाहब मिले थे—मैंने सलामकिया तो डाक्टर साहब ने मुझसे पूछाकि तुम क्या लायेहो मिस्टर अनवरारटीसाहबने कहा कि मैं तुमसे यहबात नहीं पूछताकि उन्होंने तुमसे क्या पूछाथा और तुमसे डाक्टरसाहबबोले थे या नहीं? उ०—हां बोले थे और मैं उनसे बोला था—मिस्टर ब्रेन्सनसाहब ने इस गवाहसे प्रश्न किये॥

प्र०—करनैलफियरसाहब ने तुम्हारे इज़हारलियेथे? उ० नहीं मिस्टर बोवीसाहब ने मेरे इज़हार लिये थे। प्र०—यह इज़हार करनैलफियर साहब के रूबरू उन्होंने लिये थे? उ०

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

नहीं करनैलफियर साहब अलग बैठे थे। प्र०—तुमने करनैल फियरसाहबके रूबरू अपने किसीबयानपर दस्तखतकियेथे? उ० नहीं क्योंकि करनैलफियरसाहबवहां मौजूद न थे। प्र०—तुम ने मिस्टरबोबी साहब से कहा था कि जब तुम बाज़ारसे पलट आये तो तुमने सालिम से कह दिया था कि बिस्कुट तय्यार नहीं हैं? उ०—हां मैंने दूरसे कहदिया था। प्र०—दोमिनट हुये तुमनेवर्णन कियाथा कि बाज़ारसे लौटते हुये मैंने सालिम को नहीं देखा अब बयान करो कि तुमने सालिमको कबदेखा था? उ०—जब मैं डाक्टर साहब के बंगले से वापिस आता था तो स्कूलकेनिकट उसको देखाथा। प्र०—जबतुमने स्कूलकेनिकट देखाथा तो कौनवक्तथा? उ०—साढ़ेसात या आठ बजेहोंगे। प्र०—इसके उपरान्त तुमने सालिमको नहींदेखा? उ०—हां जब मैं बंगले को आया था उस समय सालिम को देखा था॥

ऐडवकेटजनरलने मुहम्मद अलीबख़श का दूसरी बेर इज़हार लिया॥

प्र०—जब तुमने सालिम को इस्कूलके निकट और डाक्टर साहबके बंगलेके पास देखा था तो वह क्या करता था? उ० वहनगरकीओर जाताथा। प्र०—घोड़ेपर यापैदल? उ०—घोड़े पर। प्र०—कितनी देरके पीछे तुमने उस को घोड़े पर देखा था? नौबजे॥

साहबप्रेज़ीडण्ट ने पूछा कि बंगले पर सुतरज्जिम ने कहा हां माईलार्ड—मिस्टरअनबरारटो साहबने कहा कि रेज़ीडन्सी पर—सुतरज्जिमने कहा हां हां रेज़ीडन्सी पर॥

ऐडवकेटजनरलने गवाहकी तरफ़ देखकर प्रश्न किया कि तुम से और सालिमसे कुछबातेंहुईथीं? उ०—उससमय कुछ बात्तीं नहीं हुई। प्रश्नसरदिन कर रावका—क्या सालिम का यह नियमथा कि प्रतिदिन रेज़ीडन्सीको आया करताथा वा उसके आने का कोई मुख्य दिन नियत था? उ०—सोमवार और ब्रहस्पतिवार को आया करता था। प्र०—९ नवम्बर को क्या दिन था? उ०—सोमवार और देवालीका दूसरादिन था

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उस समय मल्हारराव उसी अदालत में आये और रावजी गवाह बुलाया गया ॥

इज़हार रावजी गवाह ॥

रावजी रहीमन के इज़हार ऐडवकेट जनरलने लिये उसने कहा कि मैं रेजीडन्सी के चपड़ासियों का हवालदार था और डेढ़ बर्ष या सवा वर्ष से इस ओहदे पर नियत हूं ॥

करनैल फ़ियरसाहबने मुझको नियत कियाथा मैं सदरबाज़ार में रहाकरताथा कोई रेजीडन्सीका नौकर मेरे साथ या मेरे पास नहीं रहताथा मैं सालिमको जानताहूं जो महाराजा साहिबका एकसवार है जबवह बंगले को आया करता था उस समय से उसकी मेरी मुलाक़ात है बंगले से मेरा अर्थ रेजीडन्सी है कमीशन के बैठने के दो महीने पहिले जो काश्तकारों की नालिश के सुनने के मध्ये हुई थी और जिसको सवावर्ष बीता सालिमने मुझसे कहा कि महाराजा साहिबने तुमको बुलाया है वह तुमसे कुछ वार्त्ता करने चाहते हैं तुम महाराजा साहब के निकट चलो मैंने उससे कहा कि अभी मेरा आना नहोगा वह मुझसे तकरार करता रहा अन्तको मैं जाने पर राजी हुवा सो पहिली बेर रविवारको मैं महाराजा साहबके निकट गया—संध्या समय सात बजे रेजीडन्सीसे मैं रवाना हुवा प्रथम मैं यशवन्तराव के निकट गया यह मनुष्य महाराजा साहबका जासूस है वह रेजीडन्सी को आया करता था ॥

उसका घर नईबाज़ार में है उसके निकट सालिम भी बैठा हुवा था मुझको यशवन्तराव और सालिम महाराजा साहबके सन्मुख ले गये ॥

श्रीमहाराजा साहिबका मन्दिर नगरके भीतर है उस मकान में नज़रबाग़ होकर उस मार्ग से गया जो मकानके पीछेसे है जब मुझको यह दोनों मनुष्य सीड़ीपर लेगये तो एक कमरे पर मुझको बैठाया सालिम मेरे निकट बैठा रहा और यशवन्तराव महाराजा साहिबसे इत्तिला करने के वास्ते गया सो महाराजा साहब

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

यशवन्तरावकेसाथ आये और मैंनेउनको पहिचाना और उठ कर सलाम किया महाराजा साहिबने मुझसे कहा कि तुम बंगले से खबरलासके हो जो बंगलेसेखबर लाओगे तो मैंतुमकोखूब इनआम इकराम दूंगा और जबखबर लाओगे तोमैं तुमको खुश किया करूंगा तुममुझको सदाखबरें दियाकरो मैं तुमको हमेशाखुश किया करूंगा महाराजा साहब ने यह भी मुझ से पूछाकितुम रेज़ीडन्सीके जमादारको भलीभांति जानतेहो मैंनेकहाहां महाराजासाहब ने मुझसेयहभी पूछाकि उससे और तुमसे कुछहेहै मैंनेकहा हां महाराजा साहबने कहा कि आगे जमादार को भी अपने साथलाना मैंने कहा बहुत अच्छा इसके पीछे महाराजा साहब मुझ से इधर उधर की बातें करने लगे॥

ऐडवकेट जनरलनेकहा किइधरउधर के शब्दकाअर्थ इस से उत्तमऔर नहीं होसक्ता उसने कहा किनहीं इससे यह मतलबहै कि मुतफर्रिक़ बातेंहुवा कीं॥

तिसपीछे गवाहने वर्णनकिया कि जबमैं महाराजा साहब के निकटजाया करताथा तो यशवन्तराव और सालिमसवार मेरे हमराह जायाकरते थे मैं सदैव महाराजा साहिब को रेजीडन्सी में लोगोंके आनेकी इत्तिलादिया करताथा॥

फिर मेम्बरान कमीशन टिफन खानेके वास्ते उठे॥

जब टिफनके पीछे कमीशन के मेम्बरान् एकत्र हुये तो उस गवाहने वर्णन किया कि जब पूर्व्वमें कमीशन इकट्ठी हुई थी तो उस समय में मैं तीनबेर महाराजा साहब के निकट गया था सदाउसी मकानमें महाराजा साहबसे मेरीभेंट हुई और जिस प्रकार कि पहिली बेर हुई उसी तरह दूसरी मरतबा भी हुई मैं हमेशा महाराजा साहब को इत्तिला दिया करता था कि रेजीडन्सी में क्या कारवाई होती है क्योंकि मैं कमीशन की कारवाई को भलीभांति जानताहूं मैंसुना करताथा कि लोग कमीशन के रूबरू क्या शिकायत करते हैं वही महाराजासाहब

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

से जाकर कहदेताथा उनदिनों महाराजा साहबसे मैंने अपने विवाह का हाल वर्णन किया महाराजा साहबने बतौर खर्चा शादीके पांचसौ रुपये दिये जिस जमाने में कि कमीशन तह-कीक़ात करती थी उस समय मुझको यह पांचसौ रुपये दिये थे—महाराजा साहब ने यशवन्तराव को पांचसौ रुपये के देने की आज्ञादी थी सो उसने रुपये लाकर मुझको दिये थे॥

साहब ऐडवकेटजनरल ने कहाकि माईलार्ड जो दरवाजे बन्दकरदिये जावेंतो उचितहै क्योंकि रौशनीकी चमकनिया-दाहै—मिस्टर मैलवलसाहबने कहा खिड़कियोंके बन्दकरने की कुछ आवश्यकता नहीं॥

ऐडवकेटजनरल ने कहाकि चिलमनका डालाजाना अव-श्यहै—साहबप्रेज़ीडेण्टने आज्ञादी कि मिस्टर जारडीनसाहब यह काररवाई करें——गवाहने बयानकिया कि यशवन्तराव मेरेनिकट रुपया नहीं लाया था किन्तु उसने मुझसे आकर कहाथा कि महलमें आकर रुपया लेजाओ—सो एक मनुष्य पंखेवाला रेज़ीडन्सी का जिसका नाम जुग्गाथा उस को मैं अपनेहमराह लेगया जबमैं महल में पहुंचा तो मुझ को एक सिपाहीमिला फिर यशवन्तराव मिले—यशवन्तराव के कार-कुनने मुझको पांच सौ रुपये दिये—उस समय कारकुन और जुग्गा वर्त्तमानथे और कोई मनुष्यनथा—कारकुनकानाम दत्त-पतथा मैंने चारसौ रुपये विवाहमें खर्चकिये और सौ रुपया अमानतमें रक्खे और जिसके पास अमानत रखवाईथी उससे यह बातकहीकि जिससमय चाहूंगा लेलूंगा--इस चारसौरुपये का कुछजेवरबनाया औरकुछका वस्त्र मोललिया जिस समय में कि कमीशन का इजलास होता था मेरा विवाह हुवा था कमीशन के पूर्णहोने से दोतीन दिनके उपरान्त मैंने सालिम को दिखाया उसने मुझसे कहाकि मैंने जमादारको भी राजी करलियाहै और मुझसे कहाकि जमादारने महाराजासाहब के पासआने का वाइदा किया है जब जमादार आयें तो तुम

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

भी उन्हीं के साथ आना उसी दिन संध्याको मैंने जमादार से जिक्र किया जमादारने कहा कि अच्छा मैं इतवारके रोज़ चलूंगा मुझको महीना याद नहीं परन्तु इतना स्मर्ण है कि कमीशनको पूर्ण हुये आठ दस दिन हुये थे—इन्तिज़ाम यह किया गया था कि प्रथम यशवन्तराव के घरमें जाऊं जमादार यशवन्तराव के मकानपर मुझको मिलगये थे—मुझको याद है कि जुग्गा या कारभाई मेरे साथ गयेथे—यह दोनों मनुष्य पंखेवाले हैं और अब बेकार हैं एक मनुष्य का मेरे हमराह होना मुझको खूब याद है—जब हमलोग वहां पहुंचे तो नरसू जमादार और सालिम और यशवन्तराव हमको मिले हमलोग नज़र बाग की तरफ होकर गायकवारके मन्दिर में गये और यशवन्तरावनगर में होकर गये—सालिम सवार मेरे साथ गया था हमलोग जब सीढ़ीपर पहुंचे तो उस समय जमादर हमारे साथ था और पंखेवाला नीचे खड़ा रहा कमरे में हमसब बैठाये गये सालिम एक और ज़ीनेपर गया थोड़ी देर पीछे मुझको और नरसू जमादारको साथ लेगया जब हमवहां पहुंचे तो महाराजा साहब एक बेंचपर बैठे हुये थे उसके निकट एक गुसलखाना था वहां यशवन्तराव और सालिम और महाराजा साहब थे महाराजा साहब और जमादार और मुझसे बातें हुई इन बातों से यह प्रयोजन था कि रेज़ीडन्सी में जो जो बातें हुआ करें उसकी इत्तिला महाराजा साहब को दीजाया करे महाराजा साहब ने कहा कि जो कि तुमलोग बड़ौदे में रहते हो हररोज़ की खबर मुझको दिया करो और महाराजा साहबने जमादारसे कहा कि पुराने जमादार हो तुमसब सरदारों को जानते हो इसलिये मुझको इत्तिला दियाकरो कि कौन २ सरदार आता है और क्या २ बातें हुवा करती हैं जमादारने वाइदा किया कि सालिम के द्वारा बराबर आपको खबरें पहुंचाया करूंगा यदि आपके विचार में उचित होतो आप उन खबरों को लिख लिया कीजीये महाराजा साहब ने कहा कि जो ज़रूरी खबर हुआ करे वह

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

लिखकर भेज दियाकरो—जमादार ने महाराजासाहब से कहा कि मेरे भाई की पिनशन मैाकूफ होगई है आप उसकेवास्ते कुछ बन्दोबस्त कीजिये महाराजा साहब ने कहा मैं उस का कुछ बन्दोबस्त नहीं करसक्ता तुम साहब रेजीडण्ट को अरजीदो जमादार का भाई महाराजासाहबके पास नौकर या इस के अनन्तर कुछ वार्त्ता न ऊई और महाराजासाहब नौसारीको चले गये ॥

नौसारीको जानेके पहिले मैं तीनचारबेर महाराजासाहब के पास गया——मैंऔर जमादार करनैलफियरसाहबकी अरदलीमें थे जबकि वह नौसारीको गयेथे महाराजासे औरमुझ सेकईमरतबे नौसारीमें मुलाक्कातऊई यशवन्तरावका बेटाएक रावटी में वहां रहता या और एक मरतबा मुझ को सालिम महाराजासाहबके पासलेगया और मुलाक्कातकराईउसरोज महाराजा साहबने मुझसे भावपूनाकर के मद्दे वार्त्ताकी और कहा जो तुम बराबर खबरें दोगे तो तुमको बऊतखुश करूंगा और कहाकि तुम दामोदरपंथ या दामोदर परपदको जानतेहो मैंने कहा कि हां जानता हूं——तीनबेर पेडरू के साथ महाराजा सहब के निकट गया या जबकि महाराजा साहब नौसारी से लौट आये तो मैं बोस इक्कीस मरतबा महाराजा साहबके पासगया पेडरूसे महाराजासाहबने पूछाकि साहब किस समय भोजन करते हैं और खातेवक्त क्या २ बातें होती हैं पेडरू ने उत्तर दियाकि संध्यासमय भोजन करते हैंछोटी मेमसाहिबा आप की बड़ी प्रशंसा किया करती हैं जो आप साहबसेदोस्ती रखियेतो आपकेलिये अति उत्तमहोगा महाराजासाहबने कहाकिमैंतो साहबसेस्नेह रखता हूंपरन्तुसाहब मुझसे अप्रसन्न रहते हैं ॥

गवाहनेयहभी वर्णनकिया अगरआपसाहब से अच्छीतरह रहेंगे तो साहब भी आपपर मेहरबानी रक्खेंगे ॥

छोटी मेमसाहिबा की गर्ज बोवीसाहब की मेमसाहिबा से है

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

महाराजासाहबने पूछा कि तुम अपने गोवादेश से कब लौट आये पेडूने कहाकितीन चारदिनहुये उससमय महाराजा साहबने पेडूको एक पुड़ियादी और कहाकि साहबके खाने में डालदेना—जब पेडू अपने घरको जाता था तो उसने कुछरुपया सालिमसवार से लिया था॥

ऐडवकेटजनरलने मेम्बरान् कमीशनसे कहाइससमय चार बज गये क्या और भी किसी गवाह के इजहार लिये जांयगे मेम्बरोंने कहा आज अदालतबरखास्तहो कलमुकद्दमा फिर पेशहोगा सो अदालत बरखास्तहुई॥

आठवें दिनका इजलास

रावजी का इज़हार फिर शुरू हुआ॥

जब कि अदालतएकत्र हुई तो सरल्यूइसपीलो साहब आये और श्री महाराजामल्हरराव टिफन खाने के वक्तातक समाज में वर्त्तमान थे ऐडवकेटजनरल ने रावजी से नीचे लिखेहुये प्रश्न किये॥

प्र०—तुमने मुझसे कलके दिन कहाथा कि मैं महाराजा साहबके पास पेडू के साथगया था कहोकि सिवाय पेडू के और भी कोई मनुष्यथा? उ०—मेरेसाथ नरसूजमादारथा और ख़ब्लइसके भीवादवापिसी नौसारीके कईमरतबा जमादार और पंखेवालेके साथ महाराजासाहबके पासगया था॥

सरजन्टवेलनटायनसाहनेबकहा कि इसगवाहसे कहाजाय कि ऊंचेशब्दसे बोले क्योंकि महाराजासाहब उसकी आवाज नहीं सुनसक्ते गवाहने कहाकि नौसारीसे आनेके पन्द्रहदिन उपरान्त तीन सौरुपये मुझकोमिलेथे यहरुपये मुझको नरसू जमादारने दियेथे और कहाथाकि महाराजा साहब ने तुम को दियेहैं फिरमैंऔर नरसू जमादारमहाराजासाहबकेपास गये महाराजासाहबने कहाकि साहब मुझपर बड़ा अन्याय करते हैं जो कोई बातमैं तुमसे कहूं तो तुम उसको मानोगे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE.

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

हमलोगोंनेकहामानेंगे महाराजासाहबने पूछाकिसाहबकि ससमयभोजन करतेहैं और क्याखातेहैं हमने उत्तरदिया कि वह हमारे साम्हने खानानहींखाते इसलिये हमको मालूमनहीं किवहक्या भोजनकरतेहैं वह हमारेसाम्हने शर्बतजरूर पीतेहैं· उससमयमहाराजासाहबने पुड़ियादीऔर कहाकियहसाहब केशरबतमें डालदेना मैंने महाराजासाहब से पूछाइसमें क्याहै उन्होंनेकहाकि जहरहै मैंनेकहाकि अगरसाहबको जररपहुंचे तो हम लोगोंकी बड़ीखराबी होगी महाराजा साहबने कहा एकहीबेर कुछनहोगा किन्तु बहुतदिनोंके पीछे असर होगा महाराजा साहबने कहाकि अगर इस पुड़ियाने असर किया तो मैं तुमको लाखरुपया और अपनेयहां नौकरी दूंगा और तुम्हारे बालबच्चोंकी खबरगीरी करूंगा ॥

प्र०—यहपुड़िया तुमको किसतारीखको दीगईथी ? उ०—मुझको स्मर्णनहीं। प्र०—हरएक पुड़ियामें कितना २ विषथा ? उ—०गवाहने उंगलीके इशारेसे बताया कि इतनाथा ॥

प्रश्न मैलवलसाहब का—क्याचुटकी भर था—सरजन्टबेलनटायरसाहबने कहाकि इसकोथोड़ीसी मट्टी देदीजावे ताकि वहबयान करे—सोथोड़ीसी मट्टीउसेदीगई और उसनेबतलाया कि इतनीथी——सरजन्ट बेलनटायन साहब बोले मैंचाहता हूंकि यहमट्टीअदालतमें रखलीजावे साहबप्रेजीडेण्टने आज्ञा दीकिमिस्टर जारडोन साहब सेक्रेटर इसमट्टीको अपनेपासरख लेसोवहमट्टी उनकोदीगई और आज्ञाहुई कि इसेरक्षापूर्व्वक रक्खो—और गवाहनेयहभी वर्णन कियाकि विषदियेजाने के आठ दिन पहिले जबमैं महाराजा साहब के निकटगया तो तुझको और नरसूको गालियांदीं और कहाकि अबतक तुम लोगों ने कुछभी नहींकिया ॥

मुतरज्जिम ने कहा जो अज्ञाहो तो गालियोंका तर्ज्जुमा कियाजाय—सरजन्ट बेलनटायन साहब ने कहा इसकी कुछ आवश्यकता नहीं है मुतरज्जिमने कहा किवास्तव में यह

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

गालियां निहायत फोहश हैं—तज्जुमा न होना चाहिये तिस पीछे महाराज ने कहा मैं तुमको एक और वस्तु दूंगा सो उन्होंनेएक विषकीपुड़िया दी उसकीरंगत स्याहीमाइल थी

प्र०—ऐसी सियाह जैसा मुतरज्जिम का कोट है ? उ० नहीं जैसेकि टोपीहै—टोपीकी रंगतभूरी थी—मैंने सोमवार कोसाढ़े छः बजे साहबके शर्बत में पुड़िया डाली यह पुड़िया वहथी जो महाराजा साहबने दुवारहदी थी जब मैं साहब के कमरे से बाहरआया तो सालिम सवार नेमुझसे पूछाकि तुमने वहकाम कियामैंने कहा कि हां—करनैलफियर साहब का चिट्ठी लिख कर डाक्टर साहब को बुलाना मुझे स्मर्ण है मैंने जमादारसे कहाकि डाक्टरसाहब बुलायेगये हैं अबहम लोगोंकी फजीहती होगी जिस समय डाक्टर साहब आयेहैं मैंऔर जमादार बरामदेमें खड़ेथे उसीदिन मेरीपेटी लोगई थीऔर मुझकोआज्ञाहुई किमैं अपनेघरको जाऊंतबसे मुझको पेटीनहीं मिली करनैलफियरसाहब ने मेरेइजहार लियेउस समय मिस्टरबोर्डसाहब वर्त्तमानथे दूसरेदिन मैं हवालातमें सुपुर्दहुवा परन्तुसन्ध्या को ५ बजेवहांसे छूटगया जोरुपया मुझको मिला था उससे यह आभूषण बनवाया था सोवह जेवर पेशकियागया पांचसौ या साढ़ेपांचसौरुपयेकी लागत का होगा मैं सर्वदा महाराजा साहब को खबरें लिखकर भेजाकरता था—जुग्गा लिखा करताथा जुग्गाकेहाथ कालिखा हुवाखत पहिचानता हूं मैं थोड़ा गुजराती पढ़सक्ता हूं सो एक काग़ज़ गवाहको दियागया उसने कहा कि जुग्गा का लिखाहुवा है मैं इसकोभी नहीं पढ़सक्ता॥

मैं हमेशा जुग्गासे खबरें लिखाताथाऔर किसी से नहीं लिखाता था और जमादार महाराजा साहब के पास पहुंचाया करते थे॥

इसगवाहने वर्णन किया कि मैंने मिस्टर सूटर साहब के भी रूबरू अपनेइजहार दियेथे मुझकोस्मर्ण हैकि सोमवार

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

थी, और शायद २२—तारीख थी परन्तु महीना स्मर्ण नहीं साहब ऐडवकेट जनरलने कहा कि शायद २२—दिसम्बर होगी—गवाहने कहा कि मेरे इजहार मिस्टर सूटर साहबने लियेथे प्रथम मेरे उन्होंने आपनहीं लिखे दूसरोवार आपही लिखे मैने वह इजहार उससमय दिये जब कि मिस्टर सूटरसाहबने मुझको बुलायाथा—९ बजेतक वह मेरे इजहार लेते रहे मैने उससमय तक किसी बातका इकबाल नहीं कियाथा फिरवह मुझे रजीडन्सीकी कोठीमें लाये और रजीडन्सीके बागमें बैठा या—पांचछः बजेतकमैं वहांबैठारहा फैजू और करीमभीवहां विद्यमान थे—हम लोगोंमें परस्पर तकरार होने लगी—फैजू और करीमने अपना और आयाका मुझसे जिक्रकिया और कहा हम लोगोंने तो इक्बाल किया तुमक्यों नहीं इक्बाल करतेहो यहबात सुनकरमैंने सूटरसाहब के हवलदार को बुलायामैं आपही जाकरबुलालाया उसकानाम नहींजानताहूं जोउसको देखूंतो पहिचानलूं—उसकानाम मीरअमानअली थावह अदालतमें बुलायागया और गवाहने उसको देखकर पहिचान लियाफिर गवाहनेकहा कि मैनेहवलदारसे कहा था कि मुझको बड़ेखान साहबअर्थात् अकबरअलीखान बहादुरकेपास लेचलो जबमैं उनकेपास गया तो मैने उनसे कहा कि मैं आपको बहुतसही २ विषके दियेजानेका हालबताहूंगा बरशर्त्ते कि मेरीजानबख्शीहो और उसका वाइदा आप साहब सेलें ॥

साहबऐडवकेट जनरलनेकहा कि हमनहीं चाहते कि तुम अतिविस्तारसे वृत्तान्त कहो केवल इतनाही वर्णन करो कि तुम्हारी जानबख्शी हुईथी—गवाहने बयानकिया कि हां इसी वाइदेपर मैनेसम्पूर्ण वृत्तान्त सूटरसाहबसे कहदियाथा जबसे मैने सूटरसाहबके रूबरू इजहार दिये उससमयसे मैनेनरसू जमादार को नहीं देखा—बरवक्त इजहार के उसदिन नरसू जमादार वर्त्तमानथा जमादारने कहा कि तुमनेहर एकबात

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

काइकबाल करदिया मैनेकह। हां मैने इरएकबातका इकरार करलिया और जोगले२ पानी होगा ते। यही कहूंगा इसके उपरान्त पुलिसने कमरेमें लेगलेगये यहपेटी जोअदालतमें रक्खी कईहै इसीको पहिना करताथा इसपेटीमें जोजेबहै उसी में विषकी पुड़िया रक्खा करताथा॥

ऐडवकेटजनरलने कहा—माईलार्ड इस गवाहके बयान से विदित होताहै कि दोपुड़ियां जिनको उसने इस्तेमालकिया है विषहैवह अागेकीजेबमेंरखताथा और जिसपुड़ियाका उसने इस्तेमाल नहीकिया वहदूसरे जेबमें रक्खा करताथा गवाह ने बयान कियाकि मैं उससमय वर्त्तमान था जबकि रावसाहब और खान साहबने इसपेटीकी तलाशीलीथी मेरे साम्हने एक पुड़ियाभी इसपेटी में निकली थी—गवाह ने कहाकि मुझसे खानसाहबने पूछाथा कि तुमविषकी पुड़ियोंको कहां रक्खा करतेथे मैंने उत्तर दिया किपेटीकी जेबमें रक्खा करता था मुझसे पूछाकि तुम्हारीपेटी कहांहै मैंने कहाकि मोदरपट्टा वालेके पासहै खानसाहबने एक मनुष्य भेजकर मोदरपट्टेवाले को बुलाया मेरेरूबरू उसकेगलेसे यहपट्टा उतारा और उसी में इधरउधरदेखने लगे फिर बड़े खानसाहब को टटोलते २ एक जगह पर कोई कठोरसी वस्तु मालूम हुई उन्होंने कहा कि यहां कोई वस्तुहै यह कहकर उन्होंने पट्टे को रखदिया और सूटरसाहबको जो दूसरे कमरेमेंथे बुलाया जबवह आये तो उनके सम्मुखपेटीकी सिलाईको खोला उसमें से एक सफैद पुड़िया निकली मुझको दिखायाकि तुम इसपुड़ियाको पहि-चानतेहो मैंने कहाकि हां पहिचानता हूं इस पुड़िया में जहरहै ग़लती से मेरीपेटी में रहगई थी फिर सूटरसाहबने कुछ और बातें मुझसेपूछीं और मैं वहांसे चलाआया जिस रोज यहपुड़िया मुझकोमिलीथी वहदिन मुझको भलेप्रकार स्मरणहै यहपुड़िया मेरेइजहार सेदोरोज पीछे मिली थी॥

सरजान्स बेलनटायन साहबने कहा किअबमेरी तरफ़सुत-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

वज्जह हो थोड़ेसे प्रश्न मैं भी तुमसे करूंगा उससमय प्रेसी-डेण्ट साहबने कहाकि अबदो बजगये हैं आपक्या सवालचाह-ते हैं सरजन्टवेलन टायनसाहिब ने कहा आपकी आज्ञा होतो उत्तम है किपांच छः मिनट के वास्ते सवालात मुलतवी किये जांवे उससमय कमीशन के मेम्बर टिफन खाने के वास्ते उठे टिफन खानेके पीछे मिस्टर कासिटजी से जो नवीन मुतरज्जिम नियत हुये थे सौगन्ध लीगई॥

सरजंट वेलनटाइन साहब के प्रश्न॥

प्र०—तुमकितने दिनों तक कारनैलफियर साहबके नौकर रहे? उ०—शायद डेढ़ वर्ष। प्र०—कारनैल फियर साहब तुम परबड़ी मेहरबानी करतेथे? उ०—हां वह मुझपर बड़ी मेहर बानथे। प्र०—तुमको उनसे कोई शिकायत की बातनहीं हुई? उ०—नहीं। प्र०—फिरभी तुम उनके मारडालने पर राजी होगये? उ०—मुझको महाराजासाहबने रुपयेदेकर राजी कियाथा। प्र०—तुमको राजीकरने में जियादह कहने सुनने की जरूरत नहुई? उ०—मुझको लाख रुपयेदेनेको कहाथा जोकि मैं गरीब आदमी हूं राजी होगया। प्र०—चूंकि तुम गरीबआदमीथे औरतुमको एकलाख रुपयेके मिलनेकावादा हुवा तो तुमअपने हाकिमके मारडालने पर राजीहोगयेजो सदातुमपर कृपारखता था। इसबातको सुनकर गवाहनेमुंह ही मुंह कुछ कहा॥

सरजन्टवेलन टायन साहब ने कहा कि वास्तवमें ऐसाही था लज्जामतकरो स्पष्टरीतिसे वर्णनकरो? उ०—हांमैं मार-डालने पर राजी हुआ। प्र०—क्यावास्तवमें तुम मारडालना चाहतेथे? उ०—वास्तवमें मारडालनेको मेरीइच्छा नथीकिन्तु महाराजा साहब की थी। प्र०—क्या तुम्हारी इच्छा थी कि तुम अपने हाथसे साहबको मारो? उ०—मुझको महाराजा साहबने बहकायाथा। प्र०—चूंकि तुमको बहकायाथा तोतुम ने मारडालने काउद्योगकरलिया? उ०—हांमैं गरीबआदमी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

था और मुझको तरग़ीब होगई। प्र०—तुम से और करनैल फ़ियरसाहब से नाराज़गी तो नहीं हुई? उ०—नहीं। प्र० तुमकेवल द्रव्यकेलोभसे मारनाचाहते थे? उ०—हांमैं ग़रीब आदमी हूं और मुझको तरग़ीब दीगईथी। प्र०—चूंकि तुम ग़रीबआदमी थे केवलद्रव्य केहीलोभसे ख़ूनीबनना चाहतेथे? उ०—हांमुझको तरगीबदी गईमैंराज़ी होगया। प्र०—अबतुम को लाखरुपये मिलगये? उ०—नहींमुझको कुछभी प्राप्त न हुआ। प्र०—तुमने महाराजासाहब से कुछरुपया मांगाथा? उ०—नहीं। प्र०—तुमको याद है कि तुम्हारे इज़हार इरादा होनेके पीछे करनैलफ़ियरसाहब के रूबरू लेगये थे? उ०—हां याद है। प्र०—इसके पीछे तुम अनुमान एक महीने के छूटे रहे? उ०—हां। प्र०—इस अवसर में तुमने महाराजा साहब से रुपये मिलने की दरख़ास्त की थी? उ०—नहीं। प्र०—इस अवसर में तुमने कभी महाराजा साहबको देखा वाकोई सन्देशा उनका तुम्हारे पासआयाथा? उ०—नमेरेपास कोईसन्देशा आया न कभी उनको मैंनेदेखा। प्र० तुमग़रीब आदमीहो और ग़रीबहोने और वहकायेजानेसेतुम मारडालनेके वास्ते राज़ीहोगये तुमनेकिसवास्ते रुपयेकेमिलने की महाराजासाहब से दरख़ास्तनहींकी? उ०—मैंनहींगया और क्योंकर मैंजाता। प्र०—क्योंतुमतो बहुधा वहांगए होगे? उ०—मैंपहिले वहांगया था मौकूफ़ होनेके पीछे नहींगया। प्र०—अबकितुमने वहकर्म्मकिया जो महाराजासाहबने तुमसे कहाथा तोफिर क्योंनहींगए तुम को महाराजासाहबसे रुपये की दरख़ास्तकरनी चाहियेथी क्याकारणथा कितुमने करनैल-फ़ियरसाहबको नहींमारडाला या कोई और बातथी? उ०—मेरा उद्योग निष्फलहुआ। प्र०—मैंभी यहीसमझाथा परन्तुमुझको मालूमहुआ कितुम अपनीआबरूकी वजहसे नहींगए मालूम हुआकि तुमयहसमझेकि तुम करनैलफ़ियरसाहबको नमारसके इसलिये महाराजा साहबके पास जानाचाहिये। उ०—न मैं

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

गया और न रुपया मंगवाया। प्र०—पर तुम क्यों नहीं गये तुम गरीब आदमी थे और मुफलसीसे खूनी बनना चाहते थे ? उ० मैं खूनी बननेको न गया। प्र०—हां महाराजा साहब चाहते थे कि तुम खूनी बनो इसबातको हमसबलोग जानते हैं परन्तु तुम गरीब थे फिर तुम किसवास्ते रुपया मांगने नहीं गये ? उ०—मैं क्यों करजाता मैं नहीं गया। प्र०—तुमसे और नरसूसे उसवक्त कुछ बातचीत हुई थी जबकि विषदेनेका उद्योग तुम्हारा पूर्ण न हुवा ? उ० नरसूसे कुछ बात्तचीत नहुई थी मैं अपने घरसे बाहर नहीं निकला और मैं कभी नहीं गया। प्र०—तुम भावपूनाकरको जानते हो ? उ०—हां वह बंगले को आया करता था और मैं उसको जानता हूं। प्र०—वह बंगलेको किसवास्ते आयाकरता था? उ०—वह साहबके पास आयाकरता था मैं नहीं जानता था कि क्यों आता था। प्र०—क्या खबरोंके देनेवास्ते साहबके पास आया करता था कि नगरमें क्या होरहा है ? उ०—मैं यह नहीं जानता। प्र० तुमनेकभी कोई वस्तु उसको देतेहुए सुना है (जवाबका तर्जुमा सुतरज्जिमने इसतरह किया) उ०—नहीं सुना कभी २ सुना उसकी मैंने इत्तिलाकी प्र०—करनैल फियर साहबके नौकरों में कुछ बात्तीहुवाकरती थी कि महाराजा साहबने श्रीमान् वाईसराय के निकट खरीता भेजा है ? उ०—खरीते का हाल मैं नहीं जानता। प्र०—तुमने कुछभी इसविषयमें सुनाया ? उ० मैंने कुछभी नहीं सुना और मुझको कुछ स्मर्णनहीं है। प्र० भावपूनाकरसे भी नहीं सुना उसतरफ मत देखो हमारी ओर देखो उ०—नहीं भावपूनाकरसे भी मैंनेनहीं सुना। प्र०—अब तुमसे छोटी बातोंमें कुछ प्रश्न करता हूं तुम सचकहना ? प्र० तुम्हारे जोफोड़ा निकलाया और जिसको तुमने दिखाया—यह फोड़ा शीशी की वजहसे होगयाथा ? उ०—हां शीशीकी दवासे मेरे फोड़ा होगयाथा। प्र०—शीशीके रखनेसे खालके पास फोड़ा होगयाथा ? उ०—शीशीके मुखपर रूई लगीथी और रूईमें से दवा निकलकर मेरे शरीर पर लगगई थी। प्र०—मालूम हुवा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

की इसीशीशीमें की दवासेतुम्हारे फोड़ाहोगया था क्योंठीक है? उ०—हां। प्र०—पसतुमने इससंदेहसे कि करनैलफियर साहबको कष्टहोगा औषधि को फेंकदिया? उ०—हांइसो हेतुमैंने दवाफेंकदी। प्र०—परभाई तुमजानतेथे कियहदवा करनैलको हानिकेलिये दीगईहै? उ०—हां। प्र०—फिर तुम ने क्यों उसकाइस्तैमाल नहींकिया तुमजानतेथे कियहशीशी की औषधिजहर पहुंचानेकेवास्तेदीगई है तुमनेउसको क्यों- फेंकदिया? उ०—मैंनेउसका इस्तैमालनहीं किया और फेंक दिया। प्र०—किसवास्तेइस्तैमालनहीं किया? उ०—इसवास्ते इस्तैमालनहीं कियाकि उससे मुझको कष्टहुवा औरमुझको यहसंदेहहुवा किमैंशीघ्र होपकड़ा जाऊंगा। प्र०—परन्तु तुम जानतेथेकि मेराविषदेनेका उद्योगहै पस ऐसीवस्तुका क्यों इस्तमालनहींकिया? उ०—मैंने नहींकिया। प्र०—परमैंपूछता हूं कि तुमने किसवास्ते उसका इस्तैमाल नहीं किया? उ० मुझकोभयहुवा कि साहबको उससेजहर पहुंचेगा इसलिये इस्तैमालनहीं किया। प्र०—तुमने नरसूसे कहाथा कि मैंने इस्तैमाल किया है? उ०—हां मैंने नरसुसे कहा था। प्र० तुम्हारा वह कहनाझूठथा? उ०—हांमैंने असत्यकहा था। प्र०—मालूमहोता है कि कभी२तुम झूठकामभी उठाया करतेहो? उ०—मैंझूठ क्यों बोलूंमैंने आपसेसच २ कहदिया प्र०—तुमने नरसू से क्योंझूठबोला इसझूठबोलनेकी क्याजरू- रतथी? उ०—एकसवार प्रतिदिन महाराजा साहबके पास से आयाकरता था कि कामहुवा यानहीं दवाडालीगई या नहीं। प्र०—तुमनेनरसूसे क्योंझूठ बोलाथा? उ०—वह मेरे पीछेपड़ाहुवा था इसलिये सिवायझूठ के और कोई उपाय नदेखा। प्र०—वह तुम्हारे पीछेपड़ाहुवा था इसलिये तुमने उससे झूठबोला क्याजोकोई तुम्हारेपीछे पड़ताहै उससे झूठ बोलतेहो? उ०—हांअबमुझको झूठबोलने से क्यालाभहै। प्र० केवल तुमने इसी वास्ते झूठ बोलो कि वह तुम्हारे पीछे पड़ा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

हुवा था ? उ०—हां मैंने इसीवास्ते झूठबोला। प्र०—तुम जानते हो किमिस्टर सूटरसाहबभी तुम्हारेपीछेपड़े रहे शायदउनसे तुमने एकझूठ नहीं किन्तु सैकड़ोंझूठबोलेहोंगे ? उ०—वह मेरे पीछे कभी इतना नहीं पड़े। प्र०— पसजो कुछ तुम ने उनसे कहा सब सच था ? उ०—हां सब सचथा। प्र०—इस बातपर तुम्हारा भलेप्रकार निश्चय है ? उ०—हां इतमीनान है। प्र०—तुमको इसबात का बड़ा खयालथा कि मिस्टरसूटर साहबको धोखा नदो ? उ०—उनसे मैंने जो कुछ कहा सब सचकहा। प्र०—क्या तुमने करनैलफियरसाहबसे भी सचकहा था ? उ०—अगर मैं करनैलफियरसाहब से सच कहता तो वह कब मेरा या किसी का विश्वास करते। प्र०—तो यही कारणहै कि तुमने उससे सच नहीं कहा ? उ०—हां। प्र०—पस तुमनेइसवास्ते उनसे सचनहीं कहाकि वहतुम्हारा विश्वास नहीं करते ? उ०—हांइसी विचारसे मैंने सच नहीं कहा। प्र०—तुमने मिस्टरसूटरसाहब सेहरएकबात सचकही उ०—हां। प्र०—अबमैं तुमसेकुछ वहबातेंकिया चाहताहूं जो तुमने मिस्टरसूटर साहब से कही थी और यहबातें उन दो पुड़ियोंके मद्धेहै जोतुमको उससमयदी गई थी जबतुमसेलाख रुपयेके दिये जानेका वाइदाहुवा थातुमको यहपुड़िया किसनेदींथी ? उ०—नरसूनमादार लायाथा—उसने मुझको दी थी। प्र०—क्या उसने तुमसेकहाथाकिउनदोनों पुड़ियोंकेतीन हिस्से बराबरकरके तीनरोज तक देनो? उ०—उसने कहाथा कि इनदो पुड़ियों के तीन हिस्से करना औरदो यातीन दिनतक इसका इस्तैमालकरना। प्र०—उसनेकहाथा कि बराबरकेहिस्सेकरना ? उ०—हां तीनहिस्से बराबर करनेको कहाथा तथाच मैंनेतीनपुड़िया बनाईं और अपनेपासरखली। प्र०—यानी उन दोपुड़ियोंको मिलाकर तुमने बराबरके हिस्सेकिये थे ? उ०—हरएक पिसीहुई वस्तुमेंसे मैंने थोड़ा २ लिया क्योंकि मैं जानताथा कि सफेदचीज अधिकहानिकारकहै। प्र०—अब

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मैं तुमसे वह कहताहूं जो तुमने करनैलफियरसाहबसे कहा था किन्तु मैं तुमको पढ़कर सुनाताहूं तुमने कहाथा कि दो तीनदिनके पीछे जमादारने मुझको दोपुड़ियां दीं और कहा कि बराबरके तीनहिस्से बनायेजावें और दोयातीनदिनदोजावें ताकि तीनरोजमें वहखत्म होजावे और तुमने यहभी कहाथा किसालिम और यशवन्तरावने महाराजासाहबके रूबरू बड़ी एहतियातसे समझाथा था और फिर तुमकहते हो कि इन पुड़ियोंका देना दो तीन रोजतक मैंने मुलतवी रक्खा क्योंकि मुझको अवसर न मिला? उ०—गवाहने कहाकि हां यहसब मेराबयानहै। प्र०—औरतुमकहतेहो किविषकीपुड़िया जोमुझको पहिलेजमादारने दोथी मैंनेउसके तीन भागकिये? उ० हांमैंने तीनभागकिये थे। प्र०—उनपुड़ियों को तुमने अपनी पेटीकी जेबमेंरक्खा और कहतेहो कि एकपुड़िया जोपीछेनिकलीथी वहभी उन्हींपुड़ियों मेंसेथी जोमुझको जमादारनेदीं थी क्या मिस्टरसूटरसाहबके रूबरूभीतुमनेयहीवर्णनकियाथा उ०—हां। प्र०—क्यायहबात ठीकहै? उ०—हां। प्र०—अबमैं तुमसे पिछली पुड़िया के बाबत पूछता हूं क्यातुमको वहपुड़िया जमादारने दीथी?उ०—हांजमादारनेदीथी। प्र०—क्या इस पुड़ियाके दवाकारंग पहिली पुड़ियोंके खिलाफथा क्योंकितुम कहतेहोकि जो पुड़िया तुमको प्रथममें मिलीथी उनमेंसेएकमें सफेदरंगकीदवाथी और दूसरेमेंजोवस्तुथीवहगुलाबीमाइल थीं इसतीसरी पुड़िया का रंग जो अन्तको तुम्हें मिली कैसा रंगथा? उ०—उसका रंग इसटोपीकासा था—एक वैरहर की टोपी वहांरक्खी थी उसका रंग स्याहीमाइल भूरा था। प्र०—उस सूरतमें उसको रंगत सफैद पुड़िया कीसीन थी? उ०—नहीं स्याहीमाइल रंगथा। प्र०—क्या उसटोपीसे उस का रंगगहराथा? उ०—बखूबी यादनहीं। प्र०—तुमनेपुड़िया की सबदवाको गिलास में छोड़ दिया था? उ०—हां। प्र० पानीमें मिलाकर छोड़ा था? उ०—हां प्रथम मैंने बोतलमें

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ने सबका सब बोतलका जल गिलास में डालदिया ? उ०—हां सबपानी डालदिया। प्र०—अन्तकी पुड़ियामें कितनीदवाथी ? उ०—उसगवाह ने चुटकी भरकर रेतउठाई (जोस्याहीके सुखानेके वास्ते वहां रक्खीथी और कहा कि इतनीथी या शायद कुछ इससे अधिकहो। प्र०—इसरेतसे उसपुड़िया की दवा का रंगस्याही मालूम था ? उ०—इसकारंग जियादा स्याही मालूमहै उसकारंग हलकाथा। ऐडवकेट जनरलने कहाकि सुतरव्लिम तुमतज्रुबा अच्छानहीं करतेहो उसनेकहा था कि थोड़ाकाला। प्र०—तो मालूमहुवा कि वह दवाटोपी से जियादहस्याही मालूमथी परन्तुउसका रंगइसरेतसे हलका था ? उ०—हां। प्र०—जिस दिन तुमने अपने स्वामीके मारडालने का उद्योग किया उसदिन डाक्टरसीवर्डसाहब को देखाथा ? उ०—हां बंगलेपरथा वहीं उनको मैंने देखाथा। प्र०—अबसालिम कहांहै ? उ०—मैंनहींजानता किवह कहां है सुनाहै किवहकैदहै औरमैंभीकईदिनसेकैदथा। प्र०-तुमको विश्वासहै किसालिम क़ैदहै ? उ०—हां मैंजानता हूं किवह क़ैदहै। प्र०—बयानकरोकिपेडरू तुम्हारेसाथ कितनीबेर महाराजासाहबकी मुलाक़ातको गयाथा? उ०—तीनबेरनौसारी से आकर और एकबार जबकिवह गोवाअपने घरसेलौटआया। प्र०—कुलचार मरतबा ? उ०—हां चार मरतबा। प्र०—इसविषदेनेकाहालवहकुछजानताहै ? उ०—हांवह सब जानता है महाराजासाहबनेखुद मुझसेकहाथा। प्र०—तुमनेमहाराजा साहबसे कहते हुये खुदसुनाथा ? उ०—हांमैंने खुदसुनाथा। प्र०—तुमने कागजदेतेहुयेदेखाथा ?उ०-कौनसा कागज। प्र० वहकागजजिसमेंविषथा।औरजिसमेंजहरहोना तुमजानतेथे ? उ०—एकपुड़िया देतेहुये मैंनेदेखाथा। प्र०—तुमने महाराजासाहब को कहतेहुये सुनाथा कि इसपुड़िया में विषहै ? उ०—हांमैने कहतेहुये सुनाथा। प्र०—कबयह बातहुई थी ? उ०—जबकिपेडरूगोवासेवापिसआया। प्र०—पेडरूका अखीर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जानायहीथा? उ०—हां। प्र०—तुम उसकीतारीखकहसक्ते हो।? उ०—मुझको तारीख स्मर्णनहीं। प्र०—मेरे विचारसे शुरूनवम्बरहोगा जबकितुमको यहपुड़िया दीगई? उ०—हांयह पुड़िया मुझको दीगई उसके दोदिन पीछे मैं बुलाया गयाथा। प्र०—तुमकोयादहै किमहाराजा साहबनेपुड़िया तुमकोकबदीथी हांमैंभूला जमादारने तुमको पुड़ियादीथी? उ०—हांपहिलीबेर जमादारने दोपुड़ियांदीथीं और दूसरीमरतबा एक पुड़ियादीथी। प्र०—उनदोपुड़ियों याइसएक पाकिटसे पहिले पेडरूकोपुड़िया दीगईथी? उ०—हांपहिले मेरी इस पुड़िया सेदीगई थी। प्र०—यानिक़ब्ल अखीर पुड़ियाके? उ०—हां प्र०—तुमने पेडरू की पुड़ियाके मिलनेसे एकदोदिन पीछेपुड़ियापाईथी? उ०—दोदिनबाद। प्र०-फिरतुमको मालूमहुआ याकि पेडरूको।क्यादियागया? उ०-मुझकोमालूम नहींनयह जानताहूंकि उसकेपास पुड़ियाहैया नहीं। प्र०—क्यातुम सब एकही काममेंप्रवृतथे अर्थात्‌करनैल फियरसाहबके मारडालनेमें? उ०—हां हमसब शरीकथे। प्र०—तुमने पेडरूसेकिसवास्ते नहींपूछा कि उसने उसपुड़ियाको क्याकिया? उ०—मैं क्योंपूछता वहअपने कामपर होशियारथा मैं अपने कामपर होशियारथा (इससेसम्पूर्ण समाजके अधिष्ठाताहंसे) मैंनेनहीं पूछा। प्र०—इससे मालूम होता है कितुमने पेडरू को छोड़ दियाथा। किजबवह चाहेवह विषदे और जबतुमचाहो तुम जहरदो? उ०—महाराजा साहब को बड़ीजल्दी थी उन्होंने मुझसे और पेडरूसे कहदियाथा कि यहकाम शीघ्र करना प्र०—तुमकोयहबात क्योंकर मालूमहुई? उ०-सालिमऔरयशवन्तरावदोनोताकीदकिया करतेथे। प्र०—पसइससेतुमकोविदितहुवाकिमहाराजासाहबको जल्दीहै? उ०-हां। प्र०—परन्तु तुमसेकह दियागयाथा कि चारमहीने के उपरान्त यहपुड़िया असरकरेगी? उ०—हांमुझसे कहाथाकि दोतीन महीने केबाद असरकरेगी। प्र०—तुमनेकभी पेडरूसे नहीं पूछा कि

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उनकीपुड़िया क्याहुई ? उ०—अभीनहीं पूछा । प्र०—तुमने पेडरूका अपराधी होना कब बयान किया किवहभी करनैल फियरसाहब के मारडालने में तुम्हारा शरीक है ? उ०—मैंने मिस्टरसूटरसाहब केरूबरू उसको मुजरिम कहाया। प्र०—तुमने उसका नाम करनैल फियर साहब के रूबरू नहीं लिया उ०—नहीं। प्र०—क्यों नहीं ? उ०—मुझको भयथा। प्र०—तुमको क्याभयथा ? उ०—जो कोईमनुष्य कोईबात करताहै तो क्याकहनेके वास्ते कियाकरता है। प्र०—यह पुड़िया तुम्हारी पेटोमें भूलसे रहगई ? उ०—हांगल्तीसे रह गईथी प्र०—क्या तुमने दोनों खूराक पुड़ियाकी दीऔर एक गल्ती से रहगई उ०—चार खूराकें थीं तीन दी गईं और एक गल्ती से रह गई प्र०—क्या कारण था कि तुमने इस खूराक को रहने दिया ? उ०—भूल से रहगई। प्र०—इससे तुम्हारा मतलब क्या है कि भूलसे रहगई ? उ०—इससे यह मतलबहै कि मैंने पुड़िया को जेब में रक्खा और रख कर भूल गया कि कहां रक्खी है। प्र०—तुमने वहकाम क्योंन किया जिस वास्ते इन आमदिये जानेका वाइदा हुवा था ? उ०—मुझको भयथाकि साहबको एकाएकी कुछ न होजाय। प्र०—क्या तुमनेइससा-हीमाइलपुड़ियाकी दवा ९ नवम्बर को बिल्कुल डालदीथी ? उ०—थोड़ीडाली थी और बाक़ीको रखलिया था। प्र०—थोड़ी सोजितनी कि तुमनेहमको दिखाईक्या तुम जानते थे किफौरन् उसकी तासीरहोगी ? उ०—मैं जानता था कि एकहीबेर उसकी तासीरन होगी-परन्तु मुझको महाराजा साहबबराबर कहला २ भेजते थे कि जल्दीकरो जल्दीकरो। प्र०—और किसीको मालूमन था कि तुम्हारेपास यह जहर बाक़ी है ? उ०—किसीको मालूम न था तुमने किसी से कहाभी नहीं। उ०—मैने किसीसे नहींकहा। प्र०—पसतुम्हारे साथी जानतेहोंगेकि तुमने इसतमाम पुड़ियाका इस्तमाल किया ? उ० हांवह यहीजानतेथे। प्र०—क्यावह कोई पुलिस का आदमी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

थाजिसने तुम्हारीपिटीमें कठोरवस्तु देखीथी ? उ०—हांप्रथम मुझसे पूछागयाकि तुम्हारीपिटी कहांहै । प्र०—तुमने बताया था कि मेरीपिटीकहांहै जिसमें तुमविष रखतेथे ? उ०—मैने नहीं बताया । प्र०—क्या तुमको ख्यालथा किपिटीमें जहरबाकी है ? उ०—मुझको ख्यालनथा जोयादहोता तो मैंउसको निकालकर फेंकदेता । प्र०—जब तुमने पुड़ियाको देखाकि तो तुमको आश्चर्य्य हुवा ? उ०—हां मुझको अचम्भा हुवा और मैं घबरागयाथा । प्र०—अगर मेरीयादसही है तो तुमने कहा था कि जबतुमसे अकबरअलीने पूछा था कि तुम बहुधा वस्तु अपनीकहां रक्खाकरते हो तो तुमने कहा था किपिटीमें ? उ०—हां मैने यहीकहा था । प्र०—उस समय अकबरअलीने कहाथा किपिटी मंगवादीजावे ? उ०—मुझसे कहाथा किपिटी कहांहै मैनेकहाथा कि बहादुरके पासहै । प्र०—तुमने बहादुरकोपिटी क्योंदी थी ? उ०—मैने नहींदी नवीन रेजीडेंट साहबने दीथी । प्र०—उस मनुष्य को तुम्हारी पेटी कबदी गई थी ? उ०—मेरे रूबरूदीगई थी परन्तु मुझको दिनयाद नहीं है । प्र०—कितने दिनोंके उपरान्त पुलिस को पुड़िया मिली थी ? उ०—बहुत दिनोंके पीछेपरन्तु मुझेख्याल नहींकि कितनेदिनोंकेबाद । प्र०—तुमको कुछभी ख्यालनरहा कियहतुम्हारीपिटी जो दूसरामनुष्य पहिनेहै उसमें एक पुड़िया विषकी है ? उ०—इस पुड़िया को मैं बिल्कुल भूल गया था । प्र० जब करनैल फियर साहब ने तुम्हारे इजहार लिये थे और तुमसे पूछा था कि दुबारह जहर देने का तुम्हारा संदेह किसपरहै और तुमनेकहाथा कि फैजूपरहै क्योंकि फैजूकरनैल फार्टसाहब और करनैलसाहबके जमानेमें चन्दबातोंके निस्बत माखूज हुवाथा ? उ०—हां मैंने अपने प्राणके बचानेके वास्ते उसकानाम लियाथा । प्र०—पहिले तुमने खूनकरना चाहा और फिरएक निर्दोष मनुष्यको माखूज करतेथे ? उ०—यह लोगभी दरबार (अर्थात् महारानासाहब) मेंजाया करतेथे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

यदि उन्होंने विषभी दिया होता तो मुझको किसतरह मालूम होता। प्र०—बहर सूरत तुमने अपने ही प्राण बचाने के वास्ते उसको माखूज़ किया? उ०—जवरजीडरट साहबने मुझसे पूछा तो मैंने उत्तर दिया कि बहुतसे मनुष्य नगर में रहते हैं और यहां आते जाते हैं। प्र०—पस तुमने एक निर्दोष मनुष्यको माखूज़ करना चाहा हालांकि खून करनेका तुमने उद्योग किया था? उ०—चूंकि यहसब लोग नगरमें रहते थे इसलिये उनको मैंने माखूज़ करना चाहाथा। प्र०—साहबने तुमसे यह पूछाथा कि विषदेनेमें तुम्हारा किसपर सन्देह है तुमने उत्तर दिया कि फैज़ूपर? उ०—मैंने कहाथा कि फैज़ू नगरमें रहता है मेरा सन्देह उसपर है। प्र०—क्या तुमने कहाथा कि फैज़ूपर मेरा सन्देह है? उ०—हां। प्र०—यह तो तुम भूलगये कि मैंने विषकी पुड़िया पेटीमें रक्खी है परन्तु इसबातको नहीं भूले कि हमने विषदिया है और अपराध इसका फैज़ूपर लगाया? उ०—हां पुड़िया रखकर भूलगयाथा। प्र०—और फैज़ूको माखूज़ किया? उ०—बहुत आदमी उसका नाम लेते थे उस समयमें चुपहो रहा। प्र०—नहीं नहीं तुम चुप नहीं हुये थे तुमने कहाथा कि फैज़ूपर मेरा सन्देह है? उ०—हां मुझसे पूछागया तो मैंने कहा कि फैज़ू शहरमें रहता है मेरा सन्देह उसपर है। प्र०—अर्थात् मारनेके उद्योगका सन्देह है? उ०—हां मैं केवल पुड़ियोंको जानताथा। प्र०—इससे तुम्हारा क्या मतलब है? उ०—मुझे यह सन्देह था कि जैसी पुड़ियां मुझको और पेडरूको दीगई है वैसी पुड़ियां औरोंको भी दीगई होंगी। प्र०—इसलिये तुमने उनको माखूज़ किया? उ०—हां। प्र०—जब तुम करनैल फियर साहबके रोबरू इजहार लियेजानेके पश्चात् छुटादियेगये तो तुम कहां रहे? उ०—मैं घरमें था और मैंने साहबसे दरखास्त कीथी कि मुझको पट्टा मिलजाय अर्थात् मैं फिर नौकर रक्खा जाऊं। प्र०—क्या तुम फिर नौकर रक्खे गये? उ०—नहीं साहबने कहाथा कि साहबलोग तहकीकात के वास्ते आते हैं तहक़ी-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कात करनेके उपरान्त नैाकर रक्खेनाओगे। प्र०—भावपूना करने तुम्हारे विषय में कहा था? उ०—मैं नहीं जानता कि उसने कुछकहाहो। प्र०—क्या तुमने उससेकहा था कि वह तुम्हारे निस्बत कुछकहे? उ०—मैंअपनेघरमें रहताथा कहींबाहर नहींजाता था। प्र०—क्या तुम्हारी गरज यहहै कि तुम अच्छीतरह जानते थे कि भावपूनाकर तुम्हारे निहै कुछ नहीं कहा? उ०—नहीं प्र०—सावधान होनाओ क्या तुम्हारा यहमतलबहै कि तुमनेभावपूनाकर से कुछबातें नहीं कीं? उ०—नहीं। प्र०—क्यातुम यहकहतेहो कि तुमनेउसको नहींदेखा? उ०—जबवह बंगलेपर आताथा मैंउसको देखता था? प्र०—ज़हरदेने के पहिलेतुमने उसकोदेखा था? उ० जब साहिब रवाना होनेवाले थे उस समय उसको मैंने देखाथा। प्र०—यानिज़हर देने के पीछे? उ०—हां। प्र०—पसमैंखयाल करताहूं किउससे और तुमसे विषदेनेके विषयमें कुछबातेंहुईं? उ०—नहीं २ कुछ बातेंनहींहुईं। प्र०—क्यातुम्हारायहमतलबहै कितुमसे और उससेकभी इसविषयमें बातें नहींहुईं? उ०—मुझको स्मर्णनहीं शायदकभी कीहों। प्र०—मैं तुमकोयाद दिलाताहूं तुमकोयाद होगाकि दरमियानतुम्हारे औरउसके महाराजा साहबके विषयमें बातेंहुईंथीं? उ०—कभीनहीं हुईं। प्र०—क्यातुमने महाराजा साहबके मद्दे उस से कुछबातेंकीं थीं अर्थात्ज़हर देनेकेपश्चात्? उ०—नहींमैंने कभीमहाराजा साहबकेविषय में कोई बातनहीं की। प्र०—क्यातुमसे उसनेनहीं पूछाथा कि महाराजा साहब इसबात को जानतेहैं यानहीं? उ०—उसनेमुझसे नहींपूछा। प्र०—क्यातुम्हारी यहगर्ज़है कि तुमनेकभी उसकेरोबरू महाराजा साहबका नामनहीं लिया? उ०—नहींलिया। प्र०—तुम्हारे इज़हारके पहिले जोकरनैल फियरसाहबने लियेथे तुमनेभावपूनाकरको नहींदेखा? उ०—नहीं। प्र०—जब तुम्हारे इज़हार लियेगये तो भावपूनाकर मौजूदथा? उ०—क्यामिस्टर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सूटरसाहबके सन्मुख। प्र०-हां? उ०-मैंने उसको वहां नहीं देखा और वह वहां न था। प्र०—उससमय तुमने भावपूनाकरको नहीं देखा? उ०—मैंने उसको नहीं देखा। प्र०—पस मैं खयालकरता हूं कि एकलक्षरुपये के लोभसे तुमने अपने स्वामी के मारडालने का इरादा किया? उ०—हां मैं गरीबआदमी था एकलाख रुपये के लोभमें आगया। प्र०—पस गरीबहोने और एक लाखरुपये के लोभसे तुमने मारडालना चाहाथा? उ०—हां मैं गरीब आदमी था लाखरुपये के लोभ से मैंने ऐसाकरना चाहाथा। प्र०—मैं तुमसे फिर प्रश्नकरना चाहताहूं इसवास्ते कि तुमगरीब आदमी थे तुमने द्रव्य के लोभसे मारडालना चाहा जिन दिनोंमें कितुमछूटे हुयेथे महाराजा साहब के पासतुम किस वास्ते नगये? उ०—मैं डरता था इसलिये नहीं गयामुझको इस विषय में वार्त्ताकरने का भय था। प्र०—तुमने साहब की शर्बतमें शुक्रऔर शनिवर को विषनहीं डालाथा? उ०—नहीं मैंने सोमवारके दिन डालाथा उसीरोज उसकीखबर होगई। प्र०—तुमने केवल उसी दिनजहर डाला था? उ०—हां मैंने केवलउसी दिनविष डाला था। प्र०—शुक्र और शनिवार को जिस किसी ने साहबके गिलासमें विषडाला होतो तुमकोउस की खबर नहीं है? उ०—जमादारने शनिश्चरबार को मुझको विषकी पुड़िया दीथी और मुझको कुछ मालूम नहीं। प्र० जबसे किमिस्टर सूटरसाहबने तुम्हारे इजहारलिये तुमनेपुलिसकेआदमियोंका देखाहै? उ०—उससमयसे मैं पहिरेमेंहूं॥

ऐडवकेट जनरलने दुबारह प्रश्न किये॥

प्र०—जबतुम पहिलीबेर महाराजा साहब के निकट गये तो तुमसे महाराजा ने कुछ विषका जिक्र किया था? उ० नहींमुझसे कुछजिक्र नहीं किया। प्र०—उन्होंने तुमसे क्या कहाथा? उ०—उन्होंने केवल इतना कहा कि बंगलेपर जो बातहो उसकीइत्तिला मुझकोकिया करो। प्र०—महाराजा साहबसे विषदेने का जिक्र पहिले कबआया था? उ०—नौ-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सारी से वापिस आनेसे पांच महीने के उपरान्त। प्र०—जिस सोमवारको तुमनेकरनैल फियरसाहब को विषदियाथा और उसजहरका दियाजाना मालूमहोगया और उसकेउपरान्त जोतुमकहतेहो किमैंअपने घरमेंरहा? उ०—हां जिसदिनसे किमुझपर विषदेनेका संदेह पायागया मैं अपनेघरमें रहा? प्र०—यशवन्तराव या सालिम कभीतुम्हारे घर परआयेथे उ० नहीं। प्र०—तुम्हारीमुअत्तली केपीछेभी नहींआये? उ०—नहींमेरे घर कभी नहीं आये। प्र०—बगैर यशवन्तराव और सालिम के तुमकभी महाराजा साहब के पासगये थे? उ० नहीं। प्र०—अपनी मुअत्तलीकेबादतुम अपनेघररहेक्या तुमको अपनेघरपर पहिरा रहिनेका सन्देह था यातुम यह खयाल करतेहो किहुक्काम तुम्हारी कारवाई पर निगरानी करतेहैं उ०—मुझको स्मर्णनहीं मैंअपने घरसे कहीं बाहरनहीं निकला। प्र०—सरजन्ट बेलनटायन साहबने तुमसे उस निशानकी बाबत दरयाफ्त कियाथाजो तुम्हारे पेटपरहै वह चिह्नअबभी है? उ०—हां है। प्र०—तुमने कभीयह निशानकिसी डाक्टरको दिखाया—सरजन्टबेलन टायनसाहबबोले कि निशानभी बहुतसे अच्छीजगहपरहै जहांपर कि शीशीके रखनेका हालयह शख्स बयानकरताहै—ऐडवकेट जनरलने कहाकि ग्रेसाहबमेहरबानी करके आप उस चिह्नको देखें सो डाक्टर ग्रेसाहब गवाहको बाहरलेगये और चिह्नको देखाफिर ऐडवकेट जनरलनेडाक्टर ग्रेसाहबके इज़हारलिये उनसेपूछा कि आपनेइस गवाहको देखाउन्होंनेकहा कि हांदेखा एकइञ्चया आधाइञ्चकेनाभि के निकट तीनचिह्नहै अर्थात्जहां कि पाजामाबान्धा जाताहै वह निशान मिसलतेजाब और गरमलोहे या फोड़ेकेमालूम होतेहैं या जिसतरह फफोलेका चिह्न पड़जाताहै या किसी वस्तुका निशान जिस्से शरीरका चर्मदग्ध होजाताहै फिरसरजन्टबेलन टायनसाहबने प्रश्नकिया कि आपसुनचुकेहैं कि इस गवाह ने क्या इज़हार दिये अर्थात्उसने वर्णन कियाहै कि

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

शीशीके मुखपर रुईलगीथी और रुईमेंसे वहवस्तु निकलकर उसके पेटमें लगगई—क्या आप खयाल करसक्ते हैं कि उसके वर्णनके अनुकूल ऐसे चिह्न पड़गये हैं ? उ०—हां सफेद संखियेसे ऐसे निशान पड़जातेहैं। प्र०—क्या आप ख़याल करतेहैं कि बगैररगड़ने संखियेके खालपर निशान पड़सक्ता है ? उ०—हां जोसंखिया खालसे लगजावे। प्र०—कितनीदेरमें सोनिशमा-लूमहोगी ? उ०—एक घण्टेमें। प्र०—ऐसा चिह्न एकघण्टेमें पड़जावेगा ? उ०—हां। प्र०—क्यावास्तवमें ऐसाही विचारांश है कि यहचिह्न जोगवाहके शरीरपरहै वहइसी तरहसेहोगये हैं ? उ०—हां मुझको यही निश्चयहै अर्थात् जोयह संखिया देहमें लगतातो ऐसाचिह्न पड़जाता। प्र०—चूंकिआप डाक्टर हैं और डाक्टरहोने के कारणआप कमीशनमेंरहे और इसके इज़हार आपनेसुने—सोडाक्टरी विद्याकेबलसे वर्णनकरसक्ते हैं कि इसमनुष्यकी देहपर इसीतरहसे जैसा कि वहकहताहै चिह्न पड़गयेहैं ? उ०—हां। प्र०—मुझको विश्वासहै कि इस गवाहके इज़हारोंपर भलेप्रकार ध्यानकरके आपऐसा बयान करतेहैं ? उ०—हां। प्र०—यदिआप इसमनुष्यके इज़हार न सुनते और आपको रायतलब होती तो आप क्या कहते ? उ०—मैं कहता कि यह चिह्न तेजाब या गरम लोहेके हैं। प्र०—मैंइन मुआमिलोंको नहींजानता परन्तु क्याआप कह-सक्तेहैं कि ऐसेनिशान हिन्दुस्तानियों की देहपर बहुधा होते हैं ? उ०—हांमैंखयाल करसक्ता हूं—इसके उपरान्त ऐडवकेट जनरलने डाक्टरसाहब से प्रश्न किये॥

प्र०—क्या संखिया तेजाबकीखासियत रखताहै ? उ०—हां। प्र०—मैं समझाकि आपकी राय है किजो संखिया घोलकर बोतलमें डालीजाय और वह शरीर से लगेतो ऐसे चिह्नपड़ सक्ते हैं ? उ०—हां पड़सक्ते हैं। प्र०—सररिचर्डमीड साहबने कहा जो तेजाब एक फोड़ेपर लगाया जायातो ऐसानिशान पड़सक्ता है ? उ०—हांपड़सक्ताहै परन्तु फोड़ेकी हालतदेखी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जाय—तिसपीछे रावजी बुलागया—साहब प्रेजीडण्टने उससे प्रश्न किया कि जबतुम सोमवारको संखियेका इस्तैमालकरचुके तो बोतलको क्या किया था ? उ०—मैंने उसबोतलको एकसंदूक के पीछेछिपादिया था । प्र०—किसजगह छिपाकर रक्खाथा ? उ०—जहांकि बरामदेके रूबरूगाड़ियां आकर खड़ीहोती हैं। प्र०—क्या वहां पर शीशी तुमको नहीं मिली ? उ०—पुलिसके लोगों ने आकर ढूंढ़ा था परन्तु उनको शीशी नहीं मिली। प्र०—शीशीकितनी बड़ीथी ? उ०—इतनीबड़ी (गवाहने बताया कि उंगलीके बराबर थी) एडवकेटजनरलने कहाकि अबचार बजगये हैं किसी गवाह के शायद इज़हार न लिये जावेंगे साहबप्रेजीडण्टने कहाकि हां अबफ़जूल है—इसवास्तेकमीशन बरखास्त हुई ॥

नवेंदिनका इजलास ॥

आज बरवक्त इजलासके सम्पूर्ण मेम्बरान् वर्त्तमान थे सर-ल्यूइसपीली साहब दो पहर तक रहे पर श्रीमान् महाराजा मल्हरराव दिनभर मौजूदरहे और श्रीयुत महाराजासेंधिया भी मध्यान्ह के उपरान्त देरतक कमीशन से ग़ैरहाज़िररहे इजलासके आरंभहोतेही साहबएडवकेटजनरलने प्रेजीडण्ट साहबसे पूछाकि माईलार्ड—सुनाहै कि शनिश्चरवार को कमी-शनका इजलास न होगा—क्यायहबात सत्यहै साहबप्रेजीडण्ट नेकहाकि मैंभी इसका तज़करह करनेको था शनिश्चरवारको हिन्दुओंकी तातीलहै इसलिये उसदिन इजलास न होगा ॥

साहबएडवकेटजनरलने कहाकिकेवलशनिवारको—साहब प्रेजीडण्टने कहा—हां—तिसपीछे नरसूराजाना गवाहबुलाया गया ॥

नरसूराजाना गवाह का इज़हार ॥

इस मनुष्यने वर्णनकिया किमैं रजीडन्सी बड़ौदेके चपड़ा-सियों का जमादार हूं मुझको रजीडन्सी में नौकरीकरते हुये

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बत्तीस वा चौंतीस वर्षहुये और सत्रह या अठारह वर्षसे मो-हदेजमादारी परथा मेरामासिक १४) रु० थायही तनख़ाह जमादार की है—दस रुपये मासिक रावजी हवालदार को मिलतेथे मैंनगरमें रहताथा प्रतिदिन भोरको सातया आठ बजे रेजीडन्सीमें अपने कामपर हाज़िरहुवा करता संध्याको सातबजे चलाजाया करता था रेजीडन्सी की कचहरी कभी साढ़ेछ:बजे बरखास्तहोजातीथी तो उससमय मैं घरकोचला आता था—मुझेवह जम.ना याद है जबकि बड़ौदेमें कमीशन का इजलासहुवा था उससमय रावजीनेमुझसे बातकी थी और मुझसे कहाथा कि सालिम और यशवन्त कहते हैंकि तुमकोमहाराजासाहबके निकटजानाचाहिये मैंनेउत्तरदिया किमेरेघरमें बीमारीहै मैं अभीनहींजासक्ता और सिवायइस-केइनदिनों मुझको अपने कार्य्यसे छुट्टी नहीं है जब बड़ौदेसे कमीशन बरख़ास्त हुई तो रावजीऔर सालिमने फिरमुझसे वहांजानेका तक़ाज़ाकिया मैंसालिमको उससमयसे जानता हूं जबकि वहरजीडन्सीमें आयाकरताथा—महाराजखण्डेराव के कालके पीछे मैं यमुनाबाईकी सेवामें रहा उनकेपास से रेजीडन्सीकोलौटआया—करनैलबारसाहबकेजमानेमेंसालिम रेजीडन्सीको आयाकरताथा जबकि यमुनाबाई रजीडन्सी में रहाकरतीथी उसजमानेमें उनकेपास मेरीतैनाती हुईथी मुझको आज्ञाथी किसबतक वहयहांरहें तुमभी उनकेपासरहो जबवह पूनाकोगईं उससमयभी दोमहीनेतकमैं उनकेपासरहा उनदिनों करनैलबार साहब बड़ौदेके रजीडण्ट थे और जब मिस्टरटक्कर साहबआये उन्होंनेभी मुझेयमुनाबाईके पासरक्खा यशवन्तराव जासूसने दोतीनबेर मुझसेकहा कितुम महारा-जा साहबसे मुलाक़ात करो सालिम और रावजीने भीकहा थाकि सोम और वृहस्पतिबार को जबकि महाराजा साहब रजीडन्सीको आयेथेतो सालिम और रावजीमुझसे सदायही कहाकरतेथेअन्तको मैंमहाराजासाहबकी मुलाक़ातके वास्ते

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

राजीहुवा और बरखास्त कमीशनसे बीसपच्चीसरोज के पीछे महाराजासाहबके निकटमैंगया उसदिन रावजीऔर सालिम और एकमनुष्य जोरावजीके साथथा और मैंमहाराजासाहबके पासगये प्रथमहम यशवन्तरावके घरपरआये वहांसे महाराजा साहबके महलको गये सररिचर्डमीड साहबने मुतरज्जिम से पूछाकि ब.डहके क्याअर्थ हैं मुतरज्जिमने कहाकि दरबार—वा हवेलीको कहतेहैं—गवाहने वर्णनकिया किरावजी और एक औरमनुष्य मेरेसाथ गयेथे यशवन्तराव और एकदूसरा मनुष्य दूसरेमार्गसे गयेथे महलके पीछेजो एक बागहै उसमेंहोकर हमलोगमहलमें पहुंचे यहबाग नवीन तैय्यार हुवाहै मैं इस बागकानाम नहींजानता जब हममहलमें पहुंचे तो मैंसीढ़ीपर बैठगया—जब यशवन्तराव महाराजा साहबको अपनेसाथ ल- यावसमय सालिमने हमकोऊपर बुलायाजो मनुष्यरावजी केसाथ गयाथा वहनीचेखड़ारहा जबहम ऊपर गये तोमहा- राजासाहबसे मुलाक़ात हुई—सलामकरके मैं जमीनपर बैठ गया यशवन्तराव और रावजी और महाराजासाहबसे कुछ वार्त्ताहोती रही महाराजा साहबने अप्रसन्न होकर कहा कि इसमनुष्यको तुमक्यों लाये—यहलुच्चा आदमी है रावजी ने कहाकि अब लुचपन न करेगा—महाराजा साहबने कहा कि रेजीडन्सीमें जो खबरेंहुवा करेंवह मुझको भेजाकरो मैंने कहाबहुत अच्छाइस मुलाक़ातमें केवलयही वार्त्ताहुई और कुछनहीं एकमासके पश्चात् अथवा एकमहीने से कुछकममें फिर महाराजा साहब की मुलाक़ात को गया रावजी और सालिममेरे साथगये थे जो मनुष्य सालिम के साथगया था उसकानाम कारभाई था इसमर्त्तबा भी महाराजा साहबसे मुलाक़ातहुई कारभाई को सबने नीचेछोड़ दिया और हम लोग ऊपर गये यहमनुष्य रेजीडन्सीका पंखावाला है हमारी मुलाक़ात महाराजा साहबसे नौ या साढ़े नौबजे रात्रिको हुई—मैं आठया साढ़े आठबजे रेजीडन्सीसे रवानाहुवा क-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

रताथा महाराजा साहबके साथ सालिम और यशवन्तराव हुवा करतेथे जब महाराज नौसारी को गयेतो साहबरेजी-डेण्टके साथभी वहांगया था महाराजा साहबके साथ केवल सालिमथा यशवन्तराव नहींगया—जबनौसारीगयेथे सालिम साहब रेजीडण्ट के हातेमें रहा करता था इसहाते में कई और सवारभी रहा करते थे रावजी ने मुझको नौसारीमें एक बेर पारितोषक दिलवाया था इसका जिक्र महाराजासाहब और सालिमसे पहिलेहोचुका था जबमुझको इनआमदिया तोरावजीने मुझसेकहा थाकि तुमको डेढ़सौरुपया इनआम कामिलाहै मैंने कहाकि मैंइसरुपयेको क्याकरूं यह कहकर सालिम के पासवह रुपया रावजी छोड़आये जबसालिम नौ-सारीसे गयाथा तो रावजीने उसके हाथ यहरुपया मेरेघर भिजवादिया सोसालिमने वहरुपया मेरे भाईको देदियाजब मैं बड़ौदेको आयातो मालूमहुवा किवह रुपया मेरे भाईके पासपहुंचगया—जब महाराजा साहब नौसारीमें थेतो कभी महाराज के सन्मुखमैं अकेला नहीं गयाजब साहब रेजीडण्ट उनकेपास जातेथे तोमैं भी हमराहजाताथा जब महाराजा साहबबड़ौदेको वापिसआयेतो मैंमहीनेडेढ़महीनेकेपीछेउनके सलाम के वास्ते फिरगया और पूर्ववत् यशवन्तरावकेमकान पर हमऔर रावजीगये और वहांसे महाराजासाहबकेपास गये इसबेर महाराजा साहबने कहाकि जोकुछ रवीडन्सीमें हुवाकरे लिखकरहमारेपास भेजदियाकरो रावजीनेकहाबहुत अच्छा जोमनुष्य आयेगा उसकानाम लिखकरआपकेपासभेज दूंगासालिमने महाराजा साहबसे मरहटीभाषामें कहा कि महाराज बिवाहका पारितोषक इसमनुष्यकोनहींमिलामहा-राजासाहबने कहाकि इसका तुम कुछ बन्दोबस्त करदो केवल इतनीही वार्त्ता हुई थी हमको कुछ रुपया उस समय नहीं मिला था परन्तु दस पन्द्रहदिन के अनन्तर आठ सो रुपया सालिम लाया और हमने इस रुपये को परस्पर बांट लिया

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अर्थात् मैंने और सालिम और रावजीने यहरुपयालिया और कुछ जुग्गा पंखेवालेको भी दिया रावजी हरमनुष्य का नाम जोरजीडन्मोमें आया करते थे लिखकर महाराना साहबके भेजनेको मुझे दियाकरता मैं यशवन्तरावके मकानपर जाकर सालिमको देदेता इसीभांति बीसया पचीस परचे महाराजा साहबको गये-सोम और वृहस्पतिवारको यह परचेनहीं भेजे जाते थे क्योंकि दोनों दिनोंमें महाराजा साहब स्वतः आया करतेथे इसरुपयेके मिलनेके एक महीने या सवा महीनेपीछे फिरहम महाराजासाहब के पास सलाम करने के वास्ते गये उसरोज महाराजासाहबसे मुलाक़ात एकछोटे कमरेमें हुई जहांकि बड़े २ शीशेरक्खे हुयेथे वहांकुछ पीतलके वत्तीदान और एक घण्टाभी रक्खा हुवाथा सालिम और यशवन्तराव महाराजासाहबके पासथे महाराजासाहबने सालिम से कुछ बात्ती करके हमलोगोंसे कहाकि साहब मुझसे अतिअप्रसन्न रहतेहैं इसकाकुछ उपायकरना चाहिये महाराना साहबने कहाकि मैं कोई वस्तुदूंगा ऐसाकोई यत्नकरनाकि वहउनके कण्ठ और उदरतक पहुंचजाय मैंने उत्तरदियाकि खानेपीने में तो कुछमेरा इखतियार नहींहै नवह मेरेसम्मुख भोजन करतेहैं रावजी ने कहाकि चकोतरेका शर्बतती पीतेहैं उस में डालदो महाराजासाहबने कहा यदितुमऐसा कामकरोगे तो तुम को धनवान बनादूंगा—नौकरी की तुमको आवश्य-कतानरहेगी यहबात्ती दसपन्द्रहमिनट तकरही मुझको महो ना स्मर्ण नहीं परन्तु इतना कह सक्ता हूंकि अन्तिम विषके उद्योगसे तीनचार महीने पहिले की यहबात है इसबात्तीके उपरान्त सालिमने मुझकोएकपुड़ियादी वहपुड़िया अनुमान एक उंगली के थी यह पुड़िया अहमदाबाद के काग़ज़ की बनी हुईथी जब मैं रेजीडन्सी को लौट आया तो मैने वह पुड़िया रावजी को दे दी उसके चौथे पांचवें दिन सालिम और यशवन्तराव को बंगले पर देखा मुझसे सालिमने पूछा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कि तुमने रावजीको वहपुड़िया देदी मैनेकहा हांदेदी आठ दसदिनके पीछे मैंदसहरेके सलामको महाराजासाहबकेपा-सगया पहिलीरीतिके अनुसार नौबजे यशवन्तरावके मकान परगया और वहांसे रावजी जुग्गाकेसाथ महाराजा साहब केमहलको गया जिसकमरेमें हमेशा मुलाक़ात होतीथी उ-समें महाराजा साहब से मुलाक़ात हुई सालिम और यश-वन्तराव महाराजासाहब के पासबैठेहुये थे जब महाराजा साहबने मुझको देखा तो बुरी २ गालियांदीं और कहा कि तुमलोग लुच्चेहो गालियांदेनेके पीछे महाराजासाहबने हम से कहाकि अबतक तुमलोगोंने कुछनहींकिया मैनेकहा कि रावजीको मालूमहोगा मैंकुछ नहींजानता रावजीनेकहाजो कुछ मेराकामथा मैंकरचुका और वहवस्तु जोमहाराजासा-हबने दीथी अच्छीनहो तोमैंक्याकरूं महाराजासाहबने कहा अच्छा मैंदूसरी पुड़िया भेजूंगा और कहाकि उसको अच्छी तरह डालना—कलकेदिन तुम्हारेपास सालिमके हाथपुड़िया पहुंचेगी—सोउसके दूसरेदिन जबअपने मकानसे मैंनिकलता था तो सालिमने मुझको पुड़ियादी और मैनेउसको लाकर रावजीके हवाले करदिया—यहपुड़िया ९ नवम्बरके पांचसात रोज पहिले दीथी ९ नवम्बर के प्रातःकाल के आठबजे मैंअ-पनेमकानसे आया मैनेरावजीको डेवढ़ीपर बैठाहुआ देखा जो साहबकी कचहरीके निकट है उसदिन भोरको मुझसे और रावजीसे कुछवार्त्ता नहुई थोड़ीदेर के पीछे जब गिलास में विष मालूमहुवा तो गड़बड़ होगई मुझसे रावजीने कहाकि डाक्टरसाहब आयेथे और गिलासजेबमें रखकर लेगये सिवा इसके और कुछबातें रावजीसे नहींहुईं उसकेदूसरे दिन क-रनलफियर साहबने मेरेइजहारलिये मैंअपने ओहदेपरका-क़ायमरहा और फिरसूटरसाहबकी आज्ञानुसारमैं पकड़ागया ९ नवम्बर और जिसदिनतक मैंपकड़ागया रावजीसे कुछबातें नहींहुईं मेरे इजहार के पहिले मुझसे किसीने नहीं कहा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कि रावजीने क्याइज़हारलिया और इज़हारसे पहिले मुझसे मुआफ़ीका वाइदा नहींहुआ जब मेरेइज़हार लियेगये तो सरल्यूइसपीली साहब भी वहांबैठेथे—साहबप्रेजीडण्टनेप्रश्न कियाकि मिस्टरसूटरसाहब और सरल्यूइसपीली साहबने इज़हार लियेजानेके पहिले तुमसे कुछ कहाथा ? उ०—कुछ नहींकहा। वहमेरे इज़हार सुनतेरहे। प्र०—ऐडवकेट जनरल ने कहातुमसे अपराधके क्षमाहोनेका कुछवर्णन हुआथा ? उ० नहीं इसके उपरान्त गवाहने कहाकि जबसे मैं क़ैदहुआहूं कईदिनतक हिन्दुस्तानी सिपाहियोंके पहरेमेंरहा और इस केपीछे गोरोंकेपहिरे हूं मुझेस्मर्णहै किएकदिन मैं रज़ीडन्सी के बागमें गयाथा मैंने वहांनौकरों को देखा मुझे लज्जा आई किइतने समयके पीछे मेरे भाग्यमें लिखाथा किमैं ऐसाकर्म्म करूं और अबक्योंकर अपनामुखदिखाऊं इससेमैं कुयेंमेंगिरपड़ा—रावजीके पेटमें जोनिशानहै उसने ९ नवम्बरके दोदिन पहिले मुझको दिखायाथा वहजगह सूजीहुई फोड़ेके सदृश थी उसने कहाकिमैंने यहीशीशी रक्खी थी उससे मेरी यह गति होगई ॥

सरजन बेलनटायनसाहब के प्रश्न ॥

कितने वर्षोंसे तुम रज़ीडन्सी में नौकर हो ? उ०—बत्तीस अथवा इससे अधिकवर्षका नौकरहूं। प्र०—तुमसे और करनैलफियरसाहब से कभी नाराज़ी नहीं हुई या कोई वजह शिकायतकी तो नहींहुई ? उ०—नहीं मैं करनैलफियरसाहबको अपना मा बाप समझताथा वह मुझको खाने को देते थे—मेरी अभाग्यताथी कि मैंने लोगोंका कहनामानलिया। प्र०—तुम्हारा अभाग्यता हो वा न हो परन्तु द्रव्यकेलोभसे तुम अपने बाप और स्वामीके ज़हरदेनेपर राज़ीहुये ? उ०—मुझ को रावजीने बहकायाथा मेरे भाग्यमें यही लिखाथा। प्र० तुमने यहकर्म्म धनके लोभसे कियाक्यों तुमने कियायानहीं ? उ०—मुझको रुपये कभी नहीं मिले केवल महाराजासाहब

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

के विवाहमें मिलाया। प्र०—इसकाम के वास्ते तुम को क्या मिलने वालाथा? उ०—मुझसे प्रतिज्ञा हुईथी कि मेरे वास्ते कुछ बेहतर होगा। प्र०—तुमको निश्चयथा कि तुम्हारी नौकरीमें तरक्की होगी और तुमको रुपया मिलेगा? उ०—हांयही समझा था। प्र०—पस यहबात समझकर तुम भी मुआमिले में शरीक हुये? उ०—हां। प्र०—परन्तु आज वर्णन करते हो इस बयानके वास्ते तुमको कुछ न मिलेगा? उ०—कुछ नहीं मिलेगा। प्र०—पस मालूम होता है कि तुम रुपया लेकर खून करोगे और दरोग हल्फ़ी न करोगे? उ०—मैं क्या करूं मेरे भाग्यमें यहीथा मेरी कंबख़्ती थी। प्र०—तुम कहते हो कि जो कुछ रजोडन्ह्वीमें होता था रावजी लिख लियाकरते थे और लिखकर महाराजासाहबके भेजनेको हमें दिया करते थे? उ०—हां चिट्ठी लिखकर मैं सालिम को देदिया करता था। प्र०—यहपरचा कागज़का होताथा या कोई किताब होतीथी या और कुछ होताथा? उ०—एकपरचा कागज़का होताथा जो मोहरसे बन्द किया जाता था वही परचा प्रतिदिन भेजाजाता था। प्र०—ऐसा कोई परचा तुम्हारेपास अबनहीं है? उ०—नहीं है। प्र०—तुमको मालूमहै कि उनपरचोंमें से कोई परचा अब कहींहोगा? उ०—यहपरचे सालिमके पासहोंगे या सरकार के पास। प्र०—अबबयानकरोकि तुमसे और महाराज(साहब) से पहिले किसकमरेमें मुलाक़ात हुईथी? उ०—एक छोटा कमराथा और उसमें एक बेंचबिछीहुई थी। प्र०—सबकमरे का हालबयानकरो? उ०—इसकमरेमें दो बड़े २ आईने थे और एकघड़ीथी और जोकिरातिका समयथा कमरेके और असबाबका मैंनेखयाल नहींकिया। प्र०—आयाएकही कमरेमेंतुम सेऔर महाराजासाहबसेभेंट हुईथी या मुख्तलिफ कमरोंमें? उ०—हमेशाएकही कमरेमें मुलाक़ात होती थी। प्र०—उस कमरेमें ग़ुसलखानाभी था? उ०—शायदहो क्योंकि चारोंओर दरवाज़े और कमरेथे। प्र०—पसतुम कहतेहो कि उसकमरे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

के पासकोई गुसलखाना नथा? उ०—हांशायद हो मैं नहींकह सक्ता। प्र०—तुमकहतेहो कि दरवाजे और बहुतसे कमरेथे तुमनेकोई गुसलखाना नहींदेखा? उ०—मैंनेगुसलखाना नहीं देखा। प्र०—दरवाजोंके खयालसे तुमकहतेहो किशायद कोई गुसलखानाहोगा? उ०—हां। प्र०—परन्तु तुमनहीं जानते? उ०—नहीं। प्र०—महाराजा साहबके निकट हालमें भीगये थे? उ०—नहीं। प्र०—करनैलफियर साहबने तुम्हारे इजहार आपलिये वा किसी और मनुष्यसे अपने सन्मुखलिवाये थे? उ०—आपहीलियेथे। प्र०—तुमने करनैलफियर साहबसे प्रतिज्ञाकीथी कि सचकहोगे और सिवासचके औरकुछ न कहोगे? उ०—हां परन्तु मैंने उनसे सत्यनहीं कहा था मेरे इजहार उन्होंने लिखलिये थे। प्र०—तुम्हारादिल उससमय गवाही न देताथा कि तुमको झूठ बोलना न चाहिये? उ०—नहींमैंने उनसे सुख्यवृत्तान्त वर्णन नहीं कियाथा। प्र०—पस इसकोभी तुमकिस्मतपर हवालाकरो कि तुम्हारे भाग्यमेंथा कि करनैल फियरसाहबके साम्हने बहुतसा झूठबोले? उ०—हांमेरे भाग्यमें यहीथा मैं क्याकरूं। प्र०—तुम्हारा क्या मजहब है? उ०—हिंदू। प्र०—मैंइनबातोंको अच्छीतरह नहींजानता क्याऔर झूठबातों मेंसे क्यातुम्हारे भाग्यमें यहभीथा कि तुमफैजू पर दोषलगाओ? उ०—हांमैंने यहीबयान कियाथा। प्र०—तुम जानतेथे कि फैजूनिर्दोष है? उ०—फैजू और एकमुसल्मान आया करतेथे सालिमभी आयाकरता था। प्र०—मैं फिरसुनूं तुमने क्याकहा? उ०—फैज औरसालिम आयाकरते थे और एक पादरी साहबभी बंगलेपर आया करते थे सालिम का नियम था कि फैजूके मकानपर जाकर बैठाकरता था इसी कारण मैंने उसका नामलिया। प्र०—पादरीसाहब को शर्बत में जहरके डालनेसे क्यागर्जथी? उ०—फैजूका मकान रेजीडंसीके अहातेमें था मनुष्यबहुधा उसकेमकान में जाकरबैठा करतेथे। प्र०—क्यातुमने इसीकारण उसपर दोष लगाया?

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उ०—रेज़ीडन्सीके सम्पूर्णनौकरोंने उसका नामलिया था इस-लिये मैंनेभी उसका नामलिखाया। प्र०—केवल इसी कारण तुमने विचार किया कि तुम्हारे इज़हार भी और गवाहों के अनुकूल हैं? उ०—हां। प्र०—तुम जानते थे कि वह बयान तुम्हारा बिल्कुल गलतथा? उ०—हां मैंनेझूठ वर्णन कियाथा। प्र०—मालूम होता है कि तुमने और रावजी ने इसबात का सम्मत कियाथाकि फैजूको भी अपराधी बनावें? उ०—हमने सम्मत नहीं किया। प्र०—तुम जानतेथे कि रावजीने ऐसाही बयानकिया है? उ०—सम्पूर्ण नौकरोंने ऐसाही बयान किया था। प्र०—क्या रावजीसे और तुमसे इज़हार के पहिले कुछ बार्त्ता हुई थी? उ०—नहीं वह मेरे इज़हारके पहिले क़ैद होगयाथा। प्र०—अगर वह दसतारीख़ से पहिले क़ैद नहीं हुआ था तुम को क्योंकर मालूम हुआ कि और नौकरों ने फैज़का नामलिया था? उ०—अब्दुल्ला और पेडरू और एक मुसल्मान मज़दूरने फ़ैज़का नामलियाथा। प्र०—मैं विचारता हूं कि तुम नहीं जानते थे कि रावजी और और नौकरोंने महाराजासाहबको इसी अपराधमें संयुक्तकिया है? उ०—मैं न जानताथा। प्र०—परन्तु हमजानतेहैं कि तुमजानते थे कि रावजीने महाराजासाहबको अपराधमें संयुक्त किया? उ० नहीं। प्र०—मैं समझताहूं कि जोकुछ तुमने आज वर्णनकिया वह सबसचहै और सिवायसचके और तुमने कुछ बयाननहीं किया? उ०—हां आज सिवाय सचके मैंने और कुछ बयान नहीं किया—इसके अनन्तर कमीशनके अधिष्ठाता टिफनखाने खानेके वास्ते उठे टिफनके उपरान्त मेम्बरान् कमीशन फिर समाज में सुशोभित हुये तो सरजन्स बेलन टायन साहब नरसू गवाह से फिर प्रश्न करने लगे। प्र०—तुम से और महाराजा साहबसे सब कै दफे मुलाक़ात हुई? उ०—पांच छः दफा। प्र०—यह तुमको भलेप्रकार स्मर्णहै परन्तु ठीकर बताओ? उ०—शायद पांचबेर हुई होगी। प्र०—मेहरबानी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

करके मेरे प्रश्नका स्पष्ट उत्तर दो मैं शायद नहीं जानता ? उ०—मैं जानता हूं कि पांच दफा। प्र०—हां मैं भी ऐसा ही जानता हूं परन्तु जबप्रथम तीनबेर महाराजा साहब से भेंट हुई थी तो विषका जिक्र आयाथा यानहीं ? उ०—नहीं। प्र०—जब तुम्हारी चौथीबेर महाराजा साहबसे मुलाक़ातहुई थी तो उसदिन कौन२ मनुष्यथा ? उ०—यशवन्तराव और सालिम और महाराजा साहब रावजी और मैंथा। प्र०—इस मुलाक़ात में यह बात ठहरागई थी कि यह पुड़िया तुमको भेजीजावेगी ? उ०—हां। प्र०—अगर यादहोतो महीनाऔर तारीख़बयानकरो ? उ०—मुझको न तारीख़ स्मर्णहै न महीना प्र०—जोमहीना नहीं कहसक्ते तो यहबात बताओ कि विषदिये जानेके कितने पहिले यह बात्ती हुईथी ? उ०—एक पुड़िया २५ दिन पहिले और दूसरी पुडिया सात आठ दिन पहिले। सरजन्टबेलनटायन साहबने मुतरज्जिमसे कहा कि शायद तुम सही२ तर्जुमा नहीं कहते यद्यपि मैं तुम्हारी भाषाको नहीं जानता परन्तुमुझको ऐसा हीमालूम होताहै मुतरज्जिम करसट जीने उत्तरदिया किमेरा अफ्सरमुतरज्जिम मेरी ओरसे उत्तर देताहै उससे पूछिये मैनेतर्ज्जुमा गलत कियाया सही सरजण्ट बेलनटायन साहबने कहा कि गवाहसे पूछो कि जबपहिली बेरविषका वर्णनहुआ तोभलेप्रकार समझाथा कि साहबके जहरदेनेका यहजिक्र है ? उ०—हां। प्र०—क्यापहिली बेर तुम्हारे सन्मुख ऐसावर्णन हुआथा ? उ०—हां। प्र०—तुम्हारे रूबरू पहिलीबेर वहवर्णन हुआ था ? उ०—हां मेरे रूबरू प्रथमबेर यह वर्णन हुआथा शायद रावजी के रूबरू इससे पेश्तरभी हुवा होगा। प्र०—तुम महाराजा साहबकी मुला-क़ातके वास्तेफिर भी गयेथे ? उ०—दसहरेकी छुट्टियोंमें जब कि दूसरीपुड़िया मुझकोमिली थी गयाथा। प्र०—इससेमा-लूमहोता हैकि चौथी मुलाक़ातपर तुमकोएक पुड़ियादीगई और एक पुड़िया पांचवीं मुलाक़ात पर ? उ०—हां साहब।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

प्र०—जब चौथी मुलाक़ात पर तुमको पुड़िया दीगईथी और उससेकुछ फलनहुआ तो तुमको पांचवींमुलाक़ात परपुड़िया दीगई ? उ०—हां महाराजासाहब मुझपर क्रोधितहुये और दूसरीपुड़िया मुझको दी। प्र०—अब तुम मुझसे कहोकि जब अन्तकी बेर करनैलफियर साहब को बिष दिया गया उससे कैदिन पहिले महाराजा साहबसे तुम्हारी मुलाक़ात हुई ? उ०—पांच या सात दिन पहिले परन्तु मुझेभले प्रकार स्मर्ण नहीं। प्र०—तुमनेरावजीसे पूछाथा कितुमको जो चौथीमुलाक़ातमें पुड़ियामिली उसकोतुमने क्या किया ? उ०—हां मैंने पूछाथा क्योंकि सालिम मुझसे रोजपूछा करता था रावजीने मुझसेकहा कि मैने पुड़ियाको डाल दिया मगरकुछ कारगरनहीं हुई इसको मैं क्याकरूं। प्र०—जब तुम्हारे हाकिम को विषदिया जाताथा तो तुमनेकुछ इन्कार किया था ? उ० किसकेरूबरू। प्र०-रावजीसे? उ०-नहीं। प्र०-तुमकहते होकि रावजीने तुमको फोड़ादिखाया था क्याउसने यह फोड़ामहाराजासाहबकी अन्तिमभेंटके पहिलेदिखायाथा वामुलाक़ातके पीछे ? उ०—पहिले या पीछे मुझको स्मर्ण नहीं। प्र०—जो शीशी रावजीको दीगई थी वह तुमने देखी थी ? उ०—एक शीशी सन्दूकके नीचेबंगले में रक्खीहुई देखी थी। प्र०—जब वहदीगई थी तुमनेशीशीको देतेहुये देखा था ? उ०— कुछ दियाथा मैंने भलीभांति नहींदेखा थाकि पुड़ियाथी या शीशीथी मैं आगेथा और रावजी पीछे खड़ा था। प्र०—पुड़िया थी या नहीं ? उ०—मैंनहीं कहसक्ताकि पुड़ियाथी या नहीं यह तुम्हारा बयान अन्तकीबेर का है? उ०—हां। प्र०—तुम ने पूछा थाकि रावजीने उसकोक्या दिया ? उ०—मुझको स्मर्ण नहींकि मैंनेउससे पूछाहो परन्तु मुझको स्मर्णहै कि रावजी नेवहफोड़ा जो उसके उदरपर होगयाथा मुझकोदिखायाथा। प्र०—इसशीशीके सिवायतुमने कोईशीशी औरभी देखीथी ?उ० नहीं। प्र०—तुमसे रावजीने कहाथा कि शीशीका इस्तैमालमैंने

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

किया ? उ॰—यह मुझको याद नहीं कि उसने इस्तैमाल करने का ज़िक्र मुझसे किया या नहीं ॥

ऐडवकेट जनरल ने नरसू के दूसरी बेर इज़हार लिये ॥

प्र॰—तुमने अभी सर जन्ट बेलनटायन साहब से कहा कि शीशी बंगले में संदूक के नीचे रहा करती थी ? उ॰—हां। प्र॰—तुम्हारी गर्ज़ बंगले के कहने से रज़ो इन्मी का मकान है ? उ॰—हां प्र॰—यह शीशी तुमने देखी थी ? उ॰—मैंने खुद देखी थी। प्र॰ तुमको स्मर्ण है कि तुमने वह शीशी पहिली बेर कब देखी थी? उ॰ एक बेर देखी थी भले प्रकार स्मर्ण नहीं कि कब देखी थी। प्र॰ तुमको स्मर्ण है कि किस समय तुमने यह शीशी देखी थी ? उ॰ रावजी ने मुझको शीशी दिखाई थी और कहा था कि इसमें दवा डालकर और पानी में मिलाकर शर्बत में डाली जावेगी। प्र॰ ९ नवम्बर से कितने दिन पहिले तुमको शीशी दिखाई थी? उ॰ मुझको भलीभांति स्मर्ण नहीं। प्र॰—तुम कहते हो कि मुझको स्मर्ण नहीं है कि रावजी और रज़ो इन्मी के नौकरों ने महाराजा साहब पर जुर्म साबित करना चाहा था या नहीं ? उ॰—हां मैं कहता हूं कि मैं नहीं जानता। प्र॰—तुमको मालूम है कि कमीशन के रूबरू किस किस मनुष्य के इज़हार लिये गये ? उ॰—मैं पहिरे में था और आज पहिरे से निकला हूं मुझको किस भांति मालूम होता। प्र॰—तुमसे किसी मनुष्य ने कहा कि किस गवाह के इज़हार हो चुके हैं ? उ॰—नहीं मेरे निकट कोई मनुष्य नहीं आने पाता था दूर से मुझको रोटी फेंकी जाया करती थी (प्रश्न सरदिनकराव का) तुम ३४ वर्ष के नौकर हो कमीशन के बैठने से पहिले भी तुम कभी महाराजा साहब के सम्मुख गये थे उ॰—मैं कभी नहीं गया जब इससे पहिले कमीशन बैठी थी उस समय से मैंने महाराजा साहब के निकट जाना आरम्भ किया (प्रश्न सरदिनकरराव का) तुम खण्डेराव के निकट भी दसहरे के पारितोषक लेने के लिये जाया करते थे? उ॰—नहीं प्र॰—क्या

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

तुमठीक २ वर्णन करतेहो ? उ०—हांठीक २ वर्णन करताहूं उससमयमें पारितोषक देनेका क़ायदा दरबारमें नथा थोड़े से सरदार पारितोषक दियाकरते थे। प्र०—जब महाराजा साहबने तुमको विषदेने के लियेबहकाया था और तुमजानते थे कि यहबात बहुतबुरीहै तो तुमने अपनेपरिवारके लियेकुछ प्रबन्धकरलियाथा ? उ०—मैंमहाराजासाहबकी जबानीप्रतिज्ञा परस्थिररहा। प्र०—तुमजानतेहोकि किसीमनुष्यको विषदेना बड़ा अपराधहैसोमहाराजासाहब दसबारहमनुष्योंके रूबरू क्यों कर ऐसीबार्त्ता करते ? उ०—दसबारह मनुष्यनथे केवलदोही मनुष्य थे अर्थात् मैं और रावजी। प्र०—जितनी संखिया दी गईथी वहकमथी वा अधिकथी और क्यातीनबेर दीगई ? उ० मैंने अपनेआयु भरमें कभीकिसी को संखिया नहींदी मैंनेराव-जीको संखिया देदीथी। प्र०—जब महाराजासाहब से पहिले तुम्हारीभेटहुई थी तो महाराजासाहब ने तुमको लुच्चा कहा था पसलुच्चाकहने परभीतुमको ऐसासुआमला सुपुर्द करते उ०—रावजीने समझादिया थाकि अबलुचपन नकरेगा इसी हेतु यह कार्य्यमुझको सौंपागया। प्र०—तुम हिन्दूहो ? उ० हां प्र०-कौनहिन्दूहो तुम्हारीक्याजातिहै। उ०-तिलंगीकमाती हिंदूहूं। प्र०—तुमको पुलिसका भयहै ? उ०—किस वास्ते। प्र०—सचकहनेके वास्ते ? उ०—सचके कहनेमें क्याभय करना चाहिये। प्र०—तुमको विश्वासहै कितुमअपराधी हो ? उ० मेरीदुर्भाग्यता है कि मेराभीइस बातसे सम्बन्धहै मैंक्या करूं मेरी अभाग्यता। प्र०—यदि सरकार तुम्हारा अपराध क्षमा करेगीतो ईश्वरको वर्त्तमान और साक्षीदेकर सच कहोगे ? उ०—सरकार चाहे क्षमा करे वान करेसरकार मेरी माता पिता है जोचाहेसोकरे। प्रश्न मिस्टरमैलवल साहबका॥ यदिस-रकार तुम्हारा अपराध क्षमा करदेते और भी तुमसच कहो ? उ०—मैं इससमय भी सचकहरहा हूं इससेअधिक और क्या सचकहूंगा। प्रश्न सरदिनकरराबका। भलाजो सरकार तुम्हारा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अपराधक्षमा करदे तोजो कुछबाक़ी रहगयाहो वहभीवर्णन करोगे? उ०—इससे बढ़कर और क्या सचकहूंगा उससमयसे मैं सचकह रहाहूं सरकारमेरी मातापिताहैं चाहेफांसी देदें॥

प्रश्न सरदिनकरराव का—जिसमनुष्यके पासतुमने ३५ वर्ष नौकरीकी तुमनेउसीको विषदेना चाहाजो कुछतुमको और सचकहनाहो ईश्वरको वर्त्तमान समझकर वर्णनकरो? उ० मुझको भयनहींहै मैं सचकहता हूं और परमेश्वर को वर्त्तमान समझता हूं॥

प्रेजीडेण्ट साहबने सुतरज्जिम से कहाकि तुमने गवाहसे यहकहाहैकि तुमईश्वरको वर्त्तमान समझकर सचकहो सुतरज्जिमसाहबने उत्तरदिया हां और गवाहने भीकहाकि ईश्वर कोवर्त्तमान समझकर सचकहता हूं॥

इज़हार जुग्गा भगवान गवाह॥

जुग्गागवाह बुलागया और मिस्टर अनवरारटी साहबने उसके इज़हारलिये उसनेवर्णन कियाकि रजीडन्सीकापंखेवाला हूं मैंरावजी हवालदार और नरसू जमादार को जानताहूं मैं सालिम और यशवन्तराव को भी जानताहूं यशवन्तराव का मकानभी जानताहूं शहरमेंउसकाघरहै रावजीकेसाथ मैंदो तीनबेर गयाथा जबमैं यशवन्तरावके घरगया तो उसकेकारकुन ने मुझको पांचसौरुपये दियेथे सौरुपये मेरेपास रखवाये गये औरचारसौरुपयेरावजीहवालदारलेगयेथेयशवन्तरावकेकारकुनने यहरुपये रावजीको दियेथे पहिलीबेर जबरावजी महाराजासाहबके पासगयेथे इसको चौदह या पन्द्रहमहीने हुये होंगे दूसरीबेर जब मैं रावजीके साथगया तो पहिलीबेर से सातआठ महीनेकेपीछेगयाथा उससमय रातके सात वा आठ बजेहोंगे मैंनेयशवन्तराव और रावजी और सालिम औरनरसू जमादारको वहांदेखाथा जबहमलोग वहांपहुंचेतोमुझकोनीचे छोड़गये और सबलोग ऊपरचलेगयेयहलोग नज़रबाग के मार्गसेगयेथे टोघरटेके पश्चात्यहलोग ऊपरसे उतरेमुझको

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

केवलएकही बेरहुपया मिला (गवाहको एककाग़ज़ दिखाया गया उसनेस्वीकार कियायह मेरालिखाहुआ है गवाहसे कहा गयाकि इसको तुमपढ़ो) गवाहने कहा कि मैंने यह काग़ज़ नरसूजमादार और रावजी इजालदारके कहनेसे लिखाथा जोकुछ वहबतलातेथे मैं लिखाकरताथा- लिखकर कभीतो मैं नरसूको देता और कभी रावजीको ॥

ऐडवकेटजनरलने प्रेजीडण्टसाहबसे कहा कि माईलार्ड यह चिट्ठी गवाहीकी तौरपर मंजूरकी जाय इस शर्त्तपर कि सरजन्टबेलनटायनसाहब स्वीकार करें यह चिट्ठी सालिमके घरसे मिलीथी सरजन्टबेलनटायनसाहबने स्वीकारकिया और साहब प्रेजीडण्टकी आज्ञानुकूल यहचिट्ठी गवाहीमें दाखिल की गई इसचिट्ठीपर हर्फ़ (एक्स) का चिन्ह दियागया ॥

मिस्टर अनवरारटीसाहबने नीचेलिखीहुई चिट्ठीका तर्ज्जु-मा पढ़ा ॥

आज भावपूनाकर आया और उसनेसाहबसे वर्णनकिया कि महाराजने एक नई जोरूकीहै उसका नाम गङ्गाबाई है उसका पिताधोबीथा महाराजने आज्ञादी है कि सातहजार रुपया नजरानामहलमोहालसे उसकोदियेजावें और वह मनु-ष्यनालिशकरने को आये हैं परन्तु किसीने उनकीनालिश न सुनी—दूसरे-बापूसाहब गायकवार आयेथे साहबने पूछाकि तुम कैसे हो उन्होंने कहाकि साहबके आशीर्वाद से अच्छा हूं—तिसपीछे साहबने पूछाकि तुमअपने कार्य्यकेलिये दादा भाई और शिवदीन (शायदशहाबुद्दीन) के पासजातेहो—बापू साहबने सुनकर उत्तरदिया मेरे जाने की उनके पास क्या आवश्यकताथी—जबतक आपवर्त्तमान हैं मैं किसी को कुछ नहीं समझता यहलोग नीति औप्रबन्धसे अज्ञानहैं वहलोग परस्पर बैठ २ कर मशवरह कर लिया करते हैं ॥

तीसरे भावपूनाकरने साहबसेकहा कि तोपोंका शब्दसुन करलोगअति प्रसन्नहुये और परस्परएकत्रहोकर कहने लगे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

किकोई बड़ासाहबआया है और खुशहुये कि अबहमारीदाद फरयादसुनी जायगी—साहबने कहाकियह जनरलसाहब हैं जो अहमदाबाद से पलटनके अवलोकन के लिये आये हैं॥

चौथे—रखमाबाईके भाई ने अरजीदी है कि मेरी बहिन मुझको मिले—साहब उससे अतिअप्रसन्न हुये॥

पांचवें—मैं कल आऊंगा और अपने साथ कमासणी को लाऊंगा सालिमको भेजदीजिये॥

दो चिट्ठी और भी उस गवाहको दिखाईगईं उसने कहा कि मैं इनको नहीं जानता न मेरीलिखीहुईहैं सरजन्टबेलन-टायनसाहबने कहाकि मुझको इसगवाहसे कुछसवालकरना नहीं है॥

साहब ऐडवकेट जनरलने कहाकि मैंने कुछ कागज़ दर-बारह करनैलसाहब के मंगवा ने का वाइदा कियाथा और गवर्नमेण्टको तारबर्क़ी भेजीथी परन्तु उनकागज़ों के आनेमें किसी प्रकार की दिक्कतहै—शायदगवर्नमेण्टके दफ्तरसे वह कागज़ न मिले—सरजन्टबेलनाटायन साहबने कहा कि मैंने आपपर जाहिरकर दिया है कि मैं कोई ऐसी बातपेश नहीं करनाचाहता जिससे बदमजगीहो मैं उसकागज़की नक़ल दूंगा अगर करनैलफियरसाहब उसको पढ़कर कहें कि यह नकलसही हैतो काफीहोगा—दुबारहकरनैलफियर साहबके इज़हार की ज़रूरत न होगी—साहबप्रेज़ीडण्ट ने कहा कि यह बात बहुत मुनासिबहै—जबकि करनैल फियरसाहब उस को देखकर मानलें तो वही नकल कमीशन के अधिष्ठाताओं को देदी जावे॥

कारभाई अमानसिंह गवाहके इज़हार॥

कारभाई अमानसिंह बुलायागया और ऐडवकेट जनर-लने उसके इज़हार लिये उसनेवर्णनकिया कि मैं पंखेवाला हूं पिछले वर्ष पंखेवालोंमें नौकरनथा परइसीवर्ष में नौकर हुआहूं चपड़ासियोंके हवालदारको मैंजानताहूं मैं रात्रिके

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

समय कईबेर नगरको उसकेसाथगया था मुझे ऐसा स्मर्ण है कि पांचछ: बेरमें नगरमें गयाहूं परन्तु यह स्मर्ण नहीं कि कितने दिनबीते—जबवह महाराजाके पासजाता तोप्रथमयशवन्तरावके मकानपर जाया करता मैं नहीं कहसक्ता कि कै मरतबे महाराजासाहबके पासउनके साथगया जबवह लोग महाराजा साहबके पासऊपरके मकान को जातेतो मुझको नीचेछोड़जाते थे ॥

साहबप्रेजीडण्टनेपूछा कि कौन२ मनुष्यतुम्हारे साथजाया करतेथे—गवाहनेकहा कि रावजी—सालिम—नरसूजमादार और यशवन्तराव—जायाकरतेथे ॥

सरजनूबेलन टायनसाहबके प्रश्न ॥

रजीडन्सीमें कितने दिनतक तुमपंखेवालोंमें नौकररहे ? उ०—अन्तकीबेर पन्द्रहबीस दिननौकररहा परन्तु मैंपहिलेभी नौकर रहचुकाहूं। प्र०—मेरा मतलब यहहै कि तुम कितने दिनोंतक पंखेवालेरहे ? उ०—मैंदोबेर रहाएकबेर एकमहीने और दूसरीबेर पन्द्रह या बीसरोजतक। प्र०—पहिलीबेर तुम किसकोकहतेहो ? उ०—जबपंखे चलनेशुरूहुयेथे। प्र०—कोई तारीखबताओ कबचलना शुरूहुयेथे ? उ०—होलीकी छुट्टियों केपीछे। प्र०—आखीर होलीकी छुट्टियोंकेपीछे ? उ०—हां। प्र०—तुमकहतेहो कि मैंएक महीने तक नौकररहा ? उ० हां। प्र०—दूसरीबेर कबनौकरहुये ? उ०—जबपंखेका मौसम पूर्णहोने वालाथा। प्र०—नौकर होनेसे पहिले रावजी और नरसूको जानतेथे ? उ०—हांमैं जानताथा। प्र०—तुमसौगन्द खासक्तेहो ? उ०—हां। प्र०—नौकरीसे पहिलेभी उनकोजानतेथे ? उ०—हां—परन्तु जबनौकर हुवाउनको जियादहजानने लगा। प्र०—तुमनेमिस्टर सूटरसाहबके रूबरूबयान कियाथा कि तुमकभी सीढ़ीके नीचे ठहरतेथे और कभीजीनेके ऊपर जातेथे क्यायहबात ठीकहै ? उ०—हांठीकहै। प्र०—तुमकबसे हवालातमें हो ? उ०—ढाई महीने हुये। प्र०—किसहेतु से

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

तुमहवालातमेंहो ? उ०—गवाहीदेनेके लिये । प्र०—तुमनेसच कहाइसलिये तुमक़ैदकियेगये ? उ०—हां । प्र०—तुमखानसाहब कीहिरासतमें कैरोजरहे ? उ०—तीन दिन—इसके उपरान्त सूटर साहबके पास रहा । प्र०—जोकुछ तुमने वर्णन किया उसको कबूल कराते हुयेतीन दिन खानसाहबकोलगे ? उ० उन्होंने मुझसे एकरोज कुछभी नहींकहा । प्र०—तुम्हारेसाथ जुग्गाभी रहताथा ? उ०—मैने उसको नहींदेखा मैंअकेला रहाकरता था । प्र०—तुमने जुग्गाका बयान सुनकर अपना इज़हारदियाथा ? उ०—नहीं । प्र०—क्या जुग्गाभी क़ैदथा ? उ०—हां ॥

सवालात जो साहबऐडवकेट जनरलने किये ॥

प्र०—पहिले दिनतुमसे किसीने कुछनहींपूछा और तुमको तुम्हारेघर जानेदिया ? उ०—मुझसेसंध्याके समयपूछागयाथा परन्तुघर जानेकी आज्ञाहोगईथी । प्र०—दूसरेदिनभी तुमसे कुछपूछा गयाथा ? उ०—मुझसे कुछ नहीं पूछागया । प्र० तीसरे दिन तुमने मिस्टर सूटर साहबके सन्मुखकुछ इज़हार दियाथा ? उ०—हां । प्र०—उसीसमय से तुम पहिरे मेंहो उ०—नहींदूसरे दिनसे । प्र०—उसवक्तसे तुम बराबर पहिरे मेंहो ? उ०—हां जबसे कि महाराजा साहब पकड़े गये हैं उसके दूसरेदिनसे ॥

इसकेअनन्तर साहब ऐडवकेटजनरलने कहा कि अबचार बजगयेहैं साहब प्रेज़ीडेण्टने कहा कि अबअदालत कलजमा होगी ॥

दसवें दिनका इजलास ॥

आजकेदिन नियमानुकूल कमीशनके अधिष्ठाता ११ बजेके समयआये—परन्तु श्रीयुत महाराजा सेंधिया और मल्हरराव न आयेसरल्यूइसपीलीसाहब मध्यान्हसे पहिलेआयेथे परन्तु मध्यान्हके पश्चात्नहींआये इज़हार दानीवानरोत्तम गवाह

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

के आरम्भ हुये उसके इजहार मिस्टर अनवरारटीसाहबने लिये उसनेवर्णन किया कि मैं कुम्हारहूं रंजोडजीके रावजी हवालदारको जानताहूं—दिवालीसे पहिले उसनेमुझसे कुछ जेवर केबनवानेके वास्तेकहाथा सोमैंने उसकेसाथ जाकरशिवलाल सुनारका मकान बता दिया—नीचे विस्तृत आभूषण बनवाये गये थे ॥

एकजोड़ी पाओंके कड़ोंकी—एक कण्ठी—एकजोड़ी कंगन, टोस्वर्णके छल्ले जिनका वजनएकतोला—एककरधनी लड़केकी, एकजोड़ी कड़ेकी लड़कीके पांउकी—कातिकके महीने सेइस आभूषणके बननेका प्रारम्भहुआथाजो २ वस्तुतय्यार होतीगई रावजीको मिलती गई—अदालतमें जोपेशहै सुनार का असबाबहै ॥

साहब प्रेजीडण्टने सरजन्बेलन टायन साहबसे पूछा कि आपको इसहिसाबके दाखिल होनेमें कुछइन्कारहै उन्होंने उत्तरदिया कि नहीं परन्तु सुनारइस हिसाबकी तसदीक के वास्ते बुलायाजाय ॥

सरजनबेलन टायनसाहबके प्रश्न ॥

प्र०—क्याकारणहै कि रावजीने यहआभूषण तुम्हारेद्वारा बनवाया? उ०—मैं नगरके भीतर रहता था और रावजीने मुझसे पूछाकितुम किसी सुनार को जानतेहो मैंने कहाहां जानताहूं। प्र०—यहसुनारकहांरहता है? उ०—सड़कपर पीपलके वृक्षके नीचेरहताहै। प्र०—क्याउस जगह रावजीभी रहताहै? उ०—नहींवह शहरमें नहींरहता है॥

इजहार शिवलाल वतिल ॥

शिवलाल वतिलबुलायागया औरऐडवकेट जनरलनेउसके इजहार लियेउसने कहाकि मैं सुनारहूं मेरामकान गणपत राव महादेवके मकान के निकट है अर्थात् उस सड़कपरजो नगरके बाहरहैमैं कम्पूमें नहीं रहता हूं मैंउजीबा नरोत्तम को जानताहूं उससेमेरी जान पहिचानहै उसने कुछ जेवर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

किसीशख्स के वास्ते बनवाया था जिसके वास्ते यह आभूषण बनाथा एकपट्टे वालाहै रावजी उसकानामहै वहसाहब के पासरेज़ीडन्सी मेंनौकर था मेराहिसाब वहीसे मालूम होगा किमैंने क्या२ उसका जेवर बनायाहैयह मेरीही हिसाबवही हैजो रक्खीहै लिखना पढ़नामें नहीं जानता दूसरे मनुष्य से लिखवालिया करता था॥

प्रश्नऐडवकेट जनरलका-तुमजोलिखनापढ़ना नहीं जानते तोतुम अपनेसब हिसाब जबानीयाद रखतेहोगे गवाहनेबयान कियाकि मैं यहहिसाब नहींपढ़सक्ता आपहीपढ़िये याकिसी औरसे पढ़वाइये औरकहाकि देवालीसे पहिले रावजीनेएक जोड़ीपांवके कड़ेकी एककंठी एकजोड़ी कंगन और कई वस्तु बनवाईथी जोजो वस्तुबनीथीरावजीके पासभेजदेताथा मुझको स्मर्णनहींकि देवालीके दसपन्द्रहदिनपहिले यहजेवरबनगया था बादेवालीके उपरान्त तकबनाजो जेवर कि इससमय यहां वर्त्तमानहै उसमेंएक जंजीरसोनेकी नहींहै जोमैंने बनाईथी तीनसौया चारसौ पचहत्तर रुपयेका जेवर बनायाथा मुझको जबानी यादनहीं हिसाबमेंलिखाहै मुझको सबरुपया मजदूरी समेत मिलगया—सरजन्ट बेलनटायन साहबनेकहाकि मुझको इस गवाहसे कुछ नहीं पूछना है॥

इजहार दुल्ल मन्नू दाप॥

इसमनुष्यके इजहार मिस्टरअनवराटी साहबनेलिये उसने वर्णनकिया किमैं सुनारहूं औररावजी कोजानताहूं मैं और रावजी एकहीबाजारमेंरहतेथे मैंनेरावजीकेवास्तेचार चीजें बनाईथीं उनकानाम कुरतीहै वहकानमें पहिनेजातेहैं और इसजेवर को जंजीरेंभी बनाईथीं इसकेविशेषकुछजंजीरेंऔर भीकानोंके वास्तेबनाई थीं जितनारुपया मैंने रावजीसे पाया उसका हिसाब मेरेनिकटहै यहबहीजो रक्खीहै मेरे हिसाब कीहै। प्र०—देखोग्यारहवीं अषाढ़ सुदीमें क्यालिखाहै?उ० जब ग्यारहवीं आषाढ सुदी तिथिलिखी है कहीं सम्वत् नहीं

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

लिखा—शायद १९३० सम्बत होगा-इसमें कुछरक़मे लिखी हैं जिसका जोड़ ११॥) है इसके सिवाय औरभी कई रक़में नीचे लिखी हैं—आषाढ़बदी सप्तमीमें २०) फिर २०) लिखे हैं आषाढ़ बदी नवमीको २०) फिर ६०) सोनेकी जञ्जीरोंके वास्ते दिये गयेथे दसवींतारीख़को ८) रु० और दियेगये मैंनेसब ७९॥) रु० पायेथे सोमैंने रावजी के वास्ते दोछल्ले--दोबाले दो कानोंकी जंजीरेंबनाई थीं—सरजन्टबेलनटायन साहबने कहा कि इस गवाह से मुझको कुछसवाल नहीं करनाहै ॥

दलपतगोबिन्दराम का इज़हार ॥

दलपतगोबिन्दराम बुलायागया और ऐडवकेटजनरलने उस के इज़हारलिये उसने कहा कि मैं यशवन्तराव को जानता हूं वहगायकवारका नौकरहै मैं उसकेपास सवातीन वर्षसे नौकरथा सन्दूक आदिकी कुञ्जियां मेरे निकटरहाकरतीथीं जोकुछ वह कहताथा मैं कियाकरताथा मैं उसकाकारकुन था मैं जुग्गा और रावजी को पहिचानता हूं यदि वह मेरे सम्मुखआवें तोमै शीघ्रही पहिचानलूंगा सो अदालतनेउनको बुलाया—गवाहने कहाकि यशवन्तरावको मैंने एकमर्त्तबा या बारह या चौदहमहीने हुयेथे देखा था उससमय देखाथाकि रात्रि के समय आठबजे मेरे मकानपर दोनों आये थे और पांचसौ रुपया सिक्का।बड़ौदेके यशवन्तरावकी आज्ञाके अनुसार रावजी और जुग्गाको दियेथे उससमय यशवन्तराव मकान के ऊपरथे—सरजन्टबेलनटायनसाहबने कहाकि मुझको इस गवाहसे कोई सवालनहीं करनाहै ॥

छगनलालदामोदर दासगवाह का इज़हार ॥

इस मनुष्य के इज़हार मिस्टर अनवरारटी साहबने लिये उसनेवर्णन कियाकि मैं इज़राफौजदारी बड़ौदेका नौकरहूं मैं सालिमको जानताहूं वह गायकवारका नौकरहै जिसदिन गायकवारके पुलिसका गार्ड उसके मकानपर नियतहुआथा शायद तारीख़ २३ दिसम्बर थी दिनमुझको यादनहीं गार्ड

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

के नियतहोने से एकदिन पहिले उसके मकानपर हुरमुजजी अरदासियर बदयाके साथमैंगया यह हुजूर फौजदारहैं और मकानकी तलाशीलेने के वास्ते गयेथे बम्बईके पुलिसका एक हवालदारभी साथथा इसबातके कहनेपर मीरइमाम अली-हवालदार अदालतमें बुलायेगये गवाहने कहा यही मनुष्य उसदिन हमारेसाथगयाथा—हजूर फौजदार गायकवार की सरकार में नौकर थे जब सालिम के घरकी तलाशी लीगई तो एकरूमालमें कुछ कागज बन्धेहुये मिले उनकागजों को हजूरफौजदार अपनेमकान पर लेगये और उनको बन्दकरके मोहरलगादी और उसपर एकटिकटलगाकर लिखदियाकि यहकागज सालिमके मकानसे निकलेगवाह को एकरूमाल दिखाकर पूछागयाकिवह रूमालयहीथा गवाहनेकहाकिमैं अच्छीतरह नहींकहसक्ता कि यहीथा तिसपीछे फिर उससे कहागया कितुमभले प्रकारध्यान सेदेखो कियही रूमाल है नबगवाहने ग़ौरसे देखातो कहाकि हां वह रूमाल यहीहै सरजन्ट बेलनटायन साहबने कहा किमुझको इस गवाह से कोई सवाल नहीं करना है ॥

इज़हार मीर इमाम अली गवाह ॥

मीरइमाम अलीके इज़हार मिस्टर अनवरारटी साहबने लियेउसने बयान किया किमैं बम्बईके पुलिसका हवालदार हूंजब हरमुजजी अरदासियर बद्यासालिमके मकानमें तला-शीके वास्तेगये थेमैं उनके साथ था मेरे रूबरू एकपुलिन्दा कागजोंका मिलाथा इसपुलिन्दे पर उससमय मोहरकरदी गई थी और साहबके दिखाने वास्ते एकपहिरेके साथलाया थायह पुलिन्दा सालिम और मुन्नेभाई के रूबरू खोलागया था जबतक यहपुलिन्दा नहींखोलागया वहपुलिसके पहिरे मेंथा सरजन्ट बेलनटायन साहबने कहाकि इस गवाहसे मैं कुछ न पूछूंगा ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

इजहार मुन्नीभाई जसभाई॥

मुन्नीभाई जसभाईजो रेजीडन्सीकेएक हिन्दुस्तानी असि-स्टण्टहैं बुलाये गये और मिस्टर अनवरारटी साहब ने उनके इजहारलिये उन्होनेवर्णन कियाकि २९ नवम्बर को जब कि इलाम अलीकाग़ज़ोंका एक पुलिन्दालायाथा मैं मौजूद था इसपुलिन्दे के स्थान २ पर बड़ौदे की फौजदारी के अदालत की मुहरेंलगीहुईथीं और एकटिकट चिपकाथा उसमेंलिखा था कि यह काग़ज़ सालिम के मकान से निकले जिससमय पुलिन्दा खोलागया मैं और सालिमवहींथे मैंने इनकाग़ज़ों की कोईसूचीनहीं बनाई उसमेंसे जितने काग़ज़ निकालकर अलग रक्खेगये उनकी मैंने फेहरिस्त बनाईथी जो काग़ज़कि इसवक्त कमीशनमें पेशहै और जिसपर (ऐक्स) अक्षरकाचिह्नहै उसीपुलिन्देमेंका है उसकीपीठपर मेरेदस्तखतहैं औरजितने पुलिन्देसे काग़ज़निकालेगयेसबपरमेरेदस्तखतहैं ऐडवकेटजन-रलने कहा माईलार्ड-मैं चाहताहूं कि यहकाग़जात पढ़ेजावें सरजन्टबेलनटायन साहबनेकहा कि किसवास्ते पढ़ेजावेंऔर क्या वजह उनके पढ़ेजानेकी है-ऐडवकेट जनरल ने कहा कि यह काग़ज़ उसीतरह पढ़ेजावें और अदालतमें दाखिलकिये जायें जिसतरह कि वहकाग़ज़दाखिलहैं जिसपर कि (ऐक्स) अक्षरका चिन्हहै इनसे विदित होताहैकि महाराजा साहब और रज़ीडन्सीके नौकरोंमें खतकिताबतथी साहब प्रेज़ीडण्टने ऐडवकेटजनरलसे कहाकिआपनेयहप्रतीत कियाकिजिस का-ग़ज़पर(ऐक्स)अक्षर का चिह्न है उसका लिखने वाला कौनहै परन्तुयह आपनेसाबित नहींकियाकि इनचिट्ठियोंका लिखने वालाकौनहै ऐडवकेटजनरलने कहामैं हुजूरके रूबरूयहबात विनयकरताहूं कियह चिट्ठियां गवाहीकी तौरपर दाखिलहो सक्तीहैं क्योंकि सालिमरावजी और नरसूबराबर चिट्ठियांलिखा करतेथे और इसबातका इक़रार किया किमंगल और बृह-स्पतिवार के सिवाय बराबर हम चिट्ठियां भेजा करते थे यदि

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सरजन्टवेलनटायन साहब इस बातका विचारकरते हैं कियह चिट्ठियांवासवमें उनलोगोंकी लिखीहुई नहीं है किन्तु छल पत्र हैं तो इसबातके सूचित करनेकेलिये फिर उपायकिया जावेगा सरजन्टवेलनटायनसाहबनेकहा मेरा उज्र बहुतसा नं०२ है प्रथम साबितकरना चाहिये कियह चिट्ठियां उनकी इजाजतसे लिखी गईं और किसमनुष्यने लिखीं जबतक इसबात की तसदीकन होगी किसकानूनकी रूसे यह चिट्ठियां शहादत में दाखिल करसक्ते हैं ऐडवकेट जनरलने कहामेरे विचारसे यह चिट्ठियां शहादतमेंदाखिलहोसक्तीहैंसाहबप्रेजीडेण्टनेकहाआपने अच्छेप्रकारसाबितनहींकियाकियहचिट्ठियांशहादतमेंदाखिलक रनेकेकाबिलहैऐडवकेटजनरलनेकहा पसमालूमहुवाकिहुजूर के विचारसे यहचिट्ठियां शहादतमें दाखिलकरने के काबिल नहींहैं साहब प्रेजीडेण्टने कहाहां मेरीराययही है ऐडवकेट जनरलने कहा आपअपनी याददाश्त में लिखलीजिये साहब प्रेजीडेण्ट नेकहा इसको अपनी याददाश्त में लिखलूंगा परंतु आपजानते हैं कि इस कमीशनकी अपीलनहीं है आपको यह-कहनानचाहियेथा किमैंअपनी याददाश्तमें लिखूंऐडवकेटज नरलनेकहा मैंनेकेवल आपसे इसीप्रयोजनसे अर्जकी थी कि मेरीयह गुफ्तगू लिखलेनी चाहिये साहबप्रेजीडण्ट ने कहा आपकोमुझसेऐसी दरखास्त करना न चाहिये ऐडवकेट जनर लने कहा जो आपकी रायहो॥

इज़हार भोदरनरसी।

भोदरनरसी बुलायागया और मिस्टरअनवरारटी साहबने उसके इजहारलिये उसने बयानकिया कि पहिले मैं पट्टेवाला था परन्तु अबमैं रेजीडन्सीका जमादारहूं पिछले महीने में मेरीतरक्कीहुईहै १५ दिसम्बरकोरावजी कापट्टा मुझकोमिस्टर बलैनफोर्ड साहब ने जो रेजीडन्सी के एक एसिस्टन्ट थे दिया २५ दिसम्बर तक मेरेपास वहपट्टारहा यहपट्टा मैं प्रतिसमय अपने निकटरखतायापरन्तुजब नहानेको जाता तो उसेडेवढ़ी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

में रक्खाजाता था खानसाहबने देखनेके वास्ते मुझसे पट्टामांगा था तथाच मैंने उनकेहवाले किया कमीशनमें जोपट्टा रक्खाहै वहीपट्टाहै इसमेंएकजेब है बल्कि उसे जेबनकहा चाहिये उस में तलवार लटकाई जातीहै मैंइसपट्टेकी जेबसे वाक़िफ़ नहीं हूं सरजन्टबेलन टायनसाहबने उससे कुछप्रश्न न किये॥

इजहार अकबर अली॥

खानबहादुर अकबरअलीके इज़हार मिस्टरअनवरारटीसाहबनेलिये उन्होने वर्णनकिया किमैं बम्बईकी डकैटिव(सुरागरसां) पुलिसका अफ़सरहूं मैंसूटर साहबके साथइस मुकद्दमे कीतहक़ीक़ातके वास्तेआयाथा मैंनेयह पेटी २५ दिसम्बरको देखीथी मुझकोउसमें एकपुड़िया मिली और प्रथममें रावजी सेमैंने पूछाथाकिजो पुड़िया गायकवारके पाससेलायेथे उनको कहांरक्खा करतेथे उसनेमुझसे कहाकिमैं पेटीकीजेब में रक्खाकरताथा मैंने उससे पूछाकि तुम्हारापट्टा कहांहैउसने कहाकि भोदर के पास है उस समय हमचार मनुष्य मौजूद थे खानबहादुर अब्दुलअली रावबहादुर गजानन्द वतिल और रावजी और जिसस्थान पर मिस्टर सूटर साहब ठहरा करते हैंहम भी उसी जगह अर्थात् रेजीडन्सी के बंगले में ठहरा करते थे जब रावजी का पट्टा भोदर से मंगवाया भोदर उसकोलेकर आयाऔर उसनेअपने गलेसे उतारकर मुझको दियासरजण्ट बेलनटायनसाहबने कहाकि मैंनेनहीं देखाकि यहलोग क्योंकर पट्टापहिनतेहैं यदिगवाहपहिनकर दिखाये तोदेखूं सोगवाहने पट्टापहिन करदिखाया और बयानकिया किपट्टे वालेइस प्रकारसे पहिनतेहैंजबमैंने भोदरसे पट्टामांगा उसने मुझको उतार कर इस भांति दिया मैंने उसको इधर उधरदेखाऔर एक मुकाम पर उसको रावजीने कहा कि मैं पुड़ियोंको उसी जेबमें रक्खाकरताथा जब हरएक जगह पर देखाती मेरी अंगुली एक जगह परचलीगई टटोलनेसे कोई कठोरसीवस्तु मालूम हुईउस समयमैंनेमिस्टर सूटरसाहबको

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बुलाया उस पट्टेकी एकजेबमें एक मैला कपड़ाथा भोदरने उसकोअपना कपड़ा बताया और एकजेबमें थोड़ासूत थाजब मिस्टरसूटरसाहब आयेउनके सम्मुखपुड़िया निकालीगई इस पुड़िया में आटे की भांति कोई सफैद वस्तु थी मिस्टरसूटर साहबने उसको खोल करदेखा औरवह अपने साथ लेगये॥

सरजन् बेलन टायन साहबके प्रश्न॥

प्र०—तुमअंगरेजी बोलसक्ते हो ? उ०—मैंनहीं बोलसक्ता क्योंकिमैं अंगरेजी नहींजानता। प्र०—सौगन्द खाकर वर्णन करतेहोकि तुमकभी अंगरेजी नहींबोलते ? उ०—जबकिअंगरेजीभाषा नहींजानताती किसतरहबोलसक्ताहूं साहबने जो उन्होंने कहासीधासाधा जवाबदोकितुमअंगरेजी बिल्कुल् नहीं बोलसक्ते ? उ०-नहीं मैं कुछभीअंगरेजी नहीं बोलसक्ता हूं। प्र०—सरजन् बेलनटायन साहब (पेटी उठा कर) बोले इसी पाकिट में तुम कहते होकि पुड़िया मिली थी ? उ०—हां। प्र०—जबतुम्हारे पासअव्वल पेटीआई थीतो कहतेहो कियह जेबफटी हुई नथी ? उ०—नहीं। प्र०—दिखाओ कि यहजेब तुमनेकहांसे फाड़ीथी ? उ०—गवाहने पेटीको उठाकर दिखायाकि उसजगहसे परन्तु यह नहीं कहसक्ता कि कितनी फाड़ीथी। प्र०—मैं यह बातपूछता हूं कि तुमनेजेब कोकिस लियेकाटा था ? उ०—मैंने देखाथा किकोई कठोर वस्तुरक्खी है मैंदेखना चाहताथा कि इसमेंक्या वस्तुहै। प्र०—परन्तुतुम कहतेहो कि मैंने सूटरसाहबको बुलालिया था ? उ०—हां बाददेखने जेबके। प्र०—परन्तुजब तुमने देखा कि जेबमें एक पुड़ियाहै तो मिस्टरसूटरसाहबके बुलाने की क्या आवश्यकता थी और पेटीके फाड़नेके पीछे सूटरसाहब को तुमने क्यों नहीं बुलाया ? उ०—मुझको भलीभांति पुड़िया के होनेका निश्चय नथा। प्र०—परन्तु तुमजानते थेकि कोई वस्तुहै क्योंकि उसमुकाम पर तुम्हारी उंगलियां थी ? उ०—हां जानता था कि कोईकठोर वस्तु है परन्तु पुड़िया के होने का विश्वास न था

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

प्र०-जबतुमने जेबफाड़कर पुड़ियाकोनिकाला यातो उसवक्त भी तुम्हारी जानकारी वैसीही थी जैसी कि पहिलेथी ? उ० नहीं उससमय मालूमहोगया था किपुड़ियाहै पहिलेके निस्बत मेरी जानकारी बढ़गईथी। प्र०—सूटर साहब के बुलाने कोक्या अवश्यकता थी जोबुलाना मंजूरथा तोपहिले भलीभांतिमालूम करलेनाचाहिये था ? उ०—मैंने सूटरसाहबको केवलइस प्रयोजनसे बुलायाथाताकि उसको देखेंकि कोईदवाहै वाक्यावस्तुहै । प्र०—क्यायहबात तुमनहीं जानतेथे कि मिस्टर सूटरसाहब बखूबीनिश्चय करलेंगे और तुम्हारे बयानपर उनकोकुछ शक नहोगा ? उ०—रावजीने मुझसेपहिले कहदिया था। प्र०—हां मैंजानताहूं किरावजीने तुमसेकहदिया था परन्तुयह पूछताहूं किजबतुमने पेटीकोफारडाला औरतुम्हारी उंगलियां उसजगहथीं जहांसे किपुड़ियानिकलीतो फिरक्या वजहथी कितुमने पुड़िया न निकाली और मिस्टरसूटरसाहब के आनेका इन्तिजारकिया ? उ०—रावजीने मुझसेकहाथा किउनपुड़ियों मेंसे जोमुझेमिलीथीं किसीकदर दवाबाक़ीहै। प्र०—मेरेप्रश्नका उत्तरदीजिये कितुमने मिस्टरसूटरसाहबको पुड़ियानिकालने के पहिले किसवास्ते बुलाया ? उ०—हां मैंनेपुड़िया नहींनिकाली बल्कि मिस्टरसूटरसाहबके आनेका इन्तिजारकिया। प्र०—शायद आपकीयहगर्जहै किजब तुमने उसपुड़ियाको टटोला तोरावजीनेतुमसेकुछकहा ?उ०—नहीं जबमैंने पुड़ियाको टटोलातो मैं और रावजी एकहीजगहबैठे थे। प्र०-उससमय तुमने मिस्टरसूटरसाहबकोबुलाया? उ०-हां प्र०—अबतक तुमनेमेरे प्रश्नकाउत्तर नहींदिया अर्थात् तुमने सूटरसाहबको क्योंबुलायाथा ?उ०—इस वास्तेबुलायाथा कि वह अपने हाथ से जेबको खोलें। प्र०—क्या यह मतलब था किजब पुड़ियानिकले मिस्टरसूटरसाहब मौजूदहों ? उ–हां प्र०—तुम्हारीयह गर्जथीकि जिसवक्त पुड़िया निकले तो कोई मनुष्य गवाहकी तौरपरमौजूदहो ? उ०—हां चूंकि हमारा ब-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ड़ाअफ़सर वहांमौजूद्था इसलिये मैंने उनकोबुलालिया अगर नहोतेतोकुछआवश्यकतानथी। प्र०-प्रसतुम्हारीयहीगरज़ थी और गवाहहोनेकी किसीकी ज़रूरत नथी ? उ०-यदिमुझको गवाहकी आवश्यकता होतीतो तीनमनुष्य उससमयमौजूदथे। प्र०-वह कौन २ मनुष्य थे ? उ०-रावजी। प्र०-परन्तुतुम जानतेहोकि रावजी मुअ़ाजिज़ गवाह नथा ? उ०-खानबहादुर अब्दुलअली रावबहादुर गजानन्दवतिल और मैंखुदथा। प्र०-तुमको पुड़िया मिलनेका कुछखयाल नथा ? उ०-नहीं मुझको केवल इतनाही खयालथा कि इस पेटीसे और कुछपतालगे। प्र०-जबतुमको पुड़ियामिली होगी तोबड़ाआश्चर्य्य ऊवाहोगा ? उ०-हांजब रावजीने उसका होना पेटीमें बयानकिया था। प्र०-रावजीने उसवक्त जबकि तुमको पुड़ियामिली कुछबयान नहींकिया? उ०-मुझे उससमयतक पुड़ियामें किसीचीजके होनेका खयाल नथा। प्र०-तुमकोकुछ भीखयाल था कि इसपेटीमें कागज़की पुड़ियामिलेगी ? उ० मुझकोकुछसन्देह नथा परन्तुपेटीमें कोई कठोरवस्तु विदित ऊईथी। प्र०-जेबके फाड़नेबिना तुमकोमालूमहोगया किजेबमें कागज़की पुड़ियाहै? उ०-उससमयतकमुझकोमालूम नहींहोताथा कियहकागजकीपुड़ियाहै। प्र०-बऊतसे मनुष्य कहतेहैं कि तुमबड़ेचतुरहो क्यातुमको मालूमनहींहोताथा किकागज़ कीपुड़ियाहै वानहीं? उ०-जबमैंने जेबमेंसख़्तचीज़ देखीतो मुझको नहींमालूमहोताथा किउसमेंक्यावस्तुहै। प्र०क्या तुमयहभी नहींजानतेथे कियहकागज़है ? उ०-मुझकोकागज़सामालूम ऊआथा। प्र०-क्यातुमको यह मालूमनहीं होसक्ताथा कि किसीवस्तु पर कागज़ लिपटा है ? उ०-नहींयह नहीं मालूम होताथा कि काग़ज़मेंकोई वस्तु बन्द है। प्र०-क्या तुमइतनाही उसवक्त जानतेथे कि केवलकाग़ज़ का टुकड़ा है ? उ०-मुझकोमालूम नहीं ऊआकि केवलकागज़ है या कागज़किसी वस्तु पर लिपटाऊवाहै। प्र०-याकोई पुड़िया समझी इस वास्ते तुम

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ने मालूमकरने के लिये जेबको फाड़डाला ? उ०—हां। प्र० तुमनेजेबके फाड़नेके पश्चात् रावजी को बुलाया ? उ०—हांजब रावजी वर्णन करचुका था। प्र०—लेकिन देखोतुमने जेबको फाड़ा और पुड़ियानिकाली क्यातुम्हारी यहगरजहै किराव-जीने उसवक्त तुमसे कुछबयान कियाथा ? उ०—हां उसवक्त बयानकिया था। प्र०—रावजीने उसवक्त तुमसे क्याकहाथा ? उ-०रावजीने मुझसेकहा कि उनपुड़ियोंमेंसे जो मुझकोमिली थीं कुछ दवा बाक़ी रहगई थी यह दवाभी उसी मेंसेहै। प्र० सूटरसाहबके आनेकेपहिले तुमनेपूछलियाथा कि इसपुड़िया मेंक्याहै ? उ०—हां जोनपूछता तो किसतरहजेबको फाड़ता। प्र०—यदि तुमरावजी से नसुनते तो जेबको नफाड़ते परन्तु मैं जानताहूं कितुमने मिस्टरसूटर साहबको इसवास्ते बुलायाथा ताकिवहदेखें और दरयाफ़्तकरें कि इसजेबमें क्या वस्तु है या तुमखुदरावजीके बयानसे जानतेथे ?उ०—हां।प्र० तुमको राव-जीकी बातपरइतना निश्चयथाकि बगैर पुड़ियाके निकाले सूटर साहबको बुलायाकि वहखुद आकरदेखेंकि जेबमें क्याहै ? उ० हां मैंनेजेबको नहींफाड़ा क्योंकिहमारे साहबनिकट थे। प्र० अब बताओ कि रावजीने तुमसेकहा था कि मैंने एकपुड़िया अपनी पेटीमें छोड़दी है या तुमने अपनी केवल बुद्धिसेमालूम कियाथा ? उ०—रावजी ने केवल इतनाही कहा था कि मैं जेबमें पुड़िया रक्खा करताथा गवाहने रुककर फिरकहा कि मैने रावजीसे पूछाथा कि तुम्हारीपेटी में जेबहै वानहीं। प्र० तुमनेरावजी से यह बातकभी नहीं कही कि मैंने कुछ हिस्सा विषका रहनेदिया है और एक पुड़िया विषकी पेटीं में है ? उ०—यह बात उसने मुझसे नहीं कही। प्र०—रावजी तुम्हारी हिरासतमें कबआया ? उ०—२२ तारीखको आया था। प्र० रावजी को तुम्हारे निकट किसनेभेजा था। ? उ०—मैने आपही उसको बुलाया था मैंने खानबहादुर अब्दुल अली, और राव बहादुर, गजानन्द वतिल, को भेजाथा। प्र०—उसको कौनला-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

या ? उ०—एकसिपाही लायाथा ? प्र०—क्या उसने पहिलीमें ही विषदेनेका इक़बालकिया ? उ०—पहिलीबेर उसने इक़बाल नहीं किया। प्र०—मैं ऐसाही खयाल करता हूं ? उ० खान बहादुर अब्दुलअली और गजानन्द वितलसे उसनेकुछ कहाथा। प्र०—उसरोज़के आनेके पहिले तुम्हारेपास कितनी देरवह हिरासत में रहा ? उ०—भोरके आठ बाजेसे संध्याके सातबजे पर्य्यन्त। प्र०—वहतुम्हारीरक्षा मेंरहा ? उ०—नहीं। प्र०—तुमने उस क़ीमती चीज़को कहां छिपाया था ? उ०—जहां और मौक़ूफ हुये हुये नौकरथे। प्र०—वहकहां थे ? उ०—रज़ीडन्सीके बागमें अहातेके भीतर रहते थे। प्र०—जब वह तुम्हारे निकटआया तो उसने विषदेने का इक़बालकिया ? उ०—हां। प्र०—यही बात ठीक है और कुछबातों की कोईवतिदा तुमसेहै औरतुमको भीइसबातकी इत्तिलानथी ? उ०—रज़ीडन्सीके नौकर परस्परझगड़ा करतेथे उनकेझगड़ने में यहबात मालूमहुई। प्र०—मेरेप्रश्न का यह उत्तर नहीं मैं यहपूछताहूं कि तुमकोइसबातकी पहिलेसेखबरथीया नहीं ? उ०—उसने मेरे रूबरूअपने आप इक़रारकिया। प्र०—उसके इक़रारकरनेके पहिले तुमनेकोईबात किसीसे ऐसी नहींसुनी थी जिससे वह अपराधी होता मिस्टर अकबरअली सावधान होकरबयान करो ? उ०—नहीं मैंने कोईबात ऐसी नहींसुनी थीं केवल इतनाही सुनाथा कि वह रुपया खूब उड़ा रहाहै। प्र०—तुम सौगन्द खासक्तेहो कि तुमने कुछ नहीं सुनाथा ? उ०—किसबात कीकसम खाऊं। प्र०—इस बातकी कि वहभी विषदेनेमें शरीक है ? उ०—मैंने किसीसेनहीं सुनाथा किवह विषदेनेमें संयुक्त है। प्र०—तुमने किसीसे यहभी नहीं सुना था कि उसको विषकी पुड़ियांमिली थीं ? उ०—नहीं। प्र० एकबात भी तुमनेनहीं सुनी ? उ०—नहीं। प्र०—तुमने यहभी नहीं सुनाथा कि उसको विषकी पुड़ियां मिली जबकि उसने तुमसे बयान किया अर्थात् उस जगह जहां वह हिरासत

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मेंथा ? उ०—जब उसनेमुझसे बयानकिया तोमैं उसकेनिकट गयाथा इससेपहिले नहींगया। प्र०—इसके उपरान्तभी वह और नौकरोंके साथक़ैदरहा ? उ०—नहीं दूसरेकमरेमें क़ैद रहा। प्र०—तुम कहतेहो कि उसने २२ तारीखको बयान किया ? उ०—हां। प्र०—तुम सौगन्द खासक्ते हो जिसरोजसे कि उसने विषदेनेका इकरारकिया और वहनौकरोंसे अलग रक्खागया ? उ०—२२-तारीख से २८ तारीखतक वह मेरे चार्जमेंथा। प्र०—मैंने तुमसे यहप्रश्न नहींकिया क्यातुमसौगन्दखासक्ते हो२८-तारीखके पीछेयहशख्स औरऔर रज़ीडन्सी केनौकरोंसे अलगरक्खागया और सबसेअलगरहा ? उ०—हां वहफिर अपने घरको नहीं गया। प्र०—मिस्टर अकबरअली मैंने कभी पहिले हिन्दुस्तानी पुलिस के आदमियों से प्रश्न नहींकिये हैं इङ्गिस्तानमें वकुथा इत्तिफाक हुआहै मेरे प्रश्न का उत्तर दो क्या तुम कसमखासक्ते हो कि २२-तारीखके पीछे जब उसने तुम्हारे सम्मुख इज़हार दिये थे उससमयसे रज़ीडन्सीके और नौकरों के पास नहीं गया यहप्रश्न स्पष्टहै इसका उत्तरदो ? उ०—यहमनुष्य रज़ीडन्सीके और नौकरों के निकट नहींगया किन्तु वहमेरे चार्ज में था। प्र०—तुम सौगन्धखासक्ते होकि उसदिन उससेऔर दूसरे किसीरज़ीडन्सीके नौकरसे बातें नहीं हुईं ? उ०—मैंनहींकह सक्ताकि उससे किसीकी बातेंहुईं यानहीं परन्तुमेरी आज्ञासे उसपर सिपाहियोंका पहिरानियत कियागयाथा। प्र०—शायद इस सूरतमें और नौकरोंसे बातेंकीहैं ? उ०—मैंनहीं जानतामैं क्योंकरकहूं। प्र०—शायद उसनेकीहैं ? उ०—मुझको ऐसे खयालकरने कीकोई वजहनहीं है। प्र०—हमकोऐसे खयाल करनेकी कोईवजह नहीहै कि उसनेबातें कीहों ? उ०—मेरी आज्ञाथी कियहशख्स किसीसे बात्तीकरने नपाये। प्र०—तुम सौगन्द खासक्तेहो कि तुमने ऐसीआज्ञादीथी किवह किसी से वात्तीन करनेपावें ? उ०—हांमैने आज्ञादीथी कियहकैदी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

किसीसेबातें नकरें परन्तुयहां गवाहरक्खा और कहा कि एक बातहुईथी। प्र०—वहक्या बातथी ? उ०—इसमनुष्य से और जमादारसे मुकाबिला कराया गया। प्र०—किसने इस मनुष्य को लाकरसामना कराया ? उ०—मैंने और रावबहादुर गजानन्दवतिल और खानबहादुर और अब्दुलअलीनेएकसिपाही को आज्ञादीथी किरावजीको लेआओ। प्र०—जमादारसे उस समयक्या कहाथा ? उ०—उससमय वहअब्दुलअली और गजानन्दवतिल मेरेपास उपस्थितथे। प्र०—जबसिपाही रावजीको लाया तो तुमने जमादारका मुक्काबिला कराया यह मुकाबिला किसतरह कराया था मैं सुनाचाहता हूं ? उ०—रावबहादुर गजानन्दवतिल और खानबहादुर अब्दुलअली ने जमादारसे कहा कि रावजीने सबबातोंका इकबालकिया इसवास्ते मैंने रावजीको बलायाहै। प्र०—तुमने जमादारसे प्रथम यहकहा कि तुमलोगोंसे रावजीने इकबाल करलिया है ? उ०—हां। प्र०—परन्तु यहभी तुमनेउससे कहाथा कि क्याकबूल किया है ? उ०—नहीं। प्र०—उससमय तुमने रावजीको बुलाया ? उ०—रावबहादुरगजानन्दवतिल औरखानबहादुर और अब्दुलअलीने कहाथा कि अगरतुमकहोतो रावजीको बुलायाजाय जमादारने कहा कि अगर चाहो बुलालो। प्र०—उससमय रावजीको तुमनेबुलवाया ? उ०—हां। प्र०—रावजी अपनेमकानपरमिलाथा ? उ०—अपनेमकान परनहीं किन्तुजहांहमारे आदमीथे। प्र०—उसको तुम्हारेनिकट लाये ? उ०—हांलाये। प्र०—जबउनदोनों का सम्हनाहुआ तो क्यावार्त्ताहुई ? उ० रावजीने कहाकि ऐबाबा मैंने गलेगलेपानीमें कबूल करलिया प्र०—उसके पीछे जमादारने भी कबूलकिया ? उ०—हांउस समय उसनेकहा कि अबठीक २ हालतुमको बतादूंगा ? प्र० क्याउसने उससंध्याको सबबातोंका इकबालकिया ? उ०—मुझ से नहींकहा। प्र०—किसमनुष्य से इकबालकिया ? उ०—मैंने उससेकहा कि मेरेसन्मुख तुमकुछ बयानमतकरो साहबकेपास

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

चले। प्र०—उसने कोईबात भी तुमसेकहीथी ? उ०—नहीं। प्र०—मुझको बताओ कि तुम्हारी हिरासतमें इसजुर्म्के मद्दे कितने मनुष्यकैद हैं ? उ०—मेरेपास गवाहहैं कैदीनहीं हैं। प्र० अर्थात् तुम्हारेनिकट ऐसेगवाहहैं कि उनको कभी आनेजाने नहींदेतेहो ? उ०—हांऐसेही गवाहहैं कि वहकहींचलेनजायें ताकि उनके मिलनेमें दिक्कतनहो। प्र०—वह कितनेहैं अर्थात् कितनेगवाह और कितनेकैदीहैं ? उ०—मेरेनिकट कोई कैदी नहींहै। प्र०—कितनेगवाह हैं ? उ०-बीस या बाईसहोंगे उनके नामकी मेरेपास फेहरिस्तहै आपदेखेंगे। प्र०—मैंदेखना नहीं चाहता क्या तुम एकमनुष्यको जानतेहो जिसकानाम नूरुद्दीन बौहरा है ? उ०-हां। प्र०—नसीरुद्दीन बोहराकोजानतेहो ? उ०—हां। प्र०—यहदोनों कैदहैं ? उ०—मेरेपास कैदनहींहैं वह जेलखानेमें कैदहै। प्र०—क्यादोनों जेलखाने में हैं ? उ० हां। प्र०—तुम्हारे चार्जमेंहैं ? उ०-मेरेचार्जमें क्योंकर होस-क्ते हैं वहजेलखानेमें हैं। प्र०—कभी तुम्हारे चार्जमें वह थे ? उ०—वह खानबहादुर अब्दुलअली और राव बहादुर गजानन्द-वतिलके चार्जमेंथे। प्र०—उनकोहिरासतमें कौनलायाथा ? उ०—जिनदो आदमियोंका नाम मैंने अभीलिया। प्र०—क्या यह लोगभी और गवाहोंके साथ रहतेथे ? उ०—हां परन्तु दूसरी कोठड़ी मेंथे। प्र०—यहलोग जेलखानेमें कबगयेथे ? उ०—खान बहादुर अब्दुलअली जानते हैं आपसेबयान करेंगे उनकीयाददाश्तमें तारीख आदिलिखीहैं। प्र०—लेकिनमुझसे तुमकहो कि वहलोग कबजेलखानेमें गये थे ? उ०—१५ या बीसदिनहुये। प्र०—वहलोग कबतक गवाहोंके साथजेलखाने मेंरहे ? उ०—वहलोग गवाहोंसे अलगरहतेथे। प्र०—कितने दिनतक वह जेलखाने मेंरहे ? उ०-खानबहादुर अब्दुलअली दोनोंकी संख्या जानतेहैं। प्र०—कभीसाहब मजिस्ट्रेटके रूबरू वहगयेथे ? उ०—मैंनहीं जानता। प्र०—तुम जानते हो कि मिस्टरसूटर साहब या और किसी हाकिमके सम्मुखगयेथे ?

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उ०—मेरे रूबरू कमीनहींगये। प्र०—तुमने कभी सुनाथा कि वहगयेथे? उ०—जो मैं सुनता तो आपसे बर्णन करता। प्र० उनकोगवाही लेनेको आजमाइश करतेथे और जबवह कुछ बयान नहीं करतेथे तो उनको फिरतुम जेलखानेमें भेजदिया करतेथे? उ०—उनको शहादतका हाल रावबहादुर गजानन्दवतिल को मालूम होगा। प्र०—मिस्टर अकबरअली क्या आप भलेप्रकार नहींजानते कि इनलोगों के रूबरू कोशिश कीगई और हालपूछागया औरपूछते २ थकगयेतोआपनेउनको जेलखानेमें भेजदिया? उ०—मुझको याद करनेदीजिये (गवाह चुपहुवाऔर गौरकरनेलगा) प्र०—आपको स्मर्णहोगा उ०—दामोदरपन्थने नूरूद्दीनके पिताका नाम लियाथा। प्र० मैं दामोदरपन्थका सब हाल जानताहूं परन्तु आपसे पूछताहूंकि क्याआपके चार्जमें गवाहथे और जबआपकोउनगवाहोंसे कुछहालमालूमनहुवा तो आपने उनको जेलखानेभेजदिया उ०—हां मुझको यादआया जेलखाने में उनके भेजनेका यह कारणथा कि सखियेके मुकद्दमेका उनसे कुछ तअल्लुकथा। प्र०—आपको यादआगया? उ०—दामोदरपन्थने कहाथाकि मैने एकबौहरीकीदूकानसेविषमोल लियाथा। प्र०-दामोदरपन्थके बयानपर इनदोनों शख्सोंके इज़हार लियेगयेथे? उ० मैनेबौहरोंके इज़हार लियेथे। प्र०—मैंपूछताहूं कि पुलिसने उनकेइज़हार लियेथे? उ०—हांलियेथे। प्र०—क्यावहतुम्हारीहिरासतमेंथे? उ०—हांपरन्तु दूसरेखेमेमें उसपर सरजन्वेलनटायनसाहबनेकहा कि दूसरीक्यावस्तु-सुतरज्जिम नेउच्च शब्दसे कहा किथेमा—सरजन्वेलनटायन साहबने कहा कि क्रोध मतकरो—सुतरज्जिमनेकहा मैंतो स्पष्टरीतिसे कहताहूं परन्तु आपनहीं सुनतेहैं क्रोधनहीं करताहूं। प्र०—क्यातुमने कोशिशकी किदामोदरपन्थके इज़हारकी तसदीकहो? उ० यहबड़ामुआमलाहैइसकीतहकीकात अबहोगी। प्र०—आप मेहरबानी करके इसबातको यादरक्खें कि बड़ामुआमला अब

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

दरपेशहै और उसकीतहक़ीक़ातहोरहीहै मेरेप्रश्नका उत्तर दो? उ०—यहएकबातहैवह दूसरीबातथी। प्र०—मिस्टरअक-बरअली मेरेप्रश्नका उत्तर दो कि कभी कोशिश की गईथी कि यहदोनोंशख्स दामोदरपन्थ्यके इज़हारकी सिदाक़त करें? उ० हांहुईथी और होरही है। (इस परसमाजमें हंसी उड़ी) प्र० अर्थात् तुम्हारायहमतलबहै कि वहजोलेख।ने भेजदियेगये? उ० हां इज़हार उनकेलियेजांयगे॥

ऐडवकेट जनरल के प्रश्न॥

प्र०—तुमकहतेहो कि तुमनेपेटीकोफाड़डाला था? उ०—हां प्र०—इससेपहिलेवह सिलीहुईथी? उ०—हांसिली हुई थी। प्र० तुमनेउसकी सिलाई खोल डाली? उ०—हां। प्र०—तुम कहतेहो किजब तुमनेपुड़ियापाईतो मिस्टरसूटरसाहब करीब थे बतलाओ कि किस जगह थे? उ०—वहां से दसकदम पर थे। प्र०—किसी कमरे में या और किसी स्थान पर? उ० दूसरे कमरेमेंथे बिलकुल बीच मेंपड़ी हुई थी। प्र०—रेजी डन्सीके मकानमें? उ०—मिस्टर सूटरसाहबने मुझसे कहाथा कि तुमठहरो वहहाथ धोने के वास्तेगये थे। प्र०—जब तुमने सूटरसाहबको बुलाया तो वहशीघ्रही आयेथे? उ०—हां जल्दी आ गये थे। प्र०—पेटी का तज़करह प्रथम तुमने रावजी से किया था वा रावजीने तुमसेकहा? उ०—मैंनेपहिले रावजी सेकहाथा। प्र०—तुमने प्रथम रावजीसे कब तज़करह किया उ०—जबरावजी ने मुझसे कहा कि मेरा वह नियम था कि विषकी पुड़ियांपट्टे के जेबमेंरक्खा करता था उस समय कहा था। प्र०—क्या तुमनेउसी समय उस पट्टे को मंगाया? उ० हां। प्र०—भाऊदरके आनेकेपहिले यहपट्टा कभी तुम्हारेक़ब्ज़े में रहाथा? उ०—मैंने उस पट्टे को देखा नहीं था और न भाऊदरसे कभी भेंटहुई थी। प्र०—जबतुमने पट्टेमें वह पुड़िया पाई तो तुमनेसूटर साहबको बुलाना उचित समझा? उ० हां क्योंकिवह बड़ेअफ़सर हैं। प्र०—तुम कहते हो रावजी मेरे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

निटक २२ तारीखको आयाथा ? उ०—हां। प्र०—वहकिस समय तुम्हारे निकट आया था ? उ०—सुबह के ८ बजे या ९ बजे मेरे पास आयाथा। प्र०—जबवह तुम्हारे निकट आयाथा तुमने उससे कुछ प्रश्नकियेथे ? उ०—हां। प्र०—क्याइसी वास्ते रावजीको तुमने बुलायाथा ? उ०—हां। प्र०—तुमने रावजी को किसलिये बुलायाथा बयानकरो ? उ०—मुझको और साहब को उसपर बड़ासंदेह था। प्र०—किस सबब से तुमको उसपर संदेहथा ? उ०—मुझको चारों ओरसे खबर मिली किरावजी ने बहुतसा रुपया खर्चकिया और अन्तको बेर उस कमरे में जहां कि शर्बतरक्खाथा यही मनुष्यआया था। प्र०—तुमकहते हो कि सुबहकेवक्त तुमनेउससे कुछप्रश्नकिये थे परउसने कुछ उत्तरनहीं दिया ? उ०—उसवक्त नहींदिया। प्र०—तुमनेप्रातः कालसे संध्यापर्य्यन्त फिरभीकभी देखाथा ? उ०—हां। प्र० तुमने उससेवार्त्ताकी थी ? उ०—नहींवार्त्ता करनेका समयनथा प्र०—उसदिन नरसू पकड़ा नहींगया ? उ०—नहीं उस दिन वहकामपर था। प्र०—किसकार्य्य पर ? उ०—बंगलेकी जमादारीपर। प्र०—क्या नरसू रावजीके साथ और नौकरों समेत हिरासतमें था ? उ०—नरसू मेरी हिरासत में न था। प्र० क्यावह उननौकरों के साथथा जो हिरासतमें थे ? उ०—नहीं प्र०—२२तारीखको कौन२मनुष्य तुम्हारीहिरासतमें था ? उ० मेरीहिरासतमें कोई मनुष्यनथा केवल तहकीकातके लियेमेरे पास लोगआये थे। प्र०—वहरसूरत वहलोग आपके पासथे ? उ०—फैजू और जुम्माजहां कैदथे उसजगहसे मेरेपास आये थे। प्र०—और कौनमनुष्य आयाथा ? उ०—रामःबरीकजिसको करनेलफियर साहबने कैदकियाथा। प्र०—तुमकहते हो कि रावजी तुम्हारी हिरासतमें २२ दिसम्बर से २८ दिसम्बर तक रहा ? उ०—हां प्र०—सिवाय उस दिनके जब कि तुमने रावजी और नरसूकामुकाबिला करायाथा औरभी उनदोनों में कभीवार्त्ता हुई उ०—बातोंके करनेकी आज्ञानथी केवल

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

२४तारीख़ को उनमेंबातें हुईं थीं। प्र०—रावजीनेसिवायइस बातकेकि बाबामैनेगलेगले पानीसें कबूलकरदिया है और भी कुछ जमादार से कहाथा उ०—नहीं। प्र०—या किसी और मनुष्यने भी जमादारसे कहदियाथा कि रावजीनेक्याकहा? उ०-नहीं। प्र०-२२दिसम्बरसे किसमुकामपरबड़ौदेमें कैदथा? उ०—जहांहमलोगरहतेहैं। प्र०--वहस्थानकहांहै? उ०—उस मैदानमेंहमरहतेथे औररेजीडन्सी केनिकटहै। प्र०--रेजीडन्सी केअहातेमें? उ०—नहींअहाते केनिकट। प्र०—तुमनेउसकोकिस तरहरक्खा? उ०-थोड़ेदिनतकअखोरगवाहकेसाथ और चन्द-रोजतक अलगरक्खा एक२ पुलिसके सिपाहीके पासकई २ गवाहथे। प्र०—फिरवहांसे तुमलोग कहांगये? उ०—करनैल फिड़रस हबके बंगलेकेपीछेगये। प्र०—तुमयहांसेकबगयेथे? उ० मुहर्रमकीदूसरीया तीसरीतारीख़को। प्र०—उससमयसेराव जी तुम्हारे निकटहै? उ०—हां। प्र०—नरसूकहां रहा? उ० हिन्दुस्तानी पलटनके गार्डमें और थोड़े दिनगोरोंके पहिरे मेंरहा। प्र०—उसकोकिस स्थानपररक्खाथा? उ०-जिसस्थान पररेजीडन्सीमें गोरोंका पहिरारहताहै। प्र०—नरसू तुम्हारे चार्जमें कभीरहा? उ०—नहींइजहार देनेके लिये वह मेरे निकट आयाकरताथा। प्र०—तुम्हारे चार्जमें कभीनहींरहा? उ०—नहीं। प्र०—पसतुमको इसमुआमलेसे तअल्लुक़ नहीं है जिसमें तीनमौहरहाहिरासतमेंहैं? उ०—तअल्लुकहैगजान्दवतिलको। प्र०—जबरावजीने जमादारकेरूबरू इकबाल कियाकि ऐबाबा मैनैगलेगले पानीमें कबूलकिया उससमय जमादारने कुछकहाथा? उ०—उससमय कुछ नहीं कहा जब रावजी चलागया उससमय कहाथा। प्र०—उसने रावजी से कुछभी कहाथा? उ०—नहीं प्र०—सरदिनकर रावनेकहाइसमुक़द्दमेमें तहक़ीक़ात करनेकाकौनमनुष्यअधिकारीथामिस्टर सूटरसा-हबयातुम? उ०-मिस्टरसूटरसाहबने मुझको इख़्तियारदिया था। प्र०—जबतुमको तहकोकात करने का इखतियार दिया

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

था तो तुमने साहबके आनेसे पहिले पेटी को क्यों फाड़ा ? उ० क्योंकि मैं नहीं जानता था कि उसमें पुड़िया है या नहीं इसके उपरान्त कमीशनके अधिष्ठाता टिफ़नखाने के वास्ते उठ गये टिफ़नसे लौटने के पीछे इज़हार सन्तराम भिखारी रामके लिये गये॥

इज़हार सन्तराम भिखारीराम॥

इस मनुष्यके इज़हार ऐडवकेट जनरलने लिये उसने वर्णन किया कि मैं गायकवारका नौकर हूं बम्बई और बड़ौदा और सूरत में जो गायकवारकी दूकाने हैं उनका मैं अफ़सर हूं उनका हिसाब मेरे निकट रहता है मैं गायकवार के महल में रहता था और बहुधा महाराजा साहब को देखा करता था मैं यशवन्त रावको जानता हूं वह मलहरराव के निकट जासूसके तौर पर नौकर है मैं सालिमको भी जानता हूं वह भी महाराजा साहबका नौकर है कभी महाराजासाहब के साथ यहलोग रहते थे और कभी नहीं और मैं एक और मनुष्य को भी जानता हूं जिस का नाम दामोदर चिम्बक उर्फ़ दामोदर पन्थ है यह मनुष्य गायकवारका निजका नौकर है वह सिपाहियों और कारकुनोंको तनख़ाह बांटा करता था मुझे स्मर्ण है कि एकबेर श्री महाराज ने मुझको एक काग़ज़के पढ़नेके वास्ते बुलाया था वह छोटी चिट्ठी थी जिस स्थानपर श्रीमहाराजासाहब बैठे हुये थे बेंचपर यह चिट्ठी पड़ी हुई थी जो लोग महाराजासाहब के निकट खड़े हुये थे उनमें से एकने मुझसे कहा कि तुम इस चिट्ठीको पढ़ो सो मैंने उसको बड़े शब्द से पढ़ा जिस प्रकार मैं इस समय बोल रहा हूं, चिट्ठीके पढ़ने के उपरान्त श्रीमहाराजा साहबने कहा कि यह चिट्ठी दामोदरपंथको देदेना सो दूसरे दिन मैंने चिट्ठी देदी मुझको मालुम नहीं वह चिट्ठी कहां गई यह चिट्ठी गुजराती भाषमें लिखी हुई थी जितना कि मुझको उसका मतलब याद है वर्णन करता हूं उस चिट्ठीमें न तारीख़ थी न किसीके दस्तख़त थे उसमें लिखाया कि भावपूनाकर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

और नव्वाब साहबका कारकुन बात्तीकरतेहैंमैं गायकवारके मन्दिरमें नजरबागहोकर जायाकरताथा। प्र०—क्या इसमार्ग से निजकेलोग जायाकरते थे? उ०—बालाखानेपर यहकचहरीहै। प्र०—मेरे प्रश्नका उत्तरदो? उ०—हां सबलोग इस मार्गसे जाते थे॥

मिस्टर ब्रेन्सनसाहब के प्रश्न॥

प्र०—उसकचहरी का हालवर्णन करो? उ०—इसमहल के नीचे जोकोठड़ियांहैं उनमें मालरहताहै और उसकेऊपर दूसरी मंजिलपर जजसाहब की कचहरी है। प्र०—क्या तुम हिरासतमें हो? उ०—हां। प्र०—इसी अपराधपर कि तुमने महाराजासाहब की चिट्ठीको पढ़ा? उ०—हां। प्र०—१३—१४ जनवरीसे हिरासतमें हो? उ०—मुझेस्मर्ण नहीं फिर कहा कि पैाषसुदीषष्ठीसे हिरासतमें हूं॥

ऐडवकेटजनरलने इसगवाहके दुवारह इज़हार लिये॥

प्र०—दूसरी मंजिलसे जो ऊपरकामकानहै उनमें कुछभी मालरहता है? उ०—नहीं वह खालीरहता है। प्र०—उस महलमें तीसरीमंजिलभी है? उ०—हांतीन याचार मंजिल हैं। प्र०—तुम जानतेहो कितीसरी मंजिलपर किस तरफ से जातेहैं? उ०—एकछोटे कमरेमेंहोकर उसकीसीढ़ी है। प्र० उसमें चैाथादरजाभी है? उ०—हांहोगा मैंने नहींदेखा। प्र० इस चैाथेदरजेपर कोईजीनाहै उ०—कोई सीढ़ीनहीं हैलोग उसपरआयाजायाकरतेहैं। प्र०—उनदरजों परकभी तुमगये हो? उ०—हां। प्र०—तुमकहतेहो किमैं अब हिरासतमेंहूं तुम किसस्थान पर रहाकरते थे? उ०—जोगली छापे दरवाजे के निकट है मैं सेनापति की कचहरी में पैाषसुदी षष्ठी से हिरासतमेंहूं। प्र०—किसकी हिरासतमें हो? उ०—उनसिपाहियों की हिरासतमेंहूंजो कचहरीमें नियतहैं। प्र०—गायकवार के पुलिस के सिपाही? उ०—हां॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

इजहार मिस्टर बोवी साहब ॥

मिस्टरबोवी साहबके इजहार मिस्टर अनवरारटी साहबने लिये उन्होंने वर्णनकिया कि मेरानाम अरथर विलियमकरो लोबोवीहै गत नवम्बरमें रेजीडन्सी बड़ौदेका कायम मुकाम ऐसिस्टन्टरेजीडण्टथा और मकानरेजीडन्सी में रहाकरता था ९ तारीख नवम्बरकी मुझको भलीभांति स्मर्णहै उसीदिन बहुतसबेरे हवाखोरीको गयाथा ९बजे जब रेजीडन्सी को लौटा तो सालिमसवार और यशवन्तराव और माधोराव हाजीकोदेखा यहतीनों मनुष्य बरामदेमें खड़ेथे मेरा मतलब यहहै कि जहां आवागमनका द्वारहै मुझको स्मर्णहै किफैजू सालिमसे वार्त्ता करताथा जब८बजे वस्त्रपहिनकर मैं निकला तो मैनेसुना कि करनैलफियर साहबकी शर्बतमेंकुछ डाल-दियागया जब महाराजा साहब चलेगये उससमय करनैल फियरसाहबनेमुझसे यहबातकहीथी इसकेउपरान्त मैने तह-क़ीक़ातके करनेमें करनैलफियर साहबको सहायतादी जिस समयरावजी का पट्टालियागया मैं मौजूदथा जबपट्टा मांगा तो उसनेआपही उतारकर एकखूंटीपर करनैल फियरसाहब के निजकी कचहरीमें लटकादिया अमीनाआया कि जिसके इजहार कमीशनमें होचुकेहैं मेरीमेमकी आयाहै वह मेरे पासव्यतीत एप्रिल वामईसे नौकरहै दोएक मरतबा आया गैरहाजिरी हुईथीमुझेस्मर्ण नहीं कि वहकिस२दिनग़ैरहा-हाजिर हुई सरजन्टबेलनटायनसाहब ने कहाकि चूंकिवह बहुधा ग़ैरहाजिररही इससेमालूम होताहै कि वह अधिक ग़ैरहाजिररही ग़वाहनेफिर कहा कि मुझकोस्मर्णहै कि जब अब्दुल्लाका पुत्रमरगया था तोवह ग़ैरहाजिरहोगई थी और करनैलफियर साहब के विषदिये जानेसे कईदिन पहिलेभी वह ग़ैरहाजिररही थी मुझकोस्मर्णहै कि १६दिसम्बरको जब सूटरसाहब आयाके कमरेमें गयेथे मैंभी उनकेसाथ गयाथा मैं जानता हूं कि शायद गजानन्द शास्त्री और खानबहादुर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पहिला और खान बहादुर दूसरा भी सूटरसाहब के साथ थे जिस समय उसने सूटरसाहब से कुछ कहाया मैं वहां वर्त्तमानथा उस समय वह ज़ियादह बीमार मालूम होती थी प्र०—अनवरारटो साहब ने कहा आपको स्मर्ण है कि उसने क्या कहाया सरजन्टबेलनटायनसाहब ने कहा किमैं इन्कार करताहूं ऐसेसवाल करने का-ऐडवकेट जनरलने कहाआया के इजहारोंमें प्रश्नहुयेथे जोअबभी प्रश्न कियेजांय तोउनकी सिद्धान्त होजाय सरजन्टबेलन टायनसाहबने कहाकि मुझे वही सवालात मंज़ूर हैं॥

साहब प्रेज़ीडेण्टने कहा कोई और गवाह उनबातों की तसदीक़ केवास्ते आसक्ता है फिर सरजन्टबेलन टायनसाहबने अपना उज्र वापिस लिया। प्र०—मिस्टर अनवरारटो साहबने कहाकि आयाने सूटरसाहबसे क्या कहाया? उ० उसने कहाया किमैं कईबेर श्रीमहाराजा साहब के मन्दिर में गई और मैने रुपया भी पाया उसने कुछ और भी बयान किया था परन्तु मुझे स्मर्णनहीं १६—दिसम्बरको बड़ौदेसे मैं रवाना हुआ॥

सरजन्ट बेलनटायन साहब के प्रश्न॥

प्र०—भाव पूनाकर को आपभले प्रकारजानते हैं? उ० हां खूबजानताहूं। प्र०—वहबहुधा रेज़ीडन्सीमें आयाकरता था? उ०—सदाआया करता था। प्र०—किस तरहका वह साहबरेज़ीडण्टका नौकरथा? उ०—कोर्ट आफवार्डससे उस का तअल्लुक था-और मिस्टरहो।प साहब सूरतके कलक्टरनेउसको रेज़ीडन्सीमें भेजाथा। प्र०—आप मेरा प्रश्ननहीं समझे मैं पूछताहूं किवह रेज़ीडन्सीमें नौकरथा? उ०—वह रेज़ीडन्सीमें नौकर था किन्तु सूरत के कलक्टर साहब का नौकर था। प्र०—उसको कोई खास खिदमत साहब रेज़ीडण्टने सुपुर्द नहीं की थी? उ०—नहीं। प्र०—उसको कुछ रेज़ीडन्सीसे मासिक मिलताथा? उ०—नहीं। प्र०—आप जानते

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

है कि कुछ खबरें लाया करताथा और साहब रेजीडण्ट को महाराज गायकवारकी कारस्वाइयोंसे सूचित्त किया करता था ? उ०—मैं जानता हूं कि बहुतसी बातोंकी इत्तिलादिया करता था। प्र०—कोई और मनुष्यभी इत्तिला दिया करता था ? उ०—हां और लोग भी इत्तिला दिया करते थे। प्र० क्या भावपूनाकर ने भी कभी कोई खबरदी थी ? उ०—नहीं प्र०—रेजीडेन्सीमें संखिया वा कोई तांबेका विष रहता था ? उ०—मैंने कभीनहीं देखा। प्र०—आपने कभी किसीकाम के वास्ते संखिया नहीं मंगाया ? उ०—कभीनहीं। प्र०—आपकी आज्ञासे कभीसंखिया नहीं आई ? उ०—कभी नहीं आई ? प्र०—क्या इस हमलेके पीछेभी नहीं आई ? उ०—नहींआई।

एडवकेट जनरल के प्रश्न ॥

प्र०—आप कहतेहैं कि भावपूनाकर कलक्टर सूरत का नौकर था क्यावह जुल्फिक़ार अलीअसस्टंटके इलाक़े काजो बड़ौदेमें है इन्तिजाम करताथा ? उ०—हां। प्र०—आपनेसर-जन्टबेलन टायनसाहबसे कहा कि संखिया आपकी आज्ञासे कभीनहीं आई ? उ०—कभी नहीं। प्र०—९ नवम्बर वा उसके उपरान्त कभीनहीं आई ? उ०—नहींआई एडवकेट जनरलने कहाकि और गवाहोंकी शहादत बहुत तूलसे है औरचार बज गयेहैं अबबरखास्त होना चाहिये सोकमीशन बरखास्त हुई ॥

ग्यरहवें दिनका इजलास ॥

आजकेदिन ११बजेपर कमीशनका इजलास शुरूहुआ सम्पूर्ण मेम्बर और सरल्यूइस पीली साहब और श्रीमान्महाराजा मल्हरराव मौजूदथेपरन्तु मध्यान्हके उपरान्त श्रीयुतमल्हरराव और श्रीमहाराजा सेंधिया और सरल्यूइसपीलीचलेगये इस-समाजमें आजके दिनबड़ीभीड़थी सैंकड़ों मनुष्यदामोदर पंथके इजहार सुननेके लिये आयेथे जो तमाशाई उसअदालत में आनेके योग्यनथे वहमैदानमें खड़ेरहे जिससमय दामोदरपंथ बलायागया तोवहे निहायतबेहूदातौरसे कमीशनमें हाजिर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

हुआसब मखमल की मिरजाई पहिने हुयेथा इस मनुष्य का अति स्थूलशरीर हैऔर अयोग्य मालूम होताहै उसके मुखका नक्शा मोटा और बेढबका है और उसकीखाल गज के चर्म के सदृश खुरदरीहै औरगवाहोंसे उसकीआदत और प्रकारकी मालूम होती है ॥

जोगवाही रावजीनेदी वहअति चातुरताके सायदीनरसूने कांपर कर गवाहीदी और अपने अपराध को छुपाना चाहा परन्तु दामोदरपंथ बड़ादुष्टऔर डरपोक है जिससमय उसने गवाहीदेनी आरम्भकी तो धीरे२ नेत्रोंकोनीचे कियेहुये उत्तर देताथा मालूमहोता थाकिवहअपने मनमेंअति लज्जितहै परन्तुसरजन्ट बेलन टायन साहबने उससेकहा किबड़े शब्द से वर्णनकरो जिसेकि श्रीमान् महाराजा साहबभी तुम्हारे इजहार सुनेंऔरशिर उठाकर महाराजा साहबसे चारआंखेंकरो औरइजहार देयहसुनकर उसने शिर उठाया और उच्चशब्द सेबोलने लगा सर ल्यूइसपीली साहब(रेजीडन्ट) नेजो कहा थाकि दामोदरपंथके इजहार सुननेकेयोग्यहैं औरकारआमदहैं वास्तवमें उन्होंनेसत्य कहाथा ऐडवकेट जनरलने उसके इजहारलिये औरनीचे लिखेके अनुकूल उसनेइजहारदिया ॥

दामोदरपंथ के इजहार ॥

मेरानाम दामोदरचिम्नकजी दामोदर पंथहै सरजन्टबेलन टायनसाहबने मुतरज्जिमसेकहाकि गवाहसेकहोकि बड़ेजोर सेबोले कि श्रीमहाराजा मल्हरराव श्रीसुनें गवाहने वर्णन कियाकि मैंब्राह्मणहूं औरश्रीयुत महाराजा गायकवाड़ का प्राईवेट सीक्रेटरीथा मुझेइस अधिकारपर तीनवासाढ़ेतीन वर्ष बीते होंगे सम्पूर्ण सिपाहियों और कसबियों आदि की तनखाह बांटनेका काम मेरे सुपुर्दथा चिड़िया खानेके नौकरोंकी तनखाहभीमैं बांटाकरताथा महाराजा गायकवाड़ कीआज्ञाके अनुकूल यहसब रुपयाबांटा जाताथा मैंलड़ोपोल केदरवाजे पररहा करताथा और निजकी कचहरी अपने म-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कानमेंकिया करताथा।इस कचहरीमें २५—मुहर्रममेरे आधी-
नथे-माधोराव रामकृष्णसरदफ़्तरथा—एक मनुष्य जिसकानाम
नानाजीवतिलहै जवाहिरखानेकाक्लार्कथा और एक औरमनुष्य
जिसका नामबलवन्तरावजीहै खज़ानचीथा—आबाजीरामचन्द्र
मेरासरिश्तेदारथा मैंप्रातःकालके सातबजे महलमेंजाताथा
औररात्रिके दसबजेतकवहां रहताथा परन्तु तीसरेपहिर भो-
जनकेनिमित्तअपनेघरमें आया करताथा मैं महाराजा गायक-
वारकेमन्दिरकेसम्पूर्णकमरों को जानताहूं गायकवार महलके
चौथेदरजेपररहाकरतेथे जिस मनुष्यकोकोईखास कामहोता
थावहपीछेके रास्तेसेआताथा और दरबारकेसबलोग फाटकसे
आयाकरतेथे परन्तुबहुतसे मनुष्यजोनिजकी कचहरीमेंमहा-
राजा साहबकेनिकटआतेथे वहपीछेके जीनेसे आयाकरतेथे
सरजन्टबेलन टायनसाहबने कहा कि मैंगवाहका बयान कुछ
भी नहींसुनता विश्वासहैकि महाराजासाहबभीन सुनतेहोंगे
गवाहसे कहा जायकि जोरसेबयान करे आज्ञाहुई कि गवाह
जोरसे वर्णनकरे गवाहने बयानकियाकि लोगगद्दीके कमरेमें
जायाकरते हैंउनका आवागमन जगमनाथ दरवाजे सेथा॥

एक और दरवाजा नजरबागकी ओरसेथा वह खासदर-
वाजा मशहूरहै मैंयशवन्तरावको जानताहूं वहजासूसके तौर
परमहाराजा साहबकेपास नौकरथा मैंसालिम कोभी जानता
हूं वह महाराजा साहबका सवारहै यह दोनों मनुष्यदिनको
महाराजा साहबकी आदली में रहतेथे यदि रात्रिको कुछ
आवश्यकता होतीथी तो बुलाये जातेथे मुझेस्मर्णहै कि महा-
राजासाहबने मुझेआज्ञादीथी कि सालिमको संखियेकी पुड़िया
देदोवह दिनभाद्रपद केथे सुतरज्जिमसे पूछागया कि यहकौन
दिनहोतेहैं उसनेकहा कि यहदिन २६—सितम्बरसे १०—अक्टू-
बरतक होतेहैं—गवाहने वर्णन किया कि महाराजा साहबने
मुझको आज्ञादी कि दोतोले संखिया खरिदनेके लियेमंगाओ
सो मैने महाराजा साहबकी आज्ञा के अनुसार फौजदारी के

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

महकमेको लिखा—उस समय एकचिट्ठी गवाहको दिखाईगई उसनेकहा कि वहचिट्ठी यहीहै और उसपर मेरेही दस्तखत हैं ऐडवकेट जनरलने वहचिट्ठी पढ़वाई उसमेंयहलिखाया॥

श्रीमहाराजकी फौज़दारी के सम्पूर्ण अफ्सरों के नाम पर।

रामरामके उपरान्त मालूमहो कि घोड़ेकी खारिशके लिये दो तोले संखिये की आवश्यकता है इजाजत दो कि संखिया मंगाई जाय॥

(द०)दामोदरत्रिम्बक खासगीवाला लिखाहुआ

भाद्रपद नवमी सम्बत् १९३१

४ अक्टूबर सन् १८७४ ई० के अनुकूल

गवाहने वर्णनकिया कि हांयहीतारीखहै जबचिट्ठी लिखीगई और कहाकि फौजदारीसे संखिया नहींआई तो मैंने नरोत्तमपुरुहसे संखियामंगाई परन्तुमंगानेके प्रथम महाराजासाहब और मुझसेकुछ वार्त्ताहुईथी मैंनेकहाथाकि हुरसुजनी बद्याकहताहै कि महाराजासाहबसे कुछबातें कहके संखिया दूंगा हुरसुजनी बद्याफौजदारथा यहसुनकर महाराजासाहबने कहाकि लष्करसे मंगालो मैंनेकहा जोआप लष्करसे संखियामंगावेंगे तो इजाजतीपरवानाभेजाजावेगा महाराजा साहबनेकहाकोशिशकरके कहींसेसंखियामंगाओ और कहा कि नूरुद्दीन बौहरे सेमंगवाओ(नूरुद्दीन महाराजा साहबके सिलेखानेमेंपहिलेनौकरथा)साहब प्रेज़ीडण्टनेकहा सिलाखानेकेक्याअर्थहैंक्यादवाईखानेको कहतेहैं मुतरज्जिमने कहाहां॥

गवाहने वर्णनकिया कि अबदवाईखाना सिलहखानेमें है यहसिलहखाना उसकमरेके निकटहै जहांश्रीमहाराजसोया करतेहैं थोड़े दिनोंके पीछे श्रीमहाराजा साहबने कहा कि एकतोला हीरामंगवाओ जबमैंने नूरुद्दीनबौहरेको संखिया के वास्ते लिखा तो वहएकपुड़ियामें संखियालाया मैंनेउसपुड़ियाको नहींखोला और महाराजासाहबसे पूछा इसकोक्या कियाजाय महाराजासाहबने कहाकि वहसालिमको देदोकि

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

वह घोड़ोंकी खारिशकी औषधी बनायेगा सो मैंने वह पुड़िया सालिमको देदी ॥

तिसपीछे श्रीमहाराजा साहबने मुझसे फिर कहाकि एक तोला हीरा मंगवाओ शायद यह संखिया मंगानेसे आठ दस दिनपीछे मुझसे कहाथा तथाच मैंने नानावतिस से हीरे मंगवाकर महाराजासाहब की आज्ञासे यशवन्तराव को देदिये आठदसदिन पीछे मुझसे महारासाहबने कहाकि यह शीशी हकीमके पाससे आईहै यह सालिमको देदेना वहशीशी रात्रिकेसमय महाराजासाहबने गजाबाके हाथ मेरेपासभेजी पूर्वोक्त गजाबानानाकंवलकरका नौकरहै नानाकंवलकर महाराजासाहबके सालेहैं वहशीशी जोरात्रिके समयआईथी मालूमनहीं उसमेंक्या था मिस्टर मैलवल साहबने मुनरज्जिमसे पूछाकि ष्टयनोटके क्याअर्थहैं मुतरज्जिमने उत्तरदिया किइस शब्दकेअर्थ वजीरकेहैं मिस्टर मैलवलसाहबने कहाकि गवाहने कहाथा कि नानाकंवलकर महाराजासाहबके सालेहैं और मौरूसी वजीरभीहैं मुतरज्जिमने कहा हां । तिसपीछे गवाहने वर्णनकिया किइंगलीके बराबरशीशी थी मैनेयहदवा दूसरी शीशोमें करदी जिसमेंपहिले गुलाबका इतरथा गवाहनेशीशी को दो पुड़ियाके बराबर बयानकिया गजाबाने एकशीशी से दूसरीमेंदवा को कियाथा यह छोटीशीशी जिसमेंदवाथी मैंने अपने पासरखली दूसरेदिन महाराजा साहबकी आज्ञाकेअनुकूलशीशी सालिमको देदीवहदिन दसहरेके थे थोड़े दिनों केपीछेमहाराजा साहबने मुझसे कहाकि एकतोलाहीरा और दोतोलेसंखियामंगाओ सोनूरुद्दीन बौहरेसे संखिया लेनेकेलिये मैं आपही उसके मकानमें गया और संखियालेकर सालिम कोदेदी और एकतोले हीरेमें तीनमाशे पिसाहुआ हीराथा और नौमाशेहीरे के टुकड़ेथे मैनेपुड़िया खोलकर नहींदेखी यह बातमानजी के कहनेसे मालूमहुई थी महाराजा साहबने मुझसे कहा कि हीरे की पुड़िया यशवन्तराव को देदो और

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

महाराजा साहबने कहा था कि इन हीरोंका स्वामी अकल-कौटके ताजकेवास्ते आवश्यकताहै साहब प्रेसीडेण्टने पूछा कि स्वामीके क्या अर्थ हैं मुतरज्जिमने कहा कि स्वामी पहिलेदरजे के पुजारीको कहतेहैं गवाहने कहाकि वहपुड़िया यशवन्त-रावको मैनेदेदी मैने यशवन्तरावसे पूछा कि इनहीरोंका क्या होगा यशवन्तरावने उत्तरदिया कि करनैल फियरसाहबको विषमेंमिलाकर दियाजावेगा मैने इतनाही कहाथा कि यह बातबहुत बुरीहै और मैने कुछनहीं कहा मैने२९ अक्टूबरको सुना था कि विषदिये जानेका उपाय किया गया जबसे कि यशवन्तरावको हीरेदिये उसकेआठ दसदिनके उपरान्त मैने सोमवार को यह खबर सुनीथी मैं महाराजा साहबके साथ आठबजे रेजीडंसीको गयापरन्तु मार्गमें शिवाकी धर्म्मशाला पर उतरपड़ा और महाराजा साहबके लौटनेतक वहां ठह-रारहा जबमहाराजा साहबरेजीडंसी सेपलटआये तो मुझ-को अपनी गाड़ी में बैठालिया और मुझको मेरे मकान पर उतार दिया मार्गमें श्रीमहाराजा साहबने मुझसे कहा कि रेजीडन्सी में एक शोर मचरहाहै मैने पूछा किसकारण वह शोरहै महाराजा साहबने कहा किनरसू प्रतिदिन मेरेनिकट आताथा परन्तुआजनहीं आया रावजीने जल्दी करके डाल दिया मैनेपूछा क्या डालदिया था महाराजा साहबने कहा किनरसूडेवढ़ी पर बैठा रहा करता था जब कोई आता था तो वह शीशी बनादिया करताथा आजनरसूनथा इसीसे आज रेजीडन्सीमें शोर मचरहा है महाराजा साहबने मुझसे यह भीकहा कि सालिम रावजीके मकानको दौड़ागया हैताकि वह पुड़ियोंकोलावे और जहां एकबुढ़ियारोटी पकारही है उसमें डालदे॥

महाराजासाहबने यहभी कहाकि मालूमनहींकि सालिम ने रावजीसे पुड़ियोंको लेकर फेंकदियाहै या नहीं—और बड़ी खराबीकी बातहुईहै देखाचाहिये क्या होताहै जबगाड़ी मेरे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मकानके निकटपहुंची महाराजा साहबने मुझको वहां उतार दिया उसदिन महाराजासाहबसे और कुछबातोंका होना इस विषयमें या इनहीं सोमवारको ११-बजे भोजनकरके महाराजा साहबके महलको मैंगया वहांजाकर देखाकि महाराजासाहब लक्ष्मीबाईके पलंगपर बैठे हैं और नाना कंवलकरसे विष की बातेंकररहे हैं परन्तु मैंने यहनहीं सुनाकि वह क्या बातेंथीं क्योंकि मैं पांचछः कदमकी दूरीपरथा और नमैं उसवार्त्तामें संयुक्त हुआ-इसकेउपरान्त महाराजासाहब और नाना और मैं गाड़ीमें सवार होकर घुड़दौड़को गये मार्गमें महाराजा साहब और नाना कंवलकरने मुझसे कहाकि इसबातकी खूब खबर रखना और जो खबरें मालूम हुआ करें उनको मुझको इत्तिला दिया करना मैंने अपने घरमें जाकर कई मनुष्योंसे विषके दियेजानेका हालपूछा जोकुछ मैंने सुनायाकि दूसरे दिनभोरको महाराजासाहबको उसकी इत्तिलादी मैंने महा-राजासाहब से कहाकि रावजी का पतानहीं है शायदकहीं आगगया महाराजा साहबने कहाकि यद्यपि रावजी बड़ाबु-द्धिमान और चतुर है परन्तु झूठाभीहै उससमयमुझसे और कुछनहीं कहा मङ्गलवारको मैंने सालिमऔर यशवन्तरावको महाराजासाहब के पास महलमें देखा महाराजा साहब ने मुझसेकहा कि विषकेदेनेका हालदरयाफ्तकरके मुझसेवर्ण-नकरो उसदिन मुझसे और महाराजासाहबसे विषकेविषयमें वार्त्ता हुईजब करनैल फियरसाहब कीजगह सरल्यूइस पीली साहबनियत होकरआये मुझको खूबयादहै कि एकदिन महा राजासाहब मुझको सरल्यूइसपीलीसाहबके साम्हनेलेगये और साहबसे मुझके रूबरू इसबातकी गवाही दिलवाईकि महारा-जासाहबकी बातें मुसम्मानरायणकानजिसपान्ड्रासे हुईं मुझको महाराजासाहब ने सरल्यूइसपीलीसाहब के रूबरू पेशकिया परन्तु उसदिनमुझसे और साहबसे कुछवार्त्ता न हुई न कुछ विषका जिक्रआया उसदिन रावजीको मैंने नहीं देखा प्रथममें

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

केवल नौसरीमें मेरी और उसकी भेंट हुई थी जबमिस्टर सूटर साहब बड़ौदेमें आये थे तो सम्पूर्ण नगरमें उनके आनेकी खबर प्रसिद्ध होगई थी उनके आनेके पीछे मुझसे और महाराजा साहबसे विष दियेजानेकी कुछ वार्त्ता हुई थी—पहिले रावजी पकड़ा गया परन्तु फिर छोड़ा गया इसको सुनकर महाराजा साहबने मुझसे कहा था कि जो मनुष्य बानी सुव नीया वहछूट गया अब कुछ भय नहीं है परन्तु मुझको स्मर्ण नहीं है कि यह बातें मुझसे और महाराजा साहबसे किसदिन हुई थीं इतना याद है कि सूटर साहबके आनेके उपरान्त वार्त्ता हुई थी जब राव-जी दूसरी बेर पकड़ागया तबभी मुझको खबर हुई थी और मैंने यहभी सुना था कि उसने इकबाल किया सो महाराजा साहब को मैंने खबर पहुंचाई महाराजा साहबने उसके उत्तरमें कहा कि मैंनेभी ऐसाही सुना है जब रावजीने इकबाल किया तो उसको उसकी बरीय्यतका सारटीफिकट दियागया मुझसे और महा-राजा साहबसे इस विषयमें वार्त्ता हुई थी महाराजा साहबने मुझसे कहाथा अगर यहांकोई तहकीकात हो तो कदाचित् किसी बातको कबूल नकरना मुझको और कुछ महाराजा साहबकी वार्त्ता स्मर्ण नहीं है मुझको सालिम और यशवन्तराव केपकड़ेजानेकी तारीख स्मर्ण है १५ मार्गशीर्ष थी मुतरज्जिमने कहा कि यह तारीख २३ दिसम्बरके अनुकूल है रावजी और सालिमके पकड़ेजानेके उपरान्त साहबरजीडण्टने महाराजा साहबको लिखा था कि उनको हमारे पास भेजदो जब यह लेखमैं महाराजा साहबके निकट लेगया तो महाराजा सा-हबने कहा कि हमने सालिम और यशवन्तराव कोभी भेज दियाहै महाराजासाहब ने उससमय मुझसे नहीं कहा कि उनदोनों को किस वास्ते भेजदिया है परन्तु इसके उपरान्त मुझसे कहा कि मैंने दोनों को समझा बुझाकर भेजा है कि कदाचित् किसीबातकाइकबाल न करना इसवार्त्ताके विशेष और कुछ महाराजासाहबने मुझसे नहीं कहा—उससमय

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सालिम और यशवन्तराव रज़ीडन्सीको गये और फिर लौट आये उसी दिन सरल्यूइस पीलीसाहब रेज़ीडण्ट की आज्ञा पहुंची कि सालिम और यशवन्तराव को भेजदो—रज़ीडन्सी के जानेके पहिले उनको मैंने देखाथा वह ऊपर कोठतपर नानाकंवलकर के पासथे जब नानाकंवलकर मुझको मिलेतो मुझसे कहा॥

मिस्टरब्रैन्सनसाहबने कहा हमनहीं पूछतेकि उन्होंनेतुम से क्या कहा॥

ऐडवकेट जनरल ने कहा कोई मनुष्य और भी उस समय मौजूद था? उ०—सिवाय नानाकंवलकरके और कोई मनुष्य नथा॥

गवाहफिरवर्णनकरनेलगाकिजबसालिम और यशवन्तराव रज़ीडन्सीकोचलेगये तो संध्याको महाराजासाहबसे फिरमेरी भेंट हुई महाराजासाहबनेकहाकि मैंनेदोनों मनुष्योंको समझा दियाहैकि तुमकिसीबातकाइकरार नकरना सिवाय इसबात के और जो कुछ महाराजासाहबने कहा मुझको स्मर्ण नहीं जिसदिन महाराजा साहब पकड़ेगये उसीदिन मैंभी संध्याके समय पकड़ागया ९ बजेएक पहिरा आया महलके कमरेबंद कर दियेगये और प्रतिस्थानपर पहिरा खड़ाहोगया नैकसन साहब और गजानन्दवतिलने मुझसेकहा कितुम अपनेदफ्तर मेंचलो कितुम्हारे सन्मुख प्रत्येक वस्तु बन्दकरके मोहरलगा दीजावे जिससमय प्रत्येकवस्तु पर मोहर लगाई गई मैंभीमौजूदथा इसकेउपरान्त मैं अपने घर चला आया परन्तु शीघ्रही फिरमैं बुलायागया और सेनापतीकी कचहरीमें मुझको क़ैद कियामैं दोदिनतक हवालातमें रहावहां केवलचौकीदारोंका पहिरा था सिपाही न थे वहां से फौजदारके सिपाही मुझको रेज़ीडन्सी में लाये और गोरोंके पहिरे में १९ दिनतक बन्धि मेंरहा फिरपुलिसकेसुपुर्द कियागया जबतक मैंने किसीबात कोकबूल नहीं किया मुझपर गोरोंकापहिरा रहाजब मैंनेइक-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

वाल कियातो पुलिसके सुपुर्द कियागया पहिलीबेर रेजीडन्सी के बागके नीचेमें बुलाया गया वहां दोनों खान और बलवन्त राव सीक्रेटरी वर्त्तमानथे यहबलवन्तराव कारकुनथा जोअहमदाबादसे बुलायागया था एकमनुष्य भावपूनाकर औरएक सिपाहीपुलिसका वहांमौजूद था जबमैं वहां पहुंचातो खान बहादुरने कहा कि मैनेतुमको इसलिये बुलायाहै किमैं तुम्हारे संदूकके काग़ज़ देखाचाहताहूं उससंदूकमें महाराजासाहब के निजके काग़ज़ थे उसपर मेरे साम्हने मोहर लगाई गईथी उसपरबड़ी २ मोहरेंथीं और सबसुसल्लमथीं मैंनेपुलिससे कुछ नहींकहा परन्तु पुलिसके लोगोंने मुझसे कहाथा कि अगरतुम इकबाल करोगे तुम्हारेलिये अति उत्तमहोगा वहलोग आधे घंटेतक सन्दूकके काग़ज़ देखतेरहे उसके उपरान्त मैं गोरोंके पहिरेमें सुपुर्द कियागया बलवन्तराव और भावपूनाकर और दोनों खानबहादुरने देखाथा ऐडवकेट जनरलने कहा कि अब दोबजगये हैं टिफनका समयआगया यदि अच्छा होतो थोड़ी देरकेलिये अदालत बरखास्त कीजावेतो कमीशनके मेम्बरटिफनखानेके वास्ते गये ॥

जबटिफन खाकर लौटेतो गवाहने वर्णन किया कि सन्दूक के काग़ज़ोंके देखनेके पीछेमेरा इज़हारहुआ उससमय मिस्टर रिचीसाहब सरल्यूइस पीलीसाहब कप्तान जेकसनसाहब कप्तान सीग्रीव साहब दोनों खान बहादुर गजानन्दवतिल और बलवन्तराव सीक्रेटरी मोजूदथे जबमैंने अपना इज़हार दिया तो सरल्यूइसपीली साहबने मुझसे मेरे अपराधके क्षमा करने का इकरार किया था किसीमनुष्यने मुझसे रावजी वा नरसू जमादारके इज़हार का हालवर्णन नहीं किया मैंतो गोरोंके पहिरे मेंथा मुझे कौन सूचित करता जिसदिन मुझको सार्टीफिकट मिलातो गजानन्द वतिल और दोनोंखान बहादुर वर्त्तमान थे—गजानन्द ने मुझसेकहा कि जोसच २ कहोगेतो सरकारतुम्हारा अपराध क्षमाकरेगी और मुझको एक परचा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

भी दिखाया सिवा इसके उससमय मुझसे कुछनहीं कहा जब मैं नौसारी गयाथा मैंने रावजीको देखाथा रावजी महाराजा साहबके गुसलखाने के पासबैठा था सिवाय रावजीके सालिस और महाराजा साहबभी बैठेथे रात्रि के दस बजे होंगे और महाराजा साहबके बुलाने के अनुसार मैं गयाथा जबमैं महाराजा साहबके पास पहुंचातो महाराजा साहबने मुझको एक काग़ज़ देकर कहा कि इसको पढ़ोसो मैंने उसे पढ़ा तो वह अर्जी स्वर्गवास यमुनाबाई खाण्डे रावजी कीस्त्रीकी ओरसे श्रीमान् गवर्न्नर जनरलके नाम थी उससमय महाराजा साहबने कहा कि इसअर्जी की नक़ल लिखलो जबमैंने नकल लिखली तोवह अर्जी रावजीको फेरदी मैं सब काग़जों को महाराजा साहबके रूबरूपढ़कर सुनाया करता थामैं दक्षिणी भाषा जानता हूं बहुधा हिसाब छोटे २ परचों पर रहा करते थे कोई किताब न थी और जिस मनुष्य को महाराजा साहब रुपया दिलाते थे मैं याद बना कर महाराजा साहबके दस्तखत करा लिया करताथा बहुधा श्री महाराजा साहब मुझको ज़ुबानी आज्ञादिया करतेथे॥

एककाग़ज़ जबगवाहको दिखायागया तो उसनेकहा कि मेरेहाथका लिखाहुवा है उसमेंयह लिखाथा॥

श्री लक्ष्मी इत्यादि॥

हिसाबतीसरे माहशव्वाल अर्थात् महीना मार्गशीर्ष सम्वत् १९३० ई० (२४ नवम्बर सन् १८७४ ई० के अनुकूल)॥

याददाश्त॥

बम्बईसे कुछ माल यशवन्तके पुत्रमहीपति योलीके द्वाराजो सरकारका कासिदहै आयाहै इसलिये सरकार की आज्ञाके अनुसार नीचेलिखा हुआरुपया दियागया कलके बनेहुयेरुपये जोबाजारसे मोल लिये गये १००० पट्टा बहिसाब १८$\frac{3}{4}$ फीसदी-१८७॥) कुल ११८७॥) सिक्के वा बादशाही जो ख़ज़ानेसे दियेगये १०००) कुल ३१८७॥) रुपया पानेके समय जो रसीद

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

यशवन्तराव ने दाखिल कीथी इस काग़ज़के साथ रक्खीगई ॥

सरजान्स बेलनटायनसाहबने कहाइन याददाश्तोंकेपेशकरने से ज्ञातहोता है ताकि साबितहो कि समय २ पररेज़ीडन्सी के नौकरोंको रुपयादिया गया और हिसाब में दूसरेनाम से रुपयालिखागया ऐडवकेटजनरलने कहा हांइसीवा तकेसाबित करनेके वास्ते यह यादें पेशकी गईं प्रेजीडेन्ट साहबने कहा ऐडवकेट जनरल प्रगटकरना चाहतेहैं कि वास्तवमें समय २ पररुपया लोगों को दियागया और याददाश्तोंमें दूसरे नाम से लिखागया इसवार्त्ता के उपरान्त वह यादमिसल में संयुक्त कीगई और उसपर (ए) का निशान लगायागया और गवाह ने वर्णन किया कि प्रति दिन और प्रतिसप्ताह और मासिक औरवार्षिक हिसाववन कर पेश हुआ करता था बलवन्तराव कारकुन प्रतिदिन का हिसाब रक्खा करतेथे और मैंहिसाबों परदस्तखत कियाकरता था मालूमनहीं कियशवन्तरावको क्या मासिक मिलताहै सिवातनख्वाहके जितना सालिमऔर यश-वन्तराव को रुपया दियागया वहमेरे महकमेसे दियागया ॥

ऐडवकेट जनरलने कहा जोयाद तुमने पढ़ीउसमें तुमलिखते होकि उस असबाब के लिये जो बम्बई से आया तुम जानते होकि कौन असवाव बम्बई से आया था ? उ०—कोई असबाब नहीं आया था। प्र०—फिर क्यों लिखागया कि बम्बईसे अस-बाबआया ? उ०—इसबास्ते लिखागयाकि रेज़ीडन्सीके सब नौकरोंको रुपयादेनामंज़ूरथा। प्र०-तुमको क्योंकरमालूम हुआ कि रेज़ीडन्सी के नौकरोंको रुपयादिया जायगा ? उ०—महा राजासाहबनेआज्ञादी थीकिजबरुपया रेज़ीडन्सीकेनौकरोंको दियाजाय तो वहरुपया इसीभांति हिसाबमें लिखा जाययदि कोई वस्तु आती तो महाराजा साहब उस ब्योपारी कानाम लिख वातेजिसकी दूकान से आया था ऐडवकेट जनरलने एक औरयाद गवाह कोदी और पूछाकि यहरुपया भीयशवन्तराव को दियागया था ? उ०—हां देखिये १८॥=) कीदहानीद है

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

इसमें नमालका व्यौरा और नब्यौपारीका नामहै । प्र०—क्या इसपरभी तुम्हारेदस्तखत हैं ? उ०—हां । प्र०—किसमनुष्यने इसयादका रुपयापाया ? उ०—सालिम अरब ने । प्र०—क्या कोई वस्तु अहमदाबाद से खानेमें आई थी ? उ०—नहीं ॥

एडवकेट जनरलने कहा माईलार्ड मेरे विचारसे जोयह सब यादेंगवाहों को दिखाकर पहिचानवाई जायें औरउनसेकसम लेली जावेतो अतिउत्तम है ॥

सरजन्ट बेलनटायन साहब ने कहा मेरी भी यही राय है मैने उन यादों की सूची बनाई है उनपर [ए]से [क्यू] पर्य्यन्त निशानहैं इनसब याददाश्तोंमें सातहजार रुपयादिया गयाहै प्रेजीडण्ट साहबने कहा कि मिस्टर जारडीनसाहब से कहा जाय कि इन याददाश्तों की क्रमपूर्व्वक सूचीतैय्यार करें—चारबजे अदालतबरखास्त हुई ॥

बारवें दिनका इजलास ।

ग्यारह बजे पर कमीशन के मेम्बर एकत्र हुये कमीशन के सम्पूर्ण मेम्बर और श्रीयुतमहाराजा मल्हरराव समाज में सुशोभितहुये तीसरेप्रहर को श्रीमान्महाराजा सेंधियातशरीफलाये और सरल्यूइस पीलीसाहब दिन भर नहीं आये एडवकेटजनरल अर्थात् सरकारकेवडेवकी ल दामोदर पंथका इजहार लेनेलगे—पूर्व्वोक्त साहबने गवाहसे पूछा कि तुमने हमसेकल कहा था कि दोबार नानाजीवतिल के पाससे मैने हीरे मंगवाये थे परन्तु बयानकरोकि उसके मोलके देने का किसनेबन्दोबस्त कियाथा ? उ०—श्रीमहाराजासाहबके आज्ञाकेअनुकूल बन्दोबस्त कियागया मैने महाराजा साहब से पूछाथा कि इन हीरों का मोलदेदिया जायसो आज्ञाहुई थी किदेदो तोमैने हीरोंका मोलदे दिया—यहरुपया दस्तूरीबट्टे और बचत से दियागयाथा परन्तु इस रुपये को हीरोंके मोल में दिया जाना हिसाब में दर्ज नहीं हुआ किन्तु महाराज

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

साहिबकी आज्ञासे महाराजा साहबके हिसाबमें इसप्रकार लिखागया कि ब्राह्मणोंके खिलानेके लिये रुपिया दिया गया॥

जब गवाहसे एक और प्रश्नकिया तो सुतरज्जिम गवाह से कुछ बार्त्ता करनेलगा सरजन्ट मेलनटायन साहबनेकहा क्या कहतेहो सुतरज्जिमने कहाकि जो कुछगवाहने वर्णनकिया मेरीसमझमें नहीं आयाथा इसलिये मैं पूछताहूं सरजन्टसाहबने कहा कि जो कुछ वह कहताहै मुझे सुनाओ प्रेजीडण्ट साहबने कहाकि जबसुतरज्जिमही नहींसमझाहैतो तुम क्या समझोगे-गवाहने वर्णनकिया कि महाराजा साहबने मुझसे कहाथा कि इनहीरोंको दवाईकी मदमें दर्ज हिसाब करना क्योंकि इनकी भस्मबनाई जावेगी उनकोमैंने इसीप्रकार हिसाब में लिखाया परन्तु जब कारनैल फियर साहबके विषदिये जाने का चर्चाऔर चरचाहुआ तो मैंने महाराजा साहबसेकहा कि हीरों की भस्म किस प्रकार हो सक्ती है महाराजा साहबने कहा तुमने खाकहोना हीरों का लिख दिया है मैंने कहाकि हां तब महाराजा साहबने कहा कि उसवरक़ को हिसाबसे निकाल डालो इस विषय में मैने नानावतिल से सम्मत पूछा उन्होंनेकहा किजब महाराजा साहबकी आज्ञाहै तो ऐसाही करो-महाराजासाहबने मुझकोयहभी आज्ञादी कि जबइस प्रकारका खर्च लिखाकरोतो ऐसा लिखो कि किसीको असलहाल न मालूम हुआ करे नूरुद्दीन बोहरसे जो दोबेर संखिया ली गई उसका मोल नहीं दिया गया केवल इतनाही इकरार कियागयाकि दवाईखाना उसको फिरसौंपाजायगा जब कारनैलफ़ियर साहबको विष दिये जाने का वृत्तान्त सर्वत्र प्रसिद्ध हुआतो नूरुद्दीन बोहरने मुझसे कहा कि जिस बोहरे की दूकानसे संखियालाया था वह दोसौ रुपया मांगताहै-ऐडवकेटजनरलने कहा उसने कुछ और भी कहाथा-सरजन्टमेलनटायन साहबने कहाकि ऐसे प्रश्नसेमैं इन्कार करताहूं कि वहबातेंजो महाराजाके पीछेहुई वहगवाहीमें दाखिल नहीं

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

हैं—साहब प्रेजीडण्टनेकहा—जो कुछबातें और कारवाईउस समय पर हुईवह सबगवाहीमें दाखिलहै॥

सरजन्ट बेलनटायन साहबने कहाआपकी रायमें यहबातें शहादतमें दाखिलहैं॥

साहबप्रेज़ीडण्टनेकहा।हांसुननेके योग्यहैंऔरजबउनकोतसदीकहो।जायगी तो उससमयगवाहीकेभीयोग्यहैंसरजण्ट बेलन टायनसाहबनें आपकामतलब समझा आपचाहतेहैं किसबहाल मालूम होजाय उसकेपीछे देखाजायगा कि गवाहीकेयोग्यहैं वानहीं साहब ऐडवकेट जनरलने गवाहसे कहाकि तुमसे और नूरुद्दीन बौहरेसे क्याबात्तीहुईथी गवाहने वर्णनकिया किनूरुद्दीनने मुझसे कहा कि पहिली पुड़िया संखियाकी किसीके नामलिखी नहींगईहै और दूसरीपुड़िया मेरेनाम लिखीगई है जिस बौहरेके पाससे संखिया लायाथा उसने कहाहै कि मेरी कितावेंहिसावकी जव्तहोगईं और दवोडन्सीको गईहैं यदि तुमचाहतेहोकि संखियेका बेचाजानाछिपारहे तो दो सौरुपये मुझकोदो और मैं उस बौहरेको देदूंकि वहमेरा नामनवतावे—सरजन्ट बेलनटायन साहबनेकहा क्या हुजूरऐसी बातसुननेके मनाहहैं—साहब प्रेजीडण्टने कहाकि हां मुझको अधिकारहै क्योंकि इनबातोंसे मालूमहोगा कि सच २ क्या हालहै॥

सरजन्ट बेलनटायन साहबने कहा हजूर इस वृत्तान्त को सुनकर गवाहीकी तौरपर समझतेहैं परन्तुमैं यहबातें केवल गुफ्तगू समझताहूं कुछ गवाही नहीं समझता जो वार्त्ताकि महाराजासाहबके रूबरू नहींहुई वह समझी जासक्तीहै कि बनाईहुई है ताकि एक मनुष्य दूसरे को फंसावे॥

साहब प्रेजीडण्टने कहा इसीवास्ते आपयह वार्त्ता करते हैंकि यहबातें बनाईहुई हैं॥

सरजन्टबेलन टायनसाहबने कहामैं आपके सम्मुख यहबात पेशकरताहूं किआश्चर्य्य नहींजो यहवार्त्ता बनाईहुई हो।ऐसी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बातोंकी सिद्धान्त जबकि दूसराकोई मनुष्य वहां न थाक्यों कर होसक्ती है परन्तु जो हुजूर उसको गवाही समझते हैं तो मैं चुप हूं॥

प्रेजीडेण्ट साहबने कहा जबतक कि प्रतिमनुष्य का हाल न सुनाजाय तबतक ऐसे मुक़द्दमे की तहक़ीक़ात कठिन है और जबतक कि प्रति मनुष्यकी बात न सुनूंगा मेरी समझमें क्योंकर आवेगा॥

गवाहनेवर्णनकियाकि नूरुद्दीन बोहरेसे मैनेकहाकिदोसौ रुपयेतुम अपनेपाससे देदोतुमको दवाईखानेका काममिलेगा तो यहरुपया मुजराहोजावेगा नूरुद्दीनयह बात सुनकरचुप होरहा और फिरमैंने नूरुद्दीनको नहींदेखा—नूरुद्दीननेमुझसे नहींकहा किवह किस बोहरेकी दूकानसे संखियालायाथा मैनेनौसारी में केवल एक बेरराबजीको देखाथामालूम नहीं कि वह गायकवारके पास आया करता था यानहीं॥

करनैलफियर साहबके फोड़ानिकलाथामुझेअच्छेप्रकार स्मर्ण है महीना सितम्बर सन् १८७४ ई० था इस फोड़े का हालइस कारण यादहै कि मेरेसन्मुख सालिमने महाराजा साहबसे कहा था और उसने अपनी उंगली से बताया कि माथेमें फोड़ा है करनैलफियर साहब रावजीसे मरहमलग-वायाकरतेथे रावजीने एकचुटकी संखियेकी मरहममें डालदी थीजबमरहमके लगानेसेकरनैलफियर साहबकेफोड़ेमें सोजिश हुईतो उन्होंनेमरहमके फाहेको उतारडालायहबात सुनकर महाराजासाहब मेरेरूबरू कुछनहीं बोलेजब करनैलफियर साहबकेयह फोड़ाथातोमहाराजासाहबनेकुछ दवाईकेबनाने कोमुझको आज्ञादीथी उसीसमयमें सालिमकोमैने संखिया दीथीऔर महाराजासाहबने आज्ञादीथी कि हकीमसाहबके निकटबड़े २ चींटे, सर्प, और काले घोड़ेका मूत्रभेजदो वह कुछ दवाबनावेंगे मुझकोऔर कोईबात उसदिनकी जोमहा-राजासाहबने कहीहो स्मर्णनहींमैनेयह सम्पूर्णवस्तु मंगाकर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

हकीमसाहबके निकट भेजदीथी और हकीमसाहबने एकशीशीमें कुछदवाबनाकरदीथीसाहब प्रेजीडेण्टनेकहाइसशीशीकीदवा कीवस्तुतोमालूम होगई परन्तुयहपूछोकि इसशीशी परलेबुलथी वा नहीं-एडवकेटजनरलने गवाहसे कहाकि तुमइसशीशीका हालबयानकरसक्तेहोगवाहने उत्तरदियाकि उंगलीके बराबर वह शीशीथी उसको गजाबासेरे निकट लायाथामुझको स्मर्ण नहींकिउसशीशीमेंडाटथा वानहींपरन्तुमैंनेउसशीशीकीदवा को दूसरीगुलाबकीशीशीमें रखदियाथाऔर उसशीशीपरकुई औरमोम लगाकर सालिमकोदेदियाथा मैंजानताहूं कि जो व्यवस्था रेज़ीडन्सीमें हुवाकरतीथी उसकीइत्तिला महाराजा साहबकोहुवाकरतीथी रावजी सालिमकेद्वारा उनचिट्ठियोंको महाराजा साहबके पास भेजाकरता और मैंउन चिट्ठियोंको महाराजासाहब के सम्मुख पढ़कर फाड़डालताथा गवाहको कुछचिट्ठियोंके पुलिन्दे दिखायेगये गवाहने कहा कियहरोजनामचेहैं ऐसे२चारपुलिन्दे अदालतमेंथे एकपुलिन्देमें ११९॥) का हिसाबहै यहहिसाब मिटाहुवाहै एककारकूनने मेरीआज्ञासे उसपर स्याही डालदीथी उसका नाम बलवन्तराव है और रावजीका पुत्रहै स्याहीडालनेका कारणयहथा कियह रुपया११९॥) सालिमके नामलिखा था जब विषदियेजानेका शोरपड़ा तोउससमय मैंनेस्याही डलवादीथी इसीप्रकारऔर स्थानोंपरभी जहांऐसा रुपयालिखाथा स्याही डालदीगईथी साहब ऐडवकेटजनरलने उनपुलिन्दोंके कागजोंकोदेखा और जहां२ स्याहीपड़ीथी उसकी तसदीककी ॥

मैलवलसाहबने मुतरज्जिमसे कहाकि तुमकहीं२ गवाह का वर्णन छोड़जातेहो—गवाहने वर्णनकिया किजहां२ सालिमका नामआताथा अथवा किसीखर्चका ब्यौरानहींकिया जाताथा उसपर मैंस्याही डलवा देताथा यह सम्पूर्ण रुपया करनैलसाहबके विषदेने या रेज़ीडन्सी के नौकरोंको बांटनेमें खर्च हुवा ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

वेलनटायनसाहब के प्रश्न गोदामोदर पंथ गवाह से किये ॥

प्र०—तुम कहतेहो कि जितने हिसाब तुमनेबनाये वहसब बनावटीहैं? उ०—बहुतसे बनावटीहैं सम्पूर्ण हिसाब बनावटके नहींहैं और जानबूझकर बनावटी बनायेगये । प्र०—यहहिसाबमहाराजासाहबकी आज्ञानुसार बनावटी बनायेगये? उ० महाराजासाहबकी आज्ञासे बनायेगये । प्र०—ऐसेअशुद्धहिसाबोंके बनानेके लिये तुमको समय २ पर आज्ञा होतीथीया खास २ हिसाब केलिये । उ०—जैसा मौक़ा होता था मुझको आज्ञामिलतीथी महाराजासाहबसे मैं पूछलेताथा कि अमुक विषय में क्या आज्ञा है । प्र०—तुम महाराजा साहबसे पूछ करके हिसाबों को गलत किया करते थे? उ०—हां जैसा मौक़ा होताथा क्योंकि महाराजासाहब वाकिफहोतेथे जिस कामके वास्ते रुपयादिया जाताथा । प्र०—तुम वाकिफहोतेथे या महाराजासाहब? उ०—महाराजासाहब । प्र०—जब तुमने महाराजासाहबसे आज्ञा मांगी उन्होंने आज्ञादी थी? उ० हां । प्र०—यदि इन हिसाबों की तहक़ीक़ात होती तो तुम किसतरह साबित करसक्ते थे कि हिसाबों के ग़लत करने के लिये तुमने महाराजासाहबसे आज्ञालेली उ०—इससे अधिक और क्या साबित करसक्ता कि सम्पूर्णकार्य्य महाराजासाहब कि आज्ञानुकूल कियाकरता था । प्र०—यहबयान तुम्हाराहै परन्तु मैं पूछताहूं कि जैसे महाराजासाहब तुमपर यह अपराध धरते कि तुम उनको लूटतेहो और लूटनेके प्रयोजनसे तुम हिसाबको बदलते हो तो तुम क्योंकर साबित करते कि महाराजा साहब की आज्ञासे हिसाबको बदला? उ०—जो रुपया दिया जाताथा चार किताबोंमें लिखा जाताथा और इसके विशेष देने और लेनेवाला मौजूद था । प्र०—तुम इस हिसाबकेबदलनेमें महाराजा साहबकीआज्ञाकाहोना क्योंकर प्रकटकरसक्ते थे जो तुम कहतेहो वह तुम्हारा जुबानीबयान है? उ०—सिवा हुक्म जुबानी महाराजा साहबके और कुछ

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मेरेपास सुबूत नथा। प्र०—जोप्रश्न मैं तुमसे करता हूं उसका यह उत्तर नहीं जो तुमनेदिया मैं पूछताहूं किसिवायतुम्हारे बयान और महाराजासाहबकी आज्ञाकेकोईलिखीहुई आज्ञा तुम्हारेपासहै ? उ०—ऐसी आज्ञाओं से महाराजासाहब के लाखोंरुपये खर्चहुयेहैं। प्र०—और हिसाबअशुद्धकियागया ? उ०-जबकभी गलतकरनेका हैकाहुआ। प्र०-और तुमनेहिसाब गलत किया ? उ०—महाराजा साहबकी आज्ञासे कारकूनसे हिसाब गलतकिया औरबदलायागया। प्र०—परन्तु मैंतुमसेयह बात पूछताहूं तुमउसका समझबूझकर उत्तरदोकि जोतुमपर महाराजासाहब अथवा कोई और मनुष्य यह अपराधलगाता कि तुम महाराजा साहब को लूटेजाते होतो तुमकिस प्रकार साबितकरते कि तुमको महाराजासाहबने इसभांतिके हिसाब गलतकरनेका मजाज़किया था ? उ०-कागजात से आपही साबित होसक्ता था। प्र०-सिवा कागजातके और किसी भांति सेभी साबितहोसक्ता था ? उ०—कागज दिहानीदपर रसीद लिखीहुई है। प्र०—तुम्हारे पास कोईलेख महाराजा साहब काहै जिसमेंउन्होंने तुमको ऐसा अधिकार दियाहो ? उ०—मुहाफिजदफ़्तर साहबके निकटहोगा मेरेपास कोई ऐसालेख नहींहै। प्र०—मैंचाहताहूं कितुम इसप्रकारका कोईलेखदि खाओ जिससे विदितहो कि महाराजा साहबने तुमकोअधि कार दियाथा कि ऐसीकितावोंको गलतकरो। उ०—मेरेनि-कटकोई ऐसालेख महाराजासाहबका नहींहै परन्तु लक्ष्मी-बाई जोमहाराजासाहबकी तीसरीरानीहैं उनकालेखहै। प्र० तुम्हारे निकट महाराजासाहब का कोईऐसा दस्तखती लेख नहींहै ? उ०—नहीं—लक्ष्मीबाई महारानकी आज्ञासे दस्त-खत करतीथीं और ऐसीआज्ञाओंपर महाराजासाहबकी मो-हरभी है ? प्र०—कोई दस्तखती कागज महाराजा साहबका तुम्हारेनिकट है ? उ०—चारवर्षसे प्राईवेट सीक्रेटरी का म-हकमा मेरेआधीन हुवाहै उससमयसे महाराजासाहबनेकोई

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कागज मेरे महकमेका दस्तखत नहीं किया। प्र०—परन्तु मैं तुमसे पूछताहूं कि यदि तुमपर लेखेनेका अपराध क़ायमकिया जाताता तुमकिसप्रकार उससे छूटते ? उ०—एक२ हिसाब पांचजगह लिखाजाताथा मैंउसोसेसाबितकरता कियहरुपया खर्चहुआहै मैने तग़ल्लुब नहींकिया। प्र०—कच्चरक्रमें महाराजासाहबके हाथकी लिखीहुईभी हिसाबमेंहैं ? उ०—जबजमाखर्चका नक्शातय्यार होताथा तो महाराजा साहब उसपर दस्तखत कियाकरतेथे यहनक्शा महाराजासाहबके दस्तखतों के वास्ते हरवर्षमें तय्यार हुआकरताथा। प्र०—ऐसे दस्तखत का कोईकाग़ज तुम्हारेनिकटहै ? उ०— हां। प्र०—तुमउसको पेशकरसक्तेहो ? उ०—जो आप मंगवावें तो आसक्ताहै। प्र०—अच्छा इसबातको फिर देखाजायगा तुमकोकभी हिसाबकीजांचहोनेका सन्देहहुआथा ? उ०-किसमनुष्यसे। प्र०-शायदकोई मनुष्य जांचकरता ? उ०-कुरक्री होनेके पहिलेमहाराजासाहबके सिवायकोई मनुष्यमेरेहिसाबकी जांचकरनेका अधिकारी नथा।प्र०—पुलिसनेतुमसे कहदियाथाकि तुम्हारे हिसाबकी जांचहोगी ? उ०—कुरक्रीकेपश्चात् पुलिसने वहकागजमुझको दिखायाथा किजिसपर स्याहीपड़ीथी औरकहाथा किइन हिसाबोंकीजांचहोगी। प्र०—पुलिसवालोंने क्यातुमसे यहकहाथा किखासतुम्हारे हिसाबकी जांचहोगी? उ०—पुलिसने यहकहाथा किसबहिसाबोंकीजांचहोगी। प्र०—तुमकोक्या मासिकमिलताथा ? उ०—मुझे दोसौरुपये मासिकमिलतेथे औरमेरेभाईको चारसौ रुपये मिलतेथे। प्र०—मैं पूछताहूंकि तुमनेयहसब बातेंक्योंकर क़बूलकीं और तुमतो उसीदिन पकड़े गयेथे जिसदिन महाराजासाहब पकड़ेगयेथे ? उ०—मैंउसी दिनसंध्याको पकड़ागयाथा। प्र०—तुमको मालूम होगा कि रावजी और नरसूआदिके इजहार मिस्टरसूटर साहबनेलिये हैं ? उ०—हांमैं यहखबरें सुनाकरताथा। प्र०—मैंसमझताहूं कि यहखबरें तुमकोबहुत दिलचस्प मालूमहुवा करती होंगी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उ०—मुझको जोकुछ खबर मिलतीथी महाराजासाहबको सुना देताथा। प्र०—परन्तु तुमको भी तो यह बातें पसन्द आती होंगी? उ०—मुझसे उनबातोंका सम्बन्ध नथा। प्र०—इसविषय में हम फिरबार्त्ता करलेंगे—परन्तु खूनियोंके समूहमें तुमभीतो एकमनुष्यथे और तुमने मारडालनेके लियेसहायता भीकी? उ०—हांमैंने सहायता की थी। प्र०—पस मैं समझताहूं कि तुमको ऐसेहालातके सुननेका अपनातअल्लुकभीथा? उ०—हां अपने और महाराजासाहबके बचानेकेवास्ते मुझको तअल्लुक था। प्र०—शायद तुमको अपना खयाल कमहोगा महाराजा साहबके बचानेका अधिकखयाल होगा? उ०—हांमैंयहसमझा था कि चूंकिअब कुलकुर्की होगईहै मैंबचजाऊंगा। प्र०—जो तुमकोअपना खयालकमथा और महाराजा साहबके बचानेका अधिक विचारथा तुमनेपूछाथा कि रावजी आदिने क्या इज़-हारदिये? उ०—मैंनगर की खबरें सुनाकरताथा जबतकसालिम छूटारहा वहसम्पूर्ण वृत्तान्त मुझसेआकर कहाकरताथा। प्र०—तुमने उसशीशीका हालभीसुनाहोगा जिस्कावर्णनराव-जीनेकिया? उ०—मैंक़ैदमेंथा किसतरह सुनता। प्र०—परन्तु मैंउससमयका जिक्रकरताहूं जबतुम क़ैदनथे अर्थात्रावजीके इज़हारउस समय लियेथे जबतुम क़ैदनहीं हुयेथे? उ०—मैंने कुछहाल शीशीका नहींसुना। प्र०—क्यातुम कहतेहो किमैंने नहींसुना कि रावजीको शीशीदीगई सावधान होकरउत्तर दो उ०—नहींमुझसे किसीनेऐसा नहींकहा। प्र०—किसी मनुष्य नेतुमसे शीशीका हालनहीं कहा? उ०—नहींकहा। प्र०—तुमने पुड़ियाका कुछहाल सुनाथा कि करनैलफियरसाहबके गिलास में डालीगई? उ०—हां। प्र०—तुमनेसुनाथा कि उसमें संखिया थी? उ०—हां। प्र०—औरपिसाहुआ हीराउसमेंहै? उ०—हां प्र०—और यहकिरावजीने इसबात काइक़रार कियाहै किमैंने विषकी पुड़ियाकरनैलफियरसाहबके गिलासमें डालदी और उनकें मारडालनेकाउद्योगकिया? उ०—हां सुनहै महाराजा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

साहबनेकहाथा। प्र०—जबतुमको मालूमहुआ किरावजी आदिकपहिरेमेंहैं औरउनहीलोगोंमेंसे तुमभीथे तुमनेवह कागज जिसमें इसप्रकारका जिक्रथा किसवास्ते फाड़नहींडाले? उ० क्याकौनकागजइससुआमिलेकाथा। प्र०—मुझकोतुम्हारेउलटे प्रश्नकरने सेआश्चर्य्य नहींआया तुमनेवर्णनकियाहैकि कईकागजइससुआमिलेकेथे? उ०—क्याआपउनकागजोंकेतरफइशारहकरतेहैं जिनकीनिस्बत मैंइजहारदेचुकाहूं। प्र०—क्यातुमको कुछसंदेह है कि उन कागजों की तरफमेरा इशारह नहीं है उ०—पहिले मुझको समझलेना चाहिये,जो वह कागज एक जगहहोतेतो मैं उनको फाड़डालता। प्र०—जो कुछवर्णनकरते होजो वहठीकहैतो तुम्हारी कारखाई से अच्छीतरह मालूम होताहै कि वास्तव में विषदिया गया? उ०—हां। प्र०—तुमने उनको क्यों फाड़नहीं डाला? उ०—केवल दो कागजों में रिशवतका जिक्रथा। प्र०—तुमयह जानतेथे कि रिशवत के विषय में तहक़ीक़ात होरही है? उ०—हां मैं जानता था। प्र०—क्या में तहक़ीक़ात होरही है? उ०—हां मैं जानता था। प्र०—क्या तुमइस विषय में सौगन्द खासक्तेहो कि तुमको मालूमथा कि मिस्टरस्कटर साहब तहक़ीक़ात कर रहे हैं? उ०—हांमैं शपथ खासक्ताहूं। प्र०—उससमय तुमनेक्यों ऐसे कागजनहींफाड़डाले क्योंकि वह सब कागज तुम्हारे अधिकार मेंथे? उ०—सबकागज चाकनहीं होसक्ते थे क्योंकि अलग २ महकमों मेंथे सर्व स्थानोंसे उनकोसंग्रह करकेफाड़ डालना असम्भवितथा। प्र० कौनसी बात उसमें बाधकथी कितुमने उनकागजों को नहीं फाड़ा? उ०—जबरुपये कीदिहानीद होतीथीतो दश २ जगह लिखाजाताथा इससूरतमें निहायत दिक्कतथी कि सबजगह से कागज संग्रह होकर फाड़डाले जाते यह सुनकर सरजन्द बेलनटायन साहबने सिक्रेटरीसे सम्पूर्ण कागज मंगवाये और अपने रूबरू रख कर कहा कि यह कागज अलग २ थे और अबएक किताबमें सिलेहुये हैं और उनके साथ तर्जुमा लगा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

हुआ है यदि अलग २ करके देखे जावें तो उनकी संख्या कम है कौन सी बात बाधक थी कि तुमने कागज़ नहीं फाड़े। प्र० जो रुपया एक जगह दिया जाता तो फट सक्ते थे परन्तु भिन्न भिन्न समय और भिन्न भिन्न जगहपर रुपया दिया गया फिर किसतरह फटसक्तेथे। प्र०—परन्तु मैं जानताहूं कि एक प्रश्नका तुम उत्तरदो बयान करो कौनसी बात बाधकथी कि तुमने कागजनहीं फाड़े जिनकागजोंने तुम्हारे और महाराजा साहबके अपराधोंकी सिदाकत की? उ०—मुजको इतना मावकाश नहीं था कि उन कागजों को फाड़ता। प्र०—अवकाशसे तुम्हारा क्या मतलबहै? उ०—मुझे ऐसा अवसर न मिलाफिर मैंक्योंकर फाड़ डालता। प्र०—जोमनुष्य आपके नगरमें किसीको विषदेता है औरउसपर अपराध साबितहोजाताहै तोउसको क्यादण्डदिया जाताहै? उ०—दण्डदिया जाताहै। प्र०—यहतो मैंभीजानताहूं किदण्डदिया जाताहै परन्तु यहबताओ किफांसी दीजातीहै वाकौनसा दण्डदियाजाताहै? उ०—दण्ड दिया जाताहै परन्तु मैंने क़ानून नहीं देखा। प्र०—तुमको कुछ भीखयाल है किक्या दण्ड दिया जाता है? उ०—मैं कुछ नहीं जानता। प्र०—मुझ को खयालथा कि तुम जानतेहोगे परन्तु बतलाओ कि तुम्हारे विचारसे क्या दण्डदिया जाताहै? उ०—जो कुछकि जजलोग उचित समझते हैं दण्ड दिया जाताहै। प्र०—कभी किसी को फांसीभी दीजातीहै? उ०—बड़ौदे में किसीको फांसी नहीं दी जाती है मैने तो किसी को फांसी दिये जाते हुयेनहीं सुना। प्र०—परन्तु तुमजानतेहोकितुमको अपनीगरदन का भीखौफहै? उ०—मेरीगरदन का। प्र०—हांभयथा परअबनहीं रहा? उ० मैंआपसे वर्णनकर चुकाहूं कि जिस वजहसे मैं ने चाक नहीं किया। प्र०—मुझसे फिर बयान करो? उ०—ऐसे कागज कई महकमोंमें थे मुझको फाड़नेका अवसरनमिला। प्र०—वहसब कागज तुम्हारे अधिकारमें थे? उ०—हां। प्र०—तुमवह कागज़

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मंगा सक्ते थे? उ०—जब २ महाराजा साहबको किसी बातके दरयाफ़ करनेकी अवश्यकता होतोथी तोमंगालिये जाते थे। प्र०—महाराजा साहबका नाममतलो परतुमको कौनसी बात बाधकथीकि तुमनें नहींमंगवाये? उ०—वह मेरे क़ब्जे में थे। प्र०वहकागजकि तुम्हारे क़बजेमेंथे श्रौरतुम जानतेथे किउन्हीं कागजोंसेमारनेके उद्योगसेपकड़े जाश्रोगे तोतुमने क्योंउनको नहींफाड़ा? उ०—मुझको खयालथाकि कुर्की नहोगी श्रौर नमैं जानताथा किऐसासमय कभीश्रावेगा जोश्राजहै। प्र०—इसी कारण तुमने कागज न फ़ाड़े इसके सिवा कोई श्रौर कारण नथा? उ०—हांकोई श्रौर ऐसाहेतुनथा। प्र०—मेहरबानीकरके मुझको उत्तरदो कि तुमनेक्यों खयालनहींकियाकितुमपर ऐसा समयनश्रवेगाजोतुमने कागज़ नहींफाड़ेजोकुछ कागजमशकूक करदियेथे? उ०—मैंनेकई हिसाबोंपर स्याहीडाल दीथी। प्र० किसी बातकेछिपानेकेवास्ते? उ०—हां। प्र०—इसबांतकातश्रल्लुक कुछसालिमसेभी था? उ०—हां। प्र०—श्रौरइसबातकेछिपाने का तश्रल्लुक इस काररावईसे था? उ०—हांछिपाने केलिये। प्र०—तुमने कुछकिस वास्ते मशकूककिये श्रौर सब काग़ज़ात क्यों नहींफाड़े? उ०—मैंने कारकुन को श्राज्ञादेदी थी कि जैसाउचितहो करो। प्र०—परन्तु एक प्रश्न तुमसे करता हूं जोसब बातोंका सारांशहै बतलाश्रो कि तुमजानतेहो कि तुमने यहसबबातें महाराजासाहबके फंसानेकेवास्ते ईजाद कीथीं? उ०—मैंने यहसबबातेंइसलियेकीथीं कियदिमहाराजासाहब पकड़ेजावें तो छूटजावें। प्र०—तुम सौगन्धखासक्तेहोकि यह सबउपाय तुमने महाराजासाहबके माखूज करने को ईजाद नहीं किये? उ०—नहीं —महाराज के अपराधी ठहरने के लिये यह उपाय नहीं किये। प्र०—सरदिनकररावने कहा कागज़ोंकी पहिली हालतसे महाराजासाहब माखूज नहीं होसक्तेथे परन्तु जबतुमने रकमों पर स्याहीडालदी तो अपराधी बनने का कारणहोगया तुमने ऐसा क्यों किया? उ०

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

महाराजा साहबने मुझसे कहाकि तुम इनरकमों को मश-कूककरो तो मैंने स्याहीडालदी—सरजन्वेलनटायन साहबने गवाहसे कहाकि मेरी ओर देखो मैंभी वही प्रश्नकरूंगा जो सरदिनकरराव ने किया। प्र०—जिसभांतिकी तुमरकमोंको निकालतेहो अर्थात्बड़े २ धब्बे स्याहीके हिसाबपर डालकर तो लोगोंका ध्यान शीघ्रही स्याहीके धब्बोंपरजायगा ? उ० मुझको उससमय इसबातका खयालन था—श्रीमान् महाराजासेंधिया ने कहा—पांचजगह हिसाब रहाकरता था पांचों जगहके हिसाब में ऐसेबड़े २ धब्बे पड़ेहुये हैं—परन्तु यहप्रश्न गवाहसे नहीं कियागया। प्र०—सरजन्वेलनटायनसाहब ने कहा मैं तुमसे दो एक और प्रश्नकरूंगा क्या तुमको इसबात का ध्याननथा कि स्याहीके बड़े २ धब्बे बुरे मालूमहोंगे ? उ० अबमुझको भी बेमौका मालूमहोते हैं परन्तु उससमय कुछ इसबातका ध्याननथा। प्र०—यदि तुमजानतेथे कि कुछतह-क़ीकातनहोगी तो स्याहीकेडालने का क्या कारणथा ? उ० यहसबब था कि किसी ग़ैर आदमीको हाल न मालूमहो। प्र०—मुझसे वर्णनकरो कितुम अच्छीतरह जानते थे कि जब तुम इकरार न करोगे जेलखानेसे बाहर न निकलोगे ? उ० हां मैं जानता था। प्र०—प्रथम तुम गोरोंके पहिरे में थे ? उ०—दोदिनतक सेनापतीकी कचहरीमेंरहा। प्र०—तुमअकेले वहांक़ैद रहे वा कोई और भी मनुष्यतुम्हारे साथथा ? उ० मेरेसाथ केवलएक सिपाहीथा। प्र०—केवलदोदिन और दो रात क़ैदरहे ? उ०—हां। प्र०—मैंजानताहूं कि रातको तुम पलंगपर सोतेहोगे ? उ०—जिसजगह मैंदिनको बैठाथावहीं रात्रिको सोरहा। प्र०—सिपाहीतुम्हारे साथरहनेकेवास्तेमिला था ? उ०—उस सिपाहीका मुझ पर पहिराथा ताकि मेरी हिफ़ाजतकरे और मैंभागनजाऊं। प्र०—इसके उपरान्ततुम्हारे साथक्या सुलूकहुआ ? उ०—मैं वहां से रेज़ीडन्सी में आया। प्र०—वहांसे तुम्हारे साथ लोगोंने क्याकिया ? उ०

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मुझको एक कमरेमें रक्खा जहां सिपाहियोंका पहिरा था। प्र०—पुलिसके हवालेकब से कियेगये? उ०—१६—दिनकेपश्चात् जब मैंने सब बातोंका इक़रार किया। प्र०—आजकल जबतुम अदालतमें नहींहोते हो क्या२करतेहो? उ०—मैं एक डेरे मेंरहा करताहूं जबवहां मनुष्य कहतेहैं बैठजाओ बैठजाता हूं जबखड़े होनेको कहतेहैं खड़ाहोजाता हूं। प्र०—अबतुम पुलिसकी हिरासतमें नहींहो? उ०—जहांमैंहूं वहांपुलिस के लोगोंका पहिराहै। प्र०—उनका क्यानाम है? उ०—मैं नहींजानता चौथेदिन पहिराबदला जाताहै? प्र०—जबयह मुकद्दमापूर्ण होजायगा तोतुम्हारा क्याहोगा? उ०—जोसाहब जजतजवीज़ करेंगेवही होगा। प्र०—स्पष्टरीतिसे कहोकिइस के क्याअर्थहै हैं? उ०—जो किजज साहिबों की रायहोगी वहीहोगा। प्र०—हम नहीं समझते कि तुम्हाराक्या मतलब है? उ०—मेरा यह अपराध है कि मैंनेसब बातोंका इकरार करलिया यदि मैं निर्दोष हूं तो मैं छूटजाऊंगा नहीं तो जो कुछदण्ड होगामालूम होजायगा। प्र०—तुम्हारामतलब यहहैकिजिस प्रकार तड़कोञ्ञातकी क़ुदादहोगी उसीप्रकार दण्डहोगायदिकमीशनके मेम्बरतुम्हारी एकबातका भीनिश्चय नकरेंतो क्या होगा? उ०—मुझकोदण्ड मिलेगा। प्र०—यदि तुम्हारे बयान पर निश्चय करेंतो क्याहोगा? उ०—मुझको छोड़देंगे और छूटनेका सार्टीफिकटदेंगे। प्र०—मुजसेवर्णन करोकि प्रथममें किसतारीखको करनेलफियर साहबकेविषदे नेका उद्योग हुआ था और इसविषय मेंकौन २ उपाय किये गयेथे? उ०—जोउपाय कियेगये उनकामैं इज़हारमें वर्णन कर चुकाहूं। प्र०—परजो तुमने मिस्टररिचीसाहब के सम्मुख वर्णन कियाथा वहमेरे रूबरूभी वर्णनकरोकि कितने उपाय विषके देनेमें हुये? उ०—पांचउपाय कियेगयेअर्थात् चार तोले संखिया दो बेर करके और दोतोले पिसा हुवा हीरा और एक शीशीदवा की तय्यारकी गई। प्र०—जिस शीशीमें

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

तुम हकीमकी दवाकहते हो उसमें क्या था ? उ०—उसमें कालेसर्प और काले चींटोंकासतथा । प्र०—इसशीशीकाकौन साइमलाथा पहिला, दूसरा, तीसरा, चौथा, वा पांचवां,? उ०—मुझेस्मर्ण नहींकि कौनसाथा । प्र०--यादकरोकि कौन सा हमलाथा ? उ०—मैं किसतरह याद करसक्ता हूं । प्र० मैं उसबयान को देखरहा हूं जो तुमने मिस्टररिचीसाहब के रूबरू बयानकियाथा कि तीनबेर कारनैलफियरसाहबके मारने के वास्ते उद्योगकियागया--प्रथमउसदवासेजो हकीमने बनाई थी, द्वितीय फोड़े के मरहममें विष डालागया, तृतीय, संखिये के जरियेसे जब शर्बतमें विषडालागया ? उ०—हां मैंनेयही वर्णनकिया था । प्र०—क्या यह बातठीक है ? उ०—गलतकिसतरहहोसक्ती है । प्र०—किस तारीख़ को हकीमकेपास से तुम्हारेपास शीशीआईथी ? उ०—मुझेस्मर्णनहीं । प्र०—कोई तारीख़ तो यादहोगी तुम्हारी यादबहुतअच्छी है वर्णनकरो उ०—शायद आश्विनका महीना था ॥

मुतरज्जिमसे पूछागया कि आश्विन कबहोता है—मुतरज्जिमने कहाकि अक्टूबर और नवम्बरमें होता है । प्र०—दिवालीके कितनेदिन पहिले ? उ०—इतना मुझको स्मर्णहोता तो मैं तारीख़ बयान करदेता ॥

सरजन्टबेलनटायनसाहब ने कहा कि माइलार्ड—मुझको गवाहसे और भी प्रश्नकरनेहैं परन्तु अबदोबजगयेहैं इसलिये टिफनका समय आगया, सोकमीशनके मेम्बर टिफनखाने के लियेगये, जबटिफनखाकर आयेतो सरजन्टबेलनटायनसाहब फिर प्रश्न करने लगे ॥

प्र०—क्या संखियेके बेचने का निषेध था और महाराना साहबकी आज्ञाकेबिना नहीं बेचा जाताथा ? उ०—संखिया फौजदारीके महकमे से मिला करती थी । प्र०—महाराना साहबकी आज्ञासे सदा मिलती थी ? उ०—जो मनुष्य कि फौजदारीका प्रधानहै वह इसबात को जानता होगा । प्र०

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

तुम इसबातको नहींजानते ? उ०—मैंने कभी फौजदारी का काम नहींकिया इसलिये मैंनहीं जनता। प्र०—तुमयह नहीं जानतेकि महाराजासाहब की आज्ञासे जितनी कि संखिया की आवश्यकताहोती थी मिलसक्ती थी ? उ०—हांमहाराजासाहबकी आज्ञासे संखियामिलसक्ती थी। प्र०—फिरकिस वास्ते महाराजासाहबकी आज्ञासे तुमने संखिया न मंगवाई उ०—इरसुजनीवदयाने कहाकि महाराजासाहब से आज्ञा लेकर मैं संखिया दूंगा। प्र०—परन्तु जब तुमको महाराजा साहबने आज्ञादीथीतो फिरसंखियेका मंगानाकौन कठिनथा उ०—महाराजासाहबने केवल जुबानी आज्ञादीथी कोईलेख न था। प्र०—तुमने तहरीरी आज्ञाक्यों नहीं लेली ? उ०—महाराजासाहबने मुझसेकहा था कि तुमलिखभेजो कि घोड़े को दवाकेलिये संखियेकी आवश्यकता है। प्र०—तुमनेनूरुद्दीन बौहरेको हालमें नहीं देखाया ? उ०—इस हालके पूछने से आपका क्या मतलब है। प्र०—तुम जानते हो कि इसहालके पूछनेसे जोकुछ मेरामतलबहै ? उ०—जबमैं छूटाछुवाया या जबसे कि मैं क़ैदहूं। प्र०—तुमने नूरुद्दीनको अन्तमें कबदेखा था ? उ०—मैंआपका मतलब नहींसमझा। प्र०—तुममेरेप्रश्न को टालतेहो और उत्तरदेना नहींचाहते साहबप्रेज़ीडण्ट ने कहाकि गवाहसे साफजवाब लियाजाय ? उ०—जबमैंक़ैद था उससमय नूरुद्दीनको मेरे निकट लायेथे। प्र०—इसबात को कितनासमयबीता ? उ०—मुझेस्मर्णनहीं। प्र०—इसबातसे तुम्हारा क्यामतलबहैकि दोतीनदिनसे तुमनेउसकोनहींदेखा उ०—नहीं। प्र०—अखीर हफ्तेमेंउसको देखा ? उ०—नहीं। प्र०—जबतुम्हारा उसकासाम्हनाहुवातो उसनेतुमसे कहाथा कि तुम बराबर झूठबोलतेहो ? उ०—उसने कोईबात मुझसे ऐसी नहींकही जोकुछ उसनेमुझसे कहाउसको मैंवर्णनकरचुका। प्र०—तुमनेउसके रूबरू संखिये के मोललेनेका वर्णनकियाथा ? उ०—हांमैने उसकेरूबरू कहाथा किसंखिया

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मोललीगई। प्र०—क्याउसनेतुमसे कहाथाकि तुमझूठबोलतेहो? उ०—मेरेरूबरू उसनेकुछ नहींकहाथा। प्र०—उसने तुम्हारेरूबरू इन्कार नहीं किया? उ०—वहमेरे रूबरूपेश कियागया और फिरउसको लेगये। प्र०—तुम्हारेरूबरू किसनेपेश कियाथा? उ०—एकअफ्सरथा परन्तु मैंउसकोनहीं जानता कि कौनथा। प्र०—हिन्दुस्तानी अफ्सरथा? उ०—हां प्र०—अकबरअली था? उ०—स्मर्णनहीं। प्र०—अब्दुलअली? उ०—यादनहीं। प्र०—ध्यानकरके यादकरो अकबरअलीथा उ०—इससमयक्योंकर यादआसक्ता है। प्र०—गजानन्दवतिल था? उ०—वहनथा। प्र०—शायद अकबरअली या अब्दुलअलीहोगा? उ०—मुझको स्मर्णनहीं शायदहो। प्र०—पसवह अफ्सर नूरुद्दीनको तुम्हारे सम्मुख लाये और कहा कि इस मनुष्य से तुमनेसंखिया मोललो थी? उ०—हां प्र०—उसको फिर जेलखानेकेलेगये? उ०—मुझको मालूमनहीं कि कहां लेगये। प्र०—उसकोकोई अफ्सरलेगया? उ०—हां। प्र०—तुम्हारेसम्मुख गजाबाभी लायागया? उ०—हां प्र०—अकबरअली उसकोलायाथा? उ०—अकबरअली नहींलाया। प्र० फिरकौन लाया था? उ०—गजानन्दवतिल लाया था। प्र० जो कुछउसकी निस्बत तुम्हारा बयानथा उसकेरूबरूभी तुमने उससे कहा था? ०—हां मैंने कहा और वह बैठा हुआ सुना किया। प्र०—उसको भी फिर तुम्हारे पाससे लेगये? उ०—हांवहभी भेजदियागया। प्र०—तुमने वर्णनकिया है कि तुमने सालिमको शीशीदोथी? उ०—हां। प्र०—तुमजानतेथे कि उसमेंविषहै? उ०—हां। प्र०—तुमने वर्णनकिया है किजब शीशीदी गई उससमय महाराजासाहब उपस्थित थे? उ० गजाबा महाराजासाहब की आज्ञानुकूल शीशी लाया था प्रेजीडस्टसाहबनेपूछाक्या महाराजासाहबउससमयउपस्थित थे गवाहने कहाकि अपने इजहारमें मैंने बयानकियाहै कि गजाबामेरेघरपर शीशीलायाथा मिस्टरमैलवलसाहबने कहा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

गवाहसे इसतरह पूछा जायकि तुमने वहशीशी कब दीथी ? उ०—मैं महाराजासाहबके साथथा जिससमय अपनेघर को सालिमगया वहशीशी देदीथी। प्र०—सरजन्द बेलनटायनसाहबनेकहाक्यातुमनहीं कहसक्तेकिजिससमय शीशीदीगईउस समय महाराजासाहब वर्त्तमानथे ? उ०—उससमय महाराजा साहब मौजूद थे मैंने अपने घरपर सालिमको शीशी दीथी। प्र०—शीशीके देनेकेसमय तुमने सालिमसे क्याकहाथा ? उ०—मैंने कहाथा कि इसशीशीको रावजीके पासलेजाओ। प्र०—क्या तुमने कहाथा कि रावजी इसशीशी को क्याकरे ? उ०—कुछकहनेकीआवश्यकतानथी वहजानताथा जिसवास्ते भेजीगई। प्र०—तुमनेउससेपहिलेकभी कहाथा ? उ०—नहीं। प्र०—तुमजानतेथे कि शीशी किस वास्ते दीगई ? उ०—हां। प्र०—बयानकरो किसवास्तेथी ? उ०—इसवास्ते किशीशीकी दवाजल से डालदी जायकि स्नान करतेही शरीर में फफोले पड़जावें। प्र०—इससे तुम्हारा यहमतलबहै कि करनैल फियर साहबकी देहमें फफोलेपड़जावें ? उ०—हां। प्र०—किसतरह से फफोलेपड़जाते ? उ०—जबशीशीकी दवापानीमें पड़तीतो निस्संदेहफफोलेपड़जाते। प्र०—तुमने फिर सुना कि शीशीकी दवाजलमें डालीगई ? उ०—मैंने नहींसुना मालूमनहीं कि डालीगई वा नहीं। प्र०—यादकरो कि यहबात कबहुईथी ? उ०—दसहरेके कईदिनपहिले या थोड़ेदिनपीछे। प्र०—तुमने कभीनहींसुनाकि उसशीशीकीदवाक्याहुई ? उ०—मैंनेकभी नहींसुना। प्र०—नतुमने कभीपूछा ? उ०—नहीं। प्र०—यशवन्तसदैव महलमेंआयाकरताथा ? उ०—जबकोई कामहोता उसदिन आताथा और सोमवार और बृहस्पतिवारको सदा आयाकरता था। प्र०—और सालिम भी आयाकरता था ? उ०—हां जबकभी सवारीहुआ करतीथी आताथा अथवाजब कभी चिट्ठीजाता तो दरमियानमें भी आया करताथा। प्र० तुमने सालिमसे कभी नहीं पूछा किवो शीशी करनैलफियर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

साहबके मारडालनेको गईथी उसको तुमने क्या किया ? उ० कभीनहीं पूछा ? प्र०—क्यातुमको पूछनेकी कुछ आवश्यकता नथी ? उ०—नहीं ॥

ऐडवकेटजनरलनेदुबारह इज़हारदामोदरपंथके लिये ॥

तुमनेअभी मेरेसाथीसे कहाहैकि पांचजगह हिसाब लिखा जाताथा ? उ०—हांसाहबकहाहै। प्र०—वहपांच जगह किस-वास्तेहिसाबलिखेजातेथे ? उ०—साहबआपकोइससेक्यामतलब है। प्र०—मैंइस वास्तेपूछताहूं किमेरे साथीने तुमसेपूछाथा कितुमने उनपांचोंजगहके हिसाबोंकोखे क्योंनदिया और धब्बे क्योंडालदिये? उ०—महाराजासाहब जुबानीहुक्मकोआज्ञादिया करतेथे और उनके आज्ञापालन की यादद्दाश्त लिखी जाती थीऔरयादद्दाश्त जहांसेरुपयामिलताथा वहींहिसाबमें दरज होतीथी और फिरकच्चेखाते में दर्जहोती थी फिर पक्केखाते में दरजहोतीथी फिरथैलीवन्दहिसाबमें दर्ज होतीथी। प्र०—क्या वहसब हिसाब तुम्हारे अधिकार मेंथे ? उ०—हांसाहब। प्र० तुमनेतोवर्णन कियाहै किजबसे तुम नौकर हुयेहो एक लक्ष रुपया तुम्हारीतहवीलसे खर्चहुआहै क्यायहबात सचहै? उ० हांसाहबयहबातसचहै। प्र०—क्या सम्पूर्णखानगी हिसाब महा-राजकेतुम्हारेद्वारा होतेथे ? उ०—हांसाहब होतेथे। प्र०—इन चारवर्षतुम्हारी नौकरीकी अवधिमें जोमहराजनेहर मनुष्योंको रुपयादिलवाया किसीके दिलवानेकी तहरीरीआज्ञाभी महा-राजनेतुमकोदीथी ? उ०-नहीं। प्र०—महाराज तुम्हारीहिसाब कीफर्दमें भीदस्तखत कियाकरतेथे ? उ०—हांसाहब थैलीवन्द हिसाबकी फर्दपर दस्तखत करतेथे। प्र०—थैलीवन्द हिसाब क्यावस्तुहै ? उ०—रोजमर्रीकेखर्चका खाताहै। प्र०—तुमनेअभी कहा कि एक हिसाब तुमने खोडाला ? उ०—हां साहब वह हीरोंका हिसाब था। प्र०—तुम्हारे इजहार होनेके पहिले तुमनेनरसू और रावजीके इकरार करनेका हालसुनाथा ? उ०—हांसाहब सुनाथा। प्र०—मालूम होताहै कितुमनेइसो

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सबबसे वह कागजतलफ करडाला ? उ०—नहीं साहब। प्र० उससमयसे जबसेकितुमने इकारार कियाहै और तुम कैदहो तुमने रावजी औरनरसूके मह्नेकुछहालसुनाथा ? उ०—नहीं साहबकुछ नहींसुना। प्र०—तुम्हारे इजहार जोलियेगये तो क्या मरहठीभाषामेंलियेगयेथे? उ०—नहींसाहब उसका अंगरेजी भाषामें उलथा कियागयाथा। प्र०—तुमको वह रूबरू सुनादिया गया था ? उ०—हां साहबसुना दिया गयाथा। प्र०—तुमने उसपर दस्तखत कियेथे ? उ०—हांसाहब किये थे॥

इज़हार हेमचन्द फतह चन्द जौहरी।

मिस्टर अनबरारटी साहबने इस गवाहके इजहार लिये उसनेवर्णन किया कि मैं बड़ौदेमें रहता हूं औरपेशा जौहरी का करता हूं मैंने नानाजीवतिल को बहुधा देखाहै वहगायकवाड़ का नौकरहै न॰न॰ जीवतिल के पास मैं कभी जवाहिर नहीं लेगया। प्र०—जो तुम नहीं लेगये तो कौन लेगयाथा ? उ०—किस क़ीमतके। प्र०—तुम याकोई और मनुष्य तुम्हारी दूकान से कुछ जवाहिरात लेगये थे ? उ०—किसवक्त। प्र० आखिर दसहरेमें ? उ० मैंआखिर दसहरेमें कभीजवाहिरात नहीं लेगया। प्र०—नानाजीवतिल के पास तुम कभी हीरे नहीं लेगये ? उ०—नहीं। प्र०—महाराजा साहबके महल को कभी हीरे नहीं लेगये ? उ०—क्या आप हाल का ज़िक्र पूछतेहैं। प्र०—हांहालका ज़िक्रपूछताहूं ? उ०—नहींमैंहाल में कभीनहीं लेगया। प्र०—व्यतीत दसहरेमें लेगयेथे ? उ० हांलेगयाथा। प्र०—किसने मंगायेथे ? उ०—नानाजीवतिल नेकहा कि कुछहीरे लाओ। प्र०—तुमकुछहीरे लेगयेथे ? उ०—हांलेगयाथा परन्तु मुझेवापिसमिले। प्र०—तुम किसके पासलेगयेथे ? उ०—नानाजी वतिलके पास लेगयाथा। प्र० उसके उपरान्तभी फिरकभी लेगये ? उ०—नहीं। प्र०—तुम कभीमहाराजा साहबके महलमें हीरेलेगयेथे ? उ०—नहीं। प्र०—उसकेपीछे महाराजा साहबके महलको हीरेलेगयेथे ?

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उ०—नहीं।न।नाजी वतिलने तुमसेश्रन्तके दसहरेमें कुछहीरे लियेथे ? उ०—नहीं । प्र०—तुमने कुछरुपया हीरोंके मोलका पायाथा ? उ०—मैंनेकुछ रुपयानहीं पाया । प्र०—तुमनेदसहरेके दिनोंमेंभी नानाजी वतिलसेभी कुछरुपया नहींपाया ? उ०—हांमैंने कुछरुपया पायाथा परन्तु वहरुपया कार्तिकके महीनेकाथा ॥

गवाहने वर्णनकिया कि मैंविनायकराव व्यंकटेशको जानताहूं-आषाढ़वदी ७ वा ८ को उनकेपास कुछहीरे लेगयाथा वहगुलाबीहीरेथे और ऐसे २ छोटेथे कि एकरत्तीमें छः सात हीरेचढ़तेहैं मैंनेउनसे कुछरुपया पहिलेकाभी पायाथा—और गवाहने कहा कि मैंने सात हजार रुपयेकी हुण्डी शिवचन्द खुशहालचन्द के नामकीदी थी दो हजार रुपये एक मरतबा चारहजार एकमरतबा और दो हजारएक मरतबा और फिर दो हजारएक मरतबापाया इसप्रकार दसहजार रुपयापाया जबमैं महिलसे लौट आया तो जिन २ लोगोंके हीरेथे मैंने उनको लौटादिये उनदिनों मैंनेदामोदर पन्थको कभी नहीं देखा न मैंनेउनके हाथकभी हीरेबेचे औरन मैंने नानावतिल और विनायक राव के हाथ कभी बेचे मिस्टर सूटर साहबने जो मेरे इजहार लियेथे वहमुझे याद हैं मिस्टर अनवरारटी साहबने कहा कि माईलार्ड—यदिआज्ञा होतो उन इजहारातमें जो इस गवाहने मिस्टरसूटर साहबके रूबरू दिये हैं प्रश्नकिये जावें—साहबप्रेजीडण्टने कहाकि उन इजहारातको आपशहादतकी भांतिक़रार नहीं देसक्ते सरजन्ट बेलनटायन साहबनेकहा मैंऐसेसवालपर इन्कारकरताहूंसाहबप्रेजीडण्ट नेकहा जो इजहार इस गवाहने मिस्टरसूटरसाहबके रूबरू दियेहैं वहपढ़कर गवाहको सुनादिये जावें सरजन्टबेलनटायन साहबने कहा हुजूरउचित समझतेहैं किवह इजहार पढ़कर सुना दियेजावें प्रेजीडण्टसाहबने कहाकिहांपढ़करसुना दिये जावें अगरयह गवाहगवाहीको देनेमें तामुलकरताहै सरजन्द

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बेलनटायन साहबनेकहा मेरामतलब इसइन्कारसे यहहै कि चूंकिअबयह गवाहइस्कादत देनेसेंताम्मुल करता है इसलिये सरकारी कौंसलियोंके तजवीजके अनुसार उसके रूबरूपहिले के इजहार न पढ़ेजावें॥

साहब प्रेजीडण्टने कहा मैने कौंसिलके मेम्बरोंसे सलाह ली उनकीरायहै किजो ऐडवकेटजनरलगवाहको याददिलावें किउसने मिस्टर सूटरसाहबके रूबरू क्याइजहार दियेथे तोकुछ मुजायका नहींहै—मिस्टर अनवरारटी साहबनेगवाहसे प्रश्नकिया कि तुमने मिस्टरसूटरसाहबके रूबरूजो इजहारदिये थे वह गुजरातीभाषामें थे वा अंगरेजी में थे वा दोनों भाषाओंमें? उ०—मेरेइजहार गुजरातीभाषामें हुयेथे प्र०—वहइजहार तुमकोपढ़कर सुनादियेगयेथे? उ०—वह इजहार आपही सूटरसाहबने लिखेथे। प्र०—तुमकोपढ़कर सुनादिये गयेथे वा तुमने आपही उनकोपढ़ा? उ०—संध्या को इजहारलिखेगये और मुझसे दस्तखत करायेथे परन्तुसुनायेनहींगये मैंजानताहूंकि उसदिन मेराबयान ठीक२नहीं लिखागया मुझसेजबरदस्ती दस्तखतकरालियेथे। प्र०—तुमने सरल्यूइसपीली साहबके रूबरूदस्तखत नहींकिये? उ०—गजानन्दवतिलने मुझसेकहाकि तुमकुछ नबोलो और मुखसेकुछ बात न निकालो और दस्तखतकरदो गवाहसे फिरयही प्रश्न कियागया उसनेकहा कि सरल्यूइसपीली साहबकेरूबरू सुनकर पढ़कर नहींसुनायेगये। प्र०—क्या तुमने सरल्यूइस पीली साहब के रूबरू अपनेइजहार दस्तखत नहींकिये? उ०—नहीं गवाहको एककागज़ दियागया और पूछागया कियहइजहार तुम्हारा और दस्तखततुम्हारे हैं वानहीं गवाहने कहाकिनमेरे यह इजहार हैं नमेरेयहदस्तखत हैं गवाहसे फिरकहा गया अच्छीतरह ध्यानकर कहोसो गवाहनेबहुतदेरके पीछे कहा कि हां यह मेरे दस्तखत हैं॥

साहब प्रेजीडन्टने मुतरज्जिमसे कहा कि गवाहने अपने

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

दस्तखत होनेसे पहिले क्या इन्कार कियाथा मुलज्जिमनेकहा कि हां दस्तखतसे और उनदोलकीरोंसे जो दस्तखत के ऊपर हैं इन्कार किया था, साहबप्रेजीडगटने कहा क्या इसगवाह ने कहाथा कि मेरे दस्तखत नहीं हैं, मुतरज्जिम ने कहा हां, गवाहने यही कहा था मिस्टर अनवरारटो साहब गवाह से फिर पूछनेलगे। प्र०—यहदस्तखत और जोलकीर दस्तखत के ऊपर हैं तुम्हारी लिखीहुई है? उ०—हां मुतरज्जिमसे कहा गयाकि दस्तखतकेऊपर जोसतरलिखीहै उसको पढ़ो सोमुतरज्जिमने उसकोपढ़ा उसकामतलब यहथाकि मेरे रूबरू इज़हारपढ़ेगये और सूटरसाहबके रूबरू दस्तखतकरता हूं, इज़हारठीकहैं, लिखाहुआ ८ वीफरवरी सन् १८७५ ई०॥

गवाहने वर्णनकिया किमैंने लिखाथा परन्तु मुझपर बड़ा अन्यायहुआ था लाचारहोकर मुजको दस्तखतकरने पड़े मैं गुजरातीभाषा में भलीभांति लिखपढ़ नहीं सक्ता मैं उसको यथायोग्य समझा भी नहीं कि इजहारों में क्या लिखागया मिस्टर अनवरारटी साहब मुतरज्जिम से बोले कि गवाह से पूछोकितुमनेमिस्टर सूटरसाहबकेरूबरूयहकहाथा किदो तीन दिनपीछे दसहरेके नानाजीवतिलने जिनके आधीन गायकवार काजवाहिरखानाथामुझसे औरऔरजौहरियोंसे कहलाभेजा किहीरोंकी कुछकमीहै तुमलाओ सोमैं और जौहरीउसीदिन हीरोंकी कनीलेगयेथे परन्तु दूसरेदिन वापिस देगये दोदिन के उपरान्त फिर नानाजीवतिलने मुझसे हीरे की कनीमंगवाईसोमैं लेकरगया औरकीमतके ठहरनेके उपरान्तवहकनी मोललीगई इसके पांचचारदिन के अनन्तर नानाजीवतिलने फिर हीरेकी कनी मंगवाई परन्तु उसदिन जवाहिरखानेमें स्थितनथे विनायकराव नानाजीकेसाले वहांथे उन्होंने हीरों को तोला और मोल चुकाकर दामोदरपन्थके निकट लेगये दामोदरपन्थनेकहाकि मोलअधिकहै परन्तु उनकोमेरेनिकट रखजाओ अगरज़रूरत होगी तो मोललियेजायगे दोपुड़ियों

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

में हीरेथे उनमेंसे एकपुड़िया रक्खीगई और दोतीन दिनके पीछे दूसरी पुड़िया वापिसोमिली ॥

गवाहने वर्णनकिया कि मैंने मिस्टरसूटर साहबके रूबरू यह इजहार नहीं दियेजो उन्होंने चाहाहुआसे लिखालिया जोकुछ कि मुजको इससमय इजहार सुनाये गये सब अशुद्ध हैं मैंने सूटर साहबके सन्मुख कदापि ऐसावर्णन नहींकिया ॥

मिस्टर अनवरारटी साहबने कहा तुमनेयह इजहार नहीं दियेहैं कि दो तीन दिनके उपरांत जब कि मालूम हुआ कि करनैलफियर साहबके विष दिये जानेका उद्योग किया गया नानाजीवतिल ने मुजसेकहाथा कि तुमनेजो हीरोंकीकनीको हिसाबकी किताबमें लिखाहै उसवरक्को फाड़डालो क्योंकि किसीमनुष्यको यहसन्देहनहोकि करनैलफियरसाहबकोहीरें कीकनी दीगईयहबात सुनकरमुझे बड़ाभयहुवा उनवरक्कोंको जिनमेंहीरेकी कनीका हिसाबथा उसीसमय निकलवा डालें और वहांनये पत्रेलगादिये—यहसुनकर गवाहने कहा कि मैंने कभीऐसा बयानमिस्टर सूटरसाहबके सन्मुखनहीं किया मेरी किताबेंडेढ़ महीनेसे मिस्टरसूटर साहबके पासहैं ॥

मिस्टरअनवरारटी साहबनेकहा तुमने मिस्टर सूटरसाहबसे नहींकहा कि जो किताबें इससमय मेरेसाम्हने रक्खी हैं और जिनपर (ए) (बी) (सी) अक्षरोंका चिह्नहैं यहवही किताबेंहैं जिनमेंनवीन पत्रेलगायेगये ॥

गवाहनेकहाकि मैंनेनहीं कहा-मिस्टर अनवरारटीसाहबने कहा तुमनेमिस्टर सूटरसाहबसे यहनहींकहा कि असुकरकम असुकष्टष्टमेंमिलेगीगवाहनेकहाकिसरकमकाआपवर्णनकरते हैंमिस्टरअनवरारटीसाहबनेकहाकोईरकमजोकिताबमेंलिखी हो ? उ०—मैंने कुछनहीं लिखा। प्र०—तुमने मिस्टरसूटरसाहबके सम्मुख यह भी बयान नहीं किया कि हीरेकी कनीका मोल ३२७०) सिक्के बड़ौदाथे उनमेंसे ३०००) मुजकोनानाजी वतिल

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

नेदिये-यह रुपया दस और २४ पृष्ठमें जमा है ? उ०-मैंने मिस्टर सूटर साहब से नहीं कहा और मैंने कोई ऐसा इजहार नहीं दिया जबसे मैंने इजहार दिये मेरे मकानपर कोई पहिरा न था जहांमुझको जानेकी इच्छा होती थी वहां जाता था गवाहको एककिताब दीगई मिस्टरअनवरारटी साहबने कहा कि यह किताब सम्बत् १९३० के लिये जंगदबही है ? उ०-हांमुतरज्जिमने कहा जंगदबही उसको कहते हैं जिसमें जाकड़की चोजेंलिखीजातीहैं-मिस्टर अनवरारटी साहबने पहिलीरकम २१०००)रुपये की पढ़ी जोबाबत फरोखहीरों के गायकवाड़ केहाथथी? उ०-मुझसे जबरदस्ती गजानन्दवतिल नेयहरक़म लिखाईथो साहबप्रेजीडण्ट मिस्टरअनवरारटी साहबसेबोले इस बयान कोतुम सेक्रेटरी साहब को लिखादो-मिस्टरअनवरारटीसाहबने कहा निहायतमुनासिब है लिखादूंगा साहब प्रेजीडण्ट नेकहाअब साढ़ेचार बजगये हैं मिस्टरअनवरारटी साहबने कहा अभी कुछप्रश्नकरनेशेष हैं ॥

साहबप्रेजीडण्टने मिस्टरऐडवकेट जनरलसे कहा मैं आपके इखतियार मेंहूं जबतक आपफरमावेंगे मैंसुना करूंगा मिस्टर अनवरारटी साहबने कहा दोतीन प्रश्न औरहैं प्रेजीडण्ट साहबनेकहा बेहतरहै आपपूछ लीजिये-गवाहके तरफ मुखातिबहुये। प्र०-तुमनेगजानन्दसे यहरक़में कबदर्जकराई ? उ०-जिसदिन पानी बरसताया औरहमलोग डेरेमेंथे। प्र० जोबयान मिस्टरसूटर साहबके सन्मुख तुमनेकिया उससेकितनेपहिले ? उ०-बहुतपहिले। प्र०-बयानकरो कितनेदिन पहिले ? उ०-उसदिनकी संध्याको जबकिमैंने यहइजहार दियाथा जोलिखागया साहब प्रेजीडण्टने कहा गवाह क्या कहताहै समझ में नहीं आता गवाहसेफिर पूछागयाउसने कहाकिभोरके समयमैनेयहरक़म किताबमें दरजकीथीऔर संध्याको मैनेइजहार दियेथे ॥

मिस्टर सरजन्ट बेलन टायनसाहबने इजलासके बरखास्त

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

होते वक्त मिस्टर जोडस्ट साहबने पूछा कि हमने सुना है कि इजलास का वक्त तो आप दूसरा बदलना चाहते हैं क्या यह बात दुरुस्त है—हां मेरी इच्छा थी परन्तु समय का बदलना अच्छा न होगा और चूंकि हमने अब काम शुरू कर दिया है इसी वक्त को रखना चाहिये इसके उपरान्त इजलास बरखास्त हुआ ॥

तेरहवें दिन का इजलास ॥

आज के दिन कमीशन के सम्पूर्ण मेम्बरान् उपस्थित थे श्रीमान् मल्हरराव दिनभर नहीं आये महाराजा सेंधिया मध्यान्ह के उपरान्त चले गये सरल्यूइस पीली साहब थोड़ी देर सुबह के वक्त रहे हेमचन्द फतहचन्द का इजहार फिर शुरू हुआ मिस्टर अनवरारटी साहब फिर इस मनुष्य के इजहार लेने लगे गवाह को एक हिसाब की किताब दी गई और पूछा गया कि यह रकम किसके हाथकी लिखी हुई है ? उ०—मेरे हाथकी है । प्र०—तुमने यह रकम कब हिसाब में दरज की थी ? उ०—जब मैंने और रकमें लिखी थीं । प्र०—तुमने यह रकम क्यों लिखी थी ? उ०—गजानन्द ने कहा कि तुम इस रकम को लिखो कि और रकमें अशुद्ध न हों-मिस्टर अनवरारटी साहबने मुतरज्जिम से कहा कि इस किताब की रकम तर्जुमा करके पढ़ो सो मुतरज्जिमने पढ़कर सुनाई ॥

जोशी परमानन्द नरोनने एक अंगूठी चुन्नियों की जड़ी हुई मोलली जिसपर मीनाकिया हुआ था उसकी क़ीमत २१/रु० है ॥

सरजन्टबेलनटायन साहबके प्रश्न ॥

सरजन्टबेलनटायन साहाबने कहा कि यदि आज्ञा हो तो मुतरज्जिम से किताब की कुछ रकमों को पढ़वाऊं—आज्ञा होने के उपरान्त मुतरज्जिमने पढ़ा कि मल्हररावगायकवार के नाम खर्च में लिखा है १६७०/रु० हीरों के लिये जो दामोदरपन्थ को दियेगये—सरजन्टबेलनटायनसाहबने गवाहसे प्रश्न किया प्र०—गुलाबी और दूसरे रंग के हीरों में क्या अन्तर होता

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

है ? उ०—कई प्रकारके हीरे होते हैं। प्र०—तराशने में कुछ इखतिलाफ होताहै वा हीरोंके प्रकारमें कुछअन्तरहोताहै ? उ०—जोहीरे वलन्दोहोतेहैं उनमें अधिक चमकहोतीहै और गुलाबीहीरोंमें कमचमक होतीहै। प्र०—परन्तु मैं पूछताहूं कि तुमने जो रक़मकिताबमें लिखीहै वह शुद्धहै वा अशुद्ध ? उ०—गजानन्द ने मुझसे जबरदस्ती यह रक़मलिखवाई थी। प्र०—तुमसे और महाराजासाहब से हीरोंका लेनदेन हुआ करताथा ? उ०—उससमयमें कुछ लेनदेन नथा। प्र०—तुमने गायकवारको किसीसमय हीरेकी कनी दीथी ? उ०—नहीं। प्र०—तुमजानतेहो हीरेका बुरादा किस को कहतेहैं ? उ० बहुतछोटे २ हीरोंको कहतेहैं। प्र०—तुमने पीसेहुये हीरोंको देखाहै ? उ०—मैंने कभी नहीं देखा। प्र०—तुम्हारे इज़हार मिस्टरसुटरसाहबके रूबरूहुयेथे तुमउनको पहिचानते हो ? उ०—उनको मैं नहीं पहिचानता। प्र०—जो तुम देखो तो पहिचानलोगे देखो वहबैठेहुयेहैं डरोमत उनकीतरफदेखो (इससेसमाजमें हंसीहुई) ? उ०—मेरेइज़हार दोतीन साहिब लोगोंकेसम्मुख लियेगयेथे। प्र०—तुमने केवल पुलिसके सन्मुख अपनेइजहारदिये या दोतीन साहबोंके रूबरू ? उ०—प्रथम में मेरे इज़हार पुलिसके रूबरूहुयेथे। प्र०—फिर क्याहुआ ? उ०—पुलिसके आदमी दोतीन साहिबोंकेरूबरू मुझेलेगये। प्र०—वहांजाकर तुमने फिर इज़हारदिये या केवलदस्तखत कियेथे ? उ०—मैंनेकेवल गजानन्दके कहनेसे दस्तखत किये थे। प्र०—यह दस्तखत सरल्यू इसपीली साहब के रूबरू तुमने कियेथेया उनकेपास जानेके पहिले किये ? उ०—पहिले मेरे इज़हारलियेगये और वहांजानेसे पहिले दस्तखतभी कराये थे। प्र०—जब तुम सरल्यूइसपीलीसाहब के पासगये तो कोई कामबाक़ी नथा केवलयहोकि अपने इज़हारपढ़ो और कहो कि मेरे दस्तखत है ? उ०—गजानन्दने मुझको बुलाया और दस्तखतकराये और कहा अगर तुम और कुछकहोगे तोमैं

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

तुमको क़ैद करूंगा। प्र०—परन्तु मैं तुमसे पूछताहूं कि सर-ल्युइसपीली साहब भी उससमय उपस्थित थे कोई गलतीनहीं होसक्तीयी तुमने सरल्युइसपोलीसाहबकेरूबरू कुछकहाया ? उ०—मैंयहभी कहचुकाहूं किमुझको धमकी दीगई और दस्त-खत करालियेगये। प्र०—तुमने सरल्युइसपोलीसाहबके रूबरू दस्तखत किये थे ? उ०—हां। प्र०—और सरल्युइसपोलीसाहब के रूबरू अपने इजहारपढ़कर दस्तखतकिये थे ? उ०—मैं क्या करता गजानन्दने जबरदस्तीसुझसेदस्तखतकरायेथे। प्र०—तुम बयान करतेगये और गजानन्द लिखतागया ? उ०—जो कुछ गजानन्दने चाहालिखलिया। प्र०—इजहार लिखे जानेकेउप-रान्त तुमको सुनायेगयेथे ? उ०—नहीं। प्र०—गजानन्दने तुम से कहाथा कि अगरदस्तखत न करोगे तो जेलखाने भेजदिये जाओगे ? उ०—हां। प्र०—जबसे तुमगवाहीदेने केलिये यहां आये गजानन्दको तुमनेदेखा ? उ०—नहीं। प्र०—कलउसको देखाथा ? उ०—हां कलदेखाथा। प्र०—उसने तुमसेकुछकहा था ? उ०—हां कहा था। प्र०—क्या कहा था ? उ०—उसने कहाथा कि तीनलाखरुपये का जमाखर्च तुम्हारे नामलिखा गयाहै वहगलतहै। प्र०—और भी कुछकहाथा ? उ०—नहीं। प्र०—कलजब तुम यहांसे गवाही देकरगयेथे कहांरहे ? उ० अपने घरको चलगया। प्र०—अबयह बाततुमसे पूछताहूं कि तुमनेयहबात सूटरसाहबसे कहीया नहींकि जबकितुमने सुना किकरनैलफियरसाहबको किसीने विषदिया तोनानाजीवतिल ने मुझसेकहाथाकि तुमनेअपनी किताबमें हीरोंकीखरीदके बारेमें लिखाहैउसको दूर करदो? उ०—मुझसे नानाजीवतिलने नकहानउनसेमुझसेभेंटहुई और नमैंनेकिसीके हाथहीरेबेचे प्र०—क्यातुमने मिस्टरसूटरसाहबसे यहभीकहाथाकिमैंनाना-जीवतिलकी यहबातसुनकर अतिभयमानहुवाया?उ०—नहीं साहब मैंनेकदाचित् नहींकहा। प्र०—क्यातुमने उसकेकहने से अपनी बही की पन्नी बदलडाली ? उ०—नहीं साहब ग-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जानन्दवतिलने जबरदस्ती बदलडाली । प्र०—अच्छा १० और २४ बहीका पन्नापढ़ो ? उ०—हांसाहब वहांदोहजार रुपये कीरसोदहै । प्र०—यहदोहजार रुपयेतुमने किससेपाये ? उ० नानाजीवतिलसे पायेथे । प्र०—यहरुपया तुमको नानाजीवतिलसे किसके मद्दें मिलाथा ? उ०—साहब मुझको झगडीका बाक़ीरुपया मिलाथा । प्र०—वहझगडी कितनेरुपये कीहै ? उ० सातहजार रुपयेकीहै। प्र०—गजानन्दवतिलकेपासक्यासबतुम्हारे कागजथे ? उ०—हांसाहब मेरेबारह बही खातेहैं सरजन्र बेलनटायनसाहबने कहाक्या यहकिताव तुम्हारीहै ? उ०—हां मेरीहै । प्र०—यहझगिडयां तुम्हारी दूकानकी हैं ? उ०—हां मेरीदूकानकीहैं । प्र०—पहिली झगडीकी क्यातारीखहै ? उ० पहिलीझगडी की तारीख १० आषाढ़सुदीहै और वह३०००) रुपयेकीहै और दूसरीझगडी ४०००) रुपयेकीहै । प्र०—यह कौनसम्बत्की झगिडयांहैं ? उ०—सम्बत् १९३० कीहैं । प्र० तीसरी झगडीकौनतारीखकीहै ? उ०—तीसरीझगडी४५०) रु० की है और वहकार्त्तिक सुदी ३० तिथि की लिखीहै ॥

ऐडवकेटजनरल के प्रश्न ॥

प्र०—तुमने सरजन्र बेलनटायन साहबसे कहाहै कि मैने दोबेर हीरोंके बेचनेकाहिसाब जो महाराजा साहबके हाथ बेचेहैं किताबमें लिखाहै और फिर तुमयहभी कहतेहो कि महाराजा साहब से मेरा कुछ लेन दैन नथा ? उ०—महाराजा साहबसेकुछलेनदेन हीरोंका नथा । प्र०—देखोइसपृष्ठ को औरवर्णन करोकि किसके हाथका लिखाहुआ है ? उ० मुझको गुमाश्तेका नाम स्मर्ण नहीं है जिसके हाथ का लिखा हुआहैमेरीदूकानकी यहरीतिहै कि जोमनुष्य दूकानमें आताथाउसीसे हिसाबलिखवा लेताथा । प्र०—यहरक़मजोकिताब मेंलिखीहै सहीहै ? उ०—हां सहीहै ऐडवकेट जनरलने मुतरज्जिमसेकहा कि इसकोपढ़ो सोमुतरज्जिमने उसकोपढ़ा उसमें यहलिखाथा ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

आषाढ़सुदी १३ को नाना साहबकेहाथ २८०००) रुपयेके हीरेबेचे गये उसके उपरान्त तौल आदिका ब्यौरा लिखाहै। प्र०-२८०००) रुपयेकेहीरेजो तुमनेबेचे किसी आभूषणमें जड़े हुयेथे या अलगथे? उ०-उनहीरोंका हारथा। प्र०-हीरोंका हारबनकरकिसकोदियाजाताथा? उ०-बिनायकरावऔरनाना वतिलको ऐसीवस्तु दीजातीथी जोमनुष्य जवाहरखानेमेंमौजूदहोताथा वहउसको लेलियाकरताथा। प्र०-यहहारकिस के लियेबनाथा? उ०-किसी को दियागया या फेंकदियागया मुझको मालूम नहीं। प्र०-बिनायकराव गजानन्द ने किसके हिसाबमें यहहार लिखाहै? उ०-सरकारके हिसाबमें सररिचर्डमीड साहबने मुतरज्जिमसे पूछा कि किसकेहिसाबमें यह हारलिखाहै मुतरज्जिमने बयानकिया किगायकवारके हिसाब मेंलिखाहै-दूसरीरकमके लियेमुतरज्जिमने कहा कि एकरकम और भी लिखीहै आठसौ रुपयेएकमोतीके नगकेहैं। प्र०-तुम कहतेहो कि मिस्टरसूटर साहबने तुम्हारी गवाहीनहींलीदेखो मिस्टरसूटर साहब वह बैठे हुयेहै? उ०-मुझको स्मर्णनहीं। प्र०-तुमको स्मर्णनहीं कि इनसाहबने कुछप्रश्न तुमसेहिन्दुस्तानी भाषामें कियेथे। प्र०-जबमेरे इजहार नहीं हुयेतो प्रश्न कैसे करते-साहब प्रेजीडेण्टने मुतरज्जिमसे कहा कि इस गवाह से कहो सीधा २ उत्तर देतयाचप्रश्न किया गया उसने उत्तर दिया कि नहीं ऐडवकेट जनरलनेकहा तुम हिन्दुस्तानी भाषा समझते हो वा नहीं? उ०-मैं गुजराती समझता हूं और हिन्दुस्तानी नहींसमझता हिन्दुस्तानीको मुसल्मानी कहतेहैं। प्र०-तुम्हारा मतलब यह है कि मैं हिन्दुस्तानी नहीं समझता? उ०-मैं केवल गुजराती भाषा समझता हूं। प्र०-क्या तुम हिन्दुस्तानी भाषा कुछ भी नहींसमझते? उ०-नहीं। प्र०-कुछ भीनहीं समझते? उ०-मैं नहीं जानता कि आप किस बोली को हिन्दुस्तानी कहते हैं हिन्दुस्तानी कैसी जबान होती है

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सुतरञ्जिमने ऐडवकेट जनरल से कहा कि यदि अच्छा होतो गवाहसे हिन्दुस्तानीभाषामें कुछबात्ती करूं ऐडवकेटजनरल ने कहा नहीं मैं आपकोतकलीफ नहीं देता सुतरञ्जिमने कहा कल मैंनेकईप्रश्न हिन्दुस्तानीमें कियेथे और गवाहने गुजराती भाषामें मुझको उत्तर दिया था—ऐडवकेटजनरल ने गवाहसे मुखातिबहोकरकहाकि कलतुमसे कुछप्रश्न हिन्दुस्तनीभाषामें क्यानहीं कियेथे? उ०—नहीं मैं गुजरातीभाषा समझताहूं। प्र०—इनतीनपंक्तियोंकोदेखो जो तुम्हारे दस्तखतकेऊपर लिखी हैं यहतुमने किसमुकाम पर लिखी हैं? उ०—सरल्युइसपीली साहब के बंगलेमें लिखीथीं। प्र०—क्या सरल्युइसपोलीसाहब के रूबरू? उ०—हां। प्र०—तुमने सरल्यूइसपीलीसाहब से कहा था कि गजानन्दवतिल ने तुमसे कुछकहाथा? उ०—नहीं। प्र० तुमने नहीं कहाकि गजानन्दवतिलने मुझपर अन्याय किया? उ०—नहींकहा क्योंकि मुझकोधमकोदीथी। प्र०—तुमने कोई शिकायत सरल्यूइसपीलीसाहबसे नहींकी? उ०—मुझसेगजानन्दवतिलने कहा था कि अगरचुपचाप दस्तखत नकरोगे तो तुम्हारेलिये अच्छा न होगा। प्र०—तुम कहतेहो कि मुझको सिपाहियोंने बड़ा दुःखदिया और हरदिन मुझकोहिरासतमें रखतेथे? उ०—हां सुबहके आठबजेसे और रातके ८ बजेतक मुझको हिरासतमें रखतेथे। प्र०—किसजगह तुमकोहिरासत में रखतेथे? उ०—कभी रजीडन्सीके बंगलेमें कभीदृचौकेनीचे जो गजानन्दवतिलके मकानके निकटहैं किन्तु कलरातको जब मैं अपनेघर आया तो तीनसिपाही रात्रिके समय मेरेघरपर आये। प्र०—किसवास्ते वह आये थे? उ०—मेरे बुलाने के वास्ते। प्र०—इसबातके कहनेके वास्तेकि आज तुम अदालतमें हाज़िरहो? उ०—उन्होंने फौजदारीकेपास जानेकेवास्ते जानेके लिये कहाथा। प्र०—वहां तुमगयेथे? उ०—जब सिपाहीआये मैं घरपर मौजूदन था मेरे गुमाश्ते को पकड़ लेगये थे। प्र० फौजदारकेरूबरू पकड़कर लेगयेथे? उ०—रामचन्द्रफौजदार

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

के सम्मुखलेगये थे। प्र०—क्या फौजदार शहरमें रहता है? उ०—हां मुकाम सवाडी में नगरके भीतररहता है। प्र०—तुम कितनीबेर रजोडन्सीकोगये? उ०—एकबेर। प्र०—और कितनी दफाइच्लोंकेनीचेगये जोगजानन्दके घरनिकेकटहैं? उ०—हर-दिनमुझको लेजातेथे और इच्लोंके नीचे बैठाया करतेथे। प्र० कितने दिनतुम्हारे साथयह बदसलूकीहुई? उ०—डेढ़महीने। प्र०—क्या प्रतिदिन तुमको इसीप्रकार लेजाया करतेथे? उ० हां। प्र०—इसकिताबकोदेखो क्यातुमने इसमेंनवीनवरकलगाये हैं? उ०—मैने कोईनयापचानहीं लगाया। प्र०—नतुमनेइसमें पचेनिकालेन नयेपचे लगाये क्यायह बातठीकहै? उ०—हां ठीकहै। प्र०—तुमनेकिसी मनुष्यके मारफत वरकनिकलवाये? उ०—नहींमेरी किताब दो महीनेसे कुर्क है। प्र०—तुमको मालूमहै किकिसीऔर मनुष्यने भीइस किताब मेंसेनये वरक नहींनिकाले? उ०—मालूमहोताहै किसातया आठवरकनये लगाये गये हैं। प्र०—इसकिताबके किसभागमेंसे वरकनिकाले गयेहैं? उ०—देखिये यह वरकनये लगेहैं औरयह पुरानेहैं। प्र०—किसजगहसे वरक निकाले गयेहैं जहांअंगूठोकी फरोख्त लिखीहै? उ०—हांमालूम होताहै कियह रकम इसमें नहीं है। प्र०—तुमको मालूम नहीं कि किस मनुष्यने यहवरकनि-काले? उ०—मुझको मालूमनहीं। प्र०—तुमकोक्योंकर मालूम हुआकि वरकनिकाले गये? उ०—वरकोंकी रंगतमें अन्तरहै। प्र०—जो दो हुण्डीलिखी गई अर्थात् तीन हजार और चार हजारकी उनकोकिसने लिखाया और किसदूकानपर लिखा या? उ०—हेमचन्द फतहचन्दकीदूकान बम्बईमें लिखीगई। प्र०—यह दूकान भीतुम्हारी बम्बईमें है? उ०—हां। प्र०—यह रुपया किसको दियागया? उ०—शिवचन्द खुशालचन्द पूना के रहने वालों को यह रुपया दिलाया गया था। प्र०—यह कौनहैं? उ०—वहभी एक जौहरीहैं। प्र०—इसमनुष्यको हु-ण्डियोंकारुपया किसवास्तेदिलायाथा? उ०—शिवचन्दने कुछ

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मालनानावतिलको दियाथा। प्र०—क्यातुमने नानाजी वतिल केहाथयह मालअपने हिसाबमें बेचाथा वादूसरे मनुष्यके हिसाबमें? उ०—मैंने अपने हिसाबमें बेचाथा। प्र०—यहजो रुक्किड़यां तुमको नानाजीवतिलने दीहैं क्या उसमालके बदलेमेंदी हैं? उ०—हां साहब। प्र०—शिव चरणसे जो माल मोललिया था क्यायह रुक्किड़यां उसमालके पूरीक़ीमतथी? उ०—पूरीनहीं थी कोई सौयाडेढ़सौ रुपयाबाक़ीरहगयाथा। प्र०—क्या यह बाक़ीका रुपया शिवचरणको तुम्हारे बम्बईकी दूकानसेदिया गयाथा? उ०—हांसाहब। प्र०—क्यायहसबरुपयाजौलाई सन् १८९४ई० मेंदियागया? उ०—हांसाहब। प्र०—सिवाय इनदो रुक्किड़योंकेजिनकीसंख्या (३०००) और ४०००) हैतुमकोकोई औररुक्काडीशिवचरणकी देना है? उ०—कोई रुक्काडीनहीं। प्र० अच्छाइन रुक्किड़योंकीतारीखबताओ? उ०—ज्येष्ठवदी १२ वीं और १३वींतिथि है। प्र०—अबयह बताओकितुमनेइनरुक्किड़यों कोनिस्बत कितनारुपयावसूल पायाहै? उ०—दसहजाररुपयापायाहै। प्र०—सातहजारकी तो रुक्काडीतुमकोदसहजार क्योंकरमिले? प्र०—उसमें नारायण व्यङ्कटेशका भीरुपयाहै प्र०—तुमनेनारायणव्यङ्कटेशका रुपयाक्यों मिलादिया? उ० वहनानाजीका सालाहै और नानाजीवतिलका वह हिसाब था। प्र०—अपनीकिताबका दसवांपृष्ठदेखो उसमें दोहजार रुपएकैसे लिखेहैं? उ०—हां यहभी शिवचन्द खुशालचन्द के रुपये हैं। प्र०—यह किसकेहाथलिखेहैं? उ०—मेरेहाथ के लिखेहैं इसकेअर्थयह हैंकिमैंने नानाजीवतिलसेदोहजाररुपये पाए औरशिवचन्द औरखुशालचन्दके हिसाब में अदाकिये। प्र०—क्यायहदुरुस्त हिसाबहै? उ०—हां साहब यह हिसाब दुरुस्त है। प्र०—दमोला कौनमनुष्य है? उ०—यह नानाजी वतिलकानायबहै प्र०—इसकाक्या कारणहै किजबयहहिसाब नानाजीवतिलका थातोतुमने शिवचन्द खुशालचन्दके हिसाब मेंक्योंलिखा? उ०—इसवास्तेकिवहहिसाबसष्टनथा। होरेकी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

चिकरी जो तुम्हारी बहीमें लिखी है यह दुरुस्त है ? उ०—साहब मुझे खबर नहीं है जो कुछ किताबमें लिखा है वह दुरुस्त है। प्र० तुम इन किताबोंमें बराबर अपना काम करते थे? उ०—पहिले इसी में काम करता था अबतो पैने दो मास होने से कुछ है। प्र०—अगर तुम ने वह्लोकेवरक़ नहीं बदलेतो गजानन्दको वरक़ बदलनेसे क्या मतलब था ? उ०—साहब मुझको खबर नहीं है कि उसने यह छल किस वास्ते किया। प्र०—कलजो तुम घर जाने लगे तो किसी पुलिस वालेने तुमसे कुछ कहा था ? उ०—हां साहब एक सिपाही ने मुझको रोका और कहा कि तुम ठहरो हम साहब से या गजानन्द वतिलसे पूछलेंतो जाने देंगे परन्तु फिर मुझको जाने दिया श्रीमान् महाराजा जयपुरने पूछा कि तुमसे और उस सिपाही से और क्या बात्तीहुई ? उ०—और कुछ बात नहीं हुई ॥ सम्पूर्ण समाज टिफ़न खानेके लियेबरखास्त हुई ॥

इज़हार नानाजीवतिल गवाह ॥

जब कमीशन के सम्पूर्ण मेम्बर टिफ़न से सुचित होकर आये तो नानावतिल बुलायागया ऐडवकेट जनरल ने इसके इज़हार लेना शुरू किये उसने बर्णन किया कि मैं ब्राह्मण हूं और गायकवारके जवाहरखाने का दारोगा हूं मैं दामोदरपन्थ को जानता हूं अन्तके दसहरेके में दामोदरपन्थ ने मुझे आज्ञादीथी कि कुछ हीरे मल्हार करनेके लिये दरकार हैं सो मैंने तीनचार जौहरियोंसे मंगवाये घेलशाह—प्रतापशाह—और हेमचन्द तीन जौहरी मेरे पास हीरेलाये फ़तहचन्द हेमचन्दके हीरे दामोदरपन्थके दिखाने केवास्ते एक दिनको रखलिये उसकेदूसरे दिन जब और जौहरी हीरेलाये उनकोभी रखलिया जिससमय दामोदरपन्थको वह हीरे दिखाये गयेतो हेमचन्द फ़तहचन्दकी कोठीके हीरे उन्होंने पसन्द करके रखलिये और बाक़ी जौहरियोंके हीरे मैंने लौटा दिये हेमचन्दके हीरे तौलमें अड़सठ या साढ़े अड़सठ रत्ती हैं। गे उनको तौलकर दामोदरपन्थके हवाले करदिये और एक याददाश्त दफ़्तरके रखनेकेवास्ते कारकुनोंनेबनाई छःसातदिनकेपीछे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

दामोदरपन्यने मुझसे फिर कहा कि फतहचन्द की कोठीसे गुलाबी हीरोंकी कनीमंगवाओ सोमैने हेमचन्दको कहलाभेजा वहआपही हीरेंकीकनी लेकरमेरे निकटआया वहतिहत्तर वा चौहत्तररत्ती तौलमेंथी दामोदरपन्यकी आज्ञानुसारवह मोलले लीगईइस कनीका जो मूल्यठहराया वहमुझे स्मर्ण नहीं जौहरी की किताबमें जो ३०००) रुपया कीमत लिखी हैवहठीकहै उनहीरोंमें कोईहीरा एकरत्तीकाथा और बहुत सेऐसेथे कि एकरत्तीमें दोतीनचारपांच तकतौलमेंथे तीनह- ज़ाररुपया दो दफेकरके पूर्व्वोक्त जौहरी को मैने दिये और एकबेर दोहजार रुपयेदिये एकबेर एक हजार रुपया दिया यहरुपया दमोदरपंथ से एक याददाश्त के अनुकूल जिसपर मैंनेभी दस्तखत किये थे मिलाथा और नानचन्दके द्वारा यह रुपया हेमचन्द फतहचन्द को दियागया नानाचन्द दामोला मुहालके सरीफहैं उनतीनहज़ार मेंसे एकहजार रुपयाअपने मकानपर खुद मैंने दिया॥

ऐडवकेटजनरलने मिस्टरनौरोजजीसुख्यमुतरज्जिम सेकहा कितुमअपने असिस्टेन्टोंका भलेप्रकारध्यानरक्खोक्योंकिबहुधा तर्जुमा अशुद्धहो जाता है उन्होंने उत्तरदिया किमुझको इस बातकाबड़ा ध्यानरहताहै इसरुपयेके लियेजोयाददाश्तें मुर- त्तिबहुईं वहआत्माराम कारकुनकेदफ्तरमेंहैं देवालीकेदिनों में दामोदर पन्यने उनयाददाश्तों को मंगाया था जब उनको लेकरमैं गयातो दामोदर पन्यने कहाकि इनको मेरे निकट छोड़जाओ मैंफाड़डालूंगा। प्र०—दामोदरपन्यने उनको चाक किया? उ०—मेरे सामने उनको नहीं फाड़ा॥

सरजन्टबेलन टायन साहब के प्रश्न।

प्र०—तुमने जो इज़हारदिया वह अच्छीतरह समझमें नहीं आयागायकवारके दरबारमें तुमको क्याओहदाथा? उ०—क्या आपमेरी तनखाहपूछतेहैं। प्र०—मैंतुम्हारा ओहदा पूछताहूं?

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उ०-जवाहरखानेका मोहतमिमहूं। प्र०-तुम्हारे अधिकारमें कौन कामहै ? उ०-मैं जवाहिरात और जेवरकी रक्षा करताहूं जब महाराज। साहब पहिनते हैं उनको देदेता हूं। प्र०-कोई काम और भी तुम्हारे सुपुर्दहै ? उ०-जवाहरखानेमें जो जवाहिरात की अवश्यकता होतीहै तो मेरेद्वारा मोल लिये जातेहैं। प्र०-तुम कहसक्ते हो कि यहहीरे किसलिये मोललिये गयेथे ? उ०-मुझसे यह कहाथा कि यहहीरे भस्म करनेके वास्ते दरकार हैं। प्र०-तुमसे किसने कहा था ? उ० दामोदरपन्थने। प्र०-इस भस्मकी क्या जरूरतथी ? उ०-दवाके लिये। प्र०-तुमने कभी पहिलेभी सुनाथा कि हीरोंकी भस्म दवाके वास्ते बनाई जाती है ? उ०-मैंने कभी नहीं सुना। प्र० तुमने अपनी सम्पूर्ण आयुमें हीरोंकी भस्म देखीहै ? उ०-चार वर्ष से मैंनौकर हूं उससे पहिले कभी हीरेभीन देखे थे। प्र०-तुमनेअपनी सम्पूर्ण आयुमें सुनाहै किहीरों की राखहोतीहै ?उ०-मैंने कभी नहीं सुना। प्र०-न तुमने कभी सुना न तुमनेभस्म देखी ? उ०-मैं नहीं जानता। प्र०-न तुमनेसुना ? उ०-न मैंने सुना नमैंने देखा। प्र०-आजकल तुम कहां रहते हो ? उ०-बड़ौदेमें रहता हूं। प्र०-तुमपर कोई गार्ड नियत है ? उ०-मैंखानबहादुरकी हिरासतमेंथा। प्र०-इससे तुम्हारा यहमतलब हैकि तुमक़ैद थे?उ०-जिसदिन महाराजा साहब क़ैदहुयेहैं पुलिसवालोंने मुझकोबैठा रक्खाहै। प्र०-बैठाने से तुम्हाराक्या मतलबहैं क्यातुम क़ैदमेंहो ? उ०-पुलिस वालोंने मुजको बैठारक्खाहै मैंइसीको क़ैद समझता हूं। प्र०-क्योंबैठा रक्खा है ? उ०-मैंनहीं जानता। प्र०-तुमने पूछा कि तुमको क्योंबैठायाहै ? उ०-मैंकिससे पूछता। प्र०-जिसनेतुमको बैठाया था उससेपूछते ? उ०-जिसने मुझको बैठायाथा उसनेहीरोंका हिसाब मांगासो मैंने बता दिया। प्र०-तुमपर और कोई जुर्म्म है या जहर खुरानी का जुर्म्म है ? उ०-नहीं। प्र०-तुमपर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कोई जुर्म है? उ०—मुझको जवाहरखानेका कामथा जबमहाराजा साहबक़ैदहुये मुझकोभीक़ैदकरलिया। प्र०—तुमने जो हेमचन्दसेहीरेमोललिये थेउसका हालपहिलेकिससेकहाथा? उ०—मुझको लोग लश्करमें लायेथे जिस मनुष्यने पूछाउससे कहदियाउससेपहिले पन्द्रह यासोलह दिनतक मकानबारहमेंथा। प्र०—विस्तार पूर्वकवर्णन करो किपन्द्रहसोलहदिनतक तुमवहांक़ैदरहे? उ०—पन्द्रहबीसदिन तकनगरमें रहामुझसे किसीनेनहींपूछा। प्र०—मैं पूछताहूं कि तहक़ीक़ात के पहिले तुमपन्द्रह सोलहदिनतक क़ैदरहेथे? उ०—हांमकान परपहिरेमें क़ैदथा। प्र०—तुमकिसकी हिरासतमें थे? उ०—सेनापती की कचहरी में था। प्र०—तुमपर किनलोगों कापहिरा था? उ०—परदेसोसिपाहियों कापहिराथा। प्र०—जबतुम पन्द्रहबीस दिनतक क़ैदरहे तुम्हारेनिकट कोई इज़हार लेने आयाथा? उ०—कोई मनुष्य नहीं आया मुझको बुलाया था। प्र०—कौन मनुष्य बुलाने आयाथा। उ०—कुछ सिपाही आयेथे। प्र०—तुम उनकेसाथगयेथे? उ०—हांएकगाड़ी परसवार करकेगजानन्द वतिलके मकानपर मुझकोलेगयेथे। प्र०—गजानन्दने तुमसेक्या कहा? उ०—उन्होंने मुझसे हीरों का हाल पूछा। प्र०—क्या पूछाथा? उ०—मुझसे पूछा था किआश्विन के महीनेमें कितने हीरेमोललिये गयेथे। प्र०—जो हीरे हेमचन्दकी कोठीसे मोल लियेगयेथे उनकाहालभी तुमसेपूछाथा? उ०—हेमचंदकेहीरों की कुछखसूसियत नहींकी सब हीरोंकी खरीदका हालपूछा था। प्र०—तुमने उनसे क्याकहाथा? उ०—मैनेकहाथा किहीरे मोललियेगये। प्र०—तुमने रावजी और नरसूके इज़हारातका हालसुनाहै? उ०—मैंनेनहींसुना। प्र०—तुम वर्णन करतेहो कि जिसदिन महाराजा साहब पकड़ेगये उसीदिन मैं भीपकड़ागया? उ०—हां, उसीदिन पकड़ा गयाथा। प्र०—तुम कहते हो कि मैंनेनरसू और रावजीकी गवाहीका हालकुछ नहींसुना?

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उ०—मैं कुछ नहीं जानता। प्र०—मैं मसे तु पूछता हूं कि तुमने उनके इजहारों का कुछ हाल सुना था ? उ०—मैं उनको नहीं जानता न मैंने उनको कभी देखा। प्र०—मेरे प्रश्न का उत्तर दो तुमने नहीं सुना कि रावजी और नरसू की गवाही हुई ? उ०—मैंने कभी नहीं सुना। प्र०—तुम सौगन्द खाओगे कि मैंने कभी नहीं सुना ? उ० जब यहां तहकीकात होचुकी तब मैंने सुना था। प्र०—मेरा प्रश्न यह भी नहीं है मैं पूछता हूं कि तुमने सुना था कि नरसू और रावजीने क्या इजहार दिये ? उ०—मैंने नहीं सुना न मैं जानता हूं कि उन्होंने क्या इजहार दिये। प्र०—तुमने यह भी नहीं सुना कि नरसू और रावजीने हीरोंके क्या इजहार दिये थे ? उ०—मैंने दिवाली के उपरान्त सुना था कि विष दिये जाने का उद्योग हुआ है। प्र०—यदि तुम मेरे प्रश्न का उत्तर न दोगे तो प्रलयपर्य्यन्त तुमसे प्रश्न किये जाऊंगा मैं पूछता हूं कि तुमने सुना था कि राव-जी और नरसू के इजहार विष दिये जाने के विषय में लिये गये थे उ०—उसी समय मैंने नहीं सुना पीछे सुना था कि वह क़ैद हैं प्र०—अपने बयान के पहिले तुमने सुना था कि वह क़ैद है ? उ०—मैंने नहीं सुना। प्र०—गजानन्द वतिलने भी तुमसे कहा कि उन लोगों ने क्या इजहार दिये ? उ०—नहीं कहा। प्र०—गजानन्द वतिल ने तुमसे कहा था कि सच बोलना और सिवाय सच के और कुछ न कहना ? उ०—हां। प्र०—उसने तुमसे कहा था कि अगर सच न कहोगे तो क्या नतीजा होगा ? उ०—हां, मुझको धमकाया था और कहा था कि अगर सच न बोलोगे तो झूठका मज़ा चक्खोगे। प्र०—इस बातके कहनेसे तुम क्या समझते थे ? उ० मैं समझता था कि मुझको क़ैद करेंगे या कहीं और भेज देंगे। प्र०—यदि हम तुम्हारे बर्णन पर निश्चय न करें तो तुम जानते हो कि तुम्हारे लिये क्या दण्ड होगा ? उ०—सरकार की जो कुछ इच्छा होगी उसमें क्या इन्कार है। प्र०—परन्तु तुम क्या समझते हो कि ऐसी हालत में तुमको क्या दण्ड हो ? उ०—जो सरकार की

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

इच्छा हो वही दण्डदे। प्र०—मैं जानता हूं कि जब पुलिस के पंजे से निकलोगे तो बहुत प्रसन्न होगे? उ०—सरकार की जो मरज़ी है उसमें खुश हूं। प्र०—गजानन्द ने तुम्हारे इज़हार लिखे थे या तुमने लिखकर अपने इज़हार उनको दिये थे? उ०—मैंने लिखकर नहीं दिये ज़ुबानी बयान किये थे। प्र०—जब तुम अपना बयान कर चुके तो तुमको लोग कहां ले गये थे? उ०—साहब के निकट ले गये थे। प्र०—साहब से तुम्हारा मतलब सूटर साहब है? उ०—उस समय सूटर साहब वहां नहीं थे। प्र०—तुम्हारे इज़हार किसने लिये थे? उ०—और साहब लोग जो बंगले में थे उन्होंने मेरे इज़हार लिये थे। प्र०—कुछ पता बतलाओ जिससे स्पष्ट वृत्तान्त विदित हो कि यह साहब लोग कौन थे? उ०—मैं नहीं जानता परन्तु इतना जानता हूं कि सरल्यू इसपोली साहब भी उपस्थित थे। प्र०—सावधान होकर वर्णन करो कि सरल्यू इसपोली साहब उस समय उपस्थित थे जब कि तुमने बयान किया था? उ०—हां जिस समय मेरे इज़हार लिखे गये थे पीली साहब उपस्थित थे प्र०—तुम्हारे इज़हार किसने लिखे थे? उ०—दूसरे साहब जो वहां बैठे थे उन्होंने लिखे थे। प्र०—तुमने दोनों साहिबों के सन्मुख यह इज़हार दिये थे? उ०—हां। प्र०—तुमको दामोदर पन्थ के इज़हारों का हाल मालूम है? उ०—नहीं। प्र०—तुम कितने दिन कैद रहकर सरल्यू इसपीली साहब के निकट इज़हारों के लिये गये थे? उ० बीस दिन के उपरान्त गया था॥

ऐडवकेट जनरल ने फिर नानाजी वतिल के इज़हार लिये॥

प्र०—तुमने अभी कहा है कि तुम पन्द्रह या बीस दिन सेनापती की कचहरी में परदेसी सिपाहियों के पहिरे में रहे तुम जानते हो कि वह सिपाही किसके नौकर थे? उ०—गायकवार के थे। प्र० क्या उनके पहिरे में सम्पूर्ण महल था? उ०—हां साहब सम्पूर्ण महल था और यह रक्षा करने के लिये आये थे। प्र०—पहिले तुम्हारे इज़हारात गजानन्द वतिल ने लिये थे? उ०—हां, साहब

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पहिले गजानन्द वतिलने लियेथे सरदिन कर रावने पूछा कि तुमजवाहर खानेके मुखतार हो? उ०—हां साहब मैं जवाहर खाने का दारोग़ाहूं। प्र०—तुम्हारे पासकोई हिसाब हीरे के मोललेनेकाहै? उ०—कोईनहीं। प्र०—जोजवाहरात मोललिये जातेहैं क्याउसका हिसाब तुमजवाहर खानेमें नहीं रखते? उ०—हमारे यहांहिसाब नहीं रहतावह खजाने में रहताहै। प्र०—तुमकोई याददाश्त रखतेहो? उ०—हांसाहब रखतेहैं। प्र० यदिवह याददाश्त अशुद्धहोतो उसकाक्या निश्चय? उ०—जोकुछ सरकार फरमावे वहीदुरुस्त है. साहबप्रेजीडण्टने कहाकि अब साढ़े चारबजेका समयहै जलसाबरखास्त कियाजायसो जलसाबरखास्त हुआ॥

चौदहवें दिनका इजलास॥

आजके दिनकमीशन शुरूहुई कमीशनके सम्पूर्ण मेम्बरान् उपस्थित थे मल्हरराव बिल्कुल नहीं आये महाराजा सेंधिया दोपहर से चलेगयेथे सरल्यूइस पीली साहब भी मध्यान्ह केपश्चात् चलेगये रघुनाथकेपुत्रआत्मारामके इजहार शुरूहुये मिस्टरअनवरारटोसाहबने गायकवारके जवाहरखानेके कारकुनको बुलाभेजा उसनेवर्णन कियाकि मैं रियासत गायकवारके जवाहरखाने का कारकुनहूं मेरा अफ़सर नानाजीवतिलहै मुझे स्मर्ण है कि देवालीसे आठदिन पहिले कुछहीरे मोललियेगयेथेचारजौहरीहीरेलायेथे तीनजौहरियोंके हीरे लौटादिये गये और हेमचन्द्र के हीरे रखलिये गये थे—एक याददाश्त दफ्तरमें रखनेकेलिये बनाईगईथी परन्तु दो तीन दिनके उपरान्त नानाजीवतिलने उसको मुझसे लेलिया था फिर मैंने सुना कि करनैलफियरसाहबके विष दियेजाने का उद्योग हुआ है॥

सरजनबेलनटायनसाहब के प्रश्न॥

प्र०—अबभी तुमको जवाहरखानेसे तअल्लुकहै? उ०—हां।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

प्र०—जवाहरखाने का अब कौनदारोग़ा है ? उ०—गणपति राय महाजन। प्र०—बयान करो कि हीरेकी कनी क्या वस्तु होती है ? उ०—छोटे २ हीरोंको कनीबोलते हैं। प्र०—क्या कनीउसको कहतेहैं कि जबहीरातराशाजाताहै और उसके छोटे २ टुकड़े करतेहैं ? उ०—हां। प्र०—तुमनेदेखा या सुना है कि हीरेकी खाकहोसक्तीहै ? उ०—नहीं॥

साहबप्रेसीडेण्टने कहा पसमालूमहोताहै कि तुमने कूटा हुआ हीरा नहीं देखा ? उ०—नहीं। प्र०—जवाहरखाने में कितनेवर्षसेहो ? उ०—बारहवर्षसे हूं। प्र०—महाराजासाहब बहुधाहीरेखरीदाकरतेथे ? उ०—हां। प्र०—छोटे और बड़े ? उ०—दोनों प्रकारके मोललिया करतेथे। प्र०—ज़ेवरमें जड़े हुये मोल लेतेथे या अलग ? उ०—दोनों प्रकारके मोललेते थे। प्र०—महाराजासाहबके जवाहरखानेमें बहुतसेहीरे थे ? उ०—हां बहुतहीरे थे। प्र०—तुम्हारा बयानहै कि जो लोग हीरेलायेथे उनमेंसे हेमचन्द्रके हीरेमोललियेगये तुमक्योंकर जानतेहो कि केवल उसीमनुष्यके हीरे मोललियेगये ? उ० नानाजीवतिलने पसन्दकरके उनहीरों को मोल लियाथा। प्र०—सिवा नानाजीवतिलके औरभी किसीमनुष्यने तुमसेहीरों का हालकहाथा ? उ०—जबहीरे मोललिये जातेथेतो नाना-जीवतिल मुझको बुलालेतेथे। प्र०—जबहेमचन्द्रसे हीरेमोल लियेगये तुम उपस्थितथे ? उ०—हां मैंमौजूदथा। प्र०—उस समयकेक्योंकर काररवाईहुई थी ? उ०—विनयाकरावने एक यादहाश्त अपने हाथ से लिखो और अपने पासरक्खी। प्र० और भी कुछहाल तुम जानते हो ? उ०—और मैं कुछनहीं जानता। प्र०—छोटे २ हीरे किसकामआतेहैं ? उ०—जड़ाऊ काममें लगतेहैं। प्र०—मिस्टरसूटरसाहबने तुम्हारे इज़हार लियेथे ? उ०—हां लियेथे। प्र०—जोकुछ तुमने उनकेसन्मुख वर्णनकियाथा तुम्हारेविचारसे ठीकहै ? उ०—हां जो कुछमैं जानताथाबयानकिया। प्र०—जबयहहीरे मोललियेगयेथेतो

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जवाहरखाने में बहुत से हीरे मौजूद थे ? उ०—नानाजी-वतिल के जौनवाहरखाने के दारोगा हैं यह हालमालूम होगा। प्र०—तुम्हारा यहमतलबहै कि तुमको कुछ हालमालूम नहीं है ? उ०—हां मैं कुछ नहीं जानता—सरजन्टबेलनटायन साहबने कहा (माईलार्ड) इसगवाहसे यह सवालकियाजावे कि उससमय मेंभी एकतलवार का क़बजा हीरों से जड़ाजाताथा ? उ०—हां,तलवार का क़बजा और मियान हीरों से जड़ाजाताथा और छोटे २ हीरेउसमें लगायेजाते थे। प्र० छोटे २ हीरेलगतेथे याबड़े २ हीरेजड़ेजातेथे ? उ०—छोटे हीरे। प्र०—एक मिरजई भी तय्यारहोतीथी ? उ०—हां,एक मिरजईमें भी छोटे २ हीरेजड़ेजाते थे। प्र०—तुम जानतेथे कि यहहीरे कहांसे आयेथे ? उ०—जवाहरखानेमें थे। प्र० जवाहरखानेमें यहहीरेकबसेरक्खेथे ? उ०—हमेशामोललिये जातेथे और इसी प्रकार हीरोंका जमाखर्चरहाकरताथा॥

बलवन्तराव रावजीके इज़हारात॥

बलवन्तराव रावजीने अपने इजहारत ऐडवकेटजनरल के साम्हने दिये कि मैं खानगी खजाने सरकार में नौकर हूं मैं दामोदरपन्थके आधीन कामकरताथा हिसाबों के ऊपर जो स्याहीडालीगई मुझको नहींमालूमकि किसनेडालीहै सरजन्ट बेलनटायनसाहबने उससे प्रश्न नहीं किये॥

रामेश्वरमोरा के इज़हारात॥

मैंस्वामी नारायणके मन्दिरका चेलाहूं मैंसबचेलोंका अफ़सर हूं मैंने कोई रुपया ३१ दिसम्बर सन् १८७३ ई० का नहींपाया और मैंनेकिसी समयमें ३३२) रु० नहींपाया यदि मैंनेकभी रुपयापायाहै तो उसकीरसीद महाराजा कोदीहै उसकोरसीद दिखाई उसने इन्कारकिया कि यहमेरी रसीद नहीहै यहरसीद भोलानाथ पौंचारामकी लिखीहै॥

सरजन्टबेलन टायनसाहबके प्रश्न॥

तुमने एक मरतबा कहाहै कि तुमने ११००) रु० पायाहै

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

और फिरतुमनेकहा कि ११२५) रु० पाये ? उ०—हांसाहब पायेथे। प्र०—उनकीरसीदें कहांहैं सम्पूर्ण मेम्बरोंको उनकी रसीदें दिखाईगई और उसने तसदीक़ की॥

दूसरीबेर रामेश्वर मोराके इज़हार लियेगये॥

प्र०—११२५) रु०तुमकोकिस वास्तेदियेगयेथे? उ०—ब्रह्मभोज केनिमित्त दियेगयेथे। प्र०—इनरुपयोंके सिवातुमको और कभी भीब्रह्मभोजके वास्तेकुछ रुपयामिला है ? उ०—कभीनहींमिला प्र०—क्यातुमको कुछ रुपया पुण्य करनेके लिये मिलाथा ? उ० हांसाहब ३७५) रु० मिलाथा। प्र०—तुमनेउसकी रसीददी थी ? उ०—नहींसाहब नहींदी कारकुन ३७५) रु० कीअठन्नियांचवन्नियां लायाथा इसीकारण इसकी रसीदनहींदी॥

दत्तेरिया रामचन्द्रके इज़हारात॥

मिस्टरअनवरारटी साहबने दत्तेरिया रामचन्द्रके इजहारात लियेउसने वर्णनकिया कि मैंफौजदारीका नौकरथा मैंसंखिया फौजदारकी आज्ञासे दियाकरताथा एकबेर मेरेनिकट संखियेके वास्तेदामोदरपन्थकी याददाश्तआईथीजगजीवनदास नेयाददाश्तपर दस्तखत करके संखिया भेजदी जगजीवनदास फौजदारीके हाकिमहैं तीनसप्ताह बीतेहोंगे कि संखियाहमारेयहांसे भेजीगईथी॥

सरजार्ज केननटायन साहबके प्रश्न॥

प्र०—तुम्हारे यहांसे संखिया किसरीतिसे दीजातीहै ? उ० जबकि कारकुनकी याददाश्तपरफौजदारी काहाकिम दस्तखत करदेता है जब मिलती है। प्र०—क्या संखिया के देने में बड़ाबन्दोबस्त होताहै ? उ०—हां साहब संखियाके देनेमें बड़ा बंदोबस्त होता है। प्र०—प्रथम गायकवारकी आज्ञासे संखिया क्योंनहीं मिला ? उ०—उसयाददाश्तपर गायकवार के दस्तखत नहींथे। प्र०—तुमनेतो अभी कहा कि कारकुनकी याददाश्त लिखने से मिलजाती है ? उ०—हां साहब पहिले यहीरीतिथी कि कारकुन की याददाश्त से संखिया मिलजाती थी परन्तु

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अठारह महीनेसे गायकवार ने आज्ञादीथीकि हमारीआज्ञा बिना संखिया नदीजायाकरे॥

दत्तेरिया रामचन्द्र का दुबारह इज़हार लियागया॥

प्र०—अच्छा यह बताओ कि इस याददाश्त में गायकवार केदस्तखतकहांहैं ?उ०—साहब इसयाददाश्तमें दस्तखत नहीं है प्र०—अच्छाकौनसी याददाश्त पर गायकवाड़ के दस्तखत हैं ? उ०—१९तारीखकी यादाश्तपर दस्तखत हैं॥

भावपूना करके इज़हार॥

रामकृष्ण सदाशिवजो भावपूनाकरके उपनामसे विख्यात है बुलायागया और ऐडवकेटजनरल ने उसके इज़हारलिये उसनेवर्णन किया कि तीसवर्ष से मैं बड़ौदेमें रहता हूं इस समय मुझको मीरजुलफ़िक्कारअलीकी रियासतसे तअल्लुकहै॥

मिस्टर होप साहब की ओर से मैं नौकर हूं मीरजुलफिक्कारअली सूरत के रईस नव्वाब जाफरअलीके पुत्र हैं और सरकार उनकी मुतवल्ली अर्थात् पालकहै उनकी कुछ रियासत बड़ौदे में भी है मीरजुल्फिक्कारअलीकी रियासतके देख भालके सिवायकुछ और काम भी मेरे आधीन है और कई सरदारोंकी ओरसे मैंमुख्तारभी हूं करनैल फियर साहबको मैं जानताहूं दीवान साहब अर्थात् नानाकंवलकर ने करनैलफियर साहबसे मेरी मुलाकात कराईथी जब पूर्वोक्त साहबबड़ौदेके रजीडण्टथे मैंबहुधा उनके निकटजायाकरता था एक चिट्ठी मिस्टर होप साहबकी करनैल फियर साहबके नाममैंलायाथा वहचिट्ठी मीरजुल्फिक्कारअलीके मुआमिलेसे सम्बन्धित थी मीरजुल्फिक्कारअलीका मुक़द्दमा उन दिनोंमें बम्बईमेंदायरथा इसदफ़ामैं करनैलफियर साहबके पासजरूरतसे गयाथा और बहुधा बिना प्रयोजनभी जाया करताथा और कभीकभीकरनैलफियरसाहबको नगरकेहालकहसुनाता था जब करनैल साहब हवाखोरीसे वापिस आतेथे उससमय बहुधाऐसी बातोंको इत्तिला दिया करताथा दसग्यारहबजेहैं

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

साहबके पासजाताथा मैंनेकरनैलफ़ियर साहबसे खबरोंकेवर्णन करनेमें कभीकुछभी रुपयानहीं पायामैंनेसुना कि करनैलफ़ियरसाहबके विष दिये जाने का इरादाहै जब करनैल फ़ियर साहबने दोतीनदिनके पश्चात्मुझसे जिकर कियातोमैंनेउनसे कहा कि बलवन्तरावसे सुनाहै कि जोविष आपको दियागया उसमेंतीन वस्तुयीं अर्थात्–हीरेकीरेत–तूतिया–औरसंखिया मिस्टरमैलवल साहबने पूछा कि रेतके क्याअर्थहैं गवाहमैं कहा कि मैंपिसेहुये हीरेका रेत कहताहूं–मैंनेजो कुछबलवन्तरावसे सुनाथा करनैल फ़ियर साहब से कहदिया किन्तु बलवन्तरावकोभी फ़ियरसाहबके निकटलेगया था॥

साहबप्रेज़ीडेण्टने पूछाकि बलवन्तरावको करनैलसाहबके निकटतुम लेगयेथे–गवाहने कहाकि हांलेगयाथा औरकरनैल साहबसेमुलाकात कराईथी॥

बलवन्तरावने करनैलफ़ियर साहबसे हीरेकेचूरेका वर्णन कियाथा बलवन्तराव बापू साहबका कारकुन है वह बहुधा रेज़ीडन्सीमें आयाकरताथा–बापूसाहब एकबाजारीस्त्रीके पुत्र हैंजोखाण्डेराव गायकवारकी नौकरथी बापूसाहब महाराजा साहबके वीर्य्यसेहैं बलवन्तरावने यहहाल सुनसे रेज़ीडन्सीमें कहाथा॥

सरजन्‌बेलन टायन साहब के प्रश्न॥

प्र०–तुमकोवह तहक़ीक़ात होनायादहै जो जनरल मीड साहबके सम्मुखहुईथी? उ०–हांस्मर्णहै। प्र०–तुमनेबहुत कुछ पैरवीकी और गायकवारपर मुकद्दमेदायर करायेपरन्तु सुतरञ्जिमनेतर्जुमाअशुद्धकियाऔर कहामैंकिगायकवारकेसम्मुख मुकद्दमेदायरकराये–मिस्टरमैलवल साहबनेजबएतिराजकिया तो सुतरञ्जिम ने कहा कि बरखिलाफ़को इस देश में साम्हने कहतेहैं–गवाहनेकहा कि यदि मैं ऐसा न करताता लोगोंके हक़मेंइन्साफ़ न होता॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

साहबप्रेजीडेण्टने कहायह प्रश्नका उत्तरनहींहै गवाहने कहा कि बहुतसे लोगोंकाहक्क गायकवारने छीनलियाथाजो ऐसा न कियाजाता कि तो लोगोंको हक न पहुंचता ॥

प्र०—क्या हरएकमुकद्दमेमेंतुमगायकवारके बरखिलाफथे? उ०—मुजको केवल चारमुकद्दमोंसे तअल्लुकथा और मुकद्दमों सेकुछप्रयोजनथा। प्र०—हां, मैं पूछताहूं किजो मुक़द्दमा तुम नेकिया वह गायकवार के बरखिलाफ था? उ०—हां, लोगों का रुपया गायकवार परचाहियेथा और वहनहीं देतेथेजो ऐसा न करता तो रुपया भी न मिलता। प्र०—परन्तु मेरे प्रश्नका उत्तरदो—तुमको जब अवसर मिलातो गायकवार के बरखिलाफ काररवाई की? उ०—जो मेरे विचार में दुरुस्त बातथी उसीतरह मैंनेकाररवाईकी। प्र०—मैं तुमसे यहनहीं पूछता मेरेप्रश्नकाउत्तरदो? उ०—मैंने कोईबातऐसी नहींकी जिससे गायकवार की हानि हो। प्र०—मेरे प्रश्नका अबतक तुमने उत्तर नहीं दिया तुमने कुछ काररवाई गायकवार के प्रतिकूल की ॥

प्र०—मैं नहींसमझा किआपक्यापूछते हैं, सरजन्हबेलन-टायनसाहबने अदालतसे मुखातिबहोकर कहाकि मेरा प्रश्न तो स्पष्टहै उसका उत्तर मिलना चाहिये ॥

साहब प्रेजीडेण्ट नेकहा तुम मुस्तहक उत्तर पाने केहो परन्तु मैं नहीं देखता कि तुमको किसतरह से जवाब साफ मिलेगा। प्र०—मैं पूछताहूं जोमुकद्दमें तुमने कमीशनमेंपेश किये वह बरखिलाफ गायकवार के थे? उ०—यह मुकद्दमे ऐसे नथे जिनसे गायकवारकी कुछहानिहोकिन्तु वहमुक-द्दमे उसमुकद्दमेकी बाबतथे जोगायकवारसे लोगोंकारुपया चाहिये था। प्र०—करनैलफियरसाहब जानतेथे कितुम उन मुकद्दमोंकी पैरवीकरतेहो? उ०—हांजानतेहोंगे। प्र०—कर-नैलफियरसाहबके पासतुम बहुधाजाते थे? उ०—हां, अकसर जाता था और अबभी जाताहूं। प्र०—तुम्हारी यहीप्रकृतिथी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कि तुमको कुछ न मिलता था तौभी उनको खबरें पहुंचाया करतेथे ? उ०—जो हालठीक २ मुझको मालूम हुआ करता था मैं करनैलफियरसाहबसे कहदियाकरताथा। प्र०—तुम्हारी खबरें वहसुनाकरते थे ? उ०—हां सुनने न सुननेका उनको अखतियारथा सिवा मेरे और मनुष्य भी खबरें पहुंचायाकरतेथे। प्र०—परन्तु जो खबरें तुमपहुंचातेथे उनको करनैलफियरसाहब अच्छीतरह सुनतेथे ? उ०—मेरीही खबरों को नहीं किन्तुकई मनुष्योंकी खबरोंको अच्छीतरह सुनतेथे। प्र०—तुमयह खबरें पहुंचायाकरते थे कि नगर और गायकवारके महलमें क्या होताहै ? उ०—जबसाहब हवाखानेजातेथे तो जोखबरें सुना करतेथे उनको वापिसआकर मुझसे पूछतेथे—मुझको जोकुछ मालूम होताथा मैं कहदिया करताथा। प्र०—सिवा तुम्हारे और मनुष्य भी फियरसाहबको खबरेंदियाकरतेथे औरजोलोग खबरें पहुंचातेथे वह तुम्हारे नौकर थे ? उ०—मैं उनलोगों को किसवास्ते नौकर रखता साहब तीन २ चार २ कोसतक हवाखाने जायाकरतेथे जोमनुष्य उनको मिलते उनसेपूछा करतेथे। प्र०—जोखरीता गायकवारने श्रीमान् वाईसरायको भेजाथातुमने उसका वर्णन किया था ? उ०—मुझको अच्छे प्रकारस्मर्ण नहीं। प्र०—याद करके बताओ। प्र०—जोआप-खरीतेकेलिये पूछतेहैंतो महाराजासाहबने बहुतसेखरीतेभेजे थे। प्र०—मैंउसखरीतेके लियेपूछताहूंजो करनैलफियरसाहब की बदलीके विषयमेंगया था ? उ०—मुझेस्मर्ण नहीं कि इस खरीते का करनैलफियरसाहबसे जिकरकिया हो। प्र०—तुम सौगन्धखासक्तेहो कि मैंनेजिकनहीं किया ? उ०—हां सौगन्ध खासक्ताहूं किजिकनहीं किया। प्र०—तुमउस खरीतेके हाल सेवाकिफ नथे ? उ०—मुझको किसतरहउसका हालमालुम होता। प्र०—मालूमहुवाकि तुमको उस खरीते का हाल कुछ भी मालूम नथा? उ०—नहीं मुझको कुछभीमालूमनथा। प्र० जोकुछ करनैलफियर साहबने इसविषयमेंकहाहै उसकोसुनो

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जब करनैलफियर साहबसे प्रश्न कियागया कि तुमनेभावपूना करसे इसखरीते का हालजो दूसरी नवम्बरको भेजागया था सुनातो उन्होंनेवर्णन कियाकि हां मैंने सुनाया—पसकरनैल फियरसाहबने तो इकरार किया कि तुमसे सुनाया। तुमकिसतरह कहतेहोकि मैंने नहींकहा ? उ०—मुझे स्मर्ण नहीं। प्र०—तुम सौगन्दखासक्ते हो कि मैंने नहींकहा ? उ०—मुझे स्मर्ण नहीं कि मैंने करनैल फियर साहबसे कहा या नहीं। प्र०—तुमको औरखरीतोंकीभी इत्तिला नहींहुई नतुमनेकरनैलफियरसाहबसे उसका जिक्रकिया ? उ०—जब मैंनेसुनाकि खरीताजाने वाला है मैंने कनैलफियर साहबसे कहा परन्तु मजमूनकेमालूमन होनेसे कुछमुफस्सिल हालखरीतेका नहीं कहा। प्र०—तुम क्योंकर जानते थेकि खरीतेलिखे जातेहैं ? उ०—लोग दरबार में बातें किया करते थे वहां मैं सुनाकरताथा। प्र०—तुम गायकवार के नौकरोंको जानताहो। उ० मैं बड़ौदे के सम्पूर्ण निवासियों को जानता हूं। प्र०—तुमसालिमको जानतेहो ? उ०—हां इतना जानताहूं कि वहरजीडन्सीमें आयाकरताथा प्र०—तुमकभी गायकवार केमहल में सालिम की भेंटके लिये नहीं गये ? उ०—नहीं। प्र०—तुमभी महलको नहींगये ? उ०—जबकोई कामहोताथा चलाजाता था परन्तु जबसेकमीशन बैठाहै नहींगया प्रेजीडण्टसाहब ने कहा कौनसी कमीशन का जिक्र है ? उ०—करनैल मीड साहबकी कमीशनका, उससे पहिले इससे अधिकन होंगया। प्र०—तुम दामोदरपन्थको जानतेहो ? उ०—हांदूरसेदेखा है बात्तीनहींकी प्र०—वर्णन करोकि बापसाहब कौन हैं ? उ० खाण्डेरावमहाराजाकी अविवाहितास्त्रीसे यहलड़काहै। प्र० यहमनुष्यगद्दीका दावीदार है ? उ०—नहीं वह उसतनखाह का दावीदारहै जोउसको मिलाकरती थी। प्र०—परन्तु तुम जानतेहोकि अबउसको गद्दीका दावानहींहै ? उ०—उसको क्योंकर गद्दीकादावाहोसक्ताहै क्योंकिवहमदखुला औरतसे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

है। प्र०—तुम निश्चयकरके कहसक्ते हो कि उसको सिवामासिक के और कुछदावा नहीं है? उ०—सिवाय तनखाहके और कुछदावानहीं करताहै। प्र०—तुमसे गायकवारसेहाल और पहिलेसेभी कभी रंजिश होगई है? उ०—थोड़ेदिन मुझको हिरासतमें रक्खाथा। प्र०—किसकारणसे? उ०—मिस्टरसालमनसाहब एसिस्टेन्टरज़ीडण्ट को भावसेंधिया ने कुछरिश्वतदीथी इसलिये भावसेंधियाको सरकारने मै।कूफकरदिया प्र०—मुझसे साफ २ कहोकि गायकवारहालने तुमपर कुछ जुर्म्मकायम किया था? उ०—मुझपर कोई जुर्म्मक़ायम नहीं किया नमुझको कभी क़ैदकिया॥

मिस्टररिचीसाहब के इज़हार।

मिस्टररिचीसाहबके इज़हार मिस्टरअनवरारटी साहबने लिये उन्होंने वर्णनकियाकि मेरानाम जेम्सबैलटरिचीहै और मैं ऐसिस्टण्टऐजन्ट गवर्न्मरजनरलहूं जो बड़ौदेमेंरहताहै मुझको सिवलसरविसीमें तअल्लुकहै जबदामोदरपन्थ के इज़हार लिये गयेथे मुझे यादहै॥

साहबप्रेज़ीडण्टसे मिस्टरअनवरारटीसाहबने कहाकिदामोदरपंथनेमरहठी भाषामेंइज़हारदिया उसको अदालतनहीं कहसक्ते मिस्टररिचीसाहने कहा कि मरहठी भाषाको कुछ मैं जानताहूं मैंने उसकेइज़हारों का उलथा अंगरेज़ीभाषामें कियाथा और रज़ीडन्सीकेहिन्दुस्तानीऐसिस्टेन्टने मुझको सहायतादीथी हिन्दुस्तानीअसिस्टेन्टका उलथाठीकथा और मैंनेभी सही २ लिखा दामोदरपन्थने जोकुछ वर्णन किया मैं जल्दी २ लिखतागया और इसके उपरान्त मैंनेउसे दुरुस्तकिया अदालतमें जो इज़हार रक्खा है मेरेही हाथकाहै यह इज़हार २९—३० जनवरीका लिखाहुवाहै जबतर्ज्जुमा होकर दामोदरपन्थको सुनायागया मैं मै।जूद नथा—मिस्टरअनवरारटीसाहबने साहबप्रेज़ीडण्टसे कहा कि मैं चाहताहूं कि २९ और ३० जनवरीके लिखेहुये इज़हारअदालतमें दाखिल किये जांय॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सरजन्टवेलनटायन साहबने कहा कि यह इज़हार किस क़ानून और कायदेके अनुसार गवाहीमें दाखिल होसक्ते हैं होसक्ते हैं अगर आमक़ायदेके अनुसार गवाहीमें दाखिल किये जाते हैं तो यह क़ायदा आम नहीं है॥

प्रेजीडण्ट साहबने कहा यह इज़हार गवाहीमें दाखिल हो सक्ते हैं क्योंकि तहकीकात कीतरफ आपको गौर करना चाहिये सिवा इसके मिस्टर रिची साहब इज़हार लेनेके अधिकारी थे और उनके लिये हुवे इज़हार काफी समझे जासक्ते हैं फिर वह इज़हार पेश होकर गवाही में दाखिल किये गये और उनके इज़हार भी दाखिल हुये जिनकी तसदीक होचुकी थी॥

सरजण्ट वेलनटायन साहबके प्रश्न।

प्र०—दमोदरपंथ आपके चार्जमें हैं? उ०—नहीं। प्र०—गजानंद वतिलके चार्जमें है? उ०—मिस्टर स्टटर साहबके चार्जमें है प्र०—आप जानते हैं कि वह खास किस की हिरासत में है? उ० मैं नहीं जनता॥

इज़हार अब्दुल अली॥

खानबहादुर अब्दुल अलीके इज़हार मिस्टर अनवरार टीसाहबने लिये उन्होंने वर्णन किया कि मैं बम्बई की पुलिस का इन्सेक्टर हूं दिसम्बरके महीनेमें मिस्टर स्टटर साहबके साथ बड़ौदे को आया था शायद ९ दिसम्बर थी उसी दिन से मैं बड़ौदे में हूं और मिस्टर स्टटर साहब की सहायता करता हूं यह सुनकर सरजण्ट वेलन टायन साहबने कहा कि तुम ठहरो हम करनैल फियर साहब को बुलाते हैं॥

करनैल फियर साहब बुलाये गये।

प्रेजीडण्ट साहबने उनसे कहा कि आप कुरसीपर बैठें सरजन्ट वेलनटायन साहबने कहा हां कुरसीपर बैठें परन्तु ऐसे स्थान पर जहां मैं भी उनको देख सकूं करनैल फियर साहब ने कहा हां मैं ऐसीही जगहपर बैठूंगा सरजण्ट वेलनटायन साहबने

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

करनैल फियर साहब से कहाकि आपकी शहादत मुल्तवी की गईथीकि आपने थोडेसे असलकागजों को मंगवाने का इकरार कियाथा आपने कागज़ मंगवाये यानहीं? उ०—हां मंगवायेहैं सरजण्ट बेलनटायनसाहबने कहा मेहरबानीकर-के मुजको दीजिये करनैल फियर साहबने वहकागज़ ढूंढ करजो ऐडवकेट जनरलके कब्जेमेंथे सरजण्टबेलनटायनसाहब कोदिये करनैल फियर साहबने कमीशन के मेम्बरों से कहा यदि आपकी आज्ञाहोतो सरकारी कागज़ कमीशनकेरूबरू पेशकरूं॥

प्रेजीडण्ट साहबने कहा मैं कुछ नहीं कहसक्ता आपको अखतियार है पेशकरने न करने का॥

करनैलफियर साहबने कहा पसऐसी अवस्थामें मुजकोपेश करनेकी आज्ञा नहीं है साहब प्रेजीडण्टने कहा मैं आपको पेश करनेकी इजाज़त नहीं देसक्ता ऐडवकेट जनरल को ज़िम्मेदारकरता हूं करनैलफियर साहबनेकहा किजोबात पूछनी होउसका उत्तर मैंदूंगा परन्तु कागज़ नहींपेश करूंगा॥

सरजन्टबेलन टायनसाहबने कहा इससे मालूम हुआ कि आप कागज़ के पेश करने से इन्कार करते हैं करनैल फियर साहबनेकहामैं इन्कारकरताहूं परन्तु जो आपइन कागज़ों कासम्बन्धी प्रश्न करेंगे उसका यथार्थ उत्तर दूंगा॥

सरजन्ट बेलनटायन साहबनेकहा बहुतअच्छा आप बतला इयेकि इसकागज़में यहलिखाहै वानहीं कोईकुलनहीं पाया जातापस इसबातका लिखना श्रीयुतगवर्न्नर जनरलको उचित हुवाकि करनैलफियरसाहबनेबेमौकाइसमुकद्दमेमेंदखलदिया॥

करनैल फियरसाहबने कहाकि यहइबारत इसकागज़ में लिखीहुई है परन्तु कुछ इबारत छूटगई है॥

इसीतरह कहीं २ सरजण्ट बेलनटायन साहबने इबारतपढ़ पढ़ कर सुनाई करनैलफियर साहबने उसको तसलीमकिया

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

परन्तु यह भी कहा कि जो खास २ और उत्तम २ बातें हैं वह छोड़दीगई हैं इसकेउपरान्तसरजगट वेलनटायन साहबने पूछा कि आप नूरुद्दीन बौहरे को जानते हैं ? उ०-मैं नाम नहीं जानताहूं परन्तु एकबौहरेका मुक़द्दमा उसकमीशन मेंदायर था जोपिछले वर्षमें जमाहुईथी। प्र०-शायद वहयही मनुष्य होगाआपजानते हैंकि गायकवारने इसमनुष्यको बहुतभारी दण्डदिया था ? उ०-हां यदिवही मुकद्दमा और उसीमनुष्य कोउरुमुकद्दमेसे तअल्लुक है तोयहवहीमनुष्यहै। प्र०-उसके एक सम्बन्धीको गायकवारने बहुतसे बेदलगवायेथे और यह दण्डदेकरभीपांचहजाररुपयाजुर्म्मानाकिया? उ०-हां उसपर जुर्म्माना हुवा था परन्तु मुझे जुर्म्माने की संख्या स्मर्ण नहीं सरजगट वेलनटायन साहबने अधिष्ठाताओंसे कहाकि मैंनहीं चाहताकियह कागजकरनैल फियरसाहबका आममें मशहूर कियाजाय करनैल फियरसाहब जिसप्रकारसे चाहें इसका-गजको रक्खें साहब प्रेजीडेगटने कहा कि नूरुद्दीन बौहरे के मुकद्दमेका करनैल फियरसाहबने कुछउत्तर नहींदिया सर-जगट बेलनटायन साहब ने कहा कि करनैल फियर साहब उत्तर देचुके हैं इसके उपरान्त सरजगट वेलनटायन साहबने करनैलफियर साहबसे पूछा कि इस बौहरेने गायकवार के ऊपर नालिशकीथी या नहीं ? उ०-हांउन दिनोंमें नालिश कीथी-प्रेजीडेगटसाहबनेपूछा कि जिनदिनोंमें कमीशनएकत्र हुईथी उसने नालिशकीथी ? उ०-मैंनाम खूबनहीं जानता परन्तु एक बौहरेको जानताहूं॥

एडवकेटजनरलने दुबारह इज़हार करनैलफियर साहब के लिये॥

प्र०-यहफिकरे जोतुम्हारे सन्मुखपढ़े गयेयह गवर्न्मेगटरे जो-ल्यूशनसेचुनेहुये हैं उ०-हांसाहबगवर्न्मेगटरैजोल्यूशनसे चुने गयेहैं। प्र०-मालूमहोता है कितुम्हारे मुफ़ीदमतलबके फिकरे उसमेंसेनहींलियेगयेहैं ? उ०-हां साहब नहीं लियेगये। प्र० उस समयरैजोल्यूशन गवर्न्मेगटसेजारीहुवाथा तो तुमकहांथे ?

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उ०—मैं इङ्गलिस्तानमें था। प्र०—जबकि रैजोल्यूशन गवर्न्मेएटसे जारीहुआ तो तुमको उत्तरदेनेका मौकाथाया नहीं ? उ०—मैं इङ्गलिस्तानमें था मौकाकहांसे पाता। प्र०—तुमको दूसरे रेजोल्यूशनकी खबरथी किकोई ऐसा रेजोल्यूशन जारीहुवा है ? उ० साहब मुझे खबर नथी जबमैं इङ्गलिस्तानसे आयातब मुझको खबरहुई। प्र०—जबतुम इङ्गलिस्तानसे आये तो उससमयक्या सरकारने तुम्हारेनिकट रैजोल्यूशन उत्तरदेनेकेलिये भेजाथा ? उ०—नहीं हमने आप दरख्वास्तकरके मंगायाथा। प्र०—जबवह रैजोल्यूशन तुम्हारे मंगानेके अनुकूल आयातो तुमनेजो इलजामतुम्हारेऊपरलगायेथे सबका उत्तरदिया ? उ०—हांसाहब मैंने सबका उत्तरदिया। प्र०—जबतुमइङ्गलिस्तानसे आयेतो क्या पहिले पालनपुरमें ठहरेथे ? उ०—हांसाहब पालनपुरमें ठहराथा और जिसदिनसे मैं हिन्दुस्तानमें आया उसदिनसे मैंने पूरामासिकपाया। प्र०—बड़ौदेमें जोतुमआयेतो अपनीतरक्कीपर आयेथे ? उ०—हांसाहब तरक्कीपर आयाथा॥

इज़हार गजानन्दवतिल।

गजानन्दके इज़हार ऐडवकेटजनरलने लिये उसने वर्णन किया मुझकोसरकारसे रावबहादुर का खिताब मिलाथा मैं अहमदाबादमें पहिलेदर्जेका पुलिसकाइन्स्पेक्टरहूं मैं मिस्टर सूटरसाहबके साथ मुख्यकामपर नियतहुवाहूं मुझेस्मर्णहै कि १०दिसम्बरकोमैंबड़ौदेमें आयाथा उसीसमयसेमैं यहांहूं केवल दोदिनकेलिये अहमदाबाद चलागयाथा जिसदिन गायकवार पकड़े गये कप्तान जेक्सनसाहबके साथमैं गायकवारके महल मेंगयाथा हमलोग ९ बजे दिनके गयेथे मैंने जाकर महल में तुरन्तही पहिरास्थान२ परनियत करदिया और जिस२ जगह परमाल और असबाबथा मैंने मोहरलगादी जवाहरखाने और निजकेखजाने परभीमोहर लगाई गईथी कप्तानजेकसनसाहब और२आदमियों के सम्मुख यहमोहरें लगाईगईं दामोदरपंथ भीउससमय उपस्थित थे उसदिनमैंने औरभी बहुतकामकिये

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

इसलिये सम्पूर्ण वृत्तान्त विस्तार से वर्णनहीं जो कागज़ात निजकी कचहरीकेथे वहकईदिनतक बन्दरहे फिररजीडन्सी में मंगायेगये कुछकागज़ अवभीगायकवारके महल में बंद हैंजो कागजरेजीडण्टीमें मंगायेगयेवहपुलिसके पहिरेमेंरक्खेगये॥

साहबप्रेज़ीडेण्टने पूछाकियह कागजरेजीडन्सी में किसने मंगवायेथे? उ०—सरकारकी आज्ञानुसार गयेथे औरजबयह मोहरेंतोड़ी गईं तोसम्पूर्ण कारकुन निजके महकमेके और मिस्टरसूटर साहब उपस्थितथे जिसदिन दामोदरपंथ पकड़ा गया मुझकोयादहै किपकड़ेजानेके पीछे मैंने उसको देखाथा मैंनेउससेकहाथा किअगरतुमसही २ हालबयान करोगेतो तुम्हाराअपराध क्षमा होजावेगा किन्तुताज़ीरात हिंदकीजिस दफामें अपराधके क्षमापनका वर्णनलिखाहै वहभीमैंने उसको दिखाईथी इसके विशेष मैंने उससे यहभी कहा था किनाना जीवतिल आदि ने तो अपने २ अपराधों का इकरार किया यहीबातेंदामोदरपंथसेमैंने कहीथीं और कहाथाकिभलेप्रकार समझकर इसका उत्तर दो-इसके उपरान्त कमीशन के मेम्बर टिफनखाने को गये भोजन से सुचित होकर फिर एकत्र हुये साहबऐडवकेटजनरलनेप्रश्नकियाकि तुमनेकहाकि दामोदर-पंथकोदेखा और उसकोसमझाया था तुमने उसकेपीछे भीउसे देखा? उ०—मैंनेदोतीन घण्टेके उपरान्त फिरउस को देखाथा जबसरल्यूइस पीलीसाहबने उसकाअपराध क्षमाकरदियातो उसकेइज़हारहुयेथेयहमनुष्यडेरेमेंबुलायागयावहांमैंनेउसको देखाथा सरल्यूइसपीली साहब भी उसडेरेमें थे उसवक्त उसने इजहारदियेऔरमिस्टररिचीसाहबने उसकाइजहारलिखा था मैंहेमचन्दगवाहकोजानताहूं दामोदर पंथके इजहार केपहिले मैंनेउसकोदेखाथा।प्र०—कितनीमुद्दतकेपहिलेतुमनेउसकोदेखा था?उ०—पांचछः दिनपहिलेमैंनेउसकोदेखा उसकाबयान सब अशुद्धहै किमैंनेउससे ज़बरदस्तीइकरार कराया।और यह भी गलतहैकि जोकुछजोचाहा। मैंने लिखलिया और यह बयानभी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

गलत है कि मैंने उससे कहा कि अगर तू इजहार पर दस्तखत न करेगा तो तुझको कैद करूंगा मैंने किसी तरह की उसको धमकी नहीं दी न मैंने जबरदस्ती उससे किताबों को छीन। जब उसने किताबें दीं उनको। मैंने रख लिया हेमचन्द फतहचन्द के इजहार मिस्टर सूटर साहब के रूबरू लिये गये थे उस समय मैं भी उपस्थित था मुझको। ख्याल है कि जब वह इजहार दे चुका था तो मिस्टर सूटर साहब सर ल्यूइस पीली साहब के रूबरू उसको ले गये थे कोई रकम किताब में मेरी आज्ञा से दर्ज नहीं हुई मुझे ख्याल नहीं कि पहिले बेर किताब को कब मैंने देखा था जब हेमचन्द फतहचन्द पहिली दफा मेरे पास किताबों को लाया तो यह रकमें उसमें लिखी थीं मैंने कोई वरक़ किताब का न निकलवाया न कोई नया वरक़ उसकी जगह लगवाया मालूम होता है कि मेरे पास किताबों के आने के पहिले नये वरक़ लगाये गये थे मेरे पास इस किताब में कोई तबदीली नहीं हुई॥

जब नरसू जमादार पकड़ा गया मुझको याद है कि रजीडन्सी में मिस्टर सूटर साहब की आज्ञानुकूल पकड़ा गया था पर मुझे यह ख्याल नहीं कि किस मनुष्य ने उसको पकड़ा था परन्तु मेरे रूबरू वह गिरिफ्तार किया गया था इसके उपरान्त रावजी से उसका सामना कराया गया जो मैदान रजीडन्सी के रूबरू है वहां मैं नरसू के निकट बैठा हुआ इस मुकद्दमे में प्रश्न करता था ख़ान साहब अकबर अली और अब्दुल अली वहां वर्त्तमान थे मैंने रावजी से कह दिया था कि तुम यह बात कह देना कि मैंने सब बातों का इक़रार कर लिया जब रावजी नरसू के निकट आया तो उसने भी कह दिया मेरे विचार में किसी पुलिस के आदमी ने नरसू से नहीं कहा था कि रावजी ने क्या कहा रावजी से जितना कि कहा गया उतना ही उसने नरसू से कहा॥

सरजन्ट बेलनटायन साहब के प्रश्न।

प्र०—तुमने जो कुछ रावजी से कहा वह इसलिये कहा कि वह ठीक२ बयान करदे? उ०—किस विषय में। प्र०—इसी मुक़-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

हमेमें। उ०—उनलोगोंका साम्हनाइसलिये करायागया था कि ठीक२ हाल मालूम हो जावे। प्र०—यदि नरसूहर एक बातकाइन्कार करता तो आपक्याकरते? उ०—अगरकोई सुबूतनहोता तो छुड़ादिया जाता। प्र०—तुम्हारामतलब यह है कि तुमनरसू को रिहाकर देते? उ०—हां जब साहब आज्ञा देते। प्र०—तुम बतलाओ कि जबतुम महल में गयेतो सबकागज़कुर्क करलिये थे? उ०—हां। प्र०—मिस्टर सूटर साहब वाकोई दूसरा अफ्सर मौजूदथा जबकि किताबों की मोहरें तोड़ीगई? उ०—उससमय मिस्टरसूटर साहब मौजूदथेऔर मैंभी था। प्र०—मैं तुमसे यह प्रश्ननहीं करतामेरा प्रश्नयहहै कि जबकागज़ तुम्हारे अधिकार में थेतो मिस्टरसूटर साहबने उनको देखाया? उ०—जिससमय मैंने उनकागजों कोदेखा तोमिस्टरसूटर साहबकोभी दिखादिया था। प्र०—कितनीमुद्दततक तुम्हारे कब्जेमें यहकागजात रहे? उ०—मेरेकब्जे में कभी यहकागज नहीं रहे पुलिस और जंगीगार्ड में थे। प्र०—ऐयारेसमक्ष करउत्तरदो जबतुमनेखोलकर कागज़देखे तोउससे कितनी देरपीछे मिस्टरसूटर साहब आये थे? उ० तुरन्तही मिस्टरसूटरसाहब आयेथे। प्र०—तुरन्तसेतुम्हाराक्या मतलबहै? उ०—दस पन्द्रहमिनटकेपीछे। प्र०—तुमने उनसब कागजोंको कुर्ककिया था? उ०—हां। प्र०—कुर्क से कितनी देरपीछे मिस्टरसूटर साहब आयेथे? उ०—किन कागजोंको आप कहते हैं। प्र०—वह कागज जो आपने कुर्क किये थे? उ०—जितने दफ्तरथे उनकेसब कागज़ों को बन्दकरके मोहर करदीगई थी। प्र०—उनदफ्तरोंमें कोई मनुष्य जाभी सक्ता था? उ०—मैं और कप्तान जेकसन साहब दफ्तरमें जासक्ते थे। प्र०—तुम हर एक कागज़ कोदेख सक्ते थे? उ०—हां। प्र०—तुम कहते होकि पाव घंटेतक मैं कागज़ देखता रहा उसके पीछे मिस्टरसूटर साहब आये? उ०—हां। प्र०—इस अवसरमें तुमनेसब कागजदेख लियेथे? उ०—जब मैंने देखा कि

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कागजों पर स्याही पड़ी है तो मैंने सूटर साहबसे इत्तिला की जबसूटर साहब आये तो मैंनेसम्पूर्ण कागजोंको दिखाकईबातें और भी उसमें से मालूम हुईं। प्र०—आप उसकिताब की तहरीर का हाल बयान करसक्ते हैं? उ०—हां, कुछ वरक्क उसकिताबसेनिकालकर नयेवरक्कलगा दियेगयेथे। प्र०—किताबदिखाओ कि तुम्हारी क्यागरजहै? उ०—देखिये इसपंक्ति कालेख और पंक्तियोंकी निसबत अलाहिदाहै। प्र०—परन्तुयह वरक्क एकदूसरेसे जोड़ेहुये हैं जब तुमने किताबों को कुरक किया इसकिताबकी यहीहालत थी? उ०—हां यहीहालत थी परन्तु उससमय वरक्कऐसे मैलेनथे अब हाथोंके लगने से मैलेहोगयेहैं। प्र०—तुमको क्योंकर मालूमहुआ कि यनिस्बत और पंक्तियोंके यह सतरनई लिखीहुई है? उ०—यह सतर हालकीलिखी मालूमहोती है। प्र०—तुम कहतेहो कि यह किताबगलतहै और एक सतरके लिखेजानेके कारण किताब गलतहोगई। उ०—इस पंक्तिपर कुछमैकूफनहीं इसीप्रकार कईस्थानपर अशुद्धहै और वरक्कबदलेगयेहैं। प्र०—तुमनेकेवल एकही जगह दिखाया कि नवीनपंक्ति लिखीहुई है और भी सतरें दिखाओ? उ०—आपको खयालकरना चाहियेकिसम्पूर्ण पत्रेजुड़ेहुये हैं और कोई पत्राफटा नहीं है। प्र०—किताब के अन्तमें जोजुज्व हैं उसमेंथोड़ेसे वरक्ककमहैं और जितनेवरक्क किताबके और जुज्वोंमें हैं उतने वरक्कअन्तके जुज्वमें नहीं हैं? उ०—वहकिताबका भागदिखाओ जिसमें कहतेहो कि वरक्क निकाले गयेहैं—गवाहने सुनकर वहहिस्सा किताबका दिखाया जहांसे वरक्क कमथे—साहब प्रेज़ीडण्टने कहा इसजगह कोई निशानरखदो सो सुतरज्जिमने अपनेदस्तखत करदिये सरजन्टबेलनटायनसाहबने किताबको उठाकर कहाकिस तरह तुम साबितकरसक्ते हो कि यह रक्कम बदलीगई है? उ०—यह स्याहीनईहैऔरवहस्याहीपुरानीमालूमहोतीहै। प्र०—जवाहर खानेका अब कौनमनुष्य मोहतमिमहै? उ०—अबसे क्यागरज

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

है—सरजन्ट बेलनटायन साहबने तीनबेर कहा, अब, अब, अब ? उ०—अबगणपति रावमहाजन मोहतमिमहै। प्र०—यहमनुष्य तुम्हारे करीब कारिश्ते दार है ? उ०—वह मेरा समधी है। प्र०—तुमको अपनी आबरू का बड़ा खयाल है और लोगोंको यहसंदेह है किगवाही तुम्हारी बनावट की है ? उ०—ऐसा खयाल मेरे लिये कभी नहीं हुआ। प्र०—आयु भर में ऐसा इलजाम तुमपरकभी नहीं लगा ? उ०—नहीं। प्र०—जबरियासत कोटाकीगद्दी नशीनीका मुकद्दमा था तो तुमवहां उपस्थितथे ? उ०—हांमैं वहां उपस्थित था। प्र०—वहांबड़ेदरजेके अफ्सर पुलिसतुमथे ? उ०—हांमैंअफ्सरपुलिसथा औरमैंने कुलतहकीकातकी। प्र०—वहमुकद्दमा प्रथम मिस्टरकागलन साहबके सम्मुखपेशहुआथा ? उ०—जो मुकद्दमा मिस्टर कागलनसाहबके रूबरू पेशहुआ थामैंने उसकीतहकीकातनहीं की। प्र०—इससे तुम्हारायह मतलबहैकिजो मुकद्दमा मिस्टर कागलनसाहबके रूबरूपेश हुआ थाउसमें तुमखास असफ्र पुलिस थे ? उ०—उसमुकदमे कोतहकीकात मैंने नहींकी। प्र०—क्या तुमने उस मुकद्दमे कोभी तहकीकात नहीं कीजो मिस्टररिचो साहबके रूबरू पेशहुआ था ? उ०—मैं एकदफा मिस्टर रिचो साहबके रूबरू गयाथा मिस्टरमैलवल साहब ने मुतरज्जिमसे कहा कि गवाह ने मिस्टर कागलन साहब कानाम भी लिया था॥

सरजण्ट बेलनटायन साहबने कहा अफ्सोस है कि तुमसब कासब तर्जुमा नहीं करते तुमने मिस्टर कागलन साहब का नामनहीं लिया॥

गवाहने कहाकि यदिमैंआपका प्रश्नअच्छीतरहसमझूं तो उसकाउत्तर देसकूं। प्र०—मुझेआश्चर्य्यहै कितुम क्योंकरजवाब साफदोगे मैंपूछताहूं कितुमउसमुकद्दमेमें जोमिस्टर कागलन साहबके रूबरूपेशहुआथा पहिलेदरजेकेअफ्सर पुलिसथे ? उ०—नहींमैंने उसमुकद्दमे कीपूरीतहकीकात नहींकीयोंकि

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

तहक़ीक़ात में संयुक्त हुआथा शायद इतनीही तहकीकातके लियेमैंबुलाया गयाथा। प्र०—मिष्टरगजानन्द आपमेरे साथ अप्रतिष्ठासे पेशआतेहैं परन्तु मैंसाफ उत्तरके पानेके बिनानहं दूंगा ? उ०—मैं अपने प्रश्नको इससे अधिक विस्तारसे नहीं बयानकरसक्ता। प्र०—लज्जा मतकरो साफ जवाबदो क्या तुम उसमुकद्दमे में मुख्यपुलिसअफ्सरथे ? उ०—पहिले नम्बरका अफ्सर पुलिसथा और गवाहकी तौरापरउस में गया था। प्र०—पहिलेनम्बर सेतुम्हारा क्याआशयहै क्यायहमतलब हैकि तुमइस मुकद्दमेकी तहक़ीक़ातमें मुख्यअफ्सरपुलिसथे ? उ० नम्बर से मेरा यह मतलबहै कि मुझसे जियादा तनख्वाह का कोईमनुष्य गवाहों में नथा। प्र०—उस समयमें तुम्हारा क्या दरजाथा और क्यामासिक मिलताथा ? उ०—यदि आपमुझ कोसन्का पतादेंगे तोकहूंगा। प्र०—सन् १८७० ई० मेंथा ? उ०—सन् १८७० ई० मेंपहिले दरजे का अफ्सर पुलिसथा प्र०—क्यामिस्टर कागलन साहबने कहा था कि इस मुकद्दमेके गवाहीदेनेके विषयमें पुलिसनेभी कुछकारखाई कीहै ? उ० मैनेउस मुकद्दमेकी तहकीकात नहींकी मैं केवलगवाह था। प्र०—क्या मिस्टर कागलन साहबने तुम्हारेलियेयहबात कही थी ? उ०—अगरकहीथी तोवह गलतीपरथे क्योंकि मैनेउस मुकद्दमेकी तहकीकात नहींकी केवलगवाहथा। प्र०—प्रेसीडेण्टसाहबनेकहाक्या उन्होंनेअपने मुखसेयह बातकहीथी? उ० मुझेस्मर्णनहीं शायदअपनी कचहरी में कहाहोगा। प्र०—जो कुछउन्होने कहाथा उससेतुम्हारीतरफ इशाराथा ? उ०—मैं नहींजानता किकिसकी निस्बतयहबातथी जबमुझको एकबात सेसम्बन्धनथा मुझको उसकीतलाशकी जरूरतनथी। प्र०—यदि तुमसेसम्बन्धनथातो और किससेतअल्लुकथा ? उ०—जिनपुलिसके लोगोंने तहक़ीक़ात कीथी उनही सेतअल्लुकथा और मैं केवलगवाहके तौरपरथा। प्र०—जिसमुकद्दमे की तहकीकात मिष्टरजस्टिस वेसिट साहबनेकी वहतुमको यादहै ? उ० हां

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मुझेखबर्रहैपरन्तुमुकद्दमेकी समाअतकेसमयमैंमौजूदनथा। प्र० लेकिन बरवक्ततहकीकात मुकद्दमेके तुममौजूदथे ? उ०—मैं मौजूदनथा जबमुकद्दमा दौरासुपुर्द हुआ उस समय मुझको तअल्लुक हुआथा। प्र०—इसवर्णनसे तुम्हारा क्यायहमतलब है किमुझको उसमुकद्दमेसे कुछतअल्लुक नथा जिसकी समाअत मिस्टरजस्टिस वैसटके रूबरूहुईथी ? उ०—जबमुकद्दमे की समाअतहुईथीमैं वहांनथापरन्तु मुकद्दमेको मैनेमरत्तिबकिया। प्र०—तुमको खबर होगा कि मिस्टर जसटिस वैसट साहबने कहाथाकि सैकड़ों मुकद्दमेमेरे सामनेआये औरमैंने उनका निर्णयकिया परन्तु ऐसामुकद्दमाकोई नहींआया जैसा कि यहमुकद्दमाहै साफमालूम होताहैकि यहमुकद्दमा बनावट काहै ? उ०—मैं आपके इसप्रश्नको नहीं समझा। प्र०—मेरा प्रश्न यहहैकि तुमजानते होकिमिस्टर जस्टिसवैसट साहबने इजलासमें यहकहाथा ? उ०—कहाहोगा मैं उससमय वहां नथा। प्र०—तुमनेसुनाथा औरप्रकारसे तुम्हेंइत्तिलाहुईहोगी कि साहबने तुमारी निस्बत ऐसा कहाथा। उ०—मुझको कुछ खबरनहीं सिवाइसकेमैंसाबित करसक्ताहूं किमुहाअलेहकी बातोंपरमिस्टर जस्टिस वैसट साहब आगये यदि अदालतको स्वीकारहोतो उनकागजातसे जो मेरे पास वर्त्तमानहैं इस बातकी प्रतीतकरादूं॥

गजानन्द वतिलके दुबारह इज़हार हुये॥

प्र०—दरमियान उसवक्तके जबतेकि उनकागजोंपर मोहर लगाईथीऔरफिर वहमोहरतोड़ीगईतुम्हारेकब्जेमें कभीवह कागज़आये? उ०—नहींआये। प्र०—तुमने उनकागजोंको क्या किया? उ०—साहबमैनेउनकागज़ोंको दोघन्टेतकदेखा। प्र० जबतुमनेउनकागज़ोंकी आजमाइशकीथी उससमयकोईकारकुनभीथा ? उ०—हांकारकुनथे। प्र०—जबतुमने उन कागज़ों परस्याहीके धब्बे देखे तोतुमने क्याकिया ? उ०—मैनेउनकागज़ोंको सूटरसाहबके पासभेजदिया। प्र०—तुमरिचीसाहबके

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

निकटक्योंगये थे? उ०-मैंकोटाके मुकद्दमेकेमद्धेगयाथाअवसाढ़े चारवजगये इसलिये कमीशन बरखास्तहुई ॥

पन्द्रहवें दिन का इजलास ॥

११ बजेकमीशनके सम्पूर्णमेम्बर एकचहुर्येसरल्यू इसपीवी साहबऔरश्रीमान्महाराजा गायकवार उपस्थित थे ॥

हरजीवन दास पुरुषोत्तमदासके इजहार ।

हरजीवन दासपुरुषोत्तमदासके इजहारात मिस्टर अनवरारटी साहबने लिये उसने वर्णन किया किमैं कारकुन जो किगुजराती भाषामें खजानेकाकाम देतेहैं उनका सरदारहूं मुझको हिन्दुस्तानीलिखने पढ़ने और हिसाब किताबमें बहुत अभ्यासहै पहिलेतखतोंके जुज़बनाये जातेहैं और एकजुजआठवरकों काहोताहै औरसारी वहीजुजों कीहोतीहै यदिएक पचाभी फाड़ाजावे तोएकजुजनष्ट होजाताहै मिस्टरअनवरारटी साहबनेपूछा कितुमहेमचन्द औरफतहचन्द कीवही को देखकर पहिचान सक्तेहोकि इसमेंसेकोई वरक़ फाड़ा गया है ? उ०-हांसाहब इसमेंसे वरक़ निकालेहैं औरआठवांऔर सातवां जुजनवीन काग़जका जोड़ागयाहै ॥

सरजन् बेलनटायन साहब केप्रश्न ।

प्र०-क्यातुम सचकहतेहोकि इसमेंसेपचे निकालेगये हैं? उ०-हांसाहब छठेजुजमेंसे कईवरक़ निकाले गये है । प्र० छठेवरक़मेंसे कितने वरक़लियेगयेहैं उ०-साहबदोवरक़लिये गयेहैं । प्र०-कितनेपचे बदलाये गये हैं ?उ०-तेरह पचेबदलायेगयेहैं औरवह अन्तमेंहैं। प्र०-वहकौनसा जुज़है ? उ० सातवां जुज़है । प्र०-क्या अंगूठीका विषयउसमें लिखाहै ? उ०-हांसाहब उसीमें लिखाहै ॥

ऐडवकेट जनरलने फिरउसके इजहारलिये ॥

हमकोबताओ किकिसजगहसेपचे जातेरहे हैं?उ०-उसने एकपिन्सललेकर जहांसेकि वरक़ गयेथेप्रथमसे अन्ततक चिन्ह

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

करदिये। प्र०—यह बताओ कहां कहां दूसरी स्याहीसे लिखा है? उसनेशीघ्रही जहां२ दूसरी स्याहीसे लिखाथा बतादिया॥

सूटर साहब के इज़हार॥

साहब ऐडवकेट जनरल ने फ्रेंक हैनरी सूटर साहब को बुलाकर उनके इजहार लेना शुरू किये उन्होंने वर्णन किया कि मैं कमिश्नर पुलिस और कम्पैनियन आफदी स्टार आफ इण्डिया का हूं ९ दिसम्बर सन् १८७४ ई० को इस मुक़-द्दमेकी तहकीकातके लियेबड़ौदेको आयाथा जिसमें कि प्र-सङ्गथाकि करनैलफियरसाहब को विषदिया गया मेरे साथ खानबहादुर अकबरअलीऔर उनका पुत्र खानबहादुर अब्दु-लअलीऔर रावबहादुर गजानन्दवतिलयेमैंभूलगया रावग-जानन्दवतिल मेरेपहुंचनेके कईदिन पीछेआयेथे मुझेस्मर्ण है किमैने इसमुकद्दमेमें अमीनाआयाका इजहार लियाथा१६ दिसम्बरको पूवजेके समयउसके मकान पर जो बोवी साहबके अहातेमेंहैदेखाथा उसदिनउसने विस्तारसे वृत्तान्तवर्णननहीं कियान मैने उसदिन उसके इजहार लिये क्योंकिवह बहुत बीमारथी जोकुछ आयाने उसदिन मुजसे कहाथा मुझेस्मर्ण हैअर्थात् उसनेवर्णन कियाथाकिमैंश्रीमान् मल्हररावके पास दोदफागईथीऔररुपयाभीपाया क्योंकिउसेउससमयबड़ेवेगसे ज्वरथामुजसेहाथजोड़करकहाकिमेरे इजहारफिरलीजियेगा मुजको बोलनेकी सामर्थ्य नहीहै मुझेस्मर्ण है किमेरे जानेके पहिलेकोई पुलिसका आदमी आयाकेपासनहींगया था १८ दिसम्बरको मैंनेआया का इजहार लियाथा अदालतमेंजो इ-जहार हैं मेरे लिये हुयेहैं औरमेरे हाथके लिखेहुये हैं मुज को मुतरज्जिम की जरूरत नहीं है मैं हिन्दुस्तानी भाषाभले प्रकार समझताहूं २१ दिसम्बरको मैनेअस्पतालमेंजाकरफिर आयाकेइजहार लियेइनदोनो इजहारों पर [डी] अक्षर का चिन्हलगायागया डाक्टर सीवर्डसाहब १९दिसम्बरको रेजी-डन्सीमें आयेऔर मुजसेकहाकिआयाको अबआराम है वह

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

आपको बुलातीहैसो २१ दिसम्बरको मैनेउसके निकटजाकर इजहारलिये मैने २४,२५,२६दिसम्बरको रावजीके भी इजहारलियेथे और२६दिसम्बरकोनरसूके भीइजहार लियेयहसब इजहार जोअदालतमें दाखिलहुये मेरेही हाथकेहैं नरसू२३ दिसम्बरको गिरिफ़ारहुवाथा वहरेजीडन्सीमें कैदकियागया और जंगीपहिरे उसपर नियतहुये उसदिनसे आजतक वह जंगी पहिरेमेंहै इजहारों केलिये जानेकेपहिले कोई वादा अपराध केक्षमा करनेका उससे नहीं कियागया जबउसका इजहार होनेवालाथा मैनेसरल्यूइस पीलीसाहबको भी बुला लिया सरल्यूइस पीली साहबने भीउससे कहाकि कोईअपराध तुम्हारा क्षमा न होगाकिन्तुजो अपराध तुम पर नियत होगा उसका दण्डदिया जावेगा॥

यहसुनकर नरसूजमादारनेअपनीपगड़ी उनके चरणों पर रखदीऔर कहाचाहे मुझको फांसी होजावेपरन्तु जोठीकर हालहैवहआपसेवर्णनकरदूंगाऔरजोकुछ मैनेकियाहै याकतेरहुयेदेखाहै आपसेसाफ़२बयानकरूंगाजबवहबयानकरचुका तोउसको पहिरेमें भेजदिया उसदिन उसका इजहार नहीं लिखा गयाथा २३ दिसम्बर कोमैने उसके इजहार लियेथे जिसकमरेमें नरसूके इजहार लियेथे वह रेजीडन्सी में खाने काकमराथा मैंखानेके कमरेके बराबरजोकमराहै उसमेंरहता थाजिसदिन रावजी कोपेटी देखीगई मुझको वहतारीखयाद है २५ दिसम्बरथी मुझेऐसा यादहै किमेरे वहां पहुंचने के पहिले पेटीमंगाई गईउस समयमैं अपनेकमरेमें गयाथा कि अफ़सर डिटैकटिव(सुरागरसां)नेमुझको इत्तिलाकी किपेटीमें कोईकागज मालूम होताहै उस जगह परकुछ डोरे निकले हुयेथे मैने अपने हाथसे पुड़िया निकाली जब उसको खोल करदेखातोकोई श्वेतवस्तु मालूमहुई मैनेअपनेहाथसे उसेएक लिफ़ाफ़ेमें रक्खा और उसका हाललिख लिया और जब मैं बम्बई को गया उसको अपने साथ लेगयाजब दमोदरमन्त्री के

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पहिलेइजहार लियेगये तोमैंबड़ौदेमें मौजूद नथा मैने बम्बईसे फिरवापिस आकर३–४–५फरवरी सन् १८७५ ई० कोइसके इजहार लियेइसके इजहारयहहैं सोसूटर साहबसे इजहार लेकरशामिल मिसल ऊये और उसपर नम्बर२ (जी) अक्षर का चिन्ह कियागया फिर गवाह ने बयान किया कि उनको थोड़े से हिसाब के कागज दिखलाना याद है उसमें कहीं कहींस्याहीके धब्बे पड़े ऊये थे २० फरवरी को यह कागज़ हिसाब केदेखे थे याशायद जनवरी मेंदेखेहों तारीख अच्छी तरह स्मर्ण नहीं ॥

एकपुलिन्दा कागजकागजानन्द मेरेनिकट लायाथाऔर मुजसे कहाकि डेरेमें चलोहिसाबके कागज़ देखे जाते हैंमैं दूसरे एकडेरेमें रहताथा औरहिसाबके कागज़ दूसरे डेरे में रहतेथे जबमैं वहांगया तोक्या देखा कि कई हिन्दुस्तानी कारकुन अर्थात्क्लर्क उनहिसाबके कागजों कोदेखरहेहैं मैने कुछकिताबेंऔरभी वहांरक्खी देखींजिसमें कई जगह परसि याहीपड़ीऊईथी वहांदेरतकमैंबैठारहा जोकारकुन उनका- गजोंको देखरहेथेवह उन्हींकेलिखेऊये कागजथे और महल सेआयेथे उनमेंएकका नामबलवन्तराव थामैने हेमचन्दऔर फतहचन्द काइजहार लियाथा मुजको स्मर्णहैअदालतमें जो इजहार रक्खेहैं मेरेही हाथके लिखे ऊये हैं ६ फरवरी को करनैल बारटनसाहबके अहातेमेंयह इजहार लियेथेसररि- चर्ड मीडसाहबने पूछाकि किसतारीखकोतुमनेयह इजहार लियेथे गवाहने कहाकि ६ फरवरीको लियेथे उसनेहिन्दु- स्तानीभाषामें इजहार दियेथे जिसदिन अंगरेजीमें मैने उस केइजहार लियेथेउसीदिनमरहटीया गुजराती बोलीमेंउसके इजहार लिखे गये थे मैने पूछा कि तुम हिन्दुस्तानी बोली जानतेहो जबउसने कहाकि मैं जानताहूं तोमैने हिन्दुस्ता- नी भाषामें उससे प्रश्नकिये ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सरजन्ट बेलनटायन साहबने कहा क्या आपनेउसके इज़हार हिन्दुस्तानी भाषामें लिखेथे ॥

गवाहने कहा मैने हिन्दुस्तानी बोलीमेंपूछेथे परन्तुअंगरेजीभाषामें लिखेगये जबउसके इज़हार लिखेगये तो उसको हिन्दुस्तानी भाषामें सुनायेगयेथे ॥

मुझेस्मर्णहै किउसने अपनेइज़हार परदस्तखत भीकियेथे उसकोकिसी प्रकारकी धमकी नहींदी नकुछसख्तीकी सिवाइन इज़हारोंके औरभी कुछ बातें उसने मुझसे कीथीं उसके कानमें बालेपड़ेहुयेथे वहअति उत्तमथे औरउसमें हीरेंजड़ेथेयदि मैने ऐसेबालेकभी बनेहुये नहींदेखे थे मैनेउससेपूछा यहबाले कहांके बनेहुयेहैं उसनेकहा बड़ौदेके बनेहुयेहैं यह बातें उसके इज़हार होनेके पहिले हुई थीं इनपर मैने (ए) (बी) (सी) अक्षरोंके चिन्ह करदिये थे अदालत में जोकिताबें रक्खीहैं वहीहैं उनपर मेरेदस्तखत भीहैं ॥

जबहेमचन्द फतहचन्दकेइज़हार कमीशनमें लियेगयेइसी हेमचन्द केइज़हार मैनेलियेथे सोउसके अंगरेज़ी इज़हार अदालतमें दाखिल किये ॥

औरउनपर(एच)अक्षर नम्बर२कानिशानकियागयासाहब प्रेज़ीडण्टने कहा यह इज़हार दिये हैं जिनकी निस्बत सरजन्ट बेलन टायन साहब उज़रकरते हैं ॥

साहब ऐडवकेट जनरलने कहानहींयहवहइज़हारनहीं हैं सरजन्ट बेलनटायन साहब मरहठी बोलीपरउज़र करतेहैं परन्तु उनइज़हारों कोभीथोड़ी देरके पीछे दाखिल करूंगा इसकेउपरान्त सूटरसाहबनेवर्णन कियाकि बलवन्तरावजिसने हिसाबकी जांचकीथीकभी हिरासतमें नहींरहामैंउसकेनाम सेवाकिफ नहींहूं दोतीन दिनहुये किउसके इज़हार कमीशन के सम्मुख हुये थे ॥

सरजण्ट बेलन टायन साहब के प्रश्न ॥

प्र०—मैने यहबात समझीहै किपहिले आपने नरसूसे बातें

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कौंफिर उसको आपसरल्युइस पीलीसाहबके रूबरू लायेऔर वहपूर्व्वोक्त साहबके रूबरू राजीहुआ किजोकुछ मैं जानता हूं वर्णनकरूंगा ? उ०—हां। प्र०—तुमनेउसदिन उसके इज़हारनहीं लिखे ? उ०—उसदिन उसने केवल बयानकिया या लिखे नहींगये थे। प्र०—उस दिन जो वार्त्ता हुई कोई लेख आपके पासनहींहै ? उ०—उसदिनका लिखाहुआ कुछ हाल मेरेपास नहीं है। प्र०—उस दिन उसके इज़हारों का लिखा जाना कुछकठिन था ? उ०—मैंइस मुकद्दमे में और २तहक़ी-क़ात करता था उससमय मुझको सावकाश नथा। प्र०—मा-लूम होताहै किआपकी वह तहक़ीक़ात ज़रूरीथी ? उ०—हां बहुत ज़रूरीथी। प्र०—उसतहकीकातसेबढ़कर औरकोईबात नथी ? उ०—हां बढ़करन थी जोआपचाहैं तोमैं अपनारोज़ नामचा दिखा सक्ताहूं किउसदिन मुझकोक्याकाम था। प्र० मिस्टर सूटर साहब मैं जानताहूं किउसदिन आप को बहुत कामहोगा रोजनामचेके दिखानेकी कुछ आवश्यकता नहींहै क्याआपने केवल इसीकारण इज़हारनहींलिखे ? उ०—हांइसी कारणनहीं लिखेऔर मैंजानता था कि नरसूजंगीगार्ड में है औरकोई उसके पासनहीं जासक्ताहै नकुछसिखासक्ताहै। प्र० क्याआपके पुलिसके आदमीनहीं जासक्तेथे ? उ०—हांपुलिस केआदमी। प्र०—फिरआपके इसबातके कहनेसे क्या मतलब है किकोई मनुष्यनहीं जासक्ताथा ? उ०—मेरा मतलब यहहैकि कोईदूसरा मनुष्यउसकेपास नहींजासक्ताथा। प्र०—जबतुमने तीनदिन केपीछे उसकेइज़हार लियेतो उसकाबयानवही था जोउसने पहिलेदिन वर्णनकिया ? उ०—हांवहीथा जोउसने २३ दिसम्बरको वर्णन कियाथा और २५ दिसम्बर कोउसको लिखलिया॥

गजानन्दवतिल फिरबुलाया गया।

मिस्टर अनवरारटोसाहबने फिरउससे प्रश्नकिये उसनेवर्णन कियाकि मैं हेमचन्दफतहचन्दको जानताहूं कि उसने सूटर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

साहबके सन्मुख इजहारदिये और मैनेगुजराती भाषामेंउसके इजहार लिखे और हेमचन्दने उसपर दस्तखत करदिये ॥

सरजरूट बेलन टायन साहबके प्रश्न ॥

प्र०—क्याइसके पहिले कितुमने सूटरसाहबको बुलायाथा इसकेइजहारलेलियेथे? उ०—मिस्टरसूटरसाहबके आने केपीछे लियेथेकिन्तु सूटरसाहबने आपहीलियेथे औरमैंउनकेसन्मुख लिखताजाताथा। प्र०—मेराप्रश्न यहहै कितुमने सूटरसाहबके आनेकेपहिले उसके इजहार लियेथेया सूटर साहबने उसके इजहार लिये यायहकि केवल सूटर साहबने आकर आपही इजहारलियेथे और उनके आनेके पहिले तुमने बिल्कुल नहीं लिये? उ०—नहीं मैंनेलिखे और सूटरसाहबने आपही इज-हार लिये। प्र०—कौनतारीख उसमें है? उ०—आठवींतारीख है। प्र०—परन्तु छठो तारीखभी तोलिखो है? उ०—हांछठी तारीख भीहै। प्र०—दोतारीखोंकेहोनेका क्या कारणहै? उ० छठीतारीखकोमिस्टर सूटर साहबने इजहार लिये और आठवीं तारीख को सरल्य इस पोलीससाहबके रूबरूदस्तखत उसनेकिये इससे दोतारीखें हुई ॥

ऐडवकेट जनरलने दुबारह इज़हार लिये ॥

प्र०—क्यापहिलेगुजराती भाषामेंइजहारलियेथे और फिर सूटरसाहबनेअंगरेजीमेंलिखेथे? उ०—नहींसाहब पहिलेसूटर साहबने अंगरेजी में लिखे थे फिर मैंने गुजराती भाषा में उसकातर्जुमा किया और उससे दस्तखत कराये—प्रेजीडण्टने कहामैंयह समझा किपहिले अंगरेजीभाषामें उसकाइजहार लिखागयाऔर फिर गुजराती भाषा में उसका उलथा किया गया? उ०—हांसाहब अंगरेजीसे गुजराती भाषामें एकऔर मनुष्यउलथा करताथा औरमैंलिखता जाताथा—एडवकेट जन रलने पूछातुमनेजब गुजराती भाषा में लिखलिया हेमचन्दको सुनायाभीथा? उ०—हेमचन्दने आपही उसको पढ़लिया और जहां२वहअटकामैनेउसकोबतादिया। प्र०—फिरउसनेक्यादस्त-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

खतकिये ? उ०–हां साहब उसने अपने हाथसे उसपर दस्तखत कियेसाहव अंग्रेजी डाक्टरने कहाकि हेमचन्द्रनेक्या हिन्दुस्तानीभाषा में अपने इजहार दियेथे ? उ०–हां साहब कुछ हिन्दुस्तानी भाषा में इजहार दिये और कुछ गुजराती बोलीमें। प्र०–तुमतो कहते थेकि किसी और मनुष्यने अंगरेजीमें लिखकर गुजरातीभाषा में उल्था किया था–एडवकेटजनरलने कहा कि सरल्यूइसपीलीसाहबको बुलाओ औरहम उनसे कुछ प्रश्नपूछेंगे और सरल्यू इसपीली साहब अपनी कुरसी परबैठें और अपने इजहारदें॥

सरल्यू इसपीलीसाहबके इजहार॥

सरल्यू इसपीली साहबके इजहार ऐडवकेट जनरलने लिये उन्होंनेवर्णन किया कि मैं एजण्ट गवर्नर जनरल हिन्द और इस्पीरियल कमिश्नर बड़ौदेका २ चौथी दिसम्बर कीसंध्याको बड़ौदमें पहुंचाथा बड़ौदेके पहुंचनेके पीछे पहिले काममेरा यह थाकिमैंने मिष्टरस्कटर साहबको उसमुकद्दमे की तहक़ीक़ात केलिये बुलायाजो करनैल फ़ियर साहबके विष दिये जाने का उद्योग हुवाथा और यह कारवाई उसहिदायतके अनुसार मैंनेकी जोमुझको गवर्नमेण्टसे मिलीथी सो मिष्टरस्कटरसाहब मेरेपास नियतहुये और ८ दिसम्बर कोवह मेरे पास पहुंचेमैंने उनकेरहने केलियेएक रेजीडन्सीमें कमरा देदियाथा जोकमरा इनदिनों खानेकाहै उन्होंनेअपनी तहकीकात शुरू की मुझे स्मर्णहै किमैंने उससमय सुनाथा किरावजी हवालदारने जोकुछ वर्णनकियाहै मैंनेइसमुकद्दमे कीसवतहकीकात मिष्टरस्कटर साहबके सुपुर्द करदीथी २३ दिसम्बर के सुबहको मिष्टरस्कटर औररिची साहबमेरेपास आयेथेमेरी इच्छाथीकिबड़े दिनकी छुट्टियोंमें बम्बईकोजाऊं जब मुझेमालूम हुवाकि बहुतबड़ीएक बातप्रगट हुईहै तोमैंबम्बईन गया मिष्टरस्कटर साहब भी २१ दिसम्बरको बम्बईजानेवालेथे मैंनेउनसेकहाकि २३तारीखतक आपभी नजाइये उसदिन खानाहोनेवालाहै फिरआप और

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

हमसाथचलेंगे-मिस्टरसूटरश्रौररिचीसाहब नेरावजीके बयानका मुजसेज़िक्रकियाथा मैनेकहाकि रावजीको मैंभी देखना चाहता हूं जब मैने उसको देखातोउसने मुझसे वही वर्णन कियाथाजो अबकमीशनके सन्मुखइजहार दियाजोकुछ उसके मनमें आयामुजसे कहाश्रौर किसी मनुष्यने रावजीसे एतिराजनहीं कियादूसरे दिन बृहस्पतिवार थी जबमैं सीढ़ीसे उतरता था मैने सूटर साहब से कहाकि आपमेरेसाथ चलियेमैं शीघ्रही महाराजा साहबसे कहूंगाकि विषदिये जानेमें आपका नामभी आयाहै तबमिस्टर सूटरसाहब ने कहा कि नरसूनेभी सबबातोंको कुबूल कियाहै जब महाराजा साहब मेरेनिकट आयेसूटर साहबमेरेसाथ महाराजासाहबके पास गयेमैने महाराजासाहबसे सबबातें वर्णनकीं श्रौर कहा कि आपभीहरतरहसे तहकीकातमें सहायतादीजिये जिससेसब हालस्पष्ट मालूमहोजावे महाराजने सहायता देनेकाइकरारकिया जब महाराजा साहबचले गयेतो मैने नरसूको देखा वहखानेके कमरेमेंबैठाथामैं नियतसमयपर उसकमरेमें गया श्रौर जमादारसे मैनेकहा यदि तुमको यह खयालहो किसब हालवर्णन करनेसे तुम्हाराअपराध क्षमाहोजायगासोयहबात कदाचित् न होगीमैं अपनीयथाशक्ति तुमको दण्ड दिलाऊंगा फिरमैने कहाकितुमथोड़ीदेर अलगबैठकर अच्छीतरह सोचो श्रौर समझोफिरजो तुम्हारेमनमें आवे वर्णनकरना मैनेसूटर साहबसेभीकहाकि जमादारकोभी समझादोकि उसकाअपराधक्षमानहोगा थोड़ीदेरतकजमादार चुपबैठारहा फिरएक ही बेर मेरेपैरोंपर पगड़ी डालदी श्रौर उसने श्रौर भीकुछ बातें खुशामदकी कहीवह मुझको स्मर्णनहीं उसनेकहा किसरकार चाहेमुजको मारेअथवा जीतारक्खें मैंजोकुछ सचहै सरकार केसम्मुखवर्णन करदूंगा सोउसने उससमय बयानकिया परन्तु उसकाबयान लिखानहीं गया जोकुछउसने कमीशनके सन्मुख

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बयानकिया वहीमुझसे कहाथा और जो इजहार श्रीमान् गवर्न्नरजनरलकी सेवामेंभेजेगये उसकामतलब उस इजहारके सदृशथाजो २६ दिसम्बरको मिस्टरसूटर साहबनेलियेथे मेरे कहनेसे पहिलेदिन मिस्टरसूटर साहबने उसके इजहारनहीं लियेथे मैनेकहाथा किअभी उसेध्यान करनेदो फिरमैनेउस विषयमेंकोई कारखाई नहींकी २६ दिसम्बरको संध्याकेसमय बाहरजाने केलियेकपड़े पहिनताथा और अपनेकमरेमें टहल रहाथा उससमय मैनेनरसूको देखाकि एकपुलिसके सिपाही केसाथ रेजीडन्सीके बागकीओर जाताहै थोड़ीदेरके पीछेबड़ा शब्दसुनपड़ा लोगरस्सियां और सहायता चाहतेथे जिसतरह से होसका मैं शीघ्रही सीढ़ी से नीचे उतरा जब बरामदे में पहुंचातो क्यादेखा कि नरसूदोतीन सिपाहियों समेतभागा हुआआताहै मैने सिपाहियों से पूछाकि क्या हालहै उन्होंने उत्तरदिया कि यहमनुष्य कुवेंमें गिरपड़ा था॥

प्र०—यह कुंवाकुछ गहराहै और आपनेवह कुंवादेखाहै?

उ०—हांमैं उस कुंवेको जानताहूं और कुंवोंसे वहगहिराहै यहकुंवा पक्काबना हुआहै दूसरेदिन रविवारको मैनेनरसूको देखाउसके किसीसंबन्धीने अरजीभेजीथी जबगवर्न्नर इण्डिया केपाससे मुझको गायकवारके पकड़े जाने की आज्ञा हुईतो गायकवारके महलमें जितनेकमरेथे सबपर मोहर लगवादी थीमैने कप्तान जेक्सन साहब और एकपुलिसके हवालदार कोइस कामपरनियत कियाथा मुझकोउसहवालदारकानाम स्मर्णनहींहै गायकवारकी गिरिफ्तारी केउपरान्तजोखास २ गवाहोंकेइजहार लियेगयेउनइजहारोंकीतसदीकमेरेसन्मुख हुई कायदायह थाकि जबकिसी मनुष्यके इजहार होतेजाते थेतो पुलिसके लोगइजहार कीसिदाकत के लिये गवाह को मेरेपासलातेथे जो गवाहपढ़ा लिखाहुवा तो अपने इजहार कोआपहीपढ़लेताथा जो अनपढ़हुवा तो उस को पढ़कर उस इजहार सुना दियेजाते थे वह सुनकर दस्तखत करदेता था

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

और मैं उसपरतसदीक लिखदेताथा दामोदरपन्थ कोपकड़े जानेकेपहिलेसे मैंजानताहूं एकबेरपहिलेउसको देखाथाऔर शायददोतीनबातेंभी मैंनेउससेकहीथीं उससमयजबकिमैंउस-सेवार्त्ता करताथा गायकवारभीआयेथे मैंउनसे वार्त्ता करने लगा जबगायकवार मुझसे बिदाहोनेलगे तोकहा कि दामो-दरपन्थ मेरेप्राईवेटसिक्रेटरी हैं मैंने गायकवारसे यशवन्तराव और सालिमके भेजदेने की दरखास्त कीथी यहदोनों मनुष्य रेजीडन्सीके अहातेमें क़ैदहैं दूसरीबेर मैंनेउनको बुलायाथाजब पहिलीबेर उनको बुलायातो मैंकुछकाम करताथावह ग़लती से शहर को वापिस आया जबवह भूल मुझको मालूम हुई तोमैंनेउनको शीघ्रहीफिर बुलाया श्रीमान्महाराजासाहबके वकीलउनकेपास आतेजातेथे कुछमनाहीन थीमैंबापूसन्तरावको अपनीजातसेनहींजानताहूं यहकहता हैकि मैं गायकवारका सर्राफहूं इस मनुष्यपर कईअपराध लगे हैं गवर्न्नमेण्टहिन्दकी आज्ञानुकूल उसकी तहक़ीक़ात मुल्तवीरक्खी है जब कमीशन का निर्णय मालूम होजावेगा तबदेखाजावेगा॥

सरजनृबेलनटायनसाहब के प्रश्न॥

प्र०—सरल्यूइस पीली साहबजब गायकवार आज़ाद थे तो आपनेउनकोबहुधादेखाहोगा? उ०—निस्सन्देहमैंनेउनको देखा है श्रीमान्महाराजा मल्हरराव प्रतिदिन वादूसरेदिनमेरेपास आतेथे। प्र०—जबआप बड़ौदे में आयेतो श्रीयुत वादूसरायके लेखसेविदितहोताहैकिआपको श्रीमान्ल्हररावकेप्रबन्धमें स-हायता करनीअति कठिनमालूम हुई? उ०—मुझे हिदायतथी किजहांतक सम्भवहो श्रीमान्मल्हररावके प्रबन्ध में सहायता दूंऔर यहभी मुझकोआज्ञाथीकि करनैलफियर साहबने जो विष दियेजानेकीतहक़ीक़ातकीथी उसकोमैंपूर्ण करूं प्र०—सर ल्यूइसपीलीसाहब जबआपसे और श्रीमल्हरराव से वार्त्ता हुई तो आप को मालूम होता था कि वह आपका मत मानते थे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

और अपने आधीनी देशका उत्तम प्रबन्धकरना चाहते थे ? उ०—महाराज गायकवार तनमन से चाहते थे कि देशका अच्छाप्रबन्धहो और जोकुछमैं हिदायत करूंउसको वहकरें सरजन्ट वेलनट।यन साहबने कहा मेरेसाथी ऐडवकेट जनरलने आपसे यशवन्तराव और सालिमके विषयमें कुछ पूछा थाइस लियेमैं आपकेकुछ कागजपेश करताहूं और निश्चय है कियह कागज ठीक और दुरुस्त होंगे यदिमें गल्तीपर हूं तो उससे मुजको इत्तिला दीजिये सो सरजण्ट वेलन टायन साहब यह कागज पढ़ने लगे॥

चिट्ठी दादाभाई नूरुजी के नामपर॥

माईडियर सर—यदिआप सालिम और यशवन्तरावकोमेरे निकट भिजवा दीजिये तो मैं आप का गुण मानूंगा—मिस्टर स्टरसाहब इस मुकद्दमेमें जिसकी किइन दिनों तहकीकात होरही है उनकी गवाहीलेना चाहते हैं॥

दस्तखत ल्यू इसपीली साहब मुकाम रेजीडन्सी
लिखाहुआ २३ दिसम्बर सन् १८७४ ई० का॥

सरजण्ट साहबने कहाकि सरल्यू इसपीली साहब क्याआपने नीचे लिखीहुई चिट्ठी उसी दिन पाई॥

चिट्ठीबनामसर ल्यू इसपीलीसाहब महल
बड़ौदा २३ दिसम्बर सन् १८७४ ई०॥

माईडियरसर—आपकी आज्ञानुकूल जोइस समय मेरेपास पहुंची मैनेसालिम और यशवन्तराव को गवाही देने केलिये भेजदिया॥

आधीन दादाभीनूरूजी॥

और एक और चिट्ठी भी आपकेपास दादाभाई नूरूजी की आई है वह यह है॥

सरल्यूइस पीलीसाहबके नामपर॥

माईडियरसर—मैंने सालिम और यशवन्तराव को आपके पास भेजदिया निश्चयहै किवह पहुंचे होंगेमैंमुन्तजिरहूं कि

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

आपकेपास से और कोईचिट्ठी आवे जिसकी मैंतामील करूं ॥

दस्तखत-दादाभाई नूरूजी।

सरल्यूइस पीलीसाहब ने उत्तर दिया कि दादाभाईने यह चिट्ठी शायद इसलियें लिखी कि सालिम और यशवन्त राव नगरको लौटकरगयेथे ॥

सरजएटवेलनटायन साहबने फिर एक चिट्ठी पढ़ी वह यहहै ॥

दादाभाई नूरूजीके नामपर ।

माईडियरसर—मेहरबानी करके महाराजासाहबसे कहिये किसालिम और यशवन्तरावके घरकी तलाशीकी जायक्योंकि मालूमहुवा कियहलोग पूर्वकेरेजीडएट के विष देनेमें संयुक्त हैं औरजोकि पुलिसकेकमिश्नर तहकीकात करते हैंइसीसेतलाशी की आवश्यकता है पुलिसकेकमिश्नर यहभी चाहतेहैं किआप अपनी कचहरीकेकिसी अफ्सरके द्वारा उनके घरकीतलाशी करावेंइसचिट्ठी कोपुलिसकेकमिश्नरकेदो मनुष्यआपके निकट लेजावेंगे इनलोगों के सामने घरकी तलाशीहोनी चाहिये ॥

दस्तखत ल्यूइसपीलीसाहब
लिखा हुवा २३ दिसम्बर सन् १८७४ई० ॥

फिरसरल्यूइस पीली साहबनेऔर दूसरी चिट्ठीभेजी और महाराना साहबनेफौरन् उसकी तामीलकी ॥

दादाभाई नूरुजीके नामपर ॥

माईडियरसरसाहब कमिश्नर पुलिसनेमुझकोइत्तिलादीकि यशवन्तराव और सालिमजो गायकवारके नौकरहैं जिनको कि आपनेभिजवा दियाथा वह विलाहाजिरी और इनहार साहबकमिश्नर पुलिसकेपाससे लौटकर शहरकोगये कमिश्नर साहबकहते हैंकिइन लोगों परविषदेनेका अपराध सावित है इसलिये पुलिसके कमिश्नरसाहब चाहतेहैं किउनलोगोंको हिरासतमें रहनेकेवास्ते भेजदीजिये मेरीसलाह श्रीमहारा- जा गायकवारको यहहैकि इसमुकद्दमेकी तहक्कीकात मेंहर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

प्रकारसे सहायता करें जिससे मुकद्दमा साफ होजावे यदि श्रीमहाराजा गायकवार इनलोगोंको गार्डमें भेजेंगे तो उचित होगा ॥

दस्तखत ल्यूइस पीली ॥

इसके उपरान्त दादाभाई नूरूजीने नीचे लिखी हुई चिट्ठी सरल्यूइसपीली साहबके नाम भेजी ॥

करनैल सरल्यूइस पीली साहबके नामपर
बड़ौदा लिखाहुवा २३ दिसम्बर सन् १८७४ ई० ॥

जिससमय आपकी चिट्ठी पहुंचीतो तुरन्त महाराजा साहब ने यशवन्तरावको बुलवाया और उससे पूछा कि तुम और सालिम इजहार हुयेबिना रेजीडन्सीसे लौटआये यशवन्तरावनेकहा कि हमनेएक चिट्ठीपट्टेवालेको दीपट्टेवालेने लौटकरकहाकि साहबनेकहाकि सलामबोलो यह सुनकरसालिमने उत्तरदिया कि साहबनेहमको किसी अवश्यकताकेलिये बुलायाहै साहबसे पूछोकि किसवास्ते हमको बुलाया है उससमय नाना जोपट्टे वालेने आकर कहा याकि तुमलोग लौट जाओ पस इसप्रश्नो-त्तरसे मालूमहोता है कि कुछ गलती हुई मैंने उनलोगों सेनहीं कहाकि तुम पुलिसकेकमिश्नर साहबके पासजाना मैंने केवल आपके पासभेजाथा जबमैंने महाराज को आपकी चिट्ठीकामत-लबसमझायातो उन्होंने कहाकि अफ्सोस है जोऐसी गलती हुई सो महाराजा साहबने आज्ञादी कि तुरन्त वहलोग आपकेपास हाजिरहों और अबमैं एककारकुनके साथभेजताहूं यहकार-कुन उनको आपके सुपुर्द करेगा श्रीमान्महाराजा साहब सदैव आपकी सहायता करनेकेलिये तय्यारहैं और चाहते हैं कि यह मुक़द्दमा अच्छीतरह साफहोजाय ॥

दस्तखत—दादाभाई नूरूजी

दादाभाई नूरूजीके नामपर
रेज़ीडन्सी लिखाहुआ २३ दिसम्बर सन् १८७४ ई० ॥

माईडियरसर—मैं अतिगुणमानताहूं कि आपने इतनी जल्दी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सालिम और यशवन्तरावको गवाहीदेनेके लियेभेजदिया मैंने पुलिसके कमिश्नरसे आपहीकहदियाहै कि यहलोगहिरासत में रक्खेजांय परन्तु इनलोगों को किसीतरहकीतकलीफन हो और कलउनकीगवाही अवश्यलीजाय जो पहिले लेनेउनलोगों सेसलामबोलने और चलेजानेको कहदियाथातोमेरी इत्तिला बिनाकहाथा मेरीओरसे श्रीमान् गायकवारका शुकरिया अदाकीजिये कि वहमेरा भरोसाकरतेहैं और हरप्रकारसेवह मेरी सहायता करेंगे यदि सम्भवहो तो कलसुबहके आठबजे आपमुझसे मुलाकात कीजिये ॥

दस्तखत ल्युइसपीली ॥

यहचिट्ठियां सुनकर सरल्यूइसपीलीसाहबने उत्तरदियाकि मूलका होना तो साफ प्रकट है उचितथा कि सालिम और यशवन्तराव पुलिसके कमिश्नर साहबके पासजाते—श्रीमान्महाराजा गायकवारने मेरीचिट्ठियोंके जल्दी२ उत्तरदिये प्र० क्याइसबातका निश्चयकरूं किजब गायकवारपर विषदियेजाने का सन्देहहुआ तो वहआपही आये और उन्होंनेअपने तई सुपुर्द करदिया ? उ०—वास्तवमें उन्होंनेवैसा नहींकिया। प्र० अबआप अपनीतौरसे वर्णनकीजिये कि क्याहुवाथा ? उ०—पहिलीबेर २३ दिसम्बर को मैनेसुना कि गायकवार भी विष दियेजानेके मुकद्दमेमें संयुक्तहैं जबवह २४ दिसम्बरको मेरी मुलाकातके लियेआये तो पुलिसके कमिश्नरसाहबके उपस्थित होनेके वक्त मैने जो सबहाल बीताथा उनसे कहदिया था और दरख्वास्तकी कि जहांतक होसके आपइस मुकद्दमेकी तहक़ीक़ात में सहायताकरें उन्होंने कहामैं प्रत्येक समय पर सहायताकरनेकेलियेतय्यारहूं। प्र०—जबसे आपनेयहबातउनसे कही और जबतकवह गिरिफ़्तार नहीहुये उनको किसीतरह की रोकटोक थी ? उ०—कौन। प्र०—गायवार ? उ०—नहीं। प्र०—आपनेउनकोक्योंकरगिरिफ्तारकिया ? उ०—जबश्रीमान् वैसरायने मुझको हिदायतकी तबमैनेउन्हें गिरिफ्तार किया

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

प्र०—क्याआपही वहरेज़ीडन्सीमें आयेथे ? उ०—हांवहआप ही रेज़ीडन्सीमें आयेथे और मैनेसबहाल उनसेकहदियाथा प्र०—उससमयउन्होंने अपनानिर्दोष होनाबयानकियाथाऔर आपसे कहायाकि मैंतय्यारहूं मुझको इससमय क़ैदकरली-जिये मैनेसुनाहै कि किसी काइदेका वर्त्तावहुवा था ? उ० हांमैं रेज़ीडन्सी की हद्दतक गया जब उनकी अमलदारी में पहुंचातो श्रीमान्वैसरायका इश्तिहार पढ़कर सुनाया और उनको गिरिफ्तारकिया यहसब बातें प्रतिष्ठापूर्वक हुईं। प्र० और बातोंमें गायकवारने यहभी कहाथा कि मेरेवैरीबहुत सेहैं ? उ०—हांकहाथा और यहभी कहाथाको ध्यिवीमेरे पाओंके नीचेहै वहभी मेरीदुश्मनहै। प्र०—उसवक्तमें गायक-वार हिरासतमेंहैं ? उ०— हांहिरासतमेंहैं परन्तु प्रतिष्ठासहित प्र०—उनका असबाब सरकारनेसबज़ब्त करलिया ? उ०—जो असबाब महलमें था वह आरियतन् कुर्क़हुवा है। प्र०—सम्पूर्ण असबाब कुर्क़हुवा है ? उ०—हां और मैनेसम्पूर्ण असबाब पैर इसवास्ते मोहरलगादी कि नष्टनहो और रक्षापूर्वकरहैजिस मनुष्यको और सरकार हिदायत करेगी उसको वह सबअस-बाब वापिसदूंगा ॥

ऐडवकेटजनरलने कहा अबशहादत खतमहोगई जो कमी-शनके सम्मुख होनेवालीथी बेलनटाइन साहबने कहा यदि रब्यूइसपीली साहबकोगवाही कुछपहिलेसे पूर्णहोजाती तो मैं ऐडरेस शुरूकरता परन्तु अब ज्यादादेर होगई इस लिये कलके दिन निवेदन करूंगा ॥

साहबप्रेज़ीडण्टने कहा अच्छा कलपेशकीजियेगा सरबन्ट बेलनटाइनसाहबनेकहा यदि आपआज्ञादेंगे तोमैं एकलिखा हुवाबयान गायकवारका ऐडरेसके आरम्भ होनेसेपहिले पेश करूंगा—सोअदालत बरखास्तहुई ॥

———

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सोलहवें दिनका इजलास ॥

ग्यारह बजे कमीशनके मेम्बरएकत्रहुये सम्पूर्ण मेम्बर श्रीयुतमल्हरराव और सरल्युइसपीलीसाहब सहित उपस्थित थे ॥

सरजन्टबेलनटायन साहबने कहा माईलार्ड यदि आपकी आज्ञाहो तो मैं सूटरसाहब से कईप्रश्न और पूछूं सो सूटर साहबगवाहीकेलिये बुलायेगये प्र०—आपने क्योंकररावजीको पट्टा लेनेकेलिये भेजाथा ? उ०—मैंने रावजी को नहीं भेजा प्र०—परन्तु तुमकोमालूमहै कि तुम्हारेआनेके पहिलेपट्टाआगयाथा ? उ०—हांआगया था ॥

साहबप्रीजीडण्डने सरजन्टबेलनटायन साहबसे कहाकि मैं आपकेप्रश्नका मतलबनहीं समझा ? उ०—मेरे प्रश्नका मतलब यहहै कि सूटर साहबने किसीको पट्टालेने के लियेभेजा था सूटरसाहब ने उत्तरदिया कि मैंने एक मनुष्य को भेजा था प्र०—तुमने आपही अपने हाथसे उस पट्टे को देखा ? उ०—हां मैंनेआपही अपने हाथ से देखा ॥

सरजन्टबेलन टायन साहबने कहाकि श्री मान् महाराजा मल्हरराव चाहतेहैं किएक लिखाहुआ बयान हमारा कमीशनके सन्मुखपढ़ा जावेमुझे निश्चयहै कि आपसब साहबमरहटीभाषा जानतेहोंगेयदिमेरा बिचार ठीकहै तो मुतरज्जिम मरहटी भाषा में उस बयान को पढ़े सररिचर्ड मीडसाहब ने कहाकिश्रीमान् महाराजा जयपुरमरहटी भाषाको नहींसमझते हैं उल्थाकरने की आवश्यकता होगी ॥

सरजन्टबेलन टायन साहबने कहाइससूरत में हिंदुस्तानी भाषामें उल्था होजावेगा ॥

साहबप्रेजीडण्ड ने पूछा कि यह बयान किस भाषा में है सरजन्टबेलन टायन साहबने कहा कि मरहटी भाषा में है ॥

साहबप्रेजीडण्ड के कहापरंतु आप कहते हैं कि आपके पास इसलिखेहुये बयानका अंगरेजी में उल्थाभीहै सरजन्ट

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बेलनटायन साहबने कहा-हां अंगरेजीमेंभी उल्था है उचित है कि यह बयान अंगरेजी में पढ़ा जाय और उसका उल्था हिंदुस्तानीभाषामेंहोता जाय साहबप्रेजीडण्टने कहाउत्तम है कि प्रथम अंगरेजी भाषामें पढ़ाजाय और श्रीमान्महाराजा जयपुरकहते हैं कि अंगरेजीभाषामें पढ़ाजाना काफीहैफिर उसकाहिन्दुस्तानीभाषामें उल्थाहोताजावेगामिस्टर ब्रान्सन साहबने कहाअगरहुजूरइजाजत देंतोइसलिखे हुयेबयानको मैंपढूं सोइजाजतहोनेके उपरान्त पूर्वोक्तसाहबने पढ़ना शुरू किया मेरेप्रतिष्ठितमित्रश्रीमान् गवर्न्नरजनरलने अपनाइरादा जाहिरकियाहैकिमुझको हरतरहसेमौकामिलेकिमैं उसबहुतबड़े कलंकको खण्डन करूं जो मुझपर लगायागयाहै अर्थात् करनैल फियरसाहब जोमेरेयहां रेजीडेण्ट थे उनके विषदेने का उद्योगकिया गया अबमैं बपास खातिर वैसराय के उस इच्छासे कि मैं अपनेतईं सम्पूर्ण दृष्टि के रूबरू इस अपराध से साफ करूं नीचेलिखा हुआबयान करताहूं॥

मुझकोकभीकरनैल फियरसाहबसे वैरनथा नअबहैऔरयह बातभीसही है किमैं और मेरेवजीरभलेप्रकारजानते थे कि करनैल फियर साहब ने ओहदे रेजीडंसी पर ऐसी कारर-वाईशुरूकीथीकि रियासतका उत्तमप्रबन्ध होना असम्भवित था। मैं श्रीमान् वैसराय के खरीते २५ जूलाई सन् १८७४ ई० के लिखे के अनुकूलसबअपना कार्य्य करताथा और यहखरी-ता सन् १८७३ई०की कमीशनकी रिपोर्ट के अनुकूल मेरे पास आयाथा मैंने दादाभाई नूरूजीऔर बाला मुगेशवाकल और हुरनजी और अरदासियरदोबा और काजीशमसुद्दीनआदि अपनेवजीरों की सलाहसे २—नवम्बर सन् १८७४ ई०को कर-नैलफियर साहब के द्वारा श्रीमान्गवर्न्नर जनरल को खरीता भेजाहरचन्दकरनैल फियरसाहब नेउज्रकियेपरन्तु मैंअच्छी तरहजानता थाकि जब हुजूरगवर्न्नरजनरलके सन्मुखठीक ठीक

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

हालपेशकिया जायगा तो मेरी दरखास्त पर बखूबी लिहाज होगासोयही विचारमेरा श्रारमेरे सम्पूर्णवजीरों का था इस विचारके जियादह तरमजबूती इसकारण होगईथी कि एक वेरगवर्न्नमेराटबम्बईने करनैल साहब परबक़्तबड़ी चश्मनुमाई कीथीहमाराखयाल गलतनथा क्योंकि२५नवम्बर सन्१८७४ई० को उनकीबदली काहुक्मआगया॥

इससूरतमें मुझकोनतो कोईतरफदारीथा श्रारनकोई पोलोटीकलवजह थी जिसके सबब से इसअपराधका उद्योगकरता जिसकादोष मुझपर लगायागया है मैं सौगन्द खाकर वर्णन करता हूं किनमैंने अपनेआप श्रार नकिसी श्रार करिन्दे के द्वाराकरनैल फियरसाहब के देनेके लिये विष मंगाया ताकि उनकीजान लीजायश्रार न मैंनेअपनेआप श्रारनकिसीकारिन्देसे यहकहा कि ऐसाइरादा कियाजाय श्रार मैं कहता हूं कि अमीनाश्रार नरसू श्रारराबजी श्रार दामोदर त्रिम्बक की गवाहीइस मुकद्दमे में गलत है॥

श्रारमैं यहभीवर्णन करताहूं किमैंनेस्वत: किसी रेजीडन्सी के नौकर कोनहींबहकाया कि वहजासूसकी तौरपर मुझको खबरेंदें श्रारनमैंने किसीमनुष्य को इस कार्य्य के लिये रुपया दियायह बात मैं नहींकह सक्ताकि रेजीडन्सीके नौकरों को कभी इनआम नहीं दियागया क्योंकि जबकभी कोई बिवाह कार्य्यअथवाखुशी वा तेहवार हुवा तो उससमय पारितोषक दियागया अगरकभी किसी खफीफ अमरकी इत्तिलाहुईतो उसकाजिम्मेदार नहींहूं यहबात लोगोंकी बनाईहुईहै मैंने स्वत:किसी नौकरसे ऐसीखबरोंके लानेकोनहींकहा नमैंनेऐसा उपायकियाकि रजीडन्सीसे खफीफ खबरेंमंगाईजावें॥

मैं अपनेतई अभयहोकर कमीशनके रूबरू पेशकरताहूं आशा है कि जोमेरे प्रतिष्ठित मित्र श्रीमान् वैसरायने मेम्बर नियत कियेहैं वहहरसूरतसे मेरे मुकद्दमेका न्यायकरेंगे श्रार जो कुछमुझसे प्रश्नकिया जावेगा मैं उसके उत्तरदेने में मौजूद

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

हूं—और मैं फिर सौगन्दखाकर इन्कारकर करताहूंकि मेरेशत्रु जोबहुतबड़ा अपराधमुझपरलगानाचाहतेहैं वह सबग़लत है ॥

सरजएटबेलनटायनसाहबकी स्पीच ॥

खण्डन

सरजन्टबेलनटायन साहब कमीशन के मेम्बरों के रूबरू इस्पीचकहने के लिये श्रीमान् महाराजा मल्हररावकी ओर से इसभांति वर्णन करने लगे—कि श्रीयुतलार्ड और महाराजगान् और कमीशनकेमेम्बरोंपर प्रकटहो कि मैंनिश्चयमान कर खयालकरताहूं कि श्रीमान्महाराजा गायकवारपरबड़ी अनीतिसे विना किसी मूलके मुकद्दमा खड़ा किया गया है अब श्रीमान् मल्हररावको ऐसी अवसर मिलीहैकि वहऐसी अदालतसे अपने इन्साफकेदादख्वाहहों—अबयह बात जाहर हुई कि किस क़दर बेबुनियाद यह तोहमत है—और यह बातप्रकटहुईकि किस छोटेमूलपर उनसे उनकी आज़दागी छीनलीगई और वह अपनी प्रजाकीदृष्टिसे न्यूनहोगये और उसमनुष्यके सदृशजोसंगीन जुर्ममें क़ैदहोताहै उन्होंने तकलीफें उठाईं औरअबयहभी मालूमहुआकि किस२गवाहीसेयह अपराधउनपरक़ायमहै और वहशहादत किसतरहहासिल कीगई—मालूमहुआ कि वहलोगजोइसमुकद्दमेकेपैरोकारहैं ऐसेदिलसेख़ुदहीबनगये जिसकावर्णननहींहोसक्ता और मैंकहताहूंकि पुलिसनेनिर्भयहोकर बहुतसीकारखाइयां कीं ॥

अबहमको मालूमहुआकि इसमुकद्दमेका क्यामूलहै और किसतरहकी शहादत है और कैसे २ गवाह इसमुकद्दमे में गवाहीदेनेको आयेहैं—मैं निर्भयहोकर और स्पष्टरीतिसे वर्णन करताहूंकि कोई दूरअन्देश आदमी मेरे वर्णनाकोखण्डन न करेगा किमुखतलिफ बयान कदाचित् विश्वासके योग्यनहीं हैं और वह बातें जो असम्भवित हैं और वह मुआमिले जो खयालसे बाहरहैं सबकामजमूआकियागया और एक ऐसा जुर्मक़ायम कियागया जो ज़माने हालमें सुना नहीं गया न

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ऐसाकोई मुकद्दमा किसीअदालतमेंपेशहुआ और यहबात मैं बेताम्मुलज़ाहिर करताहूं कि जोगवाह जुर्मकेसुबूतकेलिये पेशकियेगये उनकोकुछभी अपनेबचन और प्रतिष्ठाका विचार नहीं श्रीमान्महाराजा गायकवार की ओरसे जोमैं इसीच कहरहा हूं वह सबलोगों के दिलोंपर नक्शकरनाचाहताहूं किसहीमुआमला क्या है मुझको एक २ गवाह की गवाही दूसरेके बयानसे मुख्तलिफमालूम होतीहै और हरएक आदमीकी गवाही बेईमानी के साथ पाईजाती है और हरएक आदमीकी गवाहीसे झूठजाहिर होताहै जिनलोगोंने गवाहों के बयानको सुनाहै वहकहसक्ते हैं कि गवाहोंने बिल्कुलझूठी सौगन्दखाई कोईप्रतिष्ठित गवाहोंकी गवाहीपर निश्चय नहीं करसक्ता—माईलर्ड मैं वर्णनकरचुका हूं कि कुलशहादतजो कमीशन में लीगई ऐसी मुख्तलिफ है कि कभी सुनीनहीं गई हालके जमानेमें ऐसाकोई मुकद्दमा मेरीनजरसे नहींगुजरा मुझको यहांकी अदालतोंसे वाकफियत नहीं है शायद यहां की अदालतोंमें ऐसीबदज़ातीके मुकद्दमेदायरहोतेहों परन्तु और मुल्कोंकी अदालतमें ऐसेमुकद्दमेके दायरहोनेका हाल नहीं सुनागया मैं इसबातसे अफ्सोसकरताहूं कि उसबेचारे राजाकी आजादगीनिहायत बदनामीकेसाथछीनलीगई और इसकेविशेष उनकीबक़तबड़ी रुसवाईहुई औ इसअप्रतिष्ठाका उनकोबड़तबड़ा खयालहै—जबमैंशहादतपरनजरडालताहूंतो झूठ और बनावटका ढ़ंगमालूम होताहैजबमेरे रूबरूगवाहों केइजहारहुयेथे तोमुझकोअति आश्चर्य्य होता थाकि यहलोग किस २ तरहझूठ घड़तेहैं और चाहतेहैं कि एकझूठसे दूसरे झूठकी सिदाकतहो और ऐसेझूठके बोलनेवाले समझतेथे कि सुननेवाले बेवकूफहैं जो कुछ हम कहेंगे वह निश्चय करलेंगे क्योंकि वहजानतेथे कि यहझूठ उसके विषयमें बोलतेहैं जिससेसरकार नाराजहै कायदायहहै कि जबकोई शख्समगलूब होजाताहै और उसकीनिस्बत यह विचारा जाताहै कि वह

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अपनी जगह पर फिर क़ायम नहीं होगा तो यह नापाक कुत्ते भौंकते और घुरातेहैं और जहां तक होसक्ताहै बुराई करतेहैं—एकजमानेमें यूरुपकी यहरीतिथी कि कभीकिसी मुक़द्दमेकी तहक़ीक़ात नहीं करतेथे और उसीजमानेमें एक प्रतिष्ठित मनुष्यको दोदुष्टमनुष्योंकी गवाहीपर फांसीदेदीगई एकका नामओटस और दूसरेकाडंगस फील्डथा यद्यपियहां केलोग पुनर्जन्ममरणपर निश्चयकरते हैं इसलिये मेरेविचार सेरावजी और नरसूआदिकने जो गवाहीदीहै उनकेशरीरमें उन्हींगवाहों तात्पर्य डंगस फील्ड और ओटसके जीवप्रवेश करगयेहैं इनलोगोंने बिल्कुल झूठी गवाही इस बेदारमग़ज़ कमीशनके रूबरूदी॥

माईलार्ड-आपको निश्चयकरना चाहिये कि मैंइसमुक़द्दमेको बहुतबड़ा मुक़द्दमा समझताहूं और उसकेखण्डनका अपनेतईं ऐसाजिम्मेदार समझताहूं कि मेरीतकरीरमें फर्क आगयाशायद मेरे समान और लोगोंको यह खयाल न हो जितनी तकरीर इस मुक़द्दमेमें होना चाहिये मेरी जिह्वामें उसके करने की शक्ति नहींहै॥

मैंनिहायत अफ़सोसके साथइस बेचारे रईसकी हमदर्दी करताहूं और अधिकतर इसबातके खयालकरनेसे कि उसकी रिहाईमेरी तकरीरपर मौकूफहै मुझकोनिश्चयहै कि इसमुक़द्दमेका निर्णय मेरी इच्छाके अनुकूलहोगा क्योंकि ऐसेही फैसलेमेंइन्साफ और सचाईरहैमैंने जोयहकाम अपनेतअल्लुक कियाहै वह निहायत बड़ाहै और जिस समय से अदालतसे एडरेस कह रहाहूं मेरा दिली और खास मन्शा यहहै कि सचाईजाहिरहो जब मुझको मददकी जरूरतहुई तो मेहरबानीसे मुझको मदद दीगई और इस कमीशनमें हरतरहका मौका दियागया पसउन मौक़ोंके मिलनेसे बखूबी अदालतमें एडरेसपेशकरूंगा और जोबातमेरे मनमेंहै हरमनुष्यके मनपर नक्शकरदूंगा और हरएक तकरीर को दलीलके साथबयान

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

करूंगा यहांतक कि हरशख्सकी रायमेरी रायसे इत्तिफाक करे और जैसामैं चाहताहूं वैसाही फैसलाहो—लार्डलार्ड आपने बहुत कमसुनाहोगा कि किसी वकीलने ऐसेइतमीनानके साथ बयानकियाहो अदालतइसबातकाखयालन करकियहतकरीर मेरी अदालतकी अप्रतिष्ठा मेंहै यदि अदालतका फैसलामेरी रायकेप्रतिकूलहुआ तोमैं समझूंगाकि पहिलेसे मुझकोकच्चा खयालथा परन्तु मुझको दृढ़निश्चयहै कि आपसब साहबमेरी बातोंको बखूबी समाधानकरेंगे॥

मार्डलार्ड—जिस इश्तिहारको श्रीमान् वाइसरायने जारी कियाहै उसमेंइस तहकीकातकी एकहद्द करदीहै उसमेंबात खासलिखीहै कि कोईतहकीकात जबरदस्ती कीनहो केवलदो बातोंकी तहकीकातकी जावे कि गायकवारने रेजीडन्सी के नौकरोंसे साजिशकी या नहीं—दूसरेयहकी कि जो अपराध गायकवारके लगेहै वह ठीकहै या गलत पस इनदो बातोंके विशेष किसीदूसरे अमूकी तहकीकात नहोगी मैनेइन दोनों बातोंपर कमीशनके मेम्बरोंको इसवास्ते ध्यान कराया कि मैं जानताहूं कि गायकवार झूठ और दुष्टताके बादलमें छिपा हुआहै मैंबड़ौदेमें इसलिये नहीं आयाहूं कि गायकवारकी पिछलीकारवाइयों परउज्रकरूं म इसलिये आयाहूं कि जो हरकतें व्यतीतसमयमें गायकवारनेकीं उनकोखण्डन करूंउन बातोंको यहांके निवासी अच्छी तरह जानतेहोंगे परन्तु इस बातका मैंविश्वास करताहूं कि कईबातें गायकवारकी आय मेंऐसी हुईंजिससे उनको और लोगोंपर भरोसा करनापड़ा और आपहीकारवाई करनेका उनकोकाम मैं।कामिला और न उनबातोंका वहप्रबन्ध करसके जिनका उनको चाहियेथा मैंकहता हूं कि यहबात केवल हिन्दुस्तानमेंही नहींहै किन्तु सम्पूर्णदेशोंमेंहै कि बहुधा रईसोंके पास खुशामदी और दुष्ट नौकरहोतेहैं और वहनौकर रईसको लूटना और धोकादेना चाहते हैं और जबउनको सावकाश मिलताहै अपने दूरादेसे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

नहीं हटते और रईस ऐसेही लोगोंपर अधिक निश्चय करते हैं
पसविलासोच समझके ऐसाविचारना चाहियेकिआगेकेरईस
नौकरोंने कोईहरकतकीतो मानोआपहीरईसने उसकोकिया
मेंइसविषयमें कुछऔर वर्णन करूंगा क्योंकि मुझको और
विषयोंमें तकरीर करना बाकीहै परन्तुजो वार्त्ता कि मैंकर
चुकाउससे इसबातके जाहिर करनेकी इच्छाथीकि गायक-
वारके नौकर किसतरहकेहैं उनलोगोंको निजके व्यवहार से
बड़ा अधिकार थाअबमैं इस बात की प्रार्थना करता हूंकि
नीतिसे जोयूरुपके साहबोंकी समझहै मेरीतकरीरको सुनें
मैंपोलीटीकल मुआमिलों परवार्त्ता नहींकरना चाहता क्यों
किश्रीमान् वैसरायने जोकुछ कारवाई कीहै उसमें पोली-
टीकल मुआमलोंका कुछ जिक्रनहीं औरपूर्व्वोक्तसाहब सबपर
जाहिर करनाचाहते हैंकिहिन्दुस्तानकीअमलदारीका प्रबन्ध
प्रतिष्ठा पूर्व्वक होसक्ताहै यद्यपिसरकार ब्रिटिशको और किसी
रईससबैरहो और ऐसेअसरकाफैसलाइसप्रकारसेहोकिसम्पूर्ण
प्रतिष्ठितमनुष्यउससेप्रसन्नहोंवैसरायनेइसइजलासमेंऐसेमनु-
ष्योंकोनियतकियाहैकिजोबड़ेनीतिमानहैं अर्थात्हिन्दुस्ता-
नीरईसोंको जो अपनेप्रजाकी प्रकृतिकोभलीभांति जानते हैं
झूठीगवाही देनेकेविषयमें मेम्बरोंका खयालरुजूकरूंगाऔर
उनलोगों के रूबरू साबित करूंगा कि जितनी गवाहियां
गुजरीहै वहगलतहैं औरनिश्चय माननेके योग्य नहींहिन्दुस्ता-
नी रईसोंके रूबरू यहबात पेशकरूंगा किउनको आजऐसे
अधिकार दियेहैं और उनपर सच्चाई औरइन्साफकेकरनेका
भरोसाकिया गयाहैजोकुछ वहइन्साफ करेंगे उससे सम्पूर्ण
हिन्दुस्तानमेंधूमहोजावेगीऔरअपनेस्वदेशियोंसेयहकहताहूं
किमुजको आपलोगोंसे हरप्रकार कीसहायता और न्यायकी
आशाहै यदिप्रेजीडण्ट साहब इंगलिस्तान के निवासी हैं इस
वजहसे मुझे बहुतहोखुशीहै औरजब इंगलिस्तानके रहनेवाले

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

हैंतोहरतरहसेउनको आजादगीहासिलहै मुझको आशाहै कि श्रीमान्प्रेसीडण्ट सचाईसे कदाचित् मुंह नमोडेंगेऔर सिवाय नीतिकेऔर कुछ अपने अफसर की तरफसे उनको खयालन होगा। मैं इसबातपर प्रसन्नहूं कि यूरुपके प्रधान अतिनीतिमानहोते हैं और न्यायके मार्गके विशेष दूसरीओर नहीं झुकते हैं ऐसे मेम्बरोंके साबिकाहोनेसे मैं अपनेको बड़ाभाग्यवान समझता हूं यद्यपिमेरी जिह्वामें इतनी सामर्थ्य नहींहै कि कमीशनके साहिबों के सन्मुखतकरीर करूं परन्तु उनके न्यायसे मुझे भले प्रकार निश्चयहै कि मेरेमनका मनोर्थसिद्धहोजावेगा ॥

माईलार्ड-हुजूरको स्मर्णहोगाकि पहिले इसबातकीगवाही गुजरीथीकि गवाहसिखायेगये परन्तु इससमय इसविषय में वर्णन नकरूंगा क्योंकि जोअपराध गायकवारको लगयागया उसमें तकरीरकरनेकी इच्छा नहीं है ॥

गायकवारपर जोविषदेनेका अपराध लगयागया निस्संदेह उसकीगुफ्तगूकरनीजरूरहै-मैंनेपुलिसकी ओरध्यानकियाथा मैंदेखताहूं कि पुलिसवालोंकेलिये कोई क़ानून नहींहै और जोइजहार पुलिसमेंहोतेहैं उसकेलियेभी कोईक़ायदा नहीं है-आमक़ायदायहहै कि जोइजहार पुलिसके रूबरूहों जब तक उनकी सिदाकतदूसरा मनुष्य न करे वहगवाहीमें नहीं समझेजाते इसलिये अगरकोई मनुष्य पुलिसके सम्मुखकिसी बातका इकरार करेतो वह विश्वासके योग्यनहीं है जबतक कि दूसरामनुष्य उसको तसदीक़ न करे इसबातका कानूनके बनाने वालोंको बड़ाभयहै कि गवाहोंको पुलिसवालोंसेबहुत बड़ी इबरतहो जाती है-हिन्दुस्तान के पुलिसवालों को हर प्रकारका अधिकार दियागया है जो वहचाहते हैं करतेहैं सो एकक़ानून इसबातका जारीहोना चाहिये जिसमें पुलिस के अधिकारोंकी हद्दकरदीजावे मैं नहीं देखताकि कोई जज अथवामजिस्ट्रेट पुलिसकेअखतियारोंको रोकसकेहै-टेसेछोटा पुलिसका सिपाही जोचाहता है सो करताहै इसमुकद्दमेमें

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

नहींकहसक्ताहूंकि कितनेलोगहिरासतमेंरहे जिसकीनिस्बत पुलिसवाले कहतेहैं कि मुकद्दमे की तहकीकातकेलिये वह लोगहिरासतमें रक्खेगयेसो जबउनको ऐसेबेप्रमाण अधिकार प्राप्तहैं तो ख्वाहमख्वाह लोगों के दिलोंमें किसकदर दहशत होगी जाहरहैकि कोईमनुष्य अपनेघर और शरीरको अपना नहीं कहसक्ता जब पुलिसवालाचाहे गिरिफ्तार करले और जबतक चाहे उसको हिरासत में रक्खे प्रकटमें उसका कोई उपायनहींहै कोईमजिस्ट्रेट इसमेंदखलनहीं करसक्ता है मजिस्ट्रेटकोयह अधिकार नहीं दियागया कि ऐसीबातों में मुदाखलतकरे उसमनुष्यको कुछहरजादे जो हिरासतमें रहाहो॥

मेरे विचार से शायद यहीहिन्दुस्तान का क़ानून है इसमें संदेह नहीं कि बड़ौदे में ऐसीही कारवाई होती है हमने बहुधादेखा है कि पुलिसको जिनलोगों कीशहादत दिलानी मंजूरथीउनकेसाथ ऐसाहीकिया विशेषकरइस मुकद्दमेमेंउनकी कारवाई प्रकटहैमुझकोपुलिसकी कारवाईपर बहुतसी बातें करनीपड़ेगी परन्तुएकबातकमीशन के मेम्बरोंके जेहन नशीनकरना चाहताहूं वहयह है जिससे बहुत बड़े अन्याय का संदेहहै किएकअफ़सरपुलिसमुकद्दमे के क़ायमकरनेका अधिकारीहै औरअपराधीको दण्डहोनेके वास्तेवह हरप्रकार के उपायकरता है और भी ऐसे अफ़सर पुलिस को इनहार लेनेके अधिकार हैं औरवह इजहारगवाही के लायकसमझे जातेहैं मनुष्यकी यहभी प्रकृतिहै कि जिसकिसी बातमें कोशिश करताहै अथवाकिसी वस्तुके पीछे दौड़कर उसको पकड़ता है यदि वहवस्तुउसके हाथ नहींआतीहै तो धोखेसे पकड़नाचाहता है पुलिसके कानस्टेबल यहीआदमीहैं जबउनमें इन्सानियत है वह भी ऐसीही कोशिशें करते होंगे यह बात दुरुस्तनहीं है कि एककाग़ज जूडिशियलके महकमे का ऐसे लोगोंकोसौंपाजावे जिसकेमिज़ाजमें वहबातेंहैं जिस काऊपर मैं वर्णन करचुका हूं जिस मनुष्यके मिज़ाजमें तरफदारीहो

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उसको ऐसेमुआमिलेनसोंपे जावें बज़्तसे इज़हार जो मैंने देखे उनसे यहबातप्रकटहै कि ज़बरदस्ती से इज़हार लियेगये और जोमुख्यबयानथा वहइज़हारोंमें नहींहै हरचन्द सैकड़ों झूठबोलेगये परन्तु झूठका झूठहीरहा इनबातोंकी सिद्धान्त मैं अच्छीतरह कर सक्ताहूं और मेरे वर्णनसे आपलोगों को अच्छीतरह विदितहोजावेगा कि मेराबयान ठीक है हरएक इज़हारमें पुलिसकीकारवाई मालूम होतीहै—माईलार्ड अब एकदूसरामुआमिला पेशकरताहूं साहबप्रेज़ीडएट का ध्यान उनबातोंपरदिलाताहूं वहबातेंकानूनऔर नीतिके सम्बन्धित हैं बज़्धालोगपरस्पर अपनेघरोंमेंवार्त्ता कियाकरतेहैं किकुछ संदेहनहीं कि अमुकमनुष्य वास्तवमें अपराधीहै पसऐसेही विचार अंगरेजसाहिबोंके तबीयतोंमेंहैं जोआजकल बड़ौदेमें स्थितहैं अबउनसे यहबातपूछने के योग्यहैकि वह किसवजह से जानतेहैं किवहवास्तवमें अपराधीहैजबउनसे पूछाजायगा तो उनको मालूमहोजायगाकि हमारा विचार गलतथा॥

मैंने बज़्धा देखाहै कि लोगइसप्रकारके विचारवर्णनकरते हैं यद्यपि उनको असल हालसे कुछ वाकफियत नहीं बज़्धा मैंनेयहभी देखाहै कि कल्पित बातोंको सच्चीबातें समझते हैं और उनकल्पितबातोंको तहकीकनहींकरते अदालतकेसन्मुख कईबेर ऐसीबातें पेशहुईहैं जो निपट कल्पित हैं और उनके लियेपूछा नहींजाता कि उनकामूल क्या है इसबातके कहने से मेरामतलब उसबयानसेहै जोलोग कहतेहैं कि हमअमुकमुकद्दमेमें अमुक मनुष्यके साथ संयुक्तथे मैंजानताहूंकि जब लोग इसतरहकाबयानकरें तो अच्छीतरहतहक़ीक़ात कीजाय और खासइस मुकद्दमेलोगोंकी कल्पितगवाही मंजूरनहो जब तककिवखूबीसमझ नलीजाय मैं जानताहूंकिसम्पूर्ण अंगरेजी अदालतोंमें किन्तु उनअदालतोंमेंभी जहांअंगरेज़ी सरकार के कानून के अनुसार कारवाई होतीहै कायदा है कि जो मनुष्यअपने तईं अपराधीका शरीक ज़ाहिरकरताहै उसकी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

शहादतकी समाप्त नहीं होती जबतक कि उसके बयान की अच्छीतरह तसदीक न होजावे यहबात अति आवश्यक और गौरकरने के लायकहै ॥

इसविषयमें फिरभी गुफ्तगू करूंगा कोई क़ानून ऐसा नहींहै यदिकोई मनुष्य अपनेतईं अपराधीका शरीक ठहरावे और वर्णनकरे तो उसके बयानपर जिसकेलिये अपराधी होनेका संदेहहै वहदण्डसे छूटनहीं सक्ता किन्तु उसकोभीदण्डहोगा

साहब चीफजस्टिस इसबातपर अच्छीतरह ध्यानकरेंगेक्यों कि यह बहुत बड़ी बातहै आशाहै कि मेरी इसरायसे सम्पूर्ण क़ानून जाननेवालोंकीरायमुत्तफिकहोगी उचितनहींहैकिजो मनुष्य दूसरेकी निस्बत गवाही देता हो उसकी गवाही अपराधीके सम्मुखलीजाय जैसेकिएक प्रतिष्ठित गवाहकामिलना जिसनेदेखाहो कि रावजीने करनैलफियर साहबके गिलासमें विषडाला बहुतकठिनहै यदिऐसा कोईगवाह मिलतातोउस से रावजीकी नि बत जुर्मसाबितहोता न गायकवारके निस्बत मेरेबिचारसे दामोदरपन्थका इज़हार कुछ सहीनहींहै और शायदसहीहो कि उसनेनूरुद्दीनसे संखियामंगवाई औरनूरुद्दीन सेउसकोसिंदाकतकीजातीअथवा उनलोगोंसेतसदीककीजाती जिनसेकि हीरेमोल लियेगयेतो इनबातोंसे दामोदरपन्थके निस्बतजुर्मसाबित होतान गायकवारपरआप शहादतमेंप्रथम सेअन्ततक देखेंगे नकोई गायकवारकी लिखीहुई चिट्ठीहै न किसीतरहसे साबितहोताहैकिगायकवार विषदेने में संयुक्त थेऔरकिसी प्रतिष्ठित गवाहने साफ२ नहींकहा कि इसविष दिये जानेमें गायकवार कोकुछसम्बन्धथा इसविषय में मुझको बहुतबड़ी तकरीर करनी पड़ेगी मैं कमीशन के रूबरू साबित करदूंगा कि गवाहों की गवाही निश्चय मानने केयोग्य नहीं है मैं कमीशन के रूबरू ऐसी तकरीरन पेशकरूंगा जिसको कमीशनके मेम्बरसुनेंश उसकोतकरीरसमझकी तात्पर्य्य वाचालता कहे मैंवही तकरीर पेश करूंगा जो कानूनी हो और

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सुननेके योग्य है लोगोंको मैंने बहुधा कहते हुये सुना है कि वैरिष्टर और कानून केजानने वाले केवल जबानीतकरीर करते हैं और प्रायः लोग कहते हैं कि ऐसी गुफ़गू करनी चाहिये जो सबके समझमें आवे नऐसीवार्त्ताकरनी चाहिये जिसको कोई नसमझसके मेराखास यह अभिप्राय है किमेरी बातको हरकोई समझे किन्तु इस मुकद्दमेके लियेतो मुख्ययही आशाहै कि बिल्कुल क़ानूनी काररवाई नहो और इसतरहसे काररवाई कीजायकि जिस प्रयोजनसे कमीशन एकत्रहुई वह मतलब प्राप्त हो इसविषय में गुफ़गूको जियादह नहीं बढ़ाना चाहता जिस हालतमेंकि आजकल गायकवार हैं उसको मैं पहिले बयानकर चुका हूं जिनलोगों कीवजहसे उनकी यहदशा है वह इसहालत केजिम्मेदार समझे जावेंगे निश्चय है कि ऐसे लोगों कीकाररवाई से कमीशनमें कुछफर्क न होगा परन्तु उनकीकाररवाईपर मैं केवल इतनी गुफ्तगू करूंगाजिससे तजवीज कमीशनको सहायतामिले—कमीशनके मेम्बरोंका इसबात परध्यान दिलाताहूं किजबसे सरकारने गायकवारकीजायदादकुर्क़ करलीहै और जिसकेलिये तरल्यू इसपीलीसाहबरेजीडण्टने कहाथाकिथोड़ी देरकेपीछे छोड़दी जावेगी परन्तु अबतक छोड़ी नहींगई और गायकवार बहुत तंगदस्त हैं और यहांतक किवह मुकद्दमेका खण्डनभी जैसा कि चाहिये नहींकर सके इससमय वह बड़े कष्टमें हैं इतनाही इशारह कमीशन के गौरकरने के लिये काफी होगा परन्तु मैं निहायत नम्रतापूर्वक कमीशनके रूबरू यह कहताहूं कि कमीशन इसबातकाबखूबीलिहाजकरै क्योंकि गायकवार झूठीसौगन्धखाने वालोंके मण्डलमें हैं और कमीशनके मेम्बरों कोविचारना चाहिये किजबसे करनैल फीयर साहबको कमीशन बैठीथी उससमय मेरेमवक्किलने कैसीकाररवाईकी उसकमीशनमें जोकुछ काररवाई हुईथी मेरे और कमीशनके विचारमें उसकापूछना उचितनहीं है क्योंकिवह तहक़ीक़ात ऐसे मनुष्यकी है (करनैल फैयर मीड साहब)

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जोबड़े लायक अफ़सर हैं और उनका फैसला अतिप्रशस्य है पूर्व्वो-
क्त साहबने श्रीमान् वैसरायको जो कुछ सहायता दी वह बहुत
उमदा तौरसे दी होगी परन्तु उस कमीशनके बरखास्त होनेके
पीछे जो गायकवारने काररवाई की उसपर विचार करना चा-
हिये जबसे कमीशन खतम हुई उस समयसे देखा चाहिये कि गा-
यकवार का चाल चलन कैसा रहा उन्होंने अपनी प्रजाके लाभ
केलिये क्या क्या प्रबन्ध किया ॥

जब पहिले कमीशन बैठी थी शायद वह भी गायकवार के नौ-
करों की वजहसे काररवाई की थी कोई मुख्य सम्बन्ध गायकवार
का उसमें न था उस कमीशन में जो कुछ फैसला हुआ अच्छा हुआ
परन्तु मैं आपलोगों से पूछता हूं कि जिस मनुष्यने ऐसा बड़ा जुर्म
किया हो जिसकी तोहमत गायकवार पर है वह ऐसी काररवाई
करेगा जैसे हालमें गायकवारने की है नहीं कदाचित् नहीं क-
रेगा गायकवारने सम्पूर्ण काररवाई उसके प्रतिकूल की यदि
कोई मनुष्य किसी के प्राणका वैरी होता है तो अपनी शत्रुताको
प्रगट नहीं करता है क्योंकि जो जाहिर करेगा तो सब लोगों को
मालूम हो जावेगा यदि गायकवार करनैल फियर साहबके विष
देनेका उद्योग करते तो वह उनसे अतिप्रीति करते और जिन
कागजोंसे शंका पाई जाती है तो शीघ्रही उनको फाड़ डालते
और कोई बात ऐसी बाक़ी न रखते जिससे किसी बात का पता-
लगता परन्तु गायकवारने सब बातें स्पष्ट रीतिसे कीं उनके पास
एक खरीता श्रीमान् वैसरायका करनैल मीड़ साहबकी रिपो-
र्ट के पीछे पहुंचा करनैल मीड साहबने अपनी रिपोर्टमें सम्पूर्ण
तहकीकात के करनेके उपरान्त लिखा था कि गायकवारको कुछ
मुद्दततक और सावकाश दियाजावे और उनसे आशा की जावे
कि उत्तम प्रकार से प्रबन्ध करें पस श्रीमान् वैसरायने सन् १८७५
के अन्ततक सावकाश दिया कि गायकवार उत्तम प्रबन्ध करें ॥

गायकवार को उस खरीते के आनेसे भरोसा होगया था कि
हुज़ूर सम दृष्टि भलेप्रकार इन्साफ़ करेंगे और उत्तम प्रबंध का

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मौकादेंगे फिर गायकवार को क्याप्रयोजन था किअपनेउत्तम प्रबन्धकी लियाकत केसाबितकरनेके पहिलेऐसी हरकतकरते सरल्यूइसपोली साहबने अपने इजहारमें वर्णन किया है कि गायकवार हरएकमेरीतकरीरको सुनतेथे और उसपरबर्त्ताव करतेथे औरश्रीमान् वैसरायने जोर२ हिदायतें कींउनपरअमलकरना चाहतेथे ॥

जबसेसरल्यूइसपोलीसाहबयहां नियतहुये वह किसीतरह सेगायकवारसे अप्रसन्नहुये इसलियेबिचारा जाताहै यदिकरनैल फियरसाहब सख्तीकरनेके बिनाउत्तम प्रबन्ध करानाचाहतेतौभी मुमकिन था करनैल फियर साहबसे बढ़कर कोई बदतरशख्स रेज़ीडन्सीकी पदवीके लियेदूसरा नहोगाउन्होने निहायत खराबकारर्वाई की और सोचेसमझे बिनाहरकाम कोकरबैठतेथे गायकवारको उनकीहरकतों की शिकायतकरनेका बहुतबड़ा मौकाथा मुझको उसमेंसेथोड़ासाजो मालूम हुआहै वहयहहै किफियरसाहब प्रतिक्षण औरप्रतिपलभावपूनाकरसे वार्त्ता किया करतेथे और उससे बहुतबड़ी मित्रता कावर्त्ताव रखतेथे औरयह मनुष्यगायकवार के प्राणकावैरी थाइससूरतमें गायकवारको किसतरह निश्चय होताकि मेरे मुआमिलेमें इन्साफहोगा औरमैंभी यहबातजानताहूंकिइस अवस्थामें गायकवार कोनिश्चयहोनेकी वजहनथी यद्यपिकरनैलफियरसाहब कहते हैं कि भावपूनाकर अतिप्रतिष्ठित और सच्चाआदमीहै परन्तुमेरी रायउनकेवर्णनसे अतिकूलहै मैंउस कोएक जासूस समझताहूं किवहसदैव गायकवार के बरखिलाफ बातोंको ढूंढाकरताथा चाहेयहबात ठीकहो किकरनैलफियर साहबउसकोखबरोंके सुननेके वास्तेकुछ रुपया नहीं देतेथे परन्तु करनैल फियर साहब का उसको मुंहलगाना उसकी जेबरुपयोंसे भरनेके वास्तेकाफीथा क्योंकि लोगजानते हैंकि यहमनुष्य साहबके कानमेंबातें करताहै और साहबउसकीबातोंको सुनतेहैंयह बहुतबड़ा शख्सहै गायकवारजानते

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

होंगेकि ऐसेशख्सके हाथमेंकरनैल फ़ियरसाहबकी नकेल है जिसओरको चाहताहै फेरदेताहै औरजो बातें करनैलफ़ियर साहबमेरे विपरीत करतेहैं इसी मनुष्यके कहनेसे करते होंगे गायकवारनेजो२-नवम्बरको खरीता लिखा उसके लेखसे कोई आश्चर्य्यकीबात नहीं है कमीशनके मेम्बरोंको सबतारीखें स्मरण होंगी परन्तुमैंकेवलजिकरकी तौरपरउनकोवर्णनकरताहूंक्योंकि २-नवम्बर यादरखनेके योग्यहैयह खरीताभले प्रकारशोच विचारकर लिखागया क्योंकिउसकी इबारतनिहायतउमदाहै औरउसमेंऐसामामलापेशकिया गयाहैकिश्रीमान्वैसरायको मंजूरीके सिवायऔरकोई चारहनथा उसमेंदोतीनमुकद्दमोंके दृष्टान्त भीदियेगयेहैं और कई मुकद्दमों काजिक्र है जिसमें अनीतिहुई लोगवाहोंकी गवाहीसे मालूम होताहै किउधर यहखरीतातय्यारहोताथा औरदूसरीओरसंखिया और हीरा पीसाजाताथाऔरएकबोतल औरएकशीशीमें दवातय्यारहोती थी जिसका जिक्रसिवाय अलिफलैलाके और कहीं सुनानहीं गयाऐसीबात का जिक्र उन्नीसवीं सदीमें सुना जानाबड़े आश्चर्य्यकी बातहैकिगायकवार परतोहमतहै किवहबदमआशोंसे मिलतेथे औरउनको करनैल फ़ियर साहबके विषदेनेके लिये बहकातेथे औरबयानहै कियहतरगीब उस समय गायकवार नेदीथी जबकि खरीताभेजचुकेथे औरनवाब केमुन्तजिरथे उसकाजिक्र मैंफिरकरूंगा औरउससमय विस्तार पूर्व्वक दृत्तान्त वर्णनकरूंगा मुझको अभीबहुत बड़ीबातोंका जिक्र करनाहैमैं आशारखताहूंकि जोमुख्यअपराधीहै उसकापतालगजाय अब जो गायकवार केजिम्मे अपराध लगागया हैवह किसी तरह साबित नहींहोता किउन्होंनेकिया होजब श्रीमान् वैसरायके निकटखरीता पहुंचातोशीघ्रही गायकवार बड़ौदेको श्रीमान् वैसराय नेउत्तरदिया यदिगायकवाररेजीडण्ट साहबकोविष देतेतोउनकोकुछहाल पूछनेकीक्या जरूरतथी औरजोवास्तव मेंगायकवारने विषदिया तोइस तहक़ीक़ातकीक्याजरूरतथी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

क्योंकि उन्होंने श्रीमान् महाराणी विक्टोरिया के क़ायम मुक़ाम से ऐसी हरकत की और सरकार को इतने बन्दोबस्त की आवश्यकता नथी परन्तु मेरे विचार में बिल्कुल गलत है कि विष दिया गया क्यों कि जब प्रकट में गायकवार और रेज़ीडण्ट साहब से इतना रंज था कि उन्होंने रेज़ीडण्ट साहब की बदली के लिये खरीता भेजा था तो फिर विषदेने की क्या हाजत थी—यह बातभी असम्भवित मालूम होती है कि जब गायकवार खरीताभेजचुकेथे तो जवाबके इन्तिज़ार के बिना विषदेने और इन्साफ़होनेकी कोशिशकरते क्योंकि वहजानते थे कि जो मैं विषदूंगा तो जो दरखास्तखरीते में मैंने की है वहमंजूरनहोगी और वह यहबातभी जानतेथे कि अगर इस रज़ीडण्ट को मैंने मारडाला तो दूसरा रज़ीडण्ट नियतहो जावेगा और जो उनकी बदलीके लिये खरीता भेजागयातो विषदेनेकी क्याज़रूरतहै और गायकवारयहभी खूब जानतेथे कि अगर मैं विषदेने में संयुक्तहूंगा तो तहक़ीक़ात होने के समयकैसी मुश्किलेंहोंगी और तहक़ीक़ातहोकरजोसाबित हो जावेगा तो उसका परिणाम क्या होगा॥

अबगायकवारकी कारखाई पर ध्यानदेनाचाहिये कि जब सरल्यूइसपीलीसाहबने उनसे कहा कि तुमपर किसीतरह की निगरानीनहींहै जोचाहोसो करो और तुम्हारे इन्तिज़ाम में कोई बाधानकरेगा तहक़ीक़ात होतीहै जो मुख्य अपराधी मालूमहोगातो वहपकड़ाजावेगा उससमय दामोदरपन्थउन का सेक्रेटरीभी हिरासतमें नथा चाहो दामोदरपन्थकैसाही आदमीहो परन्तु चालाकी और समझमेंउसकेसंदेहनहीं वह अवश्य गायकवार सेकहताकि रावजी और नरसूपकड़ेगयेहैं और तहक़ीक़ातहोरहीहै उससमय गायकवारकेपास रुपया था और हरप्रकारसे उनको अधिकारथा उसज़मानेमें उन्होंने ऐसी कारखाई नहीं की जैसाकि कोई अपराधी करता है किन्तु ऐसीकारखाई करतेरहे जैसाकोई निर्दोषमनुष्यकरता

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

है और यहबात प्रकटनहीं कीगई कि नरसू और रावजी से उसजमानेमें महाराजासाहबने कुछ बातेंकीं और न किसी ने यह वर्णन किया कि महाराजा साहबने अपने विश्वसित मनुष्योंकेद्वाराउनको अलगकरदेनाचाहा नयह जाहरकिया कि महाराजासाहबने रिशवतदेनेका उद्योग कियाहो अगर यह जुर्म्मउनकी निस्बतसहीहै तो वहइसतरह बैठेरहे जैसे कोईमनुष्य जानबूझकर सुरंग परबैठाहै और अपनेउड़जाने का कुछभयनहींकरता वहसदैवसरल्यूइसपीलीसाहबसे मिल- तेरहे और अपनी रियासतके उत्तम प्रबन्धकेकरनेकी कोशिश करतेरहे और सम्पूर्णकार्य्य पीलीसाहबकेसम्मत और श्रीमान् वैसरायकी हिदायतके अनुकूल करतेथे रोजमर्रा के काममें उनके कुछफर्क नहीं आया जब वहसरल्यूइसपीली साहब की मुलाक़ातको जातेतोहमेशा वहांरावजी और नरसूको देखा करतेथेयहतो अप्रगटकारकुन गायकवारके प्रसिद्धहैंपरन्तुगा- यकवारनेउनसे कोईबात नहींकी और इसीतरहपर हरएक कारखाई करतेरहे जिसतरह कोईनिर्दोष मनुष्य निर्भयता से करताहै यहबात सरल्यूइसपीलीसाहबकी गवाहीसे स्पष्टहै क्योंकि उन्होंने गायकवारकोलिखाकि सालिम और यशवन्त रावको भेजदो और उन्होंने शीघ्रहीदोनोंको भेजदिया उस खतकिताबत पर कमीशन के मेम्बर गौरकरें—सरल्यूइसपीली साहबने जाहर करदियाथा कि उनदोनों मनुष्यों को किस वास्तेबुलाते हैं सो यहबात देखना चाहियेकि गायकवार ने उनदोनोंमनुष्योंको बेतामुलभेजदिया यदिवास्तवमें विषदिया था तो उनदोनों शख़्सोंके भेजनेमें कुछखयाल नहुवा किन्तु गायकवारने उनसे कहदियाथा कि जो कुछतुमसे पूछाजावे और उसको तुमजानतेहो तो बयानकरदो यहबात भीप्रकट है कि सालिम और यशवन्तरावको किसीमनुष्यने तरगीबभी नदीथी और इसबातपर खयाल करना चाहियेकि सरकारी क़ानूनकैसाहै और पुलिसके अधिष्ठाताकिस सख़्तीसे तहक़ी-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ज्ञातकरते हैं—हरचन्द लोगोंने बयानकिया कि गायकवारको इच्छाकरनैलफियरसाहबके मारडालनेकी थी परन्तु आश्चर्य है कि उन्होंने इसमुकद्दमेकी तहक़ीक़ात में किसीतरह का दखलनकिया न लोगों को रिशवतदी और न किसीको कुछ सिखलायाकि अमुकबात इस प्रकारसे कहनाकिन्तु सालिम और यशवन्तरावको भेजदिया और आपभीलिखभेजाकि जो बात मेरे योग्य हो उसके अंजाम को मैं मौजूद हूं आदिसे अन्ततक गायकवारकी ओरसेकोई कारखाई ऐसीनहीं हुई जिससेमालूम होकिउनके ज़िम्मे कुछक़सूरहै और किसीबात को गुप्तकरना चाहते हैं॥

माईलार्ड अबइसबातपर आपको ध्यानहोना चाहियेआशा हैकि आप गायकवारपर रहमकरेंगे—जिस ज़मानेमेंकि मुक़द्दमेकी तहक़ीक़ात होतीथी सालिम और यशवन्तराव गायकवारके नौकर और उनके अधिकारमेंथे यदिउनदोनों मनुष्यों को गायकवार कभी अलग करदेते कुछकठिनबात नथी इस के विशेष गवाहों के बयान से प्रतीत हुआ कि कुछ २ रुपया आयाआदिक को खबरोंके मिलनेके वास्तेअगस्त और सितम्बर में दियागया जब गायकवार खबरों के मिलने के वास्ते रुपया खर्चकरतेथे तो क्या उनलोगोंको रुपया नहीं देसक्ते थे जिनको करनैलफियरसाहबके मारडालनेके लियेतय्यार कियाथा उनलोगों को रुपयेकादिया जाना किसीके बयानसे ज़ाहिर नहींहुआ और गवाहीमें एकअद्भुतबातयहहैकि नरसू और रावजीने कभी गायकवार से रुपया नहीं मांगा शायद इसलिये नमांगाकि अगरहम रुपयालेकर खर्चकरेंगे तो हमको हिसाबदेनापड़ेगा और सबसेबढ़कर यहबात है कि इसरईस ने अपनेतईं केवल पांचछः आदमियोंके सुपुर्दकरदिया और हरमनुष्यसे कहताथा कि ऐसाउपाय करो कि करनैलफियर साहबको विषदियाजाय इससूरतमेंमानो गायकवारने अपने ज़िम्मे मुक़द्दमा लेलियाथा उनको क्या ज़रूरत थी कि प्रति

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मनुष्य से अनेमन का हाल कहते इसइच्छा के पूर्णहोने के लिये एक मुख्तकाफीथा पांचछ: मनुष्योंके एकचकरनेसे क्या प्रयोजनथा यहबातबिल्कुल बुद्धिके विरुद्ध मालूमहोती है कि गायकवार ने ऐसा कियाहो नरसू की गवाही से प्रकट है कि रावजी के साथ मध्यस्थरहा रावजी ने जितनाझूठ बोला उसने उसकी सिदाक़त की जब उसको गायकवार के पास लायेथे तो गायकवार को उससे कुछलाभ नहीं हुवा जितनी काररवाईकी तो रावजीके बयानके अनुसार आपही रावजीने की मालूमहोताहैकि नरसू खाहमखाह जुर्ममें संयुक्त होताहै और नरसूबड़ा भाग्यहीन मालूमहोताहै वहकहताहै किमैं अपनीअभाग्यतासे ऐसी २ बातोंमेंफंस जाताहूं हरकदमपर उसको फन्देनजरआते हैं वह अपने अपराधको बड़ीलज्जासे प्रकटकरताहै यहमनुष्य अपनेतईं बड़ाधर्म्मिष्ठ प्रकटकरताहै यहसुकद्दमा इतनालंबाहै कि मुझकोभयहै किकोईबात छूट नजावेपरन्तु मैंइसबातका भलीभांति विचार रक्खूंगा आशा है कि अगरमुझसे कोईभूलहो तो आपसब साहब उसकोबता- दें-इससुकद्दमेके शुरूहोनेके समयजो ऐडवकेटजनरलने इस्पी- चकहीथी अबउसपर सबसाहबोंका ध्यानकराता हूं—पूर्वोक्त साहबकी इस्पीचनिस्संदेह अतिउत्तम और उनकी पदवीकी लियाकतके अनुकूल थी उन्होंने किसी बातपर बहुतपक्ष नहीं किया किन्तुबड़ीनम्रता और दृढ़ताके साथकहीथी॥

मुझको गायकवारकी ओरसेउस स्पीचमें कोई शिकायत नहींहैकिन्तु जहांतक सम्भवथा उनसाहबने मुझेसहायतादी॥

अबमैं मतलबकी तरफध्यानदेताहूं जिससमयऐडवकेटजनरल साहबनेस्पीचकहीथी और दरखास्तकीथी किमीशनके मेम्बर गायकवारपर जुर्मकायम करकेदण्ड विचारें॥

उन्होंनेअपने विचारसे गायकवारपर दोअपराध ठहराये थेपरन्तुउन्होंने अपनी सम्पूर्ण इस्पीच की कोईवजह करनैल फियरसाहबको विषदेनेकी नहींबयानकी शायदजानबूझकर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

इसबातको उन्होंने नहीं बयानकिया-सोअबमैं वर्णनकरता हूं किगायकवारको कर्नैलफियरसाहब कैविषदेनेकी कोईवजह नथीशायद ऐडवकेटजनरलमेरेदोस्तने उसकीवजह बखूबीमालूमकीहोगीपरन्तु जबकुछमालूमनहुवा इसलिये उन्होंनेअपनी इस्पीचमें जिक्रकिया कि गायकवारने रेजीडन्सी केनौकरोंको वहकाया उन्होंनेयह नहींकहाकिनरसू और रावजीसेपरस्पर क्यावास्ताथाऐडवकेटजनरलनेअपनीइस्पीचमेंएकमनुष्यजिसका नामपेडरूहै जिक्रकियाकि आयाआदि नौकरोंकीएकसलाह थी और पेडरूकी, और सलाहथी पेडरूकर्नैलफियर साहबका खानसामांहै और २५ वर्षसे उनकेपास नौकरथा पेडरूके इज़हारपर जोग़ौर कियाजाय तोउसके बयानसे गायकवार जुर्मसेबरीहोतेहैं जोउनपर लगायागयाहै इसलिये यहबात ध्यान करनेके योग्य है कि ऐडवकेट जनरलने अपनीइस्पीचमें पेडरू कीनिसबत किसतरह जिक्रकियाहै उन्होंनेजान बूझकर पेडरू का इसतरह जिक्र किया कि यह मनुष्य बड़ा प्रतिष्ठित और विश्वसित है मैं भी कहता हूं कि इन सम्पूर्ण झूठे गवाहोंमें जिन्होंने अदालतके सम्मुख गवाहीदी है पेडरू की गवाही पर किसी प्रकारका एतिराज़ नहीं होसक्ता जोपेडरूकी गवाही सहीसमझी जावेतो यह मुक़द्दमा खतमहोगया और जो कुछ गवाहोंने झूठीगवाहीका महलखड़ा कियाहै वहबिल्कुलगिर जावेगा रावजीजो झूठेगवाहोंका सरदारहै उसकी गवाही काएक २ अक्षरखण्डन कियागया रावजी और पेडरू केवर्णन मेंकितना अन्तरहै—पेडरू २५ वर्षसेकरनैल फियर साहबका विश्वसित नौकर था उसका प्रतिष्ठित होना साहब ऐडवकेट जनरलभी मानतेहैं उसने कमीशनके सम्मुख वर्णन किया कि रावजीने मेरेविषयमें जोवर्णन कियावह गलतहै और सरासर उसकीबनावटहै ॥

माईलार्ड—मैं नहीं कहसक्ता कि रावजीकी गवाही किस प्रकारसे घड़ीगई पेडरूकी गवाहीने रावजीकी गवाहीकोउड़ा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

दिया और ऐडवकेट जनरल की क़ाबलियत भी उसको खड़ा नहीं रखसकी अबयह बातमालूम होना बाक़ीहै कि आपकी रायभी इस विषयमें मेरी रायके अनुकूल है वा नहीं—साहब ऐडवकेट जनरलसरकारकी ओरसे इसविषयमें बखूबी सोच करेंगे और पेडरू की गवाहीका भलेप्रकार वर्णन करेंगे॥

मेरे विचारसे चाहेऐडवकेट जनरल हजार तकरीर करेंगे परन्तु मेम्बरोंके जेहनपर बैठनाबहुतही कठिनहोगा किआया मुमकिनहै कि पेडरूकी गवाहीपर निश्चयकियाजाय याराव-जीकी गवाही ठीक समझीजाय और तुर्फामाजरा यहहै कि पेडरू की गवाही प्रथम बम्बई के एक नब्हित आफदीपोस और डिपुटी कमिश्नर पुलिस मिस्टर एडगन्टन साहब ने लीथी इसलिये पेडरू और रावजी की गवाही में देखना चाहिये कि कितना अन्तरहै ऐसा नहीं होसका कि दोनों मनुष्यों की गवाहीपर विश्वास कियाजाय ज़रूरहै कि एकमनुष्यकी गवाही झूठहो और दूसरे की ठीकहो पेडरूकी गवाही में मुझको कोई बातकहनी बाक़ीनहींहै परन्तुरावजीकी गवाही परमुझको एतिराज़है रावजीके निस्वतऐडवकेट जनरलसाहब नेउसका प्रतिष्ठित होनानहींकहा ऐडवकेट जनरलने मुकद्द-मेके प्रारम्भ होनेके समयअपनी स्पीचमेंवर्णनकियाकिकरनैल फियर साहबको शुरूमेंविषदिये जानेका उद्योगकबहुआवाराव-जीनेअपनी गवाहीमें प्रथमअपने इरादोंकाबखूबी इजहारदि-याकिमुझको तारीखें स्मर्णनहीं हैं परन्तु कमीशन के सन्मुख फिरबयान करूंगा परन्तु अजब बातहै कि साहबऐडवकेटज-नरलनेउसका जिक्रनहींकिया शायदअकस्मात् उनसेयहबात छूटगई अथवा उन्होंनेयहसमझाहोगाकिरावजीकाबयानऐसा बेमूलहै किकमीशनके सन्मुखउसका वर्णननकरसके यदिऐडव-केटजनरलसाहबकायहीविचारयातोबहुतठीकहैऐडवकेटसा-हबसितम्बरकेउद्योगका कुछवर्णननहींकरतेहैं उन्होनेकेवल ६ और ७नवम्बरकेउद्योगकाजिक्रकियाऔरकमीशनकेमेम्बरोंको

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सर्ग होगा कि रावजीने अपने इजहार में ६ और ७ नवम्बर का जिक्र नहीं किया किन्तु उसने कहा है कि मैने ६ और ७ नवम्बर को विषन हीं डाला परन्तु फिर भी करनैलफियर साहबकी ऐसी ही दशा होगई जैसा कि विषके खाने से होती है अगर ६–७ नवम्बर को विष दिया गयातो चकोतरे की शर्बतमें दियागयारावजी का बयान है कि जो पुड़ियां मुझको मिलीथीं उनको मैंने ९ नवम्बर को शर्बत में डाल दिया कुछ संदेह नहीं कि बहुधा झूठ के बोलनेवाले अपनी बातको भूल जाते हैं और झूठ बोलनेवाले मनुष्य बड़े भुलक्कड़ होते हैं जब ऐडवकेट जनरल ने प्रथम में इसीच कही थी उस में वर्णन कियाथा कि रावजीने ६ और ७ नम्बर को विषडाला परन्तु मैं नहीं कहसक्ता कि रावजीने मिस्टर सूटर साहबके रूबरू यह जिक्र कियाथा वा नहीं परन्तु उसने किसी न किसी अफ्सर के रूबरू अवश्य कहा होगा परन्तु जब अदालत में उसके इजहार लियेगये तो उसने ६ और ७ नवम्बर का कुछ वर्णन नहीं किया किन्तु उसने गलती से कहा कि ९ नवम्बर को सब पुडियां शर्बत में डालदीं फिर ऐडवकेट जनरलने हेमचन्द और फतहचन्द का जिक्र किया इस गवाह का दामोदरपंथ की गवाही के वक्त वर्णन करूंगा॥

ऐडवकेट जनरल कहते हैं कि संखिया और हीराकूट करसालिम को रावजीके देनेकेलिये दोदफे दिया गया परन्तु रावजी केवल एकपुड़िया के देनेका जिक्र करता है पहिले उसको सितम्बरके महीनेमें एक पुड़िया दीगई और दूसरी बेर उसको दो पुड़ियां दीगईं रावजीने उसकेतीन भागकिये उनदोनोंपुड़ियों मेंसे एकसफेद और दूसरीमें गुलाबीकोई वस्तु थी गुलाबीवस्तु के निस्बत रावजीने इसलिये कहाथा कि उसने सुनाहोगा कि गुलाबीरंगकेहीरे होते हैं परन्तु जब संखिया और हीरे एक जगह कूटगये तोफिर गुलाबी किसतरह आगया और जो पुड़िया उसकी पेटीमें मिलीतो अपनीबातके सही होनेके लिये उसने बयान किया कि संखिया और हीरे मिलायेनहीं गये राव जी की प्रकृति अजब तरहकी है इसने करनैलफियरसाहब को मार

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

नाभीथा डायाऔर उसकोदयाभी आतीथी पेटीकाजिक्रभी मैं फिर करूंगा उससे स्पष्टप्रगटहोताहै कियह मुकद्दमाबनाया गयाहै ऐडवकेट जनरलसाहब पुलिसकी तहक्कीक़ातके विषय में कहतेहैं किगवाहोंमें परस्परकुछ वार्त्ता नहीं होतीथी इस वजह से वह कहते हैं कि गवाहों की गवाही बनावट की नहीं परन्तु मेरे विचार से यह सब बातें निरर्थ हैं निस्संदेह इतना ऐब गवाहोंमेंहै किवहबेमूल है वास्तव में गवाहों की वार्त्ता नहीं हुई परन्तु इन गवाहों को एक प्रतिष्ठित मनुष्य अर्थात् अकबरअलीने बुलायाथा और बखूबीउनको सिखार करहर एक बात को पूछा उनगवाहोंने २४ घण्टे के उपरान्त सबहाल बयानकरदिया यहकारखाई अकबर अलीकी मेरी समझ में नहीं आती कि किसतरह सब लोगोंने बेचैन होकर अपने मनका भेद उनसे वर्णन करदिया मेरे विचारसे यहसब गवाहियां बनाईहुई हैं और बनावट को मैं साबितकरदूंगा और सबगवाह इसीवास्ते एकजगहकिये गयेथे कि उनकीगवा-हियांघड़ीजावें गजानन्दकी निस्बतभी इससेअधिक और कुछ नहींकहसक्ता मुझको हरएक बातपर गजानन्दयाद आता है औरयदिकोई मनुष्य कहे किगवाहों की गवाही कैसी हैतो उसकेउत्तरमें मैंकेवलयही कहसक्ताहूं (गजानन्द) यहगवाह आपही नहीं जानतेथे कि हम क्या वर्णन करतेहैं जैसीकिउन-कीगवाही बनाई गई उसीतरह उनको याद भी दुरुस्त होती तोमैंकिसतरह गवाहीमें तकरीरकरता परन्तु मैं ऊपर कह-चुकाहूं किझूठोंका सर्णवकृत खराबहोताहै यहगवाह मुह-तलिफ बयान करते थे अकबरअली अब्दुलअली गजानन्द ने अपनेमुल्कके हितकेलिये जो कारवाई कीहै विश्वासहै कि उसपरकमीशनकेमेम्बर कदाचित् निश्चयनकरेंगे इसकेउपरान्त ऐडवकेट जनरलनेइसतौर से जिक्रकियाथा किदामोदरपंथ रावजीनरसू बड़ेदुष्टहैं और इसवजहसे अपने इजहारमेंइक़्रा-रारकियाहै किखतामुआफहो और जो २ उन्होंनेदुष्टताकी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

है उसको क्षमा किया जाय परन्तु नरसू में अपराधी और निर्दोषहोना दोनों बातें पाई जाती हैं यह अपने अपराध से ऐसा लज्जित हुआ कि कुवें में डूबना चाहा था और उसने वही मसलपूरी की कि कुवें में सचाई मिलती है परन्तु सचाई के बदले उसको कांस्टेबल मिला क्योंकि उसके कूदने के उपरान्त कांस्टेबल भी कुवें में कूदा था—फिर ऐडवकेट जनरल गायकवार का ज़िक्र करते हैं जबकि वह ९ नवम्बर को करनैलफियर साहब के पास आये थे उन्होंने वर्णन किया कि करनैल फियर साहब का जी मतलाता था और जो विषखाने वाले की दशा होती है वही उनकी हालत थी लेकिन डाक्टर सीवर्ड साहब से करनैलफियर साहब ने चाहा नहीं सुना कि तलछट के इमतिहान का क्या परिणाम हुआ परन्तु जब करनैलफियर साहब की मुलाक़ात गायकवार से हुई तो करनैलफियर साहब को सुनकर आश्चर्य हुआ कि जो दशा उनकी थी वैसी ही बहुतसे लोगों की शहर में दशा है किन्तु गायकवार ने भी कहा कि मेरी तबीयत का भी यही हाल है हालांकि करनैलफियर साहब ने विष का उनसे कुछ भी ज़िक्र नहीं किया उस समय तक करनैलफियर साहब को मल्हरराव से कुछ संदेह न था मालूम न हुवा होगा कि मुझको विष दिया जावेगा यदि दामोदर पन्त का बयान ठीक है कि उस समय मल्हरराव बखूबी जानते होंगे कि करनैल फियर साहब की क्या दशा है क्योंकि दामोदर पन्त कहता है कि मल्हरराव ने मार्ग में मुझसे यह बात्ती की थी जब गायकवार ने करनैल फियर साहब से बयान किया था कि नगर में इस प्रकार का रोग है तो उनको मालूम न होगा कि डाक्टरी से मालूम हो जाता है कि जो मनुष्य विष खाता है उसकी क्या दशा हो जाती है करनैलफियर साहब ने जो डाक्टर सीवर्ड साहब को चिट्ठी लिखी थी उसमें उन्होंने लिखा था कि पेट में पीड़ा और सिर घूमता है और मुख में तांबे का स्वाद है इस विषय में ऐडवकेट जनरल वर्णन करते हैं कि गायकवार करनैलफियर साहब को निश्चय कराना चाहते हैं कि यह बीमारी किसी सबब से थी जब मैं

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

करनैलफियर साहबकी गवाहीपर ध्यान करताहूं तोमैं कह सक्ताहूं कि गायकवार उसदिन जोकरनैलफियर साहबकी मुलाकातके लियेगयेथे वहदिन उनकी मुलाक़ात काथा कोई नईबात गायकवारने नहींकीथी औरन गायकवारकी बातों सेकुछफिक्र मालूमहोतीथी उसदिन मामूली बातें हुईं यहां तकअपनेमित्र ऐडवकेटजनरल की दूसीचपर गुफ़्तगूकी वहबिल्कुलक़ाबलियतसे भरीहुईथी अबवहकहतेहैंकि यहमुक़द्दमा नरसूऔर रावजीऔरदो मनुष्योंकी गवाहीपरहै वहइसबात कोमानतेहैं किरावजीऔरनरसूने जुर्ममेंमदद की वहकहतेहैं कि इस मुक़द्दमेका निर्णय रोयदादपर होगा पूर्व्वोक्त साहब तीनप्रकारसे गवाहीकी सिदाक़त करते हैं प्रथमयह कि वह अलग २ रक्खे गये इस विषयमेंमैं पहिले गुफ़्तगू करचुकाहूं जिस मनुष्यने नरसू की गवाही सुनीहोगी क्या वहकह सकेगा कि उसकी गवाही ठीक है उसकी गवाही से यह बात प्रगटहै कि एक समयमें वहबहुत बदज़ातथा परन्तु अबअपने कियेपर पछताताहै दामोदरपंघरावजी और नरसूकी गवाही केलिये बहुतकुछ सिदाक़त दाकारहै मेरेमित्र(एडवकेटजनरलसाहब) ने उसकीसिदाक़त नहींकी यदिपेडरू की गवाही ठीकहैतो रावजीको दरोगहल्फी अर्थात् झूठी सौगन्दखानेके अपराधमें दण्डहोना चाहिये केवल तीनमनुष्यों कीगवाहीपर इस मुक़द्दमेका दारमदारहै और उन्हीतीन मनुष्योंकीगवाही से गायकवारकीप्रतिष्ठा और मालऔर असबाब हरलियागया क्या उनलोगोंकी ऐसीगवाहीहै कि जिसकी समाअतहो और गायकवारको उसकीगद्दी औरउसकी जायदादछीनकर मुफ़लिसकरदियाजाय आपलोग जो कमीशनकेमेम्बरहैं केवलजूरीके तौरपरहैं क्या आपसाहिबों को यहउचितहै कि सोचेसमझे विना छोटे२ गवाहोंकी गवाहीपर गायकवार को फांसीदेदें ऐडवकेटजनरल चाहतेहैं कि गायकवारको दण्ड दियाजावे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

इनलोगों की गवाही बिल्कुल बेमूलहै सबसे पहिले करनैल फियरसाहबकी गवाहीका जिक्रकरूंग—माईलार्ड ल्टनु केपल-टनेमेरी आवाजआबूमेंनहीं है करनैलफियरसाहब इसअजब फिसाने में नामवर शख्सहैं मैने उनके विषयमें एकशब्द भी सिवाइसके जो मुझेकहना आवश्यक है न कहा तो क्या और ऐसीबातनकहूंगा जिससे करनैलफियरसाहब खेदको प्राप्तहों करनैलफियरसाहब निसंदेह प्रतिष्ठित और सत्यवादी और वीरहैपरन्तु जिसपदवीपर वहनियतथे वहउसके योग्यनथेइस ओहदेका काममहासूक्ष्मथा गायकवारजनतेथेकि उनपर किसीसमयमें ऐसी चश्मनुमाईहुईथी कि उनकीप्रतिष्ठा और काररवाई में फर्क आगया था और मालूमहुआथा कि वह प्रबन्ध नहीं करसक्ते हैं मुझको आशाहै कि यहबातें करनैल फियरसाहबके विषय में जियादहसख्त नहींहैं—फिर गवर्नर बम्बईनेउनको उससेवरीकिया जोकागज करनैलफियरसाहब के पासगया और जिसको मैने अदालत में पेशकिया उससे करनैलफियर साहबके बदानाम करनेकी मेरीइच्छा नहींहै केवल इसीलिये पेश किया था ताकि साबितहो कि करनैल फियरसाहबउसपदवीके योग्यनथे जिसपरकिवहनियतथे और गायकवार इनबातोंको खूबजानते औरसमझतेथे किअबउनकी शिकायतहोगी शीघ्रहीबदलाये जावेंगे करनैलफियरसाहबने ऐसेलोगोंसेमुलाकातरक्खी जिनसेकि गायकवारमहाअप्रसन्न थे औरवहलोगगायकवारकेप्राणकेवैरीथे जैसेकिउनमेंसे एक भावपूनाकरथा उनलोगोंकाबयानहै किहमको करनैल फियर साहबनेकुछरुपया नहींदियापरन्तु करनैल फियरसाहबकीस-रपरस्तीउनकेकमाखानेकेलिये काफीथीमालूमहोताहै किकर-नैल फियरसाहबउनसेऐसामेलचोलरखतेकि जोकुछ वहलोग कहतेथेवहीकरनैलफियरसाहब करतेथे फिर करनैलफियर साहबक्योंकरकहतेहैं किभावपूनाकर प्रतिष्ठितमनुष्यहैमैंक-दाचितृनहींकहसक्ताकिउनकोक्योंकरमालूमहुवा किभावपू-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ना करसत्यवादी है क्योंकि वह गायकवारके बिल्कुलप्रतिकूलथा फिरकरनैलसाहबको यह खयालहुवाकिजिनलोगोंपर गायकवारजुल्म करते हैं उनकी नालिशसुननाचाहियेइससे मालूमहुवाकिसैकड़ों मनुष्यगायकवारकीशिकायतकियाकरतेथेजब हराखाने जाते उस समयसे लोग शिकायत शुरूकरते थेनिदानजोमनुष्य गायकवारकीशिकायतकरताथाउसको बखूबी करनैल फियर साहब सुनतेथे कोई२शिकायतें बिल्कुल झूठ होतीथीं परन्तु साहबउनकी भीसमाअत करतेथे जबलोगों कोयह मालूम हुआ कि साहब हरएक शिकायतको सुनते हैं औरगायकवार सेअप्रसन्न हैंतो लोगोंने नाबेजा अरजियांदेनी शुरू करदीं मैंज़ार कहचुकाहूं किजबगायकवारने देखा कि करनैलफियर साहब किस २ प्रकार केलोगों सेमिलतेहैं और प्रतिसमयऔरहर बातनभावपूनाकरसेवार्ता करतेहैंऔरजिस सेयहबात साबितहोतीथी करनैलफियरसाहब बिल्कुलभावपूनाकरकेवशमेंहैं समझे किउत्तमप्रबन्धकाहोनाअसम्भवित हैजोऐसान होतातोकोई कठिनता आगेन आतीजिस२उत्तम प्रबन्धके लिये श्रीमान् वैसरायने दोवर्ष की उनको मोहलत दीथी अगर करनैल फियरसाहब ऐसान करते तोकोई दिक्कत नथी परन्तु इसहालतमें अच्छेइन्तिजामका होना असम्भवित था। करनैलफियर साहब को यह संदेहथा किमुझ को विष दिया जावेगा परन्तु मालूम नहीं कि किस मनुष्यने उनको यह पट्टी पढ़ाई थी और किस तरह उनको यह खयाल हुआ कि करनैल फियर साहब को इस प्रकार के खयाल थे और गायकवार के मिजाज में दूसरी तरह की बातें थीं प्रकट है कि भावपूनाकर बाजारी गप करनैलफियर साहब को आकर सुनायाकरता और करनैलफियरसाहब हरबातका निश्चयकरलेतेथे सितम्बर वा अक्टूबर में फियरसाहब के माथे परफोड़ा निकलाथा इसमुकद्दमे में फोड़ेकेविषयमेंभी बहुत बहाजिक्र है और बहुतकुछ कारवाई फोड़ेकेनिस्बत बयान

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

हुईइसफोड़ेकोदवा डाक्टरसाहबकियाकरतेथे करनैलसाहब इसबातमानेकी शिकायतकरतेहैं किबहुधामेराजीमतलातोथा श्रीर फोड़ेमेंअति पीड़ाहोतीथी श्रीर उसपीड़ाका यहकारणमालूम हुवा किडाक्टर सोवर्डसाहब फोड़े पर लौडियम नाम औषधी लगायाकरतेथे श्रीर लौडियमका यहगुण है किलगातेही बहुतपीड़ाहोतीहै ऐडवकेट जनरलबयान करते हैंकि रावजीने चकोतरेके शरबतमें कुछपुड़ियां डालदीं श्रीर बिलाकिसी शिकायत के करनैल फियरसाहब उसको पीगये हालांकि अगरकोई चकोतरेका खराबशर्बत पियेगातो बेशक शिकायत करेगापरन्तु करनैलफियरसाहबने उसकोचुपचाप पीलिया श्रीर किसीप्रकारकी शिकायतनकी मालूम होताहै किकरनैलफियरसाहब केमिजाजमें अतिसंतोषथा तीनदिन तकउन्होंने शर्बतनहीं पियायहभी नईबातमालूम होतीहैकि जबकिसीमनुष्यको किसीखास बस्तुकाअभ्यास होताहैतोउसके इस्तैमालके बिनाउसको चैननहीं पड़ताअप साहिबोंकामत मेरेवर्णनके अनुकूलहोगा किकरनैलफियरसाहबने शरबत न पीनेकी कोईमाकूल वजहबयान नकी जोकारण उन्होंनेवर्णन कियावहमेरे विचारसे काफीनहीं है अगररावजीका बयान देखाजावेतो मालूमहोगा किउसने केवलहीरेकी कनीडाली थीसो उसकेनिसबत डाक्टरोंने वर्णनकिया किउससेकुछदुःख नहीं पहुंचतापस ऐसेही खयालोंसे उनका शिर घूमनेलगा श्रीर जीमतलानेलगा श्रीर जोदशा सितम्बर श्रीर अक्तूबर में हुईथी वैसीही दशाहोगई रावजी का बयानहै कि ६, श्रीर ७, नवम्बरको मैने संखियानहीं डाली फिरकिसतरह करनैलफियरसाहबकी तबीयत बिगड़गई फिरभी करनैलसाहबचुप होरहे श्रीर किसीसे उन्होंने शिकायत नहीं की ६—नवम्बर को उन्होने शिकायतकी श्रीर संखियेके दिये जानेका संदेह हुवा परन्तुदोतीनबातें मेरे विचारमेंनहीं आतींउनमेंसे एक यहहैकिकोई माकूलवजह करनैलफियर साहब को विषदिये

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जानेकी नथी इसबात का खयाल और लोगोंके दिलोंमें भी
आया होगा ऐसेखयालोंके विषयमें मैं बहुतसी बात्तीकरूंगा
मुझको इसबात का भी आश्चर्य्यहै कि जिनलोगों को संखिया
मिलसक्तीथी वह करनैलफियरसाहबके कमरेमें भी जासक्तेथे
और करनैलफियरसाहबकी सबआदतों कोभी जानतेथे फिर
क्यों अच्छीतरहसे विषदिये जानेका बन्दोबस्त नहोंहुवा सब
से अधिकअचम्भेकी यहबातहै कि मुद्दततक उद्योगहोतारहा
और भलेप्रकार विष न दियागया जब शर्बतमें विष मिलाया
गया तो करनैलफियरसाहब यहकहतेहैं कि तलछटका रंग
स्याही माइलभूराथा और गवाहोंका यहबयानहै कि स्याही
माइल नथा किन्तु हलकाभूराथा जबतलछट का इमतिहान
कियागया तो जो सूरत करनैलफियरसाहब बयान करते हैं
उसके प्रतिकूलथी करनैलफियर साहबने गिलास कोमेजपर
रखदिया थोड़ीदेरके उपरान्त उनकोसंदेहहुवा और तलछट
को देखा आपको स्मर्णहोगा कि डाक्टरसीवर्डसाहबने उसके
निस्बतक्याकहा मैनेउनसे इतनेप्रश्नकियेकि वहअप्रसन्नहोगये
और कहा कितुमयहांक्या प्रलयतक रहोगे मैं भी जानताहूं
किजोप्रश्नउनसे मैनेकिये उनसेउनकोआश्चर्य्यहुवाहोगाक्योंकि
तलछट डाक्टरसाहबनेदेखा उसकारंग हलका भूराथा और
जिस तिलछट के निस्बत करनैल फियरसाहब वर्णन करते हैं
उनकी रंगत स्याहीमायल भूरीथी यहबात ठीक है किरंगत
केविषयमें बहुतसेलोगोंके बयानमें अन्तर होजाता है परन्तु इतना
अन्तरनहींहोता जोकिडाक्टर सीवर्डसाहब और करनैलफिय-
रसाहबके बयानमें है जिसप्रकारडाक्टर सीवर्डसाहबने संखिये
की आजमाइशकी वह तरीकाभी अच्छानथा किन्तु जिसप्रकार
डाक्टर ग्रेसाहबने इमतिहान कियावहभी अच्छा नथा यूरु-
पयमें जब इसतरहका इमतिहान होताहै तोडाक्टरलोग सं-
खियेको दूसरीबस्तुओंसे पृथक् करकेउसको मूलरूपमें लाकर
दिखा देते हैं और ऐसा नहीं करते कि धातका सा छल्ला

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बनगयाऔरउसको कहदिया कियहसंखियाहै पिसेहुये हीरे
कीनिस्बत जोलोगबयानकरतेहैं वहबिल्कुल कल्पितहैजोलोग
कहतेहैं कितलछटमें पिसाहुवा हीराथायहभी झूठहैहांकोई
वस्तु उसमेंचमकती हुईथीऔर उससे थोड़ासी छिलसकाथा
परन्तुउसे हीरेकाचूर्ण कहनाबिल्कुल गलतहै औरइसबातका
साबितकरना भीअसम्भावितहै उसकीनिस्बत खयालहै कि वह
हीरेकाचूर्णथाअगरयहउम्मैदकीजायकिडाक्टरोंकीरूसेहीरे
काहोना साबितहोजावेगा तोयहउम्मैदभीबेजाहै डाक्टरलोग
इसकोकभी साबितनहींकरते निश्चयहैकि इसविषयमेंजोतह-
कीकात हुईहैकमीशनके मेम्बरउसपर किसीप्रकारका खयाल
नकरेंगे यहबात निस्संदेह कुछसाबितहुईकि जोपुड़िया इम-
तिहानके वास्तेभेजी गईथीउसमेंसंखियाथा परन्तुयहबातदर-
याफ्त करनेके योग्यहैकि यहपुड़िया वहीतलछटथी जोकर-
नैलफ़ियर साहबकेगिलासमें सेनिकलीऔर इसविषयमेंकरनैल
फ़ियरसाहबने इनकारदियाहै किजबसे मैंने तलछटको देखा
उसके पीछेकोई मनुष्य गिलासके पासनहींगया परन्तुकरनैल
फ़ियरसाहबके इसइनकारको मैंतसलीमनहीं करसकाक्योंकि
जोकोई मनुष्य गिलासके पासजाना चाहतातो बहुतकुछमौ-
क़ामिल सकाथा मेरीइस सम्पूर्णवार्त्तासे यहप्रयोजनहै कि
इसमुकद्दमेमें कैसीअद्भुत गवाहीगुजरीहै औरइसगवाहीकी
वजहसे क्या२ विचारमनमें गुजरते हैं॥

दोपहरके उपरान्त दोबजेथे सरजन्टबेलनटायनसाहब ने
कहाकि आजथानिश्चरवारहै अदालतको बरखास्त करना चा-
हियेऔरकहा कियदि प्रेजीडण्टसाहबकी इच्छाहोतोमैंकुछ
औरवर्णन करूंप्रेजीडण्ड साहबने कहाजोआपथकगयेहैंऔर
दमलेनाचाहतेहैंतोबेहतरहैमेरीतरफ़सेजबरदस्तीनहींहैसर-
जन्टबेलन टायनसाहबने कहा खैर यहबात मेरेजिम्मेहै और
अबमैं दमलेनाचाहताहूंप्रेजीडण्ट साहबने कहा कि पूर्व्वोक्त
सबबसे अदालतबरखास्तकीजाय परन्तुजबथोड़ासमयभी व्यर्थ

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जाताहैतोमुझकोअफ्सोसहोताहैसरजन्टबेलनटायन साहबने प्रेजीडण्टकाशुक्रियाअदाकिया और कहाकिइसमुकद्दमे में बहुतसी बातोंका खण्डनकरचुकाहूं और सोमवार कोकोशिश करूंगा किमेरीतरफसे खण्डनका कुछ संक्षेप होसक्ता हैया नहींइसके उपरान्त अदालत बरखास्त हुई॥

सत्तरहवेंदिनका इजलास॥

आजग्यारह बजेकमीशन केमेम्बर एकचहुये परन्तुश्रीमान् महाराजा सेंधिया चित्तकी उद्विग्नतासेगैरहाजिरथे सरल्यूइसपीलीसाहब कमीशनमें उपस्थितथे औरश्रीयुत महाराजा मल्हरराव भीसम्पूर्ण दिनबैठेरहे प्रेजीडण्ट साहबनेकहाकि अफ्सोसहैकिश्रीमहाराजासेंधिया चित्तकी उद्विग्नतासेआज न आसके॥

सरजन्टबेलनटायनसाहब स्पीचकहने के वास्तेउठे उन्होंने वर्णनकिया किमैंने शनिश्चरवार कीइस्पीचमें वर्णनकिया था किमैंने दोएकजगह भूलकीहै आजमैंउसगल्ती कोदुरुस्त करूंगा औरवहगल्तियां तारीखोंकीथीं जिससमय मैंनेपहिले विषदेनेकीतारीखबयानकीथी तोअगस्त वासितम्बरकामहीना कहाथा परन्तुएक गवाहने किजिसकी गवाही कुछ निश्चय माननेके योग्यहै वहकहताहै कि९ नवम्बरके पन्द्रह वा बीस दिनपहिले विषदेनेका उद्योग कियागयाथा औरदूसरी बात यहहैकि अन्तकीबेर जोगायकवारकीओरसे रुपयेके देनेका बयानहुआहै वहजूलाईके महीनेमेंहै गतशनिवारकी इस्पीच मेंजुलाई केपीछे कीतारीखमैंने बयान कीथी परन्तुकागजों के देखनेऔर अपने दोस्तोंके बयानसेयहगल्तियां मालूम हुईं इनबातोंका मैंपीछेवर्णन करूंगा।क्योंकि मैंनेउन तारीखों को दुरुस्त करलिया—माईलार्ड—एकऔर बातयहहैजिसका जिक्र मैंनेगौरकरनेकेबिना कियाथा यदिमुझको उसकेतूलको बयान

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

करनेकी इच्छा नथीवहबात गिलासकीतलछटकेविषयमेंहै उस केलिये कारनैलफियरसाहब आपहीवर्णनकरतेहैं किमैंनेथोड़ा शरबतपीकर रखदियाथागवाहोंकी गवाहियांदेखतेहीमालूम होताहै किपांच वा छःबेरविषदेने काउद्योगहुवा और एक दफेकारनैल फियरसाहबको कोईनकोई बातबाधक हुई और थोड़ीसीशरबतपीकरछोड़दिया कारनैलफियरसाहबकाबयानहै किजबकमीशरबतमें विषडालागया इसेथाउसकास्वादबदलगया इसीहेतुसे उन्होंने शर्बतनहीं पियाऔरउनका बयान हैकिसं-खियाऔरहीरेकाचूर्ण शर्बतमेंपड़ाथा औरइनदोनों वस्तुओंमें किसीभांतिका स्वादनहींहै सो कुछसंदेहनहीं है कि अगर यहचीजेंशरबतमें डालीगईहोती तो अवश्यकारनैलफियरसाहब पीजाते और स्वादमें कुछफर्कनहोताऔर घण्टे आधघण्टे के उपरान्त उसकी कैफियत मालूम होती क्योंकि डाक्टरों की भी रायहैकी घण्टे आध घण्टे के उपरान्त विष अपना गुण करजाताहै इसविषयमें शनिवारको इत्तिफाकसे जिक्र नहीं कियाकमीशनके मेम्बरोंको अर्जहै कि जब दामोदरपन्थ के इज़हार आदिपर बातीकर चुकूंगा तो इसविषयमें भी तक़-रीरकरूंगा अबदामोदरपन्थके इजहारसे खण्डनकरना शुरू करताहूं साफज़ाहिरहै कि दामोदरपंथ से हरएक बातका मूलहै और विषआयातो इसीके द्वारा आया यहबात कहीं जाहिरनहींहुईकि किसीऔर मनुष्यने विषमंगानेमें कोशिश कीहो और दूसरेकिसी मनुष्यनेविषदियाकेवल इतनाहीपता मिलताहै कि दामोदरपंथने विषमंगाया इसके विशेष और किसीमनुष्यपर संदेहनहीं इसलिये उचितहै कि इसी मनुष्य के खण्डनसे प्रारम्भकियाजावे॥

माईलार्ड—दामोदरपंथ—नरसू और रावजीकी गवाहीके गुफ्तगूकरनेके पहिले मेरेविचारसे इसबातकाकहना उचित है कियहबातपूछी जायकि पहिलेइनलोगोंकी गवाहीक्यकरों लीगई क्योंकि क़ायदा यहहै कि जिसतरह पहिले गवाहसे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बर्त्तावहोताहै वैसीही गवाही होती है उनकी गवाही ऐसे लोगोंके द्वारालीगई जोआपहीसुकद्दमेको तूलदेनाचाहतेहैं॥

मैं ऐसीबात नहींकहना चाहताकि किसीमनुष्यको मुझसे जररपहुंचे परन्तु लाचारहोकर कईलोगोंका नाम इसमुकद्दमेमेंजरूरीसमझताहूं मिस्टरसूटरसाहब बड़ेलायकअफ्सरहैं और बम्बईमें बड़ेदरजेके ओहदेदार हैं उनको बखूबी मालूम होगाकि पुलिसके और अफ्सरोंमेंसे गजानन्दवतिल—अकबरअली अब्दुलअलीको अपने साथकिसवास्तेलानामुनासिबहुवा और यहबातभी उनको बखूबीमालूम होगी कि बम्बईके बहुत बड़ेअफ्सरने इनलोगोंकी काररवाईपर बहुत बड़ीचश्मनुमाई की थी चाहे वह चश्मनुमाई ठीक थीयागलत परन्तु सूटर साहबको इसविषयमें शंकाकरनी चाहियेथीकि इसमुकद्दमेमें भी वैसीही काररवाई यह लोग नकरें क्या बम्बईमें और कोई अफ्सरपुलिस नथा जोउन्होंने दूसरीजगहसेएकपुलिसके अफ्सरको बुलायाउनकेबुलानेका प्रकटमेंकोईहेतुमालूम नहींहोता सूटरसाहबको इनलोगोंको इतना अधिकारदेना उचितनथा जिसतरहकि इनगवाहोंनेगवाहीदीहैमैं खासकर मेम्बरान् कमीशन का ध्यान इस बातपर दिलाता हूं क्योंकि इसबातपर तमामलोगोंका ध्यानलगेगा इनपुलिसके अफ्सरों को अखतियार था कि जिस मनुष्यको जबतक चाहें हिरासत मेंरक्खें औरमिस्टर सूटरसाहबने जोचाहा उनगवाहोंकेइजहारलिये॥

जिसप्रकार गवाहोंकेइजहारलियेगये हरएकका अलग२ जिक्रकरूंगा और यहभी प्रकट करूंगा किगवाहों पर जुल्म हुआहै और गवाहोंने यह गवाही दीहै॥

यठीकहैकि गवाहलोगशिकंजेमें नहींखेंचेगयेकिन्तुउनको भयदिखाया गयाहै और कईगवाह चेहरेसे भयमान मालूम होतेथे वहलोग जानतेथेकि हमारेधन और प्राणकीकुशल नहींहै और जबतकहमहिरासतमें हैं कोईसूरतहमारे बचाव

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

को नहीं है जब तक कि हम पुलिस को खाहिश बयान न करेंगे हिन्दुस्तानके शहरोंमें ऐसी बात कदाचित् नायज नरक्खीजाती परन्तु इस शहर में जो हिन्दुस्तान से अलग और क़ानून को नहीं जानता है रक्खीगई यहां के लोग बिल्कुल नहीं जानते कि अपनेछूटनेका कौनसा उपायकरें वह अपने तईं बहुतही अधमसमझते हैं और जानतेहैंकि पुलिसको सब प्रकार की सामर्थ्य है और हमपर प्रबल है ॥

पुलिसने अपनी कामियाबीके लियेकोई बातन भुलाई मैंने खूब गौरकरके इस तकरीरको पेश कियाहै मुजको आशाहै किजो कुछमैंने वर्णन कियाहै उसकीबखूबी सिदाकत होगी अब दामोदरपंथ के इज़हारों को खण्डन करता हूं मालूम होता हैकि हरएकबातकामूल इसीमनुष्यसेहै यहशख्सबयान करता है किमुजको गायकवार ने इसमुकद्दमे में मुख्यऐजन्टबनायाथा सोउचितहै किबडीसावधानीके साथइसशख्सकी गवाही मंजूरकी जाय और पूछा जाय कि आया एक शख्स कीगवाही निश्चयमाननेके योग्यहै वानहीं जिसतरह किमैंगुफ्तगू करताहूं उसीतरह औरलोगभी मुजसेबातें करेंमैंनहीं चाहताकि इसमुकद्दमेमेंकोई कठोरवचन मेरीजिह्वा सेनिकले केवलउन्हीशब्दोंको बरताहूं किजो मुनासिबकाना और लिखनेके योग्यहैं जोबातें मेरेमनमें हैंवहीकमीशन केमेम्बरोंकेभीज़हन नशीनहो जावेंतो दृढनिश्चयहैकिगायकवार चैनमेंरहेगाऔर यहसम्भव होगाकि किसी देशके नीतिज्ञ गायकवारकेप्रतिकूलमुकद्दमे कानिर्णय करेंगेगायकवार तोक्याकिसीछोटेआदमीका फैसलाभीऐसी हालतमें प्रतिकूल नहींहोसक्ताजिस तरहकि गवाहीगुजरीहै जोवहतसलीमकीजावे तोअफसोस कामुक़ामहै किवह अपना सिंहासन और राज मुकट अपने हाथसे खोवे मालूम होताहै किजिस दिनगायकवार नजरबन्दकियेगये उसीदिन दामोदरपंथ भी कैद कियागया परन्तु मजिस्ट्रेटकेसम्मुख उसकोनहीं लायेऔरनउन लोगोंसे उसका

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मुकाबला कियागया जो उसपरअपराध धरतेथे उसबातकी बखूबीतहकीकात नहींहुई प्रथमहीसे वहसिपाहियों केपहिरेमें क़ैदकियागया सचहदिन तक वहक़ैद किया गयासचह दिनतक वहक़ैदरहा यदिके।ईमनुष्य एतिराजकरेकि सिपाहियोंकापहिरा होनाकोई खौफकामुकाम नहींहै परन्तु यह बात बिचारनीचाहिये किउसके मनमेंक्या २ सोचहोते होंगे और रोज़बरोज़ उसकी तबीयतकैसी दूसरी तरह परहोती गईहोगी ॥

मैं इसतरह का क़ैदकरना भी एक प्रकार की सख़्ती समझता हूं इस शख़्सने बयान किया कि मैंने यहबयान इसलिये किया कि क़ैदसे छुट्टीपाऊं और जोकुछ उसने बयानकिया उसकी निस्बत सहीहोने का शुबह नहीं है यह बात उसने सच और ठीक वर्णन की है–उसने यह भी बयान किया कि फिरमैं पुलिसकीगार्डके सुपुर्दहुवा उस समय उसको रावजी और नरसूकी गवाहीसे इत्तिला हुई–वहखुदइक़रार करता है जोवह इन्कार भी करता तो यह इन्कार उसका निश्चय माननेके योग्यनथा औरउसको मालूमहुवाथा किगायकवार परकौनसा अपराधहै अर्थात्उसको मालूमहुवाथा कि विष दिये जानेका अपराधहै जिसमें संखिया और हीरेके चूर्णका जिक्रहै सिवाइसके एकशीशीकाभी जिक्रहै यहीशख़्सकहता है किमैंने शीशी दीथी और कहताहै किशीशीके देनेके उपरान्तमालूम हुवा कि शीशीमें क्याहै यह इजहार उसने भले प्रकार जिह्वाग्रकर रक्खेथे इन बातोंपर कमीशनके मेम्बरोंको खूबग़ौर करनाचाहिये इसगवाहकी हालतयहहै किजोकोई मनुष्यकिसीसे कहेकि अगरतुम गायकवारको क़ैदकरादोतो तुमबरी होजाओ और अगर गायकवार बरी होजावेंगे तो तुमक़ैद होजाओगे–पुलिसने शायदयहभी सिखादिया होगा कि क़ैदहोना और छूटजाना तुम्हारेही आधीनहै यदिगाय-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कवारकैद होगयेतो तुम छूट जाओगे और थोड़ी जागीरभी तुमको मिलेगी ईश्वर जाने ऐसी झूठी सौगन्दसे आगेको क्या परिणामहो जोऐसे झूठोंको दण्ड नहीं दियाजाताहै तो मेरे विचारसे किसी अपराधीको दण्ड नहीं होतामैं नहींजानता किदण्डक्या बस्तुहै जोदरोगहल्फी और मारडालने के उद्योग मेंदियाजाताहै मैनेकभी किसीमुक़द्दमेमें नहींदेखा कि ऐसी साफ २ शहादत किसीमनुष्यने दीहो और इसशख्सको अपने झूठबोलनेका कुछभी बिचार नहुवा इससंसारमें अतिविचित्र बातेंहैं उनमेंसे एकइस मनुष्य कीभी गवाहीहै सब गवाहोंमें यहबड़ा चतुरहैपरन्तु जबवहगवाही देताथा और गायकवार कासाम्हना करायाथातो उसकेमुखसे लज्जा और खेदके चिह्न प्रतीतहोतेथे और साफ मालूम होताथा कि यहशख्स दरोग हल्फीकररहाहै और उसकीझूठी सौगन्दखानाभी मैंसाबित करदूंगाइसमनुष्यनेकेवल अपनीहीगवाही नहींबनाईहै किन्तु औरोंकी गवाहीभीवड़ीहै विशेषकर हेमचन्दकी—इसमुक़द्दमे मेंप्रगटकरदूंगा कि पुलिसने बड़ीनिर्भयताकेसाथइस मुक़द्दमे मेंदखलकियाहैमुझकोहेमचन्दकीगवाहीमेंखासशुब्हाकरनाहै और विशेषउससमेकेपरजबकिउसकेइजहारमेंप्रश्नकियेगयेतो उसकेबयानमेंकितनाअन्तरहोगयामैं जाहिरकरदूंगाकि इस शख्सके इजहारमें पुलिसने जियादहकारिस्तानीकीहै जोकि दामोदरपन्थ श्रीमान्मल्हाररावकाप्राईवेट सीक्रेटरीथा इस लिये वहहरप्रकारसे विश्वसितहोगा जोकुछ हाल वहबया-न करताहै वहबिल्कुल गलतहै वहकहताहै कि हिसाबगलत हैं और उसकोबड़ा भयथाकि करनैलफियरसाहब हिसाबकी कितावें मंगवाकर नदेखें इसलिये जगह२पर स्याहीडलवादी अगर गायकवारपर अपराधठहरायाजाता तोउसमनुष्यको अवश्यदण्डहोगा और उसनेहिसाबोंको मशकूक किये और इसबातको उसकेकोई अदालततसलीमनकरती किगायकवार के फायदेकेलिये मैंने ऐसा कियाहै क्योंकि यहबात बुद्धि में

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

नहींआतीकि पहिलेहिसाब लिखाजाय और फिरवहमशकूक कियाजावे यदि उसपर लेलेनेका अपराध कायम कियाजाता तो उसको कोई उज्र नहीं होसक्ता था उसके पास सिवाय जुबानी उज्रकेकिमैंने गायकवारकी आज्ञासेकिताबोंको मशकूक किया और कोई सुबूत नहीं है इसलिये उसका बयान निश्चय माननेके योग्य नहीं है—यदि कोई गायकवारके हाथका लिखा हुवा परचा वह पेशकरता तो निस्सन्देह उसके बयानका विश्वास होता कदाचित् निश्चय नहीं कि गायकवारके लिखेहुये परचेकेबिना वहकिताबोंको गलत करसक्ता इससे मालूम होता है कि दामोदरपन्थ ने खासअपने लाभ के लिये किताबों को गलतकिया गायकवार को कोईआज्ञा नथी यहशख्स कहताहैकि मैंआठबजे भोर से रातके दसबजे तक गायकवारके महलों में रहताथा और केवल भोजन के लिये अपने घर को आताथा यदि गायकवार इसमनुष्य को अपनाशरीक करना चाहते तो हरवक्त उससे सलाह करते परन्तु मालूम होता है कि इससे कभी किसी बात का मशवरह नहीं कियागया जोयह बातठीकहैकि गायकवार अपने नौकरोंसे सलाह कियाकरते थे और जो अपराध किउनपर लगाहै अगर असलकरना चाहतेतो इसमुआमिले को अपने नौकरों के सुपुर्द करदेते और आप किसीसे वार्त्ता न करते यह जरूरनथाकिवह प्रतिमनुष्यसेअपने कार्य्यमें गुफ्तगूकरते ताकि उनमेंसे कोईनौकर उनसे फिर जातातो इनके बरखिलाफगवाही देता मेरेविचारसे गायकवारने कदाचित् ऐसा नहींकिया और दामोदरपंथकि उनका प्राईवेटसीक्रेटरी और उसके वर्णन करनेके अनुसार गायकवार का वह मशवरह कारथाउचितथा कि यहकाम इसीमनुष्यके सुपुर्दकरें॥

इस मुक़द्दमे में अजीबबात यह है कि गायकवार चाहते थे जितने जियादह आदमियोंसे इसबुरे सम्मत में वार्त्ताकरें उतनाही बेहतरहै किन्तु जाहिरकियागयाहैकि गायकवार

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ने कैसे २ लोगोंसे मुलाक़ातकी उनकमीशनके मेम्बरोंकामैं ख्याल रुजूकरताहूं कि जो हिन्दुस्तानीहैं और ऐसे सुआम लोंकोखूबसमझतेहैं कि उनकीराय दरबारैमुलाकात गायकवारके और लोगोंकेसाथ क्याहै पूर्वोक्त मेम्बरोंसे इसबातकी प्रार्थनाकरताहूं कि हिंदुस्तानकी व्यवस्थाजानकारीके कारण एकमुन्सिफानहरायदें यदिइन्साफके साथरायदेंगे तो गायकवारको बहुतबड़ी सहायतामिलेगी अगरकमीशनके मेम्बरकिताबके ११२ पृष्ठको देखेंगेतो अजीबकैफियतमालूमहोगीअर्थात् मैं गायकवारकी आज्ञाफौजदारकेनाम संखियेके वास्तेलिखी है दामोदरपंथका वर्णनहै कि गायकवारने आज्ञादीथी कि खारिशकेलिये संखियामंगाईजावे सोउसनेफौजदारको चिट्ठी लिखीपरन्तु संखिया नमिली यदि कमीशनके मेम्बर थोड़ासा गौरकरेंगे तो यहबात सबझूठमालूम होगी अगर वहचाहते तोशीघ्रही संखियाआसक्तीथी जबफौजदारकी गवाहीअदालत में लीगई तो उसनेवर्णन कियाकि दामोदरपंथकी चिट्ठीसब तरहसे ठीकहै मालूम नहींकि क्यों संखिया नहींमिली सो दामोदरपंथका यह बयानसाफ गलतठहरताहै और दूसरी बेर जबचिट्ठीभेजीगई तो दामोदरपंथका बयानहैकि गायकवारने दस्तखतकिये परन्तु कदाचित् बिचारमें नहीं आताकि उन्होंनेदस्तखत कियेहों जब लोगोंने पूछा कि संखिया किस लिये मंगाई जातीहै तो दामोदरपंथका बयानहै कि मैंने कहदियाकि रजीडण्ट साहबको विषदेनेकेलिये मंगाई जाती है—मैं दामोदरपंथके इजहारकोविचारताहूं कि पुलिस का सिखायाहुवाहै उनलोगोंने उससेकहदिया होगाकि अगर तुम गायकवारपर अपराध साबितकर दोगे तो तुम्हारे लिये अच्छाहोगा इसलिये अपनेफायदेकेलिये उसनेयहसब गवाही दीहै अगर वास्तवमें मंगाईगई तो उसने अपने किसीखास कामके लिये मंगाई होगी दामोदरपंथकी हालत इसवक्त देखना चाहिये क्योंकि कर्नैलफियरसाहब सदा तहक़ीक़ात

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

करतेथे कि गायकवारके महलोंमें क्या काररवाई होतीहै वह जानताथा कि अगरकरनैल फियरसाहब मेरीकिताबें मंगा-करदेखेंगे तो मुझपर बड़ी खराबी पड़ेगी यहशख्स कुछबद-नामभीथा गायकवार उसकोरेजीडन्सीमेंभी नहीं लेजाते थे उसको सदाफिकर रहाकरती थी पस आगेको इस बातपर ध्यानकरनामुनासिब होगा कि आया दामोदरपंथका बयान बनायाहुवा है वा उसनेहो करनैलफियर साहब को मारडा-लनाचाहा था कईबातें रूबरूनहींआई उनकी निस्बतकमी-शनका खयाल रुजूकरूंगा कई मुआमिलेइस प्रकारके हैं कि उन पर बहुतहो गौर कमीशन को करना होगा और अगर बखूबी गौर किया जायगा तो कमीशन को भी संदेह होगा और जो मुख्यहालहै वह प्रकट होजावेगा यदि दा-मोदरपंथ ने संखिया मंगाई थी तो अपने किसी काम केलिये मंगाई होगी और अगर फौजदार से संखिया नहीं मंगाई तो किसीवजहसे उसने आज्ञालिखाली होगी जो गायकवार आपही संखिया मंगाना चाहते तो अवश्यही अपने आज्ञा पत्रपर दस्तखतकरते और आश्चर्य्यहै कि गायकवारको कहीं संखियानहींमिलतीथी जबदामोदरपंथने गायकवारसे कहा कि संखियानहीं मिलतीहैतो गायकवारजरूरहीताकीदकर के मंगाते जो गायकवार आप संखियामंगाते तो लिखीहुई आज्ञाकोकभीदफ्तरमें नरहनेदेते क्योंकिउनकोखयालहोता कि जबकभी इसमुकद्दमेकी तहकीकातहोगी तो यहकागज गवाहीकी तौरपरहोजावेगा उनकोइसबातके कहनेकी क्या जरूरतथी कि जोसंखिया नहींमिलतीहै तो नूरुद्दीन बोहरे के पाससे मंगलो—नूरुद्दीनके बयानसेपुलिसकीएकऔर कार-रवाई प्रकटहोतीहै क्योंकि नूरुद्दीनने किसीसमयमें गायक-वारपर नालिशकीथी अर्थात् गायकवारनेकिसीहेतुके बिना उसकोबेंतोंसे पिटवादिया और पांचहजाररुपये जुर्म्माने की लिया इससे प्रकट है कियहशख्स गायकवारके प्राणकावैरी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

होगा दामोदरपंथने अपने वचनकीसत्यताके लियेइस मनुष्य को खूब चुनकर पेशकियाथा क्योंकि उसकोनिश्चय होगाकि खुशीसे बयानकरे किमैंने संखिया दोहैपरन्तु विदितहोता है नूरुद्दीन बौहरासुन्सिफमिजाज आदमीहैउसनेऐसाबयाननहीं कियाकि इसलियेकई महीनेसेयहशख्सकैदहै अकबरअलीका बयानहै किकिसीबातके जाहिरनकरनेसेयहशख्सक़ैदहै पुलिस केलोगोंसेजहांतक होसकाइसशख्सपर सख़्तीकीथाहै नूरुद्दीन गायकवारकाशत्रुक्योंनहोपरन्तुइसमुक़द्दमेमेंउसनेसच२बयान करदिया औरउसनेहर प्रकारकी सख़्तीउठाई परन्तुएक निदोंष आदमीको मरवाना नहीं कराय अद्भुत यहहै किसूटर साहबके सन्मुख प्रथममेंकोई इजहारनहीं लिखागया जबपुलिस नेगवाहोंकोखूबसिखादिया तबसूटरसाहबके सामनेगवाहीली गईकोई गवाही ऐसीनहीं गुजरीकि दामोदरपंथ ने संखिया मंगाई हो दामोदरपंथ का बयान है किमैंने संखियेको मंगवाया वहनूरुद्दीनसे संखिया कामंगवाना कहताहै परन्तुमेरे विचारसे उसका यहबयान बिल्कुल झूठहै यदिवास्तवमें उसने संखिया मंगाईथी तोकिसीऔर शख्ससे मंगाई होगी न नूरुद्दीनसे परन्तुदामोदरपंथउसीके पाससेसंखिये कामंगवाना जाहिरनहीं करतायही संखिया जिसके लिये इतनी गुफ्तगू हुईबयान हैकि करनैल फियर साहबकी शरबतमें डाली गई औरकई बौहरोंसे संखिये केमोल लेनेकाबयानहै औरउनकी किताबें पुलिसके पासवर्त्तमानहैं जिस प्रकार कीकाररवाई करनीचाहियेथीवहकरसक्ते थे इसकेउपरान्त हकीम कीदवा काइजहारहै दामोदरपंथका बयानहै किजिससमयमें रेजीडएटसाहबके मस्तकमें फोड़ाथा तो बड़े हकीमके छोटे भाई एकशीशीमेंदवा बनाकर लायेथे परन्तुबहुत मनुष्योंके होनेसे उन्होंनेयह शीशीनदी वाकुछ इनआमकी इच्छा करते होंगे दामोदरपंथ कहताहै किइसकेपहिलेमहाराजासाहबनेमुझसे कहाथाकि कुछमक्खियांऐसी इकट्ठीकरके जिनसे फफोलेपड़

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जातेहैं बड़े हकीम केपास फौजदार केद्वारा भेजदोमैंने नरायणराव कमकरसेकहा कि अमुक प्रकार की मक्खियां इकट्ठी करके हकीम साहबके पासलेजाओ॥

दूसरेदिनमहाराजासाहबने मेरेसाम्हनेहरबियासेकहाकि हकीमसाहबको दवाबनानेके लिये कालेसापोंकीजरूरतहै सो हरबियासपेरोंको बुलालाया औरकुछसांप और मक्खियां हकीमसाहबकेपास पसन्दकरनेके लिये भेजीगईं तब हकीमसाहबने सर्प और मक्खियों को पसन्दकरके रखलिया तब महाराजासाहबने कहाकि हकीमसाहब कोकालेघोड़ेके मूत्रकी आवश्यकता है सो बापाजी कोजो मुख्य घोड़ोंके कामदार हैं आज्ञादीकि कालेघोड़ेका पेशाबहकीम साहबकेपासभिजवादो यहबयान सुनकर बड़ाआश्चर्य होता है इसदेशके मनुष्यों को मैंनहीं जानता हूं यह बयान कहानीकी तौरपर मालूम होताहै मैंइसविषयमें कोईराय न दूंगा जोलोग यहांके रहनेवालेहैं उनकीराय इसविषय में बहुतअच्छीहोगी मालूम होताहै कि ऐडवकेट जनरल जो मेरेयोग्य मित्र हैं उनकोइसप्रकारके इजहारसे कुछलज्जा प्राप्त हुई होगी क्योंकि उन्होंने यहसबबातें दामोदरपन्थसे सुनीं और उन्होंने किसी और प्रकारसे सिद्धाकत नहीं कराई मैंजानताथा कि वह सपेरोंको बुलाकर पूछेंगेकि किसप्रकारसेसांपोंकाविष निकालाजाताहै और फफोलेवाली मक्खियोंका क्योंकर बर्त्ताव कियाजाता है और उनलोगोंकोभी बुलावेंगे जो इन वस्तुओंके संग्रह करने और पहुंचानेके लिये नियतहुयेथे परन्तु साहबने इन बुद्धिमानोंको अदालतमें नहींबुलाया गवाहीको रूसेमालूमहुवा कि किसी सफेद वस्तुमें इनसबवस्तुओं का अरक निकाल कर मिलाया गयाऔर दामोदरपन्थके वर्णनके अनुकूलउसकाइस प्रकारसे बर्त्ताव कियागया॥

श्रीमान्महाराजा साहबनेनानाकंवलकरसे कहाकिथोड़ी दवाईथोड़ीकीलाओ सो दोतीन दिनके उपरान्त गजाबापी-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

शीशेको लेकर जिसको हकीमसाहबने भेजाथा गायकवारका भेजाहुवा आया मैंने उसमेंसे थोड़ीदवा निकालकर और दूसरी एक शीशीमें करके सालिमको दी और कहदिया कि कारनैल फियरसाहबके देनेकेवास्ते यह जहरहै इसमुकद्दमेमें यहहाल अजीबहै अबमैंकुल गुफ्तगू प्रथमसे इसमुआमिलेमें करताहूं॥

दामोदरपंथने वर्णनकिया है कि जो शीशीमेरे पास आईथी वहएक उंगलीके बराबर लंबीथी और दूसरीशीशीमें जो उन्होंने दवादी वह आधी उंगलीके बराबरथी और वह छोटी शीशी अतरकीथी हालांकि अतरकी शीशीऐसीहोतीहै कि अतरकम आता है और देखनेमेंबड़ी होतीहै विचारना चाहिये कि जबदामोदरपंथने उसमें दवाडाली होगी तो बहुत थोड़ीदवा आई होगी और वह शीशी सालिमको रावजीके पास पहुंचानेको देदी और जोकैफियत इसीशीशीकी दवाकी हुई वहसबको मालूम है॥

बयानहैकि हीरेका चूर्णविषके तौरपरबर्त्तायागया मैंनेबड़े२ पुस्तकों में देखापरन्तु मुझको कहींसे सूचित नहुवा कि हीराभीएकविषहै शायदयहांके लोगोंके इसको विषके होनेपर निश्चयहोगा औरबयानहै कि हीरे इसीवास्ते लियेगये थे कि कारनैल फियरसाहबकोशरबतमेंकूट२ करडाले जावें परन्तु जौहरी कहते हैं कि हमने जन्मभरमें कुटाहुवा हीराकभीनहीं देखा और इसी प्रकार दोतीनगवाह औरभी वर्णनकरतेहैं जाहिरहै कि ऐसी बहुमूल्यवस्तु ऐसेकामके वास्ते क्योंकूटीजाती सिवाय डाक्टरसेवरिशसाहब कीकिताबके और कहीं हीरेकाविषहोना नहीं लिखा उनका यहबयानहै कि हिन्दुस्तानवाले कहतेहैं कि हीरा खानेसे आदमीमरजाताहै मेरे विचारसे हिन्दुस्तानियोंको फफोलेवालीमक्खियों और सांपोंके अरकका यहखयालहै मालूमहुवा कि दामोदरपंथनेकभी किसीको हीरेका चूर्णनहीं दिया उसके निस्बतदामोदरपंथका यहबयानहै कि यह हीरे नानाजीवतिलके द्वारामंगाये गये मैंनेपुड़ियाको नहीं खोला और खोलनेबिना वह कहताहै कि मुझसे नानाजीवतिल नेकहाथा कि इसमें तीनमाशे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पिसाहुवा हीराहै श्रीर नौमाशेहीरे हैं फिरयह बयानहै कि मैंने यहहीरे यशवन्तराव को देदिये श्रीर उससेकह दिया कि करनैलफियरसाहबकी शर्वत में डाल देना परन्तुउसका यहभी बयानहै कि मैंनेउससमय कहदियाथा कि यहबातकुछ श्रच्छीनहीं है वाहक्या दर्दमन्दी है कि विषदेना श्रीर यहभी कहना कि यहबात श्रच्छीनहीं है परन्तु इसजगहपर यशवन्त राव श्रीर दामोदरपंथकी गवाही प्रतिकूल है जिससेमालूम होता है कि यशवन्तरावने कोईपुड़िया नहीं पाई यशवन्तराव वर्णन करता है कि मुझको एक पाकिट मिली थी श्रीर कहाथा कि इसके तीनभाग किये जांय—श्रब मैं इसविषयमें तक़रीर करताहूं कि गायकवारपर जो संखियेके देनेकादोष लगा है वहबिल्कुलगलतहै मैंकमीशनके साहिबोंसे पूछताहूं किश्रगर गायकवारको हीरोंकेकटवानेकी इच्छाहोतीतो इतने मनुष्यों से बार्त्ताकरनेकी क्याजरूरतथी श्रीर गायकवारकोउसमनुष्य से कहने की क्या हाजतथी जिसने हीरे मोललिये कि तुम श्रपनी किताबको मशकूककर दो श्रीर ऐसे शककेडालने की कोईजरूरत न थी क्योंकि उससमय गायकवारकेपास छोटे २ हीरे मौजूदथेजोतलवारकीमूठश्रीरम्यानपरजड़ेजातेथेउनको कटवालेते—जन्मभर वह हीरे मोल लियाकिये श्रीर हजारों रुपयेका हीराउनकेपासमौजूदहोगा इतनातूलदेनेसे उनको क्याप्रयोजन था श्रीर संखियेके मंगानेमें जो इतना तूलहुवा यहभी बनायाहुवाहै सैकड़ों झूठमिलाकर एकझूठबातकोसा-बितकरना चाहाहरचन्द यह सबक़ाररवाई हुईपरन्तु कोई गवाहउसकी सिदाकतनहीं करता दामोदरपंथ बड़ाचतुरहै उसनेखूबसोचकर बयानकिया कि ऐसीगुफ्तगू दूसरे मनुष्यके श्रागेक्योंकरते इससबकाररवाई का बयानकेवलदामोदरपंथ केइज़हारसेहै जौहरियोंकी निस्बत बयानहुवाहैकि उनसेहीरे ले लियेगये श्रीर उनको बिदाकरदिया यहबात जाहिरनहीं की कि जौहरियों से श्रीर गायकवार से कुछ वार्त्ता हुई हो

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

न जौहरियोंके इज़हारसे मालूमहुवा किगायकवारसे और उनसे कुछबातेंहुईंथी किसीभांतिसे साबित नहीं होताकिगा-यकवारइसलेने देनेमें संयुक्तथे ॥

माईलार्ड—दामोदरपंथके इज़हारके विषयमें मैंने अपना बयानखत्म किया अब दामोदरपंथ के उस वर्णन के विषयमें गुफ्तगू करताहूं जोवह कहताहै कि करनैलफियर साहबके विष दिये जानेके विषयमें मुझसे और गायकवार से वार्त्ता हुई उसका यह बयान बिल्कुल गलत है और किसीतरह से उसकी तसदीक नहीं होती और जब दामोदर पंथ के इस बयानकी तसदीक नहींहुई तो गायकवार साफइन्कार कर सक्तेहैंकि कभीऐसीबातें मुझसेनहींहुईं मेम्बरान् कमीशनका खयालइसबातपर रुजूकरताहूं कि दामोदरपंथ की गवाही प्रथमसे अन्त पर्य्यन्त कैसीहैकि उसको गायकवारकी कुछ भी परवानहींहै परन्तु वहहरप्रकारसे अपनी बरीयतकरताहै और गायकवारपर अपराध साबित करताहै परन्तु मेरे विचार से उसके इज़हार उसी के बयानसे गलत ठहरते हैं हरएक काग़ज़गायकवारकाजब्त करलियागयादामोदरपंथके इज़-हारसे हीसाबितहोताहैकि कोईकाग़ज़फाड़ा नहींगयाऔर कोईकाग़ज़ इसप्रकारका नहींमिला जिससेखुद गायकवार माखूज़हों परन्तु ऐसेकाग़ज़निस्संदेहमिलेहैं जिससेदामोदर पंथ आपही माखूज़होसक्ता है क्योंकि वह काग़ज उसी के लिखेहुयेहैं और गायकवार केहाथके नहींहैं जो गायकवार इनबातोंमें संयुक्तहोते तो अवश्यही उनकेहाथका कोईका-गज़ निकलताकिन्तु प्रकटहै किगायकवार इनबातोंको जानते भीनथे और दामोदरपंथ कीवाकिफकारी बखूबीसाबित हुई किप्रथमसेअन्ततक साफसाबितहैकियहमुकद्दमा गायकवार परखड़ा कियागयाहै आप साहबों को उचितहै कि इसबात परखूबगौरकरें जबइस मुकद्दमेके इज़हारलिये जाते थे मेरे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बिचार झूठहोना उसी समयसे सावितथा जहां २ स्याही डली गई है वहां २ दामोदरपंथका जिक्रथा ॥

दामोदरपंथ ने वर्णन किया है कि यह स्याही मैंने अपने हाथसे नहीं डाली किन्तुजो लोगकारकुनहैं उनसे कहदिया था जिसकारकुनका दामोदरपंथनामलेतेहैं वहइन्कारकरता है इस कारकुनका नामबलवन्तराव है उसने सूटरसाहबके सम्मुखइस बातका इकरार किया था (मिस्टरब्रैन्सन साहबने बलवन्तरावके इज़हार सरजन्टबेलनटायनसाहबको दिखाये) सरजन्टबेलनटायन साहबने कहा कि मुझसे भूलहुई उसने सूटरसाहब के रूबरूभी इकरार नहीं कियाथा किन्तु उसने बिल्कुलइन्कार कियाकिमैंनेकभी हिसाबपरस्याही नहींडाली और नमैं जानताहूंकि किसमनुष्यनेकिताबोंकोमशकूककिया ॥

माईलार्ड—मुझको यहभी निश्चयनहींहै कि दामोदरपंथ ने स्याहीडालीहो इससूरतसे दामोदरपंथ ने किसीसे स्याही डालनेको कहाहोगा और इस प्रयोजनसे कहाहोगा कि जब स्याही डाली जावेगी तो हरशख्स का ध्यान इन्हीं धब्बोंपर जावेगा जो वास्तव में किसी रक़मके बदलनेकी इच्छा होती तो मैंने सुना है हिन्दुस्तानी लोगबड़े दस्तकार होतेहैं इस तरहरक़मको बदलाते हैं कि बनावटका संदेहभी नहींहोता सो स्याहीके डालनेकी क्याज़रूरतथी परन्तुइसबातपर मैंफिर तक़रीर करताहूंकि अगर दामोदरपंथको इसबातकेछिपाने की इच्छाथीतो किताबें क्योंनजलादीं और जोउसको रक़मों के बदलने का सावकाश नथा तो जलानेके लिये तो वक़्तथा वहसबबनावटहै एक निर्बुद्धिमनुष्य भी मालूमकरसक्ता हैकि अदालत के धोकादेनेके लियेयहसबबातेंबनाईगईहैंदामोदरपंथकोखयालहोगाकि इसमुकद्दमे कीतहक़ीक़ात ऐसीअदालत केरूबरू नहोगीजैसीकी अबहुई यहशख्सबहुतही सूधाहै और अपनेइज़हारोंको अपनेहीबयानसे खण्डनकरताहैकिसी भांतिसे उसके इज़हार निश्चय माननेके योग्य नहीं हैं ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

माईलार्ड–दामोदरपंथ पकड़े जानेके पहिले खुब जानता था कि रावजी और नरसूने क्या इज़हार दिये हैं और इसबात कोमानता है कि मैंनेसुना है कि करनैलफियर साहबको जोविष दियागया उसमें हीरे और संखियेका चूर्णथा सो अपना इज़हार खूबघड़सका था जिसमें हीरे और संखियेका मुख्यकरके वर्णनहोता और दामोदरपंथने घीघीकाभी जिक्र सुनाहोगा उसकेलिये भी एकबातबनाली मैंनेदामोदरपंथके इज़हारकी सम्पूर्णकैफियत कमीशनके सम्मुख बयानकी मुझको दृढ़ आशा है कि कमीशनके मेम्बर नीतिपूर्व्वक मुकद्दमेका निर्णय करेंगे जितनामुझको स्मर्णथा मैंनेठीक२वर्णनकिया और निश्चय है कि साहबऐडवकेट जनरल जोबड़े योग्यऔरबड़े बुद्धिमान हैं अपनी सोचमें न्यायकोन छोड़ेंगे क्योंकि वह इस प्रयोजन से यहां नहीं आये हैं कि एकनिर्दोष मनुष्यकोसिंहासनसे उतारें उनसे जियादह और किसीमनुष्यसे मुझेआशा नहीं है कि वहअपनी सोचमें इन्साफ जाहिरकरें और निश्चय है कि वहअपनीइससोच में किसीकापक्ष न करेंगे न केवल हिन्दुस्तानी किन्तु यूरूपके वासीभी उनकीइससोचकेमुन्तजिररहेंगे॥

माईलार्ड अबफतहचन्द हेमचन्दकेइजहारोंकेविषयमेंवार्त्ता करताहूं कमीशन कोस्मर्णहोगा किजबयह मनुष्यअदालतमें आयाथा उसकेमुखसेकुछ भयप्रतीत होताथामैंनेअपनीसम्पूर्णआयु मेंऐसा डरपोक गवाह नहींदेखाथा इससेप्रथमउसने पुलिसके सम्मुखअपने इजहारदियेथे अब उसने बयान किया कि सूटरसाहबके रूबरू जोमैंने इजहारदिये वहगलतथेऔर यहभी कहाकि मैंनेभय खाकर ऐसे इजहार दियेथेयहमनुष्य बहुतदिनों तकपुलिसकी हिरासतमें रहाजब उस पर बहुत सख्तीकीगई औरवह काबूमेंआगया तबउसकेइजहारलियेगये उसनेवर्णन कियाकि मैंनेएक वरक़फाड़डालाथा औरपुलिस केकहनेसे नईरक्ममें उसपर लिखदीथीं उसनेयह भीकहाकि जबसूटर साहब केपासअपनेइजहार कोतसदीक करनेके वास्ते

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जाताथातोपुलिसकेलोगोंने मुझसेकहदियाथाजो तुमदस्तखत नकरोगेतो जन्मबन्धि में रहोगेसोऐसीधमकियोंसे उसने सूटर साहब केरूबरू गलत बयानकिया॥

सरकार कीओर से यहगवाह इस प्रयोजन सेपेश किया गया ताकि साबित करेकि नानाजीवतिलने हीरे मोललिये और उनका मोल ३०००) रु० दिये यहरुपया बचतकीमदसे दियागया इसरुपये केलिये दामोदरपंथ नेलिखाथा कि यह रुपयाब्रह्मभोजकेलियेदिलायाथा एक ब्राह्मणइसीलिये बुलाया गयाथा किदामोदरपंथने यहरकमगलत लिखीहै यह रुपया ब्रह्मभोजके लिये नहीं दियागया किन्तु इस रुपयेके हीरेमोल लियेगये औरऐडवकेट जनरल साहबने इसविषय की सत्यता प्रतीत करनेके लिये किहीरे मोललिये गयेशिवचन्द औरखुशहालचन्दको बुलायाथा हेमचन्द फतहचन्द नेजो सूटरसाहबके रूबरू वर्णन कियाथा उसको कमीशन केमेम्बर सुनें मैंपढ़ता हूं दसहरेके दोतीनदिनके अनन्तर नानाजीवतिलने जिनको जवाहरखाने काचार्जहैमुझको औरऔर जौहरियोंके हीरेकी कनी लानेकेलिये आज्ञादी सोहम उसी दिन हीरे कीकनीलेगये औरनानाजीवतिल नेउनको देखकरअपनेपास रख लियादूसरे दिन क़ीमतके जियादहहोनेसे वह सब कनी लौटादीगई दो दिनके उपरान्त नानाजीवतिलने आज्ञा दी कि वहीकनी जोलौटादीगई फिरलेआओ इसलिये उसको मैं फिरलेगया फिरउसको तौलकर और मोलठहरा कररखली गई उसके दोदिनपीछे नानाजीवतिलनेयह आज्ञादीकिथोड़ी कनी हीरेकी और चाहिये सोमैं उनकेपास लेगया नानाजी जावाहरखानेमें नमिले परविनायकरावको जोनानाजीके साले हैं वहकनी देदी उन्होंनेतौलकर उसकामोलठहराया और मुझको अपने साथ दामोदरपंथके पासलेगये दामोदरपंथने कहाकि क़ीमत जियादाहै अगरजरूरतहोगीतो रखलीजायगी इसमरतबे हीरोंकीदोपुड़ियांथी दोतीनदिनके उपरान्त

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

माईलार्ड–दामोदरपंथ पकड़े जानेके पहिले खूब जानता था कि रावजी और नरसूने क्या इज़हार दिये हैं और इसबात कोमानता हैकि मैंनेसुनाहैकि करनैलफियर साहबको जोविष दियागया उसमेंहीरे और संखियेका चूर्ण था सोअपनाइज़हारखूबघड़सक्ता था जिसमें हीरे और संखियेका मुख्यकरके वर्णनहोताऔर दामोदरपंथने शीशीकाभी जिक्र सुनाहोगा उसकेलिये भी एकबातबनाली मैंनेदामोदरपंथके इज़हारकी सम्पूर्णकैफियत कमीशनके सन्मुख बयानकी मुझकोदृढ़ आशा हैकि कमीशनके मेम्बर नीतिपूर्व्वक मुकद्दमेका निर्णय करेंगे जितनामुझकोस्मर्णथा मैंनेठीक२वर्णनकिया औरनिश्चय हैकि साहबएडवकेट जनरल जोबड़ेयोग्यऔरबड़े बुद्धिमानहैं अपनी सोचमें न्यायकोन छोड़ेंगे क्योंकि वहइस प्रयोजन से यहां नहींआयेहैं किएकनिर्दोष मनुष्यकोसिंहासनसे उतारेंउनसे जियादह औरकिसीमनुष्यसे मुझेआशानहीं हैकि वहअपनी सोचमें इन्साफ जाहिरकरें औरनिश्चयहैकिवहअपनीइस्सोच में किसीकापक्ष न करेंगे न केवल हिन्दुस्तानी किन्तु यूरुपके वासिभी उनकीइस्सोचकेमुन्तजिररहेंगे॥

माईलार्डअबफतहचन्द हेमचन्दकेइजहारोंकेविषयमेंवार्त्ता करताहूं कमीशन कोस्मर्णहोगा किजबयह मनुष्यअदालतमें आयाथा उसकेमुखसेकुछ भयप्रतीत होताथामैंनेअपनीसम्पूर्णआयु मेंऐसा डरपोक गवाह नहींदेखाथा इससेप्रथमउसने पुलिसके सन्मुखअपने इजहारदियेथे अब उसने बयान किया कि सूटरसाहबके रूबरू जोमैंने इजहारदिये वहगलतथेऔर यहभी कहाकि मैंनेभय खाकर ऐसे इजहार दियेथेयहमनुष्य बहुतदिनों तकपुलिसकी हिरासतमें रहाजब उस पर बहुत सख़्तीकीगई औरवह काबूमेंआगया तबउसकेइज़हारलियेगये उसनेवर्णन कियाकि मैंनेएक वरक़फाड़डालाथा औरपुलिस केकहनेसे नईरक़में उसपर लिखदींथीं उसनेयह भीकहाकि जबसूटर साहब केपासअपनेइजहार कोतसदीक करनेके वास्ते

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जाता या तो पुलिस के लोगों ने मुझसे कह दिया था जो तुम दस्तखत
न करोगे तो जन्मबन्धि में रहोगे सो ऐसी धमकियों से उसने सूटर
साहब के रूबरू गलत बयान किया ॥

सरकार की ओर से यह गवाह इस प्रयोजन से पेश किया
गया ताकि साबित करे कि नानाजीवतिल ने हीरे मोल लिये
और उनका मोल ३०००) रु० दिये यह रुपया बचत की मद से
दिया गया इस रुपये के लिये दामोदर पंथ ने लिखा था कि यह
रुपया ब्रह्मभोज के लिये दिलाया था एक ब्राह्मण इसी लिये बुलाया
गया था कि दामोदर पंथ ने यह रकम गलत लिखी है यह रुपया
ब्रह्मभोज के लिये नहीं दिया गया किन्तु इस रुपये के हीरे मोल
लिये गये और ऐडवकेट जनरल साहब ने इस विषय की सत्यता
प्रतीत करने के लिये कि हीरे मोल लिये गये शिवचन्द और खु-
शहालचन्द को बुलाया था हेमचन्द फतहचन्द ने जो सूटर सा-
हब के रूबरू वर्णन किया था उसको कमीशन के मेम्बर सुनें
मैं पढ़ता हूं दसहरे के दो तीन दिन के अनन्तर नानाजीवतिल ने
जिनको जवाहरखाने का चार्ज है मुझको और और जौहरियों को
हीरे की कनी लाने के लिये आज्ञा दी सो हम उसी दिन हीरे
की कनी ले गये और नानाजीवतिल ने उनको देखकर अपने पास
रख लिया दूसरे दिन क़ीमत के ज़ियादह होने से वह सब कनी
लौटा दी गई दो दिन के उपरान्त नानाजीवतिल ने आज्ञा दी
कि वही कनी जो लौटा दी गई फिर ले आओ इसलिये उसको मैं
फिर ले गया फिर उसको तौलकर और मोल ठहरा कर रख ली
गई उसके दो दिन पीछे नानाजीवतिल ने यह आज्ञा दी कि थोड़ी
कनी हीरे की और चाहिये सो मैं उनके पास ले गया नानाजी
जवाहरखाने में न मिले पर विनायकराव को जो नानाजी के साले
हैं वह कनी दे दी उन्होंने तौलकर उसका मोल ठहराया और
मुझको अपने साथ दामोदर पंथ के पास ले गये दामोदर पंथ ने
कहा कि क़ीमत ज़ियादा है अगर जरूरत होगी तो रख ली जा-
यगी इस प्रकार से हीरों की दो पुड़ियां थी दो तीन दिन के उपरान्त

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

एकपुड़ियावापिसमिली और रखलीगई उससमय उसनेकहा था कि एकपुड़िया रखलीगई और एक वापिस मिलीपरन्तु अब कहताहै कि दोनोंपुड़ियां वापिसमिलीं मालूमनहींकि पहिलाबयानठीकहै वा दूसराबयान इसकेसिवाय एकगवाहने वर्णनकियाहै कि करनैलफियरसाहबके विषदेनेसे दोतीनदिन पीछेनानाजीवतिलने मुझसेपूछाकि तुमने इनहीरोंकाबेचना किताबमें लिखाहै मैंने कहाहां उन्होंनेकहा कि जोकिताबमें लिखलियाहै तो उनवरक़ों को निकालडालो क्योंकिउन्होंने कहा था कि करनैल फियर साहब के विषदिये जाने में इन हीरोंका बर्त्तावहुआ यहबात सुनकर मुझेबड़ा भयहुआ इस लियेमैंने वह वरक़जिनमें हीरोंका बेचना लिखाथा निकाल डाला और उनकी जगहपर नवीनवरक़ लगादिये इनहीरों का मोलजो मिलनेवालाथा उसकी यहसंख्याहै ६२७०/रु० है उनमेंसे ३०००/ नानाजीवतिलने मुझको दिये जो१० और २४ रोजनामचेके सफेमें जमाहैं उसमेंलिखाहैकि शिवचन्दखुशहाल चन्दसेरुपयेपाये परन्तुमैं कमीशनकेसन्मुख यहबात जाहरकर नाचाहताहूं कि यह गवाहबयान करताहै कि कुछ लेनदेन नहींहुआ दोपुड़ियां हीरोंकीगई थी दोनोंलौटादी गईंपरन्तु मिस्टरसूटरसाहबके रूबरू इसमनुष्यने कहाहै कि जिनवरक़ों में लेने देनेका जिक्रथा वहफड़डालेगये और उनकी जगह नयेवरक़ लगादियेगये परन्तु उनके सम्पूर्ण इजहारोंसे मा- लूमहोता है कि पुलिसने उनपर सख़्तीकरके खूबसिखाया है पुलिसने इस गवाहके साथ ऐसी काररवाई की है किहमने कभीनहीं देखी परन्तु हेमचन्द फतहचन्दने अदालत में इज- हारदियाकि १० और २४ सफेकाजिक्र जोमेरे इजहारमें है मिस्टरसूटरसाहबके रूबरूमैंनेबयान कियाथाकिवह पुराने सफेहैं नवीन नहींहैं पुलिसनेमेरे इजहार आपहीलिखलिये थेमैं कमीशनके मेम्बरोंका इसबातपर ध्यान दिलाताहूं और प्रार्थना करताहूं किमुझको इसगवाहके इजहारमें हर तरह

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

को सहायता दें क्योंकि मैं हिन्दुस्तान के मुआमिलों को नहीं जानता हूं इस मनुष्य के इज़हार में जो जौहरी की बातें हैं उनको पेश करूंगा। परन्तु इस बातका तहक़ीक़ात करना कि उसका कितना बयान ठीक है कमीशन के मेम्बरों के तअल्लुक है मालूम होता है कि हेमचन्द ने पूना के जौहरी से कुछ ज़ेवर मोल लिया था उसका मोल लिया जाना नाना जी वितिल को मालूम हुवा सो उन्होंने अपने साले के लिये वह आभूषण मोल लिया उसका मोल दस हज़ार रुपये थे उसी आभूषण का मोल उसको हुण्डियां दी गईं ऐडवकेट साहब ने उसका बहुत कुछ वर्णन किया है परन्तु मुख्य हाल उन पर भी ज़ाहिर नहीं हुवा। नाना जी वितिल और सुनार की जुबानी विदित होता है कि यह पुलिस की बनावट है मेरे विचार से जो इज़हार मिस्टर सूटर साहब के रूबरू हुये बिल्कुल बनाये हुये हैं परन्तु अब हेमचन्द ने अदालत में ठीक२ बयान किया कि सटर साहब ने जबरदस्ती मुनसे दस्तखत करा लिये थे अदालत में जो बयान गवाह ने किया वह सब ठीक है जब पुलिस वाले किसी मनुष्य को पकड़कर क़ैद करते हैं और हरप्रकार से उसपर सख़्ती करके कहते हैं कि जिस प्रकार से हम कहें उसी प्रकार गवाही दोगे तो छुड़ाये जाओगे नहीं तो रिहाई न होगी इसलिये वह मनुष्य लाचार होजाता है सो इसी वजह से जो गवाही पुलिस में लीगई वह गजानन्द वितिल के भय और वह कानेसे हुई—माई लार्ड मेरी जुबान में पुलिस के शिकायत करने की सामर्थ्य नहीं है ऐसी कारखाइयां बहुत खराब हैं उचित है कि खूब उसका तदारुक किया जावे पहिले मैंने ऐसी बातों का वर्णन करना उचित न समझा परन्तु अब इस मुकद्दमे का हाल मैं खूब जानता हूं मेरे विचार से आदि से अन्तपर्य्यन्त यह मुकद्दमा लचर है और जो झूठी सौगन्द इस मुकद्दमे में हुई हो उसपर खयाल होना चाहिये प्रथम से अन्ततक जो हेमचन्द की किताब में लिखा है वह महाजनी तौर से बिल्कुल ठीक है और आश्चर्य है कि पुलिस वालों को इस बातका भय न हुवा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कि जो हम वरक़ निकाल डालेंगे तो मालूम हो जावेगा कमीशन मेम्बरोंको मालूमहुवा होगाकि इसगवाह पर कितनीसख़्तकी गईहै क्योंकि जबवह अदालतमें आयाथा तो अति भयमानथाकिताबमेंलिखाहैकि ७-या ८-नवम्बरको मोललिये गये तो क्योंकरउस तारीखको हीरे मोललियेजाते और कर्नैल फियर साहब को विषदिया जाता और अधिक अद्भुत हैकि दामोदपंथ और नानाजीवतिल केकागज़में उसकाज़िक्र नहो और केवलजौहरी की किताबके लिखेपर निश्चय किया जाय और उसकेलिये पुलिसका बयान होकि पुराने वरक़ निकाल दिये गये और नवीन लगादिये हेमचन्द कहता हैं कि पुलिसवालोंने जबरदस्ती करके मुजसे लिखवा लियाहेमचन्द अतिप्रतिष्ठित जौहरी है और गजानन्दजो अफ्सर पुलिस है उसकीकाररवाई सबजानतेहैं इससेअधिकमैं और क्या कह सक्ताहूं उचित है कि इस किताब पर भलेप्रकारध्यानकिया जावेकोई महाजनयह बातनकहेगा कि इसबात की तहरीर जोपुलिसमेंहुईहै ठीक है प्रथम से अन्ततक उस इजहार का खण्डन होताहै जोस्टूटरसाहबके रूबरूउसने वर्णन कियाथा हेमचन्दने अदालतमें साफनिर्भय होकरठीक२कहा इसलिये अदालतके रूबरू जोउसकेइजहार हुयेवहठीकहैं और स्टूटर साहब के रूबरू जो उसने बयान किया वह अशुद्ध हैं अबमैं नानाजी वतिल के इजहार पर कमीशन के मेम्बरों का ध्यान दिलाताहूं यहमनुष्यहीरोंकेमोललेने के विषयमें जो हेमचन्द से दामोदरपंथने लिये उसका मध्यस्थहै यह मनुष्य तसदीक करताहै कि एक पुड़िया लौटा दी गई और एक रखली गई परन्तु इसमनुष्यकेइज़हारोंमें ऐसे प्रश्ननहीं किये गये जिससे प्रगटहोताकिउसने अपनेसालेके लियेमोललिये थे—ऐडवकेट-जनरलसाहब ने कईप्रश्न उससेकिये थे परन्तुवहअसत्यवर्णन परदृढ़रहा-किएकपुड़िया लौटादीगई औरएकरक्खीगई ना-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

नाजीवतिल कामुहर्रर कहता है कि नानाजीतिवलने मुझसे कहाकि मुझको याददाश्त देदो क्योंकि हीरे लौटा दियेगये इसगवाहने सूटरसाहबके रूबरूसाफ २ बयान किया कि मैंने याददाश्त इसप्रयोजनसे वापिसदीथी कि फाड़डाली जावे यह बात सुनकरऐडवकेट जनरलसाहबकोआश्चर्य्य हुआ जिनवरक़ों केलिये गलत होनेका बयानहै औरवरकोंपर छिलनेकानिशान नहींहै हेमचन्दकहता है किपुलिसवालोंके कहनेसे मैंनेवरक़ निकालडालेथे गजानन्दवतिल कुछ हिंदुस्तानीभाषाजानता है क्योंकिउसने कुछइज़हार हिंदुस्तानीभाषामें दियेऔरकुछ गुजरातीमेंयहबयान उसकाहैकिमैं हिंदुस्तानीभाषा कोनहीं जानताबिल्कुल गलतहै मेरेविचार से इसगवाह की गवाही कुछ भीविश्वास केयोग्य नहींहै करनैलफियरसाहब केइज़हार मेंदोतीनजगह नुक्सहैबड़े आश्चर्य्यकी बातहैकिऐसा ओहदे-दारअसत्यकहेऔरफिर उसकोदुरुस्त करेमेरेइसकहनेसे यह प्रयोजननहींहै किकरनैलफियरसाहब कीप्रतिष्ठा में धब्बालगे परंतु शायदवह घबरा गयेहोंगे सो इसी प्रकारमैं विचारता हूं कि और गवाहों के इज़हार में भी ऐसाही समझा जावे शायद उन्होंने वह इज़हारदियाजो उनको बयान करने की इच्छानथी नानाजीवतिल कहताहै कि मैं नहीं जानता कि हीरेकाचूर्ण किसकोकहतेहैं न मैंनेसुना और नमैंनेदामोदर पंथको दिया उसकायहबयानहै किदोपुड़ियां हीरे केचूर्णकी मैंने दामोदरपंथको दीं यहगलत है उसनेकेवल हीरोंकीदो पुड़ियांदीथींइन पुड़ियों में कुछहीरे और कुछ हीरे की कनी थी और वहकहताहै किमहाराजा साहबके पास हीरे और उसकी बहुत कनीथी इससे प्रतीति होताहै कि यदि महा-राजा साहब के पास बहुतसेहीरे थे तो उनको मोललेने की क्या जरूरतथी न संखिया मोललेने की तसदीक हुई और न हीरेके चूर्ण का किसीने बयान किया जब यह दोनों बातें

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

साबित नहीं हुई फिर और क्याबात बाकीरहगई नूरुद्दीन को विषके बेचनेसे इन्कारहै और हेमचन्दको हीरोंकी कनीसेपस झूठका खंभा जो खड़ाकिया गयाथा वह गिरपड़ा अब केवल दामोदरपंथकीगवाहीशेषरहीसोउसकीगवाहीको दूसराकोई गवाह तसदीक नहीं करता आश्चर्य्य नहीं कि प्रथमसे अन्त तकउसका बयानगलतहो अथवा उसनेआपही विषदेनाचाहाहो मेरे बिचारसे यह मनुष्य कदाचित् बरीनहीं होसक्ता वह भयमान असत्यवादी और दुष्ट प्रतीत होताथाजितनीकि वहदुष्टताकरे कुछ आश्चर्य्य नहींहै यहशख्स चालाकआदमी है उसने आपही करनैलफियरसाहबको विषदेनाचाहाहोगा इसमनुष्यका आवागमन करनैलफियर साहबके पासनथावह अपनेस्वामीका रुपया बहुत लूटताथा और किताबोंमें जाल बनाताथा इसलिये उसको बड़ाभयहुवा कि जोकरनैलफियर साहब मेरीकिताबों को देखेंगे तो बड़ाछल साबितहोगापस उसने करनैलफियर साहबको विष देनाचाहा और सालिम और यशवन्तरावको मुकर्ररकिया कि उनके हाथसे विषदिलवाये मैंनीतिकी रीतिसे चाहताहूं कि इसदुष्टको दण्डदिया जावे जिसने एकरईसको खराबी में डालाहै यहबेचारा रईस आप मेम्बरोंपर भरोसा रखताहै कि गवाहीपर खूबगौरकरके उसको निर्दोष समझें—इस के उपरान्त कमीशन के मेम्बरोंने कमीशनके बरखास्त किया और टिफनखानेकेवास्ते गये ॥

जबटिफन खाकर वापिस आयेतो सरजन्ट बेलनटायन साहबनेफिर स्पीचप्रारम्भकी—दामोदरपंथके इजहारोंके विषयमें मैंकहचुका हूं किइसी मनुष्यकेबयान पर मुकद्दमेका मूल है परन्तु अद्भुत यह बातहै कि उसकेइजहार अन्तमेंलिये गये अबरावजी और नरसू की गवाहीका वर्णन करता हूं परन्तु रावजीके इजहारमें अभीकुछ वार्त्तानहीं करताहूं पूर्व्वमें मैने कहाहै किदामोदरपंथने रावजीकेपासशीशी भिजवादीथीवह

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अतरकी शीशीथी और कोई पतलीवस्तु उसमेंभरी हुईथीयह जाहिरनहींहुवा किजबशीशीरावजीके पासपहुंचीतो रावजी नेउसशीशी कोबदलकर दूसरीशीशीमें दवाडालदी परन्तु जो शीशीदामोदरपंथ केपासगईथी वहकेवलआधी उंगली केबराबरथी और रावजी के पास पहुंच कर वह बहुतबढ़ गई मेरे विचारसे था। यदयह बातठीकहो। क्योंकि बहुत दिक्कतके पीछे यहबात मुजको दरियाफ्तहुई दूसरीकिसी शीशीका जिक्रसिवायइस छोटीशीशीके नहुवा कमीशन के मेम्बरों को भी स्मर्ण होगाकिमैंनेअभीइसबातका कुछजिक्र नहीं कियाकिकरनैलफियरसाहबकेनौकरोंनेवास्तवमें करनैलफियरसाहबको विषदेना चाहाथा यानहीं दामोदरपंथ के इजहारों के विषयमें मैं खूबतकरीर करचुकाहूं और अब अदालतपर मुनहसिरकरताहूं कि जोकुछ कमीशनके मेम्बरों की रायहो-परन्तु रावजी कीशीशीकी गुफ्तगू करनी उचितसमझताहूं-बयानहैकिरावजीको ९ नवम्बरसे पन्द्रहदिन पहिलेयह शीशीमिलीथी परंतु जबउसकेपास पहुंचीतो। वहबहुतबढ़ गईरावजीका बयानहैकि वहशीशी इसप्रयोजनसे दीगईथी कि करनैलफियर साहबके स्नानकेजलमेंडालदीजावे परन्तु वहकहताहै किमुजकोयह मालूमनथा किउसमेंविषहै वाकोई और वस्तु है दामोदरपंथ के इजहारसे मालूमहुवा। किउसमें कौन२वस्तुथीं रावजीकेइजहार सेपायाजाताहै किउसनेअपने नेफेमेंशीशी कोरक्खाजिससेउसके पेटपरफोड़ाहोगयाउसीसमयउसकोमालूम हुआ किजोफियर साहबकेस्नानकेजलमेंयह दवाडाली जावेगीतो। उनकोबड़ाकष्ट होगायद्यपि यहशीशी करनैलफियर साहबको कष्टपहुंचाने के लियेथीपरन्तु रावजी भयमानहुआ और उसने दवाको फेंककर शीशीकोरखछोड़ा ताकिउसमेंसंखिया घोलकरगिलासमेंडाले सोबयानहै किरावजीने दामोदरपंथकी प्रेरणाके अनुकूलइसी शीशीमेंसंखिया घोलकरडाला परन्तु मेरे विचारमें यहबातन

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

हीं आती कि जब वह शीशी अतरकी थी तो क्यों कर उसमें संखिया को डालकर घोला होगा सिवा इस शीशी के और किसी शीशी का बयान नहीं है शायद यह बात रावजी भूल गया कि जो मैं ऐसा कहूंगा तो लोग एतिराज करेंगे मैंने इस शहादत पर खूब ध्यान किया मुझको किसी जगह पर दूसरी शीशी का जिक्र नहीं पाया जाता और असम्भवित मालूम होता है कि ऐसी छोटी अतरकी शीशी में संखिया शर्बत में मिलाने के लिये घोला गया हो ऐसे २ गवाहों के बयान पर एक मुकद्दमा गायकवार पर जुर्म साबित करने के लिये खड़ा किया गया है इसमें मेरे कहने पर कुछ मौकूफ नहीं मुकद्दमे में बनावट का होना बिल्कुल साबित होता है यद्यपि यह मुकद्दमा गढ़ा गया परन्तु यह खयाल न हुआ कि वह लोग जिनकी गवाही ली जायगी किस प्रकार के हैं सो झूठे गवाहों का क्रम टूट गया इन झूठे गवाहों की गवाही एक दूसरे के प्रतिकूल है मैं अपने दोस्त ऐडवकेट जनरल से पूछता हूं कि क्या वह दो शीशी थीं जो दो थीं तो अतर की शीशी क्या हुई ॥

रावजी ने वर्णन किया है कि दामोदरपंथ के पास से उसको शीशी पहुंची थी अब मैं कमीशन के मेम्बरों को इस बात पर ध्यान कराता हूं कि उनके विचार में रावजी की गवाही कैसी है जब यह शीशी अरक समेत रावजी को करनैल फियर साहब के मार डालने के लिये दी गई तो निश्चय हो सक्ता है कि जब उसी शीशी से उसको कष्ट पहुंचा तो उसने शीशी को दवा को फेंक दिया जो यह बात रावजी की निश्चय मानी जावे तो यह संदेह उपजता है कि उसको इच्छा करनैल फियर साहब के मार डालने को न थी मेरे विचार से यह सम्भव है कि दामोदरपंथ ने करनैल फियर साहब के मारने का इरादा किया हो और करनैल फियर साहब के नौकरों ने न किया हो मैं इस बात की तसदीक नहीं कर सक्ता क्योंकि मुझको इस बात से कुछ प्रयोजन नहीं है रावजी ऐसा दुष्ट नहीं है जैसा कि वह अपने तईं जाहिर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

करनाचाहताहै यहीदशानरसूकी है क्योंकि प्रकटहै किजब शीशीकेकारण रावजीको कष्टहुवा तो उसने शीशीकी दवाको फेंकदिया उचितथा कि सरकारकी ओरसे इनसब बातोंकी तसदीक़ कीजाती यहभी ज़ाहिर किया गया है कि रावजीको उनदिनोंमें शीशी दीगईथी जबकरनैलफियर साहबके फोड़ा था—अर्थात् संखियेके देनेसे महीना डेढ़महीना पहिलेदीगई थी—रावजीने वर्णनकिया है कि जबशीशीमिली नरसूउपस्थित था और नरसूने अपनेइज़हारमें बयानकिया है कि नवम्बरके आदिमें शीशीआईथी अर्थात् उनदिनोंमें जबकि अन्तकीबेर महाराजा साहबसे वार्त्ता हुईथी परन्तु यहबात गौर करने के योग्य है कि रावजीने मिस्टरसूटरसाहबके रूबरू अपनेबयानमें शीशी का कुछभी वर्णन न किया दामोदरपंथ ने इब्तिदा से शीशीकाज़िक्र कियाथा मेरेविचारसे जोकुछउसनेवर्णनकिया वहठीक है और जो सही है तो कमीशनके मेम्बर उसपर खूब गौरकरेंगे रावजीने अपनेइज़हारमें बयानकियाहैकि सुझ- को हिदायत होगईथी कि संखिया शीशीमेंडालकर जलमिला याजाय और उसेअच्छीतरह हिलाकर शर्बतमें डालाजाय प- रन्तु वहइसबातका ज़िक्र नहींकरता कि यहशीशी दामोदर पंथके पाससे सुझकोपहुंचीथी और दामोदरपंथ अपनेइज़हार में कहता है कि यहशीशीमैंने महाराजासाहबके पाससे पाई और मैंनेअन्तकी शीशीमें उसदवाको करकेरावजीकेपास भेज दिया और अद्भुतयह हैकि रावजीने प्रथम उसशीशीकाज़िक्र अपने इज़हारमें नहींकियाथा दामोदरपंथ शीशीकी सूरतकुछ और बतलाताहै और रावजी और कुछकहताहै इसशीशी के बारेमेंबराबरअन्तरहै दामोदरपंथ जोबयानकरता है कि इस शीशीमें अमुक २ वस्तुका अरकथा इसका भी सुझको निश्चय नहीं है और यहभी विश्वास नहीं आता कि थोड़ीसी संखि- या जो पानी में घुली हुई हो और वह शरीर में छूजाय तो

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

किसतरह फोड़ा होसक्ता है इस विषयमें मेरे मित्र ऐडवकेट जनरलने डाक्टरग्रेसाहब की गवाहीली और रावजीका फोड़ा उनकोदिखाया मुझेहंसीआतीहै किऐडवकेट जनरलकिसतरहचाहतेहैं कि यहबात साबितहोजावे डाक्टर ग्रे साहब ने फोड़ेकेचिन्ह कोदेखकर वर्णनकिया कि हांतीन निशानपेटपर हैंपरन्तु जो गवाहीशीशी और उसकीदवाके निकलनेके बारे मेंहुईजिससे किपेटपर फोडाहोगया इनसबमें अन्तरहैडाक्टर ग्रेसाहबका नामसर्वदा इसबातमें विख्यात होगाकि उन्होंने हिंदूकेफोडेके निशानकोजोउसकी पेटपरथादेखामैंपहिलेकह चुकाहूं किकेवलएक गवाहऐसाहै जिसकी गवाही निश्चय माननेके योग्यहै जहांतक इसशीशी और मक्खियों का जिक्र हैव्यर्थहै अगरयह मुकद्दमाआम तोरकाहोताताोलोग इसको ठट्ठे और हंसीमेंउड़ा डालते और इतना तूल न करते परन्तु जबकि ऐसी गवाही परएक रईसको सिंहासनसे उतारेजाने कासंदेहहैतो इसबातपर खूबगौर करना चाहिये ऐसे लोगों की गवाही की तहकीकात ऐसे अफसरोंके रूबरूहोनीचाहियेथी जोनीतिमानथे नउनकेरूबरू जोचाहतेथे किजिसतरहहोसके एकरईस को दुःखपहुंचे मैंशीशी के जिक्रको सलाम करकेपूर्ण करताहूंजो बिल्कुल लचर है ऐसाकभी किसीतवारीखमें लिखानहीं देखा गयाअब मैं रावजी की एक और कारवाईका जिक्रकरताहूं अर्थात् विषकीपुड़ियों काहाल कहताहूं यदिमैंकिसी जगहपर चूकजाऊं तो मेरेदोस्तऐडवकेटजनरल और कमीशनके मेम्बरमुझको बतादें ॥

बयानहै कियहविष की पुड़ियां रावजीके पास आईंहालां किउसकी कुछअसलियत नहीं है खयालहै किदामोदरपंत ने यह पुड़ियां सालिम और यशवन्तराव को दीथीं और फिर बयानहुवाहै किछःसातआदमियोंके साम्हनेदीगईं उनलोगों कीगवाहीभी लीगईपरन्तु वहबयान बिल्कुलदृथाहै इसमुक-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

हमेमें अच्छीवार्त्ता करनेकेलिये उचितहैकि रावजी का इज-हारपढ़ाजावे वहयहहै किप्रथमउसने सूटरसाहबके सन्मुख वर्णनकिया किसालिम और यशवन्तराव ने मुझसे कहा कि कि जो तुम महाराजा साहब के पास चलोगे और जो कुछ वह कहेंगे उसकोतुम करोगेतो तुमकोइतना रुपयादिया जा-वेगा कि तुमकोनौकरीकी अवश्यकता नरहेगी और जन्मभर अपनेपरिवार समेतघर बैठेखाओगे किन्तुतुम चाहोगेतोतुम्हें नौकरीभी मिलेगी और वहकार्य अच्छीतरह अंजाम दोगेतो एकलक्ष रुपयातुम्हें मिलेगा—करनैलफियर साहबका मारडा-लनाथा सो उसकार्यका सिद्धकरनाथा जबहम इसबातकेकरने पर राजीहुयेतो महाराजासाहबनेहमसेकहाकितुमकोसालिम और यशवन्तके द्वारापुड़ियां मिलेंगीदो तीनदिनके उपरान्त जमादारनेदो पुड़ियां मुजकोदीं और कहाकि तीन दिनतक बराबरइन पुड़ियोंको वर्त्तायाजाय और इस बातको सालिम और यशवन्तरावने महाराजासाहबके रूबरूभी हमकोसमझा दियाथा कि क्योंकर पुड़ियोंका वर्त्तावहोगा दोतीनदिनतक मैंने पुड़ियोंकी दवाको नहीवर्त्ताया क्योंकि मुझको मौका न मिला हम लोगोंने जबमहाराजासे वार्त्ताकीथी तोउसमें यह बात ठहरीथी कि करनैल फियर साहबको शर्बतमें विषदिया जायक्योंकि करनैलफियर साहबजब हवा खाकर आतेहैं तो शर्बत पीतेहैं—(कमीशनके मेम्बरोंको इसबातपर ध्यान धरना चाहिये) इसलिये दोतीनबेर पुड़ियोंको जबमौक़ापायाशर्बतमें डालदिया यहशख्स और जगहपर अपनेइजहारमें कहताहै कि सालिम और यशवन्तरावके कहने से इन पुड़ियोंकी कई छोटी २ पुड़ियांबनाईं और अपनीपेटीकी जेबमें रखलीं यह पूर्व्वोक्त इजहारउसने मिस्टरसूटर साहबके रूबरूदिये और अदालतके साम्हनेबयान कियाकि जोदो पुड़ियां मुजकोमिली थींउनका मुखतलिफ रंगथा मैं समझा कि जो पुड़ियां श्वेत रंगकीहैंवहअधिक कष्टदायकहैं उससफेद पुड़ियामेंसेथोड़ी२

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

दवालेकर उसश्वेत पुड़ियामेंमिलाई और शेष उसश्वेतपुड़िया कोअपने पासरहने दियावही दवामेरी पेटीकी जेबमें है॥

अब विचारनाचाहियेकि इनदोनों वाक्योंमें कौनसा वाक्य ठीकहै क्योंकि इनदोनों वाक्योंमें बड़ाअन्तर है किसीतरहसे उसकेदोनों बयानसच्चनहींहैं वहकहताहैकि मुझकोशंकाहुई कि सफेददवा भूरीदवासे अधिककष्टदायक है यहबात पूछने के योग्यहै कि उसकोकिसकारण यहसंदेहहुवा क्योंकिवह कहताहैकि जबमुझको यह पुड़ियांमिली थीं तबमुझको कुछ मालूम नथा कि उनमें क्यावस्तुहै दामोदरपन्थके इजहारसे मालूमहुवाकि यहदोपुड़ियां अन्य २ रंगकेदवाकी नथींकिन्तु पुड़ियोंकी दवामिला कर उसको दीगईथी रावजीको केवल इतनाकामबाकी था किउसको तीन जगहकरके तीनदिनतक शर्बतमेंमिलायाकरेमालूमनहींकि यहदोपुड़ियांक्योंपेटीमेंरह गई और यहदवा एकप्रकारकी नहोगी कईप्रकारकीहोगी रावजीने वर्णनकियाहैकिमैंने सफेद दवाकोअलगरक्खा और उसश्वेतपुड़ियामें से थोड़ी २ दवामिलादीथी परन्तु मैं कहताहूंकि जब यहदवायें मिलीहुईथीं तोउनकोफिर मिलानेकी क्याजरूरतथी और फिरएकसफेदपुड़िया क्योंकरबचरही क्या मुखतलिफ बयान उसका मानने के योग्यहै इसकेसिवा जिसतरह उससे कहा गयाथा उसनेक्योंनहीं सबपुड़ियोंको शरबतमेंडालदीं और एकसफेद पुड़ियाके रखछोड़नेकी क्या जरूरतथी जिसतरह कि बयानहुवा है कि हीरेकाचूर्ण और जहर दोनोंमारडालने वालेहैं तो फिरक्यों एक पुड़ियामें से थोड़ीसी वस्तुडाली और थोड़ीरहनेदीजबकरनैलफियरसाहब के विषदेने केलिये रावजीको नियतकिया गया और उसको पुड़ियांदीगईं तो यहउचितथा कि जो दवाजियादह मारने वालीथी उसको जियादहडालता और जोकमथी उसकोकम डालता यदिमिस्टरसूटरसाहब और इसमनुष्यका बयानठीक है तो पेटीमें दोपुड़ियां निकलतीं और इनपुड़ियों में केवल

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

संखिया न होती किन्तु हीरे का चूर्ण भी होता ऐसे इज़हार पर ध्यान करने से बिल्कुल अन्तर पाया जाता है कोई मनुष्य नहीं कह सक्ता कि कौन बयान ठीक और कौन गलत है आप साहिबों को स्मर्ण होगा जो बयान हुवा है कि जब गजानन्द ने दामोदर पन्त के दफ्तर में कुछ कागज़ मशकूक देखे तो शीघ्रही सूटर साहब को बुलाया और जब अकबर अली ने रावजी की पेटी से पुड़िया निकाली तब भी सूटर साहब बुलाये गये अजीब बात यह है कि जब कोई बात पूछी जाती थी तो मिस्टर सूटर साहब बुलाये जाते थे उनके साम्हने कभी कोई नई बात नहीं पूछी गई रावजी इस पुड़ियाको रखकर बिल्कुल भूल गया था परन्तु अकबर अली तो बड़ा चतुर है उसने पूछा कि जिस तरह शीशी से दवा निकाल कर पेट पर निशान पड़ गया उसी प्रकार पुड़िया का निशान पेटी में न पड़ गया हो इसी हेतु उसने रावजी से पूछा कि तुम पुड़िया कहां रक्खा करते थे रावजी बेचारह भूलगया और उसे स्मर्ण न रहा उसने कहा कि मैं पेटी में रक्खा करता था सो पेटी मंगाई गई जिसतरह रावजी पेटी में पुड़िया रखकर भूलगया इसीतरह जो हर एक कातिल हिन्सा के शस्त्र को रखकर भूल जाया करे तो क्या अच्छी बात है परन्तु इस बयान से पहिले कुछ और वर्णन हो चुका है कि जब कर्नेल फियर साहब ने यह बात पूछी कि हमको विष दिया गया तो सालिम उसी समय घोड़े पर सवार होकर भागा हुवा आया और रावजी से कहा कि जो कोई पुड़िया शेष हो तो फेंक देना॥

कल्पना कीजिये यदि रावजी पेटी में पुड़िया को रखकर भूल गया था तो सालिम के कहने से अवश्य याद आ जाता परन्तु रावजी का ऐसा क्या हाल हो गया था कि उस समय भी उसको स्मर्ण न आया अकबर अली ने मिस्टर सूटर साहब से कहा कि जो पेटी की तलाशी लीजाय तो ज़रूर कोई पुड़िया निकलेगी मिस्टर सूटर साहब को अकबर अली का इतना निश्चय था कि उन्हों ने आज्ञा दी कि तुम जाकर पेटी ले आओ आप नहीं गये हालांकि

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उनको आपही जाना उचितथा वास्तवमें अकबरअलीने सूटर साहबको बहुतअच्छीरायदी उचितहै कियहपेटी अजायबखाने में रक्खीजावे और अकबरअली खिड़कियावालेमें बन्दकिये जांय ताकिइसपेटी और अकबरअलीको सहस्रोंमनुष्यदेखें जबअकबरअलीने पेटीकोटटोलाती तुरन्तही मालूमहुवा कि जेबमें एकपुड़ियाहै इसलिये मिस्टरसूटरसाहबबुलायेगये मुझको बड़ा आश्चर्यहोताहै कि मिस्टरसूटरसाहबने किसीप्रकारका विचार नकिया और इसमुआमिलेको ऐसेमनुष्यको सौंपा जिसको वहजानते थे कि बड़ा चालाक है और जहांतक होसकेगा लोगोंकेफंसानेमेंकोशिशकरेगा अकबरअलीनेवर्णनकियाहै कि ईश्वरकी कुदरतसे यहपुड़ियापेटीमें मिलगई परन्तुयह ईश्वर की कुदरत अकबरअलीके हाथोंसे प्रकटहुई जिसतरह मैंने ज़ाहिरकिया है कि दामोदरपन्थका इज़हार संखिया और हीरेकेचूर्णके विषयमें गलतहै उसीतरह रावजीका इज़हार भी पुड़ियाकेनिकलनेमें झूठहै मैंपहिलेकह चुकाहूंकि शीशीका जिक्रजबतककि दामोदरपन्थ ने रावजीने नहींसुना ज़ाहिर नहीं किया ॥

पुड़ियोंके इस्तैमाल करनेके बारेमें एकपुड़िया का वर्त्ताव एकप्रकारसेवर्णनकरताहै और और पुड़ियोंका वर्त्तावदूसरी रीतिसेकहताहै और अन्तकोबेर एकपुड़िया केवलसंखियेकी पेटीसेनिकलना मशहूरहै यह इसभांति के बयानहैं कि जिस मनुष्य को थोड़ीभी बुद्धिहै उसको कदाचित् निश्चय नहोगा सिवाइसके जबउसबयानमें अकबरअलीसा मनुष्यसंयुक्तहोतो सिवाझूठ और गलतकारर्वाईके और कोईबात नहींसमझी जाती मैंकमीशन और संसारभरके साम्हने अकबरअली पर यहअपराध कायमकरताहूंकि उसने यहपुड़ियापेटीमेंरक्खी और पुड़ियारखनेकेउपरान्त मिस्टरसूटरसाहबकोजोप्रतिष्ठित अफ्सरहैं बुलायाताकिवहपुड़ियाके निकलनेकोपेटीसेसिदाकतकरें रावजीकी गवाहीमें सबसे बढ़कर बिल्कुलबनावट है ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कुछसंदेह नहींकि पेडरू एकप्रतिष्ठित गवाह है उसकी प्रतिष्ठामें कोईधब्बा नहींलगा परन्तु यहमनुष्य जातिकापुर्त्तगीजहै और किसीहिन्दूने उससे साजिशनकी होगीऔर इस पुर्त्तगीजी गवाहने पुलिसकी कारखाईके पहिले गवाहीदी यदिपुलिसको अवसरमिलतातो इसमनुष्य सेभीअपनीइच्छाके अनुकूल गवाही दिलाते मिस्टर ऐडगन्ट्न साहवने पेडरूकी गवाहीलीथीयहसाहव अतिप्रतिष्ठित और विख्यात नीतिमान हैंपेडरू कावयानहै किमैने केवल एकवेर रुपया पाया और सौगन्दखाकर कहताहै किरावजीकेइजहार गलतहैंअबकमीशन कोअखतियार हैकिपेडरूकोमाखूज करेयाछोड़दे परन्तु किसीप्रकार सेनिश्चय नहींकि २५वर्षका नौकरकिसी हेतुके बिना अपनेस्वामी कोमारने काउद्योगकरे इसकेविशेषऔरभी बहुतसी गलतियां रावजीके इजहार में साबित करसक्ता हूं रावजीने वर्णनकियाहै किगायकवारने पेडरूसे वहीवातेंकीं जोमुझसे कीथीं उसनेअपने इजहारमें वयानकिया कि गोवा नगरसे आकरदोतीनदिनपीछेपेडरू गायकवारके निकटगया था इसलिये विदितहोताहै कि६-वा-७ नवम्बर कोगयाहोगा अर्थात् जवकि रावजी औरनरसू का बयान हैकि हमगये थे इसकेउपरान्त कमीशनकेमेम्बरोंने अदालतकोबरखास्तकिया॥

अठारवें दिनका इजलास॥

दूसरेदिन फिरकमीशनके मेम्बर अदालतमेंएकत्रहुयेऔर सरजन्टबेलन टायनसाहव ने फिरइसोच प्रारम्भकी उन्होंने वर्णनकिया कि कमीशनके मेम्बरोंका खयाल इसवातपर रुजू करताहूं किरावजीऔर नरसूकीगवाहीकारनैल फियर साहब के सामने किसप्रकारसे लीगई मैंनहीं चाहता कि कमीशन केमेम्बरों कावक्त हथाखोऊं केवलइतनी वार्त्ताकरनी चाहता हूं जोउचितहै और जिससे अपराध काखण्डनहो और इसके विशेष जिसकामकेलियेमैं यहांआयाहूं औरमुजको मेहनता-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ना मिलाहै उसको मनसेदेना चाहताहूं रजीडन्सीमें बहुतसे ऐसेनौकर हैं जिनकी प्रतिष्ठित पदवीहैं प्रथम में रजीडन्सीके नौकरोंने एकनिर्दोष मनुष्य कानाम लिया किसी तरहसे उसकीनिर्दोषता पर भय और लज्जान हुई ऐसे लोगोंका हाल लिहाजकरनेकेयोग्यहै किपहिलेआपही मारडालनेपरतय्यार होंऔर फिरएक निर्दोष मनुष्यपर अपराध लगावें और अब महाराजासाहबपर अपराध धरतेहैं इससम्पूर्ण गवाहीमेंऐसी दुर्गन्धआतीहै किमुझको महाग्लानि होतीहै और सबबनावट मालूमहोतीहै इनसबगवाहोंने सम्मत करकेकिस प्रकारसेफौज पर बहुतान बांधाथा अबमुझको रावजीकी बाकी गवाही पर बार्त्ताकरनीहै ग्रीग्रीऔर पेटोकेविषयमें मैंवर्णन करचुकाअब छोटी२ बातोंके केलियें कुछवार्त्ता करनी बाक़ी है॥

अबमैंपुलिसकी कारखाई परवार्त्ताकरूंगा मालूमहोताहै कि पुलिसनेरावजीकेनिरखतभी और गवाहोंके सदृशकारखाई की यहमनुष्य २२-तारीखकोपकड़ागया और उसीदिन की संध्याकोउसने कुबूलकियाकि मैंने करनैलफियरसाहबको विष दियामालूमहोताहै कि उससेमुआफी कावाइदाकिया गया अर्थात्यहकि जो वहजुर्मसे इकबालकरेगा तो उसकाअपराधक्षमाहोजावेगा परन्तु उसनेयह सबबातें अकबरअली की कुछगुफ्तगूके पीछे कबूलकीं और कबूलकरनेके उपरान्त उसको सरल्यूइसपीलीसाहब और सूटर साहबके निकट लेगये रावजीने उससमय कबूलकियाजब अकबरअली और पुलिसके लोगोंने उसको भय दिलाया था क्योंकि अकबरअली अब्दुल अली और गजानन्दने सम्पूर्ण कारखाई तहक़ीक़ातके करते कीथी इनलोगोंके विषयमेंमुझकोलाचारीसे बयानकरनापड़ताहै मिस्टरसूटरसाहब को मैं बरीकरता हूं परन्तु यहसाहब गजानन्दकि प्रकृतिको जानतेथे और जानतेथे कि गजानन्द एकबेर बदनामहोचुकाहै और भलीभांतिजानतेथेकि जोइस मुकद्दमेकी तहक़ीक़ात ऐसेलोगों को सौंपीजावेगी तो वह

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बहुतसख्तीकरेंगेक्योंकिउनकोकिसीकीपरवानहीहै वहजानते थे कि गजानन्दऐसा आदमीहै और उसपर क्या २ अपराध लगाहैयहउचितथा कि पहिले सूटरसाहबगवाहोंकीगवाही लेते फिरउसको पुलिसकेसुपुर्दकरते क्योंकिजबपुलिसनेपहिले से उनको भय दिखायातो जोचाहा उनसे इकरारकरालिया होशो और पेटीका किस्सातो मैं कहाचुका हूं जो कमीशन केमेम्बर ऐसीमेरीबड़ी तकरीरसेक़ायलनहीहैंतो मालूमनहीं कि और किसबात्ती से क़ायल होंगे रावजी २२ नवम्बर को पकड़ागया और २३,२४,२५,नवम्बरको तीनबेर उसके इज़-हारलियेगये इसकेउपरान्त सरल्यूइसपीलीसाहबके सम्मुख इसवाइदेसेलेगयेकि तुम्हाराअपराधक्षमाहोजावेगा—ढिठाई क्षमाहो—यहअजीबबात है कि दामोदरपंथ इसमुकद्दमे का मूल और रावजी उनका कारकुन ठहरा दिया गया है उन लोगोंका अपराधतो क्षमाहो परन्तु नरसूजिसकाथोड़ा सा अपराध है उसका अपराध क्षमान हुवा मेरे विचार से नरसूका अपराधक्षमाहोना चाहियेथा नइनदोनोंका क्योंकि नरसूकुवेंमेंभी गिरपड़ा औरकहताहैकिमैं दुर्भाग्यतासेखूनियों कासाथी हुवाहूं मेरेविचारसे नरसूने मारनेकाउद्योग नहीं कियाऔर उनकेहकमें इन्साफनहीं हुवामुझको आशाहै कि यहमनुष्य उसदण्डसे बरीकिया जावेगा जिस सज़ाका उसके निरबत मुआफ़नहोनेकी वजहसे गुमानहै॥

अगस्तसन् १८७३ ई० मेंपहिले रावजीकी महाराजा सा-हबसे मुलाक़ात हुईथी बयानहै कियह मुलाक़ात सालिमके कहनेसेहुईथी उसदफे कुछविषका वर्णननहुवा केवलइतनाही बयानहै कि सालिम चाहताथा कि रेज़ीडेन्सीके कुछ नौकर वश्यमें होजावें और वहांकी खबरें दियाकरें मालूमहोताहै कि जबपूर्व्वमें कमीशन बैठीथी तो रावजीने सालिमसे कुछ खबरों की इत्तिलाकीथी फिरसालिमने अपनाविवाह किया और रुपयों कोमांगासोकुछ रुपयाउसको दियागया परन्तु यहप्रगटनहीं

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

हुवाकिसिवायखबरोंके औरकिसी बातकोभी उससेदरखास्तकी गईरुपयेकी सिदाक़तके वास्तेसुनार पेशहुवा थोड़ा २ रुपया आयाआदि कोभी दियागया अजीबबातहै कि जवनरसू और रावजीको रुपया लेनेका मौका मिलाथा उन्होंने रुपया नहीं लिया जब कार्य्यकरचुके अर्थात् विषदेदिया तोफिरक्योंउन्होंने रुपयेकी दरखास्त नहींकी यहगिरिफ़्त बहुतबड़ीहै यहभी इन लोगोंकी दुष्टता और झूठका कारणहै—शीशी और संखिया औरहीरेके चूर्णके विषयमें वर्णनकियाहै कि दियागया परन्तु अजीबबातहै कि इन लोगोंने उसमेंसे कुछबाक़ी नरक्खा इस मुक़द्दमेमें जितना कि महाराजा साहबका सम्बन्धहै बिल्कुल ग़लतमालूम होताहै बयानहै कि यशवन्तरावने पांचसौरुपये रावजीकोदियेथे औरवह रुपयाजुम्मा लायाथा उसकीगवाही ऐडवकेटजनरलसाहबने पेशकी परन्तु जुम्माकीगवाहीमें अन्तर है इसलिये वह विश्वासके योग्यनहींहै एक और मनुष्य कार भाई नामक के विषय में नरसू ने बर्णन कियाहै कि वह भी उनकेसाथ एकबेर गायकवार के महलको गयाथा जूदनवीस के लेखसे मालूम होताहै कि कारभाईमई—जून वा जूलाईमें उनकेसाथ गयाथा परन्तु अक्टूबर नवम्बरमें जानासाबितनहीं होता यहगवाह इसलिये पेशकियागयाकि विषदिये जानेकी गवाहीकी सिदाक़तहो दोशख़्स नरसू और रावजी की तस-दीक़ गवाहीके लियेपेशकीगई परन्तु उनदोनोंके बयानमेंभी अन्तरहै कोईगवाही साफ २ पेशनहींहुई जिससे रावजी और नरसूके बयानकी सिदाक़तहो केवलइतनाही साबित होताहै कि वह गायकवारके महलोंमेंगये और पांचसौ रुपयाराव-जीको मिलाथा फिरकुछ साबित नहींहोता कि रावजी को एक कौड़ीभी दीगई इससे मालूम होताहै कि पांचसौ रुपये खबरोंकी इत्तिलाके लिये दियेगये थे उनलोगोंने विषदेनेके लिये कुछरुपया नहींपाया इनदोनों गवाहोंने वर्णनकियाहै कि जब हमविष देचुके तो हमको महाराजा साहबसे रुपये

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मांगनेका मुहनपड़ा और नरसू कहताहै कि आठसौ रुपये मैंनेपाये परन्तु यहरुपया महाराजासाहबने अपने विवाहकी खुशीमें दियाथा इसलिये इसरुपयेका जिक्रकरना व्यर्थहैक्यों कि इसरुपयेको विषदेनेसे कुछतअल्लुक नथा निश्चयहै किइन बातोंका खयाल कमीशनके मेम्बरोंको पहिलेसेहुवाहोगाइस से अब वार्त्ताकरनी कुछआवश्यक नहींयहरीतिहै कि जबकोई मनुष्य किसी कामको करताहै तो उसकी उजरत की उम्मैद रखताहै परन्तु इनलोगोंने विषदिया और मेहनतानेसे निरा-सहुये ऐसीगवाही कोईनहीं गुजरी जिससे साबितहोकि उ-जरतपानेकी आशाहै उन्होंने वर्णनकियाहै कि जबहमविषदे चुके और रेजीडन्टसाहबके विष दियेजानेकी इत्तलाहे हमसा-लूनहोगये तो हमको कुछभीनहींमिलादोनों यहभवर्णनक-रतेहैं कि हमसे वाइदा हुवाथा कि जो जहरखुरानोमें हम कामयाबहोंगेतो प्रत्येकमनुष्यकोलच२ रुपयाइनआम मिलेगा परन्तु इसदेशकेनिवासी ऐसी प्रतिज्ञाको कि जबतक उनको नक्लादरुपया नमिले नहींमानतेहैं यहबड़े निर्बुद्धि मनुष्यथेजो ऐसी प्रतिज्ञाको मानलिया नरसूके बयानसे स्पष्टहै किउसने इसमुआमिलेमें बहुतकम काररवाईकी और अन्तकोलज्जित होनाप्रगट कियारावजी जोदामोदरपंथ काहालबयानकरता है केवलइतनाही कहता है किमैं दामोदरपंथको जानता था परन्तुमेरी जातसेउससे मुलाकात नथीकैसी अद्भुत बात है किएक मनुष्य खूनकरने में संयुक्त हो और आप मुलाकातन रखताहो दामोदरपंथ अपने इजहार में बयान करता है कि रावजीमेरे घरपर आया और कुछकितावें रेजीडन्सी से चुरा करलायाथा जबतकमैंने उनकीनकल,नलेली वह मेरेमकानपर ठहरारहा ऐसे इखतिलाफ सेयहबात जाहिरहै कितीनआद-मियोंनेइन लोगोंको सिखायाएक कोगजानन्दनेदूसरेको अक-बरअलीने तीसरेको अब्दुलअलीने उन्होंने मुकद्दमे को अवश्य खड़ाकर दियापरन्तु यहनसमझेकि जबखूबतहक़ीक़ातहोगी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

तो निस्संदेह अन्तरपड़ जावेगा इनलोगों को इसबात से बड़ा पश्चात्तापहोगाकि हमने पहिलेक्यों न समझ लियाइस इखतिलाफसे साफसाबित हैकि मुकद्दमा झूठा है ऐडवकेट जनरल साहबकहेंगे किगवाहों कीप्रतिकूल गवाही से यह बातसाफ जाहिरहै किउनका बयानठीकहै परन्तु नहीं यदिसही होता तोकुछअन्तर नहोता न इतनाइखतिलाफ जोउनके बयानसेसाबितहुवा उनकेबयान कोमैंक्योंकर निश्चय मानूं किप्रथमसेअन्त तकबिल्कुलविपरीत हैमैं कमीशनकेसाम्हनेइतनीवार्त्ता करचुका हूं, अब कमीशन का समयदृथा नष्टनहीं करना चाहता करनैलफियर साहबने अपनी गवाहीमें वर्णनकिया हैकि उनका शिरघूमाकरताथा और जेहनकुन्द होगयाथा कोईबात उनकी समझमेंनहीं आतीथी और इसबातका उनकोबड़ा आश्चर्य्य था परन्तुमुजको यहअचम्भा हैकिइनजहरकी पुड़ियोंकाबयानउस वक्त हैजबकिवह अच्छे होगयेथे करनैलफियर साहबकीशायद यह रायहोकिवह इसी विषसे बीमार पड़गये परंतु मेरीराय नहीं है गवाहीसे साबितहुआकि ९—नवम्बरसे पन्द्रह दिनपहिले उनकीयहदशाहुईथी सिम्बतरमेंउनके एकफोड़ाभी निकलाथा करनैलफियर साहब इसबातका निश्चय कराना चाहतेहैंकि लोगमुजको थोड़ा २ विषदेतेथे किमुजको धीरेधीरे मारेंशीशीकाबयानमैंकर चुकाहूं रावजीकहता हैकिमैंनेउस शीशी कीदवाका बर्ताव नहीं किया और उसकोफेंकदियाइसलिये करनैलफियर साहब कोजो कष्टहुवा वह न शीशीकी दवासे और न विषसे हुआअब मैंसम्पूर्ण महाराजगानको इसबातका ध्यान दिलाताहूं कि ५ नवम्बरको किजबनरसू गायकवार के महलमें गयाथा तो महाराजा साहबने उसकोबुरी २गालियां दीथीमैं चाहताहूं कि उनगालियोंको उलथा दोनों महाराजा साहबोंके रूबरू किया जाय ताकि उनको मालूम होकिऐसी गालियां महाराजासाहबकीजिह्वासे निकलीहोंगी वानहीं॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

दोनोंमहाराजा साहबजानते होंगेकिऐसी गालियां हिंदुस्तान के रईसमुखपर लाते हैंवानहीं मैंनेसुनाहै कि यहगालियांबहुतहीफोहशथीं मैंने उनकोगन्दे होनेसेउनका अंगरेजीमें उल्थानहींकराया क्योंकि ऐडवकेटजनरलसाहबनेकहाकिइनगालियोंकाउल्थाहोनाव्यर्थ है इसलियेमैंचाहताहूं कि वहगालियांदोनों महाराजा साहिबोंके रूबरूबयानकी जावें-ऐडवकेटजनरल साहबने कहाकि वह गालियां हिंदुस्तानी भाषामें लिखीहुईहैं-सरजान्ट वेलनटायन साहबनेकहा कियदि हिंदुस्तानीभाषामें लिखीहैंतो काफीहैं उम्मेद है कि जोदरख्वास्त मैंने महाराजोंसे कीहैवहस्वीकार हो॥

अबएक और बातपर कमीशनके मेम्बरोंको ध्यान दिलाता हूं।रावजी कहता है कि नरसूजीने जोमुजको पुड़िया दीथी उसमेंकोई स्याहीमाइल वस्तुथी और बयानहै किकालीवस्तु करनैलफियर साहबके गिलास मेंडाली गई इसबातपर ध्यान करनाचाहिये किदामोदरपंथने यशवन्तराव और सालिमके द्वारापुड़ियां भेजीथीं नरसूकी निस्वतबयानहै कि इसमनुष्य कोसदैवपुड़ियां दीगईं और उसनेरावजीको दीं इसलिये स्पष्ट प्रकटहैकि दामोदरपंथने करनैलसाहबको मारडालनाचाहा था और फिर सालिम और यशवन्तको गवाहीमें संयुक्तकिया थाताकिजो कुछउसने तगल्लुब किया है उससे बचारहे और महाराजासाहब अपराधीबनें यहलोग इसमुआमिलेमेंमहाराजासाहबका जिक्रनहींकरते हैं यदि दामोदर पंथ परजुर्म रक्खाजावे तोइसमनुष्यपरक्रम पूर्वक ऐसीगवाहीहैकिउसपर हरप्रकारसे अपराध साबित होसक्ता है हरमनुष्यकी गवाही सेसाबितहै किदामोदरपंथने विषदियाइसबयानसे मेरा यह प्रयोजन नहींहै किविषका दियाजाना मानताहूं परन्तु जो विचारमेरे मनमें उपजतेहैं उनकोकमीशनके रूबरू पेशकरताहूं जोउस समयमेंदामोदरपंथ की हालतहोगी उसकोजानताहूं क्योंकिरेजीडन्सी मेंदामोदरपंथ केजानेकी मनाहीथी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

औरउसकोधमकोदीगईथीकि तुम्हारेहिसाबकिताबके कागज़ देखेजावेंगेइससेसाबितहोताहै किइसीमनुष्यनेरेज़ीडन्टसाहब कोमारडालनाचाहाथा औरमेरेविचारसेयहबात असम्भवित नहींहै महाराजासाहब कोरेज़ीडण्ट साहबके मारडालनेसे कोईलाभ नथा मैं सम्पूर्ण वजहबयान करचुकाहूं कि साहब रेज़ीडण्ट केमारडालनेमें दामोदरपंथका फ़ायदा नथा नम-हाराजा साहबका परन्तु जब रेज़ीडन्सी केनौकरोंका बिचार आताहै तोमेरी समझमें नहींआताकि उनको अपनेहाकिम केमारडालने से क्याफ़ायदाथा क्योंकिउनकोअपने हाकिमसे कभीकोई शिकायत नहींहुई यदि रेज़ीडण्ट साहब मरजाते तोवहसब आफ़तमेंपड़तेनरसू मौकूफ होजाता औरजोकरनैल फ़ियरसाहबमौकूफहोजातेतौभीउनको क्यालाभथा इनलोगों सेबढ़कर और चलाक आदमियों काभीजिक्र हुवाहै जैसेकि भावपूनाकर जो करनैलफ़ियर साहबकेकानमेंप्रतिसमयफूंका करताथा औरप्रति व्यवहारमें जानकारी ज़ाहर करता था उसने करनैल फ़ियरसाहबसे ख़रीतेका हालबयानकिया उ-सको करनैल फ़ियरसाहबके मौकूफ होनेकासंदेह होगारे-ज़ीडन्सीके नौकर चाहतेहोंगेकि करनैलफ़ियर साहब रेज़ी-डन्सीकी पदवीपर कायम रहें और उनकी जान लेनानचा-हते होंगे भावपूनाकरको खूबमालूम हुवाहोगाकिजो करनैल फ़ियर साहबको विषदेनेसेसूचितकियाजावेगा तोवहनबदलेंगे क्योंकि जबएक बेरतहकीकात प्रारम्भहोजायगीतो सरकार कोफ़ियरसाहब से गायकवार काबैर प्रतीतहोजावेगारावजी नेअपनी गवाहीमेंवर्णनकिया हैकिजोवस्तुजियादह मोहलक थीउसको मैंनेफेंकदिया अर्थात्शीशीकोदबा औरसंखियाभीथो-ड़ीडालदी और बयानकरताहैकिजोपुड़ियां मुझको मिलीथींवह स्याहीमाइलथीं और करनैलफ़ियरसाहबभी कहतेहैंकितलछट स्याहीमाइलथा परन्तु डाक्टरसीवर्डसाहबकहतेहैं कि उसकी रंगतहलकीभूरीथी एकबात और हैकि अगरसंखियाका बर्त्ताव

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

हुआतो संखिया का श्वेतरंग होता है करनैलफियर साहब संखियाका होना इसहेतुसेभी बयानकरते हैं कि उनकेमुंहमें तांबेकाभी स्वाद आगयाथापरन्तु डाक्टरने जोतलछटकोदेखा तो कोईवस्तु उसमेंऐसी नहींमिलीकि जिसकातांबेकासास्वाद हो—ऐडवकेटजनरलसाहब इसविषयमें कहेंगेकि डाक्टरसीवर्ड साहब और डाक्टरग्रेसाहबने किसभांति संखिया तलछटमें पाई परन्तु इस विषयमें मैं अधिकबार्त्ता नहीं करसक्ता जब कोशिशकीगई तो कुछसंखिया मिलीजो इतनी कोशिशनकी जातीतो कदाचित् संखिया न मिलती करनैलफियर साहबने गुप्तयह खबरपाई थी कि मुझको लोग संखिया देने वाले हैं किन्तु यहांतक उनकोज्ञातहोगयाथाकि संखिया और तूतिया और हीरेका चूर्ण उसमें मिलाहुवाहै यहखबर भावपूनाकर ने बलवन्तरावसे सुनकर उनसे कहीथी परन्तु अजीब बात है कि ऐडवकेटजनरल साहबने इसबात की शिकायत करने के वास्ते बलवन्तराव को नहीं बुलाया संखिया और हीरे का तांबेकेसदृश स्वादनहींहै—यदि ऐडवकेटजनरलसाहब इसबात को साबितकरें कि तलछटमें तूतियाथातो हीरे औरसंखिये काही होना जोमशहूरहै गलतठहरेगा नरसूबयान करता है कि इसपुड़ियाकी रंगतस्याहीमाइलथी और ऐसाहीकरनैल फियरसाहबभी वर्णनकरतेहैं-परन्तुडाक्टरग्रेसाहबऔरडाक्टर सीवर्डसाहब कहतेहैंकि भूरारंगया इसइखतिलाफ केबारेमें कोईक्याकहसके क्यासबलोगअंधेहोगयेथे जोइलकेभूरेरंग को स्याहीमाइलबयान किया और क्यारजोडन्सो के नौकरचाहते थेकि अपनेहाकिमसे दिल्लगीकरें यहबहुतबड़ाअचंभामिलाहैकि पुड़ियाके रंगमेंइतना इखतिलाफहै मेरेविचारसे शायदलोगों नेबाजार में मशहूर करदिया कि फियर साहबको विषदिया गयापरन्तु वास्तवमें विष नहीं दियागया—नरसू २३—नवम्बर कोपकड़ागया २४—दिसम्बरकोरावजीसे उसकासाम्हनाकराया गया—गजानन्द अकबरअली अब्दलअली उससमय उपस्थितथे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

परन्तु सूटरसाहब उससमय नथेगजानन्द इसबारेमें कहताहै किमैंनरसूको मैदानमें लियेजयेबैठाथा औरवहां अकबरअली और अब्दुलअलीभी उपस्थितथे रावजीबुलाया गया और उससे कहा कि मैंनेसबबातोंका इकरार करलिया॥

गजानन्दआदिने बहुतबड़ीकोशिशकी परन्तु उनसबकीकार-रवाई प्रकटहोगई उन्होंनेएकबेर चाहाथाकि सरकारनरसूकाभी अपराधक्षमा करदे परन्तु मिस्टरसूटरसाहब औरसरल्यूइसपीलीसाहबने कहाकि तुम्हारा अपराध कदाचित् क्षमा होगापरन्तु उसका जुर्मसबसे कमथा उसनेकुछ जबानीबयान कियाथा मिस्टरसूटर साहबकहतेहैं कि उससमय मैंनेबहुतसे कामकेहोनेसे उसकाबयान नहींलिखा यद्यपियह सबसेज्यादां आवश्यक कार्य्यथा कि सब कामोंको छोड़करयह कामकरना चाहियेथा क्या इसकामको वह अपनाकाम नहीं समझतेथे चाहेयह बयानठीक था यागलत परन्तु वह बयान एकखूनीकाथा हरप्रकारसे उचितथा कि तुरन्तही लिखलिया जाता जब सूटरसाहबको मुख्य इसी मुकद्दमेसे तअल्लुकथा और जो कामउसवक्त करतेथे इसीमुकद्दमेसे सम्बन्धित होगा इससेबढ़कर और कौनसा कार्य्यहोगा किएक मनुष्यजो फिलहाल इकरारकरताथा इस इजहारके न लेनेका मिस्टरसूटर साहब कोई माकूल उत्तरनहीं देसक्ते॥

सरल्यूइसपीलीसाहबका बयानउनके बयानकेप्रतिकूलहैवह कहतेहैं किमैंने इसवजहसे नरसूकीगवाही फौरन् नहींलिखवाईकि मैंचाहताथा किवहखूब ग़ौरकरै किमैं क्या लिखाना चाहताहूं वहबयान नहीं करते किसूटरसाहबको सावकाश केकमहोनेसे उसकेइजहार नहीं लियेगये॥

इसके उपरान्त पुलिस वालोंके पहरे में क़ैद कियागया॥ इस अन्तर में पुलिस को काररवाई करने का और अवसर मिलाहोगा पुलिसनेजोबागमें काररवाईकीवहप्रकट होचुकी है और जबनरसू कूंयेमें गिराथा उसकाखूब हालमालूम हो-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

चुकाहै परन्तु जबनरस्तू पुलिसके गार्डमेंथा तोवह क्योंकरकुवें मेंगिरा क्या वह कुवेंके बराबरही खड़ा ज़ुवा था जो गिरपड़ा हालांकिमशहूरयहहै किपुलिसके आदमी उसके साथथे और उनमेंसे भागकर वह कुवेंमें गिरा यह अद्भुत बात मालूम होतीहै मिस्टरहटर साहबवर्णन करतेहैं कियहमनुष्य पलटन केगार्डमें थापुलिसके लोगइसके पासजासक्ते थे क्या यहअसम्भ-वितहै किपुलिसवालोंने उसकोन सिखायाहो मैंनहीं चाहता किउसके इज़हारकमीशनके मेम्बरोंको फ़िरयाददिलाऊं क्यों किउसने प्रतिप्रश्नके उत्तरमें भीयहीबयान कियाकि मेरेभाग्य में यही लिखा था नरस्तू के बारे में मुझे और कुछ कहना बाक़ी नहीं है॥

इससम्पूर्ण मुक़द्दमेकी तहक़ीक़ातमें कोई और हेतुज़ाहिर नहींकियागया किविषदिये जानेका क्याकारण थानौकरअपने स्वामीसे अतिप्रसन्नथे क्याउनको प्रतिज्ञाही परनिश्चय आगया थाकि हमकोरुपया मिलेगा और उनकेहाकिमने जोमेहरबा-नीकी थी उसकोविस्मर्ण करगये और शर्बतमें विषडालदिया यदिउनकाहाकिममरजातातो कातिलबनतेऔरकिसीसूरतसे नबचसक्ते दामोरपंथके विषयमें ख़ूब बयान करचुका हूं इन लोगोंकी यहसबगवाही बेमूल और गलतहै और किसीप्रकार से निश्चयमानने केयोग्यनहीं है महाराजा साहबके लियेबज़ुत लोगइसबात पर तय्यारज़ुयेकि उनकेहकमें झूठबोल२ करउन कोफांसे इनलोगों को मुआफ़ीकावाइदादिया गयापुलिसवा-लोंको अपनीतरफ़की कोआशा होगी हरप्रकार से लोगचाहते हैंकि इस बेचारे रईसको दण्डदिलावें मुझको उचित मालूम ज़ुवाकि करनैलफियर साहबके इज़हारबयान करनेके पहिले इनसब गवाहोंके विषयमें ज़िक्रकियाजाय॥

अबकमीशनके मेम्बरोंको उनजवाबों परध्यानदिलाताहूं जो करनैलफियर साहबने मुझकोदिये यहबातप्रकटहै किजबतक

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बहुतसे प्रश्न नकिये जावें और ज़ोर नडाला जावे ठीक २ हाल मालूमनहीं होसक्ता करनैलसाहबने वर्णनकियाहै किसालिम और यशवन्तराव दोनों रेजीडन्सीमें आयाकरतेथे और कहते हैंकि मुझकोसंदेह हुवाथा किमरहममें कोईवस्तु डालदीगई थीजिसके सबबसेमेरा फोड़ाबढ़गया और बरवक्त गौर करनेके करनैलसाहबको सन्देहहुवा किउसमें संखियाडालीगई परन्तु मरहममें संखियेका डालाजाना मैंनेबिल्कुलगलत और खंडन करदियाहै फिरवह उनदिनोंका जिक्र करतेहैं जिन दिनों में शर्बतमें विषदियागया थावहअपनी तबीयतका हालसितम्बर और अकटूबरका बयानकरतेहैं और कहते हैं कि ६— या ७ नवम्बरको विषदिये जानेकाउद्योग हुवा परन्तु गवाही सेसा-बितनहीं होताकि इनतारीखोंमें उद्योगहुवाहो· जाहिरहै कि आदमीका खयाल कितना दौड़ताहै जोकुछ उनकी तबीयत कीहालत इनतारीखोंमें हुईथी वहबिल्कुलखयालथा-शरबतके पीनेके उपरान्त वह अजीब तरहशरबतकेफेंकने काबयानक-रतेहैं उचित यहथा किजोमनुष्य शरबत बनाता था उसको बुलाकर कहते कितूने यह शरबत कैसा बनायाहै यदि सब शरबतको करनैलसाहब रहनेदेते और डाक्टरसाहबको दिखा कर इमतहानकराते तो उचितथा मालूमहोताहै किडाक्टर सीवर्ड साहबनेभी बहुतढीलकी क्योंकि उन्होंनेतलछटकोछान लियाओर पानीको फेंकदिया करनैलसाहब यहभी कहते हैं किजहांमैंने शरबतफेंकाथा वहांएक खिड़कीथी और खिड़की के आगे बरामदा था वहांबरामदे में मालूमहुवा कि संखिये और हीरेकाचूर्ण शरबत में मिला हुवाथा सबसे बढ़कर यह बातहै किजबदो तीनदिनपीछे बरामदेकी धरती खुरची गई तो उसमट्टीमें हीरे और संखियेका चूर्णमिला आशाहै कि कमीशनके मेम्बरउसखुरचीहुई मट्टीपरअपनाखयालजियादा रुजूनकरेंगे परन्तु हांजो तलछट गिलास में रहगया था वह

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

गौरकरनेके योग्यहै करनैल साहबकहतेहैं किजबमैंने शरबत फेंकदियाते कुछतलछट स्याहीमाइल गिलासमें रहगयाश्रौर फिरअपनी तबीयतका हालवर्णन करतेहैं किवहीदशाहोगई जोपहिले हुईथी यह साराकिस्सा अति अद्भुतहै शरबत का फेंकदेना श्रौर किसी मनुष्य को नबुलाना श्रौर मुखमें तांबे का स्वाद होना श्रौर तलछट का स्याही माइल होना यहबातें अजीबगरीब मालूम होतीहैं निश्चयहै कि यहइज़हार सुनकरकमीशनके मेम्बरोंको बड़ाआश्चर्यहोगा मैंपहिलेवर्णन करचुकाहूं कि करनैलफियरसाहबने अपनी एकचिट्ठीमेंलिखा कि मैंने ठीक खबरपाईहै कि मुझको विष दिया जायगा ऐसी खबरोंके पानेसे मनुष्यका हृदयबहुत फिरसक्ताहै उसीदिन उन्होंने जल्दीकरके गवर्न्मेण्टमें लिखभेजा कि मुझको विषदिया गया फिर करनैलसाहब वर्णनकरतेहैं कि महाराजासाहबसे श्रौरमुझसेक्या२बातेंहुईं महाराजासाहबने उनसेकहाकिमिठाईखानेसे मेरीभी ऐसेहीदशाहोगईहै किन्तुउन्होंने यहभी कहाकि नगरमें यहरोग बहुतफैला है महाराजासाहबने यह वार्त्ताशुरू नहींकीथी किन्तु करनैलसाहबनेही इसबातको छेड़ाथाजो वार्त्ता महाराजासाहबने की उससेयह विदितनथा कि महाराजासाहब करनैलसाहबको टालदेंताकिउनकोजाहिरहोकिमुझकोविष दियागया यदिविषकादियाजानाठीक है तो कोईवजह ज़ाहिरनहीं कीगई कि महाराजासाहबको मालूमहो कि करनैलफियरसाहबको ९ नवम्बरको विषदिया गया डाक्टरसीवर्डसाहब श्रौर करनैलफियरसाहबकी जो गवाही लीगई उससे यहबातज़ाहिरहै कि मानोलोगोंने दिन श्रौर समय विष देनेका नियत करलिया था परन्तु वास्तवमें कोईसमय नियतनहींहुआ था किन्तुयह कहागया था कि जब अवसरमिले विषडाल देना डाक्टर सीवर्डसाहबने अपने वचपनके विचारों को इस वास्ते वर्त्ताया कि जो कुछ उनके खयालहैं श्रारोंकेभी हृदयपर नकश होजावें जब महाराजा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

साहब करनैलफ़ियर साहबके साम्हने आये ते। उनके मुखसे कोईबात ऐसीनहीं पाईजातीथी जिससे यहबात मालूम हो कि वहइसउद्योगमें संयुक्तहैं और नमहाराजासाहबकीकोई ऐसी हरकत साबितहुई जिससे मालूमहो कि उन्होंने कभी ऐसा उद्योगभीकियाहो उन्होंने करनैलफ़ियरसाहबसे उसदिन इसतरहभेट कीथी कि जैसीसर्वदा कियाकरतेथे और ऐसी मुलाक़ातनहीं की जिससेमालूम हो कि वह मारडालने में संयुक्तहैं हिन्दुस्तानीरईसोंकी प्रकृतिकोमैंभलेप्रकारनहीं जानतापरन्तु इतनाहीजानताहूंकि जैसीतबीयतहमलोगोंकी है वैसीहीउनकी भी होतीहोगी जब खयालकरतेहोंगे तो भय और चिन्ताअवश्यहोतीहोगी और यहभयउनकेमुखसेविदित होजाताहोगाहा खेदहैकि लोगोंने श्रीमान्‌महाराजा गायकवारको अपराधीबनाकर बुरी २ बातेंको—अंगरेजी आदि भाषाकेसामाचारपत्रोंमें ऐसीगलतबातेंलिखींकि हरएकमनुष्य कारुधिर जोशमेंआगयामैं उसदेशकानिवासीहूंजहां बिल्कुल आज़ादीहै यदिवहांकिसी अखबारमें ऐसालिखाजातातो उस एडीटरको दण्डपर दण्डहोता और यहविचारनकिया जाता कि बड़े अखबारका एडीटर था क्योंकि उसने अपने लेख से सरकारकाध्यान न्यायसे फेरदिया मैं फिरकहताहूंकि गायकवारकी ओरसे कोईकारखाई ऐसी नहींहुई जिससेमालूम होकिगायकवार ने विषदियाहैवा किसीप्रकारसेवहअपराधी है—करनैलफ़ियरसाहबकेकानलोगोंने बहुतदिनोंसेभड़कायेथे विशेषकरभावपूनाकरने!टिफ़नसे पहिले करनैलफ़ियरसाहब इन्कार करतेथे किभावपूनाकरने मुझको जहरकी इत्तिला नहीं की परन्तु टिफ़नखाने के उपरान्तइकरारकियाकि इसी मनुष्यने मुझको इत्तिलादी थी जब भावपूनाकर बुलायागया तो उसनेकहाकि मैंने अमुकमनुष्यसे सुनकरइत्तिलादीपरन्तु वहनहीं बुलायागया जिससेउसने सुनाया—गायकवारपरजो दूसराअपराधहै किरजीडन्सीके नौकरोंसे खबरोंके पानेकेलिये

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मेलचोल कियागया इसमें यहबात पूछनीहै कि इसतरहकेमेल बोलकाकरना किसीमनुष्यकीहानिकेलियेहुवाथा या नहींपरन्तु करनैलफियरसाहबनेभीखबरोंके मालूमकरनेकेवास्ते लोगों से मेलरक्खाथाइसबातसे किसीमनुष्यको इन्कारनहीं होसक्ता किभावपूनाकर करनैलफियर साहब का मुखबिर नथा चाहे इसखक्स को रुपयानहीं दियागयापरन्तु करनैलसाहबउसको हरएकबातको सुनतेथे गायकवार को इतना नागवारहोता होगाकि जोमनुष्य मेरावैरी है उसोसे रजीडण्टसाहब मैत्री रखतेहैं यहबातसाफजाहिरहै कि जब खरीतातय्यार होताथा तो करनैलफियरसाहबको इत्तिलाहोगईथी इसीप्रकारउनको गायकवार की हरएक काररवाईसे खबरहोजाती थी चाहे उन्होंनेभावपूनाकर को कुछनहींदिया परन्तु भावपूनाकर ने गायकवारके नौकरोंको रुपया देकरहालात दरयाफ्त किये होंगे महाराजासाहबको रजीडन्सीके खबरोंसेकुछअधिकलाभ नथा जैसे कि आयाने एक चिट्ठी लिखी जिसमें रजीडन्सी में खानाहोनेकाजिक्रथाभलाउससे महाराजासाहबको क्यालाभ था परन्तुकरनैलफियर साहबको बड़ेहालमालूम होतेथेहर प्रकार महाराजासाहब मजलूमहैं और करनैलफियर साहब की जियादती मालूम होतीहै और आयाका जो बयानहै उस पर कदाचित्निश्चय नहीं है महाराजासाहब उससे इन्कार करते हैं मैं आपसे पूछता हूं कि महाराजासाहब आया से क्या बातें करते थे आयाको सरकारी पोलीटीकल मुआमिले मालूम होसक्तेथे जोवह इत्तिला देती महाराजा साहब खूब जानतेहोंगे कि आया को इस मुआमिलेमें कुछ सम्बन्धनहीं है ऐडवकेट जनरल साहब ने जाहिर किया है कि आया से भीविषदेनेका कुछजिक्रहुवा था फिररावजी और नरसू विष देनेमेंसंयुक्त कियेगये परन्तुगवाहीसे यहबात प्रगट नहीं कि रावजी और नरसू और आयासेकुछ वार्त्ताहुईहो औरगाड़ी वानोंकी गवाहीसे मुझको इन्कारनहींहै जिन्होंनेबयान किया

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

है कि इमलगायकवारके महलमेंलेगयेमेरे कहनेसेयह मतलबहै और ऐडवकेट जनरलसाहबभी यही समझे हैं कि आश्चर्य नहीं जोइनलोगोंकी गवाही ठीक हो और आयाको सवार करके लेगये हैं। और आयागायकवारके नौकरोंकी मुलाकातकेवास्ते गई हो और उसने तरह २ के जटल काफियेउड़ाये हैं। परन्तु आया का यह बयान कि मैं महाराजासाहब के पासगई थी बिल्कुलगलतहै आयानेजोपुलिसके मेंडूजहारों अपनेजाने की तारीख वर्णनकीहै उसतारीखमें इखतिलाफहै क्योंकिआदलत मेंउसने कुछऔरबयान कियाहै मालूमहोताहैकि जबपुलिस नेउसपरसख्ती कीतोआयाने उनकीइच्छाके अनुकूल वर्णनकर दियायह अचीबबात हैकि आयाउसजमानेमें नहींगई जबकि नरसूऔर रावजीने अन्तकीबेरविषका बयानकिया है किनरसू और रावजीने ५—और ६—नवम्बरको विषदिया उन्हीं तारी- खोंकोआयासे भीजिक्रकियागया थाऔर उससेजो विषकेदिये जानेकाजिक्र कियाथा उसकोनरसू औररावजीके विषदेने से कुछतअल्लुकनथा आयासेकहागया था कितुम अपनी तौरसे अलगजहर दो कहीबयानहैकि आयानेबिल्कुलइन्कारकिया इसइन्कार परकमीशन कोलिहाजरहे शेखदाऊद कहता है दिवालीसे तीनचार दिन पहिले अर्थात् ५—६—७ नवम्बर को आयासेबातें हुईथीऔर आयाभी कहतीहैकि इनहींदिनोंमें मुझसे औरमहाराजा साहबसे बातेंहुईथी और विषदेनेका जिक्रआयाथा वहइसतरह अपनेबयानको लिखातीहै किमानो करनैलफियर साहबकी वजीरआजिमथी औरबड़ेरौबऔरबड़े मरतबेकी औरतहै कमीशन आपही विचारसक्तीहैकि उसका इजहार कुछठीक औरकुछ अशुद्धहैनौकरोंकाबुलानादोनों ओरसे हुवा करनैलफियरसाहब के नौकरों ने गायकवार के सेवकोंसे मेलकिया और गायकवारने करनैलफियरसाहब के नौकरों को बुलाया मालूमहोता है किकोई समय बड़ौदे में ऐसा बीताहै कि दोनोंओरसे खबरदेने वाले नौकर रक्खे गये

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सन् १८३० ई० से सरकारने तो खबर देने वालोंको नौकर रखना तो मौकूफकर दिया परन्तु शायद कारनैल फियरसाहबके विचार से यहबात अबभी उचितहै॥ आयाके इजहार खतमकरनेके पहिले बयानकरना चाहताहूं कि किस २ प्रकारसे बजारी अफवाह उड़ सक्ता है इस अफवाह को सुनकर गायकवार और कारनैल फियर साहब दोनों को चिन्ताहुई होगी सही है कि गायकवार जहां दीदा आदमी है परन्तु ऐसीखबरोंके सुननेसे चिन्ततहोगये होंगे और कारनैलफियर साहब का मुझको बड़ा आश्चर्य है कि यद्यपि वह ऐसीरियासत में ऐसे प्रतिष्ठित पद पर थे जो बजाय एक सलतनत के समझो जासक्ती है परन्तु उन्होने रुबलोगों कोबातोंकोसुना औरझूठेमनुष्योंसे मुंहलगाया उनकाएकखबरदेने वालामुख्य ऐसा मनुष्यथा जो गायकवार के प्राणका वैरीथा आयानेजो प्रथसबेर सूटरसाहबके रूबरू इजहारदिये उसमेंबीमारीका उसनेकुछजिक्र नहींकिया परन्तु उसकेपीछे वहरोगीहोगई औरअस्पताल कोभेजीगईआयाने वर्णन कियाहै किमैनेकिस प्रकार रमज़ान केमदोनेसे महाराना साहबसे बातेंकीं आया कायह बयानकितना लचर है १८-दिसम्बर कोजो आयाके इजहार लियेगये उसमें आयानेनहीं वर्णनकिया किमहाराजासाहबने मुझसे कुछविष देनेका जिक्रकियाथा और मुलाकातेंजो आयाकी महाराना साहबसे हुईं उन में केवल जादूका जिक्रहैजबआया अस्पतालमेंथीबीमारहोनेपरभीवड़ तूलसेइजहार दियेडाक्टर सीवर्ड साहब नेभीकुछ आयाका जिक्र कियाहै मालूमहोताहै किउनको आयाका बहुत बड़ा खयालथा इसबात कोवहमानतेहैं परन्तु मेरीबुद्धिकाम नहीं करतीकि उनकोआया काइतनाक्योंखयाल थाशायदआयामें कोईऐसीबातथी जिससे साहबकामनआकर्षितथा औरकिसी बातपर उनका मन मोहितहुवाहोगा परन्तु जबवहकमीशन केसम्मुखआई तोउसकी मायामई दृष्टिने किसी परकुछफलन

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

किया मुजको उसके देखनेका खूब मौका मिला परन्तु मुजपरभी असर न हुवा डाक्टर साहब जानते थे कि वह गायकवारके महलों में जाया करती थी परन्तु उन्होंने इसबातका कुछ बिचार न किया उसका इलाज एक डाक्टर साहब करते थे परन्तु फिरभी उन डाक्टर की इत्तिला के बिना उसके पास डाक्टर सीवर्ड साहब गये जब इसका कारण पूछा गया तो उन्होंने वर्णन किया कि वह डाक्टर साहब मेरे मित्र थे मुझे पूछनेकी कुछ आवश्यकता न थी बहरहाल वह आयाके देखनेको गये जब उसको देखा तो मालूम किया कि उसको कोई शारीरक रोग नहीं है केवल उसके हृदय पर सदमा है इस विषयमें डाक्टर सीवर्ड साहब खूब बयान करते हैं उन्होंने आयाको समझाया कि तुम अपने मनका हाल मुजसे कहो तुम्हारे दिलको तुम्हारे पेटको आराम हो जावेगा किसी समयमें उसे पलस्टर लगाया था और जब उसने अपने मनका हाल बयान कर दिया उसके लिये ऐसा मुफीद हुवा जैसे कि कैकी दवा दी गई फिर उसको आराम होगया डाक्टर सूटर साहब (इस जगह पर मिस्टर सूटर साहबको डाक्टर सूटर साहब कहना चाहिये) बुलाये गये और उन्होंने उसका इजहार लेकर उसका इलाज किया डाक्टर सीवर्ड साहब शारीरक रोगका इलाज करते थे और डाक्टर सूटर साहब रूहानी इलाज करते थे मैं विचारता हूं कि डाक्टर सीवर्ड साहब मिस्टर सूटर साहब से किस तरह कहते होंगे कि मेरे हाथसे जबतक वह आरोग्य न होगी इलाज किये जाऊंगा तुम उसका रूहानी इलाज करो क्योंकि उसका मन बेकरार है-निदान उसके इजहार लिये गये उसका मतलब यह था कि जब मैं तीसरी दफे महाराजा साहब के मन्दिरोंमें गई तो महाराजा साहबने मुझसे पूछा था कि साहबको कोई ऐसी दवा दी जासक्ती है जिससे मेरी उनसे प्रीति होजावे उसका बयान है कि गायकवार मुजको टटोलते थे मैं इस बातका उनको क्या उत्तर देती हूं अब मैं लार्ड चीफ जष्टिससे पूछता हूं कि आपने कभी ऐसा फिकरा किसीके इजहार में सु-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

नाहै टटोलनेका शब्द किसी आयाके मुखसे आपने सुना है परन्तु आयाने लज्जासे इन्कार किया सो विचारना चाहिये कि आयाने अपना इन्कार किस राहतसे डाक्टर सीवर्ड साहबके रूबरू बयान किया मैं अब भी कमीशनमेम्बरोंका खयाल रुजू करता हूं कि आपने कभी ऐसा झूठ सुना है कि आयाने कहा हो कि लाखों रुपये कर्नैल फियर साहबपर न्योछावर हैं आया अपने तईं बड़ी पण्डिता समझती है यह बेहूदा इड्डखो बाजारकी गप सुन २ कर बातें बनाया करती थी क्या महाराजा साहब को इतनी भी बुद्धि नहीं है जो ऐसी स्त्री से वह वार्त्ता करते उसके इजहार में जो थोड़ेसे प्रश्न किये गये उनसे मालूम हुवा कि उसका बयान बिल्कुल गलत है जो कुछ बातें हुई थीं तो शायद इतनी ही हुई होंगी कि कर्नैल फियर साहब पर कुछ जादू किया जाय कि वह मेरे वश हो जावें—प्रथम मिस्टर सूटर साहबके सम्मुख यह प्रश्न किया गया कि तू विषके देने का हाल भी जानती है—सो विचारना चाहिये कि पहिले ही ऐसी स्त्री से इस भांति का प्रश्न करना क्या जरूर था उसने ख्वाहमखाह उत्तर दिया कि मुझसे जिक्र आया था साफ जाहिर है कि मिस्टर सूटर साहबने उसको सिखाया और अकबर अलीने उसको धमकाया कि विषका जिक्र करना उसके इजहार आदिसे अन्त तक बिल्कुल वाहियात है मैं उसके इज़हार पर खूब ग़ौर करके यह बयान करता हूं कि उसके इजहार में कोई बात ग़ौर करनेके योग्य नहीं है—ऐडवकेट जनरल साहबने पूछा था कि गायकवार की रसोई सालिम और यशवन्तराव तक हो सक्ती है इस कहनेसे उनका यह मतलब था कि महाराजा साहब चाहते हैं कि सालिम और यशवन्तराव को अपना गवाह ठहरावें परन्तु मुख्य वृत्तान्त यह है कि महाराजा साहब ऐसी कारर वाई की कुछ परवा नहीं करते और उनके सलाहकार भी यशवन्तराव और सालिम थे उनको गवाही देनेकी सलाह नहीं देते बड़ा सन्देह है कि यह लोग दामोदरपन्तके साम्हने हों क्योंकि वह भी दामोदरकी तरह सवाल करते रहे और अपने स्वामीको लूटते रहे॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

शायद यहलोगभी दामोदरपन्थ के सदृश बयान करतेहैं मेरेदोस्त ऐडवकेटजनरलसाहबने शोचेबिचारेबिना उनगवाहों को बुलायाजिनकी प्रतिष्ठापर बदनामीका धब्बाथा इसलिये मालिमके बुलानेमें क्या उज्रथा और क्यों यशवन्तरावकीगवाहीनली यह शख्स रावजीसे बढ़कर दुष्टनहींहै यदिऐडवकेटजनरल साहबजानते कि यहलोग किसीबातकी सिदाकत करेंगेतो अवश्यही उनकोबुलाते अगर महाराजा साहबइन गवाहोंको बुलातेतो मैंकदाचित् बुलाने नदेता औरजोप्रतिष्ठितगवाहोंकी अवश्यकता होती तो और बहुत गवाह बहम पहुंच सक्तेथे मुजको गायकवार की ओरसे मुकद्दमे के खड़ा करनेकी जरूरत नहींहै किसी प्रतिष्ठित गवाहने गायकवार कोमाखूजनहीं किया मैंउनलोगोंकी गवाहीकभी नलेताजो थोड़ेदिनोंतक पुलिसमेंरहे—माईलार्ड—मैने इस मुआमिलेमें ठीककाररवाई कीहैयागलत मैनेबिल्कुलइन्कारकिया कियह लोगगायकवारकी ओरसे कदाचित् गवाहन ठहरायेजावेंगे गायकवारपर जोअपराध ठहरायेगयेथे उनसबका मैनेखण्डनकरदिया अबकोई जुर्म गायकवारपर बाक़ीनहीं रहा कोई गवाहीऐसी नहींगुजरी जिसकानिश्चय कियाजाता मैंकृतज्ञ हूं कि आप साहिबों ने मेरी तकरीर को गौर से सुना जो कुछकि बात्तीमुजसे होसकी मैनेकी मैंखूब जानताथा किइस मुकद्दमे मेंभी खण्डन करने की जिम्मेदारी है किसी मुकद्दमे मेंऐसा सबकाध्यान नलगा जैसाकि इसमुकद्दमेको सबसाहब गौरसे देखतेहैं और इसमुकद्दमेकी काररवाईपर अंगुश्तनुमाईकरतेहैं मेरेविचारसे ऐसीपदवीका मनुष्यजैसाकिगायकवारहैपहिलेहीबेर जुर्ममें गिरिफ़ार हुवाहै और उसकोऐसी काररवाईहुईहै? हिंदुस्तानकी इतिहासकी पुस्तक देखनेसेबिदितहोताहै किकैसे २ गवर्नरजनरल साहिबोंने अपने तौरसे रईसोंको दण्डदिया औरअनीतिकी परन्तु अब श्रीमान्वैसरायने उचितसमझा किजो एक रईसपर कलंकलगा है उसकी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

खूबतहकीकातहो और वास्तवमें ऐसे २ जोडनपर कलंकलगे उसकी तहकीकात होनी अवश्यथी इसीलिये अंगरेजी और हिंदुस्तानीरईसों कोयहमुकद्दमा सौंपागया॥

माईलार्ड—यहबात देखकर मुजको अति प्रसन्नता और धी-र्य्य प्राप्तहुवा यहमुकद्दमा बहुत बड़ाहै मेरे विचारसे हरएक कौंसलीइस मुकद्दमेको बड़ा मुकद्दमा,कहेगा मैंफिर कमीशन केमेम्बरोंका अतिगुण मानताहूं और कहताहूं कि आपयहन बिचारेंकि मुझसे बढ़कर और कोई स्पीच नहीं कहसक्ता है आपकृपा पूर्व्वक इजहारोंपर खूब गौरकरें उनसेसाफ जाहिर होजावेगाकि गायकवारनिपट निर्दोषहैं यहमनुष्य इनदिनों गद्दीसे अलग कियागया और उसकी दुर्दशाको उसकीप्रजाने देखाकिसी मनुष्यकी इतनीसामर्थ्य नहीं किउसकेपासजाकर उसकी सहायताकरे और धीर्य्यदेवा उनकेलिये कोई फायदे कीबात कहे॥

उन्होंनेसौगन्द खाकरवेन्नाब्हरीजाहिरकर टीमैंनेजोउसका कौंसलीहूं इसमुकद्दमे की सम्पूर्ण गवाहीको खण्डन किया अबइस बातकीइच्छा रखताहूं कि अंगरेजीनीतिके अनुकूल उनकान्याय चुकादियाजावे छोटेसेजेबकाटनेवाले को भीऐसे गवाहोंसे सजानहीं होसक्तीजैसे कि इसमुकद्दमेमें गुजरेफिर क्योंकरएक रईसगद्दीसे उताराजासक्ता है॥ऐडवकेटजनरलसा-हबनेकहा उत्तम होकि कमीशनके मेम्बर टिफनखाने के लिये उठेंफिरमैं अपनाएडरेसपेश करूंगायदि कमीशनीकीआज्ञा होतो अभी प्रारम्भ करूं फिर कमीशनके मेम्बरोंने टिफनखाने केलिये अदालतको बरखास्त किया॥

ऐडवकेट जनरल साहब का उत्तर।

कमीशनके एकत्रहोतेही मंडन ऐडवकेटजनरल साहब उठे और उन्होंने कहा—माईलार्ड चीफजष्टिस और कमिश्नर और दूसरे साहब अबमुजको उचितहै किमैं आप सबसाहिबों का

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

खयाल उनबातोंपर दिलाऊं जिनको सरजगटबेलनटायनसाहब नेअपनीविस्तृतस्पीचमें गायकवारकी ओरसेबयानकियाहैजो गवाहियां पेशहुईं उनकोदुरुस्त न समझताती मुजको इससमय उत्तरदेने में बड़ाकष्टहोता मुजको यह बात देखकर अत्यन्त धीर्य्यहुवा किमेरे एकयोग्यमित्रने गवर्न्नमेगटकी इसकारखाई अर्थात् कमीशन के नियत करनेको बहुत पसन्द कियाहैऔर उसीप्रकारसे उनके मवक्कलको भी पसन्दहै मेरेमित्रजानते हैं कि इसमुक़द्दमे की तहक़ीक़ात केवास्ते इसकमीशन सेबढ़कर दूसरीकोईरीतिनथी और जोइसकमीशनका फ़ैसलागायकवारकेप्रतिकूलहुवा तौभीगायकवारवा औरकिसीमनुष्यको शिकायतकामौकान होगा सरजन्टबेलनसाहबने कहा है कि इससे बढ़करऔर कोई कमीशन मैंनेनहीं देखीसरजगट बेलन टायनसाहबने अपनीयह लियाक़त जिसकेलिये वहमशहूरहैं सबइसमुक़द्दमेमें खर्चकीजो कमीशनका फ़ैसलागायकवारके प्रतिकूलहोगाती कोईमनुष्यनहीं कहसक्ता कि सरजगटबेलनटायनसाहबने मुकद्दमेको भलीभांतिखगडन नहींकियाअथवा थोड़े बोलनेसेइसमुकद्दमेकाफ़ैसला उनकीइच्छाकेविपरीतहुवा मेरेदोस्तनेकई जगहपर गायकवारकी हमदर्दी ज़ाहिरकी है परन्तु तारीफ़यहहैकिबावजूदहमदर्दी करनेके उनकीबात्तोंमें किसीप्रकारका अन्तरनहींपड़ा सरजगटबेलन टायनसाहब न केवलइंगलिस्तानमेंविख्यातहैंकिन्तु यूरुपभर उनकी उत्तमवाचालताकोजानताहै जोकुछकिउन्होंनेहमदर्दी ज़ाहिरकीनिश्चय है किसबलोगोंके हृदयपर उसकाअसरपड़ंचाहोगा इस लिये जो फ़ैसलाइसकमीशन काहोगा बहनकेवल संसारभर किन्तु श्रीमहाराजासाहब भी प्रसन्नतासे अंगीकारकरेंगेसरजन्टबेलनटायन साहबनेजोकुछ इसरईसके लियेवर्णन किया मुझकोभी सुनकर आश्चर्य्यहुवा क्योंकि सरल्यूइसपीलीसाहब नेवर्णन किया है कि महाराजासाहब प्रतिष्ठा पर्व्वक पहिरे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मेंहैं और यहबातदुरुस्तहै फिर उनपरक्यानुक्सहुवा और उनकीजायदाद थोड़े दिनोंके वास्ते कुर्क हुईहै इससेउत्तम और कोईकाररवाई नहींहोसक्तीथी मेरेदोस्त जानतेहोंगे किश्रीमान् गायकवारका राज्यसे मुअत्तिलकरना और उनकीजायदादका कुर्क होना उचित था गवर्न्नमेएट इण्डियाने यहसब बातें अपना कामसमझकर कीहैं, और उनबातोंकेकरनेसे किसीप्रकारकी जियादती समझीनहीं गईहै यदि ऐसा नकिया जातातो गवर्न्नमेएटइण्डियाके लिये यह समझाजाता किउसने अपना पूराकाम नहींकिया गायकवारकी ओरसे जोलेख पेशहुवाहै उसकामज़मून निहायत उमदाहै परन्तु उससंपूर्ण लेखका यहमतलब है कि मैंने अपराध नहींकिया और इस बयानकी तसदीक सौगन्दकी रूसे भी हुई इसलिये कमीशन के मेम्बरइस लेखको जैसाचाहें समझलें—केवलइतनाहोखयाल होसक्ताहै कि गायकवारने शायदऐसा कहाहो मैं अपने मित्रकी इस काररवाईपर कुछअंगुश्तनुमाई नहींकरना चाहता वास्तवमें मेरेमित्रनेइज़हार के खूबरग और पोस्तअलग किये उनकी तकरीरसे यहसाबितहुवाकि गायकवारने करनैलफियर साहब को विषदेना नहीं चाहा किन्तु पुलिस ने यहचाहा कि गायकवारपर अपराधलगे मुझकोपहिले से यह खयाल था कि सरजन्टबेलनटायन साहब इसमूलपर मुकहमे को खण्डनकरेंगे परयह निश्चय न था कि इसतरह साफ २ पुलिसको कलंक लगावेंगे वहकहतेहैं कि जितनीगवाहियांपेश हुईं वहसब पुलिसकी बनाई हुईहैं—अर्थात् गजानन्द वतिल अकबरअली—और अब्दुअलीकी बनाईहुईथी॥

मुझको आश्चर्य्य है कि मेरेदोस्तकोमिस्टरस्कूटरसाहब के इस दूलजाममें संयुक्तकरनेसेकुछसोच नहुवाकमीनकेमेम्बरोंकोस्मरण होगाकिसरल्यूइसपीलीसाहबनेवर्णन कियाथा कियहांआते-हो और हिदायतोंमेंसेमुझकोएकहिदायतयह भीमिलीथीकि

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

इसमुकद्दमेकी तहकीकातभी कराई जावे इस लिये उन्होंने गवर्न्नमेण्ट को लिखकर मिस्टरसूटर साहबको बुलायातथाच मिस्टर सूटर साहब ९—दिसम्बर को कुछ पुलिस के अफ्सरों सहितजिनका मैं ऊपरनाम लेचुका हूं यहांआये और कई लोग पीछेआये इसलिये उचितहै किउन लोगोंका कुछजिक्र किया जाय॥

अकबरअली ४४ वर्ष से नौकर है उसने सरकारी नौकरी सन् १८३१ ई० मेंकी और उमदा२ कारगुजारियोंके करनेसे उसकोसरकारसे खानबहादुरका खिताबमिला और इस ४४ वर्षकी अवधि में उससे कोई ऐसी बात नहीं हुई किसरजरुट बेलनटायनसाहब उसकोकलंकलगावें जबअकबरअलीअदालतके रूबरू आयातो हरप्रकार से पाक और साफथा अब्दुलअली जोअकबरअलीकापुत्रहै २० वर्षसे सरकारका नौकर है उसनेभीऐसे२ कामकिये किउसको सरकारसेखानबहादुरी का खिताबदियागया इसबीसवर्षकी अवसरमें उससेभी कोई ऐसाअपराध नहींहुवा कि सरजरुटबेलनटायन साहब कुछ वार्त्ता करसकें गजानन्दवतिल भी बहुत वर्षों से सरकारी नौकर है उसने भी अपनी क्रिया कौशिल्यसे रावबहादुर का खिताब पाया है॥

सरजरुटबेलनटायनसाहबको लोगोंने बहकायाकि गजानन्दवतिलसे कोटाकी रियासत कीगद्दी नशीनीके विषय मेंप्रश्न करने चाहियें यह मुकद्दमा मिस्टर कागलनसाहबके सम्मुख पेशहुवाथा और गजानन्दवतिल उसमें गवाहकी तौरपरथे॥

मिस्टरनहिस बेसाहबने जोअपने विचारांश का फिकरा लिखाहै उससेकुछ पुलिसको सम्बन्धनहीं है सोइनतीन सरकारीनौकरोंकी निसबतजोबड़ेयोग्य और अपनेसम्बन्धीक्रिया में कुशलहैं लोगोंने उनको सिखायाहै कि यहलोग गायकवार के शत्रुहैं और गायकवारपर मुकद्दमा साबित करनाचाहते हैं

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जोतोहमत किपुलिसके अफ़सरों को लगाई है निश्चय है कि कि कमीशनके मेम्बर उसका कुछ विचार नकरेंगे कोईवजह उनपर कलंकलगाने की नहीं है उन्होंने कोई काम ऐसानहीं किया है जिस्से उनकोलज्जा प्राप्तहो॥

मेरेदोस्त सरजन्टबेलनटायन साहबने बहुधायह भीकहा है कि लोगपुलिसके अफ़सरोंकोकलंकलगाते हैं परन्तु उन्होंने किसी का नाम नहीं लिया यदि सरजन्ट बेलनटायन साहब इस देशको जानते तो थोड़ीसी बातें जोउन्होंने मुंहसे निकालीं कदाचित् मुखपर न लाते विशेष कर ऐसी बातें जोपुलिस के लिये इलजाम की तौरपर कहीं हैं बहुतसे लोगों की राय पुलिसके लिये अच्छीनहीं है विशेष कर वहलोग अधिक तर नापसन्दकरते हैं जिनका चालचलन खराबहै वहलोग कभी पुलिसकोअच्छानहीं कहेंगे क्योंकि पुलिसकेलोग ऐसे२ लोगों की सर्व्वदादेखाभालीकरतेहैं मेरे मित्रकोलोगोंने सिखाया है कि मिस्टरस्टटरसाहब जानबूझकर उस कमरेसे चलेगयेजब कि रावजी की पेटी देखी जातीथी और उनकेचलेजानेसेयह प्रयोजनथाकि अगरपेटीकी तलाशी अकबरअलीको सौपूंगा तो उसमेंसे कोई नकोई वस्तु अवश्यनिकलेगी–सरजन्टबेलनटायनसाहब अतिप्रतिष्ठितमनुष्यको यह कलंक लगाते हैं मेरे विचारसे सरजन्टबेलनटायनसाहबके सलाहकार खराबयेयहां के लोग मिस्टरस्टटरसाहबको खूबजानतेहैं क्योंकि बहुकालसे वह यहांहैं और उनकोक्रियाकुशलतासे कम्पेनियन आफदी स्टारआफइण्डियातमग़ा मिलाहै चाहोयह तमग़ा छोटेदरजे का है परन्तु ऐसेहीतमग़े कमीशनकेमेम्बर पहिनेहुयेहैंचाहो वहतमग़े कुछ बड़े दरजे के पहिने हुये हैं इस बात को भी जानेदो यदिवह इंगलिश जन्टलमैन* हैं सरजन्ट बेलनटायन

---

* अर्थात् रईस॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

साहबको चाहियेथाकिउनकोऐसी तोहमतसेबरीरखतेपरन्तु उनको इसबातका भी कुछ विचार न हुवा ॥

मिस्टरसूटरसाहब को अपनी प्रतिष्ठा का बड़ा खयाल है जिस तरह मुझको और मेरे मित्रको अपनी २ प्रतिष्ठाका है कोईमनुष्य नहीं चाहताकि वह बदनाम हों ॥

सरजनवेलनटायनसाहबने जोइसप्रकार कीवार्त्तापिश्चकीहै उससेमुकद्दमेके खण्डनमें कुछमदद नहींहुई मिस्टरसूटरसा-हबकेलिये कदाचित् ऐसानहीं समझा जासक्ता किवह अपने आधीनो मनुष्योंके हाथमेंएक खिलौनाथे औरन यह खयाल होसक्ताहै किवहअपने हृदयमें गायकवार कीखराबीऔरअ-प्रतिष्ठाको चाहतेहैं यदिमिस्टर सूटर साहब की कार रवाई बुराईके योग्यहोतीतो जबउनकेइजहारमें प्रश्नकिये गयेथेतो क्योंउनको इलजाम नहीं दियागया तब सरजन बेलनटायन साहबकुछन बोले मैंनेबड़े अफ्सोसके साथ उनबातोंको सुना जोमेरे दोस्तने अपनीस्पीचमेंमिस्टरसूटर साहबके लियेवर्णन कीं उनपुलिस केअफ्सरोंकी काररवाई जिनको गवर्न्नमेण्टने इसमुकद्दमेमें नियतकिया था किसी प्रकारसे एतिराज और गुफ्तगूके लायकनहींहै गवर्न्नमेण्ट उनकीक्रिया कुशलताको खूबजानतीहै औरमुजको निश्चयहै जबखूबगौर किया जावेगा तो उनपर किसी प्रकार का अपराधन लगेगा मुझको अपने मित्रसे यहबातभी पूछनीउचितहै किपुलिस को गायकवार परमुकद्दमा खड़ाकरनेसे क्यालाभथा क्यामेरे दोस्तयहांइस बातके कहनेको आयेहैं किगवर्न्नमेण्टकीहिकमत अमलीयह थीकि अवश्यही मल्हरराव कोगद्दीसे उतारदे हालांकिऐसा बिचारनथा औरनहोगा पुलिसके लोगकेवल इसलिये आये थेकिवास्तवमें विषदियागयाथानहीं यदिबम्बईके पुलिसवालों को मल्हरराव कोगद्दीसे उतारनेकी इच्छाथी तोवहदर।मोदर पंचके द्वारासुगमता पूर्व्वक गद्दीसेउतार दिये जातेहालांकि पुलिसको गायकवार के खराब होनेसे कोई फायदा नहीं है

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

और कोई वजह गायकवार पर तोहमत रखने की न थी ॥

गवाहोंको गवाहीसे साफ़ प्रकट है कि जितनी तहकीकात हुई वह सब ठीक है इसलिये मैं चाहता हूं कि मेम्बरान् कमीशन अपने मनसे वह बातें दूर करदें जो पुलिसके लिये वर्णन की गई इस मुकद्दमेको पुलिसने नहीं बनाया है यदि पुलिसने गवाहों को सिखाया होता तो गवाह एकही बात कहते थोड़ासा जो अन्तर है वह कदाचित न होता इससे प्रकट है कि पुलिसने सिवाय अपने कामके और कोई काररवाई नहीं की पहिले थोड़ा पता लगाया फिर बहुतसे हाल मालूम हुये पहिले गाड़ीवालों से कुछ पता लगा था वह परस्पर बातें करते थे कि हम आयाको गायकवारके पास लेगये फिर दामोदरपन्थने इकरार किया जित नाहाल मालूम होता गया पुलिससेभी तहकीकात बढ़ती गई ॥

मेरे दोस्तने अपनी स्पीचमें शिकंजा आदिका वर्णन किया है कि पुलिसने गवाहोंको क्या कष्ट दिया परन्तु यह बात अद्भुत है कि पुलिसने इतनी सख्तीकी और इस सख्तीके लिये रेजीडन्सीका एक कमरा जो खानेके कमरेके बराबर है मुकर्रर था बहुधा सरल्यू इसपीली साहब वहां आया जाया करते होंगे क्या सरल्यू इसपीली साहबकोभी मेरे दोस्त इस सख्तीके करनेमें शरीक करते हैं यह कमरा अलग न था उसमेंसे सब लोगोंका आवागमन था पुलिसको कब ऐसी अवसर मिली जो गवाहोंपर सख्तीको मुझको निश्चय है कि इस विषयमें जो मेरे मित्रने वार्त्ता पेश की है उसको कमीशनके मेम्बर न मानेंगे जो न मानेंगे तो जो अपराध गायकवार पर धरा गया है तो वह ठीक है ॥

दूसरी बात यह है कि सरल्यू इसपीली साहब बड़े दिन की छुट्टियोंमें बम्बईको जाने वाले थे परन्तु जब उन्होंने सुना कि रावजीने किसी बातको कुबूल किया है तो उन्होंने अपना जाना मुलतवी किया यदि वह चले जाते तो कुछ तहकीकात न होती इस बातसे प्रकट है कि पुलिसकी इच्छा मुकद्दमेके खड़े करनेकी न थी—माई लार्ड—दूसरी बात जिसको मेरे मित्र वर्णन करते हैं यह

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

है कि बहुत से गवाह जो पेशहुये हैं वह गायकवारके संयुक्त ये इसलिये उनकीगवाही निश्चय मानने के योग्य नहीं है हर मनुष्य जो अदालत की कारवाई को कुछ भी जानता है वह जानता होगा कि ऐसी गवाही में बहुत से सन्देह हैं परन्तु इनलोगोंकी गवाही इसप्रकारसे लीगई कि किसीप्रकार का संदेह नहीं होसक्ता और हिंदुस्तान में कोई ऐसा कानून नहीं है कि मनुष्यकी गवाही जो अपराधमें संयुक्तहो ठीक समझीजावे—इङ्गलिस्तानमें यहरीति है कि जबकोई मनुष्य जो अपराध करनेमेंसंयुक्तहो गवाहीदेताहै तो जजसाहब जूरी को हिदायतकरतेहैं कि जबतक ऐसेमनुष्यके बयानकी सिदाकत नहोजावे तो जूरीउसका निश्चयनकरें परन्तु श्रीमान् लार्डचीफजष्टिस इसबात कोभी जानतेहोंगे कि यदि जजजूरी के लोगोंको ऐसीहिदायत नकरें तो कुछहानि नहीं है॥

हिंदुस्तानमें अगर अपराधीकेसम्बन्धीके बयानपर मुख्यअपराधीको दण्डदियाजावे तो वहअनरीति दण्ड नहीं है—मैंने इसको इसलिये कहाकि मेरेमित्र सरजन्टवेलनटायनसाहबने जोस्पीच दी उससे सबलोगों को मालूम होगया था किजर्म्म के शरीककी गवाही तसलीम के लायक नहींहै इसके विशेष इसमुकद्दमेकी गवाही बहुतकुछ होचुकीहै॥

मेरेमित्रने गायकवारकी कारवाई केलियेबहुतकुछ कहा है तोअर्थात्जबउनको मालूमहुवाथाकिकरनैलफियरसाहब को विष दियागयाहै तो उन्होंने रावजीका बयान नहींसुना था जबउनसे कहागया किआपका नामविषदेनेमें शामिलहै तो मेरेमित्रकहतेहैं कि महाराजासाहबकी बातेंनिर्दोष मनुष्यके सदृशथीं और उन्होंने रेजीडण्टसाहबके बुलानेके अनुसार उसीसमय सालिम और यशवन्तराव को भेजदिया परन्तु मैं कहताहूं किउनके भेजनेसे वहक्योंकर इन्कार करसक्तेथेदादाभाईनूरूजीको जोउनके दीवानथेसालिम और यशवन्तराव

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

केवास्ते लिखागया था—कुछ संदेह नहीं है कि उन्होंने महाराजा साहबको सलाह दी है कि आप दोनों मनुष्योंको भेजदीजिये इसकेसिवाय महाराजासाहब आपही जानतेथे कि इनलोगों का भेजना उचितहै और सिवाय, इसके और कोईबात अच्छी नहीं है महाराजासाहबकी इसकारवाईसे उनकी निर्दोषता प्रतीत नहीं होती इससेंभी संदेह नहीं है कि महाराजासाहब लड़ाईका निशान खड़ा कर सक्तेथे या भाग सक्तेथे परन्तु इनदोनों सूरतोंमें जुर्मका इकरार सुतसव्विर था इसलिये एशियाकेनि-वासियोंकी प्रकृतिके अनुकूल उन्होंने कारवाई की और ए-शियाहीके निवासी नहीं किन्तु हरमनुष्य जो ऐसी दशामें होता वह इसी तरह करता जैसाकि महाराजा साहबने किया सिवाय इसके और कोई उनको उपाय न था कि चुपचाप होकर मुकद्दमे का परिणाम देखें यदि दामोदरपंथके इजहार देखे जावें तो उनको खूब मालूम होगा कि गायकवारने क्या२ बातें कीं और वह क्यों चुप होरहे गायकवार पहिलेसे केवल यही बात नहीं जानतेथे कि ९-नवम्बर को विषदेने का उद्योग होगा किन्तु उनको यहभी मालूम हुवा कि उद्योग हुवा और निष्फल हुवा गायकवार इस मुआमलेकी कारवाई को गौरसे देखतेथे और और क्षणप्रति क्षणकी वह खबर मंगाते थे दामोदरपंथने वर्णन किया है कि कभी तो गायकवार प्रसन्न होतेथे और कदापि भय मान होते और महाराजाने रावजीकी बुद्धिकी बड़ी प्रशंसा कीऔर खुश हो २ कर कहतेथे कि मैं भले प्रकार जानता हूं कि तुमपर अपराध न लगेगा जब सालिम और यशवन्तराव रेजीडन्सीसे उनकेपास लौट आये तो गायकवारको कैसी प्रस-न्नता हुई परन्तु जबवह फिर बुलाये गये तो गायकवारको भय होगया और उनके भेजनेके समय उनको खूब समझा दिया कि तुम्हारे साथ जो चाहें करें परन्तु तुमको ईबातन कहना दरह-कीकत इनलोगोंपर गायकवार का एतिबार गलत न था क्योंकि उन्होंने अबतक कोई बात मुंहसे नहीं निकाली उन्होंने गायक-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

वारकी ओरसे कुछगवाहोभी नहींदो गवाहोंसे अबतककोई बातनहींपाई गईजिससे गायकवार कावरीहोनासाबित हो ओरन उनकीकिसी अपनीकारखाईसे पाया जाताहै किम- हाराजा साहबपरजो अपराधलगाहै वहगलत है उनपरजो चार दोषलगायेगयेवहयहहैं पहिलेमल्हररावने कारिन्दोंके द्वारा वा अपनेआपरेजीडन्सीके नौकरोंसे जो करनैलफियरसा- हबके पासथे गुप्त वार्त्ताकी किवहकिसो बुरे कामकाकरें ॥

दूसरे—क्यामल्हररावने रेजीडन्सीके नौकरोंकोकुछरिश्वत दी या दिलाई ॥

तीसरे—यहरिश्वत इसप्रयोजन सेदीया दिलाईकि करनैल फियरसाहबकेनौकर मुखबिरोंकी तौरपर कामदें किकरनैल फियरसाहबको दुःख पहुंचेवा बिषदेकर उनको मारडालें ॥

चौथे—क्यावास्तवमें करनैलफियर साहबको बिषदिये जाने काउद्योगकियागयाथा औरक्यायहबातमल्हररावनेसिखाईथी

माईलार्ड—तीसरे और चौथे अपराध में विषका वर्णनहै पहिलेऔर दूसरेजुर्ममेंरेजीडन्सीके नौकरोंकोरिश्वतदेनेका बयानहै जिससेकि उनको रेजीडन्सीकी खबरेंमिला करें मेरे दोस्तने अपनीसोचमें एकछोटे अपराधके लिये जिक्रकियाहै परन्तु जोबड़ा अपराधहै उसका कुछ जिक्रनहीं किया और जो गायकवारने लेख पेश कियाहै उसमें कुछ बातोंका इक़- रारभीहै और वहबयानयहहै—मैं सौगन्दखाकर वर्णनकरता हूंकिमैंने अपनेआप वाकिसीनौकरकेद्वारा करनैलफियरसाहब के प्राणलेने के वास्ते अथवा उनकेप्राणलेने के उद्योगसे विष नहींमंगाया औरनमैनेअपनेआप वाकिसी विश्वसित मनुष्यके द्वाराऐसेइरादेकी तरगीबदी और मैंबयानकरताहूंकि अमी- नाआया और रावजी और नरसू और दामोदरपन्थकीगवाही बिल्कुल गलत है ॥

और मैं यहभी कहताहूं कि मैंने अपनेआप किसी रेजी- डन्सीकेनौकरसे यहबातनहींचाहीकि मुखबिरकी तौरपरकाम

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

करें और रेज़ीडन्सीमेंजितनी काररवाई होतीहैं उसकीमुझ-
को इत्तिलादे न मैंनेइनलोगोंको इसकामके वास्ते रिशवतदी
नदिलाई ॥

मैं उन इनअामों का ज़िक्र नहीं करता जो समय २ पर
रेज़ीडन्सीके नौकरोंको दियेगयेपरन्तुजबकभी कोईविवाहच-
यवात्यौहारउत्सवा तो पारितोषकदियागया रेज़ीडन्सीकेनौकर
मेरे महलमें और मेरेमहलसे रेज़ीडन्सीको आतेजाते होंगे
परन्तु मैंनेइससुआमिलेमें वार्त्तानहींकी और न मैं जानता हूं
किरेज़ीडन्सीकेनौकरोंको कितना २ रुपयादियागया मैंनेकभी
इसबातकी आज्ञानहींदी कि ऐसाउपाय किया जाय जिससे
कि रेज़ीडन्सीकी खबरें मेरेपास आयाकरें ॥

माईलार्ड—आपको पूर्वोक्तवर्णन से मालूमहुआ होगाकि
वह यहनहीं लिखतेकि नमैंने अपनेहाथसे रिशवतदी नअपने
अपनेविश्वसित मनुष्योंसे रेज़ीडन्सीकेनौकरोंको [illegible]
बड़े २ जुर्मोंकेलिये लिखतेहैं और इसबातसे इन्कार करतेहैं
कि मैंनेस्वत: ऐसा नहीं किया परन्तु [illegible]
हैं उनकायह इकरार बहुतबड़ाहै उनकेसम्पूर्ण [illegible]
सारांशहैकिमैंनेस्वत:किसीनौकरसेकोईबुरी[illegible]
नमैंने अपनेहाथसे किसीकोरुपयादियापरन्तु [illegible]
से वह रुपयेकादिया जानाकहतेहैंकि [illegible]
दिलाया मुझकोउचित नहीं है कि [illegible]
उनखबरों मेंजो गायकवारके पासआईं और [illegible]
साहबकेपास पहुंचींक्या अन्तरहै [illegible]
मेंबड़ा अन्तरहै सरकारकी ओरसे [illegible]
पासजोलोग आतेथेवह [illegible]
परन्तुएकहिंदुस्तानी रईसका [illegible]
के नौकरोंको रिशवतदेना और बातहै और [illegible]
काररवाई बुरीबातोंके वास्तेकोभी रिशवतदेने [illegible]
साहब आपभी इकरारकरतेहैं और गवाहोंकी [illegible]

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उसकोसत्यता सूचितहोती है मुझकोनिश्चयहै कि कमीशन के मेम्बरोंको इसबात का आश्चर्य्यनहोगा किरेजीडन्सीके नौकर महाराजासाहब केपासगये और नइसबातमेंआश्चर्य्य है किजो अमीनाआयाने वर्णनकियाहरएक गवाहकाबयान ठीकहैकि नजरबागकी तरफसे रेजीडन्सीके नौकरगये और जिसकमरे मेंशीशे रक्खे हैं वहां महाराजासाहबसे मुलाकातहुई गवाहोंने यहनहीं वर्णनकियाहै किहमने गायकवार का सम्पूर्ण भवनदेखाहै और उसकोसैरकीहै एकबेर प्रश्नकिया गयाथा कितुमने कमरेंको भी देखाहै गवाहोंने इन्कार किया जिस कमरेका यहजिक्र करतेहैं उसीकमरेका जिक्रदामोदरपंथ भीकरताहै उससेबेहतर और कौनशख्स जाननेवाला होगा और इसबातकी सिदाकत इसतरहसे होतीहै कि उनदिनों महाराजासाहब उसीकमरेमें रहाकरतेथे आज मेरे मित्रने अपनी तकरीरमें यशवन्त और सालिमको कुछ बुराई की है यहदोनों मनुष्य गायकवारके नौकरहैं जब गायकवार रेजीडन्सीको जातेथे यहभी उनकेसाथहोतेथे इसलिये कुछआश्चर्य्यनहीं कि वह गायकवारके विश्वसित हैं और वह रेजीडन्सीकेनौकरोंसे मिलगयेथे मेरेदोस्त इसबातको मानतेहैंकि गाड़ीवालोंने जो इजहार दियेहैं उनमें कुछ एतिराज करें परन्तु आपसाहिबोंको स्मर्णहोगा कि पहिलेइस मुकद्दमेका पता एक गाड़ीवाले की जबानी लगाथा इसके लिये सरजन्ट बेलनटायन साहब कहते हैं कि आया महल के नौकरों से मुलाकात करनेके लियेगई होगीजोऐसा होताउसकोरात्रिके समयवहां जानेकी क्या जरूरतथी रावजीको सदैवभयथा और अपनेसाथकिसी नकिसीमनुष्यकोलेजाताथा कभीजुग्गाकोभी लेगया औरकभी कारभाईको मेरेमित्र कहते हैं कियहबात असम्भवितहै किऐसाबड़ारईसएक आयासेवात्तीकरे परन्तुजो हिन्दुस्तानी दरबारके नौकरहोतेहैं उनसेरेजीडन्सी केनौकरों सेबड़ा अन्तरहै एकदरबार कामुख्यनौकर अर्थात्दामोदरपंथ

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

महलमें नहीं रहताथा इसलिये मल्हरराव के। मुनासिब मालूम ज़ुवाकि रेज़ीडन्सीके नौकरोंसेसाज़िश करें ताकि वहां कीख़बरें मालूमज़ुवाकरें इसलिये राचिकेसमय उचितसमझा गया क्योंकि किसीको कुछख़याल नज़ुवाहोगा और जानते होंगेकि रेजी-डन्सीके नौकर अपने किसी कामको जाते हैं किसीमनुष्यको महा-राजासाहब के पासराचिकेसमय जानेसे कुछ गुमान नथा॥

मेरेमित्र अपनीतक़रीरमें यहबात पेशनहीं करतेकि ऐसे मौकेपर महाराजा साहबके बजाय और किसी मनुष्यने ऐसी बातें कीं होंगी और ऐसीगुफ़्तगूवह क्योंकरपेशकरते क्योंकिम-हाराजासाहबका पहिचानना कुछ ऐसाकठिननथाजिसमनुष्य नेएकबेरभी महाराजासाहबको देखा है उसको यादहोगा इस-लियेजो कमीशनके विचारसे सबगवाहोंकी गवाही गलत है तो आयाकी गवाहीभी गलतहै नहींतो उसकीगवाहीकी तस-दीक़ होगई है और तीनबेर आयाका गायकवार के निकट जानासही है परन्तु हां उनलोगोंने जोमहाराजासाहबसेबातें के होनेके इज़हारदियेथे उनकीसिदाक़त एकदूसरेकेबयान से होसक्ती है जोखत आयाने लिखवायेथे उनसेउसके इज़हार की बखूबीसिदाक़त होसक्ती है आयाने यहपच अपने पतिको महाबलेश्वर नगरमें भेजेथे जबकि वह बाहरथी और जबकी आया केघरकी तलाशी ज़ुई तबयह पच मिले उनपर हरएक डाकखानेकी मोहरहै क्याइन मोहरोंपर भी मेरेमित्र गजा-नन्दका नामदेखते हैं जबकि उन्होंने और जगहपर गजानन्द की कारखाईदेखी इनखतोंसे साबितहैकि महाराजासाहब से आयासेखतकिताबत होतीथी इससे साबितज़ुवाकि महा-राजासाहब और रेज़ीडन्सीकेनौकरोंमें खतकिताबत औरगुप्त वार्त्ताकिसी बुरेकामकेलिये होतीथी॥

इसबातका कदाचित् ख़याल नहीं होसक्ता कि एकरईस खानसामां आदिको इतनीरिशवतदेकि जोबातें मेज़परहों उन की ख़बरें वहपज़ुंचायाकरे इसकारखाईसे कोई उत्तम प्रयो-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जनहोविशेषकरके उससमयकी कारखाई जबकि मीडसाहब की कमीशन बड़ौदेमेंबैठथी—पसऐसी खबरोंकेमिलनेका प्रबन्ध कमीशनके दिनोंमेंरहा क्योंकि महाराजासाहब जानतेथेकि जैसी २ खबरें मुझको मिलें उसी प्रकारका मैं इन्तिज़ामकरूं यशवन्तरावनेभी और चिट्ठियोंमेंसे एकचिट्ठीकोतसलीमकिया किन्तुवहराजीथा कि जो गवाहीलीजावेतो वहअपने स्वामी के प्रतिकूलगवाही दे यशवन्तरावने वहदुकानशराबकीबताई जिसको महाराजागायकवारने जारीकिया था जबसरीफ से पूछागयातो उसनेभी बयानकिया कि एकबेर जबकि दामो-दरपंथ नथे तो महाराजा साहबने मुझसे एकचिट्ठीको पढ़-वाया जोरेज़ीडन्सीसे आईथी पढ़नेके उपरान्त जब दामोदर पंथआगये थेतोमैंने वहचिट्ठीउनकोदेदी वहकहताहैकि इस प्रकार की खत किताबत रेज़ीडन्सीसे हररोज़होतीथी ॥

दामोदरपंथभी इसबातकी तसदीककरता हैकि यहकार-रवाईरेज़ीडन्सीकी केवलरोज़मर्राकेबातोंकीनथी क्योंकिउस कीबड़ी २कारखाइयां हुईं क्योंकि दामोदरपन्थने वर्णनकिया हैकि रावजी यमुनाबाईकी अर्ज़ीचुरालायाथा और दामोदर पन्थने उसकीनकल लिखलीथी यहकाग़ज़ बहुत बड़ाथा और रावजीनेफिरउसको करनैलफ़ियर साहबकोमेज़पर लेजाकर रखदिया था—महाराजा साहबने पंखेवाले और हवालदार और आया और नौकरोंको इस प्रयोजनसे बुलवायाथा कि करनैल फ़ियरसाहब ऐसेछोटे २ नौकरोंके बुलानेमेंकुछशंका नकरेंगे उनकोइसबातका निसंदेहखयालथाकि जहांतक हो सकेफ़ियरसाहब और बोवीसाहबकी मेमकेरूबरू महाराजा साहबकी प्रशंसा कीजावे ॥

उन्होंने पेडरू खानसामां को भी बुलायाथा क्योंकि यह मनुष्यबहुत पुरानानौकरथा औरसाहबकी प्रकृतिखूब जानता था औरचूंकिवह खानसामांथा मेज़पर जितनी किबातें होती होंगीउनको सुनाकरता होगा ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

साईलार्ड—क्या आप समझते होंगे कि जो रुपया उनलोगों को दियागयाथा वहरिशवतमें नथा मेरे अतिप्रवीण मित्र कहते हैं कि पांचसौ रुपयेएक छोटीसी रकमथी हांकईलोग उसको थोड़ा रुपया समझते हैं परन्तु जिसमनुष्यका दसरुपये मासिक है उसकेविचारमें वहथोड़ारुपया नहीं है इसबातपर उज्रनहीं कियागया कियह रुपयारावजीको नहींमिला॥

दलपतराय मुहर्रिर इसरुपयेका दिया जाना साबित करता है यशवन्तरावको अपने पाससे रुपयेदेनेकी क्या जरूरत थी सरजन्टबेलनटायनसाहब ने कहा है कि यशवन्तराव एक छोटा आदमीथा और आश्चर्यनहीं कि दामोदरपन्थका नौकरहो—परन्तु मैंकहताहूं किउसको क्याप्रयोजनथा किवह रावजीकोखबरोंके मंगानेकेलिये रुपयादेता और इतनाबहुत रुपयाअर्थात् पांचसौका दियाजाना बहुतबड़ीबातहै॥

सरजन्टबेलनटायन साहब कहतेहैं कि यह पांच सौ रुपये तबदियेगये जबविषका कुछजिक्र नथा—कमीशनके मेम्बरोंको स्मर्णहोगा कि यशवन्तराव गायकवारका विश्वसित नौकर था और इसमनुष्यने रेजीडेन्सीके नौकरोंको महाराजासाहबके रूबरू पेश कियाथा इसलिये प्रकटहै कि जोरुपयाइन लोगोंको दियागया महाराजासाहबने दिया और दामोदरपन्थनेनहींदिया यहपांचसौ रुपयेरावजीको खबरोंकेपहुंचाने केलिये दियेगयेथे जबवह नौसारीसे लौटकर आयातो आठ सौरुपये उसनेपायेथे जोपरस्पर नरसूने और उसनेबांट लिये इससूरतमें दोमहीनेके बीचमेंबड़ी २ रकमें उन्होंने पाईं॥

यहरुपया महाराजासाहबके विचारमें अधिकनथा परन्तु जिनलोगोंका मासिकदसबारह अथवा चौदह रुपये होता उनके लिये बहुत है और चार २ पांच २ सौ यकमुश्तपाना निहायत गनीमत समझतेहोंगे पेडरूकहताहै किजबमैंगोवा कोजाताथा तोपचास रुपयेमुझको मिलेथे परन्तु यहजाहर नहीं कियागया कि यह रुपये उसको किस लिये मिलेहोंगे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

फिरशेखकरीमजो आयाके साथथावहभीमेजाकेकामपरनौकर थाजबवह आयाकेसाथ गयातो सौरुपये उसकोभी मिलेथे॥

दामोदरपन्थके हिसाबदेखतेही आपको मालूम होगा कि निजकेकोषसेइतनारुपयादियागया किसिवायरिशवतकेपारितोषकका सन्देह मात्र नहीं होसक्ता १९जनवरीसन् १८७४ई० को छ:सौ रुपये यशवन्तरावको दियेगये और उन्ही दिनोंमें यशवन्तरावने पांचसौ रुपये अपने नौकर दलपतको दियेथे और दलपतने बहोरुपये रावजीको दिये छ:सौ रुपयोंमेंसेसौ रुपये यशवन्तनेदस्तूरके मुआफिक इन मुआमिलोंके रखलिये आपको उस कागजके देखनेसे जिसपर (ए)अक्षरका नम्बर है मालूमहोगा कि हजाररुपया कोषसेदिलायागया यहरुपया तब दिलाया गयाथा जबकि महाराजासाहब नौसारीसे लौट कर आयेथे दूसराकागजदोसौरुपयेके दिलानेकेलियेहै जिस पर[एन]अक्षरनम्बर अ काचिन्हलगाहैउसकी तारीख१५ मई सन् १८७४ई० है यह रुपयावहहै नौकरीम और आया को दिलायागया सिवाय इसकेउनदिनोंकुछरुपयानिजके कोष से सालिमऔर यशवन्तराव को दियागया जबकि रेजीडन्सी के नौकर रुपये का पानाबयानकरते हैं इसबातका कुछ खयाल नहींहोसक्ता कि यहरुपया दामोदरन्थने अपनेकिसी कामके लिये सालिमऔर यशवन्तरावको दियाहो वा यहकिसालिम और यशवन्तराव दामोदरपन्थ के विश्वसित थे यद्यपि यह रुपया दामोदरपन्थ के कोषसे दिया गया परन्तु महाराजा साहब की आज्ञा से दियागया॥

यहप्रकटहै कि रावजीको अवश्यही रुपया मिला औरवजूहातसे पुलिसकेखयाल रुजूहोनेकी एकवजहयहभीथी उसने बहुतकुछ अक्टूबर और फरवरी और मार्चमें जेवर बनवाया इसमें सन्देह नहींकि यहरुपया गायकवारकेखजानेसेउनकी आज्ञाके अनुकूल रेजीडन्सीके नौकरोंको इसप्रयोजनसे दियागयाथा कि वहलोग खबरें पहुंचायाकरें श्रीमान्गायकवार

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

के उज़्रपर कुछ खयाल कियाजाताहै जबवह कहतेहैं कि रेज़ी-डन्सीकेनौकरोंसे मेरीकुछबातचीतनथी परन्तु इसबातसे इन्का-रनहींकरते कि किसीनकिसी प्रकारसे उनकोखतकिताबतथी उनकोइनआमदेनेसेभी इन्कारनहीं है इससे पारितोषककेदेने का जुर्म्म आपही अपनी जुबानी इक़रार करतेहैं—माईलार्ड मेरेमित्रने बर्णन कियाहै कि गायकवारके सम्मतीबड़ेखराबथे इसबातकोमैंभी मानताहूं वास्तवमें महाराजासाहबके सम्मती बड़े दुष्टथे मैं दामोदरपन्थकी ओरसेकोई उज़्रपेशनहींकरता॥

सरजन्टबेलन टायनसाहबने जोकुछ कहा उसको सुनकर मुझको दामोदरपन्थकी ओरसेक्रोधआया और नकुछअफ-सोसहुवा दामोदरपन्थने जोइज़हार दिये उससे मालूमहुवा किवह खराबआदमी है और उसने बुरे २ कामकिये परन्तु गायकवारको क्या कहाजावे कि उन्होंनेऐसेमनुष्यकोअपना प्राईवेटसीक्रेटरीनियतकिया औरबिषदियेजानेकीतहकीकात केप्रारम्भ होनेकेप्रथम उन्होंने सरल्यूइसपीली साहबके रूबरू पेशकरके कहाथा कियह मनुष्यमेरा प्राईवेटसिक्रेटरी और बहुत बिश्वसितहै क्यायह कहकरभी गायकवार इन्कार कर सक्तेहैं कि यहमनुष्य हमारा प्राईवेटसिक्रेटरी नथा औरजो कामइसने कियेउसमें हमारीआज्ञानथी—सालिम और यश-वन्तरावकेलिये सरजन्टबेलन टायनसाहब कहतेहैंकियहदोनों मनुष्यबड़े दुष्टथे उन्होंने दामोदरपन्थकी आज्ञामानी परन्तु ऐसाखयाल कबहोसक्ताहै किप्राईवेटसिक्रेटरीकी आज्ञामान-ते और महाराजासाहबकी आज्ञाउल्लंघन करते इसमें कुछ सन्देहनहींहै कि यहसब काररवाई हुईहै जो एक गवाहने ऐसावर्णनकियाकि सबकाम मैंनेअपनेस्वामीकीआज्ञासे किये तो कदाचित् उसको गवाही झूठनहीं होसक्ती मेरे मित्रने कहाहै किदामोदरपन्थ यशवन्तराव और सालिमने बिषदेने काउद्योग किया होगा और महाराजा साहब पर अपराध लगायापरन्तु यहबात नहींहै महाराजा साहबको इनलोगों

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

से बढ़कर और आदमी इस कार्य्य के लियेन मिलते अर्थात् एक प्राईवेटसीक्रेटर और दो बिश्वसित नौकर ॥

सरजन्टबेलनटायनसाहबने इसबिषयमेंसंदेहकेतौरपरकहा किशायद ९—नवम्बरकोकरनैल फियरसाहबको बिषदियागया औरतलछटकी रंगतकेलियेबहुतकुछवार्त्ता कीहैपरन्तु डाक्टर सीवर्डसाहबके इजहारसे बिषहोनेकी सत्यता सूचित होगई यद्यपि सरजन्टबेलनटायनसाहबने इसअम्रकेलिये बहुत कुछ बयानकिया परन्तुउनकी सबबातेंटघाहैं यदिकमीशनकेमेम्बर उसगवाही परगौरकरेंगे जिसमेंतलछट काजिक्रहै तोमालूम होगाकि जबगिलासमें तलछट देखागयातो वहस्याहीमाईल था औरउसमेंकुछ शर्बतभीथा चूंकि चकोतरे काशर्बतथाइस सेउसकीरंगतगुलाबीथी औरजबकरनैलफियरसाहबने उसको देखातो कुछबिषपी चुकेथे औरउनका शिर घूमरहाथा और नेत्रोंमेंअश्रु भरआयेथेसो करनैलफियरसाहबकी ऐसीहालतथी किवहभलेप्रकाररंगको पहिचानसक्ते डाक्टरसीवर्डनेनिस्संदेह तिलछटकोभलेप्रकार अवलोकनकिया औरएकबात औरहैकि जिस गिलासमें यहशर्बतथाउसकाली रंगस्याहीसाइलथायदि स्वेतरंग कीबस्तुभी उसमेंडालीजाती तोकालीहीदीखतीऔर मिस्टरअनवरारटीसाहबने वर्णनकियाहैकिकईलोगोंकोरंगत कीतमीजनहींहोतीहै गोकिकरनैल फियरसाहबनेयहगिलास तिरछाकरके तिलछटको देखाथानिश्चयहै किगिलासकीछाया इसतिलछट परभी पड़ीहोगी करनैलफियरसाहब का बयानहै जबकिवहबिषपियेहुयेथे जोकुछहोपरन्तु डाक्टरसीवर्डसाहब हरप्रकारसेसावधानथे उन्होंनेतलछटखूबगौरसेदेखाडाक्टरसा- हबकरनैलसाहबके बुलानेसेआयेथे जबउनसेतलछटकीपरीक्षा केलियेकहा गयातोउन्होंने जिसतरह उचितसमझा उसकी परीक्षाकी पहिलेजब उन्होंनेउसको प्रकाशमें देखातो उसकी 'गतभूरी प्रतीतहुई मेरेमित्र सरजन्टबेलनटाइन साहबराव'

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जीका बयानकहते हैंकि जबपुड़िया सुझको मिली थीतो उस कीरंगतस्याही माइलथी परन्तुयह बात सबको मालूम हैकि हिन्दुस्तानी आदमीरंगको खूबबयान नहींकरसके जबउससे प्रश्न कियागया किजो टोपियां अदालतमें रक्खी हैं उनमेंसे किसरंगकेअनुसारपुड़िया कारंगथातोउसनेउसटोपीकीतरफ सैनकीजिसकी रंगतभूरीथी जिसतरह किडाक्टरसीवर्डसाहब नेतलछटका इमतिहानकिया कुछसंदेह नहींकि इससे उत्तम आजमाइश होसक्तीथी और डाक्टरोंके मानिन्द आजमाइश की इसपरीक्षाके अनन्तरमालूम हुवाकिउसमें संखिया और हीरेकाचूर्ण हैडाक्टरसीवर्डसाहबने जलकीमैंडालकर संखिया निश्चयकी और खुर्दबीनसे पिसेहुयेहीरेकाहोनामालूम किया इससेबढ़कर संखिये की आजमाइश नहोसक्ती थी सहीहै कि डाक्टरसीवर्ड साहबने संखियेके छल्ले को जलाकर फिर उसको मूल रूपमें नहींलायापरन्तु इसछल्लेसे संखियेकाहोनासाबित होताहै यदिसंखियान होतीतो छल्लानपड़ता डाक्टरग्रे साहब नेकेवलएकही रीतिसेसंखियेकी परीक्षानली किन्तु कईप्रकार से उसको आजमाया और संखियेको अलगकर दिया इससेबढ़ कर और आजमाइश नहोसक्तीथी इनसबबातोंसे कमीशनके मेम्बरोंको खूब मालूम होगा कि ९—नवम्बरको शर्बत में विष मिलायागया और जबडाक्टरसीवर्ड साहबने जलके संयोग के पहिलेतलछटकोहिलायाथातोउसमेंसेगुबारसा मालूम हुवा॥

सरजान्वेलनटायनसाहब इस बात को साबित करना चाहते हैंकि तलछटमें संखिया नथी किन्तु डाक्टर साहब ने जो जल डाला था उसमें संखिया थी परन्तु उनकी यह दलील इस बातसे रद्द हुई कि गोविन्द ने अपने इजहार में वर्णन कियाहै कि मैंने पानीके कूजेको उसी दिनभरकर रक्खा था और मुखधोने की जो सुराहियां थीं उनमेंभी नवीन जल भरदियाथा फिर क्योंकर संखिया अथवा संखियेके सदृश कोई

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

से बढ़कर और आदमी इस कार्य्य के लिये न मिलते अर्थात् एक प्राईवेटसेक्रेटर और दो विश्वसित नौकर॥

सरजन्टबेलनटायनसाहबने इसविषयमेंसंदेहकेतौरपरकहा किशायद ९-नवम्बरकोकरनैल फियरसाहबको विषदियागया औरतलछटकी रंगतकेलियेबहुतकुछवार्त्ता कीहैपरन्तु डाक्टर सीवर्डसाहबके इजहारसे विषहोनेकी सत्यता सूचित होगई यद्यपि सरजन्टबेलनटायनसाहबने इसअम्बकेलिये बहुत कुछ बयानकिया परन्तुउनकी सबबातेंदृथाहैं यदिकमीशनके मेम्बर उसगवाही परगौरकरेंगे जिसमेंतलछट काजिक्रहै तोमालूम होगाकि जबगिलासमें तलछट देखागयातो वहस्याहीमाइल था औरउसमेंकुछ शर्बतभीथा चूंकि चकोतरे काशर्बतथाइस सेउसकीरंगतगुलाबीथी औरजबकरनैलफियरसाहबने उसको देखातो कुछबिषपी चुकेथे औरउनका शिर घूमरहाथा और नेत्रोंमेंअश्रु भरआयेथेसो करनैलफियरसाहबकी ऐसीहालतथी किवहभलेप्रकाररंगको पहिचानसक्ते डाक्टरसीवर्डनेनिस्संदेह तिलछटकोभलेप्रकार अवलोकनकियाऔरएकबात औरहैकि जिस गिलासमें यहशर्बतथाउसकाभी रंगस्याहीमाइलथायदि श्वेतरंग कीवस्तुभी उसमेंडालीजाती तोकालीहीदीखतीऔर मिस्टरअनवरारटीसाहबने वर्णनकियाहैकिकईलोगोंकोरंगत कीतमीजनहींहोतीहै जोकिकरनैल फियरसाहबनेयहगिलास तिरछाकरके तिलछटको देखाथानिश्चयहै किगिलासकीछाया इसतिलछट परभी पड़ीहोगी करनैलफियरसाहब का बयानहै जबकिवहविषपियेहुयेथे जोकुछहोपरन्तु डाक्टरसीवर्डसाहब हरप्रकारसेसावधानथे उन्होंनेतलछटखूबगौरसेदेखाडाक्टरसा-हबकरनैलसाहबके बुलानेसेआयेथे जबउनसेतलछटकीपरीक्षा केलियेकहा गयातोउन्होंने जिसतरह उचितसमझा उसकी परीक्षाकी पहिलेजब उन्होंनेउसको प्रकाशमें देखातो उसकी रंगतभूरी प्रतीतहुई मेरेमित्र सरजन्टबेलनटाइन साहबराव

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जीका बयान कहते हैं कि जबपुड़िया मुझको मिली थीतो उस कीरंगतस्याही माइलथी परन्तुयह बात सबको मालूम है कि हिन्दुस्तानी आदमीरंगको खूबबयान नहीं करसक्ते जबउससे प्रश्न कियागया कि जो टोपियां अदालतमें रक्खी हैं उनमेंसे किसरंगके अनुसारपुड़िया का रंगथा तोउसनेउसटोपीकीरतफ सैनकीजिसकी रंगतभूरीथी जिसतरह किडाक्टरसीवर्डसाहब नेतलछटका इमतिहानकिया कुछसंदेह नहीं कि इससे उत्तम आजमाइश न हो सक्तीथी और डाक्टरों के मानिन्द आजमाइश की इसपरीक्षा के आनन्तर मालूम हुवा कि उसमें संखिया और हीरेका चूर्ण है डाक्टरसीवर्ड साहबने नलकीमेंडालकर संखिया निश्चयकी और खुर्दबीनसे पिसेहुयेहीरेका होनामालूम किया इससेबढ़कर संखिये की आजमाइश नहोसक्ती थी सही है कि डाक्टरसीवर्ड साहबने संखियेके छल्लेको जलाकर फिर उसको मूल रूपमें नहींलायापरन्तु इसछल्ले से संखियेका होनासाबित होताहै यदिसंखियान होतीतो छल्लानपड़ता डाक्टरग्रे साहब नेकेवलएकही रीतिसेसंखियेकी परीक्षानली किन्तु कईप्रकार सेउसकोआजमाया और संखियेको अलगकर दिया इससेबढ़ कर और आजमाइश नहोसक्तीथी इनसबबातोंसे कमीशनके मेम्बरोंको खूब मालूम होगा कि ९—नवम्बरको शर्बतमें विष मिलायागया और जबडाक्टरसीवर्ड साहबने नलके संयोग के पहिलेतलछटकोहिलायाथातोउसमेंसेगुबारसा मालूम हुवा॥

सरजन्टवेलनटायनसाहब इस बात को साबित करना चाहते हैं कि तलछटमें संखिया नथी किन्तु डाक्टर साहब ने जो नल डाला था उसमें संखिया थी परन्तु उनकी यह दलील इस बातसे रद्द हुई कि गोविन्द ने अपने इजहार में वर्णन कियाहै कि मैने पानीके कूजेको उसी दिनभरकर रक्खा था और मुखधोने की जो सुराहियां थीं उनमेंभी नवीन जल भरदियाथा फिर क्योंकर संखिया अथवा संखियेके सदृश कोई

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

होता कि तांबेका जौहर शर्बत में डालागया होजो तलछट डाक्टरग्रेसाहब को भेजागया और फिर खुरचकर मट्टी भेजी गई उसमें डाक्टर साहबने ढाई चावल संखिया निकाली थी करनैलफ़ियर साहबकी गवाहीसे खूबसाबित होगयाकिउस समयसे जबसे कि उन्होंने शर्बत पियाथा और उससमयतक किउन्होंने डाक्टरसीवर्ड साहबको तलछटदी किसीमनुष्यको गिलासके पासजाने और हाथलगानेका मौक़ा नमिलाथाफिर क्योंकरउसमें कोई वस्तु पड़सक्तीथी इससे प्रगटहै कि करनैल साहबके पलटनेके पहिले(हवाखोरीसे)गिलासमें संखियाडाली गईदूसरी एकबात जिसपर कि कमीशनके मेम्बरोंका खयाल रुजूकरना चाहताहूं यहहै किजो मानाजावे कि ९ नवम्बरको करनैलफियर साहबके गिलासमें बिषडालागया तो यहबात बुद्धिमें नहींआती किछोटा आदमीउनके गिलासमें हीराऔर संखियाडाले जिस मनुष्यने हीरेका चूर्ण डालावह बड़ारुपये वालाहोगा किन्तुयहबातभी साबितहुई किवह शख़्सजानता था कि जितनीजरूरतहो रुपयाखर्च कियाजावे परन्तु मेरीजो इच्छाहै वहकिसी भांति पूर्णहो सरजन्हबेलनटायनसाहब ने इस बातमें तक़रीरकी है कि भावपूनाकर वा दामोदरपन्थने हीरा और संखिया करनैलफ़ियर साहबके गिलास में डाला परन्तु किसीभांतिसे नहीं होसक्ता कि ऐसी बहुमूल्यवस्तु यह लोगडालतेपरन्तु हां होसक्ताहै कि गायकवारने हीरेका चूर्ण डालाहो उनको निश्चयथा किजो करनैलफ़ियर साहबकोहीरा दियाजावेगा तो शीघ्रही मरजावेंगे क्योंकि वह जानतेथे कि हीरा निहायत मोहलकशैहै गायकवारकोहीराऔर संखिया दोनोंमिलसक्तेहैं संखियाहर मनुष्यको मिलसक्तीहै परन्तु हीरा बड़ीक़ीमती चीजहै इतनारुपया और कौनशख़्स खर्चकरसक्ता था अबमालूम हुवाकि एक मनुष्यने किसी हेतुके बिनाआठ पौंड संखिया मोल लिया परन्तु बड़ौदे में संखियेके मिलनेमें

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

दिक्कत होतीहै और सरजन्टबेलनटायनसाहब ने कहा है कि फौजदारीके महकमेके सिवायऔर कहीं संखियानहीं मिलतीहै और दामोदरपन्थने एकरुक्का पेशकियाहै जोउसीकेहाथ का लिखाहै और वह कहताहै किमैंने महाराजा साहब की आज्ञासे इसकागज़को लिखाया इस कागज़में ४ अक्तूबरसन् १८७४ ई० लिखीहै उसपर गणपतिराव और यशवन्तरावके दस्तखतहैं उसमेंयहभी लिखा हुवाहै कि फौजदारीसे आज्ञा केबिना संखिया नहीं मिलसक्ती है दामोदरपन्थने इसबातको सबित कियाहै कि अरदासियर वदिया फौजदारने कहा कि मैं महाराजासाहबसे पूछकरसंखिया दूंगा मिस्टर इरमुजनी अति प्रतिष्ठित मनुष्य हैं वह गत सप्ताह में बड़ौदेको आयेथे वहमुक़द्दमेके खण्डन करने के लिये नहीं बुलाये गयेथे परन्तु फिरभी वह कह सक्ते हैं कि दामोदर चिल्वक को फौजदारसे संखियानहीं मिलीथी और जोउसने अदालतमें पेशकिया है वहठीकहै—संखियेके मंगानेके लियेघोड़ेकी खारिशकाबहाना किया गयाथा परन्तु हक़ीकतमें साबित होगया कि करनैल साहबको देनेके लियेसंखिया मंगाईगईथी महाराजासाहब ने उसकागज़पर इसलिये दस्तखतनहीं कियेकि अगरमैंदस्तखत करूंगातो तहक़ीक़ात होनेपर मुझपर मुक़द्दमाखड़ा होजावेगा इसलिये उन्होंने दामोदरपन्थ से कहा कि जहांसे होसके संखियाले आओमेरे मित्रकहतेहैं किहीरेगायकवारके पास नथेजोबाहरसे मंगवायेगये उनदिनोंमें एकतलवारके मियान कब्जेपर हीरेजड़े जातेथे परन्तु कमीशनके अधिष्ठाताओं को खूबमालूम करनाचाहिये किकितने हीरे इस तलवारके कब्जे और मियानमें खर्चहुये होंगे क्योंकिजो कारीगर इसकब्जेको बनातेहैं वहीहीरोंके खर्चोंका हिसाबरखते होंगेऔरउनको भयहोगा कि अगर कोई हीराणुम होगया तो हम लोगपूछे जावेंगे औरजो कनीहीरेकी फ़तहचन्दसे मोल लीगई वहइस

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

वास्ते मोल लीगई कि तलवारके कब्जेपर लगाई जावेगी यह एक धोखाथा हालांकि वह पीसकर करनैलफियर साहब के शर्बतमें डालीगई मेरे दोस्तने फतहचन्द की गलतियां करनैल फियर साहब की गलतियों के सदृश बयान की है और कहतेहैं कि जिसतरह करनैल साहब इज़हार के वक्त घबरा गये थेउसीभांतिसे हेमचन्द फतहचन्द घबरागया होगा क्याखूब कहांकरनैल फियरसाहब की पदवी और कहां हेमचंद फतहचंदकी हैसियत—मेरेमित्र कहतेहैं कि दसहरेके दिनोंमेंआज्ञाहुईथी किहेमचंद फतहचंदछोटे २ हीरेलाकर पेशकरेतथा वह और जौहरीहीरे लाये अब फतहचंद कहता है कि वह हीरेमुझको लौटादिये गये परन्तु दामोदरपंथ कहताहै कि हीरेरखलिये गयेथे हेमचंद और दामोदर पंथ दोनोंने कहा हैकिजब हीरेनिकालेथे हमकोमालूम नथाकि क्योंमंगाये थे दामोदरपंथ और नानावतिल जोजवाहर खानेके दारोगाहैं और आत्माराम और रघुनाथजो जवाहरखानेके मुत्सुहर्रर हैं वहसाबित करतेहैं कि हीरेमोल लियेगये दामोदर पंथने इसविषयमें ऐसावर्णनकिया हैकि हरगिज ऐसा नहींहोसक्ता इसलिये साबितहुवा कि २० अक्टूबर सन् १८७४ ई० कोहीरे कीकनी खरीदीगई ॥

सरजान्बेलनटायनसाहब ने उसका इस प्रकार से खण्डन कियाकि हेमचंदकहताहै कि मुझको हीरे कीकनी वापिस मिली और फिरनदीगई इससे साबित हुवा किहीरे कीकनी और संखियाजो करनैलफियर साहब की शरबतमें मिलाया गया महाराजासाहब के यहां उनही दिनोंमें खरीदा गयाथा जबकि रावजी और नरसूकहतेहैं किहमको पुड़ियामिलीथीं, कोईतकरीर ऐसीपेशनहीं होसक्ती जिससेउन लोगोंकाबयानगलत होसके—सरजान्बेलनटायनसाहब नूरुद्दीन बोहरेका बहुतकुछ जिक्र करतेहैं और कहतेहैं किअगर नूरुद्दीनबोह-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

देसे दामोदरपंथने संखिया मोललीथीतब वहबात्स दामोदर पंथ के इजहार की सिदाकत के लिये क्यों नहीं बुलाया गया परन्तु मैं कहता हूं कि यदि मेरे मित्र चाहते तो नूरुद्दीन बौहरे को दामोदरपंथ की गवाही के खण्डन करने के लिये बुला सक्ते थे मैंने नूरुद्दीन की गवाही का लेना कुछ अवश्य न समझा अगर सरजन्टबेलनटायनसाहब चाहें तो उसकी गवाही अबमैं लेसक्ताहूं वह कहते हैं कि नूरुद्दीन गायकवार का शत्रु था परन्तु मालूम नहीं होता कि नूरुद्दीन का बैर गायकवारसे क्योंकर साबित होसक्ताहै सुनाहै कि नूरुद्दीन बौहरा जबकि पहिले कमीशनजमा हुईथी नालिशीथा परन्तु यहसाबित नहींहुवा कि उसकी नालिशकी समाअत हुईथी वा नहीं खैरइससे कुछप्रयोजन नहीं कि नूरुद्दीन गायकवारका शत्रु था वा नहीं परन्तु सरजन्टबेलनटायनसाहब ने उसकी गवाही क्योंनहींली और दामोदरपंथके इजहारको क्योंखण्डननहींकिया क्योंकिगायकवारके जितनेवकीलहैंजिस मनुष्यके पासचाहें जासक्ते हैं इसीतरह नूरुद्दीन के निकट भी जासक्तेथे और उससेहाल पूछसक्तेथे परन्तु जब दामोदरपंथ केइजहार खण्डननहींहुये तो उसके इजहार कायमरहे नूरुद्दीनका बुलानावन बुलाना सरजन्टबेलनटायनसाहबके तअल्लुकथाजोउसका बुलानामेरेजिम्मे होतातो मैंबुलाता कमीशन केमेम्बरोंनेइसविषयमें दोनोंओरकी तकरीरकोसुना जोकुछउनकी रायहोगी वहजियादह मुनासिब होगी माईलार्ड अब कमीशनके मेम्बरोंका खयाल दूसरीतरफ रुजूकरताहूं वहयह हैकि ९ नवम्बरको कर्नेलफियरसाहबकाविष दियाजानामैंने साबितकरलियाऔर यहभीजाहिरहैकि जिनतारीखोंमेंहीरे औरसंखियेकेखरीदकाजिक्रहैलोगोंनेबयानकियाकिउन्हींदिनोंमें महाराजासाहबकेनौकरोंके पासउन्हींकी आज्ञानुसार यहसब वस्तुउपस्थित थींइसलिये साबित हुवा कि आपहीम-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

हाराजासाहबने इनवस्तुओंको मंगायाथा जोवहनमंगातेतो क्योंकरनौकरों केपासइन चीजोंकाहोना साबित होता यह बातभी गवाही सेसाबित हुई किचाहो साखिमने रावजीको यहपुड़ियादीथीं और रावजी ने ९ नवम्बरको करनैल फ़ियर साहबके शरबतमें उनकोडाला—सबगवाहीमें रावजीकानाम लियागया दूसरेकिसी शरबतका जिक्रनहीं हुवा चारप्रकार केगवाह इसमुकद्दमेंके कायमकरनेके वास्ते ठहराये गयेहैंजो करनैलफ़ियर साहबको विषदेसक्ते हैं पहिलेरेजीडन्सीके नौकर उनकेलिये मेरेमित्रने वर्णनकिया है किवहअपने हाकिम सेराजीथे वहक्यों उनकोविष देतेपरन्तु उनकीतकरीर सेयह बातभी प्रकटहोती है किवह इसविषदेने के कुछबानी मुबानीनथे—और किसीबैरसे उन्होंने विषनहींदिया जोदिया लोभ सेदिया॥

दूसरे—भावपूनाकर—मैंनहीं कहसक्ता किजहर खूरानीकी तोहमत उसपरक्योंकर होसक्तीहै मैंनेकितनाही गवाहीपर गौरकिया परन्तु उसके लियेकोई इशारह भी नहींपाया गया और मुझको इसकीभी कोईवजह मालूमनहीं हुईकिमेरेमित्र भावपूनाकर को गायकवार कावैरी ठहराते हैं और कहते हैं कि करनैल फ़ियर साहब सदा उसकी बातें सुना करते थे और वह उनका जासूस था भावपूनाकर और करनैलफ़ियरसाहब दोनों की गवाहीलीगई थी कोईबात ऐसी मालूम नहींहुई जिससे भावपूनाकर पर अपराध लगायाजावे किन्तु साबित हुवा कि यह शख्स प्रतिष्ठित और बिश्वसित है और मुद्दतसे बड़ौदेमेंरहताहै उसनेअनेक प्रकारकी नौकरीभीकी और उसकेकाममेंभी कोईकसूर नहीं हुवा—इनदिनों वह सूरतदेशमें मिस्टरहोपसाहबका एजन्टहै और जुल्फ़िक़ारअली असमर्थ बालकके रियासतके प्रबन्धके लियेजो रियासतबड़ौदे मेंहै नौकरहै यदियह मनुष्यविश्वसित नहोता तोमिस्टरहोप

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

साहबउसको क्यों नौकररखते–भावपूनाकर एकचिट्ठीसिफा-रशको करनैलफियर साहबके नामलायाथा मिष्टरहोपसाहब ऐसेहाकिम नहींहैं किजो यहमनुष्य योग्यन होता तोउसकी सिफारिश करते वह कदाचित् ऐसे मनुष्यको नौकर नरखते भावपूनाकर का केवल मिष्टरहोपसाहब कोही निश्चय नहींहै किन्तु बहुतसे साहूकार और सरदारोंका वहनौकर रहायह शख्समुद्दतका नौकरहै और मीरजाफरअलीके पुत्रकीरियासत काइन्तिजाम करताहै उसनेजो कुछ कारखाई की वह सब को मालूमहै किसीमनुष्यको उसकेकामपर एतिराज नहींहै किन्तु हर मनुष्य उसकी प्रशंसा करताहै जब करनैल मीड साहब की कमीशन इकट्ठी हुई तो इस मनुष्य ने अपने सब-कलों की तरफसे चारदावे गायकवार पर पेश कियेथे और यह बात कि करनैलफियर साहब उसकी हरएक बात को सुनतेहैं जबउससे यहप्रश्नकियागया कि करनैलफियरसाहब केपासतुमजातेथेतो उसनेकहा हां मैंबहुधाजाताथा औरजब सरजन्टबेलनटायनसाहबने करनैलफियरसाहबसेयहीपूछातो उन्होंनेभी उत्तरदियाकि हांमैंइस मनुष्यको प्रति दिन देखा करताथा और वह अपनेकार्य्यकेलिये आयाकरता था दोनों मनुष्योंने साफ २ उत्तर दिया सरजन्टबेलनटाइनसाहबने जो कहाहै कि इस मनुष्यने खरीतेके तैय्यार होनेकी इत्तिला दी यहबातभी कुछआश्चर्य्यकीनहींहै क्योंकि वहहरएक सरदार आदिकेपास जायाकरताथा और सरदारलोग दरबारमेंजाते थे इसशख्सने सरदारोंसे सुनकर करनैलफियर साहबसेजिक्र कियाहोगा उसने यहनहींकहा कि खरीतेका मजमून क्याहै क्योंकिउसका मजमून नजानताथा इस इत्तिलाके देनेमें कौ-नसीबुरीबातहुई क्योंकि खरीता रेजीडण्टसाहबके द्वाराभेजा जाताथाऔर यहरीतिहै किसबखतकिताबत सरकारीरीतिसे गवर्न्नर बम्बईवा गवर्न्नरजनरलसे होतीहैतो रेजीडण्ट साहब

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

केद्वारा होती है और सदैव उसके साथ अंगरेजीमें तर्जुमा होता है सिवाय इसके और कोई बात भावपूनाकरकी नहीं है नहीं मालूम कि मेरे दोस्त भावपूनाकर पर क्यों अपराध लगाते हैं यह बात उनको कहने के योग्य नथी कि भावपूनाकर करनैल फियरसाहबका जासूस है और जो कुछ वह कहता था करनैल साहब करते थे यह हुक्म उनका निहायत सख्त है क्या उन्होंने करनैल फियरसाहब को कठपुतली ठहराया था कि जिसतरह भावपूनाकर चाहता उनको नचाता इस विषयमें कमीशनको खूब ध्यान देना चाहिये और भावपूनाकर के लिये जो खयाल हों उनको कमीशनके मेम्बर दूर करदें क्योंकि भावपूनाकर की मनसे यही इच्छा होगी कि करनैल फियरसाहब बड़ौदे में रहें और सहीसलामत रहें न यह कि उनको विष देकर मारडालें और कबरमें गाड़ें इससे वह मेरे मित्रका कच्चा खयाल रह हुवा जो उन्होंने वर्णन किया कि वह चाहता था कि संखिया दिया जावे और जब उसे पीनेनपायें कि मैं उनको खबर करदूं जो ऐसा होता तो दोहरी खूराक संखियेकी जो दीगई नदीनाती और भावपूनाकर विषके पीने पर दौड़ा आता और गिलासको करनैलसाहबके हाथसे छीनकर नपीने देता न यह कि करनैल फियरसाहब शरबतको कुछ पीकर कुछ फेंकचुके और तलछट डाक्टरसाहब को दे चुके और हाजिरी के खानेका वक्त बीतगया तब भावपूनाकर नेभी संखियेका कुछ जिक्र न किया किन्तु करनैलफियर साहबनेही उससे कहा था इसलिये यह बात बिल्कुल गलत है जो खयाल किया जावे कि भावपूनाकरको इस मुआमलेसे कुछ सम्बन्ध था ॥

सरजन्टबेलन टायन साहब नेकईबेर अपनी स्पीचमें यह जिक्र किया कि दामोदरपंथ चाहताथा कि करनैल फियर साहबको विष दें ताकि जो हिसाब निजके गायकवारके हैं उनको वह न देख सकें क्योंकि तोहमत लगाई गईथी कि दामोदर पंथने

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बहुतकुछ लेलिया था और यह खबरभी उड़ीथी कि करनैल फियरसाहब हिसाबकी किताबें मंगवानेवालेहैं इसलियेमेरे मित्रकहतेहैं कि यहवजह बहुतबड़ीथी कि दामोदरपन्थ करनैलफियरसाहब को विषदेना चाहता परन्तु जितने इजहार लियेगये उनमें इसबातका कहींजिक्र नहींहै—कमीशनकेमेम्बरोंको खूबमालूम होगा कि गायकवारके निजके हिसाबोंका मंगवाना असम्भवितथा करनैलफियरसाहबको गायकवार के निजकेमुआमलोंमें दखलदेनेका अखतियारनथारेजीडण्टसाहबको सरकारनेजितने अधिकार दियेहैं उनमें इसबातकाजिक्र नहींहैकि और कामोंमेंसे रेजीडण्टसाहबका यहभी एककामहै कि महाराजासाहबके निजकेहिसाबोंको देखाकरें दामोदरपन्थके हिसाबकिताबको गायकवारके निजके हिसाबसे तअल्लुक था इसलिये दामोदरपन्थको कुछभयनथा कि करनैल फियरसाहब उसकीकिताबोंको मंगाकर जांचकरेंगे जो करनैलसाहबकिसीहिसाबकी जांचकरते तो उसहिसाबकी जांच करते जो सरकार अंगरेजी और महाराजासाहबसे तअल्लुक होता और नकि उनकिताबोंको जिनमें निजकाहिसाबनहीं यहबातभी जाहिर नहींकीगई कि करनैलफियरसाहब को अधिकारथा कि जो किताबें रियासतकीहैं उनकोभी जांचकरें इसलिये यहविचार गलत है कि दामोदरपन्थने किताबोंकी जांचके भयसे करनैलफियरसाहबको विषदिया और यहबात भी बिल्कुलगलत हैकि दामोदरपन्थने कुछतगल्लुब नहींकिया वा धोखादेकर रुपयाखर्चकिया उसकीऐसी बातोंका कुछसबूत नहींहै आश्चर्य्यनहीं जो उसनेऐसा कियाहो क्योंकि जबकोई मनुष्य अपनेतईं खूनीका शरीककरताहै तोजोकुछ उससेधोखा वा छलहो कुछआश्चर्य्यनहीं परन्तु कोईदगा अथवा इस प्रकारका उद्योग साबितनहींहै और हिसाबकी रूसेभीनहीं पायाजाताकि उसनेकोई तगल्लुब कियाहो ॥

मेरेमित्रने इसबातपर बहसकीकि जोकुछ खजानेपरजा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

रीइये उनपर गायकवार के दस्तखत नहीं हैं परन्तु ऐसेदस्त-तोंकी कुछ आवश्यकता नथी क्योंकि महाराजासाहबऐसे हुक्मोंपर दस्तखत नहीं करतेथे दामोदरपन्थ को हिसाबकी तहकीकातका कुछभयनथाक्योंकि पांचजगहपर हिसाबरहा करतेथे जिनरक्मोंकेलिये लेखेनेका सन्देहहै उनकेलियेवह कागज़ वउचर पेशकरताहै कमीशनके मेम्बरखयाल करेंगेकि खज़ानेपर हुक्म सादिरहोनेकी क्या रीतिथी पहिलेयाददाश्त लिखी जातीथी कि किसचीज़के वास्ते रुपयेकीज़रूरतहैफिर दामोदरपन्थ के दस्तखत होतेथे दामोदरपन्थ लिख देताथा कि महाराजासाहबकी इजाज़त होगईहै॥

तीसरे यहकि उसयाददाश्तपर उसमनुष्यकी रसीदहोती थी जिसको रुपयादिया जाता था इसलिये दामोदरपन्थहर प्रकारसे बरीथा जबकभी उससेपूछागया कि अमुक याददा-श्तकी रक्म कहांलिखीहै तो उसनेशीघ्रही बतादिया कि अ-मुक पृष्टपर लिखीहै इसकेविशेष रोजनामचा—सप्ताहिक—मा सिक—वार्षिक पत्ररहाकरताथा जिसरक्मके देखनेकी ज़रूर तहोती तो इनकाग़ज़ों से उनका पतालग जाता हिन्दुस्तानी हिसाबकी रीतिऐसीहै कि जो एकरक्मको भी लेलियाजाय और कोईमनुष्य उसको गुप्तकरनाचाहे तो सम्पूर्णकिताबोंमें उसरक्मको दुरुस्तकरना पड़ेगा और महकमेके सम्पूर्णलोगों को रिश्वत देनीपड़ेगी॥

जो यह बात भी मानी जावे कि महाराजा गायकवारके नौकर ऐसेईमान्दार नथे जैसाकि खजाने वालोंको होना चाहिये इससे किसीबातका छिपाना और भियादह कठिन था—दामोदरपन्थके लिये गफ़लतका अपराध धरना मेरेदो-स्तकी केवल कल्पनाहै और उसका कोई मूल नहीं है मेरे विचारसे जो दामोदरपन्थने इज़हारदियेहैं उनकी सिदाक़त खूबहोगई करनैलफ़ियरसाहबको ऐसीकिताबोंके मंगवाने की क्याज़रूरथी मेरेदोस्तकी सारीतकरीरइसबारेमेंखण्डितहोगई

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

दामोदरपन्त कईबेर महाराजासाहबके साथ रेजीडण्ट साहबके पासगया परन्तु आपउनको नजानताथा रेजीडन्सी के मार्गमें जो धर्म्मशालाहै वहथा वहांउतर पड़ताथा महाराजासाहबने इसशख्सको रेजीडण्टसाहबके रूबरूपेशकिया परन्तुउसने साहबसेभी कुछबातें नकीं इसलिये इसको करनैलफ़ियरसाहबके मारडालनेका कोईप्रयोजन नथा औरजो कुछ तअल्लुक था तो गायकवारकी वजहसे था ॥

माईलार्ड अब चौथे मनुष्यका वर्णनकरताहूं जिसने विष दियाहो—महाराजासाहब से मेरेमित्रने बयान कियाहै कि जबमैंने मुक़द्दमेके प्रारम्भमें सोचकीथी तो मैंने उसमें नहीं कहा कि करनैलफ़ियरसाहबके विषदिये जानेका क्याहेतुथा उनका यहबयान ठीकहै शायद मुझसे उससमय भूलसेरह गया मैनेइसबातका उसवक्त खयाल नहींकिया मुझको सरकारने इसप्रयोजनसे यहांनहींभेजाथाकि मुद्दइयोंकी तरह सवालीकरूं किन्तुकेवल तहकीकातकेलिये भेजाथाकिजितनी गवाही वहसबपहुंचे उसको कमीशनके रूबरूपेशकरूं कमीशनके साहिबोंके विचार में जो उचितहोगा रिपोर्टकरें और इसबातका निश्चयकरें जो महाराजासाहबपर अपराधलगाहै वहसहीहैयानहींमेरे विचारसेमहाराजासाहबकोविषदेनेका बड़ाप्रयोजनथाऔर वहमनसेकरनैलफ़ियरसाहबकोविषदेना चाहतेथे सिवाय इनगवाहियोंके जोकमीशनके रूबरू गुजरीं सरजान्बेलनटायन साहबने ऐसे २ लेखदेखे जिनसे साफ़ज़ाहिरहैकिगायकवार चाहतेथे कि जिसतरह होसके करनैल फ़ियरसाहबको दूरकरदें इस विषयमें कमीशनकाध्यानदूसरी दिसम्बरके खरीतेपर दिलाताहूं इसखरीतेमें श्रीमान्गायकवारने लिखाहै कि करनैलफ़ियर साहब मेरे खराब करनेपर तय्यारहैं और हरप्रकारसे दिक़करतेहैं और जोउनका मन चाहता है वही करते हैं अगर सरकार मेराफ़ैसला इन्हींपर रक्खेगी तो कुछ इन्साफ़ नहोगा इससे साफ़ ज़ाहिरहै कि

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

यद्यपि गायकवारने नहींलिखा कि मुझको करनैलफियरसाहबसेनिजका वैरहैपरन्तु गायकवार करनैलफियरसाहबकेरेज़ीडन्सीके पदपररहनेसे बहुतकुछ उज्रकरतेथे और बिचारतेहैं कि जो करनैलसाहब इसपदपररहे तो मेरेलियेअन्याय होगा ऐसे मुकद्दमेमें यहबातमालूमकरनी अतिकठिनहै कि निजके वैर से इस बात को दरख्वास्त हुई यापोलीटिकल ख़यालातसे गायकवार अपने खरीते में लिखते हैं कि मुझको करनैलफियर साहबसे निजकावैर नहींहै मैंनेअपने वजीरोंसे इसबातकाखूबमश्वरह किया कि जबतक करनैलफियरसाहब यहांरहेंगे तबतक उत्तमप्रबन्ध काहोना असम्भवित है॥

मैं कितनाही उत्तम प्रबन्ध करनाचाहता हूं परन्तु वह बाधकहोते है मैं चाहताहूं किजो हिदायतें ५ वीं जूलाई सन् १८७४ ई० के खरीतेमें कमीशन को सन् १८७३ ई० के रिपोर्टके अनुसारमुनको हुई हैंउन्हींके अनुकूलकिया करूं पर लाचारहूं जब करनैलफियरसाहब गवाहकीतौरपर कमीशनके रूबरू बुलायेगये तो उनसेकोई ऐसाप्रश्न नहीं किया गया कि आपने क्यों अच्छा इन्तिज़ाम नहोने दिया और बाधक हुये मिस्टर दादाभाई नूरजीमिस्टर बालालंगशन वाकलऔरहुरमुजजीअरदासियर वदियाइनतीनोंमनुष्योंका खरीतेमें जिकथा परन्तु जब वह कमीशनके रूबरू आये तो उनमेंसे किसीमनुष्यने भी बयान नकियाकि अमुक कार्य्यके करनैलफियरसाहबबाधकहुयेथे इसलियेगायकवारनेजोलिखा है कि बाधाकरतेहैं बिल्कुल गलतहै यहखयालशायद गायकवारकाहै परन्तु उनकेकिसी वजीरका नहीं है गायकवार लिखते हैं जोकि मैं और मेरे वजीरजानतेथेकि किसीसमय में करनैलफियर साहब पर गवर्न्नरबम्बईने चश्मनुमाई कीथी (शायदयहबयान गायकवारकाबेसिर और पैरकेरेजो ल्यूशन पर होजो गवर्न्नर बम्बईने किसीसमयमेंलिखाया और धोखे सेउन्होंने उसकोहासिलकिया क्योंकि गायकवार यहनहीं

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कहते कि मुझको कहां से मिला) करनैल फियर साहब इस रेजोल्यूशन के लिये कहते हैं कि मेरे द्वारा यह रेजोल्यूशन नहीं आया सिवा इसके गायकवार को सिंध की कारवाई से क्या वास्ता था फिर उनको क्योंकर मालूम हुवा कि बलिहाज़ उस पहिले की चश्मनुमाई के करनैल फियर साहब बदल जावेंगे इस रेजोल्यूशन को दादाभाई नूरूजी ने सर ल्यूइस पीली साहब को दिखाया था यह रेजोल्यूशन गायकवार के दिखाने के वास्ते दिया होगा इससे एक और जुर्म भी गायकवार पर ठहरता है कि गायकवार केवल रेज़ीडन्सी के नौकरों से बुरी खबरों को नहीं पूछते किन्तु एक और सरकारी अफ्सरों के पास से भी खबरें मंगवाते थे अमीना आया नरसू राव जी के इज़हार की तसदीक होगई क्यों कि गायकवार हरएक छोटी बड़ी बात को पूछना चाहते थे यह बात दरयाफ्त नहीं हुई कि गायकवार के पास किस तारीख को यह रेजोल्यूशन पहुंचा परन्तु गायकवार को इस बात का विचार होना चाहिये था कि चाहे करनैल फियर साहब पर सिंध में चश्मनुमाई हुई थी परन्तु सरकार को पूर्ववत् निश्चय था क्योंकि सरकार ने उनको बड़ौदे का रेज़ीडण्ट नियत किया और यह पदवी सिंध से बड़े दरजे और अधिक मासिक की थी ॥

और सब नौकरों को अपनी नौकरी के दिनों में कभी न कभी चश्मनुमाई होजाती है परन्तु करनैल फियर साहब की चश्मनुमाई के लिये इतनी खसूसियत है कि यह रेजोल्यूशन चश्मनुमाई का उस समय जारी हुवा था जबकि करनैल फियर साहब लण्डन में थे तब करनैल फियर साहब को उसके खण्डन करने का मौक़ा न मिला परन्तु जब वह हिन्दुस्तान को आये और ऐसे रेजोल्यूशन का प्रचार उनको सूचित हुवा तो तुरन्त ही उन्होंने सरकार से नकल लेकर उसको रद्द किया और सरकार ने उसको मान लिया अगर करनैल साहब उस समय हिन्दुस्तान में होते तो कदाचित् यह रेज़ोल्यूशन जारी न होता गवर्न्मेण्ट ने बवजह हिकमत अमली के सिन्ध में उनको नियत नहीं किया और

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पालनपुरमें उनकोभेजदियाजोउनको सिन्धमें मासिक मिलताया वही पालनपुरमें भी पाते थे यदि गायकवार में कुछ भी बुद्धिहोती तो जबकरनैलसाहब बड़ौदेमें रेजीडण्टनियत ऊयेथे तोमालूमकरलेते किसरकारकी कुछ अप्रसन्नता हैया नहींतोकरनैलसाहबबड़ौदेमें रेजीडण्टनियतनहोते और जो काररवाईकरनैलफियरसाहबने नौसरीमेंकीथी उससेभीगायकवारको मालूमकरना चाहियेथाकि गवर्न्मेण्ट को उनका बड़ानिश्चयहै जबनौसारीमें गायकवारका विवाहऊवा था तो गवर्न्मेण्टकी आज्ञानुसार करनैलसाहब उसबिवाह में संयुक्त न ऊये महाराजासाहबने ९—मई को एक खरीता लिख कर गवर्न्मेण्ट में भेजा जिसमें करनैलफियरसाहब की बऊत कुछशिकायतथी इसमेंलिखा थाकि करनैलफियरसाहब मेरे विवाहमें संयुक्त नऊये इससे मेरी अतिअप्रतिष्ठाऊई परन्तुमैं कहताहूंकि इसशिकायतका क्या परिणाम ऊवा॥

गवर्न्मेण्टने उसका उत्तरलिखाकि करनैलफियरसाहबने गवर्न्मेण्टकी आज्ञा से यह काररवाईकी और सरकार को उनकी काररवाई पर बड़ाभरोसा है इसउत्तरसे गायकवार को अगर कुछ नहीं तो इतना मालूमकरना चाहियेथाकि गवर्न्मेण्टकरनैलफियरसाहबकी काररवाईसे प्रसन्नहै उस में यहभी लिखायाकि जोकाररवाई करनैलफियरसाहबकरेंगे उसको सरकार सर्व्वदा पसन्दकरेगी और सरकार को इत्तिला और आज्ञाके बिना कोई काररवाई नहीं करते॥

मैंसम्पूर्ण मेम्बरोंका खयालएक तारीखपर रुजूकरता हूं अर्थात् महाराजासाहब का विवाह मई महीने में ऊवा था और १६—अक्टूबरको पुच उत्पन्न ऊवा जोकि करनैलफियर साहबने उस बालक की माता को रानी न माना था उसके लड़के को क्योंकर युवराज और गायकवार का लड़का तसलीमकरतेसोइसीतारीखकेपीछेगायकवारइसबात कीशिकायत करनेलगेकि साहबमुझपरबड़ीअनीतिकरतेहैं इससेप्रकटहैकि

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उससमय में गायकवार के दिलका क्या हाल था वह बहुधा कहा करतेथे कि इन्होंकी काररवाई से सरकाने लक्ष्मीबाई को मेरीरानी नहीं माना इससे सरकार मेरेपुत्रको युवराज न मानेगी सोइनही हेतुओं से गायकवार को करनैलफियर साहब के बदली कराने की इच्छाहोगी ॥

१६—अक्टूबर को जब उनके पुत्रपैदा हुवा उनके मनमें करनैलफियरसाहबकी ओरसे फर्क आगया ॥

माईलार्ड— आपविचार करेंकि पूर्वोक्त हेतुओंसे गायकवारकी काररवाईसाफज़ाहिरहै और यहभी प्रकट है किजो गायकवारको अच्छाइन्तिजाम करनाहोताती अपनेप्राईवेट सिक्रेटरी से मशवरह न करते किन्तु दादा भाई नूरूजीसे सलाहलेते ॥

जिनके सुआमिलोंसे पूर्वोक्तसिक्रेटरी से मशवरह करने का सुज़ायका नथा इसवातमें आश्चर्य्य नहीं है कि एकतरफ दादाभाई नूरूजीसे उमदामजमून के खरीतेलिखातेथे और दूसरीतरफदामोदरपन्थसे दूसरामशवरह करते गायकवारने सबलोगों में यहबात प्रसिद्ध कररक्खीथी कि करनैलसाहब मुजपर बड़ाअन्यायकरतेहैं और दूसरीनवम्बरको जोखरीता गायकवारने गवर्न्नमेण्टमें भेजाथा गायकवार को खूबउम्मैदनथी कि हमारी दरखास्त मंजूरहोगी गायकवार ने और शिकायतोंमेंसेयहशिकायतभी कीथी किकरनैलफियरसाहब से सम्पूर्णसरदार और प्रजा अप्रसन्नहै तथाच करनैलसाहब से इसविषयमें पूछागया उन्होंने उत्तरलिखाकि यहगायकवारका लेखबिल्कुल गलतहै दादाभाईनूरूजी मौजूदहैं उनसे खरीतेके मज़मूनको तसदीक करानाजरूरथा परन्तु सरजन्टबेलनटायनसाहब ने उनको बुलाकर खरीते की तसदीक नहींकी और न करनैलफियरसाहबसे इसविषयमेंप्रश्नकिये ॥

माईलार्ड—करनैलफियरसाहब और गायकवारसे जोकुछ बातेंहुई उनसेसाफ ज़ाहिरहै किगायकवारकोकरनैलफिय-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

रसाहबकी बदलीहोनेका निश्चय नथा किन्तु खरीते भेजनेसे तीनदिनके उपरान्त गायकवारने करनैलफियरसाहबसे कह दियाथाकि यह खरीता मैंने नहीं लिखा है उस तहरीरसे मैं अलगहूं और इसकहनेसे उनका यहप्रयोजनथा कि खरीते में जो दरखास्तकी थी वहमंजूर नहोगी रंजबढ़ाना फजूलहै यद्यपि गवर्न्नमेण्टने गायकवारकी प्रार्थना स्वीकारकी तथापि यह नलिखाकि करनैलफियरसाहबको क्योंबदलदिया गायक-वारका यह खयालकरना भेजाहै कि सरकारनेमेरीदरखास्त पर करनैलसाहबको बुलालिया मालूमहोताहै कि उनदिनों में गायकवारकी दोकाररवाई मंजूरथीं॥

अर्थात् दादा भाईनूरूजीके द्वारा खरीता भिजवाना और दामोदर पन्थ से काररवाई करनी यह बात गवाही से साबित नहींहुई किगायकवारको अपनेखरीतेपर भरोसाथा कमीशनके मेम्बरोंको पूर्वोक्तवार्त्तासेमालूमहोगा किगायक-वारकोनिहायत ख्वाहिशथी किकरनैलफियर साहब बड़ौदेसे बदलजांय इससेबढ़कर उनकीइच्छा क्योंकर जाहिरहोगीकि गायकवारको यहभीमालूमथा किकरनैलफियरसाहबएक रि-पोर्ट भेजनेवालेहैं—खरीतेका एकमंशा यहभीथा कि करनैल फियरसाहब यहांसे बदलजावेंगे तो दूसरा रेजीडण्टउसको लिखेगा॥

निश्चयहै कि कमीशनके मेम्बरोंको इसमेरी तकरीरसेमा-लूमहुवाहोगा कि गायकवारको करनैलफियरसाहबकीतब्दी-लीकेलिये कौन२ वजहथीं और गायकवारने जितनीकारर-वाई करनैलसाहबके बदलनेकेलिये की उसका यहबहुत बड़ा कारणथा अर्थात् खरीतेके भेजनेका मुख्ययहप्रयोजनथा कि जिसतरहहोसकेकरनैलफियरसाहब रिपोर्टनभेजेंजो२मुक़द्द-मेकी तरद्दीदपेशहुई उससे यहबातभी प्रकटहैकिगायकवार चाहतेथे कि करनैलसाहब बदलजावें अबमैं ९—नवम्बरकाज़िक्र करताहूं कि उसदिन गायकवारकी क्यादशाथी गायकवारकी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

यह रीति थी कि सोम और बृहस्पतिवार को फियरसाहब के पासजाया करतेथे गवाहीसे यहबात साबित नहींहै कि जब वहरेजीडन्सीको गये तो उनकोमालूमथा कि करनैलफियर साहबको विष दियागया—परन्तु यहबात खूब प्रकट है कि जब गायकवार रेजीडन्सीसे लौटआतेथे तबउनको विषदेनेकाहाल मालूम होगयाथा क्योंकि जब करनैलसाहब डाक्टरसाहबको चिट्ठीभेजचुके तब सालिम घोड़ेको उठायेहुये यशवन्तराव के घरको जाताथा डाक्टरसीवर्डसाहबने उसको मार्गमेंदेखा जब करनैलफियरसाहबने गिलासमें तलछट देखाथा तो रावजी को चिट्ठीदीथी कि तुमडाक्टरसाहबके पासलेजाओ परन्तु उसने यह चिट्ठी महमूदको दी और आपनगया क्योंकि उसको मालूमहोगयाथा कि करनैलसाहब भीतर क्याकररहेहैं और उनकी क्यादशा होगईहै महमूद सालिम को मार्गमेंमिला उसने सालिमको एकरुपया बिसकुटलानेकेलिये दियाथासाबितहुवा कि सालिम घोड़ेको दौड़ाकर नगरको गयाहै करनैलफियरसाहब सातबजे हवाखोरीसे लौटआतेथे औरसात और साढ़ेसातबजेके बीचमें उन्होंने शर्बतपिया और कुछफेंक दिया उससमय सालिम नगरकोओर गयाथा इसबातकानिश्चयहोना कठिनहै कि वहक्यों नगरकोगया परन्तुइतनाकह सक्तेहैं कि वहरेजीडन्सीकोआया औरवहांसेमहाराजासाहब की इत्तिलाकेलिये वहलौटगया कि रेजीडन्सीमें क्याहोरहा है और डाक्टरसीवर्डसाहब बुलायेगयेहैं यदि वह रेजीडन्सी को नआता तो यहहाल उसकोमालूम नहोता मुझको निश्चयहै कि महाराजासाहबको रेजीडन्सीमें आनेके पहिलेखबरहोगईथी कि करनैलफियरसाहबको विषदियागया और यही हेतुथा कि गायकवार चुपहोरहे ॥

सरजन्टबेलनटाइनसाहबने वर्णन कियाहै कि जब महाराजासाहबकरनैलसाहबके पासगये तो उनको किसीबातसे कुछ तरददनहीं पायाजाताथा जोकि वह पहिलेसे खबरको मालूम

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कर चुकेथे तो उनको दृढ़ रहने के लियेबहुत अच्छा मौका मिला था करनैल साहब ने अपने इज़हार में सही २ वर्णन कियाहै कि ९ नवम्बरको महाराजासाहबसे पहिले मैंने उन की कुशलप्रश्नकी तमीसे बीमारीका जिक्र आया। और करनैल साहब को चित्त की उद्विग्नता का देर तक जिक्ररहा इसमें सन्देह नहींहैकि जब गायकवार रेज़ीडन्सीसे लौटकरजातेथे तो उनको मालूम होगया था कि करनैल फियर साहब को विष दिया गया क्योंकि मार्गान्तर में महाराजा साहब ने दामोदरपन्थसे कहाथा तथाच उसकेइज़हारमें यहभीलिखा है कि जबमैं और महाराजासाहब रेज़ीडन्सीसेलौट आये थे तो महाराजासाहबनेकहाथा किरेज़ीडन्सीमें बड़ाशोरऔर गुल होरहा है जब मैंने उसका कारणपूछा तो महाराजा साहब ने उत्तरदिया किनरसूहमेशाबाहरे बैठारहाताथा और जबकोईमनुष्य आताथा तो सीटी बजादिया करता था परन्तु आजकेदिन वहबाहर नथा इसलिये शोर औरगुलहोरहा है॥

रावजीप्रति दिनआया करताथा परन्तु आज नहीं आया उसनेजल्दी करकेडालदिया मैंनेपूछाकि उसनेक्या डाला यह सुनकर महाराजा साहबने मेरीबात कोटाल दिया और कुछ और बातेंकरनेलगेफिरमहाराजासाहबनेकहा किसालिमरा-वजीकेघरको गयाहै ताकिपुड़ियों कोलेकर बुढ़िया की रोटी मेंडालदे मालूम नहींकि सालिमने पुड़ियोंको फेंकदिया या नहींयह मुआमला बहुतखराबहै देखियेक्या होता है अगर दामोदरपंथसही२कहताहैतो महाराजासाहबको, रेजीडन्सी केपहिलेमालूम हुवाहोगाकि विषदेनेका उद्योग किया गया है और यहभीमालूम हुवाकि गायकवारने उसीदिन तीसरे पहरकोनानाकुंवलकर आदिसे कहाथा मैंनेजो दामोदर पंथ केइजहारका फिकरापढ़ा वहउसका बनाया हुवा नहीं मालूमहोताहै और नवहऐसा मालूमहोताहै जैसाकि मेरे मित्र कहतेहैं कि पुलिसका सिखाया हुवा है जितनी गवाहियां

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

गुजरीं उससे प्रकट है कि दामोदरपंथने यह बात ठीक २ वर्णन कीहै क्योंकि उसने अपने स्वामीके लाभके लिये जरूर करके ऐसी बातोंपर गौर किया होगा इसलिये उसका यह बयान गलत नहीं होसक्ता सिवाइसके दामोदरपंथ के इजहारसे यहभी मालूम हुवाकि ९ नवम्बरको जब करनैल साहबको विषदिया गयातो शीघ्रही गायकवार को इसबात की इत्तिला होगई थी शहर और कम्पूमें हरमनुष्यको खबर होगई थी किकरनैलफियरसा- हबको विष दियागया परन्तु मालूम न था किकिसने विषदिया जोगायकवारने विषनदिया होता और उनकामन साफ होता तो फौरन् गाड़ी परसवार हो कर करनैल साहब के पास जाते और इसबातकी मुबारकबादी देते कि वह जहर से बचगये परइस मौकेपर जो महाराजा साहबने कारवाई की वहबेकु- सूर आदमीके मानिन्द नहीं है अर्थात् बृहस्पतिवार तक वह ठहरे रहे और उसदिन जब मुलाकात कोगये तो और बातोंमें साधारणतौरपर विषकाभी जिक्रकिया उसके दोदिन उपरान्त उन्होंने सरकारी तौरसे खरीता भेजा कि मुझको आपके विष देनेकाहाल अब मालूम हुवा जो मेरेलायक कोई बात होतो उसकामके करनेकेलिये मैं उद्यत हूं इस खरीतेमें यह नहींलि खाकि मैंने कबसुना ॥

दामोदरपंथ सचकहता है कि महाराजा साहब ने ९ नव- म्बर को यहखबर पाईथी और यह बात गलत है कि सालिम और यशवन्तरावने बाजारीखबर सुनकर गायकवारके रूबरू बयान कियाथा दामोदरपंथ ने अति विस्तार से वर्णन किया है कि गायकवार क्योंकर रेजीडन्सीसे घड़ी २ की खबरमंगा याकरतेथे और रावजीके छूटआने पर कितने प्रसन्न हुये और जबवह दुबारह गिरफ्तार हुवातो कितनी उनको चिन्ताहुई जबसूटर साहब बड़ौदे में आयेतो गायकवार को रावजीके लिये जितनी चिन्ता हुईथी उतनीही सालिम और यशवन्तराव

CC-0 In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

केलिये फिकरहोगई महाराजासाहब ने सालिम और यशवन्तरावको कईबेर बुलाकर समझाया था कि तुमकोई बात म जाहर न करनाइस अवसरमें महाराजा साहब को इसबात केदरयाफ़्त करनेका खूबमौक़ा मिलाथा कि मुख्य विष देने वालाकौन है॥

२३ दिसम्बर को महाराजासाहब से इत्तिलाकीगई किआपकानाम विषदिये जानेमें शामिलहै उससमयसे जबतक कि वहगद्दीपर रहेउन्होंने बहुधा दामोदरपंथ को आज्ञादी कि उनरक़ों को मिटादो जिनसे विषदेने का पतालगता होतो उसी समय हिसाबके कागज़ोंमें जहां २ सालिमका नामथा स्याहीडाली गईऔर वरक़फाड़े गये॥

जबदामोदरपन्थसे पूछागया कि तुमने सबवरक़ क्योंनिकाल डालेतो दामोदरपन्थने उत्तरदिया कि पांचजगह परहिसाब रहताथा क्योंकर सब जगह से कागज़ निकाले जाते जो याददाश्त दफ्तरसे निकालदीजाती तोक्या फायदाथा पांच जगहका लिखाहुवा हिसाबक्योंकर निकलसक्ताथा बड़ीबेढंगी बात थी कि उन्होंने स्याही डालकर उनरक़ों को मिटाया जिससे पता लगसक्ता था कदाचित् इस बातका निश्चय नहीं होसक्ता कियह कामपुलिसवालों ने कियाहो क्योंकि पुलिस कोमालूम नथा किहिसाबोंके कागज़ोंमें किसजगह परविष देनेका लिखाहै इसलिये खूब साबित हुवाकि गायकवारकी आज्ञासे इन रक़मों पर स्याही डालीगई-और गायकवार आपभी इसजुर्मके करनेमें संयुक्तथे॥

इसगुफ़्तगूके उपरान्त सुजकोगवाहीका जिक्रकरना ज़रूर है क्योंकि सरजन्टबेलनटायन साहबने गवाहीमें बहुत कुछ तकरीरकीहै परन्तुमेरी इच्छा है किएक२ मनुष्यकी गवाही सच्चाईकोपहुंचाऊं और सरजन्टबेलनटायन साहबकी तक़रीरको खण्डनकरूं॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

माईलार्ड—आपकीराय मेरीरायके अनुकूलहोगी कि सब हिन्दुस्तानियोंकी यहरीतिहै कि वहकिसी तारीखआदिपर लिहाज नहीं रखते जो कुछ उनके मुंहमें आताहै कहदेतेहैं हिन्दुस्तानकी अदालतोंमें ठीकबातके मालूमकरनेकेलियेबड़ी दिक्कतहोतीहै विशेषकर उससमय जियादह मुशकिलहोती है कि कौन गवाह ठीक कहता है और कौन अशुद्ध वर्णन करता है॥

मेरेविचारसे सिवाय दामोदरपन्थके और कोई गवाहसिखायाहुवा नहींहै आया और दोनों पक्षवाले कम दरजे के आदमीहैं इसअवस्थामें आश्चर्यनहीं किचाहो वहलोग सही कहतेहैंपरन्तु कुछएक दूसरेकी गवाही में अन्तर है जिसतरह कियूरोपियन गवाही देतेहैं और उनके खयालात सही होतेहैंहिन्दुस्तानियोंके नहींहोसक्तेक्योंकि पहिलेसेयूरोपियन कोताकीदके साथशिक्षा होतीहै हिन्दुस्तानी लोगवैसी शिक्षा नहीं पाते—जैसे क्रिसरजन्टबेलनटायनसाहबने तारीखका तजकराकिया कि तीन गवाह एक तारीख कहतेहैं और दो गवाह दूसरी तारीख बतातेहैं आप साहबों को यह बातभी मालूमकरनी चाहिये कि जबएक बातहोजातीहै तो उसके पीछे दिन वा तारीखका याद रहना कठिन है बहुधा हिन्दुस्तानीलोग जबपरस्पर वार्त्ताकरतेहैंतो इसतरह कियाकरते हैं कि अमुक तेहवार से दस पन्द्रह दिन के पीछे अथवादस पन्द्रह दिन पहिले फलानी बात हुई थी—सोयह लोग बहुधा तेवहारोंपर हरकिसी बातकी गिनती रखते हैं पश्चात्ताप है कि इनलोगोंका ऐसा स्वर्ण खराबहै कि वह बातको बखूबी स्मर्णनहीं रखतेजिन जजसाहिबों को ऐसी गवाहियोंसे काम पड़ताहै तो वहऐसी गवाहियोंको फजूलनहीं समझतेकिन्तु समाअतके लायक समझते हैं ९—नवम्बर के पहिले जबआया गायकवारके पासगई थी तो उसकाबयानहै कि एकमहीना

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

याबीसदिनपहिलेमैंने सुनाथाकिकरनैलफियर साहबको विष दियेजानेका इरादाहै—अब्दुल्ला उसका पतिअपने इज़हार में लिखाताहै कि १५ वा १८ रमज़ान कीथी ॥

शेखदाऊद कहताहै कि देवालीके चारदिन पहिलेआया गईथी ऐसेन्यूनअन्तरसे उनका बयान गलतनहीं होसक्ता इस बातका कदाचित् निश्चयनहीं है कियहगवाह पुलिसकेसिखाये हुयेहैं जोउनको पुलिसने सिखायाथा तो सब,गवाह एकमत होकर एकतारीख़ बयानकरते हालांकि तीनतारीखेंगवहों ने बयानकीं और वहीसही मालूम होतीहैं सो ऐसानहीं हो सक्ताकि इसमें किसीप्रकारकी गलतीका संदेह होसके—यदि गवाहपुलिसके सिखायेहुये होतेऔर तीनतारीखें भीउन्होंने सिखादीथीं तो पुलिस के लोग बड़े चतुरथे और उनकी बुद्धि सम्पूर्ण मनुष्योंकी बुद्धिसे अति तीव्रथी वहज़रूर पूरीतालीम करते ॥

एकदूसरी बातयहहै कि जो गवाह रेज़ीडन्सी के नौकरहैं उनकेलिये मेरेमित्रने वर्णनकियाहै किपहिलेसे उनकाइरादा करनैलफियरसाहबके विष देने का खुदथा तथाच जबसे मैंने उनकी गवाही सुनीमेराभी वहीखयालहै यहबात स्पष्टहै कि कोईमनुष्य अपनेस्वामीको प्रसन्नहोनेपर मारडालनेका उद्योग नकरेगा इनलोगोंका खौफज़ाहिरहै कि जब रावजीको विष सौंपागया तोउसने महाराजासाहबसे पूछाथा किविषशीघ्र-ही तासीरकरेगा परन्तु उससे कहागया कि नहींतीन चार महीनेके पीछेअसर करेगा सिवा इसकेजब रावजीको पुड़ियां दीगईथीं तोउससे कहागयाथा कितुम पुड़ियोंको मिलालेना वह समझाकि पुड़ियामें जो श्वेतबस्तुहै वह संखिया है इस-लिये उसनेउस पुड़ियोंमेंसे केवल एकहोचुटकी लेकरहीरेके चूर्णमें डालदी क्योंकि उसको यहभयहुवाहोगा कि अगरक-रनैलफियरसाहब मरजावेंगे तोबड़ा शोरग़ुलमचेगा औरमैं

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

खराबीमें पड़जाऊंगा जो थोड़ी संखिया दीजावेगी तो बीमार होकर इङ्गलिस्तानको चलेजावेंगे—इसउपायसे महाराजासाहबकीइच्छापूर्णहोजावेगी और सुझ को मेरापारितोषक भी मिलजावेगा यहशुफ़्गू सिर्फ़विषकेलियेही नहींहैकिन्तुशीशीकेलियेभी कहताहूं कि वहशीशीजिसकेलिये मेरेमित्रकहतेहैं कि उसमेंहकीमजीकी दवाथी अर्थात् जबरावजीने देखाकि शीशीकी दोतीनबूंदोंनेमेरे उदरपर फफोलेडालदिये और उससेबड़ी जलनहोरहीहै तो अपनेबचावकेलिये शीशीकीदवाको फेंकदिया॥

कमीशनके मेम्बरों को इसबात परभी ग़ौरकरना चाहिये कि जबपहिले महाराजासाहबने उनलोगोंसे विषदेनेकेलिये कहाथा तबलोग राज़ीनहींहुयेथे परन्तु जब महाराजासाहब ने उनको खूबकाबूकरलिया तब विषका ज़िक्रकिया कईदिन तक यहलोग महाराजासाहबको खबरें देतेरहे और महाराजा साहब उनको इसके बदले रिशवतें दिया किये जब खूब रिशवतदीगई तब महाराजासाहबने उनसे विषदेनेका ज़िक्र किया यह किसीभांतिसे इन्कार न करसके क्योंकिरावजीऔर नरसू उनके बशमें थे जो यह लोग महाराजा साहबका कहना नमानते तो यह सम्भवितथाकि महाराजासाहब रावजी और नरसूको उसके खबरके परचे के समेत जो वह लोग रेजीडन्सी से भेजा करते थे करनेल फ़ियर साहब के पास भेज देते और कहते कि आपके नौकर इनआम की आशा से मेरेपास यहखबरें भेजतेहैं या जब कि रावजी कचहरी से काग़ज़चुराकर लायाथा तबरावजी को उस कागजके समेत भेज देते और कहते कि देखिये यह मनुष्य कागज चुराकर लायाहै औरहमसे रुपयेलेने की इच्छारखता है इससूरत में उनलोगों को सिवायइसके कि मारडालने का इक़रार करें औरकुछ उपाय नथा आयाऔर लोगों को मालूमनथा कि रावजी और नरसू गायकवार की ओरसे काररवाई कररहे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

हैं इसीतरह से एक ओरमहाराजा साहब दादाभाईनूरूजी जीसे काररवाई करतेथे औरदूसरी ओर दामोदर पन्थथे॥

उन्होंनेरावजी औरनरसूजीको एकदरजे में करार दिया था और आयाआदिको दूसरे दरजे में—और अजीब बात यह है कि गायकवार ने दामोदरपन्थको इस काररवाई में सरगरोह ठहराया था परन्तुरावजी आदिको दमोदर पन्थ से अलगरक्खा हरमनुष्य को एक दूसरे से न मिलने दिया वास्तवकरके गायकवार की होशियारी में कुछ संदेह नहीं उन्होंने खूबसोंच समझकर यह कामकिया था॥

करनैल साहब वर्णन करते हैं कि ६ और ७ नवम्बर को मेरी८ नवम्बरकीसी दशाहोगई थी रावजीने शायदउसदिन शर्बत में विष नडालाहो औरकिसी मनुष्यने डालदियाहो॥

सरजन्ट बेलनटायन साहब ने इसबारे में जिक्र किया है कि करनैलफियरसाहब को बिषकाहाल सुनते२इतनावहम होगयाथा कि जबवहकुछभी अलील होतेथे तोउनको विष के देनेकासंदेह होताथा॥

मिस्टर सूटर साहब ने जब रावजी को बुलाया तो उसने वर्णनकिया कि मैंने ९–नवम्बर के पहिले दो पुडियां डाली थीं क्याआश्चर्यहै कि वह–६ और ७–नवम्बरको डालीहों॥

करनैलफियरसाहबको कुछ मालूम नथा कि मेरे शर्बतमें संखिया डालीजातीहै रेजीडन्सीके सम्पूर्ण सरकारीनौकरोंके सायउनकेनिजकेनौकरभी रिशवतदेकरसंयुक्तकरलियेगयेथे॥

माईलार्ड–सरजन्टबेलनटायन साहबने सब गवाहोंकीग-गवाहियोंको बिल्कुल गलतकरदिया और अदालतसेप्रार्थना कीहै कि किसीगवाहकी गवाही तसलीम नकीजावे॥

पहिले मेरेविचारसे यहउचितहै कि अमीनाआयाकी ग-वाहीपर गौर कियाजावे॥

पहिले अमीनाआयाकीगवाही मिस्टरसूटरसाहबने लीथी किसी पुलिसके और मनुष्यने उससे कुछबातभी नहींकी जब

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मिस्टरसूटरसाहबने पहिले उसकेइज़हारलियेतो आया बीमारथी उससमयजोउसने वर्णन किया उसकोभी स्मर्ण नहोगा जैसामिस्टर सूटरसाहबको यादहै जबमिस्टर सूटर साहबने सुनाकि कईगाड़ीवालेआयाको सवार करकेरमज़ानकेमहीने मेंगायकवार केपासलेगये तोउसीसमय वहआयाकेपास गये परन्तु उसको बहुतबीमार पाया जब उससेकुछहाल पूछातो निश्चयहुआ किआया महाराजासाहब केपासगईथी औरकुछ रुपयाभी उसने पायाथा केवल इतनाही हाल पूछकर मिस्टर सूटरसाहब चुपहोरहे क्योंकि सूटर साहब उसके बीमारहोजानेसेउससे जियादह हालनपूछसके उसकेदो दिनकेउपरान्त आया और जियादह बीमारहोगई और उसको अस्पताल में लेगयेतथाच मिस्टरसूटरसाहब भीउसकेपास हस्पतालमें गये और उसकेइज़हार लिखलिये जिसपर (डी) अक्षर नम्बर२का निशानहै अगरयह खयालकिया जायकिपुलिसने वहइज़हार आयाकेजो उसने १८ दिसम्बरको दियेथे बनायेहैंतो बिल्कुल गलतहै क्योंकि जबउसको बड़े जोरका बुखारथा तो क्योंकर पुलिसकेलोग उसको सिखाते इसके सिवाय पुलिस वालों को इसमुकद्दमेका हालमालूमनथा तोवह क्यासिखाते॥

पहिले पुलिसको गोखदाऊद गाड़ीवाले से पतालगाया कि वहआयाको गायकवारके पासलेगयाथा फिर आयाके इज़हारलिये गयेफिर और लोगोंसे पूछागया जबमालूमहुवाकि इनलोगोंके इज़हारोंमें कुछफरकनहीं हैइससे तहकीकातका सिलसिला आगेकोचला पुलिस का सिपाही जिसके पहिरे में आयाथीएक छोटासासिपाही था उसको आयाकेसिखाने की क्यातमीज़थी डाक्टरसीवर्डसाहबजो आयाकेदेखनेकोगयेथेइस विषयमें मेरेमित्रने बहुतकुछ कहाहै यहसुनकर मुझकोबड़ा आश्चर्य्यहुवा परन्तु यह बातकुछ अजीबन थी डाक्टर सीवर्ड साहब को योंही साधारण रीत से आया के देखने को गये

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

क्योंकि आयाडाक्टरसाहबकेसिवा कीनौकर थी उनके जाने और आयाकेदेखनेमें मेरेविचारसे कोईबेमौक़ा बातनहीं जब उन्होंनेआयाको देखातो डाक्टरी की रीतिके अनुकूल मालूम कियाकि दैहिकरोगतो अधिकनहींहै उसकेमनमें कोई बात हैउसको वहप्रकट करनाचाहती है औरइसीहेतु से उसेबड़े वेगसेज्वर आगयाहै—डाक्टरसीवर्ड साहब औरमिस्टर सूटर साहबमें कोईगुप्तभेद की बातनथी जब डाक्टरसीवर्ड साहब कोमालूमहुवा किआया कुछ कहना चाहती है तो उन्होंने तुरन्तहीमिस्टर सूटरसाहबको बुलायाजब मिस्टरसूटर साहब अस्पतालमेंगये तोकलमकाग़ज़ अपनेसाथ नहीं लेगयेथे जो कुछआयाने उनसेकहा उसकोमिस्टर सूटरसाहबनेसुन लिया और दूसरेदिन उन्होंनेउस बयानको लिखलिया अब सरजन्ट वेलनटायनसाहबकहते हैं किवहइज़हार जो आयाने मिस्टर सूटरसाहबके रूबरूदियेथे उनइज़हारों से मिलाये जावें जो उसनेकमीशन के रूबरूदियेथे शायदसरजन्ट वेलनटायन साहबके रूबरू उसमें कुछअन्तर होगा परन्तु मेरे विचारसे कुछ अन्तर नहींहै॥

जोइज़हार कि मिस्टर सूटर साहब ने लिखेहैं उनके लिये सूटरसाहब कहतेहैं कि मैंने आयाका बयानसुन लिया और अंगरेजी में लिखलिया लफ़्ज़ीतर्जुमा नहीं किया॥

सरजन्टवेलनटायन साहबकहते हैं कि आयाने कोई ऐसा लफ़्ज़नहींकहाहोगाजिसकामतलबटटोलने का होपरन्तु मालूमनहीं किसरजन्ट वेलनटायनसाहबऐसी उलझी हुईतकरीरक्यों करतेहैं आयाकेइस कहनेसे यह प्रयोजन था किमहाराजासाहब चाहतेथेकि मेरे मनका हाल मालूम होजावे तबवह विषदेनेका जिक्रकरें और जबकमीशनके रूबरूआया केइज़हारलिये गये तोउस समयभी उसनेयही मतलब अपना बयानकियाहिंदुस्तानीलोगजादू औरमंत्रपरबड़ाविश्वासरखते

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

हैंजोकिकिसीहिंदुस्तानीसेपूछाजावे किमंत्रऔरजादूक्यावस्तु हैतोवहुत कुछहाल वहसमझावेगा और उसपर अपनानिश्चयप्रकटकरेगा इसीप्रकार महाराजासाहबने आया से पूछा थाकिजो कर्नलफियर साहबपर कोईमंत्र अथवाजादू किया जावेतो असरकरेगा यानहींइससे उनकायह प्रयोजन थाकि जोकोई वस्तुहमतुमको देंतोतुम साहबके खानेमेंडालदोगेसरजन्ट बेलनटायन साहब इसबातकाभी जिक्रकरतेहैं किपुलिसवालोंने आयापर सख्तीकीथी यहबातबिल्कुल गलतहै आयाने इस सख्तीका कहीं जिक्रनहीं किया पुलिसवालों ने केवल इतनाही आयासे कहाथा कि तुमनेधूमकर रक्खी है इसबात को आया समझी थी कि कुछ पुलिस वाले मुझको धमकाते हैंजब उससे कमीशनके रूबरू धमकी का हाल पूछा गयातो आयानेकहा कि मुझकोकिसी मनुष्यने नहीं धमकायाआया से यहभीपूछागयाकि तुमको किसीमनुष्यने पहिले धमकाया था तो आयाने कहामुझको किसीने नहीं धमकाया॥

मेरेविचारसे आयाकी संपूर्णगवाही निश्चयमानने के योग्य है औरकोई सन्देहउसमें नहींहै॥

पुलिसने उसकोकदाचित् नहीं धमकाया किन्तु साधारणतौरसेउससे सबबातें पूछीं।

दूसरागवाह रेजीडन्सीका एक चपरासी है यह चपरासी बहुतबड़ा गवाहहै अर्थात्रावजी जिसनेबहुतबड़ी गवाहीदी बहुतबड़ा गवाहहै अर्थात्रावजी जिसनेबहुतबड़ी गवाहीदी हरचन्दयह मनुष्यरेजीडन्सी का एकचपरासी था परन्तुउसने बाजारमेंबहुत रुपयाखर्च किया जबपुलिसने तहकीकातकी औरमालूमहुवाकिइसमनुष्यने बहुतसारुपयाउठायाहैतो २२ दिसम्बरको।यहमनुष्य पकड़ागया जो कुछउसने इजहारदिया वहसफे ८०-तहरीर जूदनवीस में मौजूद है उसमें रावजी ने खूबसाफ तौरसे बर्णन किया है कि फ्टरसाहब के रूबरू खुशामद किया है कि फ्टर साहबके रूबरू किसलिये वह इस ऐसा कहा गया खुबसाफ तौरसे बर्णन किया है कि फ्टरसाहब के सन्मुखक्योंकर उसने इजहार दिये और मिस्टर फ्टर साहब

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ने भी अपने बयान में उसके इजहार की सिदाक्नत की ॥

माईलार्ड—आपकोयाद होगाकि सरल्यूइसपीली साहब रावजीके इजहारोंके लियेक्या कहतेहैं उसकेइजहारकेपहिले असलीहाल दरयाफ्त होनेकीकुछ्आशा नथीकि किसमनुष्य ने विषदियाहैइसलिये मिस्टरसूटर साहबऔर सरल्यूइसपीली साहब—२३—दिसम्बर को बड़े दिनकी छुट्टियों में बम्बई जाने वालेथेजबरावजीके इजहारसे मालूम हुआतो सरल्यूइसपीली साहबनेकहा कि इसमनुष्य केबयान को मैंकलसुनूंगा आया वहगलतहैया सहीतथाच दूसरेदिनउन्होंने रावजीकोबुलाया औरआप उसकीबातों को सुना सरल्यूइसपीली साहबकहते हैं कि रावजीने उससमय उसीतरह बयानकिया जैसाकिकमीशन के मेम्बरों के रूबरू इजहार दिया जबरावजी से उसका बयानसुनागया तो सूटरसाहब ने उसको गिरिफ्तार किया औरमालूमहुवा कि इस मनुष्यने बाजार में बहुतसा रुपया खर्चकियाहैइसीमनुष्यके बयानपरनरसूपकड़ा गयाजहांऔर रेजीडन्सी के नौकरकैद थे उसीजगह रावजी और नरसू भी कैदकियेगये नरसूएक पुलिसके अफसरकेसाथ रावजीके पास भेजागया औरदोनें का साम्हनाकराया गया रावजीनेकहा किमैंनेगलो २ पानीमें कबूलकरलिया तूभीइक़रारकर इससे पहिले रावजी और नरसूकी कुछ वार्त्ता नहीं हुई ॥

रावजीके इजहार भी लिखे नहीं गये थे और कोई मनुष्य ऐसानथा जो नरसूको इत्तिला देताकिरावजीने क्या इजहार दियेमिस्टरसूटर साहबऔर सरल्यूइसपीली साहबने उसका बयानजुबानी सुनलियाथा फिरक्योंकर पुलिसके लोगनरसूको सिखातेताकिएक दूसरेकाइज़हार मुताबिक होनार्वे नरसू चालाकआदमी नहींहै कल्पना करोकि पुलिसने नरसूकोभी सिखायापरन्तु उसकाऐसा स्मर्ण नहींहै जोउसको कुछ याद रहाहो अगरपुलिसवालेइतनीबातें किसीलिखेपढ़ेकोसिखाते

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उसकोभीयाद रहना कठिन था इसलियेमेरे विचारसे उसके इज़हारबिल्कुल ठीकहैं औरकिसी प्रकार की बनावट उसमें नहीं पाई जाती॥

सरजन्दबेलनटायनसाहब ने रावजी के इज़हार पर बहुत कुछगुफ़्तगू की है जिसमें उसनेपेडरू का ज़िक्रकिया हैपरन्तु रावजीने अपना इज़हारसाफ़ तौर से लिखाया है॥

सरजन्दबेलनटायन साहब पेडरू के विषय में कहते हैं कि सच्चागवाह एकयहीहै दूसरा कोई गवाह सच्चा नहींहै॥ रावजी पेडरूपर तोहमतरखताहैकिवहमेरे साथगायकवार केमहलकोगयाथापरन्तु पेडरूजानेसे इन्कारकरताहै परन्तुमुझ कोइसका कारणमालूम नहींकि सरजन्द बेलनटायन साहब क्योंकरकहतेहैं किपेडरूकीगवाहीनिश्चय माननेके योग्यहैमैंने सबगवाहोंको पेशकियापरन्तु किसी गवाही की खसूसियत नहींकी कि अमुकगवाह निश्चयमाननेके योग्यहै और अमुक गवाह वेएतिबारहैं औरइनही लोगोंके इजहारपरगवर्नमेण्ट इण्डियाने इस मुकद्दमेकी तहकीकातकी आज्ञादीथी मैं इस बातको तसदीक नहींकरसक्ता किअमुक गवाह प्रतिष्ठित है औरअमुक गवाहप्रतिष्ठितनहीहै बहरहाल पेडरू २५ वर्षका पुराना नौकरहै औरकमीशनको अखतियारहै कि उसगवाह कोप्रतिष्टित गवाहसमझे यह मनुष्य कहताहै किरावजीने जोकुछ मेरीनिस्बत बयानकिया वहबिल्कुल गलतहैयहशख्स कहताहै किमैं कभी महाराजा साहबकेपास नहीं गया वह खूबजानताहै किजोमैं इकरारकरूंगातों मुजकोकष्ट भुगतनापड़ेगाअगरइस शख्सकेइजहार मिस्टरऐडगन्हनसाहबकेरू बरूलिये गयेतो जरूरनहींहै किउसका बयानसचही होइन साहबकी जितनी प्रशंशाकीगई वास्तवमें वहइसी प्रशंसाके योग्यहैं अगरपेडरू मिस्टरस्टर साहबके रूबरू इजहारदेता तोनिश्चयहै किठीकठीक बयानकरता मिस्टरस्टर साहबकी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

आज्ञासे यहमनुष्य मिस्टरऐडगैन्स्टन साहबकेपासगया उसको खानसाहब लेगयेथे जबउसको मालूमहुवाकि जोमैं इकरार करताहूं तोमेरेलिये हानिहोगी तब उसनेइनकारकियाथाकि मेरीनौकरीऔरप्रतिष्ठा बनीरहे परन्तु विषदिये जानेके पहिले बहुतसे लोगवर्णन करतेहैं किपेडरू महाराजा साहब कानौकरहै औरमहाराजा साहबउसका बड़ासन्मानकरतेथेकिन्तु उसनेवर्णनकियाथा किमैंने महाराजासाहबसेकुछपारितोषकपाया यदि इस मनुष्यने कोई काम नहीं किया और किसी कामकी महाराजा साहबको उससेआशा नथीतो उसको क्यों पारितोषक दियामहाराजा साहब को निस्संदेह इससे कुछ आशाहोगी औरउन्होने किसीकाम के लियेकहा होगा कमीशनकेमेम्बरों कोपेडरू केइजहारसे साबितहुवा होगाकि यह बहुतसे हालोंको जानताथा परन्तु किसी बातका उसनेइकरारनहींकिया रावजीने जोइजहार दिये वहबिल्कुल ठीकहैं पेडरूकहताहै किमुजसे सालिमने कईबेर महाराजा साहब केपास चलनेको कहा परन्तु मैनेइकरार नहींकिया ॥

प्रेजीडण्ट साहबने प्रश्नकियाकि जोइजहार आया के मिस्टर स्कूटरसाहबके रूबरूलियेगये उससेकुछ जिक्र पेडरू काथाऐडवकेट जनरल साहबने कहा किजब आया के इजहार मेंप्रश्न कियेगयेतो उसनेपेडरूका कुछजिक्र किया था और१७वें पृष्ठमें बयान लिखाहुवाहै ॥

मिस्टरब्रैन्सन साहब सेपहिलेआयानेकहाथा किपेडरूऔर रावजीने मुजसेकुछ कहाथाजब उससेफिर पूछा गयातो कहा किमुजसे करीम औरदूसरे एक मनुष्यने कहाथा परन्तु इजहारके होनेकेसमय करीमसेकुछ प्रश्न नहीं कियेगये ॥

साहब ऐडवकेट जनरलने कहा यहगलतीमुतरज्जिम कीथी औरमालूम नहींकिमेरे मित्रनेक्योंइसबातको विचारा परन्तु गवाहीसे साफसाबितहै किपेडरू विषदिये जाने में संयुक्त था जहांतक होसकेपेडरू कीनिस्बत अधिककहनामुजकोमंजर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

नहीं है परन्तु इतनाही किजो आवश्यक और उचित है ॥

अगरपेडरूविष देनेमें संयुक्तन थाती उसको पारितोषक क्यों दियागया और यहबातभी दरयाफ्त तलबहैकि रावजी काक्या प्रयोजनथा कि पेडरू को अपराध लगाता रावजीने पेडरूका जिक्र नरसूआदिके सहशकिया ॥

अबदो बजगयेहैं जोमंजूर होतो थोड़ीदेरके लियेअदालत बरखास्तहो तथाचअदालत टिफनखानेके वास्तेबरखास्त हुई ॥

टिफन खाने के उपरान्तजबअदालत एकत्र हुईतोसाहब ऐडवकेट जनरल फिर तकरीर करने लगे प्रेसीडण्ट साहब ने पूछा किजाहिर कियागया है किनरसूकी गवाही २३ दिसम्बर को लीगई परन्तुमिस्टर सरल्यूइस पीली साहबके बयान से मालूम होता हैकि २४ दिसम्बरको उसके इजहार लिये गये—साहब ऐडवकेट जनरलनेकहानरसू के इजहार मिस्टर सूटर साहब केरूबरू२३ दिसम्बर को हुये थे ॥

प्रेसीडण्टसाहबने कहा मिस्टरसूटर साहबनेवर्णनकियाहै किजबनरसूके इजहारलिये गएतो सरलूइसपीलीसाहबउपस्थितथे साहबऐडवकेट जनरलनेकहा--२४दिसम्बरकोवृहस्पतिवारथा और महाराजासाहबकी मुलाकातकादिनथाइसलिये मिस्टरसूटर साहब गलतीपर हैं और सरल्यूइसपीली साहब ठीक कहतेहैं कल्पना कीजिये कि २४दिसम्बर को नरसूके इजहार लियेगये तौभी अदालतको किसी प्रकार का एतिराज नहींहै ॥

सरजन्ट बेलनटायन साहबबहुत कुछ शीशीका जिक्रकरते हैं परन्तु मेरेविचारसे मेरेदोस्त बड़ीगलतीपर हैं दामोदरपन्थकी गवाहीसे प्रगटहै कि जबउसके पासगजाबा शीशीलाया तो यह शीशी कुछ बड़ीथी इसलिये दमोदरपन्थ ने इसशीशी की दवादूसरी छोटीशीशीमें करदी इसशीशी में गुलाब का अतररहताथायहशीशीखासगुलाबकेअतरकीनथीअर्थात्जैसा मेरेमित्रकोखयालहैकिदोतीनकतरेअतरके उसमेंहोंगेऔरजो

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

टरकी और ईरानमें नियादहबिकती है अगरऐसीछोटीशीशी होतीतो वहइसकाममें नलाईजातीदामोदरपन्थअपनेइज़हा-रमेंवर्णनकरताहैकि वहशीशीएक उंगलीके बराबरथीइसलिये मेरेदोस्तकाखयालबिल्कुल गलतहै यहशीशीबहुतछोटीन थी औसतदरजेकीथीउसमेंअधिकवस्तुआसक्तीथीयदियहशीशीइ-तनीबड़ीथीऔरउसकेमुखपर रूईऔरसोमलगाहुवा थाइसवा-स्तेजबरावजीने उसकोनेफेमें रक्खाहोतो शायदथोड़ीबूंदेंबा-हरनिकलीं हों और रावजीके पेटपरवह दवालगगईहो डा-क्टरग्रेसाहबने रावजीकापेटदेखा और कहाकियह निशान पेटपरविषसेमालूमहोताहै और कहाकिजिसतरहकी शीशी से इसनिशानका होनाबयानहुवाहै उसशीशी से यहनिशान पड़गया हो ॥

इसनिशानके लियेबहुतकुछ बयानहुवा है मुतरज्जिमने ग-ल्तीसे तर्जुमाकिया कि पेटपरफफोला था परन्तु जोतर्जु-माशुद्ध होता तो फफोला न लिखाजाता किन्तु फोड़ासमझा जाता क्योंकि जबपेट अथवा शरीरकाकोई भागजलजाता है तोफफोलापड़ता है फोड़ानहींहोता इससेखूबतसदीक हुवा किजहरकीवजहसे रावजीकेउदरपर फोड़ाहुवाथा सिवायइ-सके जबडाक्टरग्रेसाहब ने रावजीकेपेटको देखकरअपनी राय बयानकीतो तबतक दामोदरपन्थके इज़हार नहीं हुयेथे फिर क्योंकर रावजीजानता कि दामोदरपन्थ क्या कहेगा ॥

हकीमने जो दवाईबताई थी और दवा और जहरोंमें से एकसंखियाभी थी रावजीको मंजूरन था कि करनैलफियर-साहबको कोईऐसी वस्तुदीजावे जोतुरन्तही अपनाकाम कर जावेइसीसे उसशीशीकी दवाफेंकदी अगरउसको अपनीप्र-तिष्ठाका बिचार न होतातो नहानेकेसमय दवाकोडाल देता परन्तु उसनेदवाको फेंकदिया और नरसूसे कहा होगाकि मैंनेदवा टबमेंडालदी ताकि वहमहाराजा साहबसे शिका-यत न करे ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कुछ संदेह नहीं कि जब करनैलफियरसाहबके माथेपर फोड़ा था तो महाराजा साहबके राजीकरनेके वास्ते निस्संदेह फोड़े कीदवा में संखिया डाला होगा क्योंकि करनैलफियर साहब फोड़ेपरमल्हमलगातेथे तोउसमें संखियेकाडालदेनाकुछकठिनन था फिरउन्होने महाराजासाहबसे बयान किया होगाकि हमनेइसप्रकारकी कारवाईकी और उससमय दामोदरपंथ नेसुनाहोगानहीं तो दामोदरपंथकोकरनैलफियरसाहबके फोड़े काहाल क्यामालूम होता क्योंकि ऐसा नहीं होसक्ता था कि दामोदरपंथ एकगलत बयानकरता जिसकीतारीखवगैरहसब दुरुस्त होतीं कि करनैलसाहबने क्योंकर फाहा लगाया और किसतरह उनकोउसमें जलनमालूमहुई–कितनाही मेरेमित्र नेरावजीके इजहारको बहुतकुछखण्डन करनाचाहापरन्तु जितनाकिउन्होंने रद्दकरनाचाहाउतनीही उसकेबयानको मज़बूतीऔर सिदाकतहुई और रावजीके इजहार और उसकी बातरद्दनहीं होतीजब शीशीदीगई थीतो रावजीने अपनेइजहारमेंशीशीके दियेजानेकी तारीखबयानकी यहतारीखकरनैलफियरसाहबके फोड़ेकेदिनोंसे मुताबिक़है यदियह बिचार कियाजावे कि यहसब बातेंपुलिस की गढ़ी है तोडाक्टरसीवर्डसाहब और पुलिससे साजिशहोगी और उन्होंनेकहदिया होगाकि मैंनेफोड़े का किसभांति से इलाज किया और इस बात काभीनिश्चयनहीं आताकिपुलिसने क्योंकर दामोदरपंथ कोसिखायाहोगा और क्योंकर दामोदरपंथने मिस्टररिचीसाहब और कमीशनके सन्मुखएक साबयानकिया॥

सरजण्टबेलनटायनसाहब ने पेटीकेलिये भीबहुत कुछजिक्र कियाहै मेरेमित्र यहबात प्रगटकरना चाहतेहैं किमिस्टरहटर साहबकोभी इसमुआमलेमें साजिशथी और वहचाहतेथेकि जुर्म साबित होजायपरन्तु मैंनहींकहसक्ता कि मिस्टरहटर साहबने इसतरहकामेल क्योंकियाहोगा मेरेबिचारसे यहबात

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

असम्भवितहै अकबरअलीएक तजुरबेकार अफसरहै जबउसने सुनाकिरावजी पुड़ियोंको अपनीपेटीमेंरक्खा करताथा।तोतीव्र बुद्धिसेउसने उसपेटीको देखना चाहाथा कि मालूम करे कि आयापुड़िया काविष बाहरनिकालकर पेटीमें रहगयाहै या नहींक्योंकि उसकोमंजूरथा किवखूबी इसबातको साबितकरे किउसने विषदिया वानहीं रावजी के इकरार परही मंजूरों थाकि उसपर एकवक्त बड़ाअपराध कायमकिया जावे और अकबरअलीके लियेकदाचित् खयालनहीं होसक्ता कि उसने कुछ चालाकी कीहै क्योंकि उसको उससमय मालूमथा कि मिस्टरसूटरसाहब आवेंगे और फिरलौट करचले आवेंगेक-मीशनके मेम्बरोंकोस्मर्ण होगाकियह सबबातेंक्योंकर हुईंयह बात विचारमें नहीं आती किवहशख्स पेटीके लेनेको गयाथा उसनेविषकी पुड़ियापेटीमेंरखदीहो जबपेटीमंगवाईथी मिस्टर-सूटरसाहब उस कमरे में थे जहांकि तहकीकात होती थी और उन्होंनेविचारा होगाकिपेटीमें क्या निकलेगा इसलिये मुंहधोने और वस्त्रबदलने केलियेदूसरे कमरे में चलेगये क्यों किहाजिरीका समयआगया था और मुखकेधोने और कपड़ा केबदलनेमें पन्द्रहअथवा सोलह मिनट व्यतीत हुयेहोंगे इसी समयान्तरमें पेटीआई और उसकोदेखा गया अकबर अलीने उसपेटीको सबजगहदेखाजब उनकोकहीं जेबआदिनमालूम हुईतो रावजीसे पूछाकिगुप्त जेबइसमें कहां है और पुड़ियों को कहां रखता था जब रावजीने जेबको बताया तो उन्होंने उगलियांडाल करउसको फाड़ातो उसमेंसे एकपुड़िया निक-लीतुरन्तही मिस्टरसूटर साहबको उन्होंनेबुलाया औरमिस्टर सूटरसाहबने उसपुड़ियाको जेबसेनिकाल करदेखातो उसमें उसीभांतिका विषथा जैसाकि करनैलफियर साहबकेगिलास मेंडालागयाथा जो पुलिसने कुछकाररवाई कीतो वहक्योंकर मालूम कर सक्तेकि अमुक प्रकार की संखिया करनैलफियर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

साहबको दीगईहै कदाचित् विश्वासनहीं आताकि पुलिसके लोगइतने चालाकहैं इसलिये मुझको निश्चयहै कि कमीशनके मेम्बर सरजन्दवेलनटायनसाहबकी इसतरहपरपर कुछलिहाज नकरेंगे यहपेटी रावजीसे ९-नवम्बरको लीगई और भाऊदरको दीगई तबसे भाऊदरके पास यह पेटीरही खानबहादुर अकबर अलीने सीधी २ कारवाईके सिवाय और कोईचालाकी नहीं की जबपुड़िया पेटीमें मिलीतो खानबहादुर अब्दुलअली और गजानन्द वकिल उपस्थितथे सरजन्दवेलनटायन साहब ने उन दोनोंमनुष्योंसे प्रश्नकिये मेरेविचारसे जोविषकी पुड़ियाराव-जीकी पेटीमें मिलीउसमें कोई चालाकी नहींहुई उसपुड़िया में वहीविषथा जोउसने करनैलफियरसाहबको दियाथा॥

सरजन्दवेलनटायनसाहबको चाहियेथा कि रावजीके इज-हारपरखूबग़ौर करकेएतिराज करतेजो इसमुकद्दमेमें पुलिस की कारवाई होती तो इसपुड़िया में संखिया और हीरेका चूर्णभी अवश्य होता न केवल संखिया इससंखियेका मिलना रावजीके बयानकेमुआफिकहै क्योंकि उसनेबयान कियाहैकि थोड़ी २ संखियाहीरेके चूर्णमें मिलाई थी और बाकीको रख छोड़ाथा तथाचपुलिसको वहीपुड़िया मिली फिर क्योंकर यह बातहोसक्तीहै कि पुलिसने चालाकी करकेपुड़ियाको रखदिया यहभीकच्चा बिचारहै॥

कमीशनके मेम्बरोंको स्मर्णहोगा कि रावजीने वर्णनकिया हैकि मैंअपनेहाकिमको एकहीवेरमारडालना नहींचाहताथा रावजीने थोड़ी २ संखियापुड़ियोंमें डालीथीजब करनैलफियर साहबने ९-और १० नवम्बरको इजहारलिये तोउसने फेजूपर तोहमत रक्खीथी कि उसने बिषदियाहै यहतोहमत उनकी इथाथी परन्तु जबखयाल कियाजाताहै कि पहिलेफैजू कईवेर माखूज होचुकाहै और यहशख्स बदमुआश मशहूरथा इसी सबबसे मेरे विचारमें निश्चयथा कमीशनकेमेम्बरों सिसबनोकरोंको उसकेबिष देनेका निश्चयथा कमीशनकेमेम्बरो

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

को खर्च होगा कि फैजू महाराजा साहब के दरबार का नौकर था और उसका एक पुत्र भी महाराजा साहब के पास नौकर था यह लड़का बिल्कुल कम उमर था तनख्वाह मिलने के लिये उसका नाम नौकरों में था इसी वजह से रेजीडन्सी के नौकरों का गुमान फैजू के लिये गलत न था ईश्वर न चाहे राव जी के ओर से मैं कुछ उज्र नहीं करता हूं किन्तु केवल इतना ही जाहिर करता हूं कि सर जन्ट बेलन टायन साहब ने कहा है कि उसका इजहार निश्चय मानने के योग्य नहीं है और मैं कहता हूं कि उसका इजहार निश्चय मानने के लायक है जो कमीशन के मेम्बर सब इजहार को गलत करदें तो उसका इजहार भी गलत है नहीं तो मेरे बिचार से उसके इजहार में कोई झूठ और गलती नहीं है॥

ऐडवकेट जनरल साहब ने कहा कि चार बज गये हैं और जब तक कि ऐड्री सको संक्षेप न करूंगा पूर्ण न होगा प्रेजीडएट साहब ने कहा कि आप उसे सुखतसिर न कीजिये आज अदालत बरखास्त की जावे—सर जन्ट बेलन टायन साहब ने कहा मैं ठीक २ कहता हूं कि मेरे दोस्त ने एक क्षण भी अपने वक्त में वृथा न खोया सो अदालत बरखास्त हुई॥

——

बीसवें दिन का इजलास॥

जब कमीशन एकत्र हुई तो प्रेजीडएट साहब ने कहा कि श्रीमान् महाराजा सेंधिया और सर दिनकरराव अलील हैं इस लिये वह अदालत में नहीं आर के जो कुछ आपकी स्पीच होगी वह उनके पास भेजी जावेगी॥

ऐडवकेट जनरल साहब ने अपना अफसोस जाहिर किया कि दो कमीशन के मेम्बर आज अदालत में न आसके परन्तु आशा है कि मेरी स्पीच पर वह खूब गौर करेंगे॥

मेरी समझ में नहीं आया कि नरसू के इजहार क्यों निश्चय मानने के योग्य नहीं मेरे मित्र सर जन्ट बेलन टायन साहब ने कहा है कि नरसू एक फजूल गवाह था उसकी गवाही की कुछ अवश्यकता

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

नथी यहगवाह इसलिये पेशकिया गया था कि रावजी की
गवाहीकी तसदीककरे—मेरा यहखयाल सरजन्टबेलनटायन
साहबकेअनुकूलनहींहैमेरेविचारसे नरसूकी गवाहीनिहायत
जरूरीथी क्योंकि उसकीगवाही विषदियेजाने के विषयमें ली
गई इसकेविशेषवह शहरमेंरहता था और उसीके द्वाराखबरें
आयाजाया करतीथीं अर्थात् जोखबरें रावजी महाराजासा-
हबको भेजाकरताथा इसलिये कमीशनके मेम्बर इसबात पर
खयालकरेंगे कि इसमनुष्य की गवाही बहुत जरूरीथीसिवा
इसके नरसू रावजी हवलदारका अफ़सरथा जोवह इसमुआ-
मलेमें संयुक्त नकिया जाताता और चपरासियोंकोभयरहता
महाराजासाहबने नरसू को गालियांदीथीं और कहाथा कि
तूने विषदेनेमें बड़ी देरीकी महाराजासाहबने नरसूसे कहा
था कि रेज़ीडण्टसाहबकी डेवढ़ीपरतुमसदा बैठेरहाकरोजब
रावजी किसीकागज़केलेनेकोभीतरजाय अथवाविषकेडालते
समय कोईगैरमनुष्यआजाय तोसीटीबजादेना परन्तु सोमवार
को नरसू अपनेइसपहिरेपर नथा महाराजासाहबको संदेह
हुआकि किसीमनुष्यने रावजीकोविषकीपुड़ियाशर्बतमेंडालते
हुये देखलिया और असलबातयह है कि उसदिन ५ बजेतक
नरसूरेज़ीडन्सीमें नहींआयाथा और उसदिन रावजीने भोर
को शर्बतमेंविषडालदियाथा इसीलिये महाराजा साहबको
चिन्ताहुई और नागोन्तरमें उन्होंने दामोदरपंथसे कहदिया
था इनसबबातों से पायाजाताहै कि यह मुक़द्दमा पुलिसका
बनायाहुआ नहींहै जोकुछ तहक़ीक़ात से ज़ाहिरहुआ वही
असलियत मुक़द्दमेकी है अब कमीशन के मेम्बरों को मालूम
होगयाहोगा कि नरसू किसलिये नियतकियागयाथा यद्य-
पि वह पुरानानौकरहै परन्तु उसमेंकुछभी बुद्धिनहींहैमालू-
म होताहै कि इसमनुष्यने पुरानेनौकर होनेसे जमादारी की
पदवीप्राप्तकी नकिसी कारगुज़ारी से ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सरजन्टबेलनटायन साहब उसके कुवेंमें गिरनेपर बड़ाहास्य करतेहैं कुवेंकेगिरनेमें जोगवाही पेशकुई उसमें बड़ाअन्तरहै नरसू वर्णन करताहै कि जिसदिनमेरे इजहार लिये गये मैं कुवेंकी ओरजाताथा मेरेमनमें यहआया कि इतनीबड़ी अवधि के उपरान्त मेरे भाग्यमें यहबदनामी लिखीथी जबमैंने वहां अपने साथियों को देखा तो नेच मेरे साम्हने न होसके तो मुझे यही उचित मालूम हुवा कि ऐसे जीने से डूब मरना उत्तमहै सरजन्टबेलनटायनसाहबने अपनी सोचमें इस बात कोभी साबित करनाचाहाहै कि नरसूका यहभी एक फरेब है यदि वास्तवमें वह कुवेंमें गिरा तो अकस्मात् गिरा जान बूझकरनहीं गिराथा सरजन्टबेलनटायन साहबको मंजूरथा कि सरल्यूइसपीलीसाहब वहबयान नकरें जो उन्हों ने बयान किया कि मैंनेनरसूको आतेहुयेदेखा और वहबिल्कुलजलमें भीगाहुवाथा जोमनुष्य उसकुवेंको देखेगा वहीयहबातकहे- गा कि इसकुवेंमें अकस्मात्‌मेंगिरना असम्भवितहै नकोईमनु ष्य यहकहेगा कि पुलिसकी बनाई यहबातहै यहबातबिल्कुल गलतहै नरसूको वास्तवमें बड़ीलज्जाहोगी और उसकोमंजूर नहोगा कि अपनामुख किसीको दिखाऊं इसलज्जासेभी उस के इजहारोंकी तसदीकहोगी क्योंकि अगरवहठीक२ बयान करता तो उसको किसबातकी लज्जाहोती हरमनुष्यकोस्मर्ण होगा कि सरदिनकररावने उससे कैसे२ प्रश्नकिये जिनलोगों ने उससमय सुना उनकोभी निश्चयहोगयाथा कि यह मनुष्य जोवर्णनकरेगागलतनहोगा उसनेहरदफे यहीकहाकि ईश्वर को वर्तमान समझकर ठीक२ कहताहूं और इसीलिये उस- से कहा गया कि जो तू ठीक कहेगा तो तेराअपराध क्षमा कियाजावेगा उसनेइसका भी यही उत्तरदिया कि सरकार मेरी माता पिताहैं जो चाहेकरें मैंअबभी सचकहताहूं दा- मोदरपन्थकी गवाहीपरमेरेमित्रनेबहुतकुछ एतिराजकियेहैं यहमनुष्य गायकवारका अतिविश्वसित नौकरथा गायकवार

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

और दामोदरपन्थमें कोईरंजभी नथाजबइसमनुष्यको गायक-
वारसे कोईबैर नथा तो क्याकारणहै कि वह गायकवार पर
ऐसा अपराध लगाना चाहे—अखीर मरतबा गायकवार दा-
मोदरपन्थको पीलीसाहब के पासलेगये और उसको पेशकर
केकहा कि यह मनुष्य मेरा प्राईवेटसिक्रेटरी है इससे साफ
जाहिरहै कि गायकवार और दामोदरपन्थमें कोईरंजनथा
जिस दिन गायकवार पकड़े गये उस दिन दामोदरपन्थ भी
पकड़ागया उसको अपनेस्वामीपर झूठेतोहमतके बनानेका
अवसरनमिला यहबात असम्भवित है कि पुलिसके नौकर इ-
तने आदमियोंको सिखाते और सबसे एकहीप्रकार की गवा
ही दिलाते-माईलार्ड-मुकद्दमेके हाल और गवाहोंकीगवा-
हीके देखनेसे मेरेविचारमें सिवायइसके कि गायकवार पर
जुर्मसाबितहै कमीशनसे और कुछफैसला नहोगा औरजि-
तने गवाह गुजरे सबनेठीक बयानकिया सरसन्टबेलनटायन
साहबने जो२ एतिराजकिये वहबिल्कुल फजूलथे उनकीकत-
रीर हरगिज समाअतके लायकनहींहै हेमचन्द फतहचन्दने
अदालतके रूबरू बारम्बार झूठी सौगन्दखाई पहिलेकुछब-
यानकिया और फिरकुछकहा सिवाय हेमचन्द फतहचन्दके
और सब गवाहोंने एकसी गवाहीदी अबकमीशनके मेम्बरों
को इखतियारहै जैसाचाहैं वैसालिखें सरजन्टबेलनटायनसा-
हबनेसालिम और यशवन्तरावकेलियेभी कुछअच्छाबयाननहीं
किया यहदोगवाह गायकवारकेविश्वसितथे जबवेआपहीफिर
गयेऔरउनकीगवाहीसरजन्टबेलनटायनसाहबनेनहींलीऔर
बाकीक्यारहगया इससेजियादह मुझको हिदायत नहींहै इस
लियेमैंऔर कुछनहीं कहसक्ता सबसाहिबोंसेमेरीअखीरअ-
रजयहहै कियहरईस जोमाखूज हुवाहै हमदर्दीके लायक
नहींहै छोटी२ बातोंकाजिक्र करना मैंने उचितन समझा जो
बातेंमुख्यथीं उन्हींकोकहा आशाहैकि कमीशनके मेम्बर खूब
इन्साफ करेंगे मैं कमीशनके मेम्बरोंका शुकरिया अदाकरता

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

हूं कि उन्होंने मेरे एडरेस को मन से सुना अब मेरी प्रार्थना है कि आप खूब इन्साफ करें १२ बजे ४५ मिनट पर एडवकेट जनरल साहब की स्पीच सम्पूर्ण हुई इसके उपरान्त कई क्षण सब लोग चुप रहे फिर कमीशन बरखास्त हुई॥

रेजोल्यूशन मईसन् १८७२ ई०॥

टाइम्ज़ आफ़ इण्डिया के ऐडीटर साहब के नाम पर-क्योंकि मैं कमीशन के इजलास में गवाही के लिये नहीं बुलाया गया मैं रेज़ोल्यूशन मई सन् १८७२ ई० के विषय में लिखता हूं कि यह ठीक है कि मैंने रेजोल्यूशन मई सन् १८७२ ई० का पाया उसका हाल इस तरह पर है कि मिस्टर हरीचन्द चिन्तामणि जो श्रीमान गायकवार के इंगलिस्तान में एजन्ट हैं उन्होंने उसकी एक नकल इंगलिस्तान से लेकर मेरे पास भेजी थी और वह हमारे पास जून महीने में आई और हरीचन्द चिन्तामणि ने २४ जून को लार्ड सेलसबरी साहब के सम्मुख पेश किया इसका जिक्र मैंने एक बेर सरल्यूइस पीली साहब से भी किया और उन्होंने मुझसे वह मंगवाई करनैल फियर साहब जो कहते हैं कि हमने इस विषय में शिकायत नहीं की वह बिल्कुल गलत है हमने कई बेर करनैल फियर साहब से कहा कि आप राज्य के प्रबन्ध में हमको सहायता दीजिये परन्तु उन्होंने उसका कुछ बिचार न किया सो दूसरी नवम्बर को खरीता लिखा गया सरल्यूइस पीली साहब ने एक सप्ताह में बहुत नवीन प्रबन्ध किये और हमको बनिस्बत करनैल फियर साहब के तीन महीने के सरल्यू पीली साहब से एक सप्ताह में बहुत सहायता मिली करनैल फियर साहब कहते हैं कि २ नवम्बर के खरीते में बिल्कुल हालत गलत लिखे थे हालांकि जो कुछ उसमें हाल लिखे थे वह सब ठीक हैं॥

दस्तखत-दादा भाई नवरूजी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

दामोदरपन्थके उन इजहारोंका उलथा जोउसने पुलिसकेरूबरू दिये॥

दामोदर पिन्थक ब्राह्मणजोपहिले महाराजा गायकवार कोसेक्रेटरीथा इसतरहइजहार देताहैकि यशवन्तरावयेवलो सालिम और रावजी करनेलफियरसाहबके विष देनेमें शरीक हैं आश्विनमहोना जोदसहरेके निकट है महाराजाने मुजसे कहाकिथोड़ी संखियाफौजदारीसे मंगाओ और कहाकियह संखियाघोड़ेको खुजलीके वास्तेमंगाईजातीहै परन्तु फौजदार से संखिया नमिली महाराजासाहबनेकहाकि कम्पूसेमंगालो मैंने कहाकि इसके मंगानेमें पासकी आवश्यक होगीमहाराजासाहबने कहाकिकुछ परवाहनहींहै मैनेदोतोले संखियानूरुद्दीन बौहराकेद्वारापाई महाराजासाहबने मुजसेकहा थाकि तुमनूरुद्दीनसे इकरार करदेनाकि महाराजा उसको सिलाखानेको दारोगगी देंगे पहिले उसनेनहीं बताया कि उसनेसंखिया कहांसेपाई मैंने महाराजाको संखिया दिखाई और पूछाकिमैंउसको किसेदूं महाराजानेकहाकितुम सालिम को देदोवह उसका औषधीबनावेगामैने सालिमकोदेदीइसके उपरान्त महाराजाने कहाकि एकतोला भरहीरा मंगाओ और कहाकिइस दवाकेलिये उसकी भस्म कीजावेगीमैनेनानाजीवतिलको आज्ञादी किएकतोलाभरहीरा लाकरमहाराजाकोदिखाइये उसनेतोला भरहीरा महाराजको लाकर दिखाया औरमहाराजाने कहाकियह हीरायशवन्तको देदो मुजको अबमालूम हुआकि महाराजाने यहहीरा इसप्रयोजन केलियेमंगाया था पहिलेतो महाराजने मुजसेकहा था कि यहहीरा स्वामीअक्कलकोट के तावकेलिये दरकार है और दूबारह मुजसेकहा कितोला भरहीरेका चूरहमकोलादो मैंने नानाजीवतिल सेकहाकितोला भरहीरेका चूर्णलादो मुजको खूबस्मर्ण नहींहैपरन्तु इतनायादहैकि नानाजीवतिल वाविनायकराव ने दूसरेदिनसंध्या कोहीरेका चूर्णला दिया महाराजासे मैनेपूछा कियहचर्ण क्याकियाजावे उन्होंने आ-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

क्योंकि यशवन्तको देदोनब हीरेकाचूर्ण मैंयशवन्त कोदेने लगामैने उससेपूछाकियह चूरहक्या होगा उसनेकहाकियह चूरहकरनैल फियरसाहबके शर्बतमें मिलायाजावेगा ताकि वहमरजावें यहबात करनैल फियरसाहबके विषदियेजानेके पांचछः दिनपहिले हुईथीजिसदिन बिषदियागया मैं महाराजाके साथरेजीडण्ट साहबके यहांगयाथा औरमैंसेत्रकधर्म्मशालामें ठहरारहा और महाराजासाहब रेजीडण्ट की भेंटको गयेजब वहांसे लौट आयेतो मुजसे कहा किविषका देनाआज मालूमहोगया सालिम औरयशवन्त रावकाआना जानारावजीके पासजाहिर होगयाऔरजबयह बात मालूम हुई तो सालिमरावजीके घरगयाऔरसम्पूर्ण पुड़ियांजोरावजीके घरपरथी फेंकदीं मैनेमहाराजासे पूछाकिक्योंकरयह बात प्रगटहोगई उन्होंने उत्तर दियाकि नरसूजमादार आज केदिनपहिरेपरनथा जबकोई आताथातो नरसूसोटीबजादेता थाऔरवह कियहांपर नथाइसलिये यहभेद मालूमहोगया औरदिनोंसे महाराजासाहब आजजल्दी आयेथेमैं फिर घर चलागया औरमध्याह्नकेसमय मैनेमहाराजाको लक्ष्मीबाईके महलमें देखाकि महाराजा और नानासाहब इसी विषका जिक्रकररहेहैं औरदोपहरकेउपरान्तमैं औरमहाराजाऔर नानासाहब सवारहोकर कहींगये तोमहाराजा मार्गमेंकहनेलगे कि खबरदार जोजिक्र हमकररहेथे किसीसेन कहनाऔर इसकीतलाश रखनादूसरेदिनमहाराजानेसालिम और यशवन्तराव से बहुतकुछ समझा कर कहाकि तुम कभी इसकाइकरार न करना इसकेउपरान्त वहफिर सवारहोकर गयेऔर हमसेऔर नानासाहबसे मार्गमेंकहने लगेकि रावजीतो छूटगया अबकुछ भयनहीं है जब करनैलफियरसाहब कीजगहपर करनैलपालीसाहबआयेतोमहाराजा कहनेलगे किआज रावजीने मुजको दूरसे सलाम किया था और वह चाहताथा किजोकुछउससेप्रतिज्ञा कीगईथी वहपारितोषक

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उसको दियाजावे परन्तु महाराजा कहने लगे कि मैने उससे कहा कि जब यह कुलमुआमला दूर होजावेगा तब तुमको पारितोषक मिलेगा फिर जब सूटर साहब यहां आये और रावजी पकड़ा नहीं गया तो महाराजा ने सुना कि सूटर साहब बम्बई को लौटगये इसबातको सुनकर महाराजा साहब अति प्रसन्न हुये और कहने लगे कि अब कुछ भय नहीं है हमसब बरी होजावेंगे परन्तु रावजी जब पकड़ा गया तो महाराजाने मुजसे कहा कि रावजी का अपराध क्षमा होगया और उसने सब बातें अपने इजहार में कहदी हैं तुम कदाचित् किसी बातका इकरार न करना और नाना हरबा और सालिम और यशवन्तराव से भी मैंने समझा दिया है जबकि रेजीडन्सी से सालिम और यशवन्तरावके गिरफ्तारी का हुक्म आया तो मुझको बड़ा भय हुवा और मैंने नाना साहब से कहा कि हम और तुम भी इसी तरह से पकड़े जावेंगे संध्या के समय मुझको महाराजा साहब ने कहा कि उन दोनों मनुष्यों को रेजीडन्सी में मैंने भेज दिया है और उनसे कहा कि तुम कभी इकरार न करना और फिर मुजसे कहने लगे कि जो तुम इकरार करदोगे तो गोविन्दराव काली के सदृश तुम्हारे टुकडे२ होजावेंगे और यही बात नाना हरबा से भी उन्होंने कही थी मैंने सुना था कि नानाजी वितल ने हीराहेम चन्द से मोल लिया था जब मैंने उस हिसाबको महाराजा साहब के दस्तखत के वास्ते पेश किया तो उन्होंने कहा कि स्वामीनारायण नाम के जो ब्राह्मण खिलाये गये हैं और जो सात हजार रुपये का हीरा मोल लिया गया है तो उसमें से आधी रकम को अर्थात् तीन हजार पांचसौ रुपये तो ब्राह्मणों के नाम बढ़ादो और तीन हजार पांचसौ रुपये हीरों की खरीद के नाम रहने दो और यह लिखदो कि हीरे दवा के लिये लिये गये हैं परन्तु जबकि विष देना साबित होगया तो मैंने महाराजा से कहा कि हीरा दवा में नहीं पड़ता है अब हम क्या करें उन्होंने कहा कि उस कागज को फाड़डालो मैंने नानाजी वितल से कहा और इन्होंने उत्तर दिया कि हमने

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उनवरको कोनिकाल डाला है मैंने इसबात को महाराजासे दूत्तिलाकर दीहै यहहिसाब किसीभी खातेमें नहीं रहताथा किन्तु कागजके बन्दों पर रहता था जबकि मैंने फौजदार से संखिया मंगायाथा तोजसु नजी वद्या वहांका कारकुन था उसने कहा कि महाराज के पूछनेके बिनामैं तुमको नदूंगा परन्तु फिर उससे मैंने नमंगाई वह कागज कि जिस पर मेरे दस्तखतथे वहफौजदारके दफ्तरमें रहा और जबहमनेमांगा तोवहांसेवापिसनआया करनैलफियरसाहबसे और महाराजा से बहुत दिनोंसेवैरहोगयाथा और लक्ष्मीबाईकामहाराजासे विवाहहोने सेतो और भीअधिकवैर होगया था जब किमैं नौसारीमें थातो मैंने देखाकिरावजी सरकारी कागज महाराजाकेपास लेगयावह कागज यमुनाबाईकेथे जिनमें महाराजाकीशिकायत उसने फियरसाहबको लिखीथी सुनमेमहाराजानेकहा किइनकी नकलकर लोसारातोंरात मैंने उनसब-कागजोंकी नकलकरली वहजोनकल मैंनेकरलीथी अबउस-कोमैंने फाड़डाला यहविचार करकिऐसा नहो कोई देखले फिर करनैल साहब बड़ौदे मेंआये और करनैलफियर साहब कोउन दिनोंज्वर भीआता था और शिरमें फोड़ाभीनिकला था मैंनेएकदिन महाराजाको सालिमसे बातेंकरते हुयेसुना सालिममहाराजासे कहरहाथा कि साहबकेफेडकेस्टरमें वहदवा मिलाईगई और साहबके फोड़ेमेंबड़ीजलनहै महाराजानेकहा किमैं रावजीसे सुनचुकाहूं और रावजीने खबर में वहदवा मिलाई थी थोड़े दिनके उपरान्त बड़े हकीमके छोटेभाई एकबोतलमें विषकीदवा बनाकर लाये परन्तु वहां बहुतसे मनुष्यथे इसलिये उन्होंने वहदवा सबकेरूबरू नहीं दीएक दिन संध्याको महाराजानेमुझको आज्ञा दी कि बड़े हकीमकेछोटे भाईने बरें मंगाई हैं तुम फौजदारीको हुक्मभेजो कि जो लोग बरें पकड़ते हैं वह बरें पकड़ कर हकीम साहबके पासलेजावें और मैंने नरायणरावदादामकरको जो

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कि फौजदारीमें नौकरहै आज्ञा देदी है दूसरे दिन महाराजाने हरिवासे कहाकि बड़े हकीम साहबके छोटे भाई दवाकेलिये सर्पमांगते हैं दोतीनदिनके उपरान्त सर्पोंवाला आया और हरिवासांपोंको लेकर हकीम साहबको देआया नारायणराव बरेंलाया और वहभीहकीम साहबके पास भेजदीं फिर हकीम साहबनेकहाकि मुझको घोड़े का पेशाबलादो और मैंने बापा जीको आज्ञादी और उसनेहकीम साहबके पासपहुंचा दिया उसी समय फौजदारी के दफ्तर से संखिया भी मिला परन्तु मुझेस्मर्णनहीं कि कितना था जबयह वस्तुहकीम साहबकेपास पहुंचगईं तो वहएक शीशी तैय्यार करकेलाये और महाराजा नेवहशीशी सालिमको देदी वहशीशी अतरकीथी मुझेमालूम हुवा कि वह कर्नैलफियर साहबके फोड़े में लगानेके लिये दी थीतीनबेर कर्नैलफियर साहबके मारनेके लियेउद्योगकिया गयापहिले हकीम साहब की दवासे दूसरे पलास्टर में विष मिलानेसे और तीसरेशर्बतमें विषमिलाने से मैंनेदोबेर नूरुद्दीनबोहराकोसंखियापाईथी जबमुझेमालूमहुवाकि मुकद्दमेकी तहकीकात होरहीहै तोमैंने नूरुद्दीनसे पूछा कि वह संखिया तो तुमने मेरेनाम नहीं लिखीहै उसने कहा मैंने तो नहीं लिखीहै परन्तुकम्पूमें जिसमनुष्यके पाससे तुमलायेथे उसने तुम्हारे नामलिखीहै जो दो सौरुपये तुम हमको दो तोहम उसकागजसे तुम्हारा नामनिकालडालेंमैंनेकहाकि अच्छातुम अपनेपाससे दोसौरुपये देके हमारा नाम निकलवादो मैंदो सौरुपये तुमको अपनेहिसाबसे मुजरादूंगा क्योंकिमैं कम्पूवाले को नहीं जानताहूं परन्तु मुझेनिश्चय नहींहै कि उसनेरुपया देके मेरानाम निकलवाया हो॥

दामोदर पंथ अपने इजहार देरहा है.

लिखा हुवा ३० मई सन् १८७५ ई० का।

वह बयान करताहै कि यशवन्तराव और सालिम रुपयेले जाया करतेथे और रेजीडन्सी के नौकरोंको दियाकरते थे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

और उनरकमों को और हिसाबमें लिखादिया करतेथे जब यहदोनों मनुष्य गिरिफ्तारहुयेतो महाराजने कहाकि जो रकमेंमशकूक हैं उनकोबदलदो अथवा निकालडालो या छील डालो परन्तु हिसाब तोकई जगहपर लिखाजाता था इस लिये उनरकमोंपर मैने स्याहीडालदी यशवन्तराव और सालिम रेजीडन्सी के नौकरोंको डेढ़वर्षसे रिशवतदेते थे चार महीनेहुये कि एकलाख बीसहजाररुपये प्रेमचन्दरायचन्दको दियागयाथा यहरुपया लक्ष्मीबाईके लड़काहोने परदियागया था और रुपया गवसाहबके रिशवतदेने को दियागयाथा कि गवर्न्नमेण्ट लक्ष्मीबाईके पुत्रको मल्हररावका वारिसतसलीम करे परन्तु यहरुपया नहीं दियागया और प्रेमचन्द रायचन्द ने यह रुपया अपने पासरखछोड़ा और यह रुपया खानगी हिसाबमें लिखागया इसीअवसर में एकबाबू कलकत्तेसे बुलायागयाथा और उसकोएकबेर बीसहजार रुपये और दूसरी बेर पचीसहजार रुपयेके नोटदियेगये कि वहभी इसीलड़केके वारिसहोने में कोशिशकरे और यह रुपया लक्ष्मीबाई के हिसाब में लिखा गया बाबू और मोतीलाल से बड़ौदेर तक अंगरेजीमें बातेंहुवाकीं और पचीसहजार रुपये उसी रुपये में से मकनपुर में दियागया जो जो संगीनजुर्म महाराजाने किये उनमें किसीकी सलाहशामिल नहीं थी भावर्दे धिया गोविन्दराव बिनायक और और मनुष्य जो मारडालेगये उस में मैं शरीकनथा वह फौजदारीके द्वाराहुये थे मैं जबसे कि महाराजाका विवाह लक्ष्मीबाईके साथहुवाथातबसे इसजगह पर नियतहुवा हूं पहिले मैंखानगी हिसाबकिताबमहाराजा के रखताथा वहकागज मेरेहाथका लिखा हुवा फौजदारीके महकमेकेलियेहै और महाराजाकी आज्ञाभी इसीमेंहै ॥

२०—फरवरी सन् १८७५ ई० ॥

वह बयान करताहै कि महाराजाके क़ैदहोनेकेएकसप्ताह के पहिले महाराजाके साथ सरल्यूइसपीलीसाहब की मुला-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कोतको आयाथा महाराज की प्रकृतिथी कि प्रतिदिन तीन दफा हवा खानेको जातेथे और मैंसदा उनकेसाथ जाताथा और जब कभीमहाराजा रेजीडन्सीको जातेथे तोमैंसेवकधर्म्म शालाके वहांठहर जाताथा और जबमहाराज वहां से लौट कर आतेथे तोफिर सवारकरके मुझको मेरेघर पहुंचादिया करतेथे जो महाराजकी गाड़ीहांकता था उसका नामरतन-सिंहहै मुझेमहाराजके पास फियरसाहब की आयाके आने का हालभी मालूमन था परन्तु जबकि वह कैदहोगई तोम-हाराजने मुझसे कहा॥

५—फरवरी सन् १८७५ ई०॥

मैंने उन्तीसवीं जनवरी के इज़हार में वर्णनकिया है कि दोबेर हीरेकी कनीमोललीगई परंतु मुझकोउसके मोललेने की ठीकतारीख मालूमनहीं इतनातोस्मर्णहै कि एक२सप्ताह के पश्चात् मोललीगई सालिम और यशवन्तरावने जोरुपया रेजीडन्सीके नौकरोंको दियाहै वहरुपया मेरेयहां मेवा और रेजीडन्सीके नौकरोंको दियाहै वहरुपया मेरेयहां मेवा और आतिशबाज़ी के नामसेलिखाहै और मेवा और आतिशबाजी नहीं आई और न सालिम और यशवन्तराव का काम लाने का था यह काम महाराजाने सालिमरावजी और यशवन्त राव के हाथ में दिया था कि किसी भांति से फियर साहब मारडालें जावें जो खबरें रेजीडन्सी से महाराजा साहब के पास आतीथीं वह सालिमलाता था और मैं उन खबरों को पढ़ के सुनाता फिर वह फाड़ कर फेंक दी जाती थीं वह दोरक़मैं बीसहजार और पचीसहजार रुपयेको जोकलकत्ते के बाबू को दीगईं थी वह मुसम्मात भीकूकेनाम मेरे हिसाब लिखीहुईहैं और यहस्त्रीलक्ष्मी बाई के रिश्तेदारोंमें है और महाराज की यहभी मदखूला है बलवन्तरावहरकर जबकि महाराजके नायब दीवानथेतो महाराजऐसे मशवरेकीउनसे सलाहकिया करतेथे और उनहीके सम्मतसे गोबिन्द नायक

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

और भावसेंधिया आदिमारडाले थे (ए) अक्षरसे लेकर (एफ) तक जो कागज सरकारमें हैं उनसबमें मेरा दस्तखत है और महाराजकीआज्ञासेलिखेगयेहैं और (जी) अक्षरसे (क्यू) पर्य्यन्त भीमेरीही आज्ञासे लिखेगये हैं यह सबरुपया महाराज की आज्ञासेसालिम और यशवन्तराव कोरेजीडन्सीके नौकरोंको रिशवतकेलिये दियागयाहै ॥

पहिली याददाश्त सूरतका एकहजार रुपया और १८॥) फीसद बट्टासिक्के चेहरे शाहीसे अधिक करके दिया गयाहै तो कुल रुपया ११८८॥) हुवा और एकबेर दो हजार रुपये बाबाशाहीदियागया है तोसब रुपया ३१८८॥) हुयेयहरुपया माघशुदीपंचमीसम्बत् १९३० मुताबिक २५ नवम्बर सन् १८७३ई० कोदियागया और यह रुपयायशवन्तराव कोदियागया ॥

दूसरा हिसाब श्रावणशुदी अष्टमी सम्बत् १९३० ई० कोयह रुपया अहमदाबाद को भेजा गया था और यशवन्त रावको दिया गया था–तीसरी याददाश्त–दस रुपया दिया गया और १।।।=) बट्टेके दियेदियेगये तोसबरुपये ११।।।=) दिये गये और ७) बाबाशाही दिये गये तो सब रुपया १८।।।=) दिये गये इसीभांतिसे सालिम और यशवन्तराव कोभी रुपये दिये जाते थे ६ दिसम्बर सन् १८७३ ई० को यशवन्तराव को रुपयादिया गया२००) रुपया सूरतका दिया गया और प्रति सौ पर १९ रुपया बट्टादिये गयेतो २३८) रुपये हुये–लिखा हुवा२–माघ शुदी सम्बत् १९३० ६—दिसम्बर सन् १८७३ई०के अनुकूल—हिसाबलिखा हुवा,२२ माघ सम्बत् १९३० तथा १३ दिसम्बरसन्१८७३ई०केअनुकूलजो अहमदाबादसेयशवन्तराव,के द्वारा असबाब मोललियागया और सरकारने उसकोरुपयेके देनेकेलिये आज्ञादीआजउसको १०७४) रुपया दियाजाता है और ३०१) दियाजाताहै उसकीरसीदसालिमसे लीगई ॥

हिसाबलिखाहुवा३०वींकीअक्कद तथा३०पौष सम्बत्१९३०

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

१९ जनवरी सन् १८७४ ई० के अनुकूल यशवन्तराव के द्वारा
खास असबाब बंबई से मोल लिया गया और सरकार की
आज्ञासे ६००) रुपये दियागया रशीद २१ वीं जीहज्ज तथा
९ फरवरी सन् १८७४ई० के अनुकूल सालिमकी हाथसे लीगई–
माघकी २४ वीं सम्वत् १९३० मुताफिक नवम्बर दिसम्बर सन्
१८७३ ई० सालिमको अहमदाबादसे असबाब के लानेकेलिये
सौरुपया दियागया है॥

हिसाबसाह जीअकद अर्थात् पौषसम्वत् १९३० तथा २४
दिसम्बर सन् १८७३ ई० के अनुकूल आतिशबाजी और वस्त्र
सालिमने बंबईसेभेजी और सरकारने उसकी कीमत के देने
के लिये आज्ञादी उसके अनुकूलसूरतके रुपयेदियेगये और जो
कुछकि बट्टालगाबहभीदियागया और कुलसूरतके ३००) रु०
दिये गये और बट्टे के वास्ते फी सैकड़े १८॥) के हिसाब से
५६।) दियागया सबरुपया ३५६।) दियागया जीहिज्जे महीने
कीछठी अर्थात् महीनामाघ सम्वत् १९३० २५ जनवरी सन्
१८७४ ई० के अनुकूल सालिमको बंबईसे असबाब लानेकेलिये
महाराजकी आज्ञानुसार सूरतका ४००) रु० दियागया और
बट्टा १८॥) रु० फीसदीकेहिसाबसे सब ४७५) रु० दियागया
२५ मुहर्रम अर्थात् फागुन सम्वत् १९३० तथा १५ मार्च सन्
१८७४ई०के अनुकूलसालिमअहमदाबादसेअसबाबलाया और
सरकारने उसकेखरचके लिये आज्ञादी नक़द रुपया १२४४)
उसकेखर्चके लियेदिया गया॥
दियागया और ५०) उसकेखर्चके लियेदिया गया॥
दियागया और ५०) उसकेखर्चके लियेदिया गया॥

२५ अप्रैलसन्१८७३ई०तथा वैशाखशुदी नवमी सम्वत्१९३०
के अनुकूल १०००) रुपये चेहरेशाही दिया गया यह रुपया
किसी असबाब के लिये जो सालिम बम्बई से लाया था दिया
गया और उसकीरसीद उससेलेलीगई१५मई–सन् १८७४ ई०
तथा ३० बैशाख सम्वत् १९३० सरकार की आज्ञा सेसालिम
को १२७४) रु० बम्बईसे किसी असबाब के लानेकेलिये दिये

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

गया जिसमें से १०००) कलदार दिया गया और बाकी का रुपया बाबाशाही दियागया २२—जेठसम्वत् १९३१ तथा ८वीं जून सन् १८७४ ई० के अनुकूल सालिम बम्बई से सेवा लाय और नीचेविस्तृत रकमउसकोदीगई १००) नकददियागया और फिर २०१) दियागया और २५०) एकदिया गयायहसब रुपयाचेहरे शाहीदिया गया और २५०) सूरतका दियागया और उसका बट्टा प्रतिशत पर १९॥) रु० के हिसाब से ४८॥) दिये गयेतो सबरुपया २९८॥।) दियागया ॥

२४ रज्जब तथा श्रावण सम्वत्१९३१और ८वीं सितम्बर सन् १८७४ ई० कोसालिमकेद्वाराअहमदाबादसेसेवामंगायागया और उसको चेहरे शाही रुपया दिया गया नकद १००) रु० और १९॥) रु० और दिये गये तो कुल रुपया ११९॥) रु० दिया गया ॥

हिसाबपहिली महीनेआश्विन्सम्वत् १९३१ तथा १३ अक्टूबर सन् १८७४ ई०के अनुकूल सालिमके द्वाराअहमदाबादसे सेवा मंगाया गया १२७५) नकद दियागया और रसीद लेलीगई दामोदरपन्थकहताहैकिवहदो याददाश्तजोअभीतुमने दिखाई हैं वहनानाजी वतिलने मुझकोलिखीथी और मुझसे दरख्वास्त कीथी कि हेमचन्द फतहचन्दसे जोदोवार हीरेकाचूर्ण लिखा गयाहै उसकेबारेमें क्याकियाजावे मैंने उनको उत्तर लिखाहै कि यहहिसाबखानगी खर्चमें डालदिया जायहेमचन्द फतह चन्दसे २९ जनवरीको ६५००) रु० काहीरा लियागयाहै औ बड़ौदेके रुपये ६६३२॥।=) ३ पाई दीगई ॥

इति

—०—०—

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

रेज़ोल्यूशन॥

श्रीमान् महाराजा मल्हरराव गायकवार अपनी गद्दीसे उ-तारे गये और थोड़े दिनोंके लिये गवर्न्मेण्ट ब्रिटिशने बड़ौदेका प्रबन्ध करना अपने ऊपर लिया कि तहक़ीक़ात की जावे और उस दोषकी माहियत मालूम कीजावे जो दोष कि विष दिये जानेके बहकाने के लिये मल्हरराव पर लगाया गया था कि पूर्व्वके रेज़ीडण्ट कर्नेल फ़ियर साहब सी-बी-क़ायममुक़ाम गवर्न्मेण्ट ब्रिटिश इण्डिया रियासत बड़ौदाको विष दिलवायागया इस बातको इच्छाथी कि महाराजाको अपनी बरीयत कामौका मिले और वह अपने ऊपर लगेहुये अपराधको रद्द करें॥

सर आर कौचसाहब चीफ़जष्टिस बंगाल और श्रीमान् महाराजा ग्वालियार और श्रीयुत महाराजा जैपुरवीरेश और कर्नैल सर आर मीड़ साहब चीफ़कमिश्नर मैसूर और करग और राजा सर दिनकरराव और मिस्टर पी० एस० मेलवल साहब बंगाले के सिवल सरवण्ट पूर्व्वोक्त जुर्म्मकी तहक़ीक़ातके लिये कमीशन के मेम्बर नियत हुये थे जिस्से कि तहक़ीक़ात करके श्रीमान् वैसराय और गवर्न्नर जनरल बहादुर कौंसलको रिपोर्ट करें कि उनके विचार में मुक़द्दमे की रोयदाद क्योंकर पाई गई और मुख़्तसर हालत उसकी क्या है॥

गवर्न्मेण्ट इण्डिया चीफ़जष्टिस और कमीशनका अतिगुण मानतीहै कि उन्होंने ऐसे बड़े काम और संगीन मुक़द्दमे की कारखाई अपने जिम्मेली॥

कमीशन के मेम्बरों के प्रतिकूल रायकी रिपोर्ट गवर्न्मेण्ट इण्डिया के फ़ैसले के समेत जो बड़े ग़ौर और कौंसलियों की तक़रीर करनेके उपरान्त तैहुई है सम्पूर्ण मनुष्योंकी इत्तिलाके लिये प्रसिद्ध कीजातीहै॥

हुक्म हुवा कि नीचे लिखाहुवा रेज़ोल्यूशन पूर्व्वोक्त काग़ज़ों के सहित हिन्दुस्तानके सेक्रेटरी अफ़्सिहक्के अवलोकनके लिये

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

भेजा जावे और गजट आफइण्डियामें मुद्रितहो—हस्बुलहुक्म श्रीमान् वैसराय और गवर्न्नरजनरल ॥

दस्तखत-सी-यू-एचीसन
साहब सेक्रटरीगवर्न्नमेण्टइण्डिया ॥

रेज़ोल्यूशन ।

नीचेलिखे हुयेकागज़ पढ़ो ॥

पहिले—इश्तिहार लिखाहुवा १२वीं जनवरी सन्१८७० ई० का जिसमें महाराजा मल्हरराव गायकवार मुअत्तिलहुये कि इस जुर्म्मकी तहक़ीक़ात जो पूर्वोक्त महाराजा ने बहकाकर रेजीडण्ट साहब को विषदिया कीजावे ॥

दूसरे—इश्तिहार लिखाहुवा १५ फरवरी सन् १८७५ ई० का जिसकेअनुकूल कमीशन तहक़ीक़ातकेलिये नियत हुई थी ॥

तीसरे—मुकद्दमेके कागज़ उन कागजोंके सहित जो उर्दू से उल्था हुयेहैं ॥

चौथे—नोट छपी हुई याददाश्त कौंसिल की तकरीरों के बाबत ॥

पांचवें—रिपोर्ट सररिचर्डमीच साहब ॥

सर आरमीडसाहब-औरपी—एस० मैलवल साहब दस्तखती ३१ मार्च सन् १८७५ ई०

छठे—भिन्न राय श्री महाराजा सेंधिया लिखा हुई २७ मार्च सन् १८७५ ई० ॥

सातवें—पृथक्राय श्रीमान्महाराजा जयपुर लिखीहुई २७ मार्च सन १८७५ ई० ॥

आठवें—राय जुदागाना राजा सरदिनकरराव लिखीहुई२५ मार्च सन् १८७५ ई० ॥

दफा०१—ऊपरलिखे हुयेकागज़ पढ़ेगये—यहसब रेजोल्यूशनमें क्रमपूर्व कहैं जिनसेमालूम होगाकिमहाराजा मल्हरराव

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कीहरकतोंकी क्योंकर तहकीकात और कारवाई कीगई॥

और यहां पर सम्पूर्ण कागजों को नकल करना सिवाय तूलके और कुछफायदा नहीं इसलिये नकलनकीके वलउन्हीं कागजों जरूर का बयान करना जरूरहै जिस्से कि फैसलेकी सूरत पैदाहो॥

रईसों और कमीशनके मेम्बरोंनेअति परिश्रम और तहकीकातको और कमीशन को बरखास्त किया और अपनी २ रायलिखी अबगवर्नमेन्टइंडियाको पहिलेगवाहोंकी गवाही और कौंसल और अन्यकमीशनके मेम्बरोंकी तक़रीरपर खूब गौर करके इस कारवाई कानतीजा लिखाना शेषरहगया॥

दफ़ा २—सररिचर्डकौचसाहब और सररिचर्डमीडसाहब और मिस्टर पी० एस० मैलवल साहब आदि तीनों कमीशन के मेम्बरों की राय इसबात परमुत्तफ़िक है किजो अपराधगायकवारपर लगायेगयेथे वहसबसाबित होगये यह सबसाहब अपनीरायमें साफलिखते हैं किखूबगौर करकेमालूम हुवा कि मल्हरराव ने अवश्य विषदेनेका उद्योग किया था और जिन लोगोंनेयहकाम किया उन्होंनेमल्हरराव के बहकानेसे किया॥

दफ़ा ३—महाराजा सेंधियाकेलेखसे रियासत और मल्हरराव के नौकरोंमें गुफ़्तगू का होना और विषदेनेका सबूत जिसको श्रीमहाराजा तसलीमकरते हैं पायाजाता है परन्तु महाराजासाहब इसबातको स्पष्टनहीं लिखतेकि कर्नैलफियर साहबको अवश्यविष दियागया और महाराजाके रातदिनकी गुफ़्गूनौकरों और महाराजा साहबके बाबमेंयह फिकरा लिखा हैकिकुछ बड़ीबातनहीं है किऐसा आवागमन और पारितोषककी प्रार्थना विवाह वा त्यौहार पर बहुधा हुवा करते है और इसबातकी सिफारिशकी इच्छा रखते हैं किरेजीडन्टसाहबहमसे प्रसन्नरहें और हिंदुस्तान के रईस बहुधा रेजीडन्ट की कारवाइयोंको खुफियापूछते हैं और उनकी रियासतसे मुताअल्लक है उनपर अधिकतर शफकतरखते हैं॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

और वह समझते हैं कि गायकवारका तअल्लुक विष दिये जानेमें साबित नहीं है वह इस विषयमें यूं लिखते हैं कि विष दियेजानेके उद्योगमें सबसुकद्दमा जो मेरे रूबरू कायम हुवा मेरी समझ और विचारमें विष दिये जानेका जुर्म महाराजा के जिम्मे साबित नहीं है ॥

दफा ४—श्रीयुत महाराजा जयपुर समझते हैं कि रेजीडन्सीके नौकरोंको कुछ रुपया मिला और करनैल फियरसाहबको विष भी दियागया और महाराजा और नौकरोंकी बातोंके विषय में वह यों लिखते हैं कि अमीना आया और अन्य नौकरों के बयानसे साबित हुवा कि रुपया मल्हररावकी आज्ञासे भिन्नर समय और और नौकरों को दियागया परन्तु इससे यह नहीं पाया गया कि रियासतके नौकरोंसे किसी अनुचित कामके लिये साजिश कीजावे और यूं ही गायकवार ने पारितोषक दिये थे जैसे कि बहुधा विवाह और त्यौहारों आदिमें देते हैं और महाराजासाहब ने कई गवाहियों के तुक्सके विषय में बहुत कुछ मजमून लिखा है उनका बयान आगे कियाजावेगा ॥

अन्तमें उन्होंने यह लिखा है कि पूर्वोक्त प्रमाणों पर गौर करनेसे मेरे मनको किसी प्रकारसे निश्चय नहीं कि गायकवार इसजुर्ममें जराभी माखूज हो हरचन्द कि करनैलफियरसाहब के शर्बतके गिलासमें विष मिला और सुस्तलिफतीन शख्सोंका जुर्म अर्थात् रावजी दामोदरपन्थ और नरसूने गवाहीदी ॥

दफा ५—राजा सरदिनकरराव की राय श्रीमान् महाराजा सेंधिया के सदृश है इसलिये उसका विस्तारपूर्वक यहां लिखना कुछ अवश्य नहीं है ॥

दफा ६—कमीशन के मेम्बरोंमेंसे कोई भी यह नहीं कहता कि रावजीके सिवाय किसी अन्यमनुष्यने नरसूकी सहायता से विष दिया हो ॥

दफा ७—जो इसमुकद्दमेका फैसला मेम्बरोंकी रायपरही कियाजाता तो उसका यह परिणाम होता कि गायकवार को

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अपनीबरीयतका मौका हासिलहोता परन्तु इसविषयमें उनका परिश्रम उनकेप्रतिकूल हुआ कमीशनके छः मेम्बरोंमेंसे तीन मेम्बरों की यहरायहै कि गायकवारपर जुर्म साबितहै इसलिये ऐसे तीनमनुष्य जिनको इसदेशकी प्रकृति और कारवाईसे एकपूरा तजुर्बा होचुकाहै और जिन्होंने तहकीक़ातकरने और गवाहोंके हासिलकरनेके उपरान्त इसमुक़द्दमेमें अपनीरायदी कि जिस को तहक़ीक़ातके लिये हमसर्कार ऊयेथे उसशख्सपर जुर्म साबित होगया और तीनोंरायें मुत्तफ़िक़हैं और नव यहराय कि अफ़सरवालानेखराडनन हींकी पसमैंभाकहसक्ताहूंकि थोड़ीसेथोड़ी इसशख्सपरबहुतबड़ी तोहमतरहेगीजिसकी निस्बत वहजुर्मका सुबूत लिखतेहैं॥

दफा ८—परन्तु गवर्न्मेण्ट इण्डिया उचितनहींसमझतीहै कि इसको कमीशनके मेम्बरोंकी रिपोर्टपरअमलकरदे इसकमीशन का इजलास जोडीशलनथा यह कमीशन केवल तहक़ीक़ातजुर्म औरगवाहोंआदिके इज़हारलेकरगवर्न्मेण्टको इत्तिलाकरे जो सम्पूर्ण कमीशन के मेम्बरोंकीभी एकरायहोती तौभी गवर्न्मेण्ट इण्डिया अपनेइतमीनानके लिये खूब प्रथमसे अन्तपर्य्यन्त मुलाहिज़ाकरती और भले प्रकार अवलोकन करके अपनीराय लिखती॥

यदि कमीशनकीराय मुख्तलिफ़है इसलिये गवर्न्मेण्टइण्डियाके विचारमें उचितमालूमहोताहै कि केवल अपनीराय नलिखे किन्तु मुख्य २ अपने सब विचार लिखे जिनसे कियह नतीजा हासिल हुवा॥

दफा ९—राय तीन मेम्बरों की जिन्होंने अलग २ रिपोर्ट लिखीहै उनसे कुछगवाहोंकी गवाहीमें और मुख्य २ बातोंमें जो गवाहीके कमज़ोरीके सबबथीं इख्तिलाफ़ पाया जासक्ता था गवर्न्मेण्ट इण्डिया इनदोनों बातोंमें पहिलीबातपर अपना खयाल मजबूर करेगीयह इच्छा नहींहै किसब गवाहियों का ज़िक्रहो हां निस्संदेह ज़रूरीबातोंपर बहसकीजावेगी॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

दफा १०—पहिले इसबातपर लिहाज करनाचाहिये कि रियासतके नौकर और गायकवारमें वार्त्ताके होनेका सुबूत हुवाहै यहगुरुतगू रांचेकीनिर्ज्जनस्थानमें हुवाकरतीथी और इसीगुप्तबातकेलियेबहुतसे रुपयेके देनेकावाइदा कियागयाथा आजादगवाहें,की गवाहीसे यहबात तहक्कीक हुईहै गवाही उनकीमीथी सादीगुजनी और यह गवाही ऐसीहै कि जिस्से मुख्यबातें मालूमहुईं और इनहालातमें जबसवालात हुयेतो इन तीगवाहोंसे जरासा फर्क नहीं हुवा और उसी प्रकारसे वहउत्तर देतेरहेजबकभी मौकाहुवाउनकीगवाहोंकी परीक्षा लीगई॥

अर्थात् पूछा कि तुमकोकौन २ लोग किस २ मकान पर लेगये और तुमकोयादहै कि जबरुपया तुमकोदिया गया तो वहांकौन २ मनुष्यथा इनप्रश्नोंका उन्होंने उत्तर बखूबी दिया कोईगवाही मुखतलिफ इसबारेमें नहींगुजरी॥

सचतो यहहै कि गायकवार भी इस सच्चीबात से इन्कार नहीं करते—उन्होंने अपने लेखमें जोबड़ी एहतियात से लिखा है उसमें लिखते हैं कि इससे उनको इन्कारनहीं है अर्थात् अपनेआप वार्त्ता करनेसे यारुपयेकेनदिलानेसे परन्तु वहकहते हैं कियहकाररवाई मैनेइसप्रयोजन सेनहींकी किमुजकारजो- उन्होंकी रोजानाखबर मिलतीरहे॥

दफा ११——प्रकटमें गवर्न्नमेण्ट के विचारमें कोई गवाही वगैरह ऐसीनहींहै जिससेरावजीका बयान खण्डन होसके कि उसोने अपनेहाथसे करनैल फियर साहबको बिष दियाहै या गवाहीनरसूकीरहकीगवे कि उन्होंनेरावजी को मददीथी॥

दफा १२——गवर्न्नमेण्ट इण्डियाको मालूमहोताहै किइस सूरतमेंदो बहुत बड़े अमृजो हरगिज किसी सूरतसे रहनहीं होसक्ते सुबूतहोगयेपहिलेयहकिगायकवार अपनेआपगुप्तरा वि केसमय रेजीडन्सी के पांचनौकरोंसे वार्त्ता करतेथे॥

औरउन्होंने रावजीनरसूऔरअमीना कोजोतीनों रियासत

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

के नौकर थे रुपया दिया दूसरे यह एक बहुत बड़ा इरादा कियागया कि कर्नैलफ़ियर साहब को पूरीखूराक पुड़ियाके ज़हरकीदीगई और रावजीऔरनरसूके द्वाराविषदिलायागया गवर्नमेंट इण्डियासमझतीहै कि कोई मेम्बर उनकमीशन के मेम्बरोंमेंसेजिन्होंने अपनीरायअलग२ लिखीहै बिल्कुल इनदोनों बातों सेइन्कारनहीं करतेहैं और जिनबातोंको उन्होंनेनहीं मानाहै उनसेभी साफ़हाल पायानहींजाता ॥

दफ़ा १३—जबयह अमरफ़ैसलहोचुके और सुबूत उनका सब होचुकातो गौरकामिल करनेपर मुक़द्दमा दूर पहुंचता है पहिले२ तोयहमुश्किलथी और इसका निश्चयनथा किऐसे मनुष्यगायकवारसेरियासत केनौकरोंसे खुफ़ियागुफ़्तगू करें परन्तु जब यहसाबित होगयातो यहबातदरयाफ़्ततलब रही किक्यायह वार्त्ताउन अपराधोंसेअलग था उसीकेलिये थी ॥

इसकाकोई हेतुवर्णननहींकियागया किरावजीऔरनरसू नेऐसाकिया केवलइतनाही बयान हुआहैकि पारितोषककी प्राप्तिकेलिये ऐसा अम्र किया गया सो इन्हीं दोनों बातों से इसकामूल और अन्तखयाल करलेना चाहिये और यहदोनों बातें मिली हुईहैं और एक दूसरेसे पैदाहोती हैं ॥

दफ़ा १४—यहबात ठीकहैकिउनतीनोंमेम्बरोंने जिनकी राय अलग २ लिखीहै गायकवारऔर रेज़ीडन्सीकेनौकरोंसे बातेंहुईं उसको बेमूलसमझतेहैं उनकी राय दफ़ा ३—और ४ मेंहै चाहो हिन्दुस्तानीरियासतोंमें कोईरीतिहो परन्तु गवर्नमेंट इण्डिया समझतीहै कि इनमेम्बरोंने उनबातोंपर जो गवाहीमेंहैं और गायकवारकी नुक़सान पहुंचाने वालीहैं खूबगौरकरनेके बिना लिखीहै ॥

दफ़ा १५—किसीगवाहीसे इसकासुबूतनहींहै कि गायकवारने रेज़ीडन्सीके नौकरोंको आमतौरपर विवाहपरपारितोषक दियाहो जोसबलोगोंको इनआमदेते और थोड़ा २ देतेतो बुरीबातनहींथी मुहादतसे साफ़ज़ाहिरहै कि खास२

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

लोगोंको जिनसे वार्त्ताहुवा करतीथी गायकवार ने इनआम दिया और नौकरोंके दरजोंके ख्यालकरनेपरयह इनआमजियादह मालूमहोताहै जैसे कि रावजीको इतना इनआमदियागया जो उसकीवार्षिक तनखाहसे चारगुण अधिकथाइस से जाहिरहै कि गायकवारका दिलीमन्शायहथा कि केवल रियासतके नौकरोंका दिलहीहाथमेंनलें किन्तु उनकोरिश्वतदें और बड़ेकार्य्यपर उनको उद्यत करें ॥

दफ़ा १६—इसकेविशेष यहबातभी प्रकटहै कि गायकवार आपभी अपनेतईं उसबातसे अलगकरें जिसकाजिक्र श्रीमान् महाराजासेंधिया करतेहैं अर्थात् खबरोंकेमिलनेकेलिये रुपयादेना—गायकवारने अपनेबयान तहरीरीमें लिखाहै कि मैं बयानकरताहूं कि मैंनेअपनेआप किसीरेज़ीडन्सीके नौकरसे नहीं कहाथा कि वहमुझको खबरें पहुंचायाकरे और रेज़ीडन्सी की जासूसीकरें और नमैंनेकभी इसकामकेलिये रुपया दिया औरन दिलवाया मैं उनइनआमोंके विषयमेंजोकभी २ विवाहवा त्यौहारआदिमेंदियागया।है कुछ बहसनहीं करसक्ता छोटे२मुक़द्दमें।कीखबरें रेज़ीडण्टकीमेरेयहां आतीहोंगी और इसीप्रकारसे यहांसेभी रेज़ीडन्सीको।बहुतसी जातीहोंगीपरन्तु मैंनेकभी रेज़ीडन्सीके नौकरोंसे ऐसीखबरोंके पूछनेकेलियेवार्त्ता नहींकी और नमैं आपजानता हूं कि उन खबरोंके लिये कुछ इनआमदियागयाहो और नमैंने आज्ञादी कि गुप्तसमाचार रेज़ीडन्सीकी काररवाईके मुझको मिलें ॥

दफ़ा १७ और जियादहगवाहोंसे यहभी मालूमहुआ कि जोकुछ रुपया रेज़ीडन्सीकेनौकरोंको दियागया वह छिपाकर दियागयाथाकि किसीको इसबातकी खबरनहो गायकवारके बहीखातोंमेंकहीं इसरुपयेके दियेजानेका जिक्र नहींहै परन्तु बहुतसीरक़में २०नवम्बर सन् १८७३ ई० से १३ अक्टूबर सन् १८७४ ई० पर्य्यन्तकी लिखीहुई हैं जिससेप्रकटहै कि भिन्न २

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

समय में सालिम और यशवन्तराव को भी बहुत कुछ रुपया दिया गया ॥

और लिखाहै कि पूर्वोक्त दोनों मनुष्योंकेद्वारा वस्तुओंकेमोल लेनेके अर्थरुपयादियागया परन्तु यहरक्मसंकित। बमेंअशुद्धकरके लिखीहै क्योंकिदरयाफ्तकरनेसे मालूमहुवा किकभीकोईवस्तु इनकेद्वारामोल नहींलीगई सालिम और यशवन्तराव गायकवारके दो विश्वसितनौकरहैं और इन्होंदोनोंकेद्वारा रेजीडन्सीके नौकरोंको रुपया दियागया ॥

गायकवारका प्राईवेटसिक्रेटरी दामोदरपन्थ वर्णनकरता है कि रेजीडन्सीकेनौकरोंको इसीप्रकारसे रुपयादिया जाताथा यहबातभीठीकहै कि जो इसगवाह अर्थात् दामोदरपंथ का गुमानबदहोतो कुछ आश्चर्य नहीं परन्तु इसबारेमें वैसाही बयानकरताहै जैसाकि इनकागजों के देखनेसे पायाजाता है सिवायइसके इसबयानकोकोई रद्दनहींकरताजोउसकाबयान गलतयाझूठहोतातो सुगमतासे तरदीदहोसक्ती थी ॥

दफा १८ अबयहबात दरयाफ्तलब है कि और गवाहीसे भीकुछ सम्बन्धपाया जाताहै यानहीं और जो पाया जाताहै तोउनदोबड़े वजूहातसेजिनकापहिलेजिक्रहै।चुका क्यासम्बन्ध है अर्थात् क्या गायकवार रेजीडन्सी के नौकरोंसे गुप्तवार्त्ता करताथा और रुपयाउसने इसप्रयोजनसे दियाहै और दूसरे यहकि रावजी और नरसूके द्वारा करनैलफियरसाहबको विष दिया गया ॥

निस्संदेहरावजी और नरसूनेगवाहीदी उनकेबयानसे विष का दियाजाना साबितहोगया और गायकवारकी रेजीडन्सी को इसप्रयोजनसे रिशवतदेनी किवह करनैलफियरसाहब के मनको महाराजसाहब के तरफसे नरमरक्खें अन्तको इत्तिला पाते२ करनैलफियरसाहबके प्राणपरनौबतपहुंची जोयहबात ऐसीनहीं हैतो रावजी और नरसूने बड़ाछलकिया और झूठ के पुतलेको गढ़कर बखूबीआरास्ताकिया ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

दफ़ा १९—इनगवाहों के बयानों की कोईवजह निश्चय न किये जानेकीनहींहै लोगकहतेहैंकि जिसने यहअपराधकिया वह शरीकजुर्म्महै और इनलोगोंकी गवाहीसे भी प्रकटहैकि यहबड़ेदुष्टहैं कि जिन्होंने अपने दयावानस्वामीके प्राणलेनेकी फ़िकर की और अपनेसाथियोंको इलज़ामदेनेसे नचूके ॥

यह बातठीकहैकि ऐसेबयानसे इनकी गवाहीपर बहुतबड़ा संदेहआगया और जिनलोगोंको उनकी गवाहीपर गौरकरना मुनासिब आया वहग़ौरकरेंगे परन्तु लिहाज़रहैकिबेरोकगवाही बुरे २ कामोंमें जुर्म्मके शरीक मनुष्यों से मिला करतीहै ॥

जो इसगवाहीसे इसबातपर इन्कारकिया जावेकि वहकिस मनुष्यनेदी अर्थात् शरीकजुर्म्मने जोएतिबारके लायकनहीं तो ऐसा इन्कार बुद्धिके प्रतिकूलहै और सबकी रीतिके विपरीत और बहुधाठीकमालूम नहींहोता ऐसीगवाहीकेलिये उचित् है कि इसकी परीक्षा लीजावे कि सच झूठ दोनों अलग २ मालूम हो जावें ॥

दफ़ा २०——इससम्पूर्ण मुक़द्दमेमें इसबातपरखयालकरना चाहियेकि कईबातें जोसाबित होगईहैं उनका समझना उचितहैजबहम को यहदिखता है कि खुफ़िया काररवाई एक ओरहोरही है और ज़ाहिरा एकतरफ़तो खयालहोसक्ता है कि वकीलखुफ़िया और अलानिया काररवाई कररहा है इसकोकिसी प्रकारस्पष्टता पूर्व्वकदिल नशीनकरलेना चाहिये इसलिये गवर्न्मेण्ट इण्डिया नीचेलिखेहुये अम्नकरारदेती है ॥

(क)——गवाहोंके बयान तसलीम करनेऔर निश्चयमानने के योग्य हैं ॥

(ख)——जोहालातउन्होंने बयानकियेवह उनकेअनुकूलहैं ॥

(ग)——क्या यह हाल एक दूसरे केबयान मेंखासअम्र में मुताबिक हैं ॥

(घ)——जबयह लोगज़ाहिरी हालबयान करतेहैं क्याउन

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

के बयानमें मुताबिक़त होसक्तीहै और जोकुछ उन्होंने वर्णन कियावह एक कलमा एक दूसरे के मुताबिक है जो आजा-दाना गवाही लोगों नेदी क्या इनलोगोंकी गवाही सेउनकी गवाही मुताबिक है ॥

(ङ)——क्या इनगवाहोंको इसहालके बयान करनेमें कुछ लाभ है जो उन्होंने बयान किया ॥

(च)——क्यायहबात किसीसूरत से जाहिर होसक्ती है कि आपुसमें एकदूसरेसे साजिश हुईहै ॥

(छ)——क्या यहबात प्रगटकीगईहै औरइसबातका सम्भव है किइनको किसीहाकिमने सिखाया है ॥

(ज)—जबइन लोगों से इज़्हारमें प्रश्नकिये जातेथे तोउन की ऐसी दशाथी कि जैसे सच्चा मनुष्य बोलता है या उसके प्रतिकूल थी ॥

(झ)—क्या इनकी गवाहीकाखण्डन गायकवारकी ओर से साफ २ और बेगानातौरसे हुवा यानहीं ॥

(२१)—(क)—कोईबात असम्भवित नहींहै किइनगवाहों के बयानविश्वय न कियेजावें और जब पूर्वोक्तदो असाबितहो गयेतोकुछ जियादागवाही की आवश्यकता नहीं है थोड़ी२ गवाहीपरहसर होसक्ताहै शायदलोग जानेंगे कि जबगायक-वारनेरावजी को अपने अनुकूल करलियाथा तो उनकोनरसू केसंयुक्तकरने की क्याज़रूरतथी पस इससूरत में इन्होंने एक शरीक जुर्मको और बढ़ाया यह होसक्ता था कि गायकवार सिवायइसके औरउपाय करते इसबातको मालूमकरनाअति कठिनहै कि गायकवार नेऐसी काररवाई क्योंको इसका यह उत्तर होसक्ताहै किरावजी सरकारी कम्पूमेंरहता था और नरसूनगरमें रहताथा नरसूगायकवार के यहांसेखबरें बखूबी लासक्ता था और उनकोरचा पूर्वक रावजी के पासपहुंचा सक्ताथा इसकेसिवाय नरसू रावजीका अफ्सरथा और प्रति समयकरनैलसाहबकी अरदलीमें बरामदेमें रहताथाइसलिये

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

साफज़ाहिरहै कि जो नरसूनमादार न मिलालिया जाताते रावजो को पकड़े जानेका बड़ा भय होता ॥

(२२)–(ख)–गवर्न्मेण्ट इण्डियाके विचारमें इन बयानोंके अवलोकनसे किसीभांतिका अन्तरनहीं पायाजाता है ॥

गवाहोंकेबयानके आदिसे अन्ततकबीच में बहुतफासिला होगयाथा और उनकेबयानमें कहींफरकनहींहुवा औरएक अति प्रवीण बैरिष्टरने इजहारात परऐसे २ कठिन प्रश्नकियेथे हरचन्दकिइनसेखूब २ प्रश्नहुयेपरन्तु पहिलेकेबयानमें कुछभी अन्तरनपड़ा तारीखोंमें निस्संदेह कुछइखतलाफहैक्योंकियह बातसाफप्रगटहै और बुद्धिमानलोग खूबसमझतेहैं किअनपढ़मूर्खमनुष्योंको खाससमय और तारीखकायादरहनाकठिन हैरावजीके बयानसेपाया जाताहैकि वहअपनेअनुचितकर्म से अतिलज्जित होकरपश्चात्ताप करताथा सोयहबातकुछआश्चर्य की नहींहै किसंगीनमुकद्दमेमें पहिले ऐसेबयान हुआकरते हैं कई बयान रावजीके मुबहिमहै जैसे कि धीशीकाहाल जो उसनेबयानकियापरन्तुऐसेबयानसेउसकेपहिलेके बयानमेंकुछ अन्तरनपड़ा अर्थात् उसबयानमेंकिजैसेगायकवारसे गुफ्तगू होना और रुपयेकापाना और अखबासमौजूदाकाजिक्र और गायकवारका वहकानाकरनैलफियरसाहबके विषदेनेकेलिये और उसके पास विष की पुड़ियाका पहुंचाना ९ नवम्बरका जो तलछट करनैल फियरसाहब के गिलास में निकला यह सब पहिली तकरीर के अनुकूल रहा और पुनर्वर्णनमें कहीं भी कुछ अन्तरन पड़ा और कमीशनके तीनों मेम्बरोंने अपनी रिपोर्ट मेंभी कहीं इसका जिक्रनहीं किया कि किसी गवाह केबयानमें अन्त रहा ॥

दफ़ा २३—(ग)इनदोनों गवाहोंकीगवाही खास२ अमरों मेंपरस्पर अनुकूलहै और छोटी २ बातोंमेंअन्तर है यहकदाचित्साबित नहींहोताकि परस्परयह दोनोंमिलगयेहोंजोइन के बयानमें अन्तरहोताता हांनिस्संदेह यहकहाजाताकियह

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

दोनों मिलगये होंगे केवल तारीखोंमें इखतिलाफ है और इसमें इखातिलाफ है कि गायकवारके पास कई दफे गयेथे और उस जगहपरभी अन्तर पाया गया जिस कामको दूसरे मनुष्यने किया है गवर्न्नमेण्ट इण्डिया की राय कमीशनके मेम्बरों के अनुकूल है जिसको उन्होंने ३४ और ४२ दफ़ोंमें बयान किया अर्थात् वह लिखतेहैं कि जोरावजी और नरसू के बयानमें अन्तरहै उससे यहप्रकट नहींहोता कि इनका बयान गलत है किन्तु सहीसमझाजाताहै और यहभी मालूम होताहै कि गवाह आपसमें नहींमिले और न पुलिसने उनको सिखाया है॥

दफ़ा २४(घ)—गवर्न्नमेण्ट इण्डिया इनलोगोंके बयानमें बहुतसी मुताबिकत पातीहै और अभ्रजाहिरीहै और शहादतें गुजरी हैं वहसब एकसीहैं जो उनलोगोंका बयान ठीक नहोताता कभीमुताबिकत न होती॥

जिसकमरे और जिसमहलमें वहगये थे और गायकवार से वार्त्ताहुईथी गवाह उसको शुद्धतापूर्व्वक बयानकरतेहैं और यहजिक्रकि पांचसो रुपये रावजी को दियेगयेथे यहभीठीक है इसकीतसदीकजुम्मा और करभाईसे जो रावजीआदिके साथ गयेथे होती है और जो चिट्ठी पेश हुई उससे भी सिदाकत हुईकि रावजी और नरसूने खबरें महाराजा कोपहुंचाईंसिवायजुम्मा और दिलपतके गवाहीएकदूसरेकी अनुकूलहैऔर यहलोग उस रुपये के वसूलकी सूरत भी बयान करते हैं इसभीरावजीके लियेरुपयेका पानासाबितहोताहै यह खर्च हैजबतककि बहुतसी आमदनी हाथ नआवे तबतक क्योंकर सैकड़ोंरुपये खर्चकरसक्ताहै और इन्हींखर्चोंके कारण लोगों कोसंदेहहुवा था और इसीसेवह पकड़ाभी गया॥

दफ़ा २५—एक गवाही जाहिरी और बहुत बड़ी जिसका विस्तारपूर्व्वक बयानहोना उचित मालूम होताहै ९ नवम्बर कोजबकरनैल साहबकेनौकरोंसे तहकीकातकी गईथीतौर-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

वजीकीचपड़ास खेलीगईथी और एककमरेमें लटकादीथी १५ दिसंबरको वहीचपड़ास एकऔर मनुष्यमुसम्मा भोदरकोदी गई उससमय किसीकोयह खयालनथाकि रावजीकोई किस्म। बयानकरेंगेया कुछभीनकहेंगे रावजी २२ दिसंबर को पकड़ा गया और २४ और २५ को उसके इजहार लियेगये अकबर-अलीअफ्सर सुरागी पुलिस बंबईका वहां उपस्थित था उसने अपनेमनमें समझाकिरावजी जिनपुड़ियोंका इजहारकरताहै शायदउनका कुछनिशानमिले इसलिये उसने रावजीसे पूछा किपुड़ियाकहां रखतेथे रावजीने कहा किमैं अपनी पेटीमेंर-खताथा इसकहनेसे भोदर बुलायगया जोचपड़ास और पेटी पहिनेहुयेथा यहचपड़ास १५ दिसंबरसे उसके पासथी पूर्वोक्त भोदरसे अकबरअलीने चपड़ासली और रावजीसेपूछा कितुम पुड़िया कहां रखतेथे रावजीने ठिकाना बताया अकबरअली कोढूंढनेसे एक पुड़िया कागज की डोरेसे बन्धी हुई मिली उसनेतुरन्तही मिस्टरसूटर साहबपुलिसकेकमिश्नर को जोटूरसे कमरेमें थेबुलाया ॥

सूटरसाहबने कागजकी पुड़िया निकाली और खोलकर-देखाउसमें किसीवस्तु का सफेद चूर्णथा इमतिहान करने से मालूमहुवा कियहसंखिया थी ॥

डाक्टरग्रे साहबलिखतेहैंकिइसकेकईप्रकारहैंपरन्तु यहसंखि-याउसीप्रकारकीहैजैसीकरनैलफियरसाहबकोशर्बतमेंदीगई ॥

दफा २६—रावजीनेउससमय तक उसका कोई जिक्रनहीं कियाथा कि उनपुड़ियोंमेंसे कोईपुड़िया बाकीहै उसनेबयान कियाथा कि मुझकोदोदफे पुड़ियांमिलीथीं ॥

पहिलीबार तोदो पुड़ियां मिलीं और दूसरी मर्त्तबा एक पुड़ियामिली—दूसरी मरतबा बाकीएक पुड़िया ९—नवम्बरको साहबके शर्बतमें डालदी और वहदोनों पुड़ियांपहिलेकी दो तीनदफा करकेशर्बतमें मिलाकर ९ नवम्बरके पहिले देचुका

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

थाजबपेटी उसनेअपनी देखीतो यादआया कि मैने सबपुड़ियां नहींडालीथी कुछबच रहाथा—इसने इसबातको विस्तारपूर्व्वक कमीशनके रूबरू वर्णन किया ॥

दफ़ा २७—गायकवारके कौंसलीने इसबातका सुबूतचाहा कि इसमेंपुलिसकी कुछबनावटहै परन्तु गायकवारके फ़ायदे की कोईगवाही इसबारेमें नहींऊई पुलिसको क्या प्रयोजन था बावजूद बयानरावजीके जोकहताहै कि मैने पुड़ियांखर्च करडालीं और पुड़िया पेटीमें रखली और यहभी जरूरथा कि केवलसंखिया होतीया हीरेका चूर्णभी और क्योंकरयह वहीसंखिया पैदाकरते जोकरनैल फ़ियर साहबको दीगईथी और वहपेटीतक क्योंकर पहुंचीजो १५ दिसम्बरसे भोदरके पासथी पहिलेइन सबबातोंका सुबूतकरना उचितहै फ़िरपुलिसकी साजिश समझते ॥

दफ़ा २८—(ङ)—ऐसे बयानोंसे जोगवाहोंने वर्णन कियेहैं क्यालाभहै यहकिसीने बयाननहींकिया कि इनगवाहोंसे और गायकवारसे कुछवैरथा या उसकी खराबीमें इनका लाभथा सहीहै कि रावजीसे प्रतिज्ञा की गई थी कि जोसच २ इस मुकद्दमेका हालकहेगा तोउसका अपराधक्षमाहोजावेगा यहदुरुस्तहै कि ठीक कहनेसे झूठ कहनेमें रावजीका बहुत फ़ायदाथा जोजराभी उसकेबयानमें गलतीहोती तोजिनमनुष्योंका इसने नामलियाथा तो लोग अपनी बरीयतके लिये उसकेवचनको खण्डनकरते ॥

नरसूने अपनेप्राणसे हाथ धोकर इजहार दिये थे—उससे कहदियागयाथा कि तुम्हारा अपराधक्षमा नहोगा सो यह बातमालूम होसक्ती है किजो उन्होंने गलत बयान किया तो अपनेही लिये बुरा किया क्योंकि उनमेंसे एक मनुष्य कोभी क्षमाकी आशान थी ॥

दफ़ा २९—लोग यह कह सक्ते हैं कि करनैल फियरसाहबसे जो गायकवार को वैर था रेजीडन्सी के नौकरों को

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मालूम होगा और रावजी और नरसूयह समझते होंगे कि जोहमगायकवार को मालूम करेंगे तो करनैलफ़ियर साहब हमसे प्रसन्न होंगे॥

परन्तु इसबातपर विचारकरना चाहिये कि गायकवार केमालूम होनेसे पहिले करनैलफ़ियरसाहब बड़ौदे की रेजी-डण्टीसे बदलचुके थे जबसाहब मौसूफ़ बड़ौदेकी रेजीडण्टीसे बदलचुकेथे तोऐसे इज़हारोंके देनेसेइनलोगोंको निस्बतखुश-नूदी महाराजा को क्या फ़ायदा था—इससब हेतुओं से साफ़ ज़ाहिरहै कि इनलोगोंने जोइक़बाल कियाइसमें कुछसाजिश एक दूसरे की न थी॥

जब इन लोगों को मालूम हुवा कि पुलिस ने सही तह-क़ीक़ात करना शुरू की तो उन्होंने यह उचित समझा कि अपने तईं पुलिसके सुपुर्दकरदें और जो कुछ जानते हैं उस को सच २ कहदें॥

दफ़ा ३०-(च)—यहबयानकि आपुसमें साजिशहुई है शहा-दतआम और खाससेखण्डन कियागयाहै जोयहउनकेइज़हार जिनकेविषयमें रावजी और नरसूसे मशवरह होगयाखयाली थे तो कभीनिश्चय नहीं कि जबगायकवार के एक अतिचतुर और योग्यबैरिस्टरने इनज़हारमें प्रश्नकियेतो उसकेबयानमेंकुछ फ़तूरनहीं आया और कुछभी अन्तर न हुवा॥

यहप्रश्न इसइज़हारसें बतौर मुनासिब हुयेजो बालभरभी इसमें ग़लती होतीतो फ़रेबका परदा ज़रूर खुलजाता और कोईबनावटकाम नआती और किसीमुआमिलेमें मुताबिक़त नहोती हांकेवल इतनाही अन्तरहै जैसे कि एकहालकोदस मनुष्यवर्णन करें॥

गवर्न्मेण्टइण्डियाने इसको पहिलेही ख़याल करलियाहै कि इसमेंइतनाही अन्तरहैजैसेकि सहीमुआमिलोंमेंभिन्न २ गवाहोंके बयानसेहुआ करतेहैं रावजी और नरसू २२ दि-सम्बरसे अलग२ करदियेगयेथे और एककेबयान की कुछभी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

दूसरे कोखबर नथीऔर जब नरसूरावजी के रूबरू २२ दिस-म्बरको आयातो रावजीने नरसूके साम्हनेकहा कि हमनेगले गलेपानी में सब क़बूलदिया ॥

दफ़ा-(३१)-(छ)-शायदकिसी को यह संदेह हुआ कि यहबयान रावजी और नरसूका किसी पुलिस के अफ्सर के सिखाने से हुआ है तथाच ऐसीदलीलें गायकवार के वकील कीओरसे पेशहुई हैं गायकवार के कौंसलीपुलिस की कार-रवाई में धब्बालगातेहैं[सूटरसाहब से लेकर छोटेपुलिस के नौकरतक]किन्तु वह कहते हैं कि पुलिसने सख़्तीकी और यहभीकहते हैं कि पुलिसकी सबगवाहीबनाईहुई है इसका कारणयहथा कि हेमचन्द गवाहजोहीरे के मोललियेजाने के सबब बुलायागया था उसनेबयान कियाकि मुझसे जबरदस्ती गवाहीलीगई यहगवाह वहथाजो हवालात में नहींगयाथा उसने जोकमीशन के रूबरूगवाही दीउससे अपनेपहिले की गवाहीोरद्दकी और बयानकिया कि मुझसे सख़्तीकरकेगवा-नन्दबतिल ने गवाही दिलवाई इसगवाह के विषयमें कमी-शनके तीनमेम्बरोंने एकहीराय लिखीहै अर्थात् वहलिखतेहैं कि इसमनुष्यकी गवाही में कुछभी अन्तर नहीं पाया जाता इसलियेऐसे मनुष्यकीगवाही लिहाजकरने के काबिलनहींहै कमीशन के मेम्बरों के रूबरू इस मनुष्य ने अपने दस्तखत से इन्कारकिया और उसकोपहिचान नसका किन्तुयहझूठबोला कि हिन्दुस्तानी मैं जानता नहींहूं तीनों कमीशन के मेम्बर इसपर सख़्तीके होनेका इन्कारनहीं करते इस विषय में मैं कमीशनके मेम्बरोंकीराय गवर्न्मेण्ट भी तसलीम करतीहै ॥

यहांइस बातका विस्तारकरना उचितहै कि पहिले इन-हारगवा नन्दबतिलने नहींलिये थेकिन्तु मिस्टरसूटरसाहबने लियेथेऔर दोदिनके पीछेहेमचन्दने सरल्युइसपीलीसाहबके रूबरूअपनेदस्तखतकियेथेतब उसनेउनदोनोंसाहिबोंके रूबरू पुलिसकी सख़्तीका बयाननकिया नहीतो उसीसमय सरल्यू

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

इसपीली साहब उसके तरफ़दार होजाते और गजानन्द के पंजेसे उसको छुड़ादेते इसबातपर लिहाजकरनेसे और दूसरे बयानी इखतिलाफ़ी इसकीसे जिसमें कि यह बिल्कुल अपनी बरीयत चाहता है गवर्न्नमेण्ट इण्डिया के विचारसे इस के इज़हार समाअतके काबिल नहींहैं॥

दफ़ा ३२—जबहेमचन्दकीगवाहीनमानीगई तो कोईऐसी गवाही बाकी नहींरही कि जिसे पुलिसकी सिखावट और बनावट पाई जातीहो उनको क्याप्रयोजनथा कि इसमुक़द्दमे को ऐसागढ़ते और रावजी और नरसूको सिखाते और गवाहोंको आरास्ताकरते समझमें नहीं आताकि क्यों यहउनपर दोषलगायागया उनको क्याइसबातकाखयालनहोगा कि जो ऐसीबनावट करेंगेतो सरकारब्रिटिश क्याहमसेप्रसन्न होगी॥

मिस्टरसूटरसाहब-अकबरअली-अब्दुलअली-और गजानन्द वकील बम्बईके बड़ेनामवर और प्रतिष्ठितहैं मिस्टरबेलनटायनसाहबको लोगोंने बहुतकुछ सिखायाथा किगजानन्दके मुक़द्दमेमें खूबबात्तीकरें परन्तुवहइस इरादेसे कामयाबनहुये यहपुलिसके सम्पूर्ण नौकर सरल्यूइसपीलीसाहबकी आज्ञासे कारखाई करतेथे जो कुछभी इनकीबुरी कारखाई साहब को मालूमहोती तो आपही इनलोगोंको अच्छीतरह खबर गीरीकरते जबसे नरसूगिरिफ्तारहुवायातबसेवहफौजकेगार्ड में क़ैदरहा नकि पुलिस की गार्डमें किसी गवाहीसे यहबात प्रकटनहींहै कि पुलिसकेलोग उसकेपासजासक्तेथे औरउस को सिखासक्ते थे इसलिये गवर्न्नमेण्ट इण्डियाके विचार में यहआताहै कि रावजी औरनरसूने जोबयानातकिये उसको पुलिसने नहीं बनायाथा गवर्न्नमेण्टइण्डियाकी रायऐडवकेटजनरलकी रायकेअनुकूलहै॥

और मिस्टरबेलनटायनसाहबने पुलिसके विषयमेंगुफ्तगूकी वह बिल्कुल फ़जूलथी और एकक़बीदलील यहहैकि जिसमुक़द्दमेको वहखण्डन कररहेथे वहआपहीबहुत कमज़ोरथा॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

दफ़ा ३३—(ज) इनमनुष्योंके इजहारोंकेदेनेके वक्तऐसोद-शाथी जिस्सेकि उनपर झूठबोलनेका सन्देहमाचनथा किन्तु गायकवारकेवकीलनेभी कोईऐसाबयाननहीं कियाजोगवाहों की परेशानी से पायाजाता किन्तु इनतीनों कमिश्नरोंने भी जिन्होंनेएकही रिपोर्टपरदस्तखतकिये वहलिखतेहैंकिनरसूने ठीक २ बयानकियाहै और अपनेदुष्कर्मसेअति लज्जितथासर दिनकरराव जो उसकेसनाति हैं उन्होंने नरसूसेखूब प्रश्नकिये उससेभी मालूमहुवा कि वहसच्चही बोलताहै हजारतरहसे सर दिनकर रावनेउसको सख्तपकड़ा परन्तुकहीं फरकनदेखा और उसको अपने पहिले बयानपर साबितपाया गवर्न्नमेण्ट वही प्रश्नोत्तर नीचेलिखतीहै॥

प्रश्नदिनकररावका—तुम २४ वर्षसे नौकरहोक्यातुम महा-राजासाहबके पास कमीशनके एकत्रहोनेकेपहिले अक्सरजा-याकरतेथे ? उ०—जबसे कि पहिली कमीशन एकत्रहुई तबसे मैंजाताथा और उससेपहिलेकभीनहींगया खाण्डेरावकेपास मैंकभीनहींजाताथा केवल साहबकेसाथ कचहरीमें जाताथा प्र०—जब महाराजने तुमकोविष देनेकेलिये बहकायाती तुम जानतेहोगे कि यहबहुत बुरीबातहै तुमने अपनेस्त्रीपुत्र और कुटुम्बके निर्वाहका कोईबन्दोबस्त किया ? उ०—मैंनेकुछनहीं किया इसपर ऐडवकेट जनरलने कहाकि तर्ज्जुमा दुरुस्तनहीं होता उन्होंने कहा कि गवाहने यहभीतो कहाथा किसिर-फजुबानी मेराइतमीनानकियाथा। प्र०—किसीको विषदेना बुरीबातहै क्याकोई मनुष्यदसबारह आदमियोंके रूबरू ऐसा कामकरताहै ? उ०—दस बारह आदमी नथे दो हमलोगथे और दो महाराजाके नौकरथे। प्र०—जो संखिया तुमको दी गई वहमिकदारमें कमथी या जियादहथी और क्यातोनबेर विषदियागया ? उ०—मैंने अपनी आयुभरमें किसी को विष नहीं दिया था एक पुड़िया मुझको दीगई थी और यह कहाथा कि रावजीको देदेना मुझसे यह नहीं कहाथा कि

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कितनी दीवानी रावजीसे यहबात कहीगईथी। प्र०—वहकौन नौकरथे जिन्होंने कहाथाकि फैजूपर तोहमत रखनीचाहिये उ०—किसीनेनहींकहाथा लोगोंने फैजूका नामलिया मैंनेभी उसीकानाम लिखवादिया। प्र०—किन २ मनुष्योंनेफैजूकानाम लियाथा? उ०—अब्दुल्ला—पेडरू और इस्माल— इसी प्रकार पांचछः मनुष्योंने नाम लियेथे। प्र०—जबमहाराजा से पहिले तुम्हारीमुलाकात हुईथीतो महाराजासाहब जानतेथेकितुम बदजातहोपरन्तु ऐसेनाजुक मुआमिलेमेंफिर तुम्हाराक्योंकर निश्चयकिया? उ०—रावजी सालिम और यशवन्तरावनेमेरी ओरसे महाराजका इतमीनान करदियाथा। प्र०—क्या तुम हिन्दूहो? उ०—हां। प्र०—तुम्हारी क्याजातिहै? उ०—तिलंगनकमाती। प्र०—तुमपुलिससे डरतेहो? उ०—क्योंमेरेडरनेका क्याकारणहै जब मैंसच वर्णनकरताहूं। प्र०—तुमजानतेहो कि मैंअपराधीहूं? उ०—हांमेरी बदकिसमती है मैंभी शरीकजुर्महूं। प्र०—जो तुम्हारासरकारअपराधक्षमाकरदेगी तोतुमईश्वरको सर्वत्र वर्त्तमान जानकर सचकहोगे? उ०-मैं कुछ मुआफीके सबबसेसचनहीं कहताहूंचाहेसरकार मुआफ करेयानकरे मैंसचही कहूंगा और अबभी सचकहरहाहूं॥

प्रेजीडण्ट साहबबोले किसरदिनकरराव काप्रश्नथाकिजो सरकारतुमको मुआफ करदेगीतो तुमइससेबढ़कर सत्यबोलोगे इसपरउलथाकरनेवालेने तर्जुमाकरकेगवाहको सुनायाइसपर गवाहनेकहा किजोमैने कहासब सचहैऔर इससेबढ़कर क्या सचकहूंगा सरकार चाहेमुजकोमारडाले याछोड़दे॥

सरदिनकरराव प्रश्न——तुमने एक मनुष्य के पास २४ वर्ष नौकरीकी अबतुमने उसकेसाथ बुराईकीतुमअपना बयानइस तरहकहोकि मानोईश्वर केसामने कहरहेहो जोकुछतुमको कहना होसाफ औरसचकहो कुछभय मतिकरो? उ०—जो कुछमुझको कहनाथा निर्भयहोकर सच २ कहा॥

प्रेजीडण्ट साहबबोले किक्यातुम ईश्वरके सामनेसचकहते

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

हो सुतरज्जिमने उलथाकरके गवाहको सुनाया गवाहने कहा कि ईश्वरके सम्मुखमें कहताहूं कि मैंने जो कुछ वर्णन किया और जहांतककि मैं जानताथा वह सचथा और इसबयानमें कुछभी मैंने झूठ नहीं कहा ॥

इसबयान परगवाही खतम हुई और गवाह बैठाया गया ॥

दफ़ा ३४—भ—अब यहबात पूछनेके लायक है कि इन लोगों की गवाही गायकवारकी ओरसे क्योंकर खण्डन हुई उत्तर इस का यह है कि गायकवारके वकीलको यह उचित मालूम हुवा कि गवाहोंके बयानमें कहींजो अन्तरहै यातारीखेंभी खिलाफ़ हैं उनपर व्यंगकिया जाय और गवर्न्मेण्टके नौकरोंपर तोहमत रक्खीनकि उन आदमियोंको लातेकि गायकवारका जुर्म्मग-लतयातो उसको खण्डन करते और सफाईके गवाह गुजरानते कि मल्हरराव कीबरीयत होती अच्छीतरहसेतो खण्डन नकर-सके परसिरफ़ नुकताचीनी पर कमर बांध ली ॥

रावजी नरसू औरअमीना आयाआदिके बयानके अनुसार महाराजा का गुप्त वार्त्ताका करना सुबूत हुवा और उससमय दोमनुष्य अर्थात् सालिम औरयशवन्तराव की मौजूदगी मालूम हुई औरसबसुआमिले इन्हीके द्वाराहुवा करतेथे यह लोग गायकवारके बड़े विश्वसितथे इनको गायकवारने रुपया भीबहुत सादियाकि खुफ़िया काररवाई करें जब यह लोगगि-रिफ्तार कियेगयेतो फौजीगार्ड कीहिरासत मेंथेपुलिस मेंन थेऐडवकेट जनरल नेवर्णनकिया औरकिसीने उनकेबयान को रद्दनहीं कियाकि इनलोगोंसे औरपुलिससे वार्त्ता होतीथी परन्तु गायकवारके वकीलजब चाहतेथे उनके पास जातेथे औरवह उनसे खुफ़ियाबातें करतेथे परन्तु उन्होंने कुछनहीं कहा और गायकवार कीतरफ होकर कोई गवाही नहींदी जिससे गायकवारकी बरीयतहोती हो ॥

गवर्न्मेण्ट केवकीलों कोइनलोगोंसे अधिक गवाही लेने कीजरूरत नमालूमहुई गायकवारकी औरबातथी वहआप-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

होसचझूठ जानतेहोंगे और सालिम और यशवन्त रावके और सेभी उनको निश्चय होगाकि वहसब मुकद्दमेको जानते हैं ॥

मल्हरराव काबयानहै किहमने करनैलफियर साहबकेज़हर देनेकेलिये कोई गुप्तकारवाई नहींकी और सालिम और यशवन्तराव इसबातको खूबजानतेहैं जोऐसा थातोयहलोग क्यों नबुलायेगये और क्यों रूबरू इनहारनहुये जबसच२बयान करदेते तोगायकवार कोबरीयत होती गायकवार के वकील इनकेन बुलानेकायह हेतुकहतेहैं किगायकवार और उनके वकीलइस शख्सको दमोदरपंथ काशरीक नहींकहसक्तेहैं इस सूरतमें इनका हिरासत मेंरहना अच्छाहै निकलना अच्छा नहींहैजो इसबयानसे यहप्रयोजन हैकि पुलिसने कारवाई कीतोयहभी कहसक्तेहैं किगार्डकी फौज और पुलिस कीभी साजिशहै परन्तुगवर्न्नमेंटआफ इण्डिया यहकहतीहै किगायकवारकेन बुलानेकी वजहसे सालिम और यशवन्तरावकोकिवह साफ२ बयानकरेंगेइससे औरभी तसदीक इसअमरकीहोती हैकिरावजी औरनरसू काबयान ठीकथा और गायकवार के जिम्मेअपराध लगा ॥

दफ़ा ३५—अबयह देखना बाकीहै कि रावजीकी गवाही औरनरसू को गवाहान गैरकोगवाहीसे क्यामदद मिलतीहै इसबातका लिहाजरहे किगायकवार औरनरसू आदिकी मुलाकात काहोना औररुपये कादियाजाना साबितहैसोइससे बढ़कर क्यागवाही होसक्तीहै इससेरावजी औरनरसू की गवाहीको बहुत बढ़कर मदद मिली ॥

दफ़ा ३६—कुछ इनलोगोंकी गवाहीको आयाकी गवाहीसे मददमिलीहै जोएक नासमझ और डरपोकगवाह है परन्तु इसके बयान और सच्चाई में कुछभी फरक नहीं आसक्ता जब अन्तमेंउसकी और गायकवारकी वार्त्ताशायद व्यतीत अकटूबरमें हुईथी तो जिक्रहुवाथा कि यहशरीकहो और करनैलफियरसाहब केमनकेरुजू करनेमें कोशिशकरे ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मालूमहोताहै कि उससमयविषका जिक्र नहीं किया गया परन्तु यहभी मालूमनहींहै किअमीनाआयाक्योंकरसमझी कि विषकाजिक्र है क्योंकिजब मल्हररावने कहाकिकरनैलफियर साहबकोजो जादूकीपुड़िया और कुछ और दिलरजू करनेके लियेदेंतो तोतूउनकोदेदेगी तब अमीना आयाबिल्कुलडरगई और उसने गायकवारसे निषेध किया कि करनैल फियरसा- हबकेलिये कभीऐसा उद्योगनकरना नहीं तोबहुत खराबीमें पड़ोगेयह कहवह चलीगई और फिरकभीनहीं आई॥

दफा ३७—अमीना आया के इजहार की सिदाकत उसके पति शेखअब्दुल्लाने की उसका बयान है किअमीना आयाने मुझसेदूसरेदिन कहा किगायकवार कहतेथेकि कौनसी वस्तु दीजावेकि साहबका और मेरा एक मनहोजावे और जोफ- रकआगया है वहदूर होजावे इसपर मैंने कहाकि साहबको कोईवस्तु खानेको नदेना॥

दफा ३८—गायकवारके सिक्रेटरी दामोदरपंथ की गवाही भूलनी न चाहियेइस गवाहकेबयान कीहालत अच्छीनहीं है क्योंकिवह इसअपराधमें संयुक्तहोनेका इकबाल करताहै जो इजहार उसनेदिये मुआफीके बाददेसेदिये और यहइजहार उसनेकैदसे तंगआकर इसतौरपर दियेथे॥

कमीशनके तीनोंमेम्बरोंने जिनकीकिरिपोर्ट मुताफिक हैउ- न्होंनेबड़ीएहतियातसे दामोदरपंथकीगवाहीको लिखाहैपरन्तु वहयहसमझतेहैंकिमुख्य कामसेंतो मुताबिकत है और कुछअ- म्लरनहींगर्ज्ञ के वड़ीहिदायाखूबगौरकरकेलिखतेहैंकिदामोदर- पंथकीगवाहीकी और गवाहोंकीगवाहीसेसिदाकतहोगई॥

दफा ३९—पहिले कागज परजिसपर कि (जेड) अक्षरका चिह्नहै वहनिश्चय देह असलीहै उससेप्रकट है कि ४ अक्टूबर सन् १८७४ ई० को दामोदरपंथको किसी मुख्यकार्य्य के लिये संखिये की जरूरत थी और उसके लिये दामोदरपंथ कायह बयानहै किगायकवारको विषचाहियेथा परन्तु संखियागा"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

यकवारकी लिखीहुई आज्ञाके बिना नमिलीपरन्तु इस बयानसे दामोदरपंथ की सिद्धान्त नहीं होती जब तक कोई गवाह और नपहुंचे ॥

दफा ४०—दूसरे गायकवारके जवाहरखाने के रत्नकानाना वतिलजो करनैलफियरसाहबके विवर्देनेमें मालूम नहीं हैं उसकेबयानसे मालूमहुवा कि २० अकटूबरके कई दिन पहिले हीरेकी चाहियथी यह किसी छोटेसे कामके लिये आवश्यक नथा किन्तु एकदवाके लियेचाहियेथा कि पीसाजाता उनका बयानहै किमैंनेकभी ऐसीअम्म नहींदेखी थी यह भी साबित हैकि बहीखाते गायकवारके यहांयेवह भी मशकूक करदिये गयेहैं जिसे कि कोईकाररवाई छिपकरहो परन्तु कागजचिह्नित(टी)अक्षरसेमालूम हुवाकि हिसाब मशकूक कियेगयेथे यहदरबारहखरीदअल्मासके हैं सिवायइसके रामेश्वरमूराजी ब्राह्मण और नानाजीवतल और उनके मातहत आत्माराम कीगवाही से भी साबितहुवाहै कि हीरेमोल लियेगये परन्तु फिरभीहीरेके खरीदनेपर और गवाहियों काहोना उचितहै॥

दफा ४१—दामोदरपंथकी गवाही पहिलेहीरे और संखियेके मोल लिये जाने के विषय में ली गई है इसलिये सूरत इस्काकमेटो केमेम्बरोंमुत्तफिक रायपरहैउनकीराय है किशायदसंखियामोल लीगईहो परन्तु हीरेका खरीदकिया जाना साबित होगया इसलिये गवर्नमेण्ट इण्डिया दामोदर पंथ की रायपर कुछध्यान नहीं करती क्यों कि गायकवार को संखिया याहीरेका मिलना कुछ कठिन नथा॥

दामोदरपंथ ने आपही सरकार के रूबरू हीरे और संखिये का खरीद कियाजाना बयान किया गवर्न्मेण्ट ने इस प्रयोजन से तहकीकात की थी जो अपराध गायकवाड़ के जिम्मे लगाये गयेथे जो वह साबित होगयेतोनिस्संदेहगायकवाड़र लिये बदनामी और और खराबी का सबब है॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

दफ़ा ४२—गवर्न्मेराट इण्डिया अवउचित समझती है कि उनतीनों कमीशनके मेम्बरोंको मुफस्सिलवजह जिन्होंने अलग२ रिपोर्टलिखी है कि गायकवारपर अपराध साबित नहीं है उनकीतकरीर की विवेचना कीजावे ॥

दफ़ा ४३—श्रीमान् महाराजा सेंधिया कहते हैं कि उन गवाहोंमें से जिनकासम्बन्ध इसमुकद्दमे में नहीं है केवलतीन गवाह रावजी नरसू और दमोदरपन्थ ऊपर कहे हुये जुर्मोंको गवाही देते हैं और उनके बयान में नुक्स और अन्तर है शायद महाराजा साहब अमीनाकी गवाहीको भूलगये जैसे किपहिले बयान कियागया है शहादत अमीनाकी जरूरी है और उसकी गवाही से बड़ाजुर्म साबितहोता है गवर्न्मेराट इण्डियाको रावजी नरसू और दमोदरपन्थकी गवाहीमें कुछ भी अन्तर मालूम नहीं होता न जानिये महाराजा साहब किसबयान से अन्तर जानते हैं खासअमरमें इनकाबयान एकसा है यहबात केवलतीनयाचार गवाहएकखास जुर्मपर गवाहीदेते हैं और गवाहीके सवालोंमें साबित कदमरहते हैं तो यह प्रयोजन नहीं है किचूंकि गवाहकमहैं इसलिये उनकी गवाहीनिश्चय माननेके योग्य नहीं है ॥

दफ़ा ४४—फिर महाराजा कहते हैं कि गवाही पेडरू और अब्दुल्लाको अपराधी के मतलबको मुफ़ीद है गवर्न्मेराट इण्डिया के विचारसे अब्दुल्लाकी गवाही गायकवारके मुफ़ीद नहीं है और पेडरू गवाह को रावजीने मुजरिम किया या परन्तु उसने इसकाररवाई से बिल्कुल इन्कारकिया यहकेवल रावजीकी एकबातको खण्डन करता है अर्थात् अपनी शिरकत उसकेसाथ कुछबयाननहीं करताकि जिस्से गायकवार माखूज हों और न उसकीगवाही ऐसीहैकि जोगायकवारकीबरीयत का सबबहो और इसगवाहीको रावजी तसदीक करता है कि गायकवारके नौकररेजीडन्सीके नौकरोंकियहां आते जाते थे वह इसबातको मानता है कि गायकवारने मुझेरुपये दिये

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

थे और यहरुपये कुछ त्यौहार या विवाहमें नहींदिये केवल इसीलियेदिये कि हमेशा गायकवारके यहां आवेंजावें परन्तु इसने सालिमके कहनेको न माना॥

दफ़ा ४५—फिर महाराजा कहतेहैंकि सालिम और यशवन्तराव और कंवल कर गजाबा और नूरुद्दीन बोहरा और हकीम जो अदालत में पेशनहीं कियेगये यह गायकवार के मुफीदमतलब है परन्तु हालइसका यहहै किनूरुद्दीन बोहरा एक अत्तार है दमोदरपन्थ कहताहै कि संखिया जो करनैल फियरसाहब को दीगई वह इसीकी दूकान से मंगाईगई थी और नूरुद्दीनकी बेकसूरीका कोई लेखनहींहै जोवह बुलाया भी जाता तो यातो वहकहता कि मंगाईगई है या इन्कारकरता कि नहींमंगाईगई परन्तु जैसेपहिले बयानहोचुकाहै कि ऐसे इज़हारात दमोदरपन्थ पर गवर्न्मेण्टको कुछ लिहाज नहींहै और यहदमोदरपन्थके बयानमें कि उसनेनूरुद्दीन की दूकानसे संखियामोललो कहीं निशानभी नहीं है क्योंकि सिदाकतनहीं की इसलिये नूरुद्दीन नहीं बुलायागया उसके नबुलाये जानेसे केवल इतनीबात हुई कि नूरुद्दीनकी दूकान से संखियेका मोललिया जाना साबित नहुवा किन्तु नूरुद्दीन बोहरेकी अदालतमें हाजिरहोने से कुछमुकद्दमे का ज़रर न पहुंचा॥

दफ़ा ४६——और गवाहोंके निस्बत दूसरी बातहै इस से पहिले लिखागयाहै किसालिम और यशवन्तराव गायकवार की ओरसे अदालत में नहीं आये ज़ाहिरी सबवयह है कि गायकवारने इनको इसलिये पेशनहीं किया कि वहसबहाल जानतेहैं ऐसानहो कि ठीक२ मुक़द्दमेका बयान करदें और इसीखयालसे कंवलकर गजाब और हकीम भी नहीं बुलाये गयेवह सब लोगविषकीतय्यारी में प्रवृत्तथे जोहाल दामोदर पंथको मालूमथा तो निश्चयकरके वैसाही हाल वह लोग भी जानतेहोंगे॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जोदामोदरपंथने झूठबयानकियाथा तोऐसा होसक्ताथा कि गायकवार इन लोगोंको बुलवाते और साफ २ इनसे गवाही दिलवाकर दामोदरपंथकी गवाहीको खण्डनकरते गायकवार के खूबमालूम होगा कि यह गवाह उसके कलामको खण्डन करसक्तेहैं या नहीं॥

दफ़ा ४७—महाराजा सेंधियाको यहबात दिक्ततलब मालूमहुई कि थोड़ा २ विषक्यों दियागया जिसमेंइतना ज़माना बीता इसके लियेभी वैसाही बयान होसक्ताहै जैसा कि और बातोंकेलिये बयानहुवा यहतो मालूमहुवा कि थोड़ा २ विष दिया गया और नवम्बर की ९ तारीखको अधिक दिया गया और सिवायइसके कि रावजीको भयथा कि जोएकही बेरविष दियाजावेगा तोतुरन्तही उसकाअसर होजावेगा और परदा खुलजावेगा और थोड़ा २ देनेसे बहुत दिनोंमें असरहोगा॥

विषदिये जानेका मूल तहक़ीक़नहींहुवा क़रीनेसे समझा जाताहै कि छः सात सप्ताह पहिले से विष देना प्रारम्भहुवा जबठीक अवसर मिलीतब विषदिया रावजीके बयानसे मालूम हुवा कि दोसरतवा उसकोमौका नहीं मिला और इसकाम केलिये उसकोबहुत होशियार रहनापड़ा॥

दफ़ा ४८—फिर महाराजा लिखतेहैं कि इसकासुबूत कुछ नहींहै कि तांबा, संखिया, और हीरा मोल लियागयाथा न कोईकागज़ दस्तखती महाराजा साहबका इसविषय मेंहै॥

दफ़ा ४१—और ४५—मेंबयानहोचुकाहै कि ऐसीखरीदारी का सुबूत करनाफ़ज़ूलहै और कागज़का जवाबयहहै कियह बात असम्भवतहैकि ऐसाकागज़ महाराजाने लिखाहो॥

गवर्न्मेण्ट इण्डियाको किसीप्रकारसे ऐसेलेखके कागज़का निश्चयनहींहै॥

दफ़ा ४९—श्रीमान् महाराजाजयपुर और सरदिनकरावके गवाहीके लियेउज्र महाराजासेंधियाके समानहैं और जोउनके कुछजियादह उज्रहैं वहयहहैं॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

दफ़ा ५०—श्रीमान् महाराजाजयपुरबिचारतेहैं कि रावजी ने बयानकिया कि मुजको और नरसूको गायकवारने एक २ लाखरुपयेके देनेकावायदाकिया और नरसूवर्णनकरता है कि बड़ेभारी इनआमका वादादाथा रुपये की संख्या बयान नहीं करता गवर्न्नमेण्ट इण्डिया इसइखतिलाफके लियेनिश्चयकरती है कि रावजी और नरसूके बयानमें कुछसाजिश नथी॥

मुख्ययह बातहै कि पारितोषक कीतो प्रतिज्ञाकी गईथी और यहदोनोंकी गवाहीसे साबितहै शायदइनआम इनदोनों के मुखतलिफ सुनादिये गयेहोंया उनदोनोंकी समझमेंअन्तर हो क्योंकि सालिम और यशवन्तराव भी इसबातमें संयुक्तथे ऐसानहीं होसक्ता कि रावजी और नरसू की साजिश होगई होतीतो नरसूभी एकलाख रुपयेके इनआमका इकरारकरता न कि केवलपारितोषकका इकरार॥

दफ़ा ५१—श्रीयुत महाराजाजयपुरठीकतौरसेजाहिरकरते हैं कि याददाश्तें दामोदरपन्थके दफ़तर से आईं उसमें कुछ रुपये का जिक्र नहींहै जोहीरे या संखियेके मोललेनेके लिये दियागयाहो॥

इस रक्कममें ब्रह्मभोज और दूसरे पुण्यके खर्च लिखेहैं और काफीगवाही इसबातकीहै कि रुपयाऐसेही कामोंमेंखर्चहुवा परन्तु गवर्न्नमेण्ट इण्डिया यह नहीं कहसक्ती कि महाराजा की राय ऐसी क्यों है क्योंकि किताब से वरक निकाले गये और फाड़ेगयेइससे मालूम होताहै किकिसीवस्तुका छिपाना मंजूर था जैसा कि (टी) अक्षर के कागज से साबित होता है किताबकेवरकोंके बदलेजानेमें कुछसंदेहनहीं पायाजाता और नकोई गवाहीउसकी तरदीदमें है जिसवाह्मण के लियेलिखा हैकि दिसम्बर सन् १८७४ ई० में तीनहजार छः सौ तीसरुपये तेरह आनेछः पाई दिया गया मुतम्मी मजकूर बुलाया गया और पूछने पर उसनेकहा किमुजको कभी ऐसा रुपया नहीं

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मिलायह शख्सएक कागजजिसपरकि [वाई] अक्षरका चिह्न है पेशकरता है और उसके रूसे रुपयेपानेका दृक्काबालकरता है कियह रुपयापूर्वोक्त कागजके लिखेहुये के अनुकूल नाना-जीवतिल गायकवारके जवाहर खानेके दारोगाको दियागया और पुण्यके लीगेमें लिखागया किभेद नखुले श्री मान्महा-राजा जयपुरके विचारसे किताबका लेखठीक है और दामो-दरपंथ का बयान गलत परन्तु दरबारै तसदीक बयानदामो-दरपंथके दफ़ा ३८ में लिखा गया है॥

दफ़ा ५२—श्रीयुतमहाराजा जयपुर कहतेहैं कियहबात प्रसिद्ध थी कि करनैलफियर साहबको विषदिया गयाउस में तांबाभी था परन्तु जबउसके जुज़अलग किये गयेतोतांबेका कहीं निशाननथा गवाहीमें तांबेका जिक्रन था भावपूनाकर बाजारी खबरें सुनकर करनैल फियरसाहब से कहताथा कि ऐसा २ विषआपको दियागया॥

दफ़ा ५३—गवर्नमेण्टइण्डिया नहींसमझती कि श्री मान् महाराजा जयपुरने क्याविचार के यह लिखा कि कोई सूरत सालिम और यशवन्तसे पूछनेकीनथी उन्होंने पुलिसके सम्मुख बयान किया या नहीं जो गायकवारके वकील वा कमीशनके मेम्बरभी कुछ हाल पूछना चाहते तो पुलिस के अफ्सर और दूसरे मनुष्यभी उनकी बातों का उत्तर देते॥

दफ़ा ५४—सरदिनकरराव तारीखों की तफावत परएति-राज़ करते हैं और रावजी और दामोदरपंथ के इज़हारों का मुक़ाबिला करते हैं और कहते हैं कि इन्होंने खिलाफ वर्णन किया परन्तु गवर्नमेण्ट इण्डियाके विचार से किसीमें अन्तर नहीं पाया गया॥

दफ़ा ५५—परिणाम यह हैकि हरचन्दश्रीमान् महाराजा सेंधिया और सरदिनकरराव और इनदोनोंसे श्रीयुतमहारा-जा जयपुर कीराय कामिल है परन्तु गवर्नमेण्टइण्डिया की

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

रायतीनों यूरोपियन मेम्बरों के अनुकूल है यह रिपोर्ट अति उत्तम और नीति पूर्व्वक लिखीगई है और निश्चय मानने के योग्यहै इसमें लिखाहै कियहगवाही ऐसीनहीं है कि जिसका निश्चयनहो और कुछइसका खण्डननहींहुवा और गायकवारके कौंसली नेभी किसी गायकवार के एजन्टको नहीं बुलाया किवह गायकवारकी निर्दोषता साबितकरें और आखिरवक्त तक कहा किहमारा कामनहीं है किहम मुकद्दमे कोतूल दें परन्तु गवर्न्नमेण्ट इण्डियाको इसबारेमें और खयालहै उसके निश्चय करनेकीखास वजहयहथी कि गायकगवारको अपनी बरीयतके हासिलकरनेका मौकादियाजावे गवर्न्नमेण्टइण्डिया केविचारमें उचितथा किकौंसली गायकवारके मुकद्दमेको कायमकरते और जोगायकवाके प्रतिकूलथी उसको रद्दकरते परन्तु क़रीनेसे मालूमहोताहैकिउनकी सामर्थ्य सेहोनाइसकाबाहर थानहींतो जरूरवह पैरवीकरते गायकवारके कौंसिलने यह वर्णन किया परन्तु तकरीर नहीं की कि शायद दामोदरपंथ और भावपूनाकर इसजहरखूरानी केबानीमुबानीं हो इसबात कोबही सावधानीसे एकसम्मत कमीशन के तीनोंमेम्बरोंने कईबातोंसे खण्डन किया है॥

दफ़ा ५९—इसलिये गवर्न्नमेण्टइण्डिया बड़े अफसोस और लाचारहोकर अपनीमजबूतराय बयानकरती है कि वहजुर्म्म जो तहकीकातके पहिले गायकवारपर लगायेगयेथे तहकीकातसे साबितहुये और वास्तवमें मल्हारावने रावजी और नरसूको विष देनेकेलिये वहकाय—गवर्न्नरजनरलहिन्द बइजलास कौंसिल॥

दस्तखत—सी—यू—ऐचीसनसाहब
सीक्रेटरी गवर्न्नमेण्टहिन्द—मुकामशमला

फारनडिपार्टमेण्ट—पोलीटीकल

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अंगरेज़ीमेम्बरोंकी रिपोर्ट ॥

१—सबसेपहिले उन तारीखों का बयान करना पसन्दीदा मालूम होता है जिन से इस मुकद्दमे के कई सम्बन्धी हाल मालूम हुये तथाच वहतारीखें नीचे लिखी हैं ॥

करनैलफ़ियरसाहबने १८—मार्च सन् १८७३ ई० में बड़ौदेकी रेजीडन्सीका कामशुरूकियाथा जो बदइन्तिज़ामीकी शिकायतें करनैलफ़ियरसाहब रेजीडण्टमहाराजागायकवार की गवर्न्मेण्टमें कीथीं उनकी तहकीकातके वास्ते नवम्बर के प्रारम्भ से २४ दिसम्बर सन् १८७३ ई० तक कमीशन ने इजलास किया ॥

महाराजागायकवार लक्ष्मीबाईसे अपना विवाह करनेके वास्ते करनैलफ़ियरसाहबके समेत २—एप्रिल सन् १८७४ को नौसारी को गये और १६—मईको लौटआये ७—मईको विवाह हुवाथा १६—अक्टूबर सन् १८७४ ई० को लक्ष्मीबाईसे एकपुत्र उत्पन्नहुआ ॥

जोखरीता महाराजागायकवारने श्रीमान्वाइसरायबहादुरके नाम करनैलफ़ियरसाहब की तब्दीलीके लिये भेजाथा दूसरी नवम्बर सन् १८७४ ई०का लिखाहुवा था ॥

जो खरीताश्रीयुत वैसरायबहादुरने महाराजागायकवार के नाम जिसमें इत्तिला तब्दीली करनैलफ़ियर साहब और तकर्ररीकरनैलसरल्यूइसपीली साहब के सी—एस—आई—के भेजाथावह २५नवम्बर सन्१८७४ कालिखा हुवाथा ॥

दफ़ा २——जोगवाही मिसलके साथहै उससेहमारे विचारसे यहबात साबित है कि९—नवम्बर सन् १८७४ ई०को करनैलफ़ियर साहबको बिषदेनेका उद्योगइस भांति किया गयाथा कि सफेद संखिया और हीरे का चूर्ण उस शर्बत के गिलास में जिसको करनैल फ़ियर साहब हमेशा प्रभात को हवाखाने के उपरान्त पियाकरते थे मिलादिया गया करनैल फ़ियर साहब उसदिन सुबह को सातबजे पांच मिनट-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पर लौटआये और रावजी चपड़ासियों काहवालदार उनसे मिला और उसने साहब को सलाम किया फिर करनैलफि-यरसाहब उसकमरे मेंगये जिसमें उनका दफ्तर रहता था और जहांवह कपड़े आदि पहिना करतेथे यह एक छोटा सामकानहै और रेजीडन्सीके खासमकानों के निकटहै जबक-रनैल साहब उसकमरेके भीतरगये तो उन्होंने अपने नियम के अनुसार शर्बतका गिलासहाथ धोनेकी तिपाई पर रक्खा हुवापाया और दोयातीनघूंट पीकरउन्होंने गिलासकोफिर रखदिया फिरवह लिखनेकेलिये बैठ गये और बीसमिनट या आधघण्टेमें एकहीबेर जीमतलाने लगाकरनैल साहब ने इस विचारसे कियह शर्बतमेरे नामुआफिकहै औरइसअन्देशे से भीकि ऐसानहोजोऔरजियादा पीनेकोउनकाजीचाहे शर्बत दफ्तरके कमरेसे बाहर बरामदेसे फेंक दिया बहुतसा शर्बत बरामदेमें रहाऔर थोड़ासा बहकर बरामदेके बाहर पहुंच गयाजब करनैलफियर साहबने फिरउसगिलासको हाथधोने कीतिपाई पररक्खा देखातेउनका खयालउस तलछटकेरंग कीतरफ गयाजो गिलासमें बाकीरह गयाथा और जिसमें से थोड़ीसी गिलास केऊपर अबतक बहरहीथी करनैल साहब बयानकरतेहैं कियहतलछट स्याहरंग कीसी थी औरजबउ-न्होंनेगिलास कोउठाकर देखातो उनकेदिलमें यह बिचार उपजा किमुनको विषदिया गया उस समय अनुमान साढ़े सातबजगयेथे करनैल साहबनेशीघ्रही डाक्टर सीवर्ड साहब केनाम जोरेज़ीडन्सीके सरजनहैंथे एकरुक्का इस विषयकालि-खाकिजल्दी मेरेपास आइये तथाच डाक्टरसाहब आध घण्टे यापौन घण्टेमेंया अनुमान आठबजे केकारनैल फियरसाहबके मकान परपहुंचे करनैल फियरसाहबने वह गिलास जिसमें कुछशर्बत बाकीथा डाक्टरसाहब कोदेदियायहशर्बत करनैल फियरसाहबके बयानकेअनुसार चायपीनेकेडेढ़यादोचमचों के बराबरथा औरडाक्टरसीवर्डसाहबकेवर्णनकेअनुकूलमेथाआदि

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

खानेके चमचेसे कुछ कमथा जब डाक्टर सीवर्ड साहब ने गि-
लासको हिलाया और रोशिनीमें उसकोदेखा तो उनको त-
लछटमें कुछ झिल्लीसी मालूमहुई और जब कि उन्होंने उसमें
थोड़ासा जलमिलाया तो उनको तलछटके चमकतेहुये अज-
जाओंपर रंगत की झलक दीखी करनैलसाहब ने अपनी त-
बीयतकीकैफियत डाक्टरसीवर्डसाहबकेरूबरूबयानकीऔर
डाक्टरसीवर्डसाहब गिलासकोबाक़ीशर्बतकेसमेतअपनेघरको
इसबातकी तहक़ीक़ात करनेकेलिये लेगयेकि उसशर्बतमेंकौन
वस्तुमिलीहुईथीकरनैलफियरसाहबनेवर्णनकियाहैकिजबमैंने
शर्बत चक्खाथा तबसेउससमय तककि वहडाक्टरसीवर्डसा-
हबको दिया कोई मनुष्यभी उसकेपास तकनगया जोकैफिय-
त करनैलफियरसाहबको अपनीतबीयतकी मालूमहुईथी उस
को एक चिट्ठीमें लिखकरउसीदिन ग्यारहबजे डाक्टरसीवर्ड
साहबकेपास भेजदिया जो नीचेसंक्षेपसे लिखाजाताहै ॥

यद्यपिमैंनेउसशर्बतकेजो गिलासमेंथाकेवलदो या तीनघूंट
पियेथेतौभी अनुमान आधघण्टेके जैसाकिमैंने आपसे बयान
कियाथा मुझको खिलाफ़ मामूलमेदेमें कुछशिकायत मालूम
हुई और उसकेसाथ सिरघूमनेलगा और दृष्टिमेंचक्करमालूम
हुआ जिसकेसबबसे खयालों में फ़तूरहोगया और मुंहमेंभी
एक नागवारधातका स्वादमालूमहोनेलगा और मुंहसेथूक
आनेलगी पहिलेकईदिनसे मेरी ऐसीदशा नहींहुईथी और
मैंनेउसको कुछ बुखारसे (जोअब बिल्कुल जातारहाथा) और
कुछ इसविचारसे मन्सूबकिया कि जिनफलोंका हररोज़ मेरे
लिये शर्बत बनायाजाताथा वहताज़े नथे ॥

करनैलफियरसाहबने वर्णनकियाहै कि उसधातकातांबेका
सास्वादथा और वहबयान करतेहैं कि यहस्वाद शर्बतके पीने
से जोप्यालेकेऊपर बिल्कुलसाफथा और जिसकाज़ायका कुछ
खराबनथा अनुमानपौनघण्टेके उपरान्त मुझको मालूमहुआ ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

दफ़ा ३—डाक्टरसीवर्डसाहबनेउनउपायोंको बयानकियाहै
जो प्यालेकी तलछटके जुज़ातहक़ीक़ करने के लिये किये गये
अर्थात् जब डाक्टरसीवर्डसाहबने अनुमान एकतिहाईहिस्से
तलछटलेकर जोतैालमें एकदो ग्रीनकेबराबरथा और जिसकी
रंगतज़रदोमिलीहुई भूरीथी उसमेंथोड़ासा कोयलामिलाया
और उसको एक नलीके अन्दररखकर असरटलेमट पर गर्म्म
किया जिसकायह नतीजाहुवाकि नलीपर एकधातकासाघेरा
बनगया और जब डाक्टरसाहबने उसनलीको फिरगर्म्म किया
तो उन्होंने उसीहल्केके ऊपर और नीचे कुछ सफेदसी वस्तु
देखीजिसमें खुर्दबीनसेदेखकर अष्टकोणबिल्लौरकेसे जोमालूम
हुये यहगवाहबयानकरताहै किधातकेहलके और हश्तपहलू
बिल्लौरके ज़र्रोंसे सराहर संखियेकाहोना पायाजाताहै और
वह यहबयान करताहै कि किसीविषसे यहसबरूपपैदानहीं
होसक्ते तलछटमें छल्लेका उठनाभी उसीजहरकी निशानीहै ॥

बाक़ी तलछटको जिसकाडाक्टरसीवर्डसाहबनेइम्तिहान
नहींकियाथा डाक्टरसाहबने१० नवम्बरकोडाक्टरग्रेसाहबको
मीकलऐनैलायज़र गवर्न्नमेण्ट बम्बईकेपास भेजदिया और सो-
खनेवाले कागज़में छानकर और उसकोगरमीदेकर चूरेकी
सदृश करदिया ॥

दफ़ा ४—कोयलेके द्वारा इम्तिहान् करनेके थोड़े दिनके
उपरान्त जैसाकि पहिले जिक्रहुवा डाक्टरसीवर्डसाहबने उस
वस्तुके जरियेसे जो नलीमें रहगई थी एकबेर और इम्तिहान
किया अर्थात् उन्होंने उसकोनलीमेंसे निकालकर कुछ पानी
परडालदिया जबकि भारीज़र्रे नीचे बैठगये तो साहबनेबहुत
जल्दउनज़र्रोंको बाहरफेंकदिया जो ऊपरतैरतेथे डाक्टरसाहब
ने कईदफे यहीक्रियाकी और फिर तलछटको एकचकरके शीशे
के कई टुकड़ोंपररक्खा जिसको उन्होंने कमीशन के रूबरू भी
पेशकिया इनशीशोंको उन्होंनेएक दूरबीनकेनीचेरक्खातो मा-
लूमहुवाकितलछट खासकरचमकदार बिल्लौरी रेज़ोंसे संयुक्त

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

थी जब उन्होंने एक साफ शीशे का टुकड़ा उन टुकड़ों में से जिन पर तलछट रक्खी हुई थी एक शीशे पर रक्खा तो मालूम हुवा कि वह खुरची हुई थी तथा च उन्होंने यही तजर्बा कमीशन के रूबरू किया जब साफ शीशे का टुकड़ा उस शीशे से रगड़ा गया जिस पर तलछट थी तो तुरन्त वह कट गया डाक्टर सीवर्ड साहब बयान करते हैं कि मैंने तांबे के वास्ते इम्तिहान नहीं किया था किन्तु केवल संखिया के प्रतीत करने के प्रयोजन से किया था और तलछट का जहरीला हिस्सा संखिया था कुछ हीरे का चूर्ण न था जो तलछट ग्यालेसे के अन्दर से निकला था उसको डाक्टर साहब ने तौला नहीं था ॥

दफा ५—जो चूरह डाक्टर सीवर्ड साहब ने १० नवम्बर को डाक्टर ग्रे साहब के पास भेजा था उसकी परीक्षा के परिणाम के बयान करने से पहिले उन दोनों पुड़ियों का भी जिक्र करना जरूर है जो डाक्टर साहब के पास भेजी गई थीं उनमें से पहिली पुड़िया में उस बरामदे के फर्श का खुर्चा हुवा चूना है जिसमें करनैल साहब ने शर्बत को फेंका था करनैल फियर साहब की गवाही और उनकी डाक्टर ग्रे साहब के नाम की लिखी हुई चिट्ठी से प्रकट होता है कि डाक्टर ग्रे साहब की राय के अनुसार जिसका इजहार उन्होंने डाक्टर सीवर्ड साहब से और डाक्टर सीवर्ड साहब ने करनैल साहब से किया था करनैल फियर साहब ने १५ नम्बर के प्रभात को अपनी मौजूदगी में एक चपड़ासी से जितनी तलछट उस बरामदे के फर्श पर मिलस की जहां गिलास का शर्बत गिरा था उस सबको खुरचवाया और उसकी एक पुड़िया बांधकर करनैल फियर साहब ने बड़ी एहतियात के साथ १६ नवम्बर को डाक्टर ग्रे साहब के पास भेज दी दूसरी पुड़िया २५ दिसंबर को मिस्टर हटर साहब पुलिस के कमिश्नर की मौजूदगी में रावजी की पेटी में मिली जिसको मिस्टर सूटर साहब अपने साथ बम्बई को ले गये और ३० दिसम्बर को डाक्टर ग्रे साहब को दे दिया ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

दफा ६—डाक्टरग्रेसाहब कैमीकल अग्ज़ैमिनायर्ज़ गवर्न्मेण्टबम्बईकी गवाहीका संक्षेप नीचेलिखाताहै डाक्टरसाहब के पास तीनों पुड़ियां जिनका ऊपर वर्णन हुआ ऐसी सूरत और ऐसीरीतिसे पहुंचींजिससे यहखयालनहीं होताकिमार्गमेंउनमें कुछछल कियागया॥

पहिलीपुड़िया जोडाक्टर सीवर्डसाहबने उनकेपासभेजीथी उसमेंडेढ़ग्रीनचूरहभूरे रंगकासाथाजिसमेंकुछ२ चमकतेहुये ज़र्रेथेडाक्टर साहबने उसमेंसे थोड़ेसे चूरेको गरमी के द्वारा साफकिया और जबखुर्दबीनसे उसको देखातो अष्टकोण बिल्लौरके सेजर्रे मालूमहुये डाक्टरसाहबने उनज़र्रों को जलमें जोशकिया और उसमेंसे थोड़ासाजल लेकरचांदीका तेज़ाब ऐमोनासुल्फैट उसमेंमिलाया तोउसके सबबसे एक पीलेरंग कीवस्तुएकत्र होगई॥

थोड़ेसेजलमें साहबनेतांबेका तेज़ाब ऐमोनियो सल्फटमिलायातो वहजलकर एकचर्दीमाईल सब्ज़वस्तु जमगईबाकी केजोशकिये हुयेजलमें ग्रेसाहबने तेज़ाब मारीअटैक ऐसड़ मिलाकर फिरउसको जोश दिया और गन्धक की हाईड्रोजिनगैसको उसमेंछोड़ा तोवह जमकर चमकतीहुई जरदरंगकी वस्तुहोगई—फिरडाक्टर साहबने उनतीनोंजमी हुईवस्तुओंमें नौसादर मिलादिया और वहसबगल गई परन्तुतीसरीजमीहुई वस्तु के एकहिस्से को रहने दिया—उसको डाक्टर साहबने बहुततेजमारी एटक एसडकेसाथ मिलाया और वह नहींगली॥

इसपरिक्षासे डाक्टरसाहबको इस बात का निश्चय होगया किसफैद ज़र्रे जो इसक्रियासे दृष्टिपड़ेथे वह सफैद संखिया के जर्रेथे॥

जोचूर्णडाक्टर सोवर्डसाहबने डाक्टरग्रेसाहबके पास भेजा थाउसकी और प्रकारभी साहबने परीक्षाकी अर्थात् उन्होंने

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

थोड़ासा चूर्णजल और मारीएटकएसड के साथ जो प्रक्रिया और जोशकरते दोटुकड़े साफ तांबेके उसमें डाल दिये कई क्षणके पश्चात्तांबेके पत्तरपर भूरेरंगके धात केसे ज़र्रे इकट्ठे होगये डाक्टरसाहबने इन तांबेकेपत्तरोंमें से एकटुकड़ेकोसु-खाकर एकनलीमें उसको गर्मकिया जिसकेतरफों परअष्ठकोण ज़र्रे बिल्लौरके इकट्ठे होगये इनज़र्रोंकीभी वहीक्रियाकीजो पहिलेवर्णन हुवा और वहभी वैसेहीहोगये॥

दफा ७—जोचूर्ण डाक्टरसीवर्डसाहबने डाक्टरग्रे साहबके पास भेजाथाउसके एकभागमें साहबने कोयला मिलाकर भो धातकेजु जोंकोअलगकिया और जिसनलीमें उन्होंने यह इम्-तिहान किया उसको उसघेरेके समेतजो उसपर बनगया था और जिसकोवहसंखिये केहोनेकी अलामत बयानकरतेहैं क-मीशनके सम्मुखपेशकिया डाक्टरसाहबने इसहलक्केको गरमी नहींदी जिससे वह सफेदसंखिया होजाता॥

दफा ८—जो चमकते हुये ज़र्रे इस चूर्ण में थे जो डाक्टर सीवर्ड साहब के पास से आया था उनकोडाक्टरग्रे साहब बयान करते हैं कि ऊपर कहे हुये तजुर्बों का उन पर कुछ असर नहीं हुवा और उन्होंने एक खुर्दबीन से उनको देखा और पहिली दफायह बयान किया कि शायद वह शीशे का चूर्ण है जबकि १२ नवम्बर को उन्होंनेसोखनेवाले कागज के टुकड़े पर उनको देखा तो खाली आंखसे देख कर उन्होंने यहखयाल किया कि इतनी चमकके सबबसेवहहीरे केज़र्रेथे डाक्टर साहबने सम्पूर्ण तजुर्बों और खारोंसे उनकेगलानेके लियेकोशिश की परवेहनहीं गलेऔर फिरयहसमझेकि वह हीरेका चूर्णथा यहतहकीक़ातउन्होंनेअपनी तरफसे कीक्यों-कि १२ नवम्बरको उनकेपास इस मज़मून की कोई इत्तिला नहींआई थी कि उसचूरे में शायदहीरेकाचूर्ण भी होगा॥

दफ़ा—९—दूसरीपुड़िया जोकरनैल फियर साहबने (आई) नम्बरके कागज़ के साथ भेजी थी वह १७—नवम्बर को डा-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

क्टर ग्रेसाहबके पास पहुंची उसमेंसातग्रेन सङ्खीयी परन्तुजब उन्हींरीतों से उसकीपरीक्षा की जो पहिलीपुड़िया के निस्बत अमल किया था तो उसमें संखिया और रेत और हीरे का चूर्णसाबित हुआ जो पुड़ियाडाक्टर सीवर्ड साहबने भेजी उसमेंडाक्टर ग्रेसाहब को एकग्रेन और जो करनैल साहब ने भेजीथी उसमेंसवाग्रेन कुलसवादो ग्रेन संखिया निकला डाक्टर ग्रे साहब बयान करतेहैं कि जोसंखिये का असरहो जावेतो ढाईग्रेन में एक तन्दुरुस्त मनुष्य मरसक्ताहै और बहुत सूरतों में उसकाआधे घण्टेसे लेकर एक घण्टे तक असर होता है बड़ी मोतबिर सनद पर यह बात मालूम होती है कि मनुष्यकी देहपर हीरेके चूरेका कोईमोहलकअसर नहीं होता है डाक्टर ग्रे साहबका विचार हैकितलछट में जोएक झिल्लीसीपैदाहुई जिसकाजिक्र डाक्टरसीवर्डसाहबने किया है वहअवश्य करकेगिलासमें संखियेकेहोनेका नतीजाहै ॥

दफ़ा १०—तीसरीपुड़ियाजोमिस्टर सूटरसाहबने ३०—दिसम्बर सन् १८७४ ई० को भेजी थी उसमें डाक्टर ग्रेसाहबको उसीप्रकार और स्वरूप कीसात ग्रेन संखिया मिली थी जो बाकी दोपुड़ियों में पाईगई थी यहबात साहबमौसूफनेदूरबीन के द्वाराअवलोकन करकेमालूम की थी ॥

दफ़ा ११—जोमनुष्य संखियेकेविषसेबीमार होतेहैंउनके मुख में धातकीवस्तुओं का स्वाद होना एक ऐसीबात है जिसका तर्जुबाखास डाक्टरसाहब को एकदफा होचुका है और जिस का हमेशा उन मुक़द्दमों में हवाला दिया जाता है जो कैमीकलबहैसियत ऐनेलाय के उनके पास भेजेजाते हैं और डाक्टरसाहबने उसकोइसवास्ते खायाहै मालूमकर कि उस में कुछ स्वादहै या नहीं परन्तु उसको बेमज़ापाया डाक्टरग्रे साहब ने चूर्णमें तांबेके निश्चय करने के वास्ते कोशिशकी थी परन्तुउसका कुछचिह्न मालूमनहुवा ॥

दफ़ा १२—डाक्टरग्रे साहब कहते हैं किसंखियेके खाने को

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

निग्रानियां सिरघूमने और जी मतलाने और वमन और दस्त औरपेटमें जलन होती है औरवह यहभी कहते हैं किजोबराबर थोड़ा२ संखिया खाया जावेतो नेत्रोंसे पानी जारीहोजाता है औरजो संखिया जखमसे लगायाजावे तोउसरोगी कोमारने का हेतुहोजाताहै वहयहभी विचारतेहैं किकरनैल साहबने थोड़ा२ संखियापिया होगापरन्तु यहभी जी मतलाने के लिये काफीथा औरजो मतलाने सेमुखमेंपानीऔर थूकअधिकआने लगती है ॥

दफा १३—मुकद्दमेके इसहिस्सेमें यहसम्बन्धी बातभी जिक्र करनेके योग्य है कि करनैलफियर साहबने अपनीगवाहीमें कहाहै कि वह सितम्बर सन् १८७४ ई० सेभी अलील थेअर्थात् उनको जुकामथा औरउनके माथेपरएक फोड़ाथा जिसका इलाजडाक्टर सीवर्डसाहबकरतेथे डाक्टरसाहब उसफोड़ेपर प्लास्टरलगातेथे और बाकी प्लास्टर एकमेज परउनके दफ्तर केकमरेमें रक्खारहताथा सो आपही करनैल फियर साहब तेजाब क्लोडियन इसरीतिसे फोडेमें लगाया कि जिस फाहेसे उन्होंनेउसको लगायाथा उसके छुटानेमें बड़ीमुश्किलहुई एक दिनप्रभातको आठया ९ बजेकेबीचमें यहबातहुई उससमयकरनैल साहबअपनेदफ्तरमें हाथधोनेकीतिपाईके निकटखड़े थे और वहांसे उन चपडासियों पर नजरपड़ी जोउस कमरे केआसपासमें खड़ेहुयेथे प्लास्टरलगानेसे पहिले और उसकेपीछे भी करनैलसाहबको कुछज्वरथा और उनका शिरभारी था और उनकेनेत्रोंसे बहुतसापानी जारीथाइसने उनको संदेह हुवा कि अक्टूबरके प्रारम्भसे उनका शरबत उचित प्रकारसे तय्यार नहीं किया जाता ॥

९—नवम्बर को उन्होंने एकया दोघूंट शरबतके पिये और उनको अपनी तबीअत नामुआफिक मालूम हुई और उनका शिर भारी होगया और ऊंघे मालुम होनेलगीं अन्तको उन की तबीअत की वहीकैफियत होगईजो अक्टूबरके प्रारम्भ में

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

हुई थी ७ नवम्बरकोभी उन्होंनेथोड़ासा शरबतपिया और वह यहबातजानतेथे कि उसदिनभी उनकी तबीयत की वहीदशा थीजैसी कि पहिलेदिनथी ८ नवम्बरको उन्होंने शरबत नहीं पिया क्योंकि अगलेदिन उनको अपनी तबीयत बहुत नासाज मालूम हुई थी॥

जोअखासतें करनैलसाहबको सितम्बर और नवम्बरकेबीच मेंमालूमहुई थीउनका जिक्र कईगवाहोंकी गवाहीकेलिहाज सेजोउस तहकीकातमें अखीरपर पेशकीगई थी कुछ जरूरी मालूमहोगा॥

दफ़ा १४—यहबात जाहिरहैकिजिसहालतमें सवादोग्रीन संखियाप्याले कीतलछट और बरामदेकी खुरचनमें निकला थातोगिलासमें उतनेअनुमान सेजोमारडालनेकेलिये काफी हैबहुतजियादा संखिया डाला गयाहोगा क्योंकि यह नहीं होसक्ताकि जितना संखिया शरबत में मिलाहुवा था वहसब बरामदेमें मिलगयाहो और जोमिकदार संखिये की डाक्टर सीवर्डसाहबके तजुर्बेमें सफेदजर्रोंकी सूरतमें जाहर हुईथी वहनामालूम है॥

दफ़ा १५—जबकियह बातसाबितहोगईकि वास्तवमेंकरनैल फियरसाहबके गिलासमें विषमिलाया गयातोअब यहबातगौर करनेके लायक है किकिस मनुष्यने विषदिया अब्दुल्लाखां जो पन्द्रह या सोलह वर्षसे करनैलफियरसाहब के पासनौकरथा शरबतके तय्यारकरनेका कामउसकेतअल्लुक था परन्तु उसकी गैरहाजिरीमें खानसामा उसको तय्यारकिया करताथातथाच ९नवम्बर सन् १८७४ ई०को अब्दुल्लानेयह शरबतखालिसअरक सेतय्यारकरके गिलास को दफ्तरके कमरेकेभीतर हाथधोने कीतिपाईपर रखदिया उस समय अनुमान साढ़े छः बजेप्रभातकेगोविन्दबाबू यलपा दफ्तरकेकमरे को साफकर रहेथे अब्दुल्लाउस दिनकेलिये अपने स्वामीके कपड़ोंको लेकरकमरे से चलागया गोविन्दबाबू रेजीडन्टोका नौकरबयान करता है

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कि मैंने और यलपाने ९ नवम्बर सन् १८७४ ई० के भोरको जब कि करनैल फियरसाहब हवाखानेके लिये बाहर गयेथे दफ्तरके कमरेको साफकियाथा और मैंने [illegible] बोतलके भीतरभरा जो हाथधोनेकी तिपाईपर रक्खी हुईथी और निस्संदेहवही बोतलथी जिसमेंसे [illegible] थोड़ासाजल उसगिलासमें डालाथा जिसने [illegible] मैंनेयह जलउसमट्टीके बरतनमेंसे लियाथा [illegible] सहेमें रक्खारहताथा और जिसमेंसे [illegible] बाशिन्दोंको जलदियाजाताथा और [illegible] लौटनेके पहिले अनुमान सातबजेके [illegible] बयानकरता है किमैंने अब्दुल्ला को कमरेके [illegible] और अपने स्वामीके कपड़ोंको दुरुस्तकरतेहुये [illegible] हुयेदेखा परन्तु मैंने उसको घरबनलाते हुये नहीं देखा [illegible] जमा दरयावसिंह चपड़ासी कमरे [illegible] कहाहै कि अब्दुल्लाकेचले जानेके उपरान्त [illegible] करनैलफियरसाहब केदफ्तरके कमरे [illegible] छ:मिनटतक उसके भीतर ठहरारहा और [illegible] उसनेकागजोंकीरद्दीको की उसटोकरी [illegible] निकटरक्खीहुईथी खालीकरके [illegible] कागजभर दियेजो उसकमरेके भीतररक्खेहुये [illegible] करदफ्तरके कमरेमें जातेथे इस [illegible] करनाचाहिये और कमीशनके [illegible] वाकफियतहै किदफ्तरका कमरा [illegible] यलपानेगोविन्दबाबू के इसबयानकी तसदीककी है [illegible] उसदिन भोरको दफ्तरके कमरेके [illegible] इससे अधिक उसनेऔर [illegible] दरयाव सिंह वर्णन करता है कि मैंने ९ नवम्बर के [illegible] को करनैल फियर साहबके लिखने की मेज [illegible] उससे सुचित्त होकर मैंउसी स्थान पर बैठगया [illegible]

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सियोंके लिये नियतहै और मैंने और कोई बात नहीं देखी॥

दफ़ा १६—पसइस बातकेसंदेह करनेकाकोई हेतु मालूम नहीं होताकिइनमेंसे किसीमनुष्यने शर्बतमें विषमिलायाहो और रावजी आपहीमुक़िरहै कि मैंनेविषमिलाया इसलिये हमारीरायमें इसविषयमें उसकीगवाही को ठीकसमझना-चाहिये॥

दफ़ा१७—अबरावजी और २ गवाहों की गवाहीपर बतफसीलगौरकरनाजरूरहैकियह बातनिश्चय होकि रावजीको करनैलफियरसाहबको विषदेनेकी तरग़ीबदीगई और जोयह बातठीकहै तोकिसमनुष्यने उसकोबहकाया॥

दफ़ा १८—रावजीकी गवाहीनीचे लिखीहै॥

एकयासवावर्षका समयबीताकि करनैलफियर साहबनेमुझको चपड़ासियोंका हवालदारनियतकियाथा औरमैंबड़ौदेकीछावनीके बाजारमें रहाकरता था सन् १८७२ ई० की कमीशनके इजलासके शुरूहोनेकेदो महीनेपहिले सालिमने बार २ मुझसेकहाथा किमममहाराजा गायकवारके मिलनेकेलियेचलो अन्तकोमैं राजीहोगया उससमय(अर्थात् कमीशनकेइजलाससे दोमहीने पहिले)सालिम और यशवन्तराव केसाथमें मुझकोशहर में अपनेमकानपर मिलाया महाराजगायकवारके महलकोगया औरसालिमऔर यशवन्तरावकी मौजूदगीमें महाराजासाहबसे मुलाकातकी महाराजागायकवारने मुझसेकहाकि तुमहमको रेजीडन्सीकी खबरेंभेजाकरो और जोतुमखबरेंभेजोगेतो हमतुमकोपारितोषकदेंगेऔर यहपूछाकि नरसूसे जोरेजीडन्सीके चपड़ासियोंका जमादार है तुम्हारीदोस्ती है यानहींतथाच रावजीने खबरोंका भेजना मंजूर करलिया और यह कहा कि नरसु मेरामित्र है और महाराजा साहब के कहने से उनसे यह इकरार करलिया किमैं नरसु को आपकी मुलाकात के लिये लाऊंगा दूसरेदिनरावजीने नरसुसे उस मुलाकात और बुलाने का जिक्र

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

किया परन्तु नरसुनेअवकाशके नहोनेकाबहाना करदिया॥

दफ़ा १९—इस गवाहकी गवाही का जियादहतो जिक्र करनेसेपहिले इसबातका जिक्रकरना उचितहोगा कि सालिम एकअरबीहै और बड़ौदे नगरमेंरहताहै और वह गायकवार केपाससवारोंमें नौकरथा और सदैव उनकीसेवामें हाजिर रहताथा महाराजाका जासूस यशवन्तराव खासकासिद है और नगरमेंरहता है और जिस कमरेमें इससुलाकात का होना बयानकियागयाहै यहवहीकमराहै जिसकेभीतरमहाराजा गायकवार और रेजीडन्सीके नौकरोंमें सब सुलाकातें हुईथींउसमकानको कमीशनकेकई मेम्बरोंनेअवलोकनकिया है वहएक छोटासा कमरा तीसरी मंजिलपर है और उसके भीतर एककोनेकेतरफसे एकसूक्ष्मसीढ़ीकेद्वारा जातेहैंयहसीढ़ी एकछोटेकमरेकेभीतरतकहै औरउसमेंकोई दरवाजा नहींलगा हुवाहैदरहकीकत यहमकान राजासाहबसेसलामऔरमुजरा करनेकाकमरा है और उसमेंकेवलएकदरवाजाहैजिसमेंहोकर कमरेका मार्गहै उससुख्यकमरेमें महाराजा गायकवारकेमुख्यकमरेका मार्गहै उससुख्यकमरेमें महाराजा गायकवारकाएकपलङ्गऔरस्नानकरनेकीएकचौकीऔरनहाने धोनेका सामान था मुजराईके कमरेमेंकई शीशे दीवारों पर लगेहुयेहैं और उसमें एकनीचीऔर चौड़ीलकड़ीकीबेंचपड़ी हुईहै कहतेहैंकि महाराजा गायकवार रेजीडण्टीके नौकरों से सुलाकातकरते वक्तहरएक मौक़ेपर आ बैठतेथे अब हम फिररावजीके बयानका जिक्र करते हैं॥

दफ़ा २०—रावजीने सन् १८७२ई॰के कमीशनके इजलाससे पहिलेतीनयाचारदफे और कमीशनके इजलासकेसमयमें तीन मरतबे गायकवारसे सुलाकातकीइनमेंसे हरएकमौक़ेपरवह फिरयशवन्तरावकेमकानकोऔरवहांसेयशलरावऔरसालिम केसाथमहाराजागायकवारके महलकोजाताथाइनसुलाकातों मेंरावजी महाराजागायकवारसे उनमनुष्योंका जोरेजीडण्टी कोआयेथेऔरजोहाल वहांहोतेथेऔर जोबातेंगायकवार

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

के प्रबन्धकी रेज़ीडएटी और कमीशनके सन्मुखकी जातीं उनका जिक्र कियाकरता॥

दफ़ा २१—उनमेंसे एकमुलाकातमें जोयुक्रवारको कमीशनके इजलासके समयमेंहुईथी रावजीने गायकवार से कहा कि मेराबिवाह होनेवालाहै और गायकवारने यशवन्तरावको यहहिदायतदीकि वह उनकोइसबातकी याददिलावे—तथाच दूसरेदिन भोरको जबकि गायकवार रेज़ीडएटीको गये यशवन्तनेरावजीसे कहाकि मैं तुम्हारेलिये पांचसौरुपयेलाताहूं तुममेरेमकानपर संध्याकोआकर उसरुपयेको लेजानासोरावजी संध्या को यशवन्तराव मकानपर रेज़ीडएटीके पंखाकुली जुग्गाकेसाथगया और वहांदलपतयशवन्तरावकेमुहर्ररनेजुगा के साम्हने पांचसौ रुपये उसको दिये उस समय यशवन्तराव बालाखानेपरथारावजीनेउसमेंसेचारसौरुपयेका अपनेबिवाह के लियेजेवरमोललिया और बाकी सौरुपये जुग्गाकेपासजमा करदिये कोई ऐसी गवाही मिसल में शामिल नहीं है जिससे सिवाउसमुलाकातके जिसमें पांचसौरुपयेके मिलने का जिक्र कियागयाहै ऊपरलिखीहुईमुलाकातोंमें किसीऔर मुलाकातोंकीनिसबतरावजीकेबयानकी तसदीक़होतीहो परन्तुआगे को यहबात साबितहोगईकि इनपहिलीमुलाकातोंमेंएकस्त्री अमीनानामी आयाजोपहिले करनैलफ़ियरसाहबकीमेमसाहिबाकेपास और फिरमिस्टरबोवीसाहब एसिस्टएट रेजीडएट बड़ौदेकीमेमसाहिबाके पास जो करनैलसाहबकी लड़कीथी आयाकी तौरपर नौकररही थी श्रीमान्गायकवार के पास आया जायाकरतीथी परन्तु पांचसौरुपये दियेजानेकी तसदीक़केलिये शहादतमौजूदहै और अब रावजी के बयान को छोड़ना और इसमुआमलेमेंध्यान देना उचितहै॥

दफ़ा २२—भगवानका पुत्रजुग्गा वर्णनकरताहै कि चौदह या पन्द्रहमहीनेबीतेअर्थात् अनुमानदिसम्बर सन् १८७३ई० के कि मैं रावजीकेसाथ एकदिनसंध्याको यशवन्तराव के मकान

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

में गया था (यहबात स्मर्ण होगी कि नवम्बर और दिसम्बर सन् १८७३ ई० में कमीशन का इलजाम होरहाथा) और यशवन्तरावकेकारकुनयाः मुहर्ररने पांचसौ रुपये रावजी कोदिये थेजिसमेंसेचारसौ रुपये रावजीने लिये और मुझको सौरुपये अमानतकेतौरपर सुपुर्दकर दिये ॥

इलपतमुहर्ररवर्णन करताहैकि बारह या चौद हमहीने हुयेकि मैंने पांचसौ रुपये बड़ौदे के सेक्रेटर यशवन्तराव को आज्ञासे आठदजे रात्रिको रावजी और जुग्गाकोदियेथे उससमय यशवन्तराव खाना खाने परथा और इसी वजह से वह वहां नथा ॥

रावजीनेदजेबाके हारअपनेविवाहके लिये आभूषणतय्यार करायाथा वहवर्णनकरताहै कि उसदेवालीजो २० अक्टूबर सन् १८७३ ई० को हुईथी मैंनेशिवलाल वठिलसुनार को रावजी केलिये चान्दी और सोनेके कईप्रकारके जेवरोंकेतय्यार करने के वास्ते मुकर्ररकियाथा यहजेवरदोयातीन मौकोंपरतय्यार होकरउसकेहवालेकियेगये औरदजेबानेउनकेद्वाराआभूषणों कीफेहरिस्त सुनारसेकीमत समेतप्राप्तकी जबअबकीकमीशन तहकीकातकरहीथी दजेबाने इसफेहरिस्तकोपुलिसकेहवाले करदिया औरउससेविदित होताहैकि शिवलाल ने रावजीके लियेनवम्बर सन् १८७३ई० औरमार्चसन् १८७४ई० केमध्यमें पांचसौअट्ठावनरुपये छःआनेकाआभूषणबनवाया ॥

शिवलाल वठिलआभूषणों कीतय्यारी केसमयऔर उनकी तफसील केनिस्बतदजेबाके बयान की तसदीक करताहै और बयानकीरूसेउनकी कीमतचारसौ पिचहत्तररुपयेया पांचसौ रुपयेबयान करता है दजेबा और रावजीने समय२ परआभूषणोंकीपूरीकीमत शिवलाल कोदेदी ॥

दूसरेसुनारदलाव नामेने यहइजहार दियाहैकिमैंनेरावजी केलिये जूनऔरअगस्त सन १८७४ ई०के मध्यमें कई प्रकारके

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कीमतीआभूषण उन्नासी रुपये आठ आनेके तय्यार कियेथे॥

शिवलालवेठिलऔरदलाबने उसआभूषणको पहिचानलिया जोउन्होंनेतय्यार कियाथा औररावजी उसकोतसलीम करता हैकियह मेराहै॥

इसजगह परयहबातकहनेके योग्यहैकि रावजीकामासिक केवलदस रुपयेथा॥

दफ़ा २३—अबफिर रावजी कीगवाही कावर्णनकियाजाता हैजिसमें उनमुलाकातों कावर्णनहै जो१८७३ई० कीकमीशनके बड़ौदेसे चलेजानेके उपरान्त औरश्रीमान् महाराजा गायकवारके नौसारीके जानेके समय हुईथीं॥

रावजीवर्णन करताहै किबड़ौदेसे कमीशनके चले जानेसे आठयानौदश दिनकेउपरान्त ३जनवरीसन् १८७४ई०केनिकट मैनेनरसू जमादार सहितगायकवारसे उनके महल में मुलाकात कीथीसालिमनेपहिलेसे रावजीको यहइत्तिलादीथीकि मैने नरसू को आनेपर राजी करलिया है उस दिन रविवार थी और जिस प्रकारसे प्रबन्ध किया गया था उसके अनुसार नरसू(जिसकाघर बड़ौदेनगर मेंथा)यशवन्तरावके घरकोगया रावजीयातोजुग्गाके साथऔर याकरभाईकेसाथगया नरसूके बयानसेमालूम होताहैकि यहमुलाकात १९और २४जनवरी सन्१८७४ई० केदरमियानमेंहुईथी॥

जोरेजीडन्सीमें पंखाकुलीकाकाम करतेथेमकानसे चलकर यशवन्तरावके मकानकोगया औरवहां उसनेनरसू और सालिमको बैठपाया औरयह सबमनुष्य उसके और उसके साथी जुग्गायाकरभाईकेसाथ महाराजाकेमहलपरगयेयहांपहुंचकर सालिममहाराजगायकवारको बालाखानेपरइत्तिलाकरनेगया औरथोड़ीदेर केउपरान्तउसनेयशवन्तऔरनरसूकोमहाराजा गायकवारके सम्मुखबुलाया इसमुलाकातमें रावजीनरसूऔर यशवन्तराव औ. सालिमथे रावजीनेइसवार्त्ता कोवर्णनकिया

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

हैजोइससमयमें गायकवार और नरसूमेंहुईथीअर्थात् गायकवारनेनरसूसे कहाकितुम शहरमेंरहतेहो इसलियेतुमकोहररोजरेजीडन्सीकी खबरेंलानीचाहियें और जोतुम बड़ौदेकेएक पुरानेरहनेवालेहो और सरदारोंको जानतेहो इसलियेतुमउन सरदारों कानाम हमकोबतादिया करोजो रेजीडन्सीमें आते जातेहैंनरसू जमादारइसवात परराजी होगया और यहकहा कि हम और रावजी दोनों सालिम के द्वारा खबरें भेजा करेंगे इसपर महाराजा गायकवार ने यह इच्छा जाहिर की किजो कोई बातअति आवश्यक इत्तिलाकरने केलायक होतो उसको लिखकर भेजना चाहिये जब जमादार शहर को अपने घरआवेगा वहउस चिट्ठीको अपने साथलेता आवेगा और सालिमको देदेगा नरसूने गायकवारसे कहा कि मेरे भाई को पिन्शन बन्द होगई है आप उसका कुछ बन्दोवस्त फरमाइये गायकवारने नरसूसे कहा कि तुमइस विषय की एकअर्जी रेजीडण्टसाहब को दो और हमप्रतिज्ञा करते हैं कि जो रेजीडण्टसाहब उसकाहमसे जिक्रकरेंगे तो हमकुछ उसकाबन्दोवस्त करेंगे उससमयनरसू के दो भाई गायकवार महाराजाके पासएकरिसाले के खांडर और जमादारथे॥

२४—जुम्मा और करभाई दोनोंयहवर्णनकरते हैंकि हम गायकवारके महलको रावजी और नरसू और यशवन्तराव और सालिम के साथ गये थे और जबयह मनुष्य महाराजा गायकवार से मुलाकात करने के लिये ऊपरगये तो हमको नीचेछोड़गये उसमनुष्य कीपहिचान का कोई वसीला नहीं है जो इसमौके परइन मनुष्यों के साथगया था परन्तुइसमें कोई बातनहीं होसक्ती कि वहयातो जुम्मा था या करभाई या नरसूनेकेवल यहवर्णन कियाहै कि एक मनुष्य रावजीके साथथा परन्तुउसने उसकानाम नहीं बतलाया॥

दफ़ा २५—फिररावजीने यहवर्णनकियाहैकिमैं और नरसू फिरचारपांच दफामहाराजा गायकवार की भेंटके लियेउन

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

के नौसारी जानेके प्रथम (२ अप्रैल सन् १८७४) को गयाथा और उनसैाकों पर हमको महाराज गायकवार को रेजीडएटी की काररवाई की खबरदी इस जगह यह बात वर्णन करनीचाहिये कि नरसूने इससमय इसप्रकारकी एकमुलाकात का अर्थात् अपनी दूसरी मुलाकात का जिक्र किया

दफ़ा २६—रावजी वर्णन करतेहैं किमैं और नरसू कारनैल साहबके साथनौसारीको गयेथे और वहांहमने और शख्सों मेंसे सालिमऔर दामोदरपन्थको भीदेखारावजी नेसालिम के द्वारानौसारी में गायकवार से एकबेर मुलाकात कीऔर गायकवार ने भावपूनाकर और और मनुष्योंकाहाल उससे पूछा जोरेजीडएटीको जातेथे ॥

दफ़ा—२७—अबहम रावजी के बयानका उनमुलाकातोंके सबबबयान करतेहैं जो उसकीऔर गायकवारकी नौसारीसे लौट आने के उपरान्त (१८ मई सन् १८७४ ई० के निकट लौटआयेथे) हुईं थीं और हमकोमालूम होताहै किरावजी के वर्णनके अनुसारउनमुलाकातों में जो अबतकहुईं महाराजगायकवार ने केवलरेजीडएटी की खबरेंपूछीं और नौसारीसेलौट आनेके अनन्तर पहिली दफ़े महाराजानेसाहब विषकाजिक्र किया ॥

दफ़ा२८—रावजी वर्णनकरताहै किमैं नौसारीसे लौटकर कभीतापेडरू उसीजाके और कभीनरसू के साथ महाराजा गायकवार से मुलाक़ात करने गयाथा पेडरू कारनैल फियर साहबका खानसामांथा और इसकामपर पन्द्रहबर्ष से और कुलछब्बीस वर्षसे उनकेपास नौकरथा पेडरूएक महीने की छुट्टीलेकर गोवाकोगया था और उसकेसाथ जो तीन मुलाकातेंमहाराजा साहबसे हुईं उनका होना रावजीने पेडरू के गोवाकोजाने से और एक काहोना उसके लौट आने के पीछेठहराया है रावजी वर्णन करताहै कि पेडरू ने मुझसे महाराजाके महलको चलनेकी दरख्वास्तकी थी और पेडरू

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

से सालिसने कहाथा रावजीनेपहिली मुलाकातका औरजो वार्त्ताउस समयमहाराजा गायकवारके साथ हुईथी उसका जिक्रकियाहै और यह कहाहै कि उससमय महाराजनेउस वार्त्ताकोपूछा था जो रेजीडण्टोंके खानेकी मेजपर होती है और यहइच्छाकी थी कि पेडरूसालिस के द्वाराउनकेपास खबरभेजदिया करे बाकी दो मुलाकातोंका कुछब्यौरावर्णन नहींकियागया है रावजी बयान करताहै कि महाराजागायकवारके साथ पेडरू की पिछली मुलाकात गोवासे लौट आनेसेदोतीनदिनपीछे हुईथीअब जोगवाही पेडरूनेकमीशन के सम्मुखदीहै उसमें उसने गोवासे अपने लौटने की तारीख बयाननहीं कीहै परन्तु जोइज़हार उसने मिस्टर ऐडजरटन साहबबम्बई के डिपुटीकमिश्नर पुलिसके रूबरू–५–जनवरी सन्–१८७५–ई० कोदियाथा उसमेंउसने वर्णनकिया हैकि मैं–३नवम्बर–सन्–१८७३को छुट्टीपरसे बड़ौदेको लौटआया रावजी ने उस गुफ़्तगू को बयान किया है जो पेडरू और महाराजा गायकवार में हुई थीं महाराजा गायकवार ने पेडरूसे इसबातके पूछनेके उपरान्त कि वहगोवासे कबलौट आया यह कहा कि जो हम तुमको कोई वस्तु दें तो क्या तुम उसको करदोगे पेडरूने उत्तर दिया जोहो सकेगा तो मैं करदूंगा फिर गायकवारने यशवन्तरावसे वार्त्ताकी और यशवन्तराव ने एककागज़ की पुड़िया महाराजा साहब को देदी जिसको महाराजा साहबने पेडरूको देदिया पेडरू ने पूछा कियह क्या है गायकवार ने कहा कियह विषहै और इस को करनैल फ़ियर साहब के खाने में मिलाना चाहिये पेडरूने यह बहाना किया कि जो करनैलफ़ियर साहब इकबारगीमरजावेंगे तोमैं पकड़ाजाऊंगा और तबाहहोजाऊंगा तब महाराजागायकवार ने पेडरूको भरोसादिया कि इकबारगी कोई घात न होगी किन्तु करनैल फ़ियरसाहब दोया तीन महीनेमें मरेंगे रावजी यह निश्चय प्रगट करताहै कि

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पेडरूने उसपुड़ियाको अपने पासरहने दिया परन्तु वह यह बातनहीं जानता कि उसने इसबातपर अमल किया यानहीं पेडरूनेरावजी से कहाकिगोवाको मेरेआनेसे पहिले सालिम ने मुझकोरुपया दिया—पेडरूनेअपने इज़हारमें इस बात को मानाहैकिमैं और वहनौसारी कोगया और सालिमने उससे ताकीदकरकेमहलको चलनेकेलिये कहापरन्तुवह वहांकेजाने या महाराजागायकवारके साथवार्त्ताकरनेसे इन्कार करता है वहइसबात को तसलीम करताहै कि गोवाके जानेसे थोड़े दिन पहिले मैंने सालिम से राह के लिये खर्च मांगा था और सालिम ने साठरुपये बड़ौदे के सिक्के के मुझ को दिये थे और यह कहा था कि महाराजा गायकवारने उस रुपयेको उसके राह खर्चकेलिये भेजा है वह इस बातको भी मानता है कि मैंने रावजी को साठरुपये मिलने की इत्तिलादी थी हालांकि मैं उससे कुछ स्नेह नहीं रखता था किन्तु केवल उसकी और मेरीबोलचालथी यहबातअभीतकबेतहकीकहै पेडरूमहलको गयावानहीं या जो मुलाकातमेंमहाराजा गायकवारकी उसके साथहुई रावजीभीउसकेसाथ गयायानहीं इसविषयमेंरावजी के बयानकी तसदीककिसी प्रकारसे नहींहोती॥

दफ़ा—२९—रावजीवर्णन करताहैकि उसकीपहिली मुलाकातमहाराजा गायकवार के साथनरसू के नौसारीके लौटने परदोया तीनदिन के उपरान्त हुई थी उस दिन निश्चयकरके २०—वा२१—मई सन्–१८७४ई० हागो करसाई पंखाकुली उसके साथ गयाथा नौसारी से लौट आने के पन्द्रहदिन के उपरान्त रावजीकोनरसू से तीनसौरुपये उसइनआम के हिस्से कीतौर पर मिलेजो महाराजा गायकवारने उनको दिया था॥

दफ़ा—३०—रावजी कहता है कि जबकरनैल फियर साहब के माथेपर फोडाथा—सितम्बर या अक्टूबर सन्–१८७४ ई० उससमय में नरसूके साथ गायकवार की मुलाकात के लिये

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

गयाथा गायकवारने सुझकोएकशीशी दी जिसमें जलकेसदृश एकसफ़ैद अरकथा और यहकहा कि तुम इसको करनैलफ़ियरसाहब के स्नानकरने वा हाथ मुंह धोने के जलमें मिला दो इसशीशी का मुखरूई और मोमसेबन्दथा रावजीने इसशीशी को अपने पाजामेके बीचमेंरखलिया और कमर बन्दसे उसको खूबजोरसे पेटमें बांधलिया रास्तेमें चलनेके झुकने से इससेसे कुछअरक रावजीके पेटपर गिरपड़ा तो उससे पेट पर शोथ होगया जिसमें बड़ीसोजिस होतीथी रावजी इस शीशी को अपनेसाथ रेजीडन्सीमेंलेगया और नरसूके प्रश्नकरनेपर यह उत्तरदियाकि मैंने इसशीशीके अरकको करनैलफ़ियर साहब के पानीमें मिलादिया परन्तु रावजीकहताहै कि मैंनेयहएकसवारके भरोसेकेलिये कहदियाथा जो हरदिन इसबातके मालूमकरनेकेवास्ते कि मैंनेवह कामकिया या नहीं मेरेपास आयाकरताथा हालांकि मैंने उसअरकको यह विचारकर फेंकदियाथा कि उससे मेरेहाकिमको कष्टपहुंचेगा रावजी ने नरसूको वहसूजनदिखाई जो उसकेउदरपर होगईथीयह शीशी एकसंदूककेनीचे रक्खीहुईथी जो रेजीडन्सीके बरामदे में उस बेंचकेपास रक्खारहताथा जहां अरदलीका चपरासी बैठताथा यह बोतल रावजीकी तर्जनीउंगलीकेबराबर लम्बी और पतलीथी डाक्टरग्रे ने जिनसे कि रावजीके पेटके सूजन की गवाही लीगई यह कहाहै कि जो तीन निशान नाफ़से ऊपर उसजगहपर दीखतेहैं जहांकमरबन्द बांधाजाताहै वह यातो तेज़ाबकासाहक या गरमलोहेके लगनेसेपैदाहोतेहैं और संखियाकासाहकहै और संखियेसे दुखपहुंचसक्ताहै और इसी प्रकारकेचिह्न होजातेहैं जैसे कि रावजीकोपेटपरहैं इसशर्त्त पर वहचमड़ेसे एकघण्टेतक मिलारहे चाहेचमड़ेपर पहिलेसे कुछजखमनहो डाक्टरग्रेकी यहरायहै कि जो यहसमझाजावे कि शीशीमें संखियाथा तो जो निशानरावजीकेपेट पर होगयेहैं वहउसीतरह पैदाहोगयेहोंगे जैसा कि रावजी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ने कहाहै हमशीघ्रीकेलिये अपनीगायतबदेंगे जब कि हमदा-मोदरपन्थकी गवाहीपर ध्यानदेंगे ॥

रावजीकहताहै किजिससमयमेंनरसूने मुझकोतीनसौरुपये दियेथे उससे चारपांच महीनेके उपरान्त मैंएकबेर संध्याको महाराजागायकवार की मुलाकातके वास्तेगया इसहिसाब से मालूम होता है कि यह मुलाकात अक्टूबर या नवम्बर सन्१८७४ई० में हुईहोगी रावजी यहखयाल करताहै कियह मुलाक़ात९—नवम्बरसे पन्द्रहयाबीसदिनपहिलेहुई होगीराव-जीनेयहभीकहाहै कि जिसकमरेमें यहमुलाकात हुईथी वह महाराजासाहबकागुसलखानाथा और उससमयसन्ध्याकेसात बजे होंगेया कुछदेर होगईहोगी और उससमय सालिम और यशवन्तराव और नरसू उपस्थितथे जो कुछ वार्त्ता हुईथी उस को रावजीने नीचेलिखेके अनुसार वर्णन कियाहै ॥

महाराजासाहबने हमसे कहा कि साहब हमपर बड़ाअ-न्यायकरतेहै मैंतुमसे कुछबात कहनाचाहताहूं क्यातुमउसको सुनोगे ,फिर महाराजासाहब ने हमसे कहा कि साहब क्या भोजनकिया करतेहैं तबमैंने कहा वह कोई वस्तु मेरेसाम्हने नहीं खातेहैं महाराजा साहब ने फिर हमसे कहा कि जो मैं तुमकोकोई वस्तुदूं तो क्यातुम उसको खानेमें डाल दोगे हमने कहाकि उसकाक्या असरहोगा यहबात नरसूने कहीथीइसके अनन्तर महाराजासाहब ने हमसेकहा कि मैं,सालिमके हाथ एकपुड़िया भेजूंगा इसपर मैंने महाराजासाहब से कहा कि उसकाक्या असरहोगा और जब कि मैंनेयहपूछा कि यहक्या वस्तुहैतो महाराजाने कहा कि यहविषहै तबमैंने महाराजा सेकहा कि जोमैं इसको मिलादूं और साहबको एकही बेरकुछ होजावे तोक्याहोगा,महाराजानेकहा इसकाअसर जल्दी न होगा किन्तु दो या तीन महीनेमें उसका असर होगा फिर महाराजाने हमसेकहा कि मैंतुममेंसे हरएकको लाख २ रुपये

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

दूंगा जो तुम इस कामको करदोगे और मैं तुमको नौकरी दूंगा और तुम्हारे सन्तान और कुटुम्बको पालूंगा तुम किसी तरह से मत डरो मैंने खुद महाराजा साहबसे पूछा कि मैं क्योंकर इसविषको मिलादूं महाराजाने उत्तरदियाकि तुम एक छोटी शीशी लेकर उसमें थोड़ासा जल और चूरा डालो और उसको खूब हिलाकर मिला दो फिर मैंने महाराजासाहब से पूछा जो मैं चूरेको इसरीतिसे मिलादूं तो उसका क्या असर होगा महाराजाने कहाकि जो तुम हिलानेके बिना तुम उसको शर्बत में मिलादोगे तो ज़हर आजावेगा इसलिये मिलाने से पहिले हिलाना चाहिये फिर सालिम सवार और यशवन्तराव दोनों ने कहाकि जो तुम इस कामको करदोगे तो तुम्हारे लिये अच्छा होगा तुम कुछ भय मत करो महाराजाने कहा कि इसकी तीन पुड़ियां बनाओ और इसको तीन दिन में बर्त्तो उस समय मुझको कोई चूर्ण नहीं दिखायागया परन्तु महाराजाने कहा कि मैं सालिम और यशवन्तराव के हाथ जमादार के घरपर भेजदूंगा मैंने कहा बहुत अच्छा॥

दफ़ा ३२—इस मुलाकातके दूसरे दिन नरसू एक पुड़िया लाया जिसमें दो प्रकारका चूरा था एक सफेद और दूसरा गुलाबीरंगका और उसको रावजीको देदिया दोनों पुड़ियों की मिकदार जैसा कि गवाहने अदालतके रूबरू ज़ाहिर किया चाह पीनेके दो चमचों के बराबर थी चाहे सफेद चूरा हो दूसरे चूरेसे कुछ ज़ियादा था फिर रावजीने इन दो चूरोंमेंसे तीन चूरे बनाये अर्थात् गुलाबीरंगके चूरेके तीन हिस्से किये और उसमें थोड़ा२ सफेद चूरा मिलाया जिसको वह सफ़ेद संखिया समझता था इस सूरतमें थोड़ासा सफेद चूरा बच रहा, और रावजीने उसको कागज़में बांधकर अपने परतले के भीतर एक पोशीदा जेबमें रख लिया और तीन पुड़ियोंको दूसरी जेबमें रावजी वर्णन करता है कि मैंने इन तीन मिले हुये चूरोंको एक २ करके तीन दिन बराबर कर्नेल फ़ायर साहबकी शरबत में दफ्तरके कमरे में जाकर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

इसतरह मिलादिया कि पहिले एक शीशे में पानीभर कर चूरेको खूब हिलालेताथा ॥

दफ़ा ३३—इसजगहपर संखिये के चूर्णके निकालनेके मुआमले पर ध्यानदेनाचाहिये जिसकेलिये सदरमें यहजिक्र कियागया है कि यहवहतीसरी पुड़ियाथी जिसका इसतिहान डाक्टर ग्रेसाहबने किया करनैलफियर साहबने यहकहाहै कि मैंने रावजीको ९—नवम्बर की संध्याको केवल संदेहसे क़ैदकिया था और रावजी यहकहताहै कि मैं ११—नवम्बर को छुड़ा दिया गया परन्तु मुझको कामकरने की आज्ञा नहुई और इसीसे मैं अपनेघर चलागया रावजीने यहभी कहाहैकि मैं ९—नवम्बरकीभोरको अपनी गिरिफ्तारीसे पहिले मुअत्तल करदियागयाथा और मैंनेअपने परतले को दफ्तरमें रखदिया जिसमें करनैलफियरसाहब काम कियाकरते थे मिस्टरबोवी साहब जोउनदिनोंमें असिस्टण्ट रेज़ीडण्टथे कहतेहैंकि जब सेरावजीसेपरतलालेलियागया तो उसनेउसको एकखूंटीपर उस कमरे के भीतर टांग दिया तो करनैलफियर साहब के दफ़्तरके पासहै और निस्संदेहयही बयानठीकहै ॥

पुलिसने २२—दिसम्बर सन् १८७४ ई० कोरावजीको गिरफ्तार किया क्योंकि जो खबरें उसकी फज़ूलखरची की बलिहाज़ उसकी आमदनीकेपुलिसकेपास आतीथीं इससेपुलिसके मनमें उसका बड़ासंदेह होगया था—२४—२५—२६ दिसम्बर सन् १८७४ ई० को मिस्टर सूटरसाहबने रावजीके बयान को लिखलिया और २५—दिसम्बर को अकबर अली हेड अफ़सर पुलिसबम्बई ने रावजीसे पूछाकिजो चूरातुमसहलों से लाते थे उसकोतुम कहांरखतेथे रावजीने उत्तरदिया कि मैं उन कोअपने परतले में रखताथा जो अबभोदर के पासहैजो मेरी जगहपर नियतहुआ है सो भोदर शीघ्रही बुलाया गया और वहरेजीडन्सीके उसकमरेमें आया जहांपुलिसकेलोग मिस्टर सूटरसाहबके मातहत जो वहींरहतेथे तफ़्तीशात कररहे थे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

और उसने परतलेको उतारकर अकबरअलीको देदिया उस समय मिष्टरसूटर साहब कपड़े पहिन रहे थे अकबरअली ने फौरन् उसपरतलेको टटोला और जबकि उसको उंगलीएक कागजके टुकड़े सेलगी जो पाकिटमें रक्खाहुवाथातो उन्हों-ने तुरन्तही मिष्टरसूटरसाहबको बुलाया जो दूसरे कमरेमें थे और उनकेसाम्हने संखियेकीपुड़िया और एकटुकड़ाडोरे का मिला रावजी अकबरअली और दामोदर और मिष्टर सूटरसाहबके बयानसे साफ जाहिरहै कि रावजीको उसपु-ड़ियाका बिल्कुल खयालनरहा औरजबतक उसपरतलेमेंन हीं मिली तबतक उसका खयाल नहींआया सो इसबातके संदेह करनेका कोईकारण नहींहै कि इसपुड़ियाके निकालनेकी निस्बत जिससे रावजीके दरहकीकत उसबयानकी तसदीक होतीहैजोउसने ब क़ौदोपुड़ियों के लियेकिया है पुलिसकी ओरसेकोईबनावट औरफरेबहुवाहो रावजी वर्णन करताहै कि मैंइससफेद चूर्णको संखियाजानताथा और मैंने गुलाबी चूरमेंसे थोड़ा २ हरएक पुड़ियामें इसविचारसे मिलादिया कि कहींविषकाअसर जल्दीनहोजावे ॥

दफ़ा ३३—अबहम महाराजा गायकवारकेसाथरावजी कीअन्तकी मुलाकात काजिक्र करतेहैं रावजीकहता है कि यह मुलाकात नरसू केसाथ सालिम के पैगाम पर६ नवम्बर सन् १८७४ ई० शुक्रवारको हुईथीपहिले वह यशवन्तरावके मकानको और वहांयशवन्तराव सालिम औरनरसूकेसाथ म-हाराजाके महलकोगया औरयहसब लोगमहाराजा गायक-वारकी मुलाकातपर उपस्थितथे जिसकमरेमेंमुलाकात का होनाबयान कियागयाहै वह गुसलखानाहै गायकवारनेइस हेतुसेरावजीको बुराभला कहाकि इसनेकुछनहींकियाजिस पररावजीने उत्तरदियाकिमैंअपना कामकरचुकापरन्तुउसके परिणामके जाहिरनहोनेका कारणमेरी समझमेंनहीं आया गायकवारने कहाकिमैं तुमको कोईऔर वस्त मिलानेकेलिये

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

देना चाहताहूं जबकि रावजी बिदाहोनेकोथा तोसाक्षिमने कोईबस्तु उसके हाथमें रखदीजिसको उसने नहीं देखा दूसरे दिनअर्थात् ७नवम्बर सन् १८७४ ई० शनिवारको नरसूनेराव जीको एकस्याही माइल भूरेरंग का चूर्णएक कागजकेटुकड़े मेंबन्धाहुवा दियाट नवम्बरसोमवारको रावजी रेज़ीडन्सीको नहींगयापरन्तु वहभोरके साढ़ेनौबजे ९तारीखको गया और सब चूर्णकरनैल फ़ियरसाहब केगिलासमें मिला दिया उसने पहिले उस चूर्णको थोड़ेसेजलके साथमिलाकर खूबहिलाया थारावजी कहताहै कि इसपिछलेचूर्ण के मिलनेसे दोदिनप॰ हिले पेडरूने महाराजा गायकवारके पाससे एकचूरापाया था(उसपिछली मुलाक़ातमेंजो रावजीकोसाथमहाराजासा- हबके पासहुईथी) सोयह चूरहजोरावजीकाबयान ठीक हैतो पेडरूको ५नवम्बरको मिलाहोगा रावजीबयान करताहै कि मैनेसब चूराएकहीबेर देदियाक्योंकि उसकी मिक़दारथोड़ी थीमैने यहनहीं खयाल कियाकि इसका असर जल्दी होगा सिवा इसके सुजकोजल्दी करनेकीताकीद कीगईथी॥

दफ़ा ३४—अबहम रावजीकी गवाही का वर्णन करते हैं रावजीकमीशनके सम्मुखइसबातदेपर किजोवहटीक२ कहदे तोउसका अपराधक्षमा होजावेगा एकनाकिस गवाहकेतौर परहाजिरहुवा है और इसकेविपरीत सरल्यूइसपीली साहबने नरसूसेसाफ़२ कह दयाथाकितुम्हाराअपराधक्षमानहोगाऔर जोवयानथा इकरारइसने पुलिस और सरल्यू इसपीली साहब के रूबरू २४—दिसम्बर सन् १८७४ ई० को कियाथा वहइस प्रयोजनसे पूर्वोक्त मासकी २६—तारीखतक लिखा नहींगया (जैसाकि सरल्यूइसपीली साहबनेवर्णन किया है) कि उसको इसमुआमलेपर गौरकरने की मोहलतमिले और वह किसी कारणसेएक ऐसेबयानकरने की तरफमाइलनहो जोतहकी- कातकरनेके वक्तसाबितनहोसके पसइसवजहसेउन बातों की तरफध्यानदेनाअवश्यहै जिनसेरावजीकी गवाहीकीसबसिदा-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बातकी तसदीकहोती होतथाचहमको मालूमहोता है जिन सूरतोंमेंनरसू अदालतके रूबरूहाजिरहुआहै उनके लिहाजसे वहएक सच्चागवाहै और उसकेतौरके देखनेसेहमारे हृदयमें सच्चाईका असरहुवानरसू और रावजीकी गवाहीमें निस्संदेह कहीं २ इखतिलाफातहैं परन्तु यहइखतिलाफ इस प्रकारके हैं कि जब कोई मनुष्य ऐसेहालों कोबयान करताहै जिनकोहुये बहुतदिनहुये होतो उनके जहूरमें आनेका एहतिमाल होताहैइसबातके साबितकरनेके लियेकि जिनगवाहों कीगवाही कीनिस्बतकोई संदेहनहीं होसक्ताहै उनकेबयानमेंभी इखतिलाफकाहोना सम्भवितहै उनवजूहातोंका जिक्रकरना काफी होगाजोमिस्टर सूटरसाहब और सरल्यूइसपीलीसाहब नेइसबातकीबयानकीहै किनरसूकाबयानउसीदिनक्योंनहीं लिखा गयाजबकिउसने पहिलीदफे कियाथा मिस्टरसूटरसाहब यह बातकहतेहैं किमुजकोउसदिन उसकेलिखनेका अवकाशनथा और सरल्यूइसपीलीसाहब यहकहतेहैं मैंनेइससबबसे उसको नहींलिखाकि मुजकोयह आशाथी किनरसूको इस मुआमले परगौरका अवकाशदियाजावे॥

दफा २५—नरसूकहताहै किमैंरेजीडन्सीके चपड़ासियोंका जमादार चौदहरुपये मासिकपरहूं और इसओहदेका अनुमानसत्तहवर्षसे कामकरताहूं और मेरीरेजीडन्सीकीनौकरी की सम्पूर्ण अवधि ३० याचौतीसवर्षहै मेराघरबड़ौदे नगरके भीतरहै और मैंरेजीडन्सीको साढ़ेसातबजेया आठबजेप्रभात केसदाजायाकरताथा और साढ़ेछःबजे या सातबजे या आठबजेरात्रिकोलौट आताथाउसने रावजीके इसबयानकी तसदीककीहै कि सन् १८७३ ई० केकमीशनके इकट्ठेहोनेके पहिलेयाउसकेकरीब महाराजागायकवारकेपास जानेकोइससेप्रार्थनाकीगईथी उसनेमहाराजा गायकवारके साथपहिली मुलाकातोंके सबजरूरीबातोंमें तसदीकीहै जिसकेलियेरावजीनेयह

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बयानकियाहै किवहमुलाकात नरसूकेसाथ कमीशनकेउठजा-नेकेउपरान्तहुईथी इसपहिलीमुलाकात और नौसारीके जाने केबीचमें नरसूनेरावजी के साथ महाराजागायकवार केसाथ संध्याको केवलएकही मुलाकात काइकरारकिया है हालांकि रावजीने चारपांचमुलाकातों काजिक्रकियाथा नरसूकहताहै किमैंनौसारीमें महाराजासाहबके पासशिवाय हमराहीरेजी-डण्टसाहबके कभीनहींगया और रावजीने यहबातनहींकही किनरसूमहाराजा गायकवारके पासनौसारीमें मेरेसाथ गयी किन्तुनरसूने एकऐसीबातकहीहै जिसका जिक्र रावजीनेनहीं किया और यहएकइसबातका उत्तमप्रमाणहै किजोगवाही रावजी और नरसूनेदीहै उसमें उन्होंनेकिसीप्रकारकी चश्म-पोशीनहीं की नरसू कहता है किरावजीने नौसारी में दोसौ पचासरुपयेमुझको पारितोषक दिलवाये और जबनरसूनेयह कहाकिमैं यहांइसरुपयेको लेकरक्याकरूंगा इसलियेरावजी नेइसरुपयेकोसालिम कोदेदिया जोउससमय बड़ौदेको जाता था और जब नरसू फिर लौटकर आया तो उसने यह बात तहकीककिवहरुपया मेरेहीवास्ते मेरेभाईको दियागया या नहींयद्यपि इसकिस्सेकी सिदाकतका कोईसुबूत नहीहै और रावजी नेभीइसका कुछजिक्र नहींकिया तथापि हमको उस पर निश्चय नकरनेका कोईकारण मालूम नहींहोताहै और इसीनिस्संदेह यह नतीजा निकाला जाताहै कि यह रुपया गायकवारके पाससे आया॥

द फ़ा३६——नरसूनेकहाहै किमेरी पहिलीमुलाकातनौ-सारीसे लौटनेके उपरान्तहुई उसकाखुलासा बयानरावजी केबयानके अनुकूलहै परन्तुनरसूने इसमुलाकात की तारीख जनयाजलाई सन्१८७४ई॰ मेंऔररावजीनेमई सन्१८७४ई॰ में बयान॰ की है हिन्दुस्तानी गवाहों का बयान जमाने के लियेसदा अशुद्धहोताहै सोइसप्रकारके इखतिलाफसे उनकी गवाही में अनिश्चय नहींठहर सक्तानरसू वर्णनकरताहैकि राव

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जीने गायकवारसे कुछ बार्त्ता करनेके उपरान्त यह रायदी कि इसे जो महाराजा का बिवाह हुवा है उसका कुछ पारितोषक देना चाहिये और इसी हेतु से महाराजा गायकवारने पारितोषक के देनेका इकरार करलिया तथा च उसके दस अथवा पन्द्रह दिनके उपरान्त सालिम आठसौ रुपये नरसूके पास लाया जिनमें से चारसौ रुपये उसने रावजीको देदिये (जिनमेंसे सौ रुपये जुम्माको दिये) चारसौ रुपये अपने वास्ते लेलिये नरसूने अपने भागमेंसे सौ रुपये सालिमको दिये और तीन सौ रुपये अपने वास्ते रहने दिये परन्तु जुम्माने इस सौ रुपयेके पाने का कुछ जिक्र नहीं किया है जिसका हवाला नरसूने दिया है और इससे शायद यह नतीजा निकल सक्ता है कि यह रुपया उसको नहीं मिला हालांकि यह बात मानता है कि मैं रावजी नरसू सूयसवन्तराव और सालिमके साथ एक दफा महाराजाके महल को गया था यह बात वर्णहोगी कि रावजीने नरसूसे तीनसौ रुपयेके मिलनेका इक्रार किया है॥

दफ़ा ३७—रावजी कहता है कि नरसू तब मेरे साथथा जब कि मैं महाराजा गायकवार से उन दिनोंमें मुलाकात करनेके लिये गया और महाराजाने मुझको शीशी दीथी परन्तु नरसू वर्णन करता है कि मैंने शीशीको नहीं देखा यह शीशी उसने रेजीडण्टीमें देखी जहां रावजीने उससे यह बयान किया कि मैंने विषको जो उसके भीतरथा जलमें मिलाकर पिलाया और वह यह बात जानता है कि यह शीशी इस सन्दूक़के नीचे रक्खी हुई थी जो रेजीडण्टीमें चपड़ासियोंके बैठनेकी बेंचोंके निकट रक्खा हुवाथा॥

दफ़ा ३८—तबतक नरसूके खबरूनहरका कुछ जिक्र नहीं किया गया अब नरसू उन पिछली दो मुलाक़ातोंका हाल कहता है जो रावजीकी पिछलीदो मुलाकातोंसे मुताबिक़हैं अर्थात् एक मुलाक़ात नवींनवम्बरसे बीसया पच्चीसदिन पहिले हुईथी जो क़रीब २ उससमयकेहै जो रावजीने वर्णन कियाहै

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मुलाकातकी जगह गायकवारके प्राईवेट मकानका सुजराई कमरा है नकि गुसलखाना जैसा कि रावजीने वर्णन किया है इसबातके निश्चय करनेका कोई कारण मालूम नहीं होता कि इन मुलाकातोंमेंसे कोई मुलाकात भीतरके कमरे वा गुसलखानेमें हुई हो हम निश्चय करते हैं कि यह सब मुलाकातें सुजराई कमरेमें हुई नरसू वर्णन करता है कि कारभाई मेरे साथथा परन्तु रावजीने कारभाईका कुछ जिक्र नहीं किया कारभाईकी गवाहीसे यहबात साबित नहीं होती कि वह इस बेर नरसूया और मनुष्योंके साथ गयाथा यानहीं कोई मनुष्य यह दावा नहीं करता कि मैं महाराजा गायकवारके सम्मुख गयाथा जोमनुष्य इन मुलाकातमें वर्त्तमान थे जिनका नाम नरसूने बयानकिया है उनके नाम उननामोंके अनुकूल है जो रावजीनेबयान किये हैं और नरसूकी गवाहीके नीचेलिखेहुये खुलासेमें उसगुफ्तगूका जिक्र है जो इसमौके परहुई और जो मुख्य २ बातोंमें रावजीके बयानके अनुकूल है महाराजाने रावजीसे कुछ बार्त्ताकी मैं उपस्थित था और मैंनेवह वार्त्तासुनी और उसमेंसंयुक्तथा महाराजाने कहा साहब आपवक्तअप्रसन्न होजाता है इसबातका कुछबन्दोबस्त करनाचाहियेयशवन्त रावनेकहा कि महाराजा साहबकी यहइच्छाहै कि तुमको कोईवस्तु देंगेतुम उसकोमिलादो महाराजाने कहा कि हां कोईऐसा उपायकरना चाहियेजिससे वहवस्तु साहबके उदरमें पहुंचजावे मैंने कहा कि भोजनसे मुजको कुछ तअल्लुक नहीं है मैं यहबात नहीं करसकूंगा फिर रावजी ने कहा जो तुम चाहोतोमैं उसेशर्बतमें मिलादूंगा जिसको साहब बयानकरते हैं महाराजानेकहावक्तअच्छा तुमइसकेकरनेमेंकोशिशकरो महाराजाने कहा कि मैं तुमको एकपुड़िया भेजूंगा उसको रावजीको देदेनाचाहिये यशवन्तराव और सालिमने कहा कि जो कुछ महाराजा साहब कहते हैं जब वह वस्तु हमको दीजावेगी तो हम उसको लेआवेंगे महाराजानेकहा कि जो

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

यहकाम होजावेगा तो तुम्हारे लिये अच्छाहोगा रावजीने फिरवही बातकही इनशब्दोंसे कि तुम्हारेलिये अच्छाहोगा यहप्रयोजनथा कि तुमखानेपीनेसे खुशरहोगे और नौकरीके मोहताज न होगे महाराजाने यहकहा और सालिम और यशवन्तरावने फिरवही बातकही यहमुलाकात दसमिनटया पावघण्टेरहीहोगी मुझकोयह स्मर्णनहींहै कि यहमुलाकात पन्द्रहदिनया बीसदिनथा पचीसया एक महीने इससेपहिले हुईहोगी करनैलफियर साहबको अपने प्यालेमें विष मालूम हुवा उस मुलाकातमें मुझकोकोई पुड़िया नहीं दीगई जबवह मुलाकातखतम होगईथा सालिमने दूसरेदिन एकपुड़ियामेरे घरपर मुझकोदी यहपुड़िया मेरीतर्जनी उंगलीके बराबरथी और अहमदाबादके कागजकी बनीहुईथी॥

दफ़ा ३९—नरसूने रावजीकेसाथ महाराजा गायकवारसे पिछलीमुलाकातकी तारीखदूसरी यातीसरी नवम्बरबयानकी है परन्तु रावजी कहताहै कि वहछठी नवम्बरकीथी नरसू अपनेनियमसे आठबजे रात्रिके यशवन्तरावके मकानपरगया और वहांसे रावजी और नरसू और करभाई और जुग्गायह सबरुकन होकरमहाराजाके महलको गयेतथाच यशवन्तराव और सालिमने उनको महाराजा गायकवारके सन्मुख पेश कियाजो मामूलसे मुलगाई कमरेमें उपस्थितथे महाराजाने कहा कि तुमकच्चेहो तुमनेअबतक कुछकाम नहींकिया मैंने कहा कि इस बातको रावजी जानताहै फिररावजीने कहा कि मैंने उसवस्तुको मिलादिया और जो आपकी दवाअच्छी नहोतो मेरा इसमें क्या इख्तियार है महाराजाने रावजीसे कहाबहुतअच्छामैं एकदूसरी पुड़ियाभेजूंगा परन्तुतुमउसको ठीक २ अंजामदो और अच्छेप्रकार डालदो रावजीने कहा बहुतअच्छा यशवन्तराव और महाराजा साहबदोनोंने कहा कि कलसालिम यहपुड़िया तुम्हारेपास लावेगा तुमउसको रावजीको देदो फिरनरसूने बयानकियाहैकि सालिमनेमुझको

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

दूसरे दिन एक पुड़िया पहिली पुड़िया के सदृश अपने मकान के पास दी और मैंने रेज़ीडण्टी में पहुंचकर उसको रावजी को देदिया रावजी बयान करता है जब मैं महल से बिदा होने को था तब सालिम ने जमादार के हाथ में कुछ वस्तु दी थी जिसको मैंने नहीं देखा था इस जगह पर ऐसा इख़्तिलाफ़ पाया जाता है जो साफ़ २ दूर नहीं हुवा॥

दफ़ा ४०—नवीन नवम्बर को नरसू आठ बजे प्रभात के रेज़ीडण्टी को गया और ड. क्टर सीवर्ड साहब के चले जाने के उपरान्त रावजी ने उससे कहा कि मैंने शर्बत के प्याले में विष मिला दिया है और डाक्टर साहब ने (अर्थात् सीवर्ड साहब) उसको ले लिया नरसू रेज़ीडण्टी में तब तक काम करता रहा जब तक कि पुलिस ने २३ दिसम्बर सन् १८७४ ई० को उसे गिरिफ़्तार किया

दफ़ा—४१—अब उन चिट्ठियों की निस्बत जो रावजी ने महाराज साहब के महल को भेजीं रावजी और नरसू की गवाही का ज़िक्र करना उचित है नरसू वर्णन करता है कि सन् १८७४ ई० की वर्षा ऋतु में अर्थात् जून से ले सितम्बर पर्यन्त मेरे साथ रावजी के पास से बीस या पच्चीस चिट्ठियां जिन में रेज़ीडण्टी के आने जाने वालों के नाम और और खबरें लिखी थीं सालिम के पास पहुंचाने के लिये आईं और मैंने उनको उसके पास पहुंचा दिया यह चिट्ठियां सोमवार और बृहस्पतिवार को नहीं लिखी गई थीं रावजी कहता है कि मैंने इस प्रकार की कई चिट्ठियां भेजी थीं उनमें से कई तो अपने हाथ से लिखी थीं और एक दो जुग्गा से लिखवाई थीं जुग्गा ने इस बयान की तसदीक की है और एक चिट्ठी को पहिचान कर यह कहा है कि रावजी और नरसू के कहने से मैंने उसको लिखा था कागज़ नम्बरी (न) वह चिट्ठी है जिसमें उन सुवारों की हक़ीक़त लिखी है जो कई मनुष्यों ने रेज़ीडण्ट साहब से कीं और जो परस्पर वार्त्ता हुई उसका बयान है यह चिट्ठी सालिम के घर में पाई थी जैसा जुग्गन लाल और इमाम अली और मुन्ने भाई के इज़हारों से साबित हुआ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

दफ़ा ४२—जो गवाही पेश की गई है उससे यही निश्चय होता है कि रावजी और नरसू को अपनी गिरिफ्तारी के उपरांत वार्त्ता करने की कोई अवसर न मिली सो उनकी गवाही कोई जातीवाकफियत का नतीजा है जब नरसू सरल्यूइस पीलो साहब के रूबरू हाजिर हुआ और २४ दिसम्बर को गवाही दी तब रावजी का बयान लिखा नहीं गया था यह बात नहीं होसक्ती है कि जो नरसू कहना चाहता था उस की निस्बत पुलिसने उस को सिखाया या पढ़ाया हो यह दोनों गवाह प्रश्नोत्तर के समय अपने वाक्यों पर स्थिर रहे और हम निश्चय करते हैं कि जिन मुआमिलों में वह संयुक्त हैं उन की निस्बत उनकी गवाही सच्च है जब सरदिनकरराव ने नरसू को उसकी गवाही के पूर्ण होने पर सौगन्द दिलाई कि वह निर्भय होकर ईश्वर को वर्त्तमान जानकर सत्य वृत्तान्त वर्णन करदे तो उसने कहा कि मैंने बिल्कुल सच बात बयान करदी और मुआफी के वाइदे से, मैं सिवाय इसके और कोई बात नहीं कहसक्ता हम को यह भी मालूम होता है कि जब मिस्टर सूटर साहब ने २९ दिसम्बर सन् १८७४ ई० को नरसू का बयान और इकरार लिख लिया तो नरसू इस लज्जा से कि उसने ऐसे मनुष्य के प्रतिकूल गवाही दी जिसको वह और रावजी दोनों एक अशर्फी का ना बयान करते हैं रेजीडन्टी के अहाते के कुंवें में गिर पड़ा नरसू ने अदालत के सम्मुख इस बात के बयान करने में तामुल किया कि उसने वास्तव में अपने तईं कुंवें में गिरा दिया और यह कहा कि अपने हमजोली नौकरों की दशा देखने से मेरा दिमाग परेशान होगया था और मैं अकस्मात् कुंवें में गिर पड़ा परन्तु कुंवें के अवलोकन से यह बात मुश्किल हमारे समझ में आती है कि वह इत्तिफाकिया कुंवे में गिरा हो इस बात के खयाल करने की माकूल वजह यह है कि वह जान बूझकर कुंवें में गिर पड़ा॥

दफ़ा ४३—अब दामोदरपन्थ की गवाही पर देखना चाहिये वह हरदिन महाराजा गायकवार के महल को प्रभात के सात बजे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जाताथा और दसबजेराति पर्य्यन्तरहताथा और उसको दो सौरुपये मासिकमिलताथा वह महाराजागायकवारकाप्राईवेटसिक्रेटरथा वहवर्णन करताहै कि महाराजासाहबके सब निजकाहिसाबकिताब मेरेआधीनरहाकरताथा ॥ भाद्रकृष्णपक्ष(सितम्बरऔरअक्टूबरसन्१८७४ई०)में महाराजागायकवारने मुझकोदोतोले संखियाखुजलीके इलाजकेलियेहिदायत की उसकेलियेफौजदारीके सरिश्तेकोलिखनेकीआज्ञादी इस विषयमेंएकहुक्मजारीकियाथा किसंखिया केवलफौजदारी के सरिश्ते से और हमेशामहाराजागायकवारकीआज्ञासेमिलसक्ताहै तथाचदामोदरपन्थने सरिश्ते फौजदारीके अफ़सरको एकचिट्ठीभेजो जोअदालतमेंपेशकीगईयहचिट्ठीचौथीअक्टूबर सन् १८७४ई० की लिखीहुई है और उसमें यह हिदायतहै कि घोड़की दवाके लियेदो तोलेसंखिया मंगानेके लियेपास भेजाजावे तो शहरके गणपतिराव बलवन्तफौजदारके पुत्रने अपनेपिताकी औरसेइसपर दस्तेरिया रामचन्द्रके नामपांचवीं अक्टूबरको नीचेलिखी हुईएक आज्ञा लिखी (श्रीमत्सरकार महाराजाने दोतोले संखियामोल लेकर देनेकी आज्ञादी है सोइसमनुष्यको संखियादेदो और क़ीमतलेलो) दामोदरपन्थ कहताहै कि मैंने घोड़ेकाजिक्रइससबबसे कियाथा कि मुजको गायकवारने यहहिदायतकीथी हुरमुजजी विद्याहजूर फौजदार था और उसने दामोदरपन्थसे कहा कि मैंश्रीमहाराजाकी आज्ञालेकर संखियादूंगा दामोदरपन्थने महाराजा सेयहबात कही और महाराजाने उससे कहाकि जिसतरह होसके नूरुद्दीन बोहरेसे जो बड़ौदेकी छावनी में रहताथा और जिसके आधीन महाराजागायकवारका शफाखानाथा संखियालाओ तथाचदामोदरपन्थने याती उसीदिन यादूसरे दिन (५—या ६—अक्टूबर सन् १८७४ई०) को नूरुद्दीनबोहरे से एक पुड़िया मंगाई जिसमेंदो तोले संखिया बयान किया गयाहै और महाराजा गायकवारकी आज्ञासे थोड़े दिनोंके

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उपरान्त उसको सालिम को देदिया महाराजा गायकवारने कहा कि सालिमखुजलीके वास्ते उसको औषधी तय्यारकर लावे फौजदारीके सरिश्तेसे कोई संखिया नहीं आया और दत्तेरिया रामचन्द्र जो महाराजा गायकवारके सरिश्तेफौजदारीमें नौकरथा यहकहताहै कि कागज़नम्बरी (ज्वाद) मेरे पासआया और वह तबतक दफ्तर फौजदारमें रहा नव कि पूर्वोक्तसरिश्ते के हाकिमअफ्सरने अपनी गवाही देनेसेतीनसप्ताहप्रथम उसकोमंगालिया और उस हुक्मपर संखियानहीं दियागया क्योंकि पिछले अठारह महीनेसे यहहुक्म जारीथा कि महाराजा साहबकी आज्ञाकेसिवाय संखिया और और जहरनहीं दियाजावे और इसकागज़मेंमहाराजागायकवारकाहुक्मनथा हालांकि उसकीपीठपर यहलिखाहै किमहाराजा गायकवारने आज्ञादी ॥

दफ़ा—४४ फिर दामोदरपन्थने यहबयान कियाहै कि संखियालानेके आठदिनके उपरान्त महाराजा गायकवारने मुझको एकतोले हीरेके मंगाने और यशवन्तरावको उसके देने को आज्ञादी तथाच मैंने नानाजी वतिलके पाससे जो जवाहरखाने का मुहर्ररथा एक पुड़ियामंगाई जिसमें हीरे बयानकिये गयेहैं और महाराजा साहबकी आज्ञाके अनुसार उसपुड़िया यशवन्तराव को देदी ॥

दफ़ा ४५—वह यहभी कहताहै कि इससे आठयाचार दिनके उपरान्तगजावा जोननाकंवलकर गायकवारके साले और मौरूसीवजीरका नौकरथा मेरेपास एकछोटीसीशीशी लायाहै जिसमें कुछदवाथी गायकवारने पहिलेसे दामोदर पन्थको यह आज्ञादी थी कि वहबड़ी२ च्यूंटिया और सर्प और कालेघोड़ेका मूत हकीम के पासभेजदे तथाचबोतल के भीतरइनहीं वस्तुओंकी मिलीहुई दवा हकीमकी बनीहुई थी और जो किमहाराजा गायकवारने दामोदरपन्थसे कहा था कि वह उसको एक और बोतलमें खालीकरदे इसहेतु

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

से दामोदरपन्थने अपनी छोटी शीशीमें खालीकरलिया जो आधीउंगली के बराबर थी और जिसमें अतररहा करताथा इसबातमें संदेह है कि आया गवाहने अतर गुलाब का या केवल अतरका शब्द कहा मिसलमें गुलाबका अतर लिखा हुवाहै यह बातकुछ लिहाजके लायक नहींहै और हमपर यहबात जाहिरहै कियह छोटीशीशी उनमामूली गुलाबकी शीशियों में से नहीं है जो यूरोपमें मशहूर हैं और जिनमें थोड़ीसी बूंदें आती हैं दामोदरपन्थ ने उस दवाको छोटी शीशीमें डालकर उसका मुंहरुई और मोमसे बन्दकरदिया और महाराजागायकवारके जुबानीआज्ञा के अनुकूल दूसरे दिनउसे सालिमकोदेदिया औरसालिमको कहाकिवहशीशी रावजीको देदे दामोदरपंथको वह समय ठीकर स्मर्ण नहींहै जबकि उसनेवहशीशी देदीपरन्तु उसको निश्चय हैकि अगस्त सन्१८७४ई०केउपरान्तउसनेयहशीशीदीथीऔर वहयहकहता हैकि मैंनेदसहरेके निकट(२० अक्टूबर सन्१८७४ ई०)शीशी को दियाथा वहयहभी कहताहै कि मैंइसबातको जानताथा कि शीशीके द्वारा करनैल फियर साहबको विषदिया जावेगा जिस रीतिसेयहशीशी रावजीकेपास पहुंचीउसको हमठीक२ नहीं समझसके परन्तु हमनिश्चयकरते हैंकि महाराजा गायकवारके पाससेउसकेपास गुप्तवा प्रगटएक शीशीआई जिसमें वह कष्टदाई अरक था जिससे करनैल फियर साहब को कष्ट पहुंचाना समझा गया था॥

दफ़ा ४६—फिर दामोदर पंथ ने महाराजा गायकवार की आज्ञासे दोतोलेसंखिया नूरुद्दीन बोहरेसे औरमंगवायाऔर उसेभी सालिमकोदेदिया॥

दफ़ा ४७–दामोदरपंथने महाराजा गायकवारकी आज्ञासे एक तोलाहीरा नानाजीवतिलसे और मंगाया तथाच नाना जीवतिलने एकपुड़िया दामोदरपंथकोदी औरयहकहा कि-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

समेंतीनमासे हीरेका चूर्ण और ९मासेहीरा है दामोदरपंथने महाराजा गायकवारकी आज्ञासेइस पुड़ियाकोयशवन्तराव कोदेदिया उसने दामोदर पंथके एकप्रश्नके उत्तरमें यहबयान कियाकि इसकाचूरह बनाकर करनैलफियर साहबको दिया जावेगायह हीरोंकी पुड़िया९ नवम्बरसन् १८७४ ई०सेपांचया सातदिन पहिलेयशवन्तरावको दीगई थीगायकवारनेदामोदरपंथसे कहाकियह हीरे अकलकोटके बड़ेपुजारीके ताजके लिये हैं ॥

दफ़ा ४८—इसजगह परयह बातप्रगट हैकि किनूरहीनबौहरेसेहीरेकेप्राप्तकरने कीनिस्बतदामोदरपंथ केबयानकी तसदीकके वास्तेकोई गवाही नहींहै परन्तु यह बात महाराजा गायकवार संखिया प्राप्तकरनाचाहतेथे दामोदपंथकी गवाही और कागज़ नम्बर (रद) सेसाबित है औरहमारेबिचारसे इसबातकी बड़ीशङ्काहै किदामोदरपंथनेउसीरीतिसे संखिया प्राप्तकी जैसेकि उसनेवर्णन कियाहै हमारेबिचारमें रावजी औरनरसूकी गवाहीसे यहबातभी साबित है कि जो करनैल फियरसाहब कोबिषदियागया वहसालिमके पाससे आयाथ औरयहभी बड़ीशङ्काहै किजोसंखिया दामोदरपंथ नेसालिम कोदियाथा वहवही संखिया है जो करनैल फियर साहब को बिषदेने केलिये बर्त्तायागया जबकि दामोदरपंथ केबयानकी तसदीक़के लिये कोई गवाही नहीं है तोहमनहीं कहसक्ते हैं कि यहबात साबित है किजो संखिया रावजी ने मिलाया था वह वही संखिया है कि जिसके लियेदामोदरपंथ बयान करताहै किमैंनेउसको नूरहीन बौहरेसे लियाथा औरसालिम को देदिया था ॥

दफ़ा ४९—हीरोंके खरीदनेकी गवाही नीचेभीलिखी है अर्थात् नानाजी वतिल महाराजा गायकवार के जवाहर खाने कादारोगा वर्णनकरता है किपिछले दसहरेसे(२० अक्टूबर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सन् १८७४ ई०) कईदिन पहिले मैंने दामोदरपंथ की आज्ञासे अड़सठ यासाढ़े अरसठ रत्तीचपटे गुलाबी रंगके हीरे फतह चन्दके पुत्रहेमचन्द सेमोललिये उसने इसखरीदकी याददाश्त तय्यारकरनेकेवास्ते एकमुहर्रकोहिदायतकी इससेसातयाआठ दिनकेउपरान्तउसनेदामोदरपंथकीआज्ञासेहेमचन्दनेअनुमान चौहत्तररत्ती हीरे उसी प्रकारके मोल लिये और उसीयाद-दाश्तमें उनकीखरीदभी लिखलीगई इनदोनो प्रकार केहीरों केखरीदनेके उपरान्त दामोदरपंथको देदियेगये और दामोद-रपंथने उसगवाहसे यहकहा कि इनहीरों का चूरह बनाकर दवाकेतौरपर इस्तैमाल किया जावेगाउनकी सबकीमत छः हजारतीन रुपयेथी नानाजी वतिलने हेमचन्द को तीनहजार रुपयेनीचे लिखेकेअनुसार दियेथे अर्थात् दोहजार रुपयेना-नचन्दसर्राफ और मेलामहल के द्वारादो रक्कमोंमें से जिनकी जमातीनहजार छः सौउन्नीस रुपयेतेरहआने तीनपाईहैदिये गये और यहरक्कमें रौशिनीकी बचत और उनअशरफियोंकी फरोख़्तसेजो नजराने की तौरपर दी जाती थी और महाराजा गायकवारके हिसाबमें जमाकीजातीथीं प्राप्तहुईथी औरएक हजार रुपये नानाजी वतिलने दियेथे वहकहता है कि जिस याददाश्तमें इनहीरोंको खरीद लिखी गईथी उसको आत्मा-रामसुहर्रिरने लिखाया और करीब देवालीके (९–नवम्बर सन् १८७४ ई०)को दामोदरपंथ उसयाददाश्त कोलेगया इसीस-बबसेहीरे जवाहरखानेके किसीहिसाबमें नहींमालूमहोते हैं आत्माराम मुहर्रिर महाराजा गायकवार के जवाहरखाने का मुहर्रिरऔर नानाजीवतिलकामातहतहैकहताहै किपिछली देवाली से आठदिन पहिले हीरे हेमचन्दसे मोललियेगये थे और व्यंकटेशके पुत्रविनायक रावजीने उनकीएक याददाश्त तय्यारकीथी और जबतक करनैल फियर साहब को विषदेने कीखबर प्रसिद्धहुई तबतक वहयाददाश्त उसीके पासरहीथी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

फिरनानाजी वतिलउसको मेरेपाससे लेगयाउस गवाहनेयह भीकहाहै किमहाराजा गायकवारके जवाहरखानेमें बहुतसे अलग और जड़ेहुयेहीरे मौजूदथे और नवयहहीरेमोललिये गयेथेतबएक तलवारकाकबजा और पेशकब्ज औरएकजाकट परछोटे २ हीरे जो महाराजा गायकवार के जवाहरखाने से लियेगये थे मोललिये जातेथे इसीभांति के हीरे हरसालजियादह मौजूदरहते थे उसनेप्रश्नोत्तर के समयमें यहभीबयान किया कि जबकि नानाजी याददाश्तको लेगया तो उसकेउपरान्त मैंने हेमचन्दसे यह पूछा कि उसके हीरे उसके पास लौट आगयेया नहीं उसनेउत्तर दिया किलौटआये नानाजी वतिलने याददाश्तके लेजानेकेसमय यहकहाथा कि यहहीरे मोलनहीं लियेजावेंगे किन्तु मैंउनको लौटादेना चाहताहूं ॥

दफ़ा ५०—दामोदरपंथने उनहीरोंकीकीमत देनेकेविषयमें जोनानाजीवतिलकेपास सेउसकेपासआयेनीचेलिखेकेअनुसार बयानकियाहै अर्थात् महाराजागायकवारने उनकीकीमतके देनेकी दामोदरपंथको जुबानीआज्ञादी औरउसने नानाजीवतिलको यहहिदायतकी किजो रुपया महाराजागायकवारके निजके हिसाबके विषयमें उसकेपास आताहै उसमेंसे उसरुपयेको देदे कुल उसरुपयेकी संख्याजो निजके हिसाबमेंजमा कियागयाथा तीनहजार छःसौ उन्नीसरुपये तेराआनेतीनपाई बयानकीगईहै दामोदरपंथ वर्णनकरताहै कि उनहीरोंकेबाबत जौहरियोंको कीमतदेनेकीआज्ञा दिसम्बर सन्१८७४ई० की लिखीहुईहै जिसमेंयह लिखाहै कि तीनहजार छःसौतीस रुपये तेरहआने तीनपाई महाराजागायकवार ने सिवाय नारायणके मन्दिर के ब्रह्मभोजके लिये दिये हैं दामोदर पंथ कहता है कि यह बनाबटी आज्ञा थी और जिस प्रयोजन के लिये यह रुपया दरकार था उसके छिपाने केलिये यहआज्ञा दीगईथीइसबातके बाबतकि वास्तवमेंऐसाहीहुवाहोगा कुछ

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

संदेह नहीं होसक्ता क्योंकि रामेश्वर जिसका नाम पूर्व्वोक्त आज्ञा में रुपया पाने वास्ते और दावत के मोहतमिम के तौरपर बयान किया गया है वर्णन करता है कि मेरे पास यह रुपया नहीं आया और दामोदर पन्थ के इस बयान की तसदीककीहै कि पानेवाला सदाआज्ञा पत्रकेसाथ एकरसीदलगादिया करताथा तथाच उसने एकअसल हुक्मकाहवालादियाहै नम्बरी (म) जिसपर उसकी रसीदमौजूदहै और हुक्मनम्बरी (घ)को आज्ञापर कोई रसीद नहींहै परन्तु इस मेंसंदेहहै किआया काग़ज़नम्बरी(घ)का रुपयावास्तवमें उस रकमके बराबरहै जो कागज़नम्बरी (घ)में की गईहै क्योंकि पहिले तो कागज़ नम्बर (द,च,ध) का मजमूआ तीनहजार छःसौ उन्नीस रुपये तेरह आने तीन पाई है और कागज़ नम्बर (घ) का मजमूआ तीनहजार छःसौ तीस रुपये तेरह आने तीन पाई है और दूसरे यह कि कागज़ (घ) ३१ दिसम्बर सन् १८७४ ई० का लिखाहुवा और कागज़ (द) पहिली जनवरी सन् १८७५ई०का लिखाहुवा है परन्तुयह बातसाफ जाहिरहै कि नानाजीवतिल के जैसाकि वहतसलीमकरता है वह रकमें वसूल हुई जो कागज़ (द) (घ) (ध)में लिखा है और यहभी प्रगट है कि कागज़ (घ) के द्वारा दामोदरपन्थ को एकरकम ऐसी मिलती जो खुफिया कामोंमें काम आसक्तीहै वास्तवमें दामोदरपन्थने स्पष्टवर्णन कियाहै कि खुफिया कार्य्योंकेलिये समयर पर बहुतसा रुपया अलग करदिया जाताथा कागज़(क)से लेकर(द)पर्य्यन्त जो २४ नवम्बर सन्१८७४ई० से १३ अक्टूबरसन्१८७४ ई०तक लिखेहुयेहैं साजिशी हुक्महैं जोसालिमे और यशवन्तरावके नाम उसअसबाबकी क़ीमतदेनेकेवास्ते जारीकिये गयेथेजिन का मोल लियाजाना महाराजा गायकवार के लिये बयान कियागयाहै और उनके साजिशीहोने कासबूत दामोदरपन्थ के वचनके अनुसार यहहै कि उन्हीवस्तुओं और सौदागरोंके

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

नामका कुछविस्तार नहींहै जिससे वह मोललियागया नम्बर (क) सेलेकर (द) तकऔर नम्बर(घ)में यह इखतिलाफ है कि पहिले कहेहुये हुक्मोंमेंसे हरएकआज्ञामें पानेवालेकी रसीद है और (घ)में नहीं है इससेयह प्रकट हुवा कि कागज़ (घ) केवलबलिहाज़ मतलबकेहै सार्टिफ़िकेट नहीं है किन्तुवहइस प्रयोजन से बनाया गया है कि जिसमनुष्य को रुपया दिया गया था उसकानाम ज़ाहिरनहो और उससेदामोदर पन्थकेइस बयानकी तसदीकख़याल की जातीहै कि हीरेनवाहिरातके हिसाबमें जमानहींकिये गये क्योंकिमहाराजा गायकवारने यहकहाथा कि वहदवाके लियेहैं और इसमज़मून कीकेवलएकयाददाश्त जवाहरखानेमें तय्यारकीगईथी जिसकेलिये महाराजा गायकवारने उससमय जबकि दामोदरपन्थनेनवीं नवम्बर को करनैलफ़ियर साहबको विषदेने के उद्योगके उपरांत उसकोबुलाया महाराजा गायकवारने यहहिदायतकी थी कि वहनष्टकर दीजावे इसलिये दामोदरपन्थने नानाजी वतिलसे अलगकरने को कहा और उसने उसकोअलग कर दिया और यह रक़म स्वामीनारायण के नामलिख दीगई॥

दफ़ा-५१अब हीरों के विषय में हेमचन्द की गवाही पर नज़रडालनी बाक़ीहै इसगवाह ने नाक़िस तौर से गवाही दीहै और उसकीगवाही परआमतौर से एतिबार नहीं हो सक्ताउसका यह मंशामालूम होताथाकि हीरोंकीख़रीद के हरकिस्मके तअल्लुक़से इन्कार करेवहयह बातमानताहै कि वहहीरेकीदोपुड़ियां विनायकराव(महाराजा गायकवार के नौकरनानाजो वतिलकासाला)के पास-३१-अक्टूबरयापहिलीनवम्बर-सन्-१८७४-ई०को लेगया परन्तु वहकहता है कि वहपुड़ियां मुझकोलौटा दीगईं वह दामोदर पन्थयानानाजीवतिल या विनाकरावके हाथहीरोंके बेचनेसे इन्कार करताहै वहतसलीम करताहै कि ३ दिसम्बर सन्१८७४ई०को मैंने नानाजीवतिलकेपास सेदोहज़ाररुपयेऔर दूसरीतीसरी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जनवरी सन् १८७५ ई० को फिर दो हज़ार रुपये और उसके पाससे पाये परन्तु वह वर्णन करता है कि यह रुपया हुण्डवी के लेन देन की निसबत था हुण्डवियों का लेन देन शिव चन्द खुशहाल चन्द के नामसे जो पूना के कोठीवाल हैं हिसाब किताब में लिखा-जाता है और नानाजी वतिल ने इस कोठी से सात हज़ार रुपये का असबाब मोल लिया था और हेम चन्द की दूकान से इतने रुपये की हुण्डियां लेकर भेजी थीं यह खूब साबित नहीं होता कि ३ दिसम्बर सन् १८७४ ई० को और २-३ जनवरी को जो दो २ हज़ार रुपये दिये गये वह हुण्डियों की लेन देन की बाबत थे किन्तु निश्चय करके यह मालूम होता है कि वह रुपया हकीकात में हीरों के वास्ते दिया गया था जैसा कि नानाजी-वतिल ने कहा है हेमचन्द इस बात को मानता है कि दो हज़ार रुपये जो २-३ जनवरी सन् १८७५ ई० को दिये गये थे वह देहाद मेला को कारकुन के पास से आये थे जैसा कि नानाजी वतिल ने कहा है और रुपये के अदा करने की तारीख़ नानाजी वतिल के इस बयान के अनुसार है यह रुपया उस रकम का एक टुकड़ा जो हुक्म नम्बर (घ) लिखा हुआ पहिली जनवरी सन् १८७५ ई० में दर्ज है और दो हज़ार रुपये ३-दिसम्बर सन् १८७४ ई० को दिये गये उसके विषय में नानाजी वतिल वर्णन करता है कि मैंने यह रुपया हेमचन्द को दिया था परंतु मैंने एक हुण्डी और नकद रुपया एक हज़ार वापिस पाया और बाकी एक हज़ार रुपया उसके पास जमा किया गया और हेम-चन्द तसलीम करता है कि मैंने व्यङ्कटेश के पुत्र विनायक राव और नानाजी वतिल के साले को एक हुण्डी सातसौ पचास रुपये की ८ दिसम्बर सन् १८७४ ई० को करदी थी और उस हुण्डी पर एकसौ पचपन रुपये दस आने बेशी के लिये थे और चौरानवे रुपये छः आने विनायक राव को दिये गये थे जिसका कुल एक हज़ार रुपया हुआ इससे यह बात साफ़ साफ़ प्रगट है कि इस मुआमिले को जिसमें नानाजी वतिल के पास

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

एक हजार रुपये जमा है हीरों की कीमतसे कुछ सम्बन्ध न था या यह कि नानावतिल ने इससे पहिले कि कुछ रुपया हीरों के मोल लेने के लिये उसको दिया गया हो दर्जकर लिया हेमचन्द की किताबों से दामोदर पन्थ के उसबयाकी तसदीक में जो उसने हीरों के मोललिये जानेके विषय में किया है बहुत कममदद मिलती है उनमेंसे केवल एक किताब हमारे रूबरूपेश की गई है उसकिताब में कुछ बनावटकीगई हम इसविचार का कोई हेतु नहीं पातेकिपुलिस को साबित करनेसे कुछ प्रयोजन था इस किताब में ७, और ८, नवम्बर सन् १८७४ ई०—में यहलिखा है कि नानाजीने दामोदरपन्थ केवास्ते छः हजारदो सौ सत्तररुपयेके हीरेमोललिये और हेमचन्दइस बातकोमानता है कियहरकममेरेहीहाथ की लिखीहुई है परन्तुवह वर्णनकरता है कि गजानन्दपुलिसके इन्स्पेक्टर ने जबरदस्तीसे मैनेयह रक़मउसदिन संध्याको जबकिमैंने मिस्टरसूटर साहबके रूबरू पहिले अपना बयान किया (६-फरवरी सन्-१८७५ई०) लिखीथी पूर्वमें हमवर्णन करचुकेहैं किहमको निश्चयनहीं है कि गजानन्दवतिलनेइस भांतिकीजबरदस्ती कीहोक्योंकि यहरक़मभे उसबयान से कुछ प्रतिकूलहै जो हेमचन्द ने मिस्टरसूटर साहबके सन्मुख किया और यहबातभी विचारमें नहीं आतीकि गजानन्द जो अति चतुर और बुद्धिमान है उसनेइस प्रकारकी खिलाफ़ बयानी कीहो परन्तुहम इस मूलपर कियह किताब बदलाई गई है कुछनिश्चयनहीं करनाचाहते हेमचन्द कीगवाही काकेवल एकभाग जिसको इसमुक़द्दमे से बड़ासम्बन्ध है वह यहहैजो महाराजासाहबके महलको हीरोंकेलेजाने और तीनहजार रुपयेके देनेसेसम्बन्धित है॥

दफ़ा ५२—हीरोंके मोललेनेकेविषयमें हमयहनतीजानिकालतेहैंकि हमारेविचारमें इसबातके निश्चयकरनेका उत्तम हेतुहैकिदामोदरपंथनेअक्टूबर औरशुरूनवम्बरसन्१८७४ई०

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

में महाराजा गायकवार की आज्ञा से नानाजी वकील के पाससेहीरे मंगाये और उनकोयशवन्तरावको देदिया और न।नाजीनेउनहीरोंको हेमचन्दसे मोललिया और महाराजासाहबके महलके हिसाबकिताब और हेमचन्द केहिसाब किताबमें इसभांति कीगईजिसकी गईहैजिससेहीरोंकामोल लियाजाना छिपजावे बड़ौदानगर केनिवासी हिन्दुस्तानियों केवासियोंके सहस्रहीरेकी मोहब्बतासीर परनिश्चय करते हैंचाहो प्रगटमें इसप्रकारके निश्चय मानने कोकोई माकूल वजहनहीं मालूमहोती परन्तुअबयह बातगौर करनेको पैदा होतीहै किदामोदर पंथने महाराजा गायकवारके जवाहर खानेसे हीरेक्यों नलियेजहां हमेशाहीरे मौजूद रहतेथेइस प्रश्नका केवलयही उत्तर होसक्ताहैकिनयेहीरोंके मोललिये जानेका छिपाना उससेकिवह एकऐसेजवाहरखाने सेलिये जावेंजिसका रक्षकइस मुआमिले को अपने हिसाब किताब में जाहिर करना अपना फर्ज समझता जियादह तरमुगम खयाल कियागया॥

दफ़ा ५३—दामोदरपंथ उसदिन संध्याकोजबकिमहाराजागायकवार कैदकियेगये (१४जनवरी सन्१८७५ ई०)पकड़ागयाथाऔरदोदिन पर्य्यन्तमहाराजाकेमहलमेंसेनापती केदफ्तरमें कैदरहा और फिर रेजीडन्सीको भेजदिया गया जहांवह सोलहदिन तकअंगरेजी सिपाहियोंकेपहिरेमें और फिरपुलिसके पहिरेमें रहा।वह उससमय महलमें उपस्थित याजबकि महाराजा गायकवारकी गिरिफ्तारीके उपरान्त उसके कागजों केसिरपर मुहरकीजातीथीं वह वर्णनकरता हैकिजबकि मैं अंगरेजी सिपाहियोंके पहिरेसे तंग आगया औरयह विचारभी मेरेमनमें आयाकि मैंकिसीभांतिसे कैद सेछूट नहींसक्ता इसहेतुसे मिस्टररिचीसाहबऐसिस्टण्टरेजीडण्ट के सन्मुख२९औरे३० जनवरीकोइकरार करलियाऔर इसइकरारकी तसदीक सरल्यूइस पीलीसाहब केरूबरू२फर-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

वरीसन् १८७५ ई० कोको गई इसइकरार कावही मजमूनहै जोउसने इसकमीशनके रूबरूबयान किया औरयह इकरार उसनेउस समय कियाथा जब कि सरल्यूइस पीली साहब ने उससे मुआफिकी प्रतिज्ञाकरली॥

दफा ५४—उस के इकरारके उपरान्त उसका वहसंदूक जिसमेंमहाराजा गायकवार के निजके कागज बन्दथे उसके साम्हने खोलागया और कईकागज उसकेभीतरसे पायेगये वहवर्णनकरता है कि यद्यपि अपनी गिरिफ्तारीसे पहिले मुजको सालिमकी जुबानी वह बातें मालूम होजातीथी जो रावजी और २ मनुष्योंके बयानको वह सुना करता था तथापितबतकजबकिमैंने अपना इकरार मिस्टर रिची साहबके रूबरूकिया हरगिज रावजी और नरसूके इकरारोंकाकोई ब्यौरे वारहाल मालुमनहींहुवा हमयहबात नहीं कहसक्ते किइस बयानको ठीक माननाचाहिये परन्तुउसके प्रतिकूल कोईगवाहीपेशनहींकी गई है प्रगट होकि दामोदरपंथकरनैल फियरसाहब के जमानेमें कभी रेजीडन्सी को नहींगया औरवह महाराजा गायकवारके साथ एकहीबेर सरल्यूइस पीली साहब केरेजीडण्ट नियत होने केउपरान्त गयाउसने रावजीको कभीमहलमें नहींदेखा परन्तु वह बयान करताहै किसालिमने महाराजा गायकवारसे मेरे सामने उससमय जबकि करनैलफियर साहबको सितम्बरके महीनेमें फोड़ाथा महाराजा गायकवारसे यहबात कहीकिमैनेरावजी कोउस प्लास्टर मेंजोफोड़े परलगाय जाताहैसंखिये केमिलाने परतय्यार कियाथा और इससे फोड़ेमें जलनपैदा हुई औरकरनैलफियरसाहबने इससबबसे प्लास्टरको अलगकरदियादामोदरपन्थने इसगुफ्तगूका जिक्रकियाहैजोउसकेबचनकेअनुसार महाराजा गायकवारके साथकई दफे ९—नवम्बरसे लेकर उसकीगिरिफ्तारीके जमानेतक हुईथी यदि यहवार्त्ता वास्तवमेंहुई और उनके विषयमें उसका बयान ठीकहै तोउ-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ससेमालूमहोताहै कि महाराजागायकवारको वह खबरमालूमथी जो ९—नवम्बरको करनैलफियरसाहब के विषदियेजाने का उद्योग प्रसिद्धहोगयाथा ९—नवम्बरकी वार्त्तामेंएकऐसी बातहै जिसकोतसदीक खारिजीगवाहीसे होतीहै और उससे इनमुलाकातों के विषय में दामोदरपन्थके बयानकी मदद होती है जबकि महाराजा गायकवार ९—नवम्बर के प्रभात को रेजीडन्सीसे लौट आते थे तो उन्होंने दामोदरपन्थसे कहा कि सालिमआज प्रभातको रावजी के मकान पर इस प्रयोजन के लिये दौड़ा गया कि जो विष की पुड़िया बाकी रहीहों उनकोलेकर अग्निमेंजलादे अकेलेजुग्गाने जोबड़ौदे के सदरबाजारकी छावनीकी सफाईका मोहतमिमथा जहां रावजीरहाकरताथा सालिमको सदरबाजारकीओर नगरसे जाताहुवा९-नवम्बरकेसुबहको और पांचमिनटकेउपरान्तनगर केतरफसे आतेहुये देखा और मुहम्मदअलीबख्स रेजीडण्टी के चपरासीने सालिमसे रेजीडण्टीके मुक़ामपर इससेपहिले किकरनैलफियरसाहब हवाखानेसेलौटआवें कुछवार्त्ताकीऔर जबवह सदरबाजार से डाक्टरसीवर्डसाहबके मकानसे विदा होकर जहांवह करनैलफियरसाहब की चिट्ठीलेकरगयाथा रेजीडण्टीको लौटआताथा तो उसनेमार्गमें सालिमको घहरकीतरफ आतेहुयेदेखा अबअकेलेजुग्गा और मुहम्मदअली बख्शकी इस गवाहीसे चाहो यहबात साफ २ साबित नहीं होती कि सालिम ९—तारीखके प्रभातको रावजीके मकानको गया परन्तु उससे मालूम होताहै कि वह अवश्य गयाहोगा और जो सालिममहाराजा गायकवार के पास इससेपहिले किमहराजासाहबउसदिन भोरकोनियमके अनुसाररेजीडण्ट साहबके मिलनेको आवें वापिस पहुंचगयाहोगा इससबब से वहबात जो महाराजागायकवारने दामोदरपन्थसे बयानकी अर्थात् यह कि सालिम रावजीके मकानको इस प्रयोजन से गयाथा कि जोकुछ चूरह बचाहो उसकोजलादे अवश्यठीक

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मालूमहोताहै और यहबात अतिकठिन समझमेंआतीहै कि जो बयान महाराजागायकवार ने दामोदरपन्थसे किया था उसको अपनेमनसे बनायाहै॥

दफ़ा ५५—दामोदरपन्थ यहभी वर्णनकरता है कि महाराजागायकवारने मेरे साम्हने बराबर यशवन्तराव और सालिमको यहताकीदकी कि वह विषदेनेके विषयका कुछजिक्रनकरें यहमनुष्य इसतहकीक़ातमें मुद्दई या मुद्दाअलेहकी ओरसे गवाहीको तौरपर बुलाये नहीं गयेहैं दामोदरपन्थने उसरीतिकोवर्णनकियाहै जिसकेअनुसार उसके खानगी सरिश्ते में हिसाबरहताथा इसजगहपर केवलइसबातका जिक्र करना काफीहोगाकि सबसेपहिला कागज वहयाददाश्त है जिसमेंरुपयेकेदेनेकेबाबतआज्ञाहै औरजिसपरपानेवालेकीरसीदहै इसयाददाश्तसे हरदिन एकरोज़नामचा और रोजनामचेसेमाहवारीहिसाब और माहवारी हिसाबसेवर्षकाहिसाब तय्यार किया जाता है याददाश्त और रोजनामचा सुगमता पूर्वकनष्ट होसक्ते हैं परन्तु जबकि एक दफ़ा मासिक हिसाब तय्यार होजावे और वार्षिक हिसाबमें संयुक्त करदियाजावे तो किसी खास रक़म के पता मिटाने में बहुत सी दिक़त हो जाती है और यही कारण है जो दामोदरपंथने प्रश्नोत्तर के समय उनसम्पूर्ण कागजों के नष्टन करने के विषय में बयान की जो किसीतरह परउनमुआमिलों से सम्बन्धित हैं जोइस तहक़ीक़ात के सबबसे हुये हैं चार रोज़नामचों में रक़मों के मिटानेका इरादाकिया गयाथा दामोदर पंथ कहता है कि मैंनेबलवन्तराव क्लर्कसे कहाकि जिस जगह पर सालिम का नामलिखाहै वहांरोशनाईडालकरमिटादो बलवन्तराव रक़मों केमिटानेसे इन्कार करताहै यहरक़ में बड़ीबेतमीजी से मिटाईगईं चाहेउनका कुछचिह्न भी बाक़ीन रहा दामोदर पंथबयान करताहै कि मैंनेइन रक़मों को इन मुआमिलों में सालिमका नामछिपाने और महाराजागायकवार कोबचाने

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

के लिये मिटवाया था और यह काम मैंने गायकवार की आज्ञा से कियाथा यह अब तसलीम करता है कि यह बात अति अनुचित थी क्योंकि रोशनाई के दाग़ जल्दी दीखते हैं यह काग़ज़ दामोदर पंथ के उन काग़ज़ों के हिस्से थे जो महाराजा गायकवार की गिरिफ़्तारी के दिन महल में मोहर बन्द किये गये थे और गजानन्द और मिस्टर सूटर साहब की गवाही से मालूम होता है कि जब यह कागज़ दामोदरपन्थ के साम्हने लेगये तो वह उसी दशा में थे जैसे कि वह हमारे रूबरू पेश किये गये अन्त में दामोदरपन्थ वर्णन करता है कि नूरुद्दीन को संखिये के लिये कुछ रुपया नहीं दिया गया क्योंकि उस संखिये के देने के बदले उससे यह प्रतिज्ञा की गई थी कि महाराजा गायकवार के शफ़ाखाने में उसको कुछ काम दिया जावेगा नूरुद्दीन गिरिफ़्तार कियागया है परन्तु उसकी गवाही नहीं लीगई॥

दफ़ा ५६—इस मुक़द्दमे में बाकी गवाही अमीना आया और उन मनुष्यों की है जो उससे सम्बन्ध रखते हैं पहिले आया फ़ियर साहब की मेमसाहिबा के पास नौकर रही और मार्च सन् १८७४ ई० में उनके साथ बम्बई को गई इसके अनन्तर वहां एक महीने बम्बई में रही और बड़ौदा के लौट आने के उपरान्त मिस्टर बोवी साहब की मेमसाहिबा के पास जो उन दिनों में बड़ौदे में रहते थे नौकर होगई वह कहती है कि मैंने तीन दफ़ा महाराजा गायकवार से उनके महल में मुलाक़ात की और वहां संध्या का समय था जबकि पहिली मुलाक़ात उसने रेज़ीडन्सी के चोबदार फ़ैज़ू के साथ उस समय की थी जबकि सन् १८७३ ई० की कमीशन उठने को थी और वह बयान करती है कि मैं फ़ैज़ू के कहने सुनने से गई थी अमीना और फ़ैज़ू को सालिम ने गायकवार के सम्मुख पेश किया जो अकस्मात् उनको मार्ग में मिलगया था गायकवार ने अमीना से पूछा कि आयातू ने मिस्टर फ़ियर साहब की मेमसाहिबा की ज़बानी कमीशन के विषय में कोई ज़िक्र सुना है और उसको यह हिदायत

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कीकि जो कुछमेमसाहिबा ने जिक्रकिया होतो सालिमश्रौर यशवन्तरावके द्वाराउसको इत्तिला भेजदीयद्यपिफ़ैज़ूइसबात से इन्कारकरता है कि उसने अमीना आया को महाराजा गायकवार के पासजानेके लियेतय्यारकिया तथापिवहबयान करताहैकिमैं महाराजा गायकवार के पासउसके साथगया और कारभाई उसवक्त गाड़ीबान था मैंनेवह वार्त्तासुनीजो आया और महाराजागायकवार के बीचमेंहुई गायकवारने आयासे कहा कि वह मिस्टरफ़ियरसाहब की मेमसाहिबा से उनकीसिफारिश करेंक्योंकि बहुतसे मनुष्यरेज़ीडण्टसाहब से उनकी निस्बत अरज़कर रहेथे आया ने उत्तरदियाकि मैं फ़ियरसाहब की मेमसाहिबा से कुछ अरज नहीं कर सक्ती कारभाई कहताहै किमैं अमीनाआया और फ़ैज़ूको इसदफ़े गाड़ीमें सवारकराके महाराजासाहबके महलको ले गया॥

दफ़ा ५७—आया वर्णनकरतीहै कि मैंनेजून सन् १८७३ई० मेंदूसरी मुलाकात महाराजा गायकवार के नौसारीसेलौट-आनेके उपरान्त सालिम और करीमके कहनेसे कीथी उसके साथ करीमगयाथा सालिम मार्गमें उनकेसाथहोलिया और आया औरकरीमको गायकवारकेपासलेगया महाराजा गा-यकवारनेआयासे पूंछा किमिस्टरबोवी साहबकी मेमसाहि-बानेहमारेविवाहके लियेजो नौसारी मेंहुआकुछतुमसे जिक्र कियाहैअमीनानेउत्तरदियाकि मैंनेकुछनहींसुना परन्तुजब मिस्टरफ़ियरसाहबकी मेमसाहिबाइङ्गलिस्तानसेलौटआवेंगी तोआपकेलियेकुछबेहतरी होगीक्योंकि यहमेमसाहिबाऔर कारनैलफ़ियरसाहब आपसे अतिप्रसन्न हैं फिरमहाराजागा-यकवारनेकरीमसे कहाकितुममेरी निस्बतमिस्टर बोवीसाहब से कुछखैरके बचनकहो जबअमीना और करीमविदाहोनेको हुयेतो महाराजागायकवारने सालिमसेकहाकि तुमउनको कुछदेदो तबसालिम ने करीम से कहाकितुम कल यशवन्त रावकेमकान को आना तथाच दूसरे दिन संध्या को करीम

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अमीनाके पासआया और कहा कि मेरे पास दोसौ रुपयेहैं जिसमेंआधेरुपये उसनेदूसरे दिनसुबहको अमीना आयाको देदियेअमीनाने विचारकियाकि यहदूनआमउसीविवाहका है जोनैासरीमेंहुवा जोबयानआयानेमहाराजाकी मुलाकात औरगुफ्तगूआसमन्याकी निस्बतकियाहैउसकी तसदीकवः रीलनेकीहै परन्तु वहबयानकरताहैकि महाराजागायकवार ने अमीनासेपूछाकि हमसेरेजीडण्टसाहब विवाहके करनेसे (जिससेकि महाराजासाहबका प्रयोजनलक्ष्मीबाईकेविवाहसे था) अप्रसन्नतानहीहैंवहवर्णनकरताहैकि मैंदूसरेदिन यशव-न्तरावके मकानकोगयाऔर वहांसालिमनेमुझकोदोसौरुपये नैासारीकेविवाहके पारितोषकेदियेजिसमें आधेमेरेलिये और आधे अमीनाके लियेथे तथाचमैंने सौरुपये अमीनाकोदेदिये इसगवाहने आयाके इसबयानसेकि उसनेअमीनासेमहाराजा साहबके पासजानेकी दरखास्तकीथी इखतिलाफकियाहैऔर वहबयान करताहै कि वह मुझको लेगई इसदफेपर सन्दल नामेगाडीवानथा और उसनेइसबातकोसाबितकियाहैकिवह अमीनाऔर करीमको गाड़ीमें सवारकरकेमहलकोलेगया ॥

दफा५८—आयावर्णन करतीहैकितीसरीमुलकात रमजान मेंहुई और उसकेपतिने मुलकातकी तारीखउसमहीनेकीपन्द्र-हवींया अट्ठारहवींबतलाईहै सन् १८७४ ई० में रमजानबार-हवीं अक्टूबर सन्१८७४ ई० को शुरूहुवाथा इससेअब्दुल्लाके बयानके अनुसार यहमुलाकात सत्ताईसवींया तीसवींअक्टूबर कोहुईहोगी अमीना कहतीहै किसालिमसेरेपास इसमज-मूनका पैगामलायाकि महाराजागायकवार तुमसे मिलना चाहतेहैं तथाचमैं और मेराखिदमतगारलड़का छुट्टूएकगाड़ी में बैठकर जोमेरे पतिनेमंगादीथी महाराजासाहबके पास गई और मार्गमें मैंने सालिम को बुलाया और उसके साथ महाराजागायकवार की डूबरूगई और महाराजा साहब के साथमुझसे नीचेलिखीहुई वार्त्ताहुई ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पहिले महाराजासाहब ने मुझसेपूछा कि क्यामेमसाहबा
ने बच्चेके लिये कुछ जिक्र कियाहै मेमसाहबासे मिस्टरबोवी
साहिबकीमेमसाहिबासे प्रयोजनहै और लड़केसे मुराद उस
लड़केसेथी जोमहाराजासाहबकेयहां उत्पन्नहुवाथा मैंने कहा
मेमसाहबानेकुछनहींकहा और मुझको कुछहालमालूमनहीं
इसकेअनन्तर मैंने महाराजासाहब सेकहाकिजबमेमसाहिबा
आपकेपास लौटआयेंगी तोआपकेलिये कोईबेहतरीकीबात-
होगी मेमसाहिबा और करनैलफियर साहब दोनोंखैरखाह
हैं पस जोसाहब कहैं तुमको उसपर अमलकरना चाहिये और
कुछ भयमानमतहो फिर सालिमने कहा कि कोई जादू भी
काम देसक्ताहै यानहीं मैं सालिमने सबसे पहिलेजादू का
जिक्रकिया अर्थात् सालिमने कहा किजो कोई जादू किया
जावे तो क्यासाहबका मन फिरजावेगा परन्तु उसकाठीकर
मतलब मेरीसमझमें नहींआया फिर मैंनेसालिमसे और महा-
राजासाहबसेभी कहाकि आपसाहबकेलिये कोई जादूनकी-
जियेक्योंकि साहबको उसका कुछ असरनहोगा और इसका
मैंने यहसबबयान किया किसाहब लोगकेवल ईश्वरको मानतेहैं
फिर सालिमने मुझसेकहा कि कोई वस्तु साहबको खिलादी
जावे तोतुम्हारे विचारसे उसका क्या असरहोगा उसकेसुनने
से मुझको अत्यन्त भयहुवा क्योंकि उससेपहिले मैंनेदोमनुष्यों
की जुबानी कुछजिक्र सुनाया फिर मैंने कहा कि महाराजा
साहब अबआपसे बिदाहोतीहूं मैंउससमय महाराजा साहब
को यहां नहींदेखती जो वहपहिले मौजूदहोते तो वहमेरे
बयानकी तसदीक करतेफिर सालिमने मुझसेकहा किजोकुछ
महाराजा साहबकहें तुम उसको कानलगाकर सुनो जोतुम
उनकाकहना करोगी तो तुम्हारीशेष आयुकेलिये तुमकोनि-
र्वाहकाद्वारा खुलजावेगा फिरसालिमनेमुझसे कहाकितुम्हारे
पतिकोभी नौकरी होजावेगीऔर तुमकोआगेनौकरीकरनेकी
कुछ आवश्यकतान रहेगी इसके उत्तरमें सालिमसेमैंने कहा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कि मैं आजतक उपवासनहीं करतीरही हूं मैने अपनाजन्म अंगरेजी नौकरीमें बितायाहै जब मैंमहाराजा साहबसे विदा होनेकोथी तो मैने महाराजासाहब से कहा कि जो कोई मनुष्यऐसे रंजीडण्ट साहबपर जादू करने के लिये कहे तो उसपर आप मेहरबानी न कीजिये क्योंकि जो साहब को कोई दुःखपहुंचेगा तो आप तबाह होजावेंगे तब मुझकोयह खयाल आयाकि महाराजा साहब इसबातपर क्रोधितहोगये क्योंकि उन्होंने सालिमसे कहा कि तुम इसआयाको लेजाओ तथाचमैं और सालिम सीढ़ी परसे उत्तरकर वहां गये जहां गाड़ी ठहरी हुई थी"यह बात स्मर्ण होगी कि लक्ष्मी बाई के सोलवीं अक्टूबर सन् १८७४ ई० को पुत्र उत्पन्न हुवा था जब सालिम दूसरीदफा रेजीडण्टीको आया उसने अमीनासे कहा किमैंनेपचासरुपये तुम्हारेबिस्तरेके नीचेरखदिये हैं तथा च वह रुपये उसने वहांपाये छुट्टूने आयाके इसबयानकी कि वह इसदफे उसकेसाथ महलको गई मददकी है और इसी- तरह दाऊद गाड़ीबान ने भी उसकी तसदीक की है जो मुलाकात की तारीख पिछली दिवाली से दो या चारदिन पहिले बयान करताहै सन् १८७४ ई० की दिवाली ९-नवम्बर सन् १८७४ ई० को हुई थी ॥

दफ़ा ५९—अब्दुल्ला अमीनाकापति वर्णनकरताहै कि सालिम रेजीडण्टीके अहातेमें फैजूकेमकानपर पानीपीनेकोजाया करताथा मुझसेमेरी स्त्रीने पहिली और दूसरी मुलाकात का जिक्रकिया और मैंइसबातको जानताथा कि उसको सौ रुपयेमिलेथे औरअब्दुल्लानेइसगुफ्तगूकामतलबबयानकिया है जो गायकवार और अमीनाकी तीसरी मुलाकातमें हुईथी और जिसकाजिक्र अमीनानेउससे कियाथा अब्दुल्ला यहबात जानताथा कि उसकीस्त्रीको तीसरी मुलाकातके पीछे पचास रुपयेमिलेथे जिनदिनोंमें अमीना बम्बईमें औरवह बड़ौदेमेंथा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

तो एकचिट्ठी अमीनाकेपाससे उसकेपास आईथी और इसमें महाराजागायकवारके नाम एकखतथा॥

दफ़ा ६०—कईचिट्ठियां जो अमीना और अब्दुल्लामें आईं गईं जबकि वह सन् १८७४ ई० में अलग २ शहरोंमें रहतेथे अदालतके रूबरू पेशकीगईं इनसब चिट्ठियोंमें सालिम और यशवन्तराव या उन मुआमिलों का जिक्र है जो बड़ौदे की रियासतसे सम्बन्धितथीं चिट्ठी अक्षर [घ] लिखीहुई २९ मार्च सन् १८७४ ई०में जो अमीनाकी ओरसे अब्दुल्लाके नामलिखी गईहै आयासे पूछागयाहै कि उसकेपास वह कागजपहुंचा वा नहीं जो उसकी पहिली चिट्ठीमें लिपटा था अमीना और अब्दुल्ला और अब्दुल्लरहमान उर्फरहीम साहब जिन्हों ने यह चिट्ठियां अमीना के वास्ते लिखी थीं बयान करते हैं कि यहचिट्ठी महाराजा गायकवार के नाम थी अब्दुल्ला कहता है कि मैंने यह चिट्ठी अमीना को बम्बईमें महा बलेश्वर को जाते लौटादी और इस विषय में संदेह करने का कोई हेतु नहीं है कि अमीनाने इस प्रकारकी चिट्ठी लिखीथी जिसका मतलबअब्दुलरहमानने अपनीयादसे यहवर्णन कियाहै कि इसमेंमहाराजागायकवार से रुपये मांगे और यह लिखा था कि वम्बईके गवर्न्नर साहब के मकानपर एक दावत हुई और वहां अमीना ने कुछ हाल तहकीक किया और अन्तपर यह शब्दथे कि तुम भयमान मतिहो यह चिट्ठी पेश नहीं की गई परन्तु यहबात साफप्रगटहै कि यहचिट्ठी कदाचित् महाराजा साहब को नहीं दीगई प्रगट होकि करनैलफियरसाहबने वह बयानकियाहै कि जबकरनैल साहबमार्च सन् १८७४ ई० में बम्बई में थे तो वहसाहब गवर्न्नरबम्बई के साथ खानाखाने के लियेगये थे॥

दफ़ा६१—हमनिश्चय करतेहैंकि अमीनातीनबेर महाराजा गायकवार की मुलाकात के लियेगई जैसा कि पहिले बयान

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

हुआ और इसप्रकार की वार्त्ता जैसीकि उसने बयान की है इसकी ओर महाराजा साहबकी हुई ॥

दफ़ा ६२—जबमुद्दईकी ओरसेबयान खतमहोचुका तो महाराजागायकवार के वकीलने उनकी ओर से एक लिखा हुवा जवाबदावा पेशकिया नतो महाराजा गायकवार की ओरसे गवाहबुलायेगये और न कमीशनके रूबरूउनसेकोई प्रश्नपूछा गया तथाच उनकेबयानका मुख्यआशय नीचेलिखा है ॥

मुझकोकरनैलफियरसाहबसे कभीस्वतःवैरनथा औरनअबहै यहबात निस्संदेह सचहैकि मुझको और मेरेवज़ीरोंकोयह निश्चयथा किजोरीति करनैलफियरसाहबने इख़्तियारकीथी उस से यहबात असम्भावित थी कि जो प्रबन्धमैंने उसहिदायत के अनुसारजो सन् १८७३ ई० की कमीशन की रिपोर्ट पर जो २५-जूलाई सन् १८७४ ई० के खरीतेके द्वारा मेरे पास भेजी गईथी तजवीज़कियेथे और जिनकेपूरा करने में कोशिश कर रहाथा इनकी खातिरख़्वाह तकमीलहो इस विचारसे और दादा भाई नौरोजी और बालामंगेश वैगल और हुरमुज़जी और शेरोबिदया और काज़ीशहाबुद्दीन और अपनेवज़ीरोंसे बड़ीदेर तकसम्मत करके मैंने २—नवम्बर सन् १८७३ ई०को खरीताकरनैल फियरसाहब के द्वाराश्रीमान् वैसरायकेशरण में भिजवाया और उनकेकहने सुननेपर मुझको निश्चय था कि जब असलहक़ीकत श्रीयुतवैसराय को मालूम होगी तो मेरी धरज़ापर कृपादृष्टि होगीमेरेसम्पूर्ण वज़ीरों को भी यहनिश्चय था और जो सल्तनतमोह गवर्न्नमेएट बम्बई ने रेज़ीडएट साहब कोकीथी उसके जाननेसे हमारा यहनिश्चय दृढ़होगया तथाच २५ नवम्बर सन् १८७४ ई० को करनैल फियर साहब बड़ौदेसे बदलाये गये इस से प्रगट होता है कि हमारी यह राय कुछ गलत नथीपसनतो कोईनिज दैहिकन कोईदेशका सबब ऐसा था जो मुझको इस अपराध के करनेपरतय्यार करता जिसका

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

इलज़ाममेरे ऊपरलगाया गया है और मैं सौगन्द खाकर यह बात वर्णनकरता हूं कि मैंने कभी न तो स्वतः और न किसी अपनेएजण्ट केद्वारा इसप्रकार कीहिदायत की औरमैं बयान करताहूं कि इसविषयमें अमीनाआयाऔररावजी और नरसू और दामोदरपंथकीसम्पूर्ण गवाही बिल्कुल गलत है मैंनेरे-जीडन्सीके किसीनौकर कोरेजीडण्टके जासूसकाकामदेने या जो कुछ रेजीडण्टीमें होताथा उसकी मुजको इत्तिलादेने की कभी हिदायत नहीं की औरन मैंने इनको किसी प्रयोजनके लियेरुपया दियाऔर नरुपया दिलवाया मैं इनदामोंका कुछ जिक्र नहीं करताजोकिसीउत्सवयातेवहारोंमें जैसाकिविवाह आदिमें शायद रेजीडण्टीके नौकरों को दिये गये हों चाहो छोटे२ सुआमिलोंकीजोरेजीडण्टी औरमेरेमहलमेंहोतेहैंदो-नोंतरफोंके मनुष्योंको मालूमहोतेहोंपरन्तु मैंने स्वतःइसप्रयो-जन केलिये इननौकरों सेवार्त्ता नहींकी औरनमैं इसबातको जानताहूं कि इस प्रयोजन केलिये कुछ रुपया दिया गयाहै औरन मैंनेइस प्रकारके प्रबन्धकी आज्ञादी जिस्सेरेजी डन्सी कीखबरें मुझको मिलें॥

दफ़ा ६३—अबहम उससब गवाही काजो इस मुक़द्दमे के समझनेके लिये आवश्यकथी संक्षेपमें वर्णन कर चुके गवाही केवाकी हिस्सोंका जिक्र उस रायमें जो हम आगेको बयान करेंगे कियाजावेगा॥

दफ़ा ६४—हमअपना निश्चय इसबात परबयान करचुकेहैंकि करनैलफियरसाहबके शर्बतमें प्यालेमेंट नवम्बर सन् १८७४ई० कोविषमिलायागया औरहमको इसविषयमें कुछसंदेह नहीं हैकियह विष करनैल फियरसाहबके मारडालने कीइच्छा से मिलायागया हमारीरायमें इसयकीनकेवास्ते किइससेपहिले सितम्बरमहीनेकेअखीरहिस्से और८ नवम्बरकेबीचमेंकरनैलफि-यरसाहबकोविषदेनेका उद्योगकियागया अतिउत्तम प्रमाण

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

है तथाच कोई दफ़ा रावजीने उससमय रेजीडण्ट साहबको विष देनेका उद्योग किया जबकि उसनेतीनदफ़े मिलेहुये चूरोंको मिलाया और जो उसको पूरीखुराक संखियाके देनेमेंभय नहोता तो अवश्यहै कि करनैल फियरसाहब सख्त बीमार होते चाहो उनके प्राण जाते न रहते॥

दफ़ा ९५—हमअपनाइसविषयमेंभीनिश्चयप्रगटकरचुकेहैं कि रावजीने नरसू से मिलकर९—नवम्बरको शर्वतके प्याले मेंविष मिलाया था चाहो नरसू विषके मिलाते वक्त उपस्थित नथा हमखयालकरतेहैंकि रावजी और नरसूकेइनउद्योगोंसे अपने स्वामीको दुखपहुंचानेको कोई अपना प्रयोजनथा किन्तु और मनुष्यों ने उनको बहकाया था और हम विश्वास मानतेहैं कि वहशख्स गायकवारथा जिसनेउनको सिखायाथा तथाच हमारे विचार में रावजी और नरसू और दामोदर पंथकी गवाहीसे इसकासुबूतहोताहै जोमिलेहुयेचूरे रावजीनेपहिले चूरेमिलायेथे उनकाएक हिस्सासंखियाथा और जोचूरा ९—नवम्बरको मिलायागया उसमेंसंखिया और हीरेका चूरहथा॥

दफ़ा ९६—जिस हेतुसे महाराजा गायकवार करनैलफियर साहबको विषदेनेपर तय्यारहुये वहयहथा कि वह रेजीडण्ट साहबसे महाबैर रखतेथे और उनकीबदली चाहतेथे तथाच जो खरीता दादाभाई नौरोजी महाराजागायकवार के वज़ीर ने गायकवार की ओर से श्रीयुत वैस राय वीरेश के नाम १२—नवम्बर सन् १८७४ ई० को लिखा था उससे वह बैरखूब जाहिर होताहै जोगायकवारको करनैलफियर साहबसे था॥

अर्थात् महाराजा गायकवारने लिखा था कि मुजको यह खयाल आया कि जो रीति करनैलफियर साहब रेजीडण्ट ने हमेशासे मेरेलिये इख़्तियारकीहै उससेमें हुजूरको इत्तिलाहूं या नहीं और हुजूर के गौरके लिये यह बात अरज करूं कि इस नाइत्तिफाक़ीकीसूरतमें जोहमारेमध्यमेंहै रेजीडण्टसाहब

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

के हाथसे आगेको वगैरःकिसी साहबके अच्छे सलूककी क्यों करआशाकर सक्ताहूं फिरगायकवारने अपने और अपनेप्रबन्ध के विषयमें रेजीडएट साहबके दिलीबैरका जिक्रकियाहै और वहदोदृष्टान्तइसबातके बयानकिये हैं कि पहिले करनैलफियर साहबके चालचलन के लिये एतिराज कियागया है और यह लिखाहै कि यहदोदृष्टान्त जोमैने बयानकियेहैं उनसेउसपरे-शानी और दुखका हालखूब समझमें नहीं आसक्ताहै जोमुजको हालमें रेजीडएटसाहब के हाथसेपहुंचताहै अंगरेजी गवर्न्न-मेएटकेनायबकी यह रीति मेरे लिये बड़ीचिन्ता और दुखका हेतुहुवाहै विशेषकरइससबबसे कि ऐसेसमयपर बहुतसे लोग औसरपाकर अपनेलाभके प्रयोजनसेमेरी निस्बत गलत खबरें मशहूर करतेहैं और सदा मेरी प्रजाको मुजसे घृणा और आज्ञाके तोड़नेपर तय्यारकरतेहैं इसकायह परिणाम होगा कि इसवर्षकी आमदनी में बड़ी हानि होगी और मेरीप्रजा सदैवचिन्तित और दुखित रहेगी और इस बातका समझना कुछकठिननहींहै कि इनबातोंसे उसप्रबन्धमें बड़ा विघ्न होगा जोमैं करनाचाहताहूं जरूर उसकामकेमूल और अन्दाजेको खूब जानतेहैं जोमुजको करना पड़ताहै सोमैं अपनी ओरसे और जिन मनुष्योंको मैने उस कार्य्यके लिये नियत कियाहै उनकी ओरसेयह विनयकरताहूं कि यदि करनैलफियर सा-हबयहां इसीतौरसे अंगरेजी गवर्न्नमेएटके नायब रहेंगे और मेरे और मेरेअहलकारोंसे इसीभांतिसे ईर्षा और बैरकरेंगे तोमुजको अपनीकोशिशोंके कामयाबीकीकभीआशानहोगी॥

मैं नेकनिय्यती और दियानतदारी के सिवाय और कोई बातकरनैलफियर साहबसे नहीं करताहूं परन्तु उनकी राय और तदबीर एक निराले तौर कीहै और उनकीराय और विचार बाजे मुआमिलोंमें एतिदालकी हदसे बढ़गयेहैं और जोकुछउन्होंने अबतक कहाहै याकियाहै उसकीमददकरना वहअपने जिम्मेजरूरी समझतेहैं॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

दफ़ा ६७—इस चिट्ठीके उत्तरमें श्रीमान् वैसरायवीरेग्यनेउन सबबोंकेनिस्बत जिनपर महाराजागायकवारनेबड़ौदेके रेजीडेण्टकी बदलीचाहीथी बहस करना इंकारकियाथा परन्तुजो मुआमिले जरूर में आयेथे उनपर खूब लिहाज करके और सिवाइसके गवर्न्मेण्टहिन्दकेइसइरादेपर अमल करकेकिमहाराजागायकवारको एकनवीन प्रबन्धकी कामयाबीके साथ करनेके लियेहर प्रकारसे मौका दियाजावेगा हुजूरमम्दूहने महाराजा गायकवारको इसइरादे सेइत्तिलादी किहम सरल्यूइसपेली साहबके-सी-ऐस-आईको करनैलफियर साहबकी जगहपर बड़ौदे में एजण्ट नियतकरनाचाहते हैं॥

दफ़ा६८—जोगवाही इसमुकद्दमेके मिसलमेंसंयुक्त हैंउसका नियादह तरहवालादेना और इसबातका साबित करनानिहायत फजूलहै कि महाराजा गायकवार करनैलफियरसाहब सेमहाशत्रुता रखतेथे यहसचहै कि जबकरनैलफियरसाहबने महाराजागायकवारसे दूसरीनवम्बरके खरीतेका जिक्रकिया तोमहाराजा साहबने यहबयान किया कि मिस्टरदादाभाई नौरोजजीदीवानने उसखरीतेकोलिखाथाऔर यहीदीवानउस काजवाबदेहै यहबातसाफ़जाहिरहै कियहमहाराजगायकवार काबहानाथाऔरमहाराजासाहबको जो यहइजाजत दीगई थी कि वह आपही अपना दीवानचुनलें उसकोयहमन्शाथी (जैसाकि करनैलफियरसाहबने जुबानी महाराजागायकवार से वर्णनकियाथा)कि जोखतकितावत वहगवर्न्मेण्टबम्बई या श्रीमान्वैसरायवीरेग्य के नामसे भेजेंउसके वहआपही नवाबदेहों सिवाइसके महाराजागायकवारने उसलिखेहुयेजवाब में जोउन्होने हमारेसम्मुख पेशकियाहै यहतसलीम कियाहै कि उन्होंने वह खरीताभिजवायाथा महाराजागायकवार के विवाहमेंजो नौसारीमेंहुवाथा करनैलफियरसाहबका संयुक्त नहोनाचाहो वह गवर्न्मेण्टहिन्दकी आज्ञाके अनुसार था महाराजागायकवारको नागवारमालूम हुवाहोगा और जो

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

इससुआमिलेमें महाराजासाहबने आयासे वार्त्ताकीथी उस का मतलब सिवायइसके और कुछनहीं हैःसक्ताकि उनको विवाहकी बड़ीचिन्ताथी और उसमेंकुछ संदेहनहीं कि यह चिन्ता उनकोपुत्रके उत्पन्नहोनेके उपरान्त और भी अधिक होगई होगी ॥

दफ़ा ६९—इसबात को तसीलकरना कठिनहै कि महाराजा साहब करनैलफियर साहब से द्वेषके किसी कारण से अपनेमनमें बैर रखतेथे या निजडीलसे अपने मनमेंवैररखते थे इस तहक़ीक़ात में किसीतरहपर यहबात साबित नहीं हुईहै कि करनैलफियरसाहब ने महाराजागायकवार के विषयमें कोई ज़ातीबदसलूकी ज़ाहिरकी थी सोजहांतक हम को मालूम होसक्ता है करनैलफियरसाहब और महाराजा गायकवारमें द्वेषके प्रबन्धमें मतान्तरके होनेसे वैरपैदाहुआ था परन्तु इसविषय मेंभी कोईबात नहीं होसक्तीहै कि जो ग्लानि महाराजासाहब करनैलफियरसाहबसेरखतेथे उसका द्वेष और अपनेडीलके दोनोंहेतुओंसे बुनियादथी और हम उनकेइसबयानको ठीक नहीं मानसक्ते कि उनको करनैलफियरसाहबसे कोईज़ातीवैर नथा ॥

दफ़ा७०—जिसरीतिसे महाराजागायकवारनेरावजी और नरसू और अमीना आयासेवार्त्ता शुरूकीथी उसकाअन्तको यहनतीजाहुवाकि रेज़ीडराटसाहबको विषदेनेकेलियेसाजिश कीगई और यहबातउसगवाहीसे साबितहुईहै जिसकोहमने संक्षेपमें वर्णनकियाहै पहिले सन् १८७३ई० के अन्तमें और सन् १८७४ई०के प्रारम्भ में महाराजागायकवारका प्रयोजन प्रकटमें केवल इसबातकी इत्तिलाहासिलकरना था जोरेज़ीडराटोमेंबड़ौदेकी रियासत के मुआमिले पेशहोवें महाराजा साहबहरएकबातकोबिल्कुलअपनेआधीनरखतेथेऔरसालिस और यशवन्तराव से एजराटका कामलेतेथे और जो कुछहोताथा उसको अपने प्राईवेटसीक्रेटरी दामोदरपंथ कोभी नहीं

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बतलाते थे महाराजासाहबराव जी और नरस्तू से अलग अ-मीनासेबातें करतेथे जब कि महाराजा गायकवार इसबात से बड़े तंग हुये कि रेजीडण्ट साहबने लक्ष्मीबाई के साथ उनके विवाह को और उसके लड़केके पुत्रहोने को तसलीम करने से इन्कारकरदिया तोउससमय उनकोविषदेनेका खयालआया और उन्होंने वैसाहीकिया महाराजाने रावजी और नरस्तूको तरक्की और पारितोषकका लोभदिया तथाच उनको उसपा-रितोषकका बड़ा भरोसा उनरकमों के सबब से होगया जो उनकोदीगई हालांकि जिस प्रयोजनकेलिये उनको रुपयादिया गयाथावहअबत कजैसाकिवर्णनकियागयाकेवलयहीथा किजो कुछरेजीडण्टीमेंहोताथा उसकीखबरदियाकरें सन् १८७३ ई० के अन्तमें महाराजा गायकवारने रावजीको उसके विवाह के समय पांचसौ रुपये दिये फिर मई या जून सन् १८७४ ई० में तीनसौरुपये महाराजागायकवारके विवाहका पारितोषक कुलआठसौ रुपयेमिले नरस्तूको तीनसौरुपयेनौसारीकेविवाह के इनआमके और दोसौपचास रुपयेबिनाबयान करनेकिसी खासकामके उसकोमिले कुलसाढ़े पांचसौरुपये हुये जो श्री-महाराणी विक्टोरिया और बड़ौदेके रुपयेकी कीमतमें अन्तर है उसको मुजरा देकर भी निस्संदेह यहरकमें उस थोड़े मासिकके लिहाजसे बड़ीथीं जोरावजी और नरस्तूको रेजी-डण्टीसे मिलतीथीं और यहोदया उसडेढ़सौ रुपयेकीहै जो आया को दोदफेमिले अर्थात् पहिले महाराजा गायकवार के विवाहकेसमय और दूसरे उससमय जबकि उसको पचास रुपये अपनी अन्त की मुलाकात के उपरान्त जो अक्टूबर सन्१८७४ ई०में हुईथी मिलेथे औरउनको किसी खास हाल सेकुछ तअल्लुकनथाहमको इसरायकेजाहिरकरनेमें कुछशंका नहींहैकि यह इनआम इननौकरोंकोइसबात परमाइलकरने केलिये दियेगयेथे किजोकुछ महाराजा गायकवार के मुआ-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मिलेरेजीडन्सीमेंहोंउसकीसदाखबरदेतेरहें और यहमामूली पारितोषकनथेजो महाराजासाहब खुशीपररेजीडन्सीकेनौकरोंकोदियाकरतेथेसो जोरुपया इसप्रकारसेदियाजावेतो वह हमारेविचारसेरिशवतहै परन्तुहमयहबातनहीं कहसक्ते कि महाराजागायकवार भी इसकोरिशवत समझतेथे यानहीं॥

दफ़ा ७१—परन्तुयह प्रश्नपूछा जासक्ता है कि महाराजा गायकवार को रावजी और नरसूसेयह आशाहोसक्तीथी कि वहएकऐसी रकमकेबदलेजिसको उसकामसेकुछ सम्बन्धनथा जिसकापूराहोना उनकेजिम्मे ठहराया मारडालें इसकायह उत्तरहोसक्ताहै कि महाराजा गायकवारने उसरुपयेकेद्वारा जोउन्होंने नरसू और रावजीकोदिया और अपनेपास उनके बुलाने और वस्तुओंके देनेसेउनको अपनेबसकर लिया और इसकार्य्यके सिद्धहोनेपर बड़े पारितोषक के देनेकी प्रतिज्ञा कीथीरावजी वर्णनकरता हैकि मुझसे एक लाखरुपया और नरसूसेभी इतनेहीरुपयोंकेदेनेका वाइदा कियागयाथा नरसू कहताहै कि महाराजाने हमारे सम्पूर्ण परिवार सहितनिर्वाहके बन्दोबस्त करनेकाइरादा कियाथा सो उन गरीबआदमियोंके विचारसेजो पहिलेही से महाराजा गायकवारके तअल्लुकमेंथे निस्संदेहयह प्रतिज्ञा एक काफीउपदेश इसबात केलिये मालूम हुवाकिवह इस रीतिसे करनैलफियर साहब कोवधकरेंजिसका असरतुरन्तही नहोजावे और वहपकड़े नजावेंकिन्तु धीरे २ उनकोमारडालें॥

दफ़ा ७२—जो रीति महाराजा गायकवार ने ९ नवम्बर सन् १८७४ ई० कोया उसके पीछे अखतियार कीथी उससे उनकीनिर्दोषता प्रतीतनहीं होतीदामोदरपंथकी गवाहीसे इस बात का निश्चय होता है कि महाराजा गायकवार को चाहीयहबात मालूम थी किविष देनेका उद्योग उस समय कियागयाथा जबकि वह उसदिन दसबजे भोरको करनैलफियर साहब की मुलाकातको लियेगयेथे औरजो उसवक्त भी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उनको इसका हाल मालूम न था तो उसदिन संध्या से पहिले उसको इत्तिला होगई होगी करनैल फियरसाहब और और गवाहोंने यह इज़हार दिया है कि बड़ौदे की छावनी में बिष देनेकी खबर सर्व्वत्र प्रसिद्ध थी॥

शहरछावनीसे एकमीलकी दूरीपर नहीं है सालिमउस दिन रेजीडन्सीमें आया था और रावजीने उससे कहा था कि वह काम होगया यह बात समझमें नहीं आती कि सालिमने जो सदा महाराजा गायकवार के पास उपस्थित रहा करता था अपने स्वामीको इस बातकी खबर नदी हो परन्तु हम देखते हैं कि महाराजा गायकवार ९—नवम्बर सोमबारके उपरान्त पहिलेही दफे अगले वृहस्पतिवार को करनैल फियरसाहब के मुलाकात करनेके लिये गये और उस समय यह बयान किया कि मैने आपको बिष देनेके इरादे की खबर पिछले दिन अर्थात् ११ नवम्बर को सुनी थी और नीचे लिखी ज़ई चिट्ठी १४ नवम्बरको लिखी गई॥

जो मुलाकात परसों मेरी और आपकी ज़ई उसमें मुझको आपकी जुबानी इस बातका विस्तृत वृत्तान्त मालूम ज़वा कि किसी बदमाशने आपको बिषदेनेका उद्योग किया था और मुझ को उसके सुननेसे अतिदुःख ज़वा परन्तु ईश्वर की परिपूर्णकृपा थी कि उस दुष्ट का उद्योग निष्फल ज़वा यदि इस अपराधीके जुर्म्म साबित करानेमें मेरी सहायता की आवश्यक होतो मैं निःसंदेह मदद दूंगा यह चिट्ठी मैने आपकी इत्तिलाके लिये लिखी है॥ लिखा ज़वा १४ नवम्बर सन् १८७४ ई०॥

दफ़ा ७३—अब यह प्रश्न अवश्यकरके पैदा होता है कि जिस दशामें महाराजा गायकवार दूसरी नवम्बर सन् १८७४ ई० को एक खरीता भेजचुके तो फिर वह क्यों विषसे करनैल फियर साहब के मारडालनेका उपाय करते जो यह संकल्प किया जावे कि इस खरीतेसे रेजीडण्टियों के बदलानेका प्रयोजन था तो इस प्रश्नका केवल यही उत्तर होसक्ता है कि खरीता भेजनेकी राय

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मिस्टरदादाभाईनौरोजजीने दीहोगीजिन्होंने उसखरीते को मुरत्तिब कियाथा और विषदेनेके मन्सूबे को नजानते थे यह खयालकिया जासक्ता है किमहाराजागायकवारने इस राय कोशीघ्रही पसन्द करलिया होगा॥

दफ़ा ७४——यदि महाराजागायकवार इस अपराध में संयुक्त होतेतोउनकोयह तरीकाइखतियार करना उचित थाकि वहतुरन्त हीकरनैल फियरसाहबकेपासजाकर अपनी चिन्ताप्रगट करते और वारम्वारमिजाजकी तन्दुरुस्तीपूछते तेऔर उनसेयह आशाथी किवहएक चिट्ठीइस मजमून की करनैलफियर साहबके नामभेजतेकि हमको इसहालसे बड़ा खेदहुवा औरइसबात काबड़ा पश्चात्ताप हुवाकिमुख्यहमारे हीदेशमें एक बदमाशके सबबसे हमारीमेहमान्दारीमें फरक हुवा औरयहबात उचितथी किजोनफरतउनकोकरनैलफिय रसाहब सेथी उसकेसबबसे उनकोइस बातकी दुगनी चिन्ता रहतीकि इसमुआमिलेमें गवर्न्मेण्टअंगरेजीके साथशीघ्रही अपनीसफाई करलेंपरन्तुइसकेबदले महाराजानेआंखेंछुपाई औरबड़ी देरकेपीछे एक बाजाबिता चिट्ठी सरवमुहरके साथ लिखभेजी महाराजासाहबके इसबर्त्ताव के सिवाइसके और कोईसबब विचारमें नहींआसक्ता है किआपही उन्होंने विष देनेके लिये लोगोंको बहकायाथा।हम लाचारीसे महाराजा साहबके इसबयान कोकि उनकोइसमुआमिले कोकुछ खबर नथी निश्चयमानने केयोग्य नहीं खयालकरतेहैं॥

दफ़ा७५--यहराय जोजाहिर कीगईहै किशायददामोदर पंथने करनैलफियर साहबके विषदेने का उपाय किया इस प्रयोजनसेहो किखास उसकेखतमें छपजावें उसकेलियेहमा-रीयह रायहैकि किसीगवाहीसे यह बातसाबितनहीं होती किदामोदरपंथ नेऐसा कामकियाथा जिसको वहमहाराजा गायकवारसे गुप्त रखना चाहताथा अथवा यह कि करनैल फियरसाहब कीहिफाजत याबड़ौदेसे उनकीबदलीके चाहनेमें

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उसका कुछ प्रयोजनथा यह बातभी साबित नहीं हुई कि दामोदरपन्थने अपनेस्वामीकेमालमें चुरालियाहै जोउसनेउस प्रश्नकाउत्तरदियाहै किजोरुपयाखुफिया कामोंकेलियेखासकर केयाउसकेलिये वहमहाराजा गायकवारको क्योंकरठीकर उत्तरदे सक्ताहै वह हमारे बिचारसे काफी मालूम होताहै अर्थात् यहकिरुपयेके पानेवालेकी रसीदहुक्म केसाथ लगी हुईथी हालांकि हुक्मइस रीतिसे लिखागयाथा जिस्से मुख्य मुआमिले कामूललुप्त होजावे केवल कागज़ नम्बर (टी) के मुआमिलेमें उसरीतिपर वर्त्तावनहीं कियागया यदियहभी कल्पनाकीजावे कि दामोदरपन्थने तगल्लुबकियाहै तोभी यह खयालदुरुस्तहै किवहइस बातको पूराइनजानतनता थाकिनिज मुआमिलों कोवह बहैसियत महाराजा गायकवारकासीक्रेटरीअंजाम देताथा उनकीनिस्बत तहक़ीक़ात करनाकरनैलफियर साहब केअखतियारसे बाहरथा॥

दफ़ा ७६——यहरायभी जाहिरकीगईहै कि भाव पूना करनेजो महाराजा गायकवार काशुभखयाल किया जाता हैकरनैलफियरसाहबकोबिषदिलवाने काइसप्रयोजनसेबन्दोबस्तकिया किमहाराजा गायकवार आपत्तिमें फंस जावें या करनैल फियरसाहबकी तब्दीली मुलतवीरहे यहराय उस हालतमें लिहाज़के लायकहोतीकि बिषदेनेकाउद्योगसिर्फ जाहिरीहोता परन्तुयह इरादावास्तवमें इसप्रयोजनसेकिया गयाथाकि वहहरतरह सेसिद्धहोजावे और उसकेमारडालनेवाला नतीजा केवल इसी सबबसे पैदा नहुवा कि करनैल फियरसाहबने ९नवम्बरको सबशर्बत नहीं पिया॥

दफ़ा ७७—यह पसइसमुकद्दमेपर हरएक तरहदृष्टिकरने के उपरान्त कोईकाफी दलीलइसबातकी नहीं पाते कि जो अपराध महाराजा गायकवारपर लगाये गयेहैं उनके लिये हमारी यह रायहै कि महाराजा गायकवार उन के मुर्त्तकिब नहीं वाजिब ठहर सके॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

दफ़ा १८—जोराय हमारी इस मुकद्दमे में है उससे श्रीमान् महाराजा ग्वालियार और श्रीयुत महाराजा जयपुर और राजा सरदिनकरराव की राय प्रतिकूल है जोराय उनकी उन अलग रिपोर्टों में लिखी है जोहर एक कमीशन के मेम्बर ने पेश की है हमने उस पर खूब गौर किया हम निश्चय करते हैं कि गवाहों की प्रकृति के एतबार पर हर एक किस्म की बाजिबी रिआयत करने के पीछे मुकद्दमे के हाल से नीचे लिखे हुये अमर साबित होते हैं॥

पहिले—यह कि उन मनुष्यों ने करनैल फियर साहब के बिगड़ने का उद्योग किया जिनको मल्हरराव गायकवार ने बहकाया॥

दूसरे—यह कि मल्हरराव गायकवार ने अपने एजण्टों के द्वारा और स्वतः भी कई नौकरों से गुप्त वार्त्ता की जो करनैल फियर साहब बड़ौदे के रजीडण्ट के पास नौकर थे या रजीडन्सी से सम्बन्ध रखते थे॥

तीसरे—मल्हरराव गायकवार ने उनमें से कई मनुष्यों को रुपया दिलवाया है॥

चौथे—यह कि इस प्रकार की वार्त्ता करने और रुपये के दिलवाने से उनका पहिले प्रयोजन यह था कि जो कुछ रजीडन्सी में उनके लिये और उनकी रियासत के मुआमिलों के लिये होता हो वह मालूम करें और दूसरे यह कि करनैल फियर साहब को विष देकर दुःख दें॥

बम्बई लिखा हुवा ३१ मार्च सन् १८७५ ई०

दस्तखत—आर० कोच
दस्तखत—आर० जी० मीड़
तथा—पी० एस० मैलवल

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

राय श्रीमान्महाराजा जयाजीरावसेंधिया आलीजाहबहादुर
जी० सी० ऐस० आई० महाराजा मल्हरराव
गायकवार बड़ौदाके मुकद्दमे में॥

मेरेबिचारसे बिषदिये जानेका इरादा साबित नहीं ऊवा जहां तक मुकद्दमे की कैफियत से मेरे ज्ञान और निश्चय तक तहकीकात में आया उनको इस बातका निश्चय नहीं है किमल्हरराव परबिषदियेजानेका जुर्म्मनियतहो॥

मालूमहोताहैकिहीरे और संखिये और तांबेकेमोललेने कापूरासुबूतनहींहैऔरनकोई गायकवारकादस्तखतीकागज पेशऊवाकि जिसमेंइन वस्तुओंके मोललेनेके लियेरुपयेकेदेने काऊक्म पायाजाय केवलइस विषयमेंदामोदरपंथ का बयान हैकिकोई कागज दस्तखती गायकवारका नहीं है किजिससे वहइस मुआमलेमें माखूजकिये जावें॥

उनगवाहोंमेंसेजोइसमुकद्दमेकेतअल्लुकहैं उनमेंकेवल तीन गवाहोंने इसविषयमेंगवाहीदी अर्थात्रावजीऔरनरसूऔर दामोदरपन्थने परन्तु इनलोगोंकी गवाहीमेंभीबऊतबड़ाइख- तिलाफहैवजह इसकी रोयदादमुकद्दमेमें दर्जहैइसलिये यह गवाही निश्चयमानने केयोग्यक्योंकर मानेजासक्ते हैं॥

पेडरूखानसामां औरअब्दुल्ला कीगवाहीऔर अदालतमें सालिमऔर यशवन्तराव औरकांवल्कर गजाबाऔर नूरुद्दीन बोहरा औरहकीमकाअदालतमें नबुलाया जानायहसबबातें अपराधीके मतलब को फाइदेमन्दहैं॥

मैंकभी निश्चय नहीं करसक्ता कि बिषदिये जानेके लिये ऐसी२कारखाइयांबऊतदिनोंतकप्रकटरीतिसेऊईं ऐसेकाम होयाएकशख्सजो बऊत विश्वसितहोंउनसेऊवाकरते हैं नकि बऊत से मनुष्यों का समूह संयुक्त किया जावे जब थोड़ी सं- खियाके एकदफेकेदेनेसे मनुष्यमर सक्तेहैं तोइसका क्या हेतु हैकिबराबर संखियादी गईऔर पीगई इस लियेमैंकोई सबब एकयोग्य मनुष्य अर्थात् सरनरएटवेलन टायनसाहब कीतक़-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

रीरके खण्डनकरनेका नहीं देखता यह बात भी गौर करने के लायक है कि मल्हररावने जरा भी सालिम और यश-यन्तरावको सरल्यूइस पीलीसाहब केहवाले करदेनेमें तामुलनहीं कियाकिन्तु यहबयान कियाकिमैं अपनी सामर्थ्य भरसब तरहकी सहायता दूंगा॥

उसवात्तीके विषयमेंजो नौकरोंसे रातको यादिनको हुई थीगौर करनेकेलायक नहींहै ऐसा आवागमन और तेहारों पर पारितोषक कामांगना हुवा करताहै॥

और यह कारखाई केवल रेजीडण्ट साहबके प्रसन्नकरनेकेलिये जो रईस किया करते हैं और रईसभी इसबातकी इच्छाकरतेहैं कि रेजीडण्ट साहबकी कारखाईसे इत्तिला पायें ऐसीही इत्तिलाकी इच्छा रईस और रेजीडण्ट साहब में हुवा करती है मैं अन्त में लिखता हूं कि खासबातें जांच करने की यह हैं॥

पहिलेविषदियेजाने काउद्योग—दूसरेनौकरोंकीसाजिश-पसजो कुछमेरीराय पूर्व्वोक्त मुआमिलेमेंथीवहपेशकरताहूं॥

दस्तखत—श्रीमान्महाराजा ग्वालियार

मुक़ाम बम्बई—२७ मार्चसन् १८७५ई०॥

राय श्रीमान् महाराजा जयपुर जय-सी-एस-आई॥

मल्हरावगायकवारपरलगेहुये अपराधकी कमीशनके इजलासकेगवाहों की गवाहीपर कामिल गौरकरनेके उपरान्त नीचे लिखी हुई राय पेश करता हूं वहबयान जो अमीना आयाने और रियासत के दूसरे नौकरोंने किया उससे यह साबित हुवा कि आया और दूसरे रियासत के नौकरों को समय २ पर गायकवारकी आज्ञाके अनुसार रुपये दियेगये परन्तु यहइससे पाया नहीं जाताकि यह रुपय उनको एक अनुचित अपराधके साजिशकरने के लियेदियेगये होंजोकुछ रुपयादिया गयावह गायकवारने पारितोषक कीभांतिदिया

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ऐसेइनआमविवाह यात्योहारोंमें दियेजातेहैं उससंगीनअ-
पराधके विषयमें जो गायकवार परहैंरावजी हवालदार का
बयानहै किमैंनेकरनैल फियरसाहब केशर्बतकेगिलासमें गा-
यकवार के बहकाने से विषडाला मुजकोनरसूने इसविषकी
पुड़ियांदींथीनरसू कहताहैकि मुजकोसालिम नेजोगाकवार
कासवारहै यहपुड़िया दीथी मैनेपुड़िया सालिमसे पाई और
रावजी हवालदार कोदेदी और दामोदरपंथ गायकवार का
प्राईवेट सीक्रेटरीबयान करताहैं किमहाराजानेआज्ञादीकि
कुछसंखिया और हीरामंगवादो और सरकारने हिदायतकी
थीकि हीरातोगायकवारकेजासूस यशवन्तकोदी औरसंखिया
सालिमको और सालिम और यशवन्तराव बमूजिबबयानदा-
मोदरपंथके यशवन्तराव और सालिम दामोदरपंथ और नरसू
के दरमियानीथे परन्तु कमीशनके रूबरू यहलोगहाजिर नहीं
कियेगये इसलिये मालूम नहोसका किउन्होंने बम्बईके पुलिस
केसम्मुख उसका इजहार कियाथा यानहीं इसबातके सुबूतके
लिये कि पुड़िया दामोदरपंथ केपास नरसू को पहुंची कोई
गवाही नहीं है केवल दमोदरपन्थ और नरसूका बयानहै
दामोदरपन्थका बयानहीरे और संखियाके विषयमें जिसकी
कोईगवाही नहीं है सचाई कोनहीं पहुंचा॥

वह कहता है कि नानाजीवतिल गायकवार के जवाहर
खानेके दारोगाके द्वारा फतहचन्द हेमचन्दकी दूकानसे यह
हीरे मोल लिये गयेथे हेमचन्दने कमीशन के रूबरू बयान
किया कि मैनेवास्तेमुलाहिजे केहीरेपेश कियेथे मुलाहिजा
करके मुजको लौटा दिये कोई हीरा मोल नहीं लियागया
आत्माराम जवारखाने के एक कारिन्देने कमीशन के सम्मुख
इजहार दियाहै कि वास्तव में हेमचन्द की दूकानसे हीरे
आयेथे परन्तु नापसन्द होकर लौटादियेगये नूरहीन बोह-
रा जिसके लियेयह वर्णन है कि इससे संखिया मोललीगई
थी कमीशनके रूबरू यहभी हाजिरन था और अकबरअली

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

खानबहादुर बम्बईके पुलिसअफ्सरोंने सरजनएटबेलनटायनसाहबके प्रश्नोत्तरके समयजो इनहारात परकियेगयेथे इसबात काइकरारकियाकि बौहराअबतककैदहैइस लियेसाफइससे प्रगटहै किबौहरने बिषके मोललेने केविषयमें सिदाकतनहीं की जोयाददाश्तें दामोदरपन्थ केदफ्तरकी पेशहुईं उनसे तशरीह इसकी पाई नहीं गई किकोई खासरकम अल्मास यासंखिया याकिसी भांतिके विषके मोल लेनेके लिये रुपया दिया गया होउन याददाश्तों में ब्रह्मभोजन यापुण्यके लिये मंजूरीकाहुक्महै और गवाही इसबातकी काफ़ीहै कि वास्तव मेंयह रुपया इन्हींकामों में खर्चकिया गया॥

दामोदरपंथएकशीशीकाजिक्र करतेहैंजिसमेंएकवस्तुपतली विषैलीथीऔरबड़े२ कालेचोवटों औरकालेसापों औरसुम्की घोड़ोंके पेशावसे उसकोहकीमने तय्यार कियाथा औरएकमनुष्यगजावा महाराजासाहबके सालें कांवलकर नौकरकेहाथ दामोदरपंथके मकानपर भिजवादीथी परन्तुनतो हकीमकमीशनकेरूबरू पेशहुवा और न गजावा आयाजो इसबयान की सिदाकतकरता इसलिये यह मालूम नहुवाकि यह लोगक्या बयान करते ऊपरके कहेहुये हेतुओंसे प्रकट है किजो कुछ दामोदरपंथ ने विषमोललिये जानेके बिषयमेंबयान कियावह सिवाय उसके बयानके किसी और मनुष्य का बयान नहीं है इसलिये किसी भांतिसे साबित नहीं होसक्ता॥

बयानहुवा थाकितांबाभी करनैल फियरसाहब केशर्बत में मिलाया गयाथा क्योंकिवह भीएकविषहैपरन्तु इसतांबेका कुछपता नमिलाकि गिलासकेशर्बतमें थायानथा और जबडाक्टर सीवर्डसाहब और डाक्टर ग्रेसाहब नेतलछटके जुज अलग कियेतब भीउससे कुछ साफमालूमनहुवा॥

तीनगवाह–दामोदरपंथ-रावजी-नरसू-जिनकीगवाहीगायकवारके जुर्म संगीनके विषयमेंहै वहभीशरीक जुर्म हैंइन

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कीगवाही कोसिदाकतकिसीप्रतिष्ठित मनुष्यने नहींकीऔर नउनकी गवाही गुमान फासिदऔर गलतीसे बरीहै सिवाय इसके इनमेंसेदो गवाहों ने अपराध क्षमाहोजाने की शर्तसे गवाही दी इसलिये इन हेतुओंसे कोई दरजा इस गवाही कानहीं ठहरासक्ता॥

कोई लिखीहुई गवाही तसलीमकरनेकेलायक दामोदरपन्थकीतरफसे पेश नहींहुई हरचन्द कि वह गायकवारका प्राईवेटसीक्रेटरी था गायकवार और निजकेसम्पूर्ण दफ्तर का अधिकारी था॥

रावजी और नरसू जो अपराध करनेमें संयुक्तहैं उनका बयानहै किमहाराजा से और हमसे जबानी वार्त्ता हुवाकरतीथी और महाराजाने हमसे कहाथा कि तुम करनैलफियर साहबको विषदो मुख्य२ बातोंमें इनदोनों मनुष्यों के बयान परस्परप्रतिकूलहैं जैसे कि रावजीने वर्णन किया किगायकवारने प्रतिज्ञाकीथी कि एक २ लक्षरुपये तुमको देंगे नरसू इसविषय में अपनी अज्ञानता बयान करता है और कहता है कि मुझको कुछमालूम नहीं कि गायकवारने ऐसीप्रतिज्ञा कीथीयानहींऔर एकबड़ाबयानरावजीकापेडरू रद्दकरताहै रावजीनेवर्णनकिया किमहाराजनेविषकीपुड़ियापेडरूआदि कोदीथी हालांकि पेडरू इन्कार करताहै और कहताहैकि यह बयानरावजी का बिल्कुल झूठहै अभीतक यह मालूमनहीं हुवा कि वग़ैरह कौन लोगथे ऊपर लिखे हुये हेतुओं के सिवाय जो अमूसरजरएटबेलनटायन साहबने गवाहोंके इनहारोंके जवाब पर दरयाफ्त कियेहैं और जो अपनी स्पीचमें गवाहीके विषयमें तकरीरकीथी वह सबमेरे विचारमें गौर करनेके लायकहै उचितहै कि उसपर ध्यानकियाजावेऊपर लिखेहुये हेतुओंमें अपनेको कभी निश्चयनहीं दिला सक्ता कि गायकवार किसीतरह इसजुर्ममें माखूजहुये हरचन्द कि करनैलफियरसाहबकी शरबतमें विषमिला और तीनों शरीक

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जुर्मकी गवाहीअर्थात् रावजी—नरसू—और दामोदरपंथ की गवाहीपरस्पर प्रतिकूल है ॥

दस्तखत रामसिंघ बम्बई २७ मार्च
सन् १८७५ ई० ॥

राय श्रीमान् राजासरदिनकरराव के० सी० एस० आई मल्हरराव गायकवार बड़ोदेके मुक़द्दमेमें—स्थानबम्बई लिखाहुवा २६ मार्च सन् १८७५ ई० ॥

विषदिये जानेके विषयके सब मुकद्दमें के देखने और सुनने सेमुझको मालूमहुवा किमहाराजा मल्हररावपरकिसीतरह का अपराध नहीं लगता और कोई सुबूत हीरे और संखिये और तांबेके मोललिये जानेकेविषय में नहीं है ॥

या इन जहरोंकी तय्यारीमें एक रुपयेके खर्चका भी सबूत नहींहै और कोई लेख महाराजा के हाथका याकोई कागज जिनमें इनजहरोंके विषयमें लिखाहो पेशनहीं हुवा हरचन्द उनकाप्राईवेटसीक्रेटरी उनकाशत्रु होगया बहुतसे मनुष्योंमें सेजिनकोइस मुकद्दमेसेसंबन्धथाकेवलतीनगवाहोंअर्थात्राव-जीनरसूदामोदरपंथ नेविषके मोललेनेकेविषयमें गवाही दीहै इनसबकाबयानएकदूसरेके प्रतिकूलहै दामोदरपंथ का बयान हीरे के खरीदने में आत्माराम और हेमचन्द से खण्डन हुवा इसनेवर्णन कियाकिमैंनेपुड़ियाखोल कर हीरा और संखिया नहींदेखाथादामोदरकानाम न रावजीनेलियाथाननरसूने कुछ उसकाजिक्र कियाउसका खुदबयानहै किमैंनेयह बयान इस प्रयोजनसे कियाकिमैं गोरोंके पहिरे मेंसोलह दिन तक कैद रहा और मुझकोबड़ा दुखथाइसलियेमैं चाहताथा किमैंऐसा बयानकरूं कि छूटजाऊं रावजी और करनैलफियरसाहब के बयानमें तारीखोंका इखतिलाफहै जबकिविष गिलासमेंडाला गयाथारावजीकहताहै किमैंने शीशीमहाराजासेपाईथी और

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

दामोदरकहताहैकिमैंनेशीशी सालिमकोदीथी रावजी कहता है कियहपुड़ियाविषकीमैंने अपनीपेटीमेंरखलीथी और दामोदरपंथकेइजहारहैंकिइनपुड़ियोंकेदिलानेकेलिये सालिमरावजी के मकानपर दौड़ागयाथा और रावजीभी उसकेपीछे२गयाथा रावजी यहभी कहताहै कि महाराजा ने यह पुड़ियामुजको और पेड़रू और २ लोगोंकोदीथीं पेडरूने इनपुड़ियोंके पानेसे इन्कार कियाहै यह नहीं मालूम हुवा कि वग़ैरहमें कौन २ मनुष्यथे और वहकितनेथे रावजीबर्णनकरताहै किमहाराजा ने हमदोनोंकोएक २ लाखरुपयेके देनेकी प्रतिज्ञाकीथी परन्तु नरसू कहताहै कि मैंनहीं जानता रावजीके बयानसे मालूमी होताहै कि शीशीविषैलीबस्तुकी ९-नवम्बरकेएकमहीनेपहिले मिलीथी नरसूके बयानसे साबितहै कि कईदिन पहिलेमिल थी-नरसूवर्णन करताहै कि सबलोगोंने फैचूका नामलिखवा दियाथा इसलिये मैंनेभी उसीका नामलिखवादिया॥

तीनगवाह अपने हाकिम के शत्रुहोगये और दो गवाहों कोजुर्मके मुआफीकी प्रतिज्ञाहै इसलिये उनकी गवाही और इजहारात क्योंकर सच्चे समझे जासक्तेहैं॥

पेडरूखानसामांऔरअब्दुल्लाशर्बतबनानेवालेकी गवाहीगायकवारकेमुफीदमतलबहै और सालिमयशवन्तरावऔरकंवल करगजावा नूरुद्दीनबोहरा और हकीमका पेशनकियाजाना गायकवार की बरीयत का हेतुहै-कदाचित् निश्चयनहीं कि बिषदियेजानेकी काररवाई मुद्दततक हुवाकरे॥

एक या दो बिश्वसित मनुष्यों के द्वारा यहकाम होसक्ताहै न कि बहुत मनुष्यों की शिरकतसे जबकि थोड़ासा बिषएक मनुष्यके मारडालनेको काफीहै तो फिर क्योंबराबरबिषदिया जावे और पियाजावे इसलिये इनका और कईवातोंका जिक्र जो सरजन्टबेलनटायन साहब ने किया है वह गौर करने के काबिलहै॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उसबात्तीके विषयमें जोनौकरोंसे रातया दिनको हुईकुछ आश्चर्य्य की बात नहीं है ऐसे २ पारितोषक हर खुशी और विवाहादि उत्सवमें दियेजाते हैं और ऐसा होताहै कि रईस और रेज़ीडण्ट चाहते हैं का एकदूसरेका गुप्तरीतिसे दिलका हालमालूम होतारहे॥

अबमैं इसबातपर अपनी राय पूर्णकरताहूं कि केवल विष दियेजाने और नौकरों से बात्तो करने पर बहुतथो इसलिये मेरीरायमें जोकुछ आयासो लिखा॥

(दस्तखतसरदिनकराव)

जोखरासिला हिन्दकी सलतनतके वजीरने पहिलेके महाराजामल्हराव गायकवार की गद्दीसे उतारेजाने के विषयमें हिंदुस्तान के गवर्न्नर जनरल वोरेश के नाम भेजा है उसका उल्थाभी नीचेलिखा जाता है॥

श्रीमान्लार्डसेलमबरीसाहब बहादुर सलतनत हिन्दकेवजीर का पत्र
हजाकसलन्सीरावट आनरेबलसाहब गवर्न्नर जनरल बहादुरहिन्दुस्तान बइजलाइस कौंसिलकी प्रति
लण्डन दफ्तर हिन्द।
३—जून सन् १८७५ ई०

दफ़ा १—आपकेपत्र और बहुगवाही जोखबकी तहकीकात मेंसरिचर्ड कौचसाहब की कमीशनके रूबरू लीगई औरकमिश्नरोंकी रिपोर्ट और उसकेलिये गवर्न्नमेण्ट हिन्दकारेजोल्यूशन और वहइश्तिहार जिसमेंआपने गायकवारके गद्दीसे उतारेजानेका इश्तिहार दियाहै और आपकीलिखी हुईएक यादद्दाश्त जिसमेंआपने बडौदे की रियासतके हालकीतारीख काजिक्र किया है यह सब कागज मेरे पास पहुंचे और मैंने कौन्सिलके इजलासमें उनपर गौरकिया॥

दफ़ा २—मैंआपको इत्तिलादेताहूं कि श्रीमती महारानी केगवर्न्नमेण्ट ने उसरीति को पसन्द फरमायाहै कि जो आपने

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पहिलेही मल्हारराव गायकवार की गद्दीसे उतारे जानेका हुक्म देनेमें अखतियार किया है ॥

दफ़ा ३—जिसकमीशनने सररिचर्डमीड साहबके नीचे इजलासकियाथा उसने यह रिपोर्टकी थी कि इस रियासत की अप्रबन्धता जिससे गवर्न्नमेण्टको चिन्ताथी उसदरजेतक पहुंच गईहै किउसके दुरुस्ती को बहुत जरूरत है कमीशन ने यह राय भी जो लिखी थी कि इसरईस और उसके सम्मतियों से इसलाहऔर अच्छे बन्दोबस्त के किसी मवस्सरतदबीरकीआशा रखनी बेफ़ाइदा है और यहबातें केवल अंगरेजी गवर्न्नमेण्टके दखलकरने और हिमायत सेजारी होसकीहैं इसलिये पूर्व्वोक्त कमीशननेएकऐसे मदारुलमहामकी तकर्रुरकी सिफ़ारिशकी जिसको जरूरी अधिकारसौंपेजावें और जोगवर्न्नमेण्ट हिन्दी की रजामन्दीके सिवाय अलग न होसके ॥

दफ़ा ४—आपकी यहराय हुईकि यह सिफ़ारिश कमीशन कीस्वीकार नकीजावे क्योंकि आपकी रायमें एक स्वाधीनवजीरनियत करके एक अन्याईराजाको हकूमतसे माजूलकरने का उपाय उसदशामेंकि राजाभी नाममात्रको गद्दीपर बैठार हैऔरसूरतोंमें ऐसे कामयाबनहुयेथे औजिसपर फिरबर्त्तावकरनाउचित ठहरता इससे आपनेयह उपायबहुत अच्छासोचाकि खासमल्हाराव के जिम्मेअपने देशकेदुरुस्ती करनेकाफ़र्ज ठहरायाजावे ॥

दफ़ा ५—२५—जूलाई सन१८७४ ई०के एकखरीतेमें आपनेगायकवारको उसजिम्मेदारी कोआगाहकरदिया थाजो उनकी अप्रबन्धताके सबबसे गवर्न्नमेण्ट अंगरेजीपर लाजिम आतीथी आपपरगायकवारकी रियासतकोबग़ावत सेमहफूजफर्जहैसो इस लिहाजसे उनकी प्रजाको अप्रबन्धतासेभी महफूजरखना आपका एकफर्ज अजीमथा जिनशब्दोंमें आपनेगायकवारको इसनतीजेसे मुत्तलाकिया उनसेवह अस्लखूब जाहिर होते

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

हैं जिनके अनुसार उन तहकीकात का वर्त्तावहोना चाहिये जो आपको आधीनी रियासतोंके साथहैं आपने लिखाथाकि आपने यहठीकलिखा हैकि गवर्न्नमेण्ट अँगरेज़ी हिन्दुस्तानमें निस्संदेह सबसेबड़ी गवर्न्नमेण्ट है और हिंदुस्तानीरियासतों की बक़ावेहतरी उसकी मुरव्वियाना इनायत और हिमायत पर मौक़ूफ है तथाच बड़ौदे की रियासत उनदोनों बातों के लिहाजसे कि वह जुगराफिये के रूसे ऐसी जगह पर है कि अंगरेज़ी राज उससे मिलाहुवा है और वहां एक अंगरेजी फौजरियासत की रक्षा और उसके अधिपतिके पक्ष और उसकी उचित आज्ञाके प्रचार के लिये रहती है खासकर यही कैफियतहै ॥

मेरेमित्र मैं इनबातपर राज़ी नहीं होसक्ता कि जो मनुष्य कोई बेजा काम करताहो उसकी हिमायतलिये सेनातैनात करूं जिस सलतनत को अंगरेज़ी गवर्न्नमेण्ट सहायक हो उसकीतरफ से कोई बदअमली हैतो वह ऐसी बदअमली है जिसकी जवाबदिही में कुछ गवर्न्नमेण्ट अंगरेजी भी संयुक्त होती है इसने इस बातकी निगरानी करनेका गवर्न्नमेण्ट अंगरेजी को हकही हासिल नहीं है किन्तु उसीका खास फर्जहै कि जिस रियासत की यह दशा हो उसके प्रबन्ध की दुरुस्ती की जावे और सब खराबियों को रोका जाये ॥

दफ़ा ६-फिर आपने महाराजा गायकवारको उसविषयसे मुत्तिलाकिया किइन अमलों के लिहाजसे आपको क्याअमल दरामद करनाउचितहै आपने यह इच्छा प्रकटकी कि उनको अपनीरियासतकी दुरुस्तीकाअच्छामौका दियाजावेगा और जोवह उससे लाभ न उठावेंगे तो आपनेउनको उसके जरूरी नतीजों से भी आगाह कर दिया अर्थात् आपने महाराजा साहबको यह लिखाथा कि जो बड़ी२ खराबियां आपके प्रबन्ध में हुई हैं उनकी दुरुस्ती के लिये मैं आपको जिम्मेदार सम

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कताहूं आपको अधिकार है कि जिसमनुष्य को आप चाहें अपना कारकुन नियत करेंगे पर यह बातखूब प्रगटहो कि-जो नसीहतमें अबआपको करताहूं और बड़ौदे कारेजीडण्ट जिसपर मुझको अटल विश्वासहै मेरे हिदायत से आपको सम्मतदेगा जो उसपर आपन चलेंगे और इसी हेतुसे बड़ौदे के प्रबन्धमें कुछ दुरुस्ती नहोगी तो सिवाय इसके और कोई बन्दोबस्त नहोगाकिआप अपनेअधिकारसे पृथक् कियेजावेंगे और कोई उपाय जोमेरे विचार से बड़ौदे के मनो भलषित प्रबन्धकेलिये आवश्यक होगा और जिसबड़ौदे को रियासत मेंकुछ दस्तअन्दाजीनहो किया जावेगा ॥

सो आपने इसकेविना कि इसवर्ष के अन्ततक महाराजा गायकवार के निज अधिकार पररहने देने का जिम्माकरें वह तारीख एक हद्दइस बातके मुकर्रर की कि उससे आगे आप महाराजासाहबके साथ रियायत न करेंगे ॥

दफ़ा ७—परन्तु यह इम्तिहान उतने समयतक होने न पाया केवल थोड़े महीने तक करनैलफियर साहबके आधीन जारीरहा और अगरचे ओहदेदार के लेख और आपक हिदायतों पर न चलने से आपको उसका बदलदेना उचित हुवा तथापि उसके चालचलनसे कोई ऐसीबात नथी जो गायकवारको अपनीरियासत के प्रबन्धमेंदुरुस्ती करनेकी बाधक होतीइस मर्मपरकि वहमनसे इसबातको चाहतेपरन्तु महाराजासाहबके कामोंसे उस प्रकारकी खाहिश जाहिर नहीं होतीथी उसवक्ततक जबकिकरनैलफियर साहबके बिषदेनेसे महाराजा गायकवार कीजाहिरीकी शराकतने आपकोउनके साजूनकरने परलाचार करदिया रियासतकी दुरुस्तीमें कुछ भी उन्नितनहींहुईथी किन्तु बरखिलाफ इसकेजैसाकि आपनेपत्र लिखेहुये २८ अप्रैल सन् १८७४ई० में बयानकिया है इसीजमाने में महाराजा गायकवारने अपनेभाई खाण्डेरावकी सीसेऐसी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सख्त बदसलूकी कि उसके सबबसे उसके हिलाकतका अन्देशा था और एक ऐसा विवाह किया जिससे रियासत के सरदारों और उनमें और वैर अधिक होगया और पूर्व्ववत् इसी प्रकार की फजूल खरची करते रहे जिसके सबबसे उधर तो काश्तकार निरास होगये और इधर इसके इससबबसे कि हिंदुस्तानी सिपाहियोंकी जरूरी मासिक के देनेका कुछ बंदोबस्त नथा सल्तनतमें बड़ी अबतरी के होनेका संदेह था प्रसइन बातोंसे मल्हरराव की जाती नालायक़ीमें किसीप्रकारकी तब्दीली साबित नहीं होतीथी उनके अहदकी तवारीखमें जहरखूरानी के इल्जाममें उनके गिरिफ्तार होने और उनके अहदके पूर्ण होनेसे पहिले उसवजीरका किसी सबबके बिना मुअत्तफी होनाथा जिसने रियासतके प्रबन्धकी इसलाह करनी शुरूकरी थी और शेसर रिचर्ड मीड साहब कीरिपोर्ट परनियत हुवाथा॥

दफ़ा ८—यदियह बातफर्जकी जावेकि मल्हररावके जिम्मे विषदेनेका इल्जाम ठहराताही नहींतो अबइस बातका तहकीककरना कुछ अवश्यनहीं है कि उनकीनालायक़ीकी इन अलामतोंके मूलपर अमल करना करीन मसलेहत था या वर्ष के पूर्ण होने तक फैसलेका मुल्तवी करना उचितथा केवल इस बातकावर्णन करनाकाफी है कि जो तरीका इखतियार किया जातावह केवलवड़ौदे के रहने वालों के भलाईके लिहाजसे होताजो बरअंगेखती और खतरहलोगों केदिलोंमें इकबारगी किसीतदबीर मुमलिकत बदल जानेसे पैदाहोताहै यद्यपि उससे दरगुजरकरना उसकेबनिस्बतमुनासिबहोताकि मैआदके पूर्णहोनेसे रियासतमें वहइसलाहकीजावे जो बहुतसे आपत्ति के मारेसमूहों कीदशाके लिहाजसे मुनासिबथी परन्तु रियासतके अधिपतिके चालचलनमें कोईबात ऐसी नथीजो उसप्रकार की रियायतके मुस्तहक होतीया आपके गवर्न्मेण्टकी उत्तमप्रबन्धकी मौहूम आशामें अधिकतर ठहरना लाजिमआता॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

दफ़ा ९—जोसंगीन अपराधमल्हरराव के जिम्मेविष दियेजा-नेका नियत किया गया और जिसकी मिस्टर सूटर साहब ने तहक़ीक़ात की थी उसके मुक़ाबिले में उसप्रकारका ताम्मुल निस्संदेह महज़नाचीज था श्रीमान् महाराणी विक्टोरियाकी गवर्न्मेण्ट आप की इसराय से बिल्कुल अनुकूल है कि आप इस इलजाम से हरगिज चश्मपोशी नहीं कर सक्तेथे एकऐसे राजाके साथ जिसके जिम्मे ऐसा हैबतनाक इल्जामहो और वह उन मनुष्यों ने लगाया हो जो अपनेतई उसका कारिन्दा बयान करतेथे सिलवत् सम्बन्ध और जाहिरा इख़तलात जारी रखना बड़ी रुसवाई की बातहोती और सरकारके उनलायक लाजिमोंके हकमेंजोवक्तथा कठिन और भयकी हालतमें अति सूक्ष्मदेशीयकार्य्यको अंजाम देतेहैं सम्पूर्ण संसार में उसबात का प्रकट करना कि आपके प्राणको बहुत सस्ता समझते हैं न्यायसे दूरहोता॥

दफ़ा १०—आपइसबातका तसफिया करतेहैं कि किसरीति से इस अपराधकी तहक़ीक़ात करनीचाहियेकई अमूरअहमके लिहाजसे अमल कियाथा अर्थात् आपने सबलोगोंपर यहबात जाहिर करना चाहतेथे कि जिसगवाहीपर आपने काररवाई की थी वहकाफी थी और इसीसबबसे आपने यह तजवीजकी कि वहकाररवाई भी आमतौरसेहो आपकी यहभी इच्छाथी जैसाकि आपने महाराजासेंधियाको लिखाथा कि इसकमी-शनकीतरतीब उसतौरपर होनीचाहिये जिसपरसंपूर्ण हिन्दु-स्तानके रहनेवालोंको निश्चयहो पस इसबिचारसे आपने यह इरादाकिया कि आधो कमीशनमें हिन्दुस्तानीहों और इनमें से एकमेम्बर मिस्ल मल्हरराव के कौम मरहटाकाराजा और एकअतिप्रतिष्ठित प्रबन्धकमरहटाकी जातिकाहो यहतदबीर आपने श्री महाराणी विक्टोरिया की रिआयाहिन्द की उस दिलीफिकर के सबबसे की थी जो सदासे आपके प्रबन्ध से पाई

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जातीहै और जिसकी निस्बत हुजूर मदूहा की गवर्नमेण्ट ने हमेशा अपनी बड़ी रजामन्दी जाहिर की है॥

दफ़ा११-पर इसबातमें कलाम होसक्ताहैकि इसप्रकारका कारवाई कानतीजाहर एकतरहपर आपकीआशाके अनुकूल हुवायानहीं निस्संदेह उससेभी बड़ी २ कबाहतें पैदाहुई हैं जिससेकाफीदलील इसबातकी पैदाहोसक्तीहै नाईश्वर नचाहे आगेकोइसीप्रकारका मौका पैदाहोतोइसप्रकारके उपायका अमलमेंलाना अनुचितहोगा राजे और सरदार अपनेकानूनी तालीमके सबबसे एक नाजुक कानूनी तहक़ीक़ातके करने के योग्यनहीं होते और हिन्दुस्तानके उनसरदारोंको जो अंगरेजी कानूनी अदालतके दस्तूरों और एकअंगरेजी वकीलकी लियाकत से नावाकिफहोते हैं इसप्रकारके नयेकामोंकेकरने में खासकिस्मकी दिक्कतपेश आईहै इसकेसिवा इसमुकद्दमेके हालातके अवलोकनसे यहबात साबितहोतीहै कि एकमुल्क के अधिपतिके अपराधका उसीकेदेशकेभीतरअदालतकीरीति के अनुसार तहक़ीक़ात करना कमसुनासिब होताहै क्योंकि कारवाई अदालतके मुश्तहरहोनेसे और जो पाबन्दी मुल्की मसलहत के लिहाज से उसकी निस्बत करारदेते इब्तिदामें लाजिम होतीहै उनसे उसकी बड़ी जिल्लत होतीहै जो उस की रिआया और और राजाओंमें दृष्टिमें सिर्फजुर्मके साबित होनेके उपरान्त नायज न होसक्तीहै और इसीसबबसे वहलोग उसके दरदशरीक होजाते हैं और यहहमदर्दी आसानी के साथ जोउसके हक्कमें बमंजिले तरफदारीके होजातीहै इसके उपरान्त जोकायदे कारवाईके अंगरेजी कानूनकी रूसेजारी कियेगयेहैं उनका अमलदरामद उनमुकद्दमोंमें मुनासिबनहीं होता जहां गवाहोंके साथ उनके पहिले इजहार और आम अदालतमें उनकेपेश होने के दरमियान सुगमता से साजिश होसक्ती है और जहांइस किस्मकेअमलके वास्तेबक़्तसे जरि-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

येमौजूदहैं और उनकेअमलमें लानेकेवास्ते भीवहुत सेलोभ दलानेवाली चीजेंहोतीहैं पसऐसी हालतोंमेंहमेशा इसबात काअंदेशा होगाकिजो गवाहीमुकद्दमे कीतहकीकात केवख् पेशहोगी वह बमुकाबिले उसगवाहीके काफी मालूम होगी जोतजवीज इस अमूकेकिफलां अम्रकी तहकीकात रीति के अनुसारकी जावेहासिल हुईथी॥

दफ़ा १२-यहमुखालिफ दिक्कतेंइस प्रकारकीथीं जिनके होने काअन्दाजा आपपहिलेसे नहींकरसके येपरन्तु तहकीकात केप्रारम्भहोने केउपरान्त वहदिक्कतें मालूमहुईं और २ अधिक होती गईं पसजो दिक्कतें हिंदुस्तानी कमिश्नरों को पेश आईं उनकीवजह इससेसाफ मालूम होती हैं और यहभी मालूम होताहै किउन्होंने अपनेजियादह तजुर्बेकार रफीकोंके साफ२ फैसलेसे इत्तिफाक करनेमें किसीसबबसे तामुलकिया॥

दफ़ा१३-जिनवजूहातपर हिन्दुस्तानी कमिश्नरों ने अपना फैसला कियाहै उनकी तशरीह कुछही क्योंनकीजावे परन्तु श्रीमती महाराणी विक्टोरियाकी गवर्न्नमेण्ट की रायमें यह बातनहीं होसक्तीकि उसफैसलेकी ओरसे बेपरवाई की जावे तथाच जोहिदायतें मैंनेतारबर्क़ीके द्वारा आपकेनिकट भेजीं थी उनमेंभी रायजाहिरकीगईथी यदि हिन्दुस्तानीकमिश्नरों के नियतकरनेसे हिन्दुस्तानियोंको इसबात का निश्चयकराना मुतसव्विर नहोताकि इस अदालतमें अवश्य करकेन्याय और इन्साफ़होगा तो हिंदुस्तानियोंका नियतकरना बिल्कुल वृथा होता और यह भरोसाभी केवलधोकाही धोकाहोता अगर नतीजेके करारदेनेमें हिंदुस्तानी कमिश्नरोंकीरायपरकुछलि-हाजकिया जातासिवा इसकेएक ऐसे मुकद्दमेमें जिसकादा-रोमदार बिल्कुलतीन गवाहोंके एतबारपरथा इसबातपरलि-हाजकरना अतिआवश्यक याकि इजहार केवल उन गवाहों केक्याढंगथे पसजिनमनुष्योंने अपनी आंखसे इस मुकद्दमे के

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

हालातको देखाहोगा उनकीरायको तरमीमके वास्ते किसी ऐसेहाकिमके रूबरूपेश करनाजिसको उसीप्रकारका मौका हासिल नहो (चाहेवहहाकिम कैसाहीबड़ा क्योंनहो) मुनासिबनहोता यहबात सचहैकि आपनेउनहुक्मोंमें जिनकीरूसे यह कमीशन मुकर्ररकीथी उसकी काररवाईने कुछकानूनी तहक़ीक़ात बयान नहीं कियाथा किन्तु सिर्फ तहक़ीक़ात बयानकियाथा परन्तु श्रीमतीमहाराणी विक्टोरियाकीगवर्न्नमेण्टको रायमें इससे कुछउनबातोंकी खूबीजायलनहीं होती जोमैने पहिले बयान की है॥

दफ़ा१४-यदि कमीशनकेविचारमें मल्हरराव उसबड़ेजुर्म्म के मुर्त्तकिब होते जो उनसे मन्सूबकिया गयाथातो जो दण्ड किसीगरीब मनुष्यकेलिये मुनासिबख़याल कियाजाताउसको उससे कमदण्डदेने की कोईवजह नहोती किन्तु जोपदउनको प्राप्तथाउसकेसबबसे उनकागुनाह और संगीन होजातापरन्तु नतो उनके जिम्मे जुर्म्मसाबित हुवा और नवहबरी किये गये यद्यपि कमीशनकी रायउनके खिलाफ परमाइलथी तथापिवह राय कितई नथी क्योंकिछः मेम्बरों मेंसेतीन मेम्बरोंकी रायतो प्रेज़ीडण्टके समेत यहथीकि जुर्म्मसाबित है और एककीराय बरीयतकीथी पसइनसूरतों में जोयहलिहाज़किया जावे कि तीनकमिश्नर जिन्होने मल्हररावको मुजरिमनहींकरारदिया था उनकी जातिके मनुष्यथे और वह कमीशन में इस लिये संयुक्त कियेथे किहिंदुस्तानके लोगोंको उसपर निश्चय होतो हुजूरमलका मवज्जमाकी गवर्न्नमेण्टकी यहराय है किमल्हरराव की निस्बत इसतरह सलूक नहीं किया जासक्ता कि मानो जहरखुरानी का अपराध उनको जिम्मे साबित होगया तथाचजो इश्तिहार आपने श्री महारानी विक्टोरिया की हिदायत से जारी किया था उसमें वह मुजरिम नहीं फर्ज़ किये गये थे और वह उस दण्डसे बचा दियेगये थे जो

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अवश्य करके उस जुर्म के साबित होने पर दिया जाता ॥

दफ़ा १५—परन्तु इससे खाहनख्वाह यह लाजिम नहीं आता कि वह फिर गद्दी पर बैठाये जावें तहकीकात के नतीजे की निसबत सब से बढ़कर यह बात कही जासक्ती है कि मल्हरराव के जुर्म की निस्बत जो कमीशन ने कितई रायन हीं दी इस सबबसे वह सजा से बचगये उन्होंने इस तरहपर कारवाई कीथी कीतीन बड़े तजुर्बेकार अंगरेजने उनको जहर खूरानी का मुजरिम ठहराया और उनके दो सजातियोंने अपनी राय जाहिर करते वक्त उनको निर्दोष ठहरानेसे इजतिनाब किया चाहे इस फैसलेसे कुछही नतीजा पैदाक्यों नहो परन्तु वह किसीतरह परएक बड़े रुतबेके वास्ते उनकी काबालियत की हरगिज एकदलीलनहीं समझा सक्ता अगर सिर्फ इसी नतीजे पर लिहाज किया जाताती भी बड़ौदे के रहनेवालों परहुक्म रानी करने के वास्ते फिर उनको बहाल करने में बड़ी दिक्कतें आगे आती ॥

दफ़ा १६—परसिवाय इसके और वजूहात भी जो फी नफस काफी वाफीथीं उनके दुबारह नवहाल करनेके वास्ते मौजूदथीं अर्थात् जो जमाना सररिचर्ड मीडसाहब की तहकीकात के उपरान्त गुजराथा उसमें किसी प्रकारकी तखफीफ उनबुराइयों में नहीं मालूम हुई जो रियासत बड़ौदा की बदेप्रबन्ध के सबबथीं मल्हरराव के गिरिफ्तार होनेसे पहिले उनवजीरोंने अपने ओहदोंसे इस्तैफा दे दियाजिन्होंने इन्तिजाम की दुरुस्ती शुरूकीथी और सरल्यूइस पीलीसाहबने आपसे बड़े दिलसे यह सिपारिश की थीकि गायकवार की रियासत को आफतों से महफूज रखने कीगर्ज से उसके सरदार को गद्दी से उतारना चाहिये इससे कई सप्ताह के उपरान्त ऐसे अपराधों केहोनेका सबूत हासिल हुवा कि अगर वह इससे पहिले दरयाफत होजातेतो इसजालिम अहदका बहुतजल्द खातिमा होजाता सररिचर्डकौच साहबकी कमीशनकी कारवाईके शुरूहोने

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

केउपरान्त सरल्यूइसफीली साहबकेरूबरू भावसेंधियाकाविष देकर माराजाना और उससेभी अधिकएक और हैबतनाक कतलतर्थात् गोविन्दनायक का बड़ेअजाबसे हिलाक होना साबित होगयाथा यह दोनों जुर्म उन मनुष्यों ने कियेथे जो मल्हररावके आधीन अधिकारीथे और पिछलेजुर्मकी निसबत तोसाफयह पतालगगया किवह मल्हररावकी आज्ञासे हुवा थाअगर वहजुर्म उसवक्त साबित होजाते जबकि वह गद्दीपर बैठेहुयेथे तोजिस हुकूमत से ऐसेबड़े कामकिये जावेंउसके खत्म करनेमें गवर्न्नमेण्ट अंगरेजी बहुत अरसे तक ठहर नहीं सक्ती थी॥

दफ़ा १७-पस इन वजूहात पर अगर मल्हरराव के जिम्मे करनैल फ़ियरसाहब को जहरदेने का इलजामभी न होता तौभी उनकागद्दीसे उतारना उचितथाग वर्न्नमेण्ट अंगरेजीको मल्हररावके सरदारों और रिआयाको अपने हकूकके हासिल करनेके इखतियारसे महरूम करदिया था यहबात वाजिब न होती कि वह फिर उनको एक ऐसे राजा की हकूमत के कुबूल करनेपर मजबूर करे जिसकी लाइलाज बुराइयांतजु-र्बेसे बखूबी साबित होगईथीं पसआपको यह हिदायतकी गई कि आप अपने जाबितेके इश्तिहारमें मल्हररावके गद्दीसे उ-तारे जानेकी भी आम वजूहात बयानकरें इस अंदेशेसे कि शायद कोई यह खयालकरे कि एक रेजीडण्टको जहरदेनेके जुर्ममें सिर्फ गद्दीसे उतारे जानेकी सजादीगई और कमी-शनके हिन्दुस्तानी मेम्बरों की भी रायके लिहाज से यह अम्र मुनासिबनथा कि आप अपने वजूहातमें उन अमूरको दाखिल करेंजो तहकीकातसे पैदाहोंउस किस्मकी काररवाई गोया एक फजूलवजह एक जरूरीकी होती और उसके सबबसे इस अस्लमें खललवाकैहोता कि सखबदनजमीहै फीनफसा अख-तियारात हकूमतसे महरूमकरनेकी काफ़ीवजहहै जोफर्जअ-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जोिम श्रीमती महाराणी विक्टोरिया की गवर्न्नमेण्ट परहिन्द कीप्रजाको अन्यायसे महफूज रखनेकाहै उसको हजूर मम-दूहानेएकबड़े मुकद्दमेमें निहायतदिलसे तसलीम कियाहै॥

दफ़ा १८-मैं अन्तपरश्री महाराणी विक्टोरियाकी ओरसे उनखिदमतोंकी निस्बतबड़ी कदरशिनासी जाहिरकरताहूं जोआपसे उसदर्दनाक मुकद्दमेमें जहूरमें आईहैंमैं आपसेयह भी दरख्वास्त करताहूं किआप सरल्यूइसपोली साहबऔर जिन मनुष्योंने उनके आधीन कामकियाथा उनसे कहदेंकि श्रीमतीमहाराणीकी गवर्न्नमेण्टको उनकठिन कामोंका बड़ा खयालहैजोउन्होंने लियाकतके साथअंजामदिये-

दस्तखतसैल्सबरी॥

इति

———

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जोिस श्रीमती महारागी विक्टोरिया की गवर्न्नमेगट परहिन्द कीप्रजाको अन्यायसे महफूज रखनेकाहै उसको हजूर मुम-दूहानेएकबड़े मुकद्दमेमें निहायतदिलसे तसलीम कियाहै॥

दफ़ा १८-मैं अन्तपरश्री महारागी विक्टोरियाकी ओरसे उनखिदमतोंकी निसबतबड़ी क़दरशिनासी जाहिरकरताहूं जोआपसे उसदर्दनाक मुकद्दमेमें नज़रमें आईहैं मैं आपसेयह भी दरख्वास्त करताहूं किआप सरल्यूइसपीली साहबऔर जिन मनुष्योंने उनके आधीन कामकियाथा उनसे कहदेंकि श्रीमतीमहारागीकी गवर्न्नमेगटको उनकठिन कामोंका बड़ा खयालहैजोउन्होंने लियाक़तके साथअंजामदिये-

दस्तख़तसेलसबरी॥

इति

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE